श्री ज्ञानेश्वरी

ज्ञानेश्वरीः–अध्याय पहिलाः–अर्जुनविषादयोग

श्रीगणेशाय नमः।

ॐ नमोजी आद्या। वेदप्रतिपाद्या। जय जय स्वसंवेद्या। आत्मरूपा।१। देवा तूंचि गणेश। सकळमतिप्रकाश। म्हणे निवृत्तिदास। अवधारिजो जी।२। हें शब्दब्रह्म अशेष। तेचि मूर्ति सुवेष। तेथ वर्णवपु निर्दोष। मिरवत असे।३। स्मृती तेचि अवयव। देखा आंगीक भाव। तेथ लावण्याची ठेव। अर्थशोभा।४। अष्टादश पुराणें। तींचि मणिभूषणें। पदपद्धती खेवणें। प्रमेयरत्नांचीं।५। पदबंध नागर। तेंचि रंगाथिलें अंबर। जेथ साहित्य वाणें सपूर। उजाळाचें।६। देखा काव्यनाटका। जें निर्धारितां सकौतुका। त्याचि रुणझुणती क्षुद्रघंटिका। अर्थध्वनि।७। नाना प्रमेयांची परी। निपुणपणें पाहतां कुसरी। दिसती उचित पदें माझारीं। रत्नें भलीं।८। जेथ व्यासादिकांची मती। तेचि मेखळा मिरवती। चोखाळपणें झळकती। पल्लवसडका।९। देखा षड्दर्शनें म्हणिपती। तेचि भुजांची आकृती। म्हणऊनि विसंवाद धरिती। आयुधें हातीं।१०। तरी तर्क तोचि फरशु। नीतिभेद अंकुशु। वेदांत तो महारसु। मोदक मिरवे।११। एके हातीं दंत। जो स्वभावता खंडित। तो बौद्धमत संकेत। वार्तिकाचा।१२। मग सहजें सत्कारवाद। तो पद्मकर वरद। धर्मप्रतिष्ठा तो सिद्ध। अभयहस्त।१३। देखा विवेक तंव सुविमळ। तोचि शुंडादंड सरळ। जेथ परमानंद केवळ। महासुखाचा।१४। तरी संवाद तोचि दशन। जो समताशुभ्रवर्ण। देव उन्मेषसूक्ष्मेक्षण। विघ्नराज।१५। मज अवगमलिया दोनी। मीमांसा श्रवणस्थानीं। बोधमदामृत मुनी। अलि सेवितीं।१६। प्रमेयप्रवाल सुप्रभ। द्वैताद्वैत तेचि निकुंभ। सरिसे एकवटती इभ–। मस्तकावरी।१७। उपरि वेदोपनिषदें। जियें उदारज्ञानमकरंदें। तियें कुसुमें मुकुटीं सुगंधें। शोभती भली।१८। अकार चरणयुगुल। उकार उदर विशाल। मकार महामंडल। मस्तकाकारें।१९। हे तिन्ही एकवटले। तेथ शब्दब्रह्म कवळलें। तें मियां श्रीगुरुकृपा नमिलें। आदिबीज।२०। आतां अभिनव वाग्विलासिनी। जे चातुर्यार्थकलाकामिनी। ते श्रीशारदा विश्वमोहिनी। नमिली मियां।२१। मज हृदयीं सद्गुरू। जेणें तारिलों हा संसारपूरू। म्हणऊनि विशेषें अत्यादरू। विवेकावरी।२२। जैसें डोळ्यां अंजन भेटे। ते वेळीं दृष्टीसी फांटा फुटें। मग वास पाहिजे तेथ प्रगटे। महानिधी।२३। कां चिंतामणी आलिया हातीं। सदा विजयवृत्ति मनोरथीं। तैसा मी पूर्णकाम श्रीनिवृत्ति। ज्ञानदेव म्हणे।२४। म्हणोनि जाणतेनें गुरु भजिजे। तेणें कृतकार्य होइजे। जैसें मूळसिंचनें सहजें। शाखापल्लव संतोषती।२५। कां तीर्थें जियें त्रिभुवनीं। तियें घडती समुद्रावगाहनीं। ना तरी अमृतरसस्वादनीं। रस सकळ।२६। तैसा पुढतपुढती तोचि। मियां अभिवंदिला श्रीगुरुचि। अभिलषित मनोरुचि पुरविता तो।२७। आतां अवधारा कथा गहन। जे सकळ कथां जन्मस्थान। कीं अभिनव उद्यान। विवेकतरूचें।२८। ना तरी सर्व सुखाचि आदि। जे प्रमेयमहानिधि। नाना नवरससुधाब्धि। परिपूर्ण हे।२९। कीं परमधाम प्रगट। सर्व विद्यांचें मूळपीठ। शास्त्रजातां वसौट। अशेषांचें।३०। ना तरी सकळ धर्मांचें माहेर। सज्जनांचें जिव्हार। लावण्यरत्नभांडार। शारदेचें।३१। नाना कथारूपें भारती। प्रगटली असे त्रिजगतीं। आविष्करोनि महामती। व्यासाचिये।३२। म्हणोनि हा काव्यां रावो। ग्रंथगुरुवतीचा ठावो। एथूनि रसां झाला आवो। रसाळपणाचा।३३। तेवींचि आइका आणीक एक। एथूनि शब्दश्री सच्छास्त्रिक। आणि महाबोधीं कोंवळीक। दुणावली।३४। एथ चातुर्य शाहणें झालें। प्रमेय रुचीस आलें। आणि सौभाग्य पोखलें। सुखाचें एथ।३५। माधुर्यीं मधुरता। शृंगारीं सुरेखता। रूढपण उचिता। दिसलें भलें।३६। एथ कळाविदपण कळा। पुण्यासि प्रताप आगळां। म्हणऊनि जनमेजयाचे अवलीळा। दोष हरले।३७। आणि पाहतां नावेक। रंगीं सुरंगतेची आगळिक। गुणां सगुणपणाचें बिक। बहुवस एथ।३८। भानुतेजें धवळलें। जैसें त्रैलोक्य दिसे उजळिलें। तैसें व्यासमती कवळिलें। मिरवे विश्व।३९। कां सुक्षेत्रीं बीज घातलें। तें आपुलियापरी विस्तारलें। तैसें भारतीं सुरवाडलें। अर्थजात।४०। ना तरी नगरांतरीं वसिजे। तरी नागरचि होइजें। तैसें व्यासोक्तितेजें। धवळत सकळ।४१। कीं प्रथमवयसाकाळीं। लावण्याची नव्हाळी। प्रगटे जैसी आगळी। अंगनाअंगीं।४२। ना तरी उद्यानीं माधवी घडे। तेथ वनशोभेची खाणी उघडे। आदिलापासोनि अपाडें। जियापरी।४३। नाना घनीभूत सुवर्ण। जैसें न्याहाळितां साधारण। मग अळंकारीं बरवेपण। निवाड दावी।४४। तैसें व्यासोक्ति अळंकारिलें। आवडे तें बरवेपण पातलें। तें जाणोनि आश्रयिलें। इतिहासीं।४५। नाना पुरतिये प्रतिष्ठेलागीं। सानीव धरूनि आंगीं। पुराणें आख्यानरूपें जगीं। भारता आली।४६। म्हणऊनि महाभारतीं नाहीं। तें नोहे लोकीं तिहीं। येणेंकारणें म्हणिपे पाहीं। व्यासोच्छिष्ट जगत्रय।४७। ऐसीं जगीं सुरस कथा। ते जन्मभूमि परमार्था। मुनि सांगे नृपनाथा। जनमेजया।४८। जें अद्वितीय उत्तम। पवित्रैक निरुपम। परम मंगळधाम। अवधारिजो।४९। आतां भारतकमळपराग। गीताख्य प्रसंग। जो संवादला श्रीरंग। अर्जुनेसीं।५०। ना तरी शब्दब्रह्माब्धि। मथियला व्यासबुद्धि। निवडिलें निरवधि। नवनीत हें।५१। मग ज्ञानाग्निसंपर्कें। कडसिलें विवेकें। पद आलें परिपाकें। आमोदासी।५२। जें अपेक्षिजे विरक्तीं। सदां अनुभविजे संतीं। सोहंभावें पारंगतीं। रमिजे जेथ।५३। जें आकर्णिजे भक्तीं। जें आदिवंद्य त्रिजगतीं। ते भीष्मपर्व संगती।

सांगिजेल ।५४। जें भगवद्गीता म्हणिजे। जें ब्रह्मेशांनी प्रशंसिजे। जें सनकादिकी सेविजे। आदरेंसीं ।५५। जैसे शारदियचिये चंद्रकळे–। माजि अमृतकण कोंवळें। ते वेचिती मनें मवाळें। चकोरतलगें ।५६। तियापरी श्रोतां। अनुभवावी हे कथा। अति हळुवारपण चित्ता। आणूनियां ।५७। हें शब्देंवीण संवादिजे। इंद्रियां नेणतां भोगिजे। बोलाआदि झोंबिजे। प्रमेयाशीं ।५८। जैसे भ्रमर पराग नेती। परी कमळदळें नेणती। तैसी परी आहे सेविती। ग्रंथीं इये ।५९। कां आपुला ठाय न सांडितां। आलिंगिजे चंद्र प्रगटतां। हा अनुराग भोगितां। कुमुदिनी जाणे ।६०। ऐसेनि गंभीरपणें। स्थिरावलेनि अंतःकरणें। आथिला तोचि जाणे। मानूं इये ।६१। अहो अर्जुनाचिये पांती। जें परिसणया योग्य होती। तिहीं कृपा करूनि संतीं। अवधान द्यावें ।६२। हें सलगी म्यां म्हणितलें। चरणां लागोनि विनविलें। प्रभू सखोल हृदय आपुलें। म्हणऊनियां ।६३। जैसा स्वभाव मायबापांचा। अपत्य बोले जरी बोबडी वाचा। तरी अधिक तयाचा। संतोष आथी ।६४। तसा तुम्हीं मी अंगीकारिला। सज्जनीं आपुला म्हणितला। तरी उणें सहजें उपसाहला। प्रार्थूं काई ।६५। परी अपराध तो आणीक आहे। जें मी गीतार्थ कवळूं पाहें। तें अवधारा विनवूं लाहें। म्हणऊनियां ।६६। हें अनावर न विचारितां। वायांचि धिंवसा उपनला चित्ता। येरवीं काय भानुतेजीं खद्योता। शोभा आथी ।६७। कीं टिटिभू चांचुवरी। माप सूये सागरीं। मी नेणत त्यापरी। प्रवर्तें एथ ।६८। आयका आकाश गिंवसावें। तरी आणीक त्याहूनि थोर होआवें। म्हणऊनि अपाड हें आघवें। निर्धारितां ।६९। तया गीतार्थाची थोरी। स्वयें शंभू विवरी। जेथ भवानी प्रश्न करी। चमत्करोनी ।७०। तेथ हर म्हणे नेणिजे। देवी जैसें कां स्वरूप तुझें। तसे हें नित्य नूतन देखिजे। गीतातत्त्व ।७१। हा वेदार्थसागर। जया निद्रिताचा घोर। तो स्वयें श्रीसर्वेश्वर। प्रत्यक्ष अनुवादला ।७२। ऐसें जें अगाध। जेथ वेडावति वेद। तेथ अल्प मी मतिमंद। काय होय ।७३। हें अपार कैसेनि कवळावें। महातेज कवणें धवळावें। गगन मुठीं सुवावें। मशकें केवीं ।७४। परी एथ असे एक आधारू। तेणेंचि बोलें मी सधरू। जैं सानुकूळ श्रीगुरू। ज्ञानदेवा म्हणे ।७५। येऱ्हवीं तरी मी मूर्ख। जरी जाहला अविवेक। तऱ्ही संतकृपादीपक। सोज्वल असे ।७६। लोहाचें कनक होये। हें सामर्थ्य परिसिचिं आहे। कां मृतही जीवित लाहे। अमृतसिद्धि ।७७। जरी प्रगटे सिद्धसरस्वती। तऱ्ही मुकया आथि भारती। एथ वस्तुसामर्थ्यशक्ती। नवल कायी ।७८। कां जयातें कामधेनु माये। तयासी अप्राप्य कांहीं आहे। म्हणऊनि मी प्रवर्तें लाहें। ग्रंथीं इये ।७९। तरी न्यून तें पुरतें। अधिक तें सरतें। करूनि घ्यावें हें तुमतें। विनवित असें ।८०। आतां देइजे अवधान। तुम्हीं बोलविला मी बोलेन। जैसें चेष्टे सूत्राधीन। दारुयंत्र ।८१। तैसा मी अनुगृहीत। साधूंचा निरूपित। ते आपला अलंकारित। भलतयापरी ।८२। तंव श्रीगुरु म्हणती राहीं। हें तुज बोलावें न लगे कांहीं। आतां ग्रंथा चित्त देईं। झडकरी वेगीं ।८३। या बोला निवृत्तिदास। पावूनि परम उल्हास। म्हणे परिसा मना सावकाश। देवूनियां ।८४।

धृतराष्ट्र उवाचः–धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः।
मामकाः पांडवाश्चैव किमकुर्वत संजय ।१।

तरी पुत्रस्नेहें मोहित। धृतराष्ट्र असे पुसत। म्हणे संजया सांगें मात। कुरुक्षेत्रींची ।८५। जें धर्मालय म्हणिजे। तेथ पांडव आणि माझे। गेलें असति व्याजें। जुंझाचेनि ।८६। तरी तिंहीं येतुला अवसरीं। काय किजत असे येरयेरीं। तें झडकरी कथन करीं। मजप्रती ।८७।

संजय उवाचः– दृष्ट्वा तु पांडवानीकं व्यूढं दुर्योधनस्तदा।
आचार्यमुपसंगम्य राजा वचनमब्रवीत् ।२।
पश्यैतां पांडुपुत्राणामाचार्य महतीं चमूम्।
व्यूढां द्रुपदपुत्रेण तव शिष्येण धीमता ।३।

तिये वेळीं तो संजय बोले। म्हणे पांडवसैन्य उचललें। जैसें महाप्रळयीं पसरलें। कृतांतमुख ।८८। तैसें ते घनदाट। उठावलें एकवट। जैसें उसळलें काळकूट। धरी कवण। ना तरी वडवानळ सादुकला। प्रलयवातें पोखला। सागर शोषूनि उधवला। अंबरासी ।९०। तैसें दळ दुर्धर। नानाव्यूहीं परिकर। अवगमलें भयासुर। तिये काळीं ।९१। तें देखोनि दुर्योधनें। अव्हेरिलें कोणें मानें। जैसें न गणिजे पंचाननें। गजघटातें ।९२। मग द्रोणापासीं आला। तयातें म्हणे हा देखिला। कैसा दळभार उचलला। पांडवांचा। गिरिदुर्ग जैसें चालते। तैसें विविध व्यूह भंवते। रचिले आथि बुद्धिमंते। द्रुपदकुमरें ।९४। जो कां तुम्हीं शिष्य आपुला। विद्येसि वसौटा केला। तेणें हा सैन्यसिंधु पाखरिला। देखदेख ।९५।

अत्र शूरा महेष्वासा भीमार्जुनसमा युधि।
युयुधानो विराटश्च द्रुपदश्च महारथः ।४।

आणीकही असाधारण। जे शस्त्रास्त्रीं प्रवीण। क्षात्रधर्मीं निपुण। वीर आहाती।९६। जे बळें प्रौढी पौरुखें। भीमार्जुनासारिखे। ते सांगेन कौतुकें। प्रसंगेंची।९७। एथ युयुधान सुभट। आला असे विराट। महारथी श्रेष्ठ। द्रुपद वीर।९८।

धृष्टकेतुश्चेकितानः काशिराजश्च वीर्यवान्।
पुरुजित्कुंतिभोजश्च शैब्यश्च नरपुंगवः।५।
युधामन्युश्च विक्रांत उत्तमौजाश्च वीर्यवान्।
सौभद्रो द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथाः।६।

चेकितान धृष्टकेतु। काशिराज विक्रांतु। उत्तमौजा नृपनाथु। शैब्य देख।९९। हा कुंतिभोज पाहें। एथ युधामन्यु आला आहे। आणि पुरुजितादि राय हे। सकळ देख।१००। हा सुभद्राहृदयनंदन। जो अपर नवार्जुन। तो अभिमन्यु म्हणे दुर्योधन। देखें द्रोणा।१। आणीकही द्रौपदीकुमर। हे सकळही महारथी वीर। मिती नेणिजे परि अपार। मिनले असती।२।

अस्माकं तु विशिष्टा ये तान्निबोध द्विजोत्तम।
नायका मम सैन्यस्य संज्ञार्थं तान्ब्रवीमि ते।७।
भवान्भीष्मश्च कर्णश्च कृपश्च समितिंजयः।
अश्वत्थामा विकर्णश्च सौमदत्तिस्तथैव च।८।

आतां आमच्या दळीं नायक। जे रूढ वीर सैनिक। ते प्रसंगें आइक। सांगिजती।३। उद्देशें एक दोनी। जायिजती बोलोनि। तुम्ही आदिकरूनी। मुख्य जे जे।४। हा भीष्म गंगानंदनु। जो प्रतापतेजस्वी भानु। रिपुगजपंचाननु। कर्ण वीर।५। एकेकाचेनि मनोव्यापारें। हें विश्व होय संहरे। हा कृपाचार्य न पुरे। एकलाचि।६। एथ विकर्ण वीर आहे। हा अश्वत्थामा पैल पाहें। याचा अडदर सदां वाहे। कृतांत मनीं।७।

अन्ये च बहवः शूरा मदर्थे त्यक्तजीविताः।
नानाशस्त्रप्रहरणाः सर्वे युद्धविशारदाः।९।

समितिंजय सौमदत्ति। ऐसे आणीकही बहुत आहाती। जयांचिया बळा मिती। धाताही नेणे।८। जे शस्त्रविद्यापारंगत। मंत्रावतार मूर्त। हो कां जें अस्त्रजात। एथूनि रूढ।९। हे अप्रतिमल्ल जगीं। पुरता प्रताप आंगीं। परी सर्वप्राणें मजचिलागीं। आरायिले असती।११०। पतिव्रतेचें हृदय जैसें। पतीवांचूनि न स्पर्शे। मी सर्वस्व यां तैसें। सुभटांसी।११। आमुचिया काजाचेनि पाडें। देखती आपुलें जीवित्व थोकडें। ऐसे निरवधि चोखडे। स्वामिभक्त।१२। जुंझती कुळकणी जाणती। कळे कीर्तीसी जिती। हे बहु असो क्षात्रनीती। एथोनियां।१३। ऐसें सर्वांपरी पुरते। वीर दळीं आमुतें। आतां काय गणूं यांतें। अपार हे।१४।

अपर्याप्तं तदस्माकं बलं भीष्माभिरक्षितम्।
पर्याप्तं त्विदमेतेषां बलं भीमाभिरक्षितम्।१०।

वरी क्षत्रियांमाजि श्रेष्ठ। जो जगजेठी जगा सुभट। तया दळवैपणाचा पाट। भीष्मासि पैं।१५। आतां याचेनि बळें गवसलें। हें दुर्ग जैसें पन्नासिलें। येणें पाडें थेंकुलें। लोकत्रय।१६। आधीच समुद्र पाहीं। तेथ दुवाडपण कवणा नाहीं। मग वडवानळ तैसेयाही। विरजा जैसा।१७। ना तरी प्रलयवह्नि महावात। या दोघां जैसा सांघात। तैसा हा गंगासुत। सेनापति।१८। आतां येणेंसीं कवण भिडे। हें पांडवसैन्य कीर थोकडें। वरचिलेनि पाडें। दिसत असे।१९। परी भीमसेन बेंथु। तो जाहला असे सेनानाथु। ऐसें बोलोनियां मातु। सांडिली तेणें।१२०।

अयनेषु च सर्वेषु यथाभागमवस्थिताः।
भीष्ममेवाभिरक्षंतु भवंतः सर्व एव हि।११।

मग पुनरपि काय बोलें। सकळ सैनिकांतें म्हणितलें। आतां दळभार आपुलाले। सरसे करा।२१। जया जिया अक्षौहिणी। तेणें तिया आरणी। वरगण कवणकवणी। महारथिया।२२। तेणें तिया आवरिजे। भीष्मातळीं राहिजें। द्रोणातें म्हणे पाहिजे। तुम्ही सकळ।२३। हाचि एक रक्षावा। मी तैसा हा देखावा। येणें दळभार आघवा। साच आमुचा।२४।

तस्य संजनयन् हर्षं कुरुवृद्धः पितामहः।
सिंहनादं विनद्योच्चैः शंखं दध्मौ प्रतापवान्।१२।

या राजयाचिया बोला। सेनापति संतोषला। मग तेणें केला। सिंहनाद।२५। तो गाजत असे अद्भुत। दोहीं सैन्यांआंत। प्रतिध्वनि न समात। उपजत असे।२६। तयाचि तुलगासवें। वीरवृत्तीचेनि थांवे। दिव्य शंख भीष्मदेवें। आस्फुरिला।२७। ते दोन्ही नाद मिनले। तेथ त्रैलोक्य बधिरीभूत जाहलें। जैसें आकाश कां पडिलें। तुटोनियां।२८। घडघडीत अंबर। उचंबळत सागर। क्षोभलें चराचर। कांपत असे।२६। तेणें महाघोषगजरें। दुमदुमिताती गिरिकंदरें। तंव दळामाजि रणतुरें। आस्फुरिली।१३०।

ततः शंखाश्च भेर्यश्च पणवानकगोमुखाः।
सहसैवाभ्यहन्यंत स शब्दस्तुमुलोऽभवत्।१३।

उदंड सैघ वाजतें। भयानकें खाखातें। महाप्रळय जेथें। धोकडांसी।३१। भेरी निशाण मांदळ। शंख काहळा भोंगळ। आणि भयासुर रणकोल्हाळ। सुभटांचे।३२। आवेशें भुजा त्राहाटिती। विसणेले हांका देती। जेथ महामद भद्रजाती। आवरती ना।३३। तेथ भेडांची कवण मात। कांचया केर फिटत। जेणें दचकला कृतांत। आंग नेघे।३४। एकां उभयांचि प्राण गेले। चांगाचे दांत बैसले। बिरुदाचे दादुले। हिवताती।३५। ऐसा अद्भुत तूरबंबाळ। ऐकोनि ब्रह्मा व्याकुळ। देव म्हणती प्रलयकाळ। वोढवला आजी।३६।

ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते महति स्यंदने स्थितौ।
माधवः पांडवश्चैव दिव्यौ शंखौ प्रदध्मतुः।१४।
पांचजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनंजयः।
पौण्ड्रं दध्मौ महाशंखं भीमकर्मा वृकोदरः।१५।
अनंतविजयं राजा कुंतीपुत्रो युधिष्ठिरः।
नकुलः सहदेवश्च सुघोषमणिपुष्पकौ।१६।

ऐसी स्वर्गी मात। देखोनि तो आकांत। तंव पांडवदळाआंत। वर्तलें कायी।३७। हो कां निजसार विजयाचें। कीं ते भांडार महातेजाचें। जेथ गरुडाचिये जावळिचे। कांतले चाऱ्ही।३८। कीं पाखांचा मेरु जैसा। रहंवर मिरवतसे तैसा। तेजें कोंदाटलिया दिशा। जयाचेनि।३६। जेथ अश्ववाहक आपण। वैकुंठीचा राणा जाण। तया रथाचे गुण। काय वर्णूं।१४०। ध्वजस्तंभावरी वानर। तो मूर्तिमंत शंकर। सारथी शाङ्‍र्गधर। अर्जुनेसीं।४१। देखा नवल तया प्रभूचें। अद्भुत प्रेम भक्ताचें। जे सारथ्यपण पार्थाचें। करीत असे।४२। पाइक पाठीसीं घातला। आपण पुढां राहिला। तेणें पांचजन्य आस्फुरिला। अवलीळाचि।४३। परी तो महाघोष थोरु। गर्जत असे गंहिरु। जैसा उदेला लोपी दिनकरु। नक्षत्रांतें।४४। तैसें तूरबंबाळ भंवते। कौरवदळीं गाजत होते। ते हारपोनी नेणों केउते। गेले तेथ।४५। तैसाचि देखें येरें। निनादें अतिगजरें। देवदत्त धनुर्धरें। आस्फुरिला।४६। ते दोनी शब्द अचाट। मिनले एकवट। तेथ ब्रह्मकटाह शतकूट। हों पाहत असे।४७। तंव भीमसेन विसणेला। जैसा महाकाळ खवळला। तेणें पौण्ड्र आस्फुरिला। महाशंख।४८। तो महाप्रलयजलधर। जैसें गडगडित गंहिर। तंव अनंतविजय युधिष्ठिर। आस्फुरित असे।४६। नकुळें सुघोष। सहदेवें मणिपुष्पक। जेणें नादें अंतक। गजबजला ठाके।१५०।

काश्यश्च परमेश्वासः शिखंडी च महारथः।
धृष्टद्युम्नो विराटश्च सात्यकिश्चापराजितः।१७।
द्रुपदो द्रौपदेयाश्च सर्वशः पृथिवीपते।
सौभद्रश्च महाबाहुः शंखान्दध्मुः पृथक् पृथक्।१८।
स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत्।
नभश्च पृथिवीं चैव तुमुलो व्यनुनादयन्।१६।

तेथ भूपती होते अनेक। द्रुपद द्रौपदेयादिक। हा काशीपति देख। महाबाहू।५१। तेथ अर्जुनाचा सुत। सात्यकि अपराजित। धृष्टद्युम्न नृपनाथ। शिखंडी हन।५२। विराटादि नृपवर। जे सैनिक मुख्य वीर। तिंहीं नाना शंख निरंतर। आस्फुरिले।५३। तेणें महाघोषनिर्घातें। शेष कूर्म अवचितें। गजबजोनि भूभारातें। सोडूं पाहती।५४। तेथ तिन्ही लोक डहमळित। मेरु मांदार आंदोलित। समुद्रजळ उसळत। कैलासवरी।५५। पृथ्वीतळ उलथों पहात। आकाश असे आसुडत। तेथ सडा होत। नक्षत्रांचा।५६। सृष्टि गेली रे गेली। देवां मोकळवादी जाहली। ऐसी एक टाळी पिटिली। सत्यलोकीं।५७। दिहाचि दिन थोकलां। जैसा प्रलयकाळ मांडला। तैसा हाहाकार जाहला। तिहीं लोकीं।५८। तें देखोनि आदिपुरुष विस्मित। म्हणे झणें होय पां अंत। मग लोपवला अद्भुत। संभ्रम तो।५९। म्हणोनि विश्व सांवरलें। एऱ्हवीं युगान्त होतें वोडवलें। जैं महाशंख आस्फुरिले। कृष्णादिकीं।१६०। तो घोष तरी उपसंहरला। परी पडसाद होता राहिला। तेणें दळभार विध्वंसिला। कौरवांचा।६१। जैसा गजघटाआंत। सिंह लीला विदारित। तैसा हृदयातें भेदित। कौरवांचिया।६२। तो गाजत जंव आइकती। तंव उभेचि हियें घालती। एकमेकातें म्हणती। सावध रे सावध।६३।

अथ व्यवस्थितान्दृष्ट्वा धार्तराष्ट्रान्कपिध्वजः।
प्रवृत्ते शस्त्रसंपाते धनुरुद्यम्य पांडवः।२०।

तेथ बळप्रौढीपुरते। महारथी वीर होते। तिंहीं पुनरपि दळातें। आवरिलें।६४। मग सरिसेपणें उठावले। दुणवटोनि उचलले। तया दंडी क्षोभलें। लोकत्रय।६५। तेथ बाणवरी धनुर्धर। वर्षताति निरंतर। जैसे प्रळयांत जळधर। अनिवार कां।६६। ते देखलिया अर्जुनें। संतोष घेऊनि मनें। मग संभ्रमें सेनें। दिठी घालीतसे।६७। तंव संग्रामीं सज्ज जाहले। सकळ कौरव देखिले। तंव लीला धनुष्य उचलिलें। पांडुकुमरें।६८।

हृषीकेशं तदा वाक्यमिदमाह महीपते।

अर्जुन उवाचः— सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्युत।२१।

ते वेळीं अर्जुन म्हणतसे देवा। आतां झडकरी रथ पेलावा। नेऊनि मध्यें घालावा। दोहीं दळीं।६९।

यावदेतान्निरीक्षेऽहं योद्धुकामानवस्थितान्।
कैर्मया सह योद्धव्यमस्मिन्रणसमुद्यमे।२२।
योत्स्यमानानवेक्षेऽहं य एतेऽत्र समागताः।
धार्तराष्ट्रस्य दुर्बुद्धेर्युद्धे प्रियचिकीर्षवः।२३।

जंव मी नावेक। हे सकळ वीर सैनिक। न्याहाळीन अशेख। जुंझते जे।१७०। एथ आले असती आघवे। परी कवणेंसीं म्यां जुंझावें। हें रणीं लागे पहावें। म्हणऊनियां।७१। बहुतकरूनि कौरव। हे आतुर दुःस्वभाव। वांटिवावीण हांव। बांधिती जुंझीं।७२। जुंझाची आवड धरिती। परी संग्रामीं धीर नव्हती। हें सांगोनि रायाप्रती। काय संजयो म्हणे।७३।

संजय उवाचः— एवमुक्तो हृषीकेशो गुडाकेशेन भारत।
सेनयोरुभयोर्मध्ये स्थापयित्वा रथोत्तमम्।२४।

आइका अर्जुन इतुकें बोलिला। तंव श्रीकृष्णें रथ पेलिला। दोहीं सैन्यांमाजि केला। उभा तेणें।७५।

भीष्मद्रोणप्रमुखतः सर्वेषां च महीक्षिताम्।
उवाच पार्थ पश्यैतान्समवेतान्कुरूनिति।२५।
तत्रापश्यत्स्थितान्पार्थः पितृनथ पितामहान्।
आचार्यान्मातुलान्भ्रातृन्पुत्रान्पौत्रान्सखींस्तथा।२६।
श्वशुरान्सुहृदश्चैव सेनयोरुभयोरपि।
तान्समीक्ष्य स कौन्तेय सर्वान्बंधूनवस्थितान्।२७।

जेथ भीष्मद्रोणादिक। जवळिकेचि सन्मुख। पृथिवीपति आणिक। बहु आहाती।७५। तेथ स्थिर करूनियां रथ। अर्जुन असे पाहत। तो दळभार समस्त। संभ्रमेसीं।७६। मग देवा म्हणे देख देख। हे गोत्रगुरु अशेख। तंव कृष्णा मनीं नावेक। विस्मो जाहला।७७। तों आपणयां आपण म्हणे। एथ कायी कवण जाणे। हें मनीं धरिलें येणें। परी कांहीं आश्चर्य असे।७८। ऐसी पुढील से घेत। तो सहजे जाणें हृदयसि। परि उगा असे निवांत। तिये वेळीं।७९। तंव तेथ पार्थ सकळ। पितृ पितामह केवळ। गुरु बंधु मातुळ। देखता जाहला।१८०। इष्ट मित्र आपुले। कुमरजन देखिले। हे सकळ असती आले। तयांमाजी।८१। सुहृज्जन सासरे। आणीकही सखे सोइरे। कुमर पौत्र धनुर्धरें। देखिले तेथ।८२। जयां उपकार होते केले। कीं आपदीं जे रक्षिले। हें असो वडिल धाकुले। आदिकरुनी।८३। ऐसे गोत्रचि दोहीं दळीं। उदित जालें असे कळी। हें अर्जुनें तिये वेळीं। अवलोकिलें।८४।

कृपया परयाऽविष्टो विषीदन्निदमब्रवीत्।

तेथ मनीं गजबज जाहली। आणि आपैसी कृपा उपजली। तेणें अपमानें निघाली। वीरवृत्ति।८५। जिया उत्तमकुळींचिया होती। आणि गुणलावण्य आथी। तिया आणिकीतें न साहती। सुतेजपणें।८६। नविये आवडीचेनि भरें। कामुक निजवनिता विसरे। मग पाडेंविण अनुसरे। भ्रमला जैसा।८७। कीं तपोबळें ऋद्धी। पातलिया भ्रंशे बुद्धी। मग तया विरक्ततासिद्धी। नाठवे ती।८८। तैसें अर्जुना तेथ जाहलें। असतें पुरुषत्व गेलें। जे अंतःकरण दिधलें। कारुण्यासी।८९। देखा मंत्रज्ञ बरळ जाये। तेथ कां जैसा संचार होये। तैसा तो धनुर्धर महामोहें। आकळिला।१९०। म्हणौनि असता धीर गेला। हृदया द्रव आला। जैसा चंद्रकरीं शिंपिला। सोमकांत।९१। तयापरी पार्थ। अतिस्नेहें मोहित। मग सखेद असे बोलत। श्रीअच्युतेसीं।९२।

अर्जुन उवाचः– दृष्ट्वेमं स्वजनं कृष्ण युयुत्सुं समुपस्थितम्।२८।
सीदन्ति मम गात्राणि मुखं च परिशुष्यति।
वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते।२९।
गांडीवं स्रंसते हस्तात्त्वक्चैव परिदह्यते।
न च शक्नोम्यवस्थातुं भ्रमतीव च मे मनः।३०।

तो म्हणे अवधारीं देवा। म्यां पाहिला हा मेळावा। तव गोत्रवर्ग आघवा। देखिला एथ।९३। हे संग्रामीं उदित। जाहाले असती कीर समस्त। पण आपणयां उचित। केवीं होय।९४। येणेंनावेंचि नेणों कायी। मज आपणपें सर्वथा नाहीं। मन बुद्धी ठायीं। स्थिर नोहे।९५। देखें देह कांपत। तोंड असे कोरडें होत। विकळता उपजत। गात्रांसी।९६। सर्वांगा कांटाळा आला। अति संताप उपजला। तेथें बेंबळ हात गेला। गांडीवाचा।९७। तें न धरतचि निष्टलें। परि नेणेंचि हातोनि पडिलें। ऐसें हृदय असे व्यापिलें। मोहें येणें।९८। जें वज्रापासोनि कठिण। दुर्धर अतिदारुण। तयाहून असाधारण। हें स्नेह नवल।९९। जेणें संग्रामीं हर जिंतिला। निवातकवचांचा ठाव फेडिला। तो अर्जुन मोहें कवळिला। क्षणामाजीं।२००। जैसें भ्रमर भेदी कोडें। भलतैसें काष्ठ कोरडें। परि कळिकेमाजि सांपडे। कोंवळिये।१। तेथ उत्तीर्ण होईल प्राणें। परि ते कमळदळ चिरूं नेणें। तैसें कठिण कोंवळेपणें। स्नेह देखा।२। हे आदिपुरुषाची माया। ब्रह्मेयाही न येचि आया। म्हणऊनि भुलविला। ऐकें राया। संजयो म्हणे।३। अवधारीं मग तो अर्जुन। देखोनि सकळ स्वजन। विसरला अभिमान। संग्रामींचा।४। कैसी नेणो सदयता। उपनली तेथ चित्ता। मग म्हणे कृष्णा आतां। नसिजे एथ।५। माझें अतिशयें मन व्याकुळ। होतसे वाचा बरळ। जे वधावे हे सकळ। येणें नांवें।६।

निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि केशव।
न च श्रेयोऽनुपश्यामि हत्वा स्वजनमाहवे।३१।

या कौरवां जरी वधावें। तरी युधिष्ठिरादिकां कां न वधावें। हे येरयेर आघवे। गोत्रज आमुचे।७। म्हणोनि जळो हें जुंझ। प्रत्यया न ये मज। येणें काय काज। महापापें।८। देवा बहुतांपरी पाहातां। एथ वोखटें होईल जुंझतां। वरी कांहीं चुकवितां। लाभ आथी।९।

न कांक्षे विजयं कृष्ण न च राज्यं सुखानि च।
किं नो राज्येन गोविंद किं भोगैर्जीवितेन वा।३२।
येषामर्थे कांक्षितं नो राज्यं भोगाः सुखानि च।
त इमेऽवस्थिता युद्धे प्राणांस्त्यक्त्वा धनानि च।३३।

तया विजयवृत्ती कांहीं। मज सर्वथा काज नाहीं। एथ राज्य तरी कायी। पावोनियां।२१०। या सकळांतें वधावें। मग जे भोग भोगावे। ते जळोत आघवे। पार्थ म्हणे।११। तेणें सुखेंवीण होईल। तें भलतैसें साहिजेल। वरी जीवितही वेंचिजेल। यांचिलागीं।१२। परी यांसी घात कीजे। मग आपण राज्यसुख भोगिजे। हें स्वप्नींही मन माझें। करूं न शके।१३। तरी आम्ही कां जन्मावें। कवणालागीं जियावें। जरी वडिलां यां चिंतावें। अहित मनें।१४। पुत्रातें इच्छी कुळ। तयाचें कायि हेंचि फळ। जे निर्दळिजे केवळ। गोत्र आपुलें।१५। हे मनींचि केविं धरिजे। आपण वज्राचेंया होइजे। वरी घडे तरी कीजे। भलें इयां।१६। आम्हीं जें जें जोडावें। तें समस्तीं इहीं भोगावें। हें जीवितही उपकारावें। काजीं इयांच्या।१७। आम्हीं दिगंतींचे भूपाळ। विभांडूनि सकळ। मग संतोषविजे कुळ। आपुलें जें।१८। तेचि हे समस्त। परी कैसें कर्म विपरीत। जे जहाले असती उद्यत। झुंझावया।१९। अंतोरिया कुमरें। सांडोनियां भांडारें। शस्त्राग्रीं जिव्हारें। आरोपुनी।२२०। ऐसियांतें कैसेनि मारूं। कवणारी शस्त्र धरूं। निजहृदया करूं। घात केवीं।२१।

आचार्याः पितरः पुत्रास्तथैव च पितामहाः।
मातुलाः श्वशुराः पौत्राः श्यालाः संबंधिनस्तथा।३४।

हे नेणसी तूं कवण। परी पैल भीष्मद्रोण। जयांचे उपकार असाधारण। आम्हां बहुत।२२। एथ शालक सासरे मातुल। आणि बंधु कीं हे सकळ। पुत्र नातू केवळ। इष्टही असती।२३। अवधारीं अति जवळिकेचे। हे सकळही सोयरे आमुचे। म्हणोनि दोष आथि वाचे। बोलतांचि।२४।

एतान्न हंतुमिच्छामि घ्नतोऽपि मधुसूदन।
अपि त्रैलोक्यराज्यस्य हेतोः किं नु महीकृते।३५।

हे वरी भलतें करितु। आतांचि एथें मारितु। परी आपण मनें घातु। न चिंतावा।२५। त्रैलोक्यींचे अनकळित। जरी राज्य होईल प्राप्त। तरी हें अनुचित। नाचरें मी।२६। जरी आजि एथ ऐसें कीजे। तरी कवणाच्या मनीं उरिजे। सांगें मुख केवीं पाहिजे। तुझें कृष्णा।२७।

निहत्य धार्तराष्ट्रान्नः का प्रीतिः स्याज्जनार्दन।
पापमेवाश्रयेदस्मान्हत्वैतानाततायिनः।३६।

जरी वध करी गोत्रजांचा। तरी वसौठा होऊनि दोषांचा। मज जोडिलासि तूं हातींचा। दूर होसी।२८। कुलहरणीं पातकें। तियें आंगीं जडती अशेखें। तये वेळीं तूं कवणें कें। देखावासी।२९। जैसा उद्यानामाजि अनळ। संचरला देखोनि प्रबळ। मग क्षणभरी कोकिळ। स्थिर नोहे।२३०। कां सकर्दम सरोवर। अवलोकुनी चकोर। न सेवित अव्हेर। करूनि निघे।३१। तयापरी तूं देवा। मज झकऊन न येसी मावा। जरी पुण्याचा वोलावा। नाशिजैल।३२।

तस्मान्नार्हा वयं हंतुं धार्तराष्ट्रान्स्वबांधवान्।
स्वजनं हि कथं हत्वा सुखिनः स्याम माधव।३७।

म्हणोनि मी हें न करीं। इये संग्रामीं शस्त्र न धरीं। हें किडाळ बहुतीं परीं। दिसतसे।३३। तुजसीं अंतराय होईल। मग सांगें आमुचें काय उरेल। तेणें दुःखें हियें फुटेल। तुजवीण कृष्णा।३४। म्हणौनि कौरव हे वधिजती। मग आम्ही भोग भोगीजती। हे असो मात अघडती। अर्जुन म्हणे।३५।

यद्यप्येते न पश्यंति लोभोपहतचेतसः।
कुलक्षयकृतं दोषं मित्रद्रोहे च पातकम्।३८।
कथं न ज्ञेयमस्माभिः पापादस्मान्निवर्तितुम्।
कुलक्षयकृतं दोषं प्रपश्यद्भिर्जनार्दन।३९।

हें अभिमानमदें भुललें। जन्हीं पां संग्रामा आले। तन्हीं आम्हां हित आपुलें। जाणावें लागे।३६। हें ऐसें कैसें करावें। जे आपुले आपण मारावे। जाणतजाणतांचि सेवावें। काळकूट।३७। हां जी मार्ग चालतां। पुढां सिंह जाहला अवचिता। तो तंव चुकवितां। लाभ आथि।३८। असता प्रकाश सांडावा। मग अंधकूप आश्रावा। तरी तेथ कवण देवा। लाभ सांगें।३९। कां समोर अग्नि देखोनी। जरी न वचिजे वोसंडोनी। तरी क्षणीं एक कवळुनी। जाळूं शके।२४०। तैसे दोष हे मूर्त। अंगी वाजों असती पाहात। हें जाणतांही केविं एथ। प्रवर्तावें।४१। ऐसें पार्थ तिये अवसरीं। म्हणे देवा अवधारीं। या कल्माषाची थोरी। सांगेन तुज।४२।

कुलक्षये प्रणश्यंति कुलधर्माः सनातनाः।
धर्मे नष्टे कुलं कृत्स्नमधर्मोऽभिभवत्युत।४०।

जैसें काष्ठें काष्ठ मथिजे। तेथ वह्नि एक उपजे। तेणें काष्ठजात जाळिजे। प्रज्वळलेनी।४३। तैसा गोत्रींचि परस्परें। जरी वध घडे मत्सरें। तरी तेणें महादोषें घोरें। कुळचि नाशे।४४। म्हणवूनि एणें पापें। वंशजधर्म लोपे। मग अधर्मचि आरोपे। कुळामाजि।४५।

अधर्माभिभवात्कृष्ण प्रदुष्यंति कुलस्त्रियः।
स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्णसंकरः।४१।

एथ सारासार विचारावें। कवणें काय आचरावें। आणि विधिनिषेध आघवे। पारुषती।४६। असता दीप दवडिजे। मग अंधकारीं राहाटिजे। तरी उजूचि कां अडखुळिजे। जयापरी।४७। तैसा कुळीं कुळक्षय होय। तये वेळीं तो आद्यधर्म जाय। मग आन कांहीं आहे। पापावांचुनी।४८। जैं यमनियम ठाकती। तेथ इंद्रियें सैरा राहटती। म्हणौनि व्यभिचार घडती। कुळस्त्रियां।४९। उत्तम अधमीं संचरती। ऐसे वर्णावर्ण मिसळती। तेथ समूळ उपडती। जातिधर्म।२५०। जैसी चोहटाचिये बळी। पाविजे सैरा काउळीं। तैसीं महापापें कुळीं। संचरती।५१।

संकरो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्य च।
पतंति पितरो ह्येषां लुप्तपिंडोदकक्रियाः।४२।

मग कुळा तया अशेखा। आणि कुळघातकां। येरयेरां नरका। जाणें आथि।५२। देखें वंशवृद्धि समस्त। यापरी होय पतित। मग वोवांडिती स्वर्गस्थ। पूर्वपुरुष।५३। जेथ नित्यादि क्रिया ठाके। आणि नैमित्तिक क्रिया पारुखे। तेथ कवणा तिळोदकें। कवण अर्पी।५४। तरी पितर काय करिती। कैसेनी स्वर्गीं वसती। म्हणोनि तेही येती। कुळापासीं।५५। जैसा नखाग्रीं व्याळ लागे। तो शिखांत व्यापी वेगें। तेवीं आब्रह्म कुळ अवघें। आप्लविजे।५६।

दोषैरेतैः कुलघ्नानां वर्णसंकरकारकैः।
उत्साद्यंते जातिधर्माः कुलधर्माश्च शाश्वताः।४३।
उत्सन्नकुलधर्माणां मनुष्याणां जनार्दन।
नरके नियतं वासो भवतीत्यनुशुश्रुम।४४।
अहो बत महत्पापं कर्तुं व्यवसिता वयम्।
यद्राज्यसुखलोभेन हंतुं स्वजनमुद्यताः।४५।

देवा अवधारीं आणीक एक। एथ घडे महापातक। जे संगदोषें हा लौकिक। भ्रंश पडे।५७। जैसा घरीं आपुला। वानिवसें अग्नि लागला। तो आणिकांहीं प्रज्वळिला। जाळूनि घाली।५८। तैसिया तया कुळसंगती। जे जे लोक वर्तती। तेही बाधा पावती। निमित्तें येणें।५९। तैसे नाना दोषें सकल। अर्जुन म्हणे तें कुळ। मग महाघोर केवळ। निरय भोगी।२६०। पाडेलिया तिये ठायीं। मग कल्पांतीही उकल नाहीं। येसणें पतन कुळक्षयीं। अर्जुन म्हणे।६१। देवा हें विविध कानीं ऐकिजे। परी अझुनिवरी त्रास नुपजे। हृदय वज्राचें हें काय कीजे। अवधारीं पां।६२। अपेक्षिजे राज्यसुख। जयालागीं तें तव क्षणिक। ऐसें जाणतांही दोख। अव्हेरूं ना।६३। जे हे वडिल सकळ आपुले। वधावया दिठी सूदले। सांग पां काय थेंकुलें। घडलें आम्हां?।६४।

यदि मामप्रतीकारमशस्त्रं शस्त्रपाणयः।
धार्तराष्ट्रा रणे हन्युस्तन्मे क्षेमतरं भवेत्।४६।

आतां यावरी जें जियावें। तयापासूनि हें बरवें। जे शस्त्रें सांडूनि साहावे। बाण यांचे।६५। तयावरी होय जितुकें। तें मरणही वरी निकें। परी येणें कल्मषें। चाड नाहीं।६६। ऐसें देखून सकळ। अर्जुनें आपुलें कुळ। मग म्हणे राज्य तें केवळ। निरयभोग।६७।

संजय उवाचः– एवमुक्त्वार्जुनः संख्ये रथोपस्थ उपाविशत्।
विसृज्य सशरं चापं शोकसंविग्नमानसः।४७।

इति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे अर्जुनविषादयोगो नाम प्रथमोऽध्यायः।१।

ऐसें तिये अवसरीं। अर्जुन बोलिला समरीं। संजय म्हणे अवधारीं। धृतराष्ट्रातें।६८। मग अत्यंत उद्वेगला। न धरत गहिंवर आला। तेथ उडी घातली खालां। रथौनियां।६९। जैसा राजकुमार पदच्युत। सर्वथा होय उपहत। कां रवि राहुग्रस्त। कळाहीन।२७०। ना तरी महासिद्धिसंभ्रमें। जिंतिला तापस भ्रमें। मग आकळूनि कामें। दीन कीजे।७१। तैसा तो धनुर्धर। अत्यंत दुःखें जर्जर। दिसे जेथ रहंवर। त्यजिला तेणें।७२। मग धनुष्यबाण सांडिलें। न धरत अश्रुपात आले। ऐसें ऐक राया वर्तलें। संजयो म्हणे।७३। आतां यावरी तो वैकुंठनाथ। देखोनि सखेद पार्थ। कवणे परी परमार्थ। निरूपील।७४। ते सविस्तर पुढारी कथा। अति सकौतुक ऐकतां। ज्ञानदेव म्हणे आतां। निवृत्तिदास।२७५।

इति श्रीज्ञानदेवकृतभावार्थदीपिकायां प्रथमोऽध्यायः।१। श्लोक ४७, ओव्या २७५

ज्ञानेश्वरीः–अध्याय दुसराः–सांख्ययोग

संजय उवाचः– तं तथा कृपयाविष्टमश्रुपूर्णाकुलेक्षणम।
विषीदंतमिदं वाक्यमुवाच मधुसूदनः ।१।

मग संजयो म्हणे रायातें। आइकें तो पार्थ तेथें। शोकाकुळ रुदनातें। करीत असे।१। तें कुळ देखोनि समस्त। स्नेह उपनलें अद्भुत। तेणें द्रवलें असे चित्त। कवणेपरी।२। जैसें लवण जळें झळंबलें। ना अभ्र वातें हाले। तैसें सधीर परी विरमलें। हृदय तयाचें।३। म्हणोनि कृपा आकळिला। दिसतसे अति कोमाइला। जैसा कर्दमीं रुपला। राजहंस।४। तयापरी तो पांडुकुमर। महामोहें अति जर्जर। देखोनि श्रीशाङ्‍र्गधर। काय बोले।५।

श्रीभगवानुवाचः– कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम्।
अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन।२।

म्हणे अर्जुना आदीं पाहीं। हें उचित काय इये ठायीं। तूं कवण हें कायी। करीत आहासी।६। तुज सांगें काय झालें। कवण उणें आलें। करितां काय ठेलें। खेद कायिसा।७। तूं अनुचिता चित्त नेदिसी। धीर कंहीं न सांडिसी। तुझेनि नामें अपयशीं। दिशा लंघिजे।८। तूं शूरवृत्तीचा ठावो। क्षत्रियांमाजि रावो। तुझिया लाठेपणाचा आवो। तिहीं लोकीं।९। तुवां संग्रामीं हर जिंकिला। निवातकवचांचा ठाय फेडिला। पवाडा तुवां केला। गंधर्वांसीं।१०। पाहतां तुझेनि पाडें। दिसे त्रैलोक्यही थोकडें। ऐसें पुरुषत्व चोखडें। पार्था तुझें।११। तो तूं कीं आजि येथें। सांडूनियां वीरवृत्तीतें। अधोमुख रुदनातें। करीत आहासी।१२। विचारीं तूं अर्जुनु। कीं कारुण्यें किजसी दीनु। सांग पां अंधकारें भानु। ग्रासिला आथी।१३। ना तरी पवन मेघासि बिहे। कीं अमृतासी मरण आहे। पाहें पां इंधनचि गिळोनि जाये। पावकातें।१४। कीं लवणेंचि जळ विरे। संसर्गें काळकूट मरे। सांग पां महाफणी दर्दुरें। गिळिजे कायी।१५। सिंहासि झोंबे कोल्हा। ऐसा अपाड आथि कें जाहाला। परी तो त्वां साच केला। आजि एथ।१६। म्हणोनि अझुनी अर्जुना। झणें चित्त देसी या हीना। वेगीं धीर करूनियां मनां। सावध होईं।१७। सांडी हें मूर्खपण। उठीं घे धनुष्यबाण। संग्रामी हें कवण। कारुण्य तुझें।१८। हां गां तूं जाणता। तरी न विचारिसी कां आतां। सांगें जुंझावेळे सदयता। उचित कायी।१९। हें असतिये कीर्तीसी नाश। आणि पारत्रिकासी अपभ्रंश। म्हणे जगन्निवास। अर्जुनातें।२०।

क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते।
क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप।३।

म्हणोनि शोक न करी। तूं पुरता धीर धरीं। हे शोच्यता अव्हेरी। पांडुकुमरा।२१। तुज नव्हे हें उचित। येणें नासेल जोडलें बहुत। तूं अझुनि तरी हित। विचारीं पां।२२। येणें संग्रामाचेनि अवसरें। एथ कृपाळुपण नुपकरे। हे आतांचि काय सोयरे। जाहले तुज।२३। तूं आधींचि काय नेणसी। कीं हे गोत्रज नोळखसी। वायांचि काय करिसी। अतिशय आतां।२४। आजिचें हें जुंझ। काय जन्मा नवल तुज। हें परस्परें तुम्हां व्याज। सदांचि आथि।२५। तरी आतां काय जाहालें। कायि स्नेह उपनलें। हें नेणिजे परी कुडें केलें। अर्जुना तुवां।२६। मोह धरिलिया ऐसें होईल। जे असती प्रतिष्ठा जाईल। आणि परलोकही अंतरेल। ऐहिकेंसीं।२७। हृदयाचें ढिलेपण। एथ निकयासि नव्हे कारण। हें संग्रामीं पतन जाण। क्षत्रियांसी।२८। ऐसेनि तो कृपावंत। नानापरी असे शिकवित। हें ऐकोनि पांडुसुत। काय बोले।२९।

अर्जुन उवाचः– कथं भीष्ममहं संख्ये द्रोणं च मधुसूदन।
इषुभिः प्रतियोत्स्यामि पूजार्हावरिसूदन।४।

देवा हे येतुलेवरी। बोलावें न लगे अवधारीं। आधीं तूंचि विचारीं। संग्राम हा।३०। हे जुंझ नव्हे प्रमाद। एथ प्रवर्तलिया दिसतसे बाध। हा उघड लिंगभेद। वोडवला आम्हां।३१। देखें मातापितरें अर्चिजती। सर्वस्वें तोषु पावविजती। तियें पाठीं केविं वधिजती। आपुलिया हातीं।३२। देवा संतवृंद नमस्कारिजे। कां घडे तरी पूजिजे। हें वांचुनि केवीं निंदिजे। स्वयें वाचा।३३। तैसे गोत्रगुरु आमुचे। पूजनीय आम्हां नेमाचे। मज बहुत भीष्मद्रोणांचें। वर्ततसे।३४। जयांलागीं मनें विरू। आम्ही स्वप्नींही न शकों धरूं। तयां प्रत्यक्ष केवीं करूं। घात देवा।३५। वरि जळों हें जियालें। एथ अवघेयांसि हेंचि काय जाहलें। जे यांच्या वधीं अभ्यासिलें। मिरविजे आम्हीं।३६। मी पार्थ द्रोणाचा केला। येणें धनुर्वेद मज दिधला। तेणें उपकारें काय आभारैला। वधीं तयातें।३७। जेथींचिया कृपा लाहिजे वर। तेथेंचि मनें व्यभिचार। तरी काय मी भस्मासुर। अर्जुन म्हणे।३८।

गुरूनहत्वा हि महानुभावान्

श्रेयो भोक्तुं भैक्ष्यमपीह लोके।
हत्वार्थकामांस्तु गुरूनिहैव
भुंजीय भोगान् रुधिरप्रदिग्धान्।५।

देवा समुद्र गंभीर आइकिजे। वरी तोहि आम्हाच देखिजे। परी क्षोभ मनीं नेणिजे। द्रोणाचिये।३६। हें अपार जे गगन। वरी तयाही होईल मान। परी अगाध भलें गहन। हृदय याचें।४०। वरी अमृतही विटे। कीं काळवशें वज्रही फुटे। परी मनोधर्म न लोटे। विकरविलाही।४१। स्नेहालागीं माये। म्हणिपें तें कीर होये। परी कृपा ते ते मूर्त आहे। द्रोणीं इये।४२। हा कारुण्याची आदी। सकलगुणांचा निधी। विद्यासिंधु निरवधि। अर्जुन म्हणे।४३। हो येणें मानें महंत। वरी आम्हांलागीं कृपावंत। आतां सांग पां येथें घात। चिंतूं येईल।४४। ऐसें हे रणीं वधावे। मग आपण सुखें राज्य भोगावें। तें मना न ये आघवें। जीवितेंसिं।४५। हें येणें मानें दुर्धर। जे याहींहूनि भोग सधर। ते असतु एथवर। भिक्षा मागतां भली।४६। ना तरी देशत्यागें जाइजे। कां गिरिकंदर सेविजे। परी शस्त्र आतां न धरिजे। इयांवरी।४७। देवा नवनिशितीं शरीं। वावरोनि यांच्या जिव्हारीं। भोग गिंवसावे रुधिरीं। बुडाले जे।४८। ते काढूनि काय किजती। लिप्त केंवीं सेविजती। मज नये हे उपपत्ती। याचिलागीं।४९। ऐसें अर्जुन ते अवसरीं। म्हणे श्रीकृष्णा अवधारीं। परी ते मना नयेचि मुरारी। आइकोनियां।५०। हें जाणोनि पार्थ भ्याला। मग पुनरपि बोलो लागला। म्हणे देवो कां चित्त या बोला। देतीचि ना।५१।

न चैतद्विद्मः कतरन्नो गरीयो
यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः।
यानेव हत्वा न जिजीविषाम–
स्तेऽवस्थिताः प्रमुखे धार्तराष्ट्राः।६।

येऱ्हवीं माझ्या चित्तीं जें होतें। तें मी विवरूनि बोलिलो एथें। परी निकें काय यापरौतें। तें तुम्ही जाणा।५२। पैं विरु जयांसि ऐकिजे। आणि या बोलींचि प्राण सांडिजे। ते एथ संग्रामव्याजें। उभे आहाती।५३। आतां ऐसें यातें वधावें। कीं अव्हेरूनियां निघावें। या दोहींमाजि बरवें। तें नेणो आम्ही।५४।

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः
पृच्छामि त्वां धर्मसंमूढचेताः।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे
शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्।७।

आम्हां काय उचित। तें पाहतां न स्फुरे येथ। जे मोहें येणें चित्त। व्याकुळ माझें।५५। तिमिराविरुद्ध जैसें। दृष्टीचें तेज भ्रंशे। मग पासींच असतां न दिसे। वस्तुजात।५६। देवा तैसें मज जाहलें। जे मन हें भ्रांती ग्रासिलें। आतां काय हित आपुलें। तेंही नेणें।५७। तरी श्रीकृष्णा तुवां जाणावें। निकें तें आम्हां सांगावें। जे सखा सर्वस्व आघवें। आम्हांसि तूं।५८। तूं गुरु बंधु पिता। तूं आमुची इष्ट देवता। तूंचि सदा रक्षिता। आपदी आमुतें।५९। जैसा शिष्यातें गुरू। सर्वथा नेणे अव्हेरू। कीं सारितांतें सागरू। त्यजी केवीं।६०। नातरी अपत्यातें माये। सांडूनि जरी जाये। तरी तें कैसेनि जिये। ऐकें कृष्णा।६१। तैसा सर्वांपरी आम्हांसी। देवा तूंचि एक आहासी। आणि बोलिलें जरी न मनिसी। मागील माझें।६२। तरी उचित काय आम्हां। जें व्यभिचरेना धर्मा। तें झडकरी पुरुषोत्तमा। सांग आतां।६३।

न हि प्रपश्यामि ममापनुद्या–
द्यच्छोकमुच्छोषणमिंद्रियाणाम्।
अवाप्य भूमावसपत्नमृद्धं
राज्यं सुराणामपि चाधिपत्यम्।८।

हें सकळ कुळ देखोनी। जो शोक उपनलासे मनीं। तो तुझिया वाक्यावांचुनी। न जाय आणिकें।६४। एथ पृथ्वीतल आप होईल। हें महेंद्रपदही पाविजेल। परी मोह हा न फिटेल। मानसींचा।६५। जैसीं सर्वथा बीजें आहाळलीं। तीं सुक्षेत्रीं जऱ्हीं पेरिलीं। तरी न विरूढती सिंचलीं। आवडेतैसीं।६६। ना तरी आयुष्य पुरलें आहे। तरी औषधें कांहीं नोहे। एथ एकचि उपेगा जाये। परमामृत।६७। तैसें राज्यभोगसमृद्धी। उज्जीवन नोहे इये बुद्धी। एथ जिव्हाळा कृपानिधी। कारुण्य तुझें।६८। ऐसें

अर्जुन तेथें बोलिला। तंव क्षण एक भ्रांती सांडिला। मग पुनरपि व्यापिला। उर्मी तेणें।६६। कीं मज पाहतां उर्मी नोहे। हें अनारिसें गमत आहे। तो ग्रासिला महामोहें। काळसर्पें।७०। सवर्म हृदयकल्हारीं। तेथ कारुण्यवेळेच्या भरीं। लागला म्हणोनि लहरी। भांजेचि ना।७१। हे जाणोनि ऐसी प्रौढी। जो दृष्टिसवेंचि विष फेडी। तो धांवया श्रीहरी गारुडी। पातला कीं।७२। तैसिया पंडुकुमारा व्याकुळा। मिरवतसे श्रीकृष्ण जवळा। तो कृपावशें अवलीळा। रक्षील आतां।७३। म्हणोनि तो पार्थु। मोहफणिग्रस्तु। म्यां म्हणितला हा हेतू। जाणोनियां।७४। मग देखा तेथ फाल्गुनु। घेतला असे भ्रांती कवळूनु। जैसा घनपडळीं भानु। आच्छादिजे।७५। तयापरी तो धनुर्धर। जाहलासे दुःखें जर्जर। जैसा ग्रीष्मकाळीं गिरिवर। वणवला कां।७६। म्हणोनि सहजें सुनीळ। कृपामृतें सजळ। तो वोळला श्रीगोपाळ। महामेघ।७७। तेथ सुदशनांची द्युती। तेची विद्युल्लता झळकती। गंभीर वाचा ते आयती। गर्जनेची।७८। आतां तो उदार कैसा वर्षेल। तेणें अर्जुनाचळ निवेल। मग नवी विरूढी फुटेल उन्मेषाची।७९। ते कथा आइका। मनाचिया आराणुका। ज्ञानदेव म्हणे देखा। निवृत्तिदास।८०।

संजय उवाचः— एवमुक्त्वा हृषीकेशं गुडाकेशः परंतप।
न योत्स्य इति गोविंदमुक्त्वा तूष्णीं बभूव ह।९।

ऐसें संजय असे सांगत। म्हणे राया तो पार्थ। पुनरपि शोकाकुळित काय बोले।८१। आइकें सखेद बोले श्रीकृष्णातें। जातां नाळवावें तुम्हीं मातें। मी सर्वथा न जुंझें एथें। भरंवसेनी।८२। ऐसें येकिहेळां बोलिला। मग मौन धरूनि ठेला। तेथ श्रीकृष्ण विस्मयो पावला। देखोनि तयातें।८३।

तमुवाच हृषीकेशः प्रहसन्निव भारत।
सेनयोरुभयोर्मध्ये विषीदंतमिदं वचः।१०।

मग आपुला चित्तीं म्हण। एथ हें कायि आदरिलें येणें। अर्जुन सर्वथा कांहीं नेणे। काय कीजे।८४। हा उमजे आतां कवणेपरी। कैसेनि धीर स्वीकारी। जैसा ग्रहातें पंचाक्षरी। अनुमानी कां।८५। नातरी असाध्य देखोनि व्याधि। अमृतासम दिव्य औषधि। वैद्य सूची निरवधि। निदानींची।८६। तैसें विवरीत असे श्रीअनंत। तया दोन्हीं सैन्याआंत। जयापरी पार्थ। भ्रांति सांडी।८७। तें कारण मनें धरिलें। मग सरोष बोलों आदरिलें। जैसें मातेच्या कोपीं थोकलें। स्नेह आथी।८८। कीं औषधाचिया कडवटपणीं। जैसी अमृताची पुरवणी। ते आहाच न दिसे परी गुणीं। प्रकट होय।८९। तैसीं वरीवरी पाहतां उदासें। आंत तरी अतिसुरसें। तियें वाक्यें हृषीकेशें। बोलों आदरिलीं।९०।

श्रीभगवानुवाचः— अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे।
गतासूनगतासूंश्च नानुशोचंति पंडिताः।११।

मग अर्जुनातें म्हणितलें। आम्हीं आजी हें नवल देखिलें। जे तुवां एथ आदरिलें। माझारीचि।९१। तूं जाणता तरी म्हणविसी। परी नेणिवेतें न सांडिसी। आणि शिकवूं म्हणों तरी बोलसी। बहुसाल नीति।९२। जात्यंधा लागे पिसें। मग तें सैरा धांवे जैसें। तुझें शाहाणपण तैसें। दिसतसे।९३। तूं आपणपें तरी नेणसी। परी या कौरवांतें शोचूं पाहासी। हा बहु विस्मय आम्हांसी। पुढतपुढती।९४। तरी सांग पां अर्जुना। तुजपासूनि स्थिती या त्रिभुवना। हे अनादि विश्वरचना। तें लटकें कायी।९५। एथ समर्थ एक आथी। तयापासूनि भूतें होती। तरी हें वायांचि काय बोलती। जगामाजीं।९६। हो कां सांप्रत ऐसें जाहालें। जे हे जन्ममृत्यू तुवां सृजिले। आणि नाश पावे नाशिलें। तुझेनि कायी।९७। तूं भ्रमलेपणें अहंकृती। यांसी घात न धरिसी चित्तीं। तरी सांगें कायी हे होती। चिरंतन।९८। कीं तूं एक वधिता। आणि सकळ लोक हा मरता। ऐसी भ्रांति झणें चित्ता। येवों देसी।९९। अनादिसिद्ध हे आघवें। होत जात स्वभावें। तरी तुवां कां शोचावें। सांगे मज।१००। परी मूर्खपणें नेणसी। न चिंतावें तें चिंतिसी। आणि तूंचि नीति सांगसी। आम्हांप्रति।१। देख विवेकी जे होती। ते दोहींतेंही न शोचिती। जे होय जाय हे भ्रांती। म्हणऊनियां।२।

न त्वेवाहं जातु नासं न त्वं नेमे जनाधिपाः।
न चैव न भविष्यामः सर्वे वयमतः परम्।१२।

अर्जुना सांगेन आइक। एथ आम्ही तुम्ही देख। आणि हे भूपति अशेख। आदिकरूनी।३। नित्यतां ऐसेचि असोनी। नातरी निश्चित क्षया जाऊनी। हें भ्रांति वेगळी करूनी। दोन्ही नाहीं।४। हे उपजे आणि नाशे। तें मायावशें दिसे। येऱ्हवीं तत्त्वतां वस्तु जें असें। तें अविनाशचि।५। जैसें पवनें तोय हालविलें। आणि तरंगाकार जाहालें। तरी कवण कें जन्मलें। म्हणों ये एथ।६। तेंचि वायूचें स्फुरण ठेलें। आणि उदक सहज सपाट जाहालें। तरी आतां काय निमालें। विचारीं पां।७।

देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा।

तथा देहांतरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति ।१३।

आइकें शरीर तरी एक। परी वयसाभेदें अनेक। हें प्रत्यक्षचि देख। प्रमाण तूं।८। एथ कौमारत्व दिसे मग तारुण्यीं ते भ्रंशे। परी देहचि न नाशे। एकेकासवें।९। तैसीं चैतन्याच्या ठायीं। इथें शरीरांतरें होती जाती पाही। ऐसें जाणे तया नाहीं। व्यामोहदुःख।११०।

मात्रास्पर्शास्तु कौंतेय शीतोष्णसुखदुःखदाः।
आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत ।१४।

एथ नेणावया हेंचि कारण। जें इंद्रियां आधीनपण। तिहीं आकळिजे अंतःकरण। म्हणऊनि भ्रम।११। इंद्रियें विषय सेविती। तेथ हर्ष शोक उपजती। ते अंतर आप्लविती। संगें येणें।१२। जयां विषयांच्या ठायीं। एकनिष्ठता कंहीं नाहीं। तेथ दुःख आणि कांहीं। सुखही दिसे।१३। देखें शब्दाची व्याप्ति। निंदा आणि स्तुति। तेथ द्वेषाद्वेष उपजती। श्रवणद्वारें।१४। मृदु आणि कठिण। हे स्पर्शाचे दोनी गुण। जे वपूचेनि संगें कारण। संतोषखेदा।१५। भ्यासुर आणि सुरेख। हें रूपाचें स्वरूप देख। जें उपजवी सुखदुःख। नेत्रद्वारें।१६। सुगंध आणि दुर्गंध। हा परिमळाचा भेद। जो घ्राणसंगें विषाद–। तोष देता।१७। तसाचि द्विविध रस। उपजवी प्रीतित्रास। म्हणूनि हा अपभ्रंश। विषयसंग।१८। देखें इंद्रियांआधीन होइजे। तैं शीतोष्णांतें पाविजे। आणि सुखदुःखी आकळिजे। आपणपें।१९। या विषयांवांचूनि कांहीं। आणीक सर्वथा रम्य नाहीं। ऐसा स्वभावचि पाहीं। इंद्रियांचा।१२०। हे विषय तरी कैसे। रोहिणीचें जळ जैसें। कां स्वप्नींचा आभासे। भद्रजाति।२१। देखें अनित्य तें यापरी। म्हणऊनि तूं अव्हेरीं। हा सर्वथा संग न धरीं। धनुर्धरा।२२।

यं हि न व्यथयंत्येते पुरुषं पुरुषर्षभ।
समदुःखसुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते ।१५।

हे विषय जयातें नाकळिती। तया सुखदुःखें न पवती। आणि गर्भवाससंगती। नाहीं तया।२३। तो नित्यरूप पार्था। वोळखावा सर्वथा। जो या इंद्रियार्थां। नागवेचि।२४।

नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः।
उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः ।१६।

आतां अर्जुना कांहीं एक। सांगेन मी आइक। जें विचारपर लोक। वोळखती।२५। या उपाधिमाजी गुप्त। चैतन्य असे सर्वगत। तें तत्त्वज्ञ सतत। स्वीकारिती।२६। सलिलीं पय जैसें। एक होऊनि मिनलें असें। परी निवडूनि राजहंसें। वेगळें कीजे।२७। कीं अग्निमुखें किडाळ। तोडोनियां चोखाळ। निवडिती केवळ। बुद्धिमंत।२७। नातरी जाणिवेच्या आयणीं। करितां दधिकडसणीं। मग नवनीत निर्वाणीं। दिसे जैसें।२९। कीं भूस बी एकवट। उपणितां राहे घनवट। तेथ उडे ते फळकट। जाणों आलें।१३०। तैसें विचारितां निरसलें। तें प्रपंच सहजें सांडवलें। मग तत्त्वतां तत्त्व उरलें। ज्ञानियांसी।३१। म्हणोनि अनित्याच्या ठायीं। तयां आस्तिक्यबुद्धि नाहीं। निष्कर्ष दोहींही। देखिला असे।३२।

अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम्।
विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति ।१७।

देखें सारासार विचारितां। भ्रांति ते पाहीं असारता। तरी ते सार स्वभावतां। नित्य जाणें।३३। हा लोकत्रयाकार। तो जयाचा विस्तार। तेथ नाम वर्ण आकार। चिह्न नाहीं।३४। जो सर्वदा सर्वगत। जन्मक्षयातीत। तया केलियाहि घात। कदा नोहे।३५।

अंतवंत इमे देहा नित्यस्योक्ताः शरीरिणः।
अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत ।१८।

आणि शरीरजात आघवें। हें नाशवंत स्वभावें। म्हणोनि तुवां झुंझावें। पांडुकुमरा।३६।

य एनं वेत्ति हंतारं यश्चैनं मन्यते हतम्।
उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते ।१९।

तूं धरूनि देहाभिमानातें। दिठी सूनि शरीरातें। मी मारिता हे मरत। म्हणत आहासी ।३७। तरी अर्जुना तूं हें नेणसी। जरी तत्त्वतां विचारिसी। तरी वधिता तूं नव्हसी। ते वध्य नव्हती ।३८।

न जायते म्रियते वा कदाचि–
न्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो
न हन्यते हन्यमाने शरीरे ।२०।
वेदाविनाशिनं नित्यं य एनमजव्ययम्।
कथं स पुरुषः पार्थ कं घातयति हंति कम् ।२१।

जैसें स्वप्नामाजीं देखिजे। तें स्वप्नींचि साच आपजे। मग चेऊनियां पाहिजे। तंव कांहीं नाहीं ।३६। तैसी हे जाण माया। तूं भ्रमत आहासी वायां। शस्त्रें हाणितलिया छाया। जैसी आंगीं न रुपे ।१४०। कां पूर्ण कुंभ उलंडला। तेथ बिंबाकार दिसे भ्रंशला। परी भानु नाहीं नासला। तयासवें ।४१। नातरी मठीं आकाश जैसें। मठाकृती अवतरलें असे। तो भंगलिया आपैसें। स्वरूपचि ।४२। तैसें शरीराच्या लोपीं। सर्वथा नाश नाहीं स्वरूपीं। म्हणऊनि तूं हे नारोपीं। भ्रांति बापा ।४३।

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा–
न्यन्यानि संयाति नवानि देही ।२२।

जैसें जीर्ण वस्त्र सांडिजे। मग नूतन वेढिजे। तैसें देहांतरातें स्वीकारिजे। चैतन्यनाथें ।४४।

नैनं छिंदंति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयंत्यापो न शोषयति मारुतः ।२३।
अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च।
नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः ।२४।

हा अनादि नित्यसिद्ध। निरुपाधि विशुद्ध। म्हणऊनि शस्त्रादिकीं छेद। न घडे यथा ।४५। हा प्रळयोदकें नाप्लवे। हा अग्निदाह न संभवे। एथ महाशोष न प्रभवे। मारुताचा ।४६। अर्जुना हा नित्य। अचळ हा शाश्वत। सर्वत्र सदोदित। परिपूर्ण हा ।४७।

अव्यक्तोऽयमचिंत्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते।
तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचितुमर्हसि ।२५।

हा तर्काचिये दिठी। गोचर नोहे किरीटी। ध्यान याचिये भेटी। उत्कंठा वाहे ।४८। हा सदा दुर्लभ मना। आप नोहे साधना। निस्सीम हा अर्जुना। पुरुषोत्तम ।४६। हा गुणत्रयारहित। अनादि अविकृत। व्यक्तीसी अतीत। सर्वरूप ।१५०। अर्जुना ऐसा हा जाणावा। सकळात्मक देखावा। मग सहजें शोक आघवा। हरेल तुझा ।५१।

अथ चैनं नित्यजातं नित्यं वा मन्यसे मृतम्।
तथापि त्वं महाबाहो नैनं शोचितुमर्हसि ।२६।

अथवा ऐसा नेणसी। तूं अंतवंतचि मानिसी। तऱ्ही शोचूं न पवसी। पांडुकुमरा ।५२। जे आदि स्थिति अंत। हा निरंतर असे नित्य। जैसा प्रवाह अनुस्यूत। गंगाजळाचा ।५३। तें आदि नाहीं खंडलें। समुद्रीं तरी असे मिनलें। आणि जातांचि मध्यें उरलें। दिसे जैसें ।५४। इथें तीन्हीं तयापरी। सरसींच सदा अवधारीं। भूतांसी कवणीं अवसरीं। ठाकती ना ।५५। म्हणोनि हे आघवें। एथ तुज न लगे शोचावें। जे स्थितीचि हे स्वभावें। अनादि ऐसी ।५६। नातरी हे अर्जुना। नयेचि तुझिया मना। जे देखोनि लोक अधीना। जन्मक्षया ।५७। तरी एथें कांहीं। तुज शोकासी कारण नाहीं। हे जन्म मृत्यु पाहीं। अपरिहर ।५८।

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि।२७।

उपजे तें नाशे। नाशिलें पुनरपि दिसे। हें घटिकायंत्र तैसें। परिभ्रमे गा।५६। नातरी उदोअस्त अपैसे। अखंडित होत जात जैसे। हें जन्ममरण तैसें। अनिवार जगीं।१६०। महाप्रळयअवसरें। हें त्रैलोक्यही संहरे। म्हणोनि हा न परिहरे। आदिअंत।६१। तूं जरी हें ऐसें मानिसी। तरी खेद कां करिसी। काय जाणतचि नेणसी। धनुर्धरा।६२। एथ आणिकही एक पार्था। तुज बहुतीं परी पाहतां। दुःख करावया सर्वथा। विषो नाहीं।६३।

अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत।
अव्यक्तनिधनान्येव तत्र का परिदेवना।२८।

जियें समस्तें इयें भूतें। जन्माआदि अमूर्तें। मग पातलीं व्यक्तीतें। जन्मलेया।६४। तियें क्षयासि जेथ जाती। तेथ निभ्रांत आनें नव्हती। देखें पूर्वस्थितीच येती। आपुलिये।६५। येर मध्यें जे प्रतिभासे। तें निद्रिता स्वप्न जैसें। तैसा आकार हा मायावशें। सत्स्वरूपीं।६६। नातरी पवनें स्पर्शिलें नीर। पढियासे तरंगाकार। कां परापेक्ष अलंकार। व्यक्ती कनकीं।६७। तसें सकळ हें मूर्त। जाण पां मायाकारित। जैसें आकाशीं बिंबत। अभ्रपटळ।६८। तैसें आदिचि जें नाहीं। तयालागीं तूं रुदसी कायी। तूं अवीट तें पाहीं। चैतन्य एक।६९। जयाची आर्तीचि भोगित। विषयीं त्यजिले संत। जयालागीं विरक्त। वनवासिये।१७०। दृष्टी सूनि जयातें। ब्रह्मचर्यादि व्रतें। मुनीश्वर तपातें। आचरताती।७१।

आश्चर्यवत्पश्यति कश्चिदेन–
माश्चर्यवद्वदति तथैव चान्यः।
आश्चर्यवच्चैवमन्यः शृणोति
श्रुत्वाप्येनं वेद न चैव कश्चित्।२९।

एक अंतरीं निश्चळ। जें निहाळितां केवळ। विसरले सकळ। संसारजात।७२। एकां गुणानुवाद करितां। उपरती होऊनि चित्ता। निरवधि तल्लीनता। निरंतर।७३। एक ऐकतांचि निवाले। ते देहभावीं सांडिले। एक अनुभवें पातले। तद्रूपता।७४। जैसे सरिताओघ समस्त। समुद्रामाजीं मिळत। परी माघोते न समात। परतले नाहीं।७५। तैसिया योगीश्वरांचिया मती। मिळणीसवें एकवटती। परी जे विचारूनि पुनरावृत्ती। भजतीचिना।७६।

देही नित्यमवध्योऽयं देहे सर्वस्य भारत।
तस्मात्सर्वाणि भूतानि न त्वं शोचितुमर्हसि।३०।

जें सर्वत्र सर्वही देहीं। जया करितांही घात नाहीं। तें विश्वात्मक तूं पाहीं। चैतन्य एक।७७। इयाचेनि स्वभावें। हें होत जात आघवें। तरी सांग काय शोचावें। एथ तुवां।७८। एऱ्हवीं तरी पार्था। तुज कां नेणों न मने चित्ता। परी किडाळ हें शोचितां। बहुतांपरी।७९।

स्वधर्ममपि चावेक्ष्य न विकंपितुमर्हसि।
धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोन्यत्क्षत्रियस्य न विद्यते।३१।

तूं अझुनी कां न विचारिसी। काय हें चिंतित आहासी। स्वधर्म तो विसरलासी। तरावें जेणें।१८०। या कौरवां भलतें जाहालें। अथवा तुजचि कांहीं पातलें। कीं युगचि हें बुडालें। जऱ्हीं एथ।८१। तरी स्वधर्म एक आहे। तो सर्वथा त्याज्य नोहे। मग तरिजेल काय पाहें। कृपाळपणें।८२। अर्जुना तुझें चित्त। जऱ्ही जाहालें द्रवीभूत। तऱ्ही हें अनुचित। संग्रामसमयीं।८३। अगा गोक्षीर जरी जाहालें। तरी पथ्यासि नाहीं घेतलें। ऐसेनिहि विष होय सूदलें। नवज्वरीं देतां।८४। तैसें आनीं आन करितां। नाश होईल स्वहिता। म्हणऊनि तूं आतां। सावध होईं।८५। वायांचि व्याकुळ कायी। आपुला निजधर्म पाही। जो आचरितां बाध नाहीं। कवणे काळीं।८६। जैसें मागचि चालतां। अपावो न पवे सर्वथा। कां दीपाधारें वर्ततां। नाडळिजे।८७। तयापरी पार्था। स्वधर्मे राहाटतां। सकळ कामपूर्णता। सहजें होय।८८। म्हणोनि यालागीं पाहीं। तुम्हां क्षत्रिया आणिक कांहीं। संग्रामावांचूनि नाहीं। उचित जाणें।८९। निष्कपट होआवें। उसिणा घाई झुंझावें। हें असो काय सांगावें। प्रत्यक्षावरी।१९०।

यदृच्छया चोपपन्नं स्वर्गद्वारमपावृतम्।
सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ लभन्ते युद्धमीदृषम्।३२।

अर्जुना जुंझ देख आतांचें। हें हो कां दैव तुमचें। की निधान सकळ धर्माचें। प्रकटलें असे।९१। हा संग्राम काय म्हणिपे। कीं स्वर्गचि येणें रूपें। मूर्त कां प्रतापें। उदय केला।९२। नातरी गुणाचेनि पतिकरें। आर्तीचेनि पडिभरें। हे कीर्तीचि स्वयंवरें। आली तुज।९३। क्षत्रियें बहुत पुण्य कीजे। तैं जुंझ ऐसें लाहिजे। जैसें मार्गीं जातां आडळिजे। चिंतामणीसी।९४। नातरी जांभया पसरे मुख। तेथ अवचटें पडे पीयूख। तैसा संग्राम हा देख। पातला असे।९५।

अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं संग्रामं न करिष्यसि।
ततः स्वधर्मं कीर्तिं च हित्वा पापमवाप्स्यसि।३३।

आतां हा ऐसा अव्हेरिजे। मग नाथिलें शोचूं बैसिजे। तरी आपण आहाणा होईजे। आपणपेयां।९६। पूर्वजांचे जोडलें। आपणचि होय धाडिलें। जरी आजी शस्त्र सांडिलें। रणीं इये।९७। तरी असती कीर्ति जाईल। जगचि अभिशाप देईल। आणि गिंवसित पावतील। महादोष।९८। जैसी भर्तारेंहीन वनिता। उपहती पावे सर्वथा। मग तैसी दशा जीविता। स्वधर्मेंवीण।९९। ना तरी रणीं शव सांडिजे। तें चौमेरीं गिधीं विदारिजे। तैसें स्वधर्महीना अभिभविजे। महादोषीं।२००।

अकीर्तिं चापि भूतानि कथयिष्यंति तेऽव्ययाम्।
संभावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते।३४।

म्हणोनि स्वधर्म हा सांडशील। तरी पापा वरपडा होसील। आणि अपेश तें न वचेल। कल्पांतवरी।१। जाणतेनि तंवचि जिवावें। जंव अपकीर्ति आंगा न पवे। आणि सांग पां केंवि निगावें। एथोनियां।२। तूं निर्मत्सर सदयता। एथूनि निघसील कीर माघौता। परी तें गति समस्तां। न मनेल ययां।३। हें चहूंकडूनि कवळितील। बाणवरीं घेतील। तेथ पार्था न सुटिजेल। कृपाळूपणें।४। ऐसेनिहि प्राणसंकटें। जरी विपायें पां निघणें घटे। तरी ते जियालें वोखटें। मरणाहुनी।५।

भयाद्रणादुपरते मंस्यंते त्वां महारथाः।
येषां च त्वं बहुमतो भूत्वा यास्यसि लाघवम्।३५।

तूं आणिकही न विचारिसी। एथ संभ्रमें जुंझों आलासी। आणि सकणवपणें निघालासी। मागुता जरी।६। तरी तुझें तें अर्जुना। या वैरियां दुर्जनां। कां प्रत्यया येईल मना। सांगे मज।७।

अवाच्यवादांश्च बहून्वदिष्यंति तवाहिताः।
निंदंतस्तव सामर्थ्यं ततो दुःखतरं नु किम्।३६।

हे म्हणती गेला रे गेला। अर्जुन आम्हां बिहाला। हा सांगे बोल उरला। निका कायी।८। लोक सायासेंकरूनि बहुतें। वेंचिती आपुलीं जीवितें। परी वाढविती कीर्तीतें। धनुर्धरा।९। ते तुज अनायासें। अनकळित जोडिली असे। हें अद्वितीय जैसें। गगन आहे।२१०। तैसी कीर्ति निःसीम। तुझ्या ठायीं निरुपम। तुझे गुण उत्तम। तिहीं लोकीं।११। दिगंतींचे भूपति। भाट होऊनि वाखाणिती। जे ऐकिलिया दचकती। कृतांतादिक।१२। ऐक ऐसी महिमा घनवट। गंगा तैसी चोखट। जिया देखीं जगीं सुभट। वांठ जाहाले।१३। तें पौरुष तुझें अद्भुत। आइकोनियां हे समस्त। जाले अतिविरक्त। जीवितेंसी।१४। जैसा सिंहाचिया हांका। युगांत होय मदमुखा। तैसा कौरवां अशेखा। धाक तुझा।१५। जैसे पर्वत वज्रातें। नातरी सर्प गरुडातें। तैसे अर्जुना हे तूतें। मानिती सदा।१६। तें अगाधणपण जाईल। मग हीनत्व अंगा येईल। जरी मागुता निघसील। न जुंझतचि।१७। आणि हे पळतां पळों नेदिती। धरूनि अवकळा करिती। न गणित कुटी बोलती। आइकतां तुज।१८। मग ते वेळीं हियें फुटावें। आतां लाठेपणें कां न जुंझावें। हें जिंतलें तरी भोगावें। महीतळ।१९।

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।
तस्मादुत्तिष्ठ कौंतेय युद्धाय कृतनिश्चयः।३७।

नातरी रणीं एथ। जुंझतां वेंचलें जीवित। तरी स्वर्गसुख अनकळित। पावसील।२२०। म्हणोनि ये गोठी। विचार न करी किरीटी। आतां धनुष्य घेऊनि उठी। जुंझ वेगीं।२१। देखें स्वधर्म हा आचरतां। दोष नाशे असतां। तुज भ्रांति हे कवण चित्ता। पातकाची।२२। सांगे प्लवेंचि काय बुडिजे। का मार्गीं जातां आडळिजे। परी

विपायें चालों नेणिजे। तरी तेंही घडे।२३। अमृतें तरीचि मरिजे। जरी विषेंसी सेविजे। तैसा स्वधर्मीं दोष पाविजे। हेतुकपणें।२४। म्हणोनियां पार्था। हेतु सांडूनि सर्वथा। तुज क्षात्रवृत्ती जुंझतां। पाप नाहीं।२५।

सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ।
ततो युद्धाय युज्यस्व नैनं पापमवाप्स्यसि।३८।

सुखीं संतोषा न यावें। दुःखीं विषादा न भजावें। आणि लाभालाभ न धरावे। मनामाजीं।२६। एथ विजयपण होईल। कीं सर्वथा देह जाईल। हें आधींचि कांहीं पुढील। चिंतावें ना।२७। आपणयां उचिता। स्वधर्में राहाटतां। जें पावे तें निवांता। साहोनि जावें।२८। ऐसेया मनें होआवें। तरी दोष न घडे स्वभावें। म्हणोनि आतां जुंझावें। निभ्रांत तुवां।२९।

एषा तेऽभिहिता सांख्ये बुद्धिर्योगे त्विमां शृणु।
बुद्ध्या युक्तो यया पार्थ कर्मबंधं प्रहास्यसि।३९।

हें सांख्यस्थिति मुकुळित। सांगितली तुज एथ। आतां बुद्धियोग निश्चित। अवधारीं पां।२३०। जया बुद्धियुक्ता जालिया पार्था। कर्मबंध सर्वथा। बाधू न पवे।३१। जैसें वज्रकवच लेइजे। मग शस्त्रांचा वर्षाव साहिजे। परी जैतेंसी उरिजे। अचंबित।३२।

नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते।
स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्।४०।

तैसें आहिक तरी न नशे। आणि मोक्ष तो उरला असे। जेथ पूर्वानुक्रम दिसे। चोखाळत।३३। कर्माधारें राहाटिजे। परी कर्मफळा न निरीक्षिजे। जैसा मंत्रज्ञ न बधिजे। भूतबाधा।३४। तियापरी जे सुबुद्धि। आपु जालिया निरवधि। हा असताचि उपाधि। आकळूं न सके।३५। जेथ न संचरे पुण्यापाप। जें सूक्ष्म अति निष्कंप। गुणत्रयादि लेप। न लगती जेथ।३६। अर्जुना ते पुण्यवशें। जरी अल्पचि हृदयीं बुद्धि प्रकाशे। नरी अशेषही नाशे। संसारभय।३७।

व्यवसायात्मिका बुद्धिरेकेह कुरुनंदन।
बहुशाखा ह्यनंताश्च बुद्धयोऽव्यवसायिनाम्।४१।

जैसी दीपकळिका धाकुटी। परी बहु तेजातें प्रगटी। तैसीं सद्बुद्धि हे थेंकुटी। म्हणो नये।३८। पार्था बहुतीं परी। हें अपेक्षिजे विचारशूरीं। जे दुर्लभ चराचरीं। सद्वासना।३९। आणिकासारिखा बहुवस। जैसा न जोडे परिस। का अमृताचा लेश। दैवगुणें।२४०। तैसी दुर्लभ सद्बुद्धि। जिये परमात्माचि अवधि। जैसा गंगेसी उदधि। निरंतर।४१। तैसें ईश्वरावांचुनि कांहीं। जिये आणिक लाणीं नाहीं। ते एकचि बुद्धि पाहीं अर्जुना जनीं।४२। येर ते दुर्मती। जे बहुधा असे विकरती। तेथ निरंतर रमती। अविवेकिये।४३। म्हणोनि तया पार्था। स्वर्ग संसार नरकावस्था। आत्मसुख सर्वथा। दृष्ट नाहीं।४४।

यामिमां पुष्पितां वाचं प्रवदंत्यविपश्चितः।
वेदवादरताः पार्थ नान्यदस्तीति वादिनः।४२।

वेदाधारें बोलती। केवळ कर्म प्रतिष्ठिती। परी कर्मफळीं आसक्ती। धरूनियां।४५। म्हणती संसारीं जन्मिजे। यज्ञादिक कर्म कीजे। मग स्वर्गसुख भोगिजे। मनोहर।४६। एथ हेंवांचूनि कांहीं। आणीक सर्वथा सुखचि नाहीं। ऐसें अर्जुना बोलती पाहीं। दुर्बुद्धि ते।४७।

कामात्मानः स्वर्गपरा जन्मकर्मफलप्रदाम्।
क्रियाविशेषबहुलां भोगैश्वर्यगतिं प्रति।४३।

देखें कामनाअभिभूत। होऊनि कर्में आचरत। ते केवळ भोगीं चित्त। देऊनियां।४८। क्रियाविशेषें बहुतें। न लापिती विधीतें। निपुण होऊनि धर्मातें। अनुष्ठिती।४९।

भोगैश्वर्यप्रसक्तानां तयापहृतचेतसाम्।
व्यवसायात्मिका बुद्धिः समाधौ न विधीयते।४४।

परी एकचि कुडें करिती। जे स्वर्गकाम मनीं धरिती। यज्ञपुरुषा चुकती। भोक्ता जो।२५०। जैसा कर्पूराचा राशि कीजे। मग अग्नि लाऊनि दीजे। का मिष्टान्नीं संचरविजे। काळकूट।५१। दैवें अमृतकुंभ जोडला। तो पायें हाणोनि उलंडिला। तैसा नासिती धर्म निपजला। हेतुकपणें।५२। सायासें पुण्य अर्जिजे। मग संसार कां

अपेक्षिजे। परा नेणती ते काय कीजे। अप्राप्त देखे।५३। जैसीं रांधवणी रससोय निकी। करूनियां मोलें विकी। तैसा भोगासाठीं अविवेकी। धाडिती धर्म। म्हणोनि हे पार्था। दुर्बुद्धि देख सर्वथा। तयां वेदवादरतां। मनीं वसे।५५।

त्रैगुण्यविषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन।
निर्द्वंद्वो नित्यसत्त्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान्।४५।

तिहीं गुणीं आवृत। हे वेद जाण निभ्रांत। म्हणोनि उपनिषदादि समस्त। सात्त्विक ते।५६। येर रजतमात्मक। जेथ निरूपिजे कर्मादिक। जे केवळ स्वर्गसूचक। धनुर्धरा।५७। म्हणोनि तूं जाण। हे सुखदुःखांसीच कारण। एथ झणें अंतःकरण। रिघों देसी।५८। तूं गुणत्रयातें अव्हेरीं। मी माझें हें न करीं। एक आत्मसुख अंतरीं। विसंब झणीं।५९।

यावानर्थ उदपाने सर्वतः संप्लुतोदके।
तावान्सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः।४६।

जरी वेदें बहुत बोलिलें। विविध भेद सूचिले। तऱ्ही आपण हित आपुलें। तेंचि घेपे।२६०। जैसा प्रगटलिया गभस्ती। अशेषही मार्ग दिसती। तरी तेतुलेही काय चालिजती। सांगे मज।६१। उदकमय सकळ। जऱ्ही जाहलें असे महीतळ। तरी आपण घेपे केवळ। आर्तीचजोगें।६२। तैसें ज्ञानी जे होती। ते वेदार्थातें विवरिती। मग अपेक्षित तें स्वीकारिती। शाश्वत जें।६३।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि।४७।

म्हणोनि आइकें पार्था। याचिपरी पाहतां। तुज उचित होय आतां। स्वकर्म हें।६४। आम्ही समस्तही विचारिलें। तंव ऐसेचि हें मना आले। जे न सांडिजे तुवां आपुलें। विहित कर्म।६५। परी कर्मफळीं आस न करावी। आणि अकर्मीं संगती न व्हावी। हे सत्क्रियाचि आचरावी। हेतूविण।६६।

योगस्थः कुरु कर्माणि संगं त्यक्त्वा धनंजय।
सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते।४८।

तूं योगयुक्त होउनी। फळाचा संग टाकुनि। मग अर्जुना चित्त देउनी। करी कर्में।६७। परी आदरिलें कर्म दैवें। जरी समाप्तीतें पावे। तरी विशेषें तेथ तोषावें। हेंही नको।६८। कीं निमित्तें कोणे एकें। तें सिद्धी न वचतांचि ठाके। तरी तेथींचेनि अपरितोखें। क्षोभावेंना।६९। आचरतां सिद्धी गेलें। तरी काजाचि कीर आलें। परी ठेलयाही सगुण जाहले। ऐसेंचि मानीं।२७०। देखें जेतुलालें कर्म निपजे। तेतुलें आदिपुरुषीं समर्पिजे। तरी परिपूर्ण सहजें। जाहलें जाणें।७१। देख सतासत कर्मीं। हें जें सरसेपण मनोधर्मीं। तेचि योगस्थिती उत्तमीं। प्रशंसिजे।७२।

दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनंजय।
बुद्धौ शरणमन्विच्छ कृपणाः फलहेतवः।४९।
बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते।
तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम्।५०।

अर्जुना समत्व चित्ताचें। तेंचि सार जाण योगाचे। जेथ मन आणि बुद्धीचे। ऐक्य आथि। ७३। तो बुद्धियोग विवरितां। बहुतें पाडें पार्था। दिसे हा अरुता। कर्मयोग।७४। परी तेचि कर्म आचरिजे। तरीच हा योग पाविजे। जे कर्मशेष सहजें। योगस्थिती।७५। म्हणोनि बुद्धियोग सधर। तेथ अर्जुना होईं स्थिर। मनें करी अव्हेर। फहहेतूचा।७६। जे बुद्धियोगा योजिले। तेचि पारगत जाहले। इंहीं उभयसंबंधी सांडिले। पापपुण्यीं।७७।

कर्मजं बुद्धियुक्ता हि फलं त्यक्त्वा मनीषिणः।
जन्मबंधविनिर्मुक्ताः पदं गच्छंत्यनामयम्।५१।

तें कर्मीं तरी वर्तती। परी कर्मफळा नातळती। आणि यातायाती लोपती। अर्जुना तयां।७८। मग निरामयभरित। पावती पद अच्युत। ते बुद्धियोगयुक्त। धनुर्धरा।७९।

यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति।
तदा गंतासि निर्वेदं श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च।५२।

तूं ऐसा तैं होसी। जैं मोहातें यया सांडिसी। आणि वैराग्य मानसीं। संचरेल।२८०। मग निष्कळंक गहन। उपजेल आत्मज्ञान। तेणें निचाड होईल मन। अपैसें तुझें।८१। तेथ आणिक काहीं जाणावें। का मागील तें स्मरावें। हें अर्जुना आघवें। पारुषेल।८२।

श्रुतिविप्रतिपन्ना ते यदा स्थास्यति निश्चला।
समाधावचला बुद्धिस्तदा योगमवाप्स्यसि।५३।

इंद्रियांचिया संगती। जिये पसर होतसे मती। ते स्थिर होईल मागुती। आत्मस्वरूपीं।८३। समाधिसुखीं केवळ। जैं बुद्धि होईल निश्चळ। तैं पावसी तूं सकळ। योगस्थिति।८४।

अर्जुन उवाचः– स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव।
स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किम्।५४।

तेथ अर्जुन म्हणे देवा। हाचि अभिप्रावो आघवा। मी पुसेन आतां सांगावा। कृपानिधि।८५। मग अच्युत म्हणे सुखें। जें किरीटी तुज निकें। तें पूस पां उन्मेखें। मनाचेनि।८६। या बाला पार्थें। म्हणीतलें सांग पां श्रीकृष्णा तें। काय म्हणिपे स्थितप्रज्ञातें। वोळखों केवीं।८७। आणि स्थिरबुद्धि जो म्हणिजे। तो कैसिया चिह्नीं जाणिजे। जो समाधिसुख भुंजे। अखंडित।८८। तो कवणे स्थिती असे। कैसेनि रूपीं विलसे। देवा सांगावे हें ऐसें। लक्ष्मीपति।८९। तंव परब्रह्मअवतरण। जो षड्गुणाधिकरण। तो काय तेथ श्रीनारायण। बोलत असे।२९।

श्रीभगवानुवाचः– प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्पार्थ मनोगतान्।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते।५५।

म्हणे अर्जुना परियेसी। जो हा अभिलाष प्रौढ मानसीं। तो अंतराय स्वसुखेंसीं। करीत असे।९१। जो सर्वदा नित्य तृप्त। अंतःकरणभरित। परी विषयामाजीं पतित। जेणें संगें कीजे।९२। तो काम सर्वथा जाये। जयाचें आत्मसंतोषीं मन राहे। तोचि स्थितप्रज्ञ होये। पुरुष जाणें।९३।

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः।
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते।५६।

नाना दुःखीं प्राप्तीं। जया उद्वेग नाहीं चित्तीं। आणि सुखाचिया आर्ती। अडपैचिजेना।९४। अर्जुना तयाच्या ठायीं। कामक्रोध सहजें नाहीं। आणि भयातें नेणें कंहीं। परिपूर्ण तो।९५। ऐसा जो निरवधी। तो जाण पां स्थिरबुद्धी। जो निरसूनि उपाधी। भेदरहित।९६।

यः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम्।
नाभिनंदति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।५७।

जो सर्वदा सदा सरिसा। परिपूर्ण चंद्र का जैसा। अधमोत्तम प्रकाशा। माजि न म्हणे।९७। ऐसी अनवच्छिन्न समता। भूतमात्रीं सदयता। आणि पालट नाहीं चित्ता। कवणे वेळे।९८। गोमटें कांहीं पावे। तरी संतोषें तेणें नाभिभवे। जो ओखटेनि नागवे। विषादासी।९९। ऐसा हरिखशोकरहित। जो आत्मबोधभरित। तो जाण पां प्रज्ञायुक्त। धनुर्धरा।३००।

यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः।
इंद्रियाणींद्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।५८।

का कूर्म जियापरी। उवाइला अवेव पसरी। नातरी इच्छावशें आवरी। आपले आपण।१। तैसीं इंद्रियें आपैतीं। जयाचें म्हणितलें करिती। तयाची प्रज्ञा जाण स्थिती। पावली असे।२।

विषया विनिवर्तंते निराहारस्य देहिनः।
रसवर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते।५९।

अर्जुना आणिकही एक। सांगेन ऐकें कवतिक। जें विषयातें साधक। त्यजिती नियमें।३। श्रोत्रादि इंद्रियें आवरिती। परी रसने नियम न करिती। ते सहस्रधा कवळिजती। विषयीं इंहीं।४। जैसी वरिवरी पालवी खुडिजे। आणि मुळीं उदक घालिजे। तरी कैसेनि नाश निपजे। तया वृक्षा।५। तो उदकाचेनि बळें अधिकें। जैसा आडवेनि आंगें फांके। तैसा मानसीं विषय पोखें। रसनाद्वारें।६। येरां इंद्रियां विषय तुटे। तैसा नियमूं न ये रस हटें। जे जीवनचि हें न घटे। येणेंविण।७। मग अर्जुना स्वभावें। ऐसियाही नियमातें पावे। जैं का परब्रह्म अनुभवें। होऊनि जाइजे।८। तैं शरीरभाव नासता। इंद्रियें विषय विसरती। जैं सोहंभवप्रतीती। प्रगट होय।९।

यततो ह्यपि कौंतेय पुरुषस्य विपश्चितः।
इंद्रियाणि प्रमाथीनि हरंति प्रसभं मनः।६०।

येऱ्हवीं तरी अर्जुना। हें आया न ये साधना। जे राहाटताति जतना। निरंतर।३१०। जयातें अभ्यासाची घरटी। यमनियमांची ताटी। जे मनातें सदा मुठी। धरूनि आहाती।११। तेही किजती कासाविसी। या इंद्रियांची प्रौढी ऐसी। जैसी मंत्रज्ञातें विवसी। भुलवी का।१२। देखें विषय हें तैसें। पावती ऋद्धिसिद्धीचेनि मिषें। मग आकळिती स्पर्शें। इंद्रियांचेनि।१३। तिये संधी मन माये। मग अभ्यासीं ठोठावलें ठाये। ऐसें बळकटपण आहे इंद्रियांचें।१४।

तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः।
वशे हि यस्येंद्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।६१।

म्हणोनि आइकें पार्था। यातें निर्दळी जो सर्वथा। सर्वविषयीं आस्था। सांडूनियां।१५। तोचि तूं जाण। योगनिष्ठेसि कारण। जयाचें विषयसुखें अंतःकरण। झकवेना।१६। जो आत्मबोधयुक्त। होऊनि असे सतत। जो मातें हृदयाआंत। विसंबेना।१७। येऱ्हवीं बाह्य विषय तरी नाहीं। परी मानसीं होईल जरी कांहीं। तरी साद्यंतचि पाहीं। संसार असे।१८। जैसा का विषाचा लेश। घेतलिया होय बहुवस। मग निभ्रांत करी नाश। जीवितासी।१९। तैसी विषयाची शंका। मनीं वसति देखा। घात करी अशेखा। विवेकाजाता।३२०।

ध्यायतो विषयान्पुंसः संगस्तेषूपजायते।
संगात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते।६२।
क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति।६३।

जरीं हृदयीं विषयस्मृति। तरी निःसंगाही आपजे संगती। संगें प्रगटे मूर्ती। अभिलाषाची।२१। जेथ काम उपजला। तेथ क्रोध आधींचि आला। क्रोधीं असे ठेविला। संमोह जाणें।२२। संमोहा जालिया व्यक्ती। तरी नाश पावे स्मृती। चंडवातें ज्याती। हत जैसी।२३। का अस्तमानीं निशी। जैसी सूर्यतेजातें ग्रासी। तैसी दशा स्मृतिभ्रंशी प्राणियासी।२४। मग अज्ञानांध केवळ। तेणें आप्लविजे सकळ। तेथ बुद्धि होय व्याकुळ। हृदयामाजीं।२५। जैसें जात्यंधा पळणी पावे। मग तें काकुळती सैरा धांवे। तैसी बुद्धीसि होती भंवे। धनुर्धरा।२६। ऐसा स्मृतिभ्रंश घडे। मग सर्वथा बुद्धि अवघडे। तेथ समूळ हे उपडे। ज्ञानजात।२७। चैतन्याच्या भ्रंशीं। शरीरा दशा जैसी। तैसें पुरुषा बुद्धिनाशीं। होय देखें।२८। म्हणोनि आइकें अर्जुना। जैसा विस्फुलिंग लागे इंधना। मग तो प्रौढ जालिया त्रिभुवना। पुरों शके।२९। तैसें विषयांचें ध्यान। जरी विपायें वाहे मन। तरी येसणें हें पतन। गिंवसीत पावे।३३०।

रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिंद्रियैश्चरन्।
आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति।६४।

म्हणोनि विषय आघवे। सर्वथा मनौनि सांडावे। मग रागद्वेष स्वभावें। नाशतील।३१। पार्था आणिकही एक। जरी नाशले हे रागद्वेख। तरी इंद्रियां विषयीं बाधक। रमतां नाहीं।३२। जैसा सूर्य आकाशगत। रश्मिकरें जगातें स्पर्शत। तरी संगदोषें काय लिंपत। तेथींचेनि।३३। तैसा इंद्रियार्थी उदासीन। आत्मरसेंचि निर्भिन्न। जो कामक्रोधविहीन। होऊनि असे।३४। तरी विषयांतही कांहीं। आपणपेंवांचूनि नाहीं। मग विषय कवण कायीं। बाधितील कवणा।३५। जरी उदकीं उदक बुडिजे। का अग्नि आगीं पोळिजे। तरी विषयसंगें आप्लविजे। परिपूर्ण तो।३६। ऐसा आपणचि केवळ। होऊनि असे निखिळ। तयाची प्रज्ञा अचळ। निभ्रांत मानीं।३७।

प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते।
प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते।६५।

देखें अखंडित प्रसन्नता। आथी जेथ चित्ता। तेथ रिगणें नाहीं समस्तां। संसारदुःखां।३८। जैसा अमृताचा निर्झर। प्रसवे जयाचा जठर। तया क्षुधेतृषेचा अडदर। कांहींचि नाहीं।३६। तैसें हृदय प्रसन्न होये। तरी दुःख कैचें कें आहे। तेथ आपैसी बुद्धि राहे। परमात्मरूपीं।३४०। जैसा निर्वातींचा दीप। सर्वथा नेणे कंप। तैसा स्थिरबुद्धि स्वस्वरूप। योगयुक्त।४१।

नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चाऽयुक्तस्य भावना।
न चाभावयतः शांतिरशांतस्य कुतः सुखम्।६६।

ये युक्तीची कडसणी। नाहीं जयाच्या अंतःकरणीं। तो आकळिला जाण गुणीं। विषयादिकीं।४२। तया स्थिरबुद्धि पार्था। कहीं नाहीं सर्वथा। आणि स्थैर्याची आस्था। तेही नुपजे।४३। निश्चळत्वाची भावना। जरी नव्हेची देखें मना। तरी शांति केवीं अर्जुना। आप होय।४४। जेथ शांतीचा जिव्हाळा नाहीं। तेथ सुख विसरोनि न रिघे कांहीं। जैसा पापियाच्या ठायीं। मोक्ष न वसे।४५। देखें अग्निमाजीं घापती। तियें बीजें जरी विरूढती। तरी अशांता सुखप्राप्ती। घडों शके।४६। म्हणोनि अयुक्तपण मनाचें। तेंचि सर्वस्व दुःखाचें। याकारणें इंद्रियांचें। दमन कीजे।४७।

इंद्रियाणां हि चरतां यन्मनोऽनुविधीयते।
तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवाम्भसि।६७।

इंद्रियें जें जें म्हणती। तें तेंचि जे पुरुष करिती। ते तरलेचि न तरती। विषयसिंधु।४८। जैसी नाव थडिये ठाकितां। वरपडी होय दुर्वाता। तरी चुकलाही मागौता। अपावो पावे।४६। तैसीं प्राप्तेंही पुरुषें। इंद्रिये लाळिली जरी कौतुकें। तरी आक्रमिला जाण दुःखें। सांसारिकें।३५०।

तस्माद्यस्य महाबाहो निगृहीतानि सर्वशः।
इंद्रियाणींद्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।६८।

म्हणोनि आपुली आपणपया। जरी इंद्रियें येती आया। तरी अधिक कांहीं धनंजया। सार्थक असे।५१। देखें कूर्म जियापरी। उवाइला अवयव पसरी। नातरी इच्छावशें आवरी। आपणपेंचि।५२। तैसीं इंद्रियें अपैती होती। जयाचें म्हणितलें करिती। तयाची प्रज्ञा जाण स्थिती। पातली असे।५३। आतां आणिक एक गहन। पूर्णाचें चिह्न। अर्जुना तुज सांगेन। परिस पां।५४।

या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी।
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः।६६।

देखें भूतजात निदेलें। तेथेचि जया पाहलें। आणि जीव जेथ चेइले। तेथ निद्रित जो।५५। तोचि तो निरुपाधि। अर्जुना तो स्थिरबुद्धि। तोचि जाणें निरवधि। मुनीश्वर।५६।

आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं
समुद्रमापः प्रविशंति यद्वत्।
तद्वत्कामा यं प्रविशंति सर्वे
स शांतिमाप्नोति न कामकामी।७०।

पार्था आणीकही परी। तो जाणो येईल अवधारीं। जैसी अक्षोभता सागरीं। अखंडित।५७। जर्‍ही सरितावोघ समस्त। परिपूर्ण होऊनि मिळत। तर्‍ही अधिक नोहे ईषत। मर्यादा न सांडी।५८। नातरी ग्रीष्मकाळीं सरिता। शोषूनि जाती समस्ता। परी न्यून नव्हे पार्था। समुद्र जैसा।५६। तैसा प्राप्तीं ऋद्धि सिद्धि। तयासि क्षोभ नाहीं बुद्धी। आणि न पवतां न बाधी। अधृति तयातें।३६०। सांगें सूर्याच्या घरीं। प्रकाश काय वातीवेर्‍हीं। का न लाविजे तरी अंधकारीं। कोंडेल तो।६१। देखें ऋद्धि सिद्धि तयापरी। आली गेली से न करी। तोचि गुंतला असे अंतरीं। महासुखीं।६२। जो आपुलेनि नागरपणें। इंद्रभुवनातें पाबळें म्हणे। तो केवीं रंजे पालवणें। भिल्लांचेनि।६३। जो अमृतातें ठी ठेवी। तो जैसा कांजी न सेवी। तैसा स्वसुखानुभवी। न भोगी ऋद्धि।६४। पार्था नवल हें पाहीं। जेथ स्वर्गसुखा लेखणी नाहीं। तेथ ऋद्धिसिद्धि कायी। प्राकृता होती।६५।

विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निस्पृहः।
निर्ममो निरहंकारः स शांतिमधिगच्छति ।७१।

ऐसा आत्मबोधें तोषला। जो परमानंदें पोखला। तोचि स्थितप्रज्ञ भला। वोळख तूं ।६६। तो अहंकारातें दवडुनी। सकळ काम सांडुनी। विचरे विश्व होऊनी। विश्वामाजी ।६७।

एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति।
स्थित्वाऽस्यामंतकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति ।७२।

इति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे सांख्ययोगो नाम द्वितीयोऽध्यायः ।२।

हे ब्राह्मस्थिति निःसीम। जे अनुभविती निष्काम। ते पावले परब्रह्म। अनायासें ।६८। जे चिद्रूपीं मिळतां। देहांतींची व्याकुळता। आड ठाकों न सके चित्ता। प्राज्ञा जया ।६९। तेचि हे स्थिति। स्वमुखें श्रीपति। सांगत अर्जुनाप्रति। संजयो म्हणे ।३७०। ऐसें कृष्णवाक्य ऐकिलें। तेथ अर्जुनें मनीं म्हणितलें। आतां आमुचिया काजा आले। उपपत्ती इया ।७१। जें कर्मजात आघवें। एथ निराकारिलें देवें। तरी पारुषलें म्यां जुंझावें। म्हणूनियां ।७२। ऐसा श्रीअच्युताचिया बोला। चित्तीं धनुर्धर उवायिला। आतां प्रश्न करील भला। आशंकोनी ।७३। तो प्रसंग असे नागर। जो सकळ धर्मांसि आगर। कीं विवेकामृतसागर। प्रांतहीन ।७४। जो आपण सर्वज्ञनाथ। निरूपिता होईल श्रीअनंत। ज्ञानदेव सांगेल मात। निवृत्तिदास ।७५।

इति श्रीज्ञानदेवविरचितायां भावार्थदीपिकायां द्वितीयोऽध्यायः ।२। श्लोक ७२, ओव्या ३७५

ज्ञानेश्वरीः अध्याय तिसरा—कर्मयोग

अर्जुन उवाच— ज्यायसी चेत्कर्मणस्ते मता बुद्धिर्जनार्दन।
तत्किं कर्मणि घोरे मां नियोजयसि केशव।१।

मग आइका अर्जुनें म्हणितलें। देवा तुम्हीं जें वाक्य बोलिलें। तें म्या निकें परिसलें। कृपानिधी।१। तेथ कर्म आणि कर्ता । उरेचिना पाहतां। ऐसें मत तुझे श्रीअनंता। निश्चित जरी।२। तरी मातें केवीं श्रीहरी। म्हणसी पार्था संग्राम करीं। इये लाजसीना महाघोरीं। कर्मीं सुतां।३। हां गा कर्म तूंचि अशेष। निराकरिसी निःशेष। तरी मजकरवीं हें हिंसक। कां करविसी।४। तार हेंचि विचारीं श्रीहृषीकेशा। तूं मानु नेदसि कर्मलेशा। आणि येसणी हे हिंसा। करवीत आहासी।५।

व्यामिश्रेणेव वाक्येन बुद्धिं मोहयसीव मे।
तदेकं वद निश्चित्य येन श्रेयोऽहमाप्नुयाम्।२।

देवा तुवांचि ऐसें बोलावें। तरी आम्हीं नेणतीं काय करावें। आतां संपलें म्हणों पां आघवें। विवेकाचें।६। हां गा उपदेश जरी ऐसा। तरी अपभ्रंश तो कैसा। आतां पुरला आम्हां धिंवसा। आत्मबोधाचा।७। वैद्य पथ्य वारूनि जाये। मग जरी आपणचि विष सुये। तरी रोगिया कैसेनि जिये। सांगे मज।८। जैसें आंधळें सुइजे अव्हांटा। कां माजवण दीजे मर्कटा। तैसा उपदेश हा गोमटा। वोढवला आम्हां।९। मी आधींचि कांहीं नेणें। वरी कवळिलों मोहें येणें। श्रीकृष्णा विवेक याकारणें। पुसिला तुज।१०। तंव तुझी एकेक नवाई। एथ उपदेशामाजीं गोवाई। तरी अनुसरलिया काई। ऐसें कीजे।११। आम्हीं तनुमनजीवें। तुझिया बोला वोटंगावें। आणि तुवांचि ऐसें करावें। तरी सरलें म्हणें।१२। आतां ऐसियापरी बोधिसी। तरी निकें आम्हां करिसी। एथ ज्ञानाची आस कायसी। अर्जुन म्हणे।१३। तरी ये जाणिवेचें कीर सरलें। परी आणीक एक असे जाहलें। जे थितें डहुळलें। मानस माझें।१४। तेवींचि श्रीकृष्णा हें तुझें। चरित्र कांहीं नेणिजे। जरी चित्त पाहसी माझें। येणें मिषें।१५। नातरी झकवीत आहासी मातें। कीं तत्त्वचि कथिसी ध्वनितें। हें अवगमितां निरुतें। जाणवेना।१६। म्हणोनि आइकें देवा। हा भावार्थ आतां न बोलावा। मज विवेक सांगावा। मऱ्हाटा जी।१७। मी अत्यंत जड असें। परी ऐसाहि निकें परियेसें। श्रीकृष्णा बोलावें तुवां तैसें। एकनिष्ठ१८। देखें रोगातें जिणावें। औषध तरी देयावें। परी तें अतिरुच्य व्हावें। मधुर जैसें।१९। तैसें सकळार्थभरित। तत्त्व सांगावें उचित। परी बोधे माझें चित्त। जयापरी।२०। देवा तुजऐसा निजगुरु। आजि आर्तीधणी कां न करूं। एथ भीड कवणाची धरूं। तूं माय आमुची।२१। हां गा कामधेनूचें दुभतें। दैवे जाहलें आपैतें। तरी कामनेची कां तेथें। वाणि कीजे।२२। जरी चिंतामणी हाता चढे। वरी वांच्छेचे कवण सांकडें। कां आपुलेनि सुरवाडें। इच्छावें ना।२३। देखें अमृतसिंधूतें ठाकावें। मग ताहानाचि जरी फुटावें। तरी सायास कां करावें। मागील ते।२४। तैसा जन्मांतरीं बहुतीं। उपासितां श्रीकमळापती। तो तूं दैवें आजी हातीं। जाहलासि जरी।२५। तरी आपुलेया सवेसा। कां न मागावासि परेशा। देवा सुकाळ हा मानसा। पाहला असे।२६। देखें सकळार्तीचे जियालें। आजि पुण्य यशासि आलें। हे मनोरथ जाहले। विजयी माझे।२७। जी जी परमंगळधामा। सकळदेवदेवोत्तमा। तूं स्वाधीन आजी आम्हां। म्हणऊनिया।२८। जैसें मातेच्या ठायीं। अपत्या अनवसर नाहीं। स्तन्यालागूनि पाहीं। जियापरी।२९। तैसें देवा तूंतें। पुसिजतसें आवडे तें। आपुलेनि आर्तें। कृपानिधि।३०। तरी पारत्रिकीं हित। आणि आचरितां तरी उचित। तें सांगें एक निश्चित। पार्थ म्हणे।३१।

श्रीभगवानुवाच— लोकेऽस्मिन्द्विविधा निष्ठा पुरा प्रोक्ता मयाऽनघ।
ज्ञानयोगेन सांख्यानां कर्मयोगेन योगिनाम्।३।

या बोला श्रीअच्युत। म्हणत असे विस्मित। अर्जुना हा ध्वनित। अभिप्रावो।३२। जे बुद्धियोग सांगतां। सांख्यमतसंस्था। प्रकटिली स्वभावतां। प्रसंगें आम्हीं।३३। तो उद्देश तूं नेणसीचि। म्हणोनि शिणलासि वायांचि। तरी आतां जाणें मीचि। उक्त दोन्ही।३४। अवधारीं वीरश्रेष्ठा। ये लोकीं या दोनी निष्ठा। मजचीपासूनि प्रगटा। अनादिसिद्धा।३५। एक ज्ञानयोग म्हणिजे। जो सांख्यीं अनुष्ठिजे। जेथ वोळखीसवें पाविजे। तद्रूपता।३६। एक कर्मयोग जाण। जेथ साधकजन निपुण। होऊनिया निर्वाण। पावती वेळे।३७। हे मार्ग तरी दोनी। परी एकवटती निदानीं। जैसी सिद्धसाध्यभोजनीं। तृप्ति एक।३८। का पूर्वापरसरिता। भिन्न दिसती वाहतां। मग सिंधूमिळणीं ऐक्यता। पावती शेखीं।३९। तैसीं दोनीही मतें। सूचिती एका कारणातें। परी उपास्ति ते योग्यते। अधीन असे।४०। देखें उत्प्लवनासरिसा। पक्षी फळासि झोंबे जैसा। सांगे नर केवीं तैसा। पावे वेगा।४१। तो हळू हळू ढाळें ढाळें। केतुलेनि एके वेळे। मार्गाचेनि बळें। निश्चित ठाकी।४२। तैसें देख पां विहंगममतें। अधिष्टूनि ज्ञानातें। सांख्य सद्य मोक्षातें। आकळिती।४३। येर योगिये कर्माधारें। विहितेंचि निजाचारें। पूर्णता अवसरें। पावते होती।४४।

न कर्मणामनारंभान्नैष्कर्म्यं पुरुषोऽश्नुते।
नच संन्यसनादेव सिद्धिं समधिगच्छति।४।

वांचोनि कर्मारंभ उचित। न करितां सिद्धवत। कर्महीना निश्चित। होइजेना।४५। कीं प्राप्त कर्म सांडिजे। येतुलेनि नैष्कर्म्य होइजे। हे अर्जुना वायां बोलिजे। मूर्खपणे।४६। सांगे पैलतीरा नावें। ऐंसे व्यसन का जेथ पावें। तेथ नावेते त्यजावे। घडे केवी।४७। नातरी तृप्ति इच्छिजे। तरी कैसेनि पाक न कीजे। कीं सिद्धही न सेविजे। केवी सांगे।४८। जंव निरार्तता नाहीं। व्यापार असे पाही। मग संतुष्टीच्या ठायीं। कुंठे सहजे।४९। म्हणोनि आइकें पार्था। जया नैष्कर्म्यपदीं आस्था। तया उचित कर्म सर्वथा। त्याज्य नोहे।५०। आणि आपुलालिये चाडे। आपादिलें हे मांडे। कीं त्यजिलें कर्म सांडे। ऐसें आहे।५१। हे वायांचि सैरा बोलिजे। उकल तरी देखोनि पाहिजे। परी त्यजितां कर्म न त्यजें। निभ्रांत मानीं।५२।

न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्।
कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः।५।

जंव प्रकृतीचें अधिष्ठान। तव सांडी मांडी हे अज्ञान। जे चेष्टा ते गुणाधीन। आपैसी असे।५३। देखें विहित कर्म जेतुले। तें सगळें जरी वोसंडिलें। तरी स्वभाव काय निमालें। इंद्रियांचे।५४। सांगे श्रवणीं ऐकावें ठेलें। कीं नेत्रींचें तेज गेलें। हें नासारंध्र बुझालें। परिमळ नेघे।५५। ना तरी प्राणापानगति। कीं निर्विकल्प झाली मति। कीं क्षुधातृषादि आर्ति। खुंटलिया।५६। हे स्वप्नावबोध ठेले। कीं चरण चालो विसरले। हें असो काय निमाले। जन्ममृत्यू।५७। हे न ठकेचि जरी कांहीं। तरी सांडिलें तें कायी। म्हणोनि कर्मत्याग नाहीं। प्रकृतिमंतां।५८। कर्म पराधीनपणें। निपजत असे प्रकृतिगुणें। येरी धरीं मोकली अंतःकरणें। वाहिजे वायां।५९। देखें रथीं आरूढिजे। मग जरी निश्चळ बैसिजे। तरी चळ होऊनि हिंडिजे। परतंत्रा।६०। कां उचलिलें वायुवेशें। चळे शुष्क पत्र जैसें। निचेष्ट आकाशें। परिभ्रमे।६१। तैसे प्रकृतिआधारें। कर्मेंद्रियविकारें। निष्कर्मही व्यापारे। निरंतर।६२। म्हणऊनि संग जंव प्रकृतीचा। तंव त्याग न घडे कर्माचा। ऐसियाही करूं म्हणती तयांचा। आग्रहचि उरे।६३।

कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्।
इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते।६।

जे उचित कर्म सांडिती। मग नैष्कर्म्य हों पाहती। परी कर्मेंद्रियप्रवृत्ति। निरोधुनी।६४। तयां कर्म त्याग न घडे। जें कर्तव्य मनीं सांपडे। वरी नटती तें फुडें। दरिद्र जाण।६५। ऐसे ते पार्था। विषयासक्त सर्वथा। वोळखावे तत्त्वता। भ्रांति नाहीं।६६। आतां देईं अवधान। प्रसंगें तुज सांगेन। या नैराश्याचें चिन्ह। धनुर्धरा।६७।

यस्त्विन्द्रियाणि मनसा नियम्यारभतेऽर्जुन।
कर्मेन्द्रियैः कर्मयोगमसक्तः स विशिष्यते।७।

जो अंतरी दृढ। परमात्मरूपीं गूढ। बाह्य तरी रूढ। लौकिक जैसा।६८। तोइंद्रियां आज्ञा न करी। विषयांचे भय न धरी। प्राप्त नाव्हेरी। उचित जें जें।६९। तो कर्मेंद्रियें कर्मीं। राहटतां तरी न नियमी। परी तेथिंचेनि ऊर्मी। झांकोळेना।७०। तो कामनामात्रें न धेपे। मोहमळें न लिंपे। जैसे जळीं जळें न शिंपे। पद्मपत्र।७१। तैसा संसर्गामाजि असे। सकळांसारिखा दिसे। जैसें तोयसंगे आभासे। भानुबिंब।७२। तैसें सामान्यत्वें पाहिजे। तरी साधारणचि देखिजे। येरवीं निर्धारतां नेणिजे। सोय जयाची।७३। ऐशा चिन्हीं चिन्हित। देखसी तोचि मुक्त। आशापाशरहित। वोळख पां।७४। अर्जुना तोचि योगी। विशेषिजे जो जगीं। म्हणोनि ऐसा होय यालागीं। म्हणिपे तूंतें।७५। तूं मानसा नियम करी। निश्चळ होयें अंतरी। मग कर्मेंद्रियें व्यापारीं। वर्ततु सुखें।७६।

नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः।
शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्ध्येदकर्मणः ।८।

म्हणोनि नैष्कर्म्य होआवें। तरी एथ तें न संभवे। आणि निषिद्ध केवीं राहाटावें। विचारीं पां।७७। म्हणोनि जें जें उचित। आणि अवसरेंकरूनि प्राप्त। तें कर्म हेतुरहित। आचरें तूं।७८। पार्था आणिकही एक। नेणसी तूं हें कवतिक। जें ऐसें कर्ममोचक। आपैसें असे।७९। देखें अनुक्रमाधारें। स्वधर्म जो आचरे। तो मोक्ष तेणें व्यापारें। निश्चित पावे।८०।

यज्ञार्थात्कर्मणोन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः।

तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसंगः समाचर ।९।

स्वधर्म जो बापा। तो नित्ययज्ञ जाण पां। म्हणोनि वर्ततां तेथ पापा। संचार नाहीं।८१। हा निजधर्म जैं सांडे। आणि कुकर्मी रति घडे। तैंचि बंध पडे। सांसारिक।८२। म्हणोनि स्वधर्मानुष्ठान। तें अखंड यज्ञयाजन। जो करीं तया बंधन। कंहींच न घडे।८३। हा लोक कर्में बांधिला। जो परतंत्रा भुलला। तो नित्ययज्ञातें चुकला। म्हणोनियां।८४। आतां येचि विषयीं पार्था। तुज सांगेन एक मी कथा। सृष्ट्यादि संस्था। ब्रह्मेनें केली।८५।

सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः।
अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्टकामधुक् ।१०।

तैं नित्ययागसहितें। सृजिलीं भूतें समस्तें। परी नेणतीचि तियें यज्ञातें। सूक्ष्म म्हणउनी।८६। ते वेळीं प्रजी विनविला ब्रह्मा। देवा काय आश्रयो एथ आम्हां। तंव म्हणे तो कमळजन्मा। भूतांप्रति।८७। तुम्हां वर्णविशेषवशें। आम्हीं हा स्वधर्म विहिला असे। यातें उपासा मग आपैसे। पुरती काम।८८। तुम्ही व्रत नियम न करावें। शरीरातें न पीडावें। दूरि कंही न वचावें। तीर्थासि गा।८९। योगादिकें साधनें। साकांक्ष आराधनें। मंत्रयंत्रविधानें। झणीं करा।९०। देवतांतरा न भजावें। हें सर्वथा कांहीं न करावें। तुम्हीं स्वधर्मयज्ञीं यजावें। अनायासें।९१। अहेतुकें चित्तें। अनुष्ठा पां यातें। पतिव्रता पतीतें। जियापरी।९२। तैसा स्वधर्मरूप मख। हाचि सेव्य तुम्हां एक। ऐसे सत्यलोक नायक। बोलता जाहला।९३। देखा स्वधर्मातें भजाल। तरी कामधेनु हा होईल। मग प्रजा हो न सांडील। तुमतें कदा।९४।

देवान्भावयताऽनेन ते देवा भावयन्तु वः।
परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ ।११।

जैं येणेंकरूनि समस्तां। परितोष होईल देवतां। मग ते तुम्हां ईप्सितां। अर्थातें देती।९५। या सधर्मपूजा पूजितां। देवतागणां समस्तां। योगक्षेम निश्चिता। करिती तुमचा।९६। तुम्हीं देवातें भजाल। देव तुम्हां तुष्टतील। ऐसी परस्परें घडेल। प्रीति जेथ।९७। तेथ तुम्हीं जें करूं म्हणाल। तें आपैसे सिद्धि जाईल। वांच्छितही पुरेल। मानसींचें।९८। वाचासिद्धी पावाल। आज्ञापक होआल। म्हणियें तुमतें मागतील। महाऋद्धि।९९। जैसें ऋतुपतींचें द्वार। वनश्री निरंतर। वोळगे फळभार। लावण्येसीं।१००।

इष्टान्भोगान् हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविताः।
तैर्दत्तानप्रदायैभ्यो यो भुङ्क्ते स्तेन एव सः।१२।

तैसें सर्व सुखेंसहित। दैवचि मूर्तिमंत। येईल देखा काढत। तुम्हांपाठीं।१। ऐसे समस्त भोगभरित। होआल तुम्हीं अनार्त। जरी स्वधर्मैकनिरत। वर्ताल बापा।२। कीं जालिया सकळ संपदा। जो अनुसरेल इंद्रियमदा।लुब्ध होऊनियां स्वादा। विषयांचिया।३। तिहीं यज्ञीाावितीं सुरीं। जे हे संपत्ति दिधली पुरी। तयां स्वधर्मी सर्वेश्वरीं। न भजेल जो।४। अग्निमुखीं हवन। न करील देवतापूजन। प्राप्तवेळें भोजन। ब्राह्मणाचें।५। विमुख होईल गुरुभक्ती। आदर न करील अतिथी। संतोष नेदील ज्ञातीं। आपुलिये।६। ऐसा स्वधर्मक्रियारहित। आथिलेपणें गर्वित। केवळ भोगासक्त। होईल जों।७। तया मग अपावो थोर आहे। जेणें ते हातींचें सकळ जाये। देखा प्राप्तही न लाहे। भोग भोगूं।८। जैसें गतायुशरीरीं। चैतन्य वास न करी। कां निर्देवाच्या घरीं। न राहे लक्ष्मी।९। तैसा स्वधर्म जरी लोपला। तरी सर्व सुखाचा थारा मोडला। जैसा दीपासवें हरपला। प्रकाश जाय।१०। तैसी निजवृत्ति जेथ सांडे। तेथ स्वतंत्रते वस्ती न घडे। आइका प्रजा हो फुडें। विरंचि म्हणे।११। म्हणऊनि स्वधर्म जो सांडील। तयातें काळ दंडील। चोर म्हणूनि हरील। सर्वस्व तयाचें।१२। मग सकळ दोष भंवते। गिंवसोनि घेती तयातें। रात्रिसमयीं श्मशानातें। भूतें जैसीं।१३। तैसीं त्रिभूवनींची दुःखें। आणि नानाविधें पातकें। दैन्यजात तितुकें। तेथेचि वसे।१४। ऐसें होय तया उन्मता। मग न सुटे बापा रुदतां। कल्पांतीही सर्वथा। प्राणिगण हो।१५। म्हणऊनि निजवृति हे न सांडावी। इंद्रियें बरळो नेदावीं। ऐसें प्रजातें शिकवी। चतुरानन।१६। जैसें जळचरां जळ सांडे। मग तत्क्षणीं मरण मांडे। हा स्वधर्म तेणें पाडें। विसंबो नये।१७। म्हणोनि तुम्हीं समस्तीं। आपुलालिया कर्मीं उचितीं। निरत व्हावें पुढतपुढती। म्हणिपत असें।१८।

यज्ञशिष्टाशिनः संतो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः।
भुंजते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात् ।१३।

देखा विहितक्रियाविधि। निर्हेतुका बुद्धि। जो असतिये समृद्धि। विनियोग करी।१९। गुरु गोत्र अग्नि पूजी। अवसरीं भजे द्विजीं। निमित्तादिकीं यजी। पितरोद्देशें।१२०। या यज्ञक्रिया उचिता। यज्ञेंसी हवन करितां। हुतशेष स्वभावता। उरे जें जें।२१। तें सुखें आपुले घरीं। कुटुंबेसीं भोजन करी। कीं भोग्यचि तें निवारी।

कल्मषातें ।२२। तें यज्ञावशिष्ठ भोगी। म्हणोनि सांडिजे तो अधीं। जयापरी महारोगी। अमृतसिद्धी ।२३। कीं तत्त्वनिष्ठ जैसा। नागवे भ्रांतिलेशा। तो शेषभोगी तैसा। नाकळे दोषा ।२४। म्हणोनि स्वधर्मे जें अर्जे। तें स्वधर्मेचि विनियोगिजे। मग उरे तें भोगिजे। संतोषेंसी ।२५। हेंवाचूनि पार्था। राहाटों नये अन्यथा। ऐसी आद्य हे कथा। श्रीमुरारि सांगे ।२६। जे देहचि आपणपें मानिती। आणि विषयांतें भोग्य म्हणती। यापरतें न स्मरती। आणिक कांहीं ।२७। हें यज्ञोपकरण सकळ। नेणतसाते बरळ। अहंबुद्धी केवळ। भोगूं पाहती ।२८। इन्द्रियरुचीसारिखें। करविती पाक निकें। ते पापिये पातकें। सेविती जाण ।२६। हे संपत्तिजात आघवे। हवनद्रव्य मानावें। मग स्वधर्मयज्ञें अर्पावें। आदिपुरुषीं ।१३०। हें सांडोनियां मूर्ख। आपणपेयालागीं देख। निपजविती पाक। नानाविध ।३१। जिहीं यज्ञ सिद्धी जाये। परेशा तोष होये। तें हें सामान्य अन्न न होयं। म्हणोनिया ।३२। हे न म्हणावें साधारण। अन्न ब्रह्मरूप जाण। हें जीवनहेतु कारण। विश्वायथा ।३३।

अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसंभवः।
यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः ।१४।

अन्नास्तव भूतें। प्ररोह पावली समस्तें। मग पर्जन्य या अन्नातें। सर्वत्र प्रसवे ।३४। तया पर्जन्या यज्ञीं जन्म। यज्ञातें प्रकटी कर्म ।–

कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवम्।
तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम् ।१५।

कर्मासि आदि ब्रह्म। वेदरूप ।३५। मग वेदांतें परात्पर। प्रसवतसे अक्षर। म्हणऊनि हें चराचर। ब्रह्मबद्ध ।३६। परी कर्माचिये मूर्ति। यज्ञीं अधिवास श्रुति ।ऐके सुभद्रापति। अखंड गा ।३७।

एवं प्रवर्तितं चक्रं नानुवर्तयतीह यः।
अघायुरिन्द्रियारामो मोघं पार्थ स जीवति ।१६।

ऐसी हे आदि परंपरा। संक्षेपें तुज धनुर्धरा। सांगीतली या अध्वरा। लागूनियां ।३८। म्हणूनि समूळ हा उचितु। स्वधर्मरूप ऋतु। नानुष्ठी जो मत्तु। लोकीं इये ।३६। तो पातकांची राशी। जाण भार भूमीसी। जो कुकर्मे इन्द्रियांसी। उपेगा गेला ।१४०। तें जन्मकर्म सकळ। अर्जुना अति निष्फळ। जैसें कीं अभ्रपटळ। अकाळींचे ।४१। कां गळां स्तन अजेचे। तैसें जियालें देखें तयाचें। जया अनुष्ठान स्वधर्माचें। घडेचि ना ।४२। म्हणोनि ऐकें पांडवा। हा स्वधर्म कवणें न संडावा। सर्वभावें भजावा। हाचि एक ।४३। हां गा शरीर जरी जाहलें। तरी कर्तव्य वोघें आलें। मग उचित कां आपलें। वोसंडावें ।४४। परिस पां सव्यसाची। मूर्ति लाहोनि देहाची। खंती करिती कर्माची। ते गांवढे गा ।४५।

यस्त्वात्मरतिरेव स्यादात्मतृप्तश्च मानवः।
आत्मन्येव च संतुष्टस्तस्य कार्यं न विद्यते ।१७।

देखें असतेनि देहधर्मे। एथ तोचि एक न लिंपे कर्मे। जो अखंडित रमें। आपणपें ।४६। जे तो आत्मबोधें तोषला। तरी कृतकार्य देख जाहला। म्हणोनि सहज सांडवला। कर्मसंगा ।४७।

नैन तस्य कृतेनार्थो नाकृतेनेह कश्चन।
न चास्य सर्वभूतेषु कश्चिदर्थव्यपाश्रयः ।१८।

तृप्ति जालिया जैसीं। साधनें सरती आपैसीं। देखें आत्मतुष्टीं तैसी। कर्मे नाहीं ।४८। जंववरी अर्जुना। तो बोध भेटेना मना। तंवचि या साधना। भजावें लागे ।४६।

तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर।
असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पूरूषः ।१६।

म्हणऊनि तूं नियत। सकळ कामनारहित। होऊनिया उचित। स्वधर्मे राहाटे ।१५०। जें स्वधर्मे निष्कामता। अनुसरले पार्था। ते कैवल्यपद तत्त्वता। पावले जगीं ।५१।

कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः।
लोकसंग्रहमेवापि संपश्यन्कर्तुमर्हसि ।२०।

देख पां जनकादिक। कर्मजात अशेख। न सांडितां मोक्षसुख। पावतें जाहलें।५२। याकारणें पार्था। होआवी कर्मी आस्था। हे आणिकाही एका अर्था। उपकारेल।५३। जे आचरतां आपणपयां। देखी लागेल लोकायया। तरी चुकेल हा अपाया। प्रसंगेचि।५४। देखे प्राप्तार्थ जाहलें। जे निष्कामता पावले। तयांही कर्तव्य असे उरले। लोकांलागी।५५। मार्गी अंधासरिसा। पुढें देखणाहीं चाले जैसा। अज्ञाना प्रकटावा धर्म तैसा। आचरोनी।५६। हां गा ऐसे जरी न कीजे। तरी अज्ञाना काय उमजे। तिहीं कवणेपरी जाणिजे। मार्गांते या।५७।

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।२१।

एथ वडील जें जें करिती। तया नाम धर्म ठेविती। तेंचि येर अनुष्ठिती। सामान्य सकळ।५८। हें ऐसें असे स्वभावे। म्हणोनि कर्म न संडावें। विशेषे आचरावें। लागे संतीं।५९।

न मे पार्थाऽस्ति कर्तव्यं त्रिषु लोकेषु किंचन।
नानवाप्तमवाप्तव्यं वर्त एव च कर्मणि।२२।

आतां आणिकाचिया गोठी। कायशा सांगो किरीटी। देखें मीचि इये राहाटी। वर्तत असें।१६०। काय सांकडें कांहीं मातें। कीं कवणें एकें आर्तें। आचरें मी धर्मातें। म्हणसी जरी।६१। तरी पुरतेपणालागीं। आणिक दुसरा नाहीं जगीं। ऐसी सामग्री माझ्या अंगी। जाणसी तूं।६२। मृत गुरुपुत्र आणिला। तो तुंवा पवाडा देखिला। तोही मी उगला। कर्मीं वर्ते।६३।

यदि ह्ययं न वर्तेयं जातु कर्मण्यतन्द्रितः।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः।२३।

परी स्वधर्मी वर्ते कैसा। साकांक्ष का होय जैसा। तयाचि एका उद्देशा-। ~लागोनियां।६४। जें भूतजात सकळ। असे आम्हां आधीनचि केवळ। तरी न व्हावें बरळ। म्हणोनियां।६५।

उत्सीदेयुरिमे लोका न कुर्यां कर्म चेदहम्।
संकरस्य च कर्ता स्यामुपहन्यामिमाः प्रजाः।२४।

आम्ही पूर्णकाम होउनी। जरी आत्मस्थिति राहुनी। तरी प्रजा हे कैसेनी। निस्तरेल।६६। इंहीं आमुची वास पाहावी। मग वर्ततीपरी जाणावी। ते लोकस्थिति आघवी। नासिली होईल।६७। म्हणोनि समर्थ जो एथें। आथिला सर्वज्ञते। तेणें विशेषें कर्मातें। त्यजावें ना।६८।

सक्ताः कर्मण्यविद्वांसो यथा कुर्वन्ति भारत।
कुर्याद्विद्वांस्तथाऽसक्तश्चिकीर्षुर्लोकसंग्रहम्।२५।

देखे फळाचिया आशा। आचरे कामुक जैसा। कर्मी भर होआवा तैसा। निराशाही।६९। जे पुढतपुढतीं पार्था। हे सकळ लोकसंस्था। रक्षणीय सर्वथा। म्हणऊनियां।१७०। मार्गाधारें वर्तावें। विश्व हें मोहरे लावावें। अलौकिक नोहावें। लोकांप्रति।७१।

न बुद्धिभेदं जनयेदज्ञानां कर्मसंगिनाम्।
जोषयेत्सर्वकर्माणि विद्वान्युक्तः समाचरन्।२६।

जें सायासें स्तन सेवीं। तें पक्वान्नें केवी जेवी। म्हणोनि बाळका जैसीं नेदावीं। धनुर्धरा।७२। तैसीं कर्मी जयां अयोग्यता। तयांप्रति नैष्कर्म्यता। न प्रगटावी खेळतां। आदिकरुनी।७३। तेथें सत्क्रियाची लावावी। तेची एकी प्रशंसावी। निष्कर्मीही दावावी। आचरोनी।७४। तया लोकसंग्रहालागीं। वर्ततां कर्मसंगीं। तो कर्मबंध आंगीं। वाजेल ना।७५। जैसी बहुरूपियांची रावो राणी। स्त्रीपुरुषभावो नाहीं मनीं। परी लोकसंपादणी। तैसीच करिती।७६।

प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः।
अहंकार विमूढात्मा कर्ताऽहमिति मन्यते।२७।

देखें पुढिलांचे वोझें। जरी आपुला माथां घेइजे। तरी सांगे का न दाटिजे। धनुर्धरा।७७। तैसीं शुभाशुभें कर्मे। जिये निपजती प्रकृतिधर्मे। तियें मूर्ख मतिभ्रमें। मी कर्ता म्हणे।७८। ऐसा अहंकारारूढ। एकदेशी मूढ। तया हा परमार्थ गूढ। प्रगटावा ना।७९। हे असो प्रस्तुत। सांगिजेल तुज हित। तें अर्जुना देऊनि चित्त। अवधारी पां।१८०।

तत्त्ववित्तु महाबाहो गुणकर्मविभागयोः।
गुणा गुणेषु वर्तन्त इति मत्वा न सज्जते।२८।

जे तत्त्वज्ञानियांच्या ठायीं। तो प्रकृतिभाव नाहीं। जेथ कर्मजात पाही। निपजत असे।८१। ते देहाभिमान सांडुनी। गुणकर्मे वोलांडुनी। साक्षिभूत होउनी। वर्तती देहीं।८२। म्हणोनि शरीरी जरी होती। तरी कर्मबंधा नाकळती। जैसा कां भूतचेष्टा गभस्ती। घेपवेना।८३।

प्रकृतेर्गुणसंमूढाः सज्जन्ते गुणकर्मसु।
तानकृत्स्नविदो मन्दान्कृत्स्नविन्न विचालयेत्।२९।

एथ कर्मी तोचि लिंपे। जो गुणसंभ्रमें घेपे। प्रकृतीचेनि आटोपें। वर्तत असे।८४। इन्द्रियें गुणाधारें। राहाटती निजव्यापारें। तें परकर्म बलात्कारें। आपदी जो।८५।

मयि सर्वाणि कर्माणि संन्यस्याध्यात्मचेतसा।
निराशीर्निर्ममो भूत्वा युद्ध्यस्व विगतज्वरः।३०।

तरी उचितें कर्मे आघवी। तुवा आचरोनि मज अर्पावीं। परी चित्तवृत्तीं विन्यसावी। आत्मरूपीं।८६। आणि हें कर्म मी कर्ता। कां आचरेन या अर्था। ऐसा अभिमान झणें चित्ता। रिघों देसी।८७। तुवां शरीरपरा नोहावें। कामनाजात सांडावें। मग अवसरोचित भोगावें। भोग सकळ।८८। आतां कोदंड घेऊनि हातीं। आरूढ पां इये रथीं। देई आलिंगन वीरवृत्ती। समाधानें।८९। जगीं कीर्ति रूढवीं। स्वधर्माचा मान वाढवी। इया भारापासोनि सोडवी। मेदिनी हे।१९०। आतां पार्था निःशंक होई। या संग्रामा चित्त देई। एथ हेंवाचूनि कांहीं। बोलो नये।९१।

ये मे मतमिदं नित्यमनुतिष्ठन्ति मानवाः।
श्रद्धावन्तोऽनसूयन्तो मुच्यन्ते तेऽपि कर्मभिः।३१।

हे अनुपरोध मत माझें। जिहीं परमादरें स्वीकारिजें। श्रद्धापूर्वक अनुष्ठिजे। धनुर्धरा।९२। तेही सकळ कर्मी वर्तत। जाण पां कर्मरहित। म्हणोनि हे निश्चित। करणीय गा।९३।

ये त्वेतदभ्यसूयन्तो नानुतिष्ठन्ति मे मतम्।
सर्वज्ञानविमूढांस्तान्विद्धि नष्टानचेतसः।३२।

ना तरी प्रकृतिमंत होउनी। इन्द्रियां लळा देउनी। जे हे माझे मत अव्हेरूनी। वोसंडिती।९४। जे सामान्यत्वें लेखिती। अवज्ञा करूनि देखिती। कां हा अर्थवाद म्हणीती। वाचाळपणें।९५। ते मोहमदिरा भुलले। विषयविषें घेरिले। अज्ञानपंकीं बुडालें। निभ्रांत मानीं।९६। देखें शवाच्या हातीं दिधलें। जैसे कां रत्न वायां गेलें। ना तरी जात्यंधा पाहलें। प्रमाण नोहे।९७। कां चंद्राचा उदय जैसा। उपयोगा न वचे वायसा। मूर्खा विवेक हा तैसा। रूचेल ना।९८। तैसे जे पार्था। विमुख या परमार्था। तयासी भाषण सर्वथा। करावें ना।९९। म्हणोनि ते न मानिती। आणि निंदाही करूं लागती। सांगे पतंग काय साहाती। प्रकाशायतें।२००। पतंगा दीपीं आलिंगन। तेथ त्यासी अचुक मरण। तेवीं विषयाचरण। आत्मघाता।१।

सदृशं चेष्टते स्वस्याः प्रकृतेर्ज्ञानवानपि।
प्रकृतिं यान्ति भूतानि निग्रहः किं करिष्यति।३३।

म्हणोनि इन्द्रियें एकें। जाणतेनि पुरुखें। लाळावीं ना कौतुकें। आदिकरुनी।२। हां गा सर्पेसीं खेळों येईल। कीं व्याघ्रसंसर्ग सिद्धि जाईल। सांगें हालाहल जिरेल। सेविलिया काई।३। देखें खेळतां अग्नि लागला। मग तो न सांवरे जैसा उधवला। तैसा इन्द्रियां लळा दिधला। भला नोहे।४। येरवी तरी अर्जुना। या शरीरा पराधीना। कां नाना भोगरचना। मेळवावी।५। आपण सायासेंकरूनि बहुतें। सकळही समृद्धिजातें। उदोअस्त या देहातें। प्रतिपाळावे कां।६। सर्वस्वें शिणोनि येथें।

आर्जवावीं संपत्तिजातें। तेणें स्वधर्म सांडूनि देहातें। पोखावें काई।७। मग हें तंव पांचमेळावा। शेखीं अनुसरेल पंचत्वा। ते वेळीं केला कें गिंवसावा। शीण आपुला।८। म्हणूनि केवळ देहभरण। ते जाणें उघडी नागवण। यालागीं एथ अंतःकरण। देवावें ना।६।

इन्द्रियस्येन्द्रियस्यार्थे रागद्वेषौ व्यवस्थितौ।
तयोर्न वशमागच्छेत्तौ ह्यस्य परिपन्थिनौ।३४।

येऱ्हवीं इन्द्रियाचिया अर्था। सारिखा विषय पोषितां। संतोष कीर चित्ता। आपजेल।२१०। परी तो संवचोराचा सांगात। जैसा नावेक स्वस्थ। जंव नगराचा प्रांत। सांडिजेना।११। बापा विषयाची मधुरता। झणें आवडी उपजे चित्ता। तो परिणाम विचारितां। प्राण हरी।१२। देखें इन्द्रियीं काम असे। तो लावी सुखदुराशे। जैसा गळीं मीन आमिषें। भुलविजे गा।१३। परी तयांमाजी गळु आहे। जो प्राणातें घेऊनि जाये। तो जैसा ठाउवा नोहे। झांकलेपणें।१४। तैसे अभिलाषें येणें कीजेल। विषयांची आशा धरिजेल। तरी वरपडा होइजेल। क्रोधानळा।१५। जैसा कवळोनियां पारधी। घातेचिये संधी। आणी मृगातें बुद्धी। साधावया।१६। एथ तैसीचि परी आहे। म्हणूनि संग हा तुज नोहे। पार्था दोन्ही काम क्रोध हे। घातक जाणें।१७। म्हणऊनि हा आश्रयोचि न करावा। मनेंही आठवो न धरावा। एक निजवृत्तीचा वोलावा। नासों नेदीं।१८।

श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।३५।

अगा स्वधर्म हा आपुला। जरी कां कठिण जाहला। तरी हाचि अनुष्ठिला। भला देखें।१६। येरु आचार जो परावा। तो देखतां कीर बरवा। परी आचरतेनि आचरावा। आपुलाचि।२२०। सांगें शूद्रघरीं आघवीं। पक्वान्नें आहाति बरवी। तीं द्विजे केवीं सेवावी। दुर्बल जरी जाहला।२१। हें अनुचित कैसेनि कीजें। अग्राह्य केवीं इच्छिजे। अथवा इच्छिलेंही पाविजे। विचारीं पां।२२। तरी लोकांची धवळारें। देखोनियां मनोहरे। असती आपुली तणारे। मोडावी केवीं।२३। हें असो वनिता आपुली। कुरूप जरी जाहाली। तऱ्ही भोगितां तेचि भली। जियापरी।२४। तेवीं आवडे तैसा सांकड। आचरतां जरी दुवाड। तऱ्ही स्वाधर्मचि सुरवाड। परत्रींचा।२५। हां गा साकर आणि दूध। हें गौल्यें कीर प्रसिद्ध। परी कृमिदोषीं विरुद्ध। घेपे केवी।२६।ऐसेनिही जरी सेविजेल। तरी ते आळुकीचि उरेल। जे तें परिणामीं पथ्य नव्हेल। धनुर्धरा।२७। म्हणोनि आणिकासी जे विहित। आणि आपणपेयां अनुचित। तें नाचरावें जरी हित। विचारिजे।२८। या स्वधर्मातें अनुष्ठितां। वेंचु होईल जीविता। तोही निका वर उभयतां। दिसत असे।२६। ऐसें समस्त सुरशिरोमणी। बोलिजे जेथ शारंगपाणी। तेथ अर्जुन म्हणे विनवणी। असे देवा।२३०। हें जें तुम्हीं सांगितलें। तें सकळ कीर म्यां परिसिलें। तरी आतां पुसेन कांहीं आपुलें। अपेक्षित।३१।

अर्जुन उवाच। अथ केन प्रयुक्तोऽयं पापं चरति पूरुषः।
अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजितः।३६।

तरी देवा हें ऐसें कैसें। जे ज्ञानियांचीही स्थिती भ्रंशे। मार्ग सांडूनि अनारिसे। चालत देखों।३२। सर्वज्ञही जे होती। हे उपायही जाणती। तेही परधर्मे व्यभिचरती। कवणें गुणें।३३। बीजा आणि भुसा। अंध निवाड नेणे जैसा। नावेक देखणाही तैसा। बरळे कां पां।३४। जे असता संग सांडिती। तेचि संसर्ग करितां न धाती। वनवासीही सेविती। जनपदातें।३५। आपण तरी लपती। सर्वस्वें पाप चुकविती। परी बलात्कारें सुइजती। तयाचिमाजी।३६। जयाची जीवें घेती विवसी। तेचि जडोनि ठाके जीवेंसी। चुकविता ते गिंवसी। तयातेचि।३७। ऐसा बलात्कारु एक दिसे। तो कवणाचा एथ आग्रहो असे। हें बोलावें हृषीकेशें। पार्थ म्हणे।३८।

श्रीभगवानुवाच। काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः।
महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम्।३७।

तंव हृदयकमळआराम। जो योगियांचा निष्कामकाम। तो म्हणतसे पुरुषोत्तम। सांगेन आइक।३६। तरी हे काम क्रोध पाही। जयांते कृपेची साठवण नाही। हे कृतांताच्या ठायी। मानिजती।२४०। हे ज्ञाननिधीचे भुज्रंग। विषयदरीचे वाघ। भजनमार्गींचे मांग। मारक जे।४१। हे देहदुर्गींचे धोंड। इंद्रियग्रामींचे कोंड। यांचे व्यामोहादिक बंड। जगावरी।४२। हे रजोगुण मानसाचे। समूळ आसुरियेचे। धायपण ययांचे। अविद्या केलें।४३। हे रजाचे कीर जाहले। परी तमासी पढियंते भले। तेणें निजपद यां दिधलें। प्रमाद मोह।४४। हे मृत्यूच्या नगरीं। मानिजती निकियापरी। जे जीविताचे वैरी। म्हणऊनिया।४५। जयांसी भुकेलिया आमिषा। हें विश्व न पुरेचि घांसा। कुळवाडी यांची आशा। चाळीत असे।४६। कौतुकें कवळितां मुठी। जिये चवदा भुवनें थेंकुटी। तिये भ्रांति ही धाकुटी। वाल्हीदुल्ही।४७। जे लोकत्रयाचें भातुकें।

खेळताचि खाय कवतिकें। तिच्या दासीपणाचेनि बिके। तृष्णा जिये।४८। हें असो मोहे मानिजे। यातें अहंकारें घेपे दीजे। जेणे जग आपुलिया भोजें। नाचवीत असे।४९। जेणें सत्याचा भोकसा काढिला। मग असत्य तृणकुटा भरिला। तो दंभ रूढविला। जगीं इंहीं।२५०। साध्वी शांति नागविली। मग माया मांगी श्रृंगारिली। तियेकरवीं विटाळविलीं। साधुवृंदें।५१। इंहीं विवेका त्राय फेडिली। वैराग्याची साल काढिली। जितया मान मोडिली। उपशमाची।५२। इंहीं संतोषवन खांडिले।धैर्यदुर्ग पाडिले। आनंदरोप सांडिले। उपडूनियां।५३। इंहीं बोधाची रोपें लुंचिली। सुखाची लिपिही पुसिली। जिव्हारीं आगी सूदली। तापत्रयाची।५४। हे आंगा तव घडले। जीवींचि आथि जडले। परी नातुडती गिंवसिलें। ब्रह्मादिकां।५५। हे चैतन्याचे शेजारी। बसती ज्ञानाच्या एका हारी। म्हणोनि प्रवर्तती महामारी। सांवरती ना।५६। हें जळेवीण बुडविती। आगीवीण जाळिती। न बोलतां कवळिती। प्राणियांतें।५७। हे शस्त्रेवीण साधिती। दोरेंवीण बांधिती। ज्ञानियासी तरी वधिती। पैज घेऊनि।५८। हे चिखलेवीण रोविती। पांशेवीण गोविती। हे कवणाजोगे न होती। आंतुवटपणें।५९।

धूमेनाव्रियते वह्निर्यथाऽऽदर्शो मलेन च।
यथोल्बेनावृतो गर्भस्तथा तेनेदमावृतम्।३८।

जैसी चंदनाची मुळी। गिवसोनि घेपे व्याळीं। ना तरी उल्बाची खोळी। गर्भस्थासी।२६०। कां प्रभावीण भानु। धूमेवीण हुताशनु। जैसा दर्पण मळहीनु। कंहींच नसे।६१। तैसें इंहींवीण एकलें। आम्ही ज्ञान नाहीं देखिलें। जैसें कोंडेनि पांगुतलें। बीज निपजे।६२।

आवृतं ज्ञानमेतेन ज्ञानिनो नित्यवैरिणा।
कामरूपेण कौंतेय दुष्पूरेणाऽनलेन च।३९।

तैसें ज्ञान तरी शुद्ध। परी इंहीं असे प्ररुद्ध। म्हणोनि तें अगाध। होऊनि ठेलें।६३। आधीं यांतें जिणावें। मग तें ज्ञान पावावें। तंव पराभव न संभवे। रागद्वेषां।६४। यांतें साधावयालागीं। जें बळ आणिजे आंगी। तें इंधनें जैसी आगी। सावावो होय।६५।

इन्द्रियाणि मनो बुद्धिरस्याधिष्ठानमुच्यते।
एतैर्विमोहयत्येष ज्ञानमावृत्य देहिनम्।४०।

तैसे उपाय कीजती जे जे। ते यांसीच होती विरजे। म्हणोनि हटियांतें जिणिजे। इहींचि जगीं।६६। ऐसियाही सांकडां बोला। एक उपाय आहे भला। तो करितां जरी आंगवला। तरी सांगेन तुज।६७।

तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ नियम्य भरतर्षभ।
पाप्मानं प्रजहि ह्येनं ज्ञानविज्ञाननाशनम्।४१।

इयांचा पहिला कुरुठा इन्द्रियें। एथूनि प्रवृत्ति कर्मातें विये। आधीं निर्दळूं घालीं तिथें। सर्वथैव।६८।

इंद्रियाणि पराण्याहुरिंद्रियेभ्यः परं मनः।
मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः।४२।

मग मनाची धांव पारुषेल। आणि बुद्धीची सोडवण होईल। इतुकेनि थारा मोडेल। या पापियांचा।६९।

एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा संस्तभ्यात्मानमात्मना।
जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम्।४३।

इति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे कर्मयोगोनाम तृतीयोऽध्यायः।

हे अंतरींहूनि जरी फिटले। तरी निभ्रांत जाण निवटले। जैसें रश्मीवीण उरलें। मृगजळ नाहीं।२७०। तैसे रागद्वेष जरी निमाले। तरी ब्रह्मींचें स्वराज्य आलें। मग तो भोगी सुख आपुलें। आपणचि।७१। ते गुरुशिष्यांची गोठी। पिंडपदांची गांठी। तेथ स्थिर राहोनि नुठी। कवणे काळीं।७२। ऐसे सकळ सिद्धांचा रावो। देवी लक्ष्मीयेचा नाहो। राया एकें देवदेवो। बोलता जाहला।७३। आतां पुनरपि तो अनंत। आद्य एकी मात। सांगेल तेथ पंडुसुत। प्रश्न करील।७४। तया बोलाचा हन पाड। कीं रसवृत्तीचा निवाड। येणे श्रोतयां होईल सुरवाड। श्रवणसुखाचा।७५। ज्ञानदेवो म्हणे निवृत्तीचा। चांग उठावा करूनि उन्मेषाचा। मग संवाद श्रीहरि-पार्थाचा। भोगावा बापा।२७६।

इति श्रीज्ञानदेव विरचितायां भावार्थदीपिकायां तृतीयोऽध्यायः। श्लोक ४३, ओव्या २७६

ज्ञानेश्वरीः अध्याय चौथा—ज्ञानकर्मसंन्यासयोग

आजि श्रवणेंद्रिया पाहलें। जे येणें गीतानिधान देखिलें। आतां स्वप्नचि हें तुकलें। साचासरिसें।१। आधींचि विवेकाची गोठी। वरी प्रतिपादी श्रीकृष्ण जगजेठी। आणि भक्तराज किरीटी। परिसत असे।२। जैसा पंचमालाप सुगंध। कीं परिमळ आणि सुस्वाद। भला जाहला विनोद। कथेचा इये।३। कैसी आगळिक दैवाची। जे गंगा जोडिली अमृताची। हो कां जे तपें श्रोतयांची। फळा आलीं।४। आतां इन्द्रियजात आघवें। तिंहीं श्रवणाचें घर रिघावें। मग संवादसुख भोगावें। गीताख्य हें।५। हा अतिसो अति प्रसंगें। सांडूनि कथाचि ते सांगे। जे कृष्णार्जुन दोघे। बोलत होते।६। ते वेळीं संजयो रायातें म्हणे। अर्जुन अधिष्ठला दैवगुणें। जे अतिप्रीती श्रीनारायणें। बोलिजत असे।७। जें न सांगेचि पितया वसुदेवासी। जें न सांगेचि माते देवकीसी। जें न सांगेचि बंधु बळिभद्रासी। तें गुह्य अर्जुनेंसीं बोलत।८। देवी लक्ष्मीयेएवढी जवळिक। तेही न देखे या प्रेमाचे सुख। आजि श्रीकृष्णप्रेमाचें विक। यातेंचि आथी।९। सनकादिकांचिया आशा। वाढीनल्या कीर बहुवसा। परी त्याही येणें मानें यशा। येतीचिना।१०। या जगदीश्वराचें प्रेम। एथ दिसतसे निरूपम। कैसे पार्थे येणं सर्वोत्तम। पुण्य केलें।११। हो कां जयाचिया प्रीती। अमूर्त हा आला व्यक्ती। मज एकवंकी याची स्थिती। आवडत असे।१२। येऱ्हवीं हा योगियां नाडळे। वेदार्थासी नाकळे। जेथ ध्यानाचेही डोळे। पावती ना।१३। तो हा निजस्वरूप। आनादि निष्कंप। परी कवणें मानें सकृप। जाहला आहे।१४। हा त्र्यैलोक्यपटाची घडी। आकाराची पैलथडी। कैसा याचिये आवडी। आवरला असे।१५।

श्री भगवानुवाच—इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम्।
विवस्वान्मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत्।१।

मग देव म्हणे पंडुसुता। हाचि योग आम्ही विवस्वतां। कथिला परी ते वार्ता। बहुता दिवसांची।१६। मग तेणे विवस्वते रवी। हे योगस्थिती आघवी। निरूपली बरवी। मनूप्रती।१७। मनूने आपण अनुष्ठिली। मग इक्ष्वाकुवा उपदेशिली। ऐसी परंपरा विस्तारिली। आद्य हे गा।१८।

एवं परंपराप्राप्तमिमं राजर्षयो विदुः।
स कालेनेह महता योगो नष्टः परंतप।२।

मग आणिकही या योगातें। राजर्षि जाहले जाणते। परी तेथोनि आतां सांप्रतें। नेणिजे कोण्ही।१९। जें प्राणियां कामी भर। देहाचिवरी आदर। म्हणोनि पडिला विसर। आत्मबोधाचा।२०। अव्हांटलिया आस्था बुद्धि। विषयसुखचि परमावधि। जीव तैसा उपाधि। आवडें लोकां।२१। येऱ्हवी तरी खवणेयांच्या गांवीं। पाटावें काय करावीं। सांगें जात्यंधा रवि। काय आथी।२२। का बहिरयांच्या आस्थानी। कवण गीतातें मानी। कीं कोल्हेया चांदणी। आवडी उपजे।२३। पैं चंद्रादया आरौतें। जयांचे डोळे फुटती असते। ते कावळे केवीं चंद्रातें। वोळखती।२४। तैसी वैराग्याची शिंव न देखती। जे विवेकाची भाषा नेणती। ते मूर्ख केवीं पावती। मज ईश्वरातें।२५। कैसा नेणों मोह वाढिनला। तेणें बहुतेक काळ व्यर्थ गेला। म्हणोनि योग हा लोपला। लोकीं इये।२६।

स एवाऽयं मया तेऽद्य योगः प्रोक्तः पुरातनः।
भक्तोऽसि मे सखा चेति रहस्यं ह्येतदुत्तमम्।३।

तोचि हा आजीं आतां। तुजप्रति कुंतीसुता। सांगीतला आम्हीं तत्त्वतां। भ्रांति न करीं।२७। हें जीवींचें निज गुज। परी केवीं राखों तुज। जे पढियेसी तूं मज। म्हणऊनियां।२८। तूं प्रेमाचा पुतळा। भक्तिचा जिव्हाळा। मैत्रियेची चित्कळा। धनुर्धरा।२९। तूं अनुसंगाचा ठावो। आतां तुज काय वंचों जावों। जही संग्रामारूढ आहों। जाहलों आम्ही।३०। तरी नावेक हें साहावें। गाजाबज्यही न धरावें। परी तुझें अज्ञानत्व हरावें। लागे आधीं।३१।

अर्जुन उवाच– अपरं भवतो जन्म परं जन्म विवस्वतः।
कथमेतद्वीजानीयां त्वमादौ प्रोक्तवानिति।४।

तंव अर्जुन म्हणे श्रीहरी। माय अपुलेयाचा स्नेह करी। तेथ विस्मय काय अवधारीं। कृपानिधे।३२। तूं संसारश्रांतांची साऊली। अनाथ जीवांची माऊली। आमुतें कीर प्रसवली। तुझीच कृपा।३३। देवा पांगुळ एकाधें विइजे। तरी जन्मौनि जोजार साहिजे। तें बोलों काय तुझें। तुजचि पुढां।३४। आतां पुसेन जें मी काहीं। तेथें निके चित्त देईं। तेवींचि देवें कोपावें नाहीं। बोला एका।३५। तरी मागील जे वार्ता। तुवां सांगितली होती अनंता। ते नाविक मज चित्ता। मानेचिना।३६। जे तो विवस्वत म्हणजे कायी। ऐसें हें वडिलां ठाउवें नाहीं। तरी तवांचि केवी कहीं। उपदेशिला।३७। तो आइकिजे बहुतां काळांचा। आणि तूं तव श्रीकृष्ण सांपेचा। म्हणोनि गा इये मातुचा। विसंवाद।३८। तेवींचि देवा चरित्र तुझें। आपण काहींचि नेणिजे। हें लटिकें केवी म्हणिजे। एकिहेळां।३९। परी हेचि मातु आघवी। मी परियेसे ऐसी सांगावी। जे कां तुवां तया रवी उपदेश केला।४०।

श्रीभगवानुवाच– बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन।
तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परन्तप।५।

तंव श्रीकृष्ण म्हणे पंडुसुता। तो विवस्वत जैं होता। तैं आम्ही नसों ऐसी चित्ता। भ्रांति जरी तुज।४१। तरी तूं गा हें नेणसी। पै जन्में आम्हां तुम्हासी। बहुतें गेली परी न स्मरसी। आपुली तूं।४२। मी जेणें जेणें अवसरें। जें जें होऊनि अवतरें। तें तें समस्तही स्मरे। धनुर्धरा।४३।

अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन्।
प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय संभवाम्यात्ममायया।६।

म्हणोनि हें आघवें। मागील मज आठवे। मी अजही परी संभवें। प्रकृतियोगें।४४। माझें अव्ययत्व तरी न नसे। परी होणे जाणे एक दिसे। तें प्रतिबिंबे भाग्यवशें। माझ्याचि ठायीं।४५। माझी स्वतंत्रता तरी न मोडे। परी कर्माधीन ऐसा आवडें। तेंही भ्रांतिबुद्धी तरी घडे। येऱ्हवी नाहीं।४६। कीं एकचि दिसे दुसरें। तें दर्पणाचेनि आधारें। येऱ्हवी काय वस्तुविचारें। दुजें आहे।४७। तैसा अमूर्तचि मी किरीटी। परी प्रकृति जें अधिष्ठी। तैं साकारपणे नटनटीं। कार्यालागीं।४८।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।७।

जे धर्मजात आघवें। युगायुगीं म्यां रक्षावें। ऐसा ओघ हा स्वभावें। आद्य असे।४९। म्हणोनि अजत्व परतें ठेवीं। मी अव्यक्तपणही नाठवीं। जे वेळीं धर्मातें अभिभवी। अधर्म हा।५०।

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे।८।

तें वेळीं आपुल्याचेनि कैवारें। मी साकार होऊनि अवतरें। मग अज्ञानाचें आंधारें। गिळूनि घालीं।५१। अधर्माची अवधी तोडीं। दोषांचीं लिहिलीं फाडीं। सज्जनाकरवी गुढी। सुखाची उभवीं।५२। दैत्यांचीं कुळें नाशीं। साधूंचा मान गिंवशी। धर्मासीं नीतीसीं। शेंस भरीं।५३। मी अविवेकाची काजळी। फेडूनि विवेकदीप उजळीं। तैं योगियां पाहे दिवाळी। निरंतर।५४। स्वसुखें विश्व कोंदें। धर्मचि जगीं नांदे। भक्तां निघती दोंदें। सात्विकांचीं।५५। तैं पापांचा अंचळ फिटे। पुण्याची पहांट फुटे। जैं मूर्ति माझी प्रगटे। पंडुकुमरा।५६। ऐसेया काजालागीं। अवतरें मी युगीं युगीं। परी हेंचि वोळखे जो जगीं। तो विवेकिया।५७।

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन।९।

माझें अजत्वें जन्मणें। अक्रियताचि कर्म करणें। हें अविकार जो जाणे। तो परममुक्त।५८। तो चालिला संगें न चळे। देहींचा देहीं नाकळे। मग पंचत्वीं तंव मिळे। माझ्याचि रूपीं।५९।

वीतरागभयक्रोधा मन्मया मामुपाश्रिताः।
बहवो ज्ञानतपसा पूता मद्भावमागताः।१०।

येऱ्हवीं परापर न शोचिती। जे कामनाशून्य होती। वाटा कोणे वेळीं नवचती। क्रोधाचि या।६०। सदा मियांचि आथिले। माझिया सेवा जिवाले। कीं आत्मबोधें तोषले। वीतराग जे।६१। जे तमोतेजाचिया राशी। कीं एकायतन ज्ञानासी। जे पवित्रता तीर्थांसी। तीर्थरूप।६२। ते मद्भावा सहजें आले। मी तेचि ते होऊनि ठेले। जे मज तया उरले। पदर नाहीं।६३। सांगे पितळेची गंधिकाळिक। जैं फिटली होय निःशेख। तैं सुवर्ण काइ आणिक। जोडूं जाइजे।६४। तैसे यमनियमीं कडसले। जे तपोज्ञानें चोखाळले। मी तेचि ते जाहाले। एथ संशयो कायसा।६५।

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्।
मम वर्त्माऽनुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः।११।

येऱ्हवीं तरी पाहीं। जे जैसे माझ्या ठायीं। भजती तया मीही। तैसाचि भजें।६६। देखें मनुष्यजात सकळ। हें स्वभावता भजनशीळ। जाहाले असे केवळ। माझ्या ठायीं।६७। परी ज्ञानेवीण नाशिले। जे बुद्धिभेदासि आले। त्यांनी एकाचि यया कल्पिलें। अनेकत्वें।६८। म्हणऊनि अभेदीं भेद देखती। यया अनामया नामें ठेविती। देवी देवो म्हणती। अचर्चातें।६९। जें सर्वत्र सदा सम। तेथ विभाग अधमोत्तम। मतिवशें संभ्रम। विवंचिती।७०।

कांक्षतः कर्मणां सिद्धिं यजन्त इह देवता।
क्षिप्रं हि मानुषे लोके सिद्धिर्भवति कर्मजा।१२।

मग नाना हेतुप्रकारें। यथोचितें उपचारें। मानिलीं देवतांतरे। उपासिती।७१। एथ जें जें अपेक्षित। तें तैसेंचि पावती समस्त। परी तें कर्मफळ निश्चित। वोळख तूं।७२। वाचूनि देतें घेतें आणिक। निभ्रांत नाहीं सम्यक। एथ कर्मचि फलसूचक। मनुष्यलोकीं।७३। जैसें क्षेत्रीं जें पेरिजे। तेंवाचूनि आन न निपजे। कां पाहिजे तेंचि देखीजे। दर्पणाधारें।७४। ना तरी कडेयातळवटीं। जैसा आपलाचि बोल किरीटी। पडिसाद होऊनि उठी। निमित्तयोगें।७५। तैसा समस्तां या भजनां। मी साक्षिभूत पैं अर्जुना। एथ प्रतिफळे भावेना। आपुलाली।७६।

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः।
तस्य कर्तारमपि मां विद्ध्यकर्तारमव्ययम्।१३।

आतां याचिपरी जाण। चाऱ्ही हे वर्ण। सृजिले म्यां गुण। कर्म विभागे।७७। जे प्रकृतीचेनि आधारें। गुणाचेनि व्यभिचारें। कर्मे तदनुसारें। विवंचिलीं।७८। एथ एकचि हें धनुष्यपाणी। परी जाहाले गा चहूं वर्णी। ऐसी गुणकर्मकडसणी। केली सहजें।७९। म्हणोनि आइकें पार्था। हें वर्णभेदसंस्था। मी कर्ता नव्हे सर्वथा। याचिलागीं।८०।

न मां कर्माणि लिंपंति न मे कर्मफले स्पृहा।
इति मां योऽभिजानाति कर्मभिर्न स बध्यते।१४।

हें मजचिस्तव जाहालें। परी म्यां नाहीं केलें। ऐसें जेणें जाणितलें। तो सुटला गा।८१।

एवं ज्ञात्वा कृतं कर्म पूर्वैरपि मुमुक्षुभिः।
कुरु कर्मैव तस्मात्त्वं पूर्वैः पूर्वतरं कृतम्।१५।

मागील मुमुक्षु जे होते। तिहीं ऐसिया जाणोनि मातें। कर्मे केली समस्तें। धनुर्धरा।८२। पेरितां बीजें जैसी दग्धलीं। नुगवतीचि पेरिलीं। तैसी कर्मेचि परि तयां जाहालीं। मोक्षहेतु।८३। एथ आणिकही एक अर्जुना। हे कर्माकर्मविवंचना। आपुलियें चाडें सज्ञाना। योग्य नोहे।८४।

किं कर्म किमकर्मेति कवयोऽप्यत्र मोहिताः।
तत्ते कर्म प्रवक्ष्यामि यजात्वा मोक्षसेऽशुभात्।१६।

कर्म म्हणिपे तें कवण। अथवा अकर्मी काय लक्षण। ऐसें विचारितां विचक्षण। गुंफोनि ठेले।८५। जैसें कां कुडे नाणें। खऱ्याचेनि सारखेपणें। डोळ्याचेंचि देखणें। संशयीं घालीं।८६। तैसें नैष्कर्म्यतेचेनि भ्रमें। गिंवसिजत आहाती कर्मे। जे दुजी सृष्टी मनोधर्मे। करूं सकती।८७। वांचूनि मूर्खाची गोठी कायसी। एथ मोहले गा दीर्घदर्शी। म्हणोनि आतां तेंचि पेरियेसीं। सांगेन तुज।८८।

कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं बोद्धव्यं च विकर्मणः।

अकर्मणश्च बोद्धव्यं गहना कर्मणो गतिः ।१७।

तरीं कर्म म्हणिजे स्वभावें। जेणे विश्वाकार संभवे। तें सम्यक आधीं जाणावें। लागे एथ ।८६। मग वर्णाश्रमासि उचित। जें विशेष कर्म विहित। तेंही वोळखावें निश्चित। उपयोगेंसीं ।६०। पाठीं जें निषिद्ध म्हणिपे। तेंही बुझावें स्वरूपें। येतुलेनि कांहीं न गुंफे। आपैसेचि ।६१। येऱ्हवीं जग हें कर्माधीन। ऐसियाची व्याप्ती गहन। परी तें असो आइकें चिन्ह। प्राप्तांचें ।६२।

कर्मण्यकर्म यः पश्येदकर्मणि च कर्म यः।
स बुद्धिमान्मनुष्येषु स युक्तः कृत्स्नकर्मकृत् ।१८।

जो सकळ कर्मीं वर्ततां। देखे आपुली नैष्कर्म्यता। कर्मसंगें निराशता। फळाचिया ।६३। आणि कर्तव्यतेलागी। जया दुसरें नाहीं जगीं। ऐसिया नैष्कर्म्यता तरी चांगी। बोधला असे ।६४। तरी क्रियाकलाप आघवा। आचरत दिसे बरवा। तोचि तो ये चिन्हीं जाणावा। ज्ञानिया गा ।६५। जैसा कां जळापाशीं उभा ठाके। तो जरी आपणपें जळामाजि देखे। तरी तो निभ्रांत वोळखे। म्हणे मी वेगळा आहें ।६६। अथवा नावे हन जो रिगे। तो थडियेचे रुख जाता देखें वेगे। तेचि साचोकारें पाहो जो लागे। तंव रुख म्हणे अचळ ।६७। तैसें सर्वकर्मीं असणें। तें फुडें मानूनि वायाणें। मग आपण जो जाणे। नैष्कर्म्य ऐसा ।६८। आणि उदोअस्ताचेनि प्रमाणें। जैसें न चालता सूर्याचे चालणें। तैसें नैष्कर्म्यतत्त्व जाणे। कर्मीचि असतां ।६६। तो मनुष्यासारिखा तरी आवडे। परी मनुष्यत्व तया न घडे। जैसें जळामाजीं न बुडे। भानुबिंब ।१००। तेणें न पाहतां विश्व देखिलें। न करितां सर्व केलें। न भोगितां भोगिलें। भोग्यजात ।१। एकेचि ठायीं बैसला। परि सर्वत्र तोचि गेला। हें असो विश्व जाहाला। आंगेंचि तो ।२।

यस्य सर्वे समारंभाः कामसंकल्पवर्जिताः।
ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं तमाहुः पण्डितं बुधाः ।१६।

जया पुरुषाच्या ठायीं। कर्माचा तरी खेद नाहीं। तरी फळापेक्षां कांहीं। संचरेना ।३। आणि हें कर्म मी करीन। अथवा आदरिलें सिद्धी नेईन। येणें संकल्पेंही जयाचें मन। विटाळे ना ।४। ज्ञानाग्नीचेनि मुखें। जेणें जाळिली कर्में अशेखें। तो परब्रह्मचि मनुष्यवेखें। वोळख तूं ।५।

त्यक्त्वा कर्मफलासंगं नित्य तृप्तो निराश्रयः।
कर्मण्यभिप्रवृत्तोऽपि नैव किंचित्करोति सः ।२०।

जो शरीरीं उदास। फळभोगीं निरास। नित्यता उल्हास। होऊनि असे ।६। जो संतोषाच्या गाभारां। आत्मबोधाचिया वोगरां। पुरें न म्हणेचि धनुर्धरा। आरोगितां ।७।

निराशीर्यतचित्तात्मा त्यक्तसर्वपरिग्रहः।
शारीरं केवलं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम् ।२१।
यदृच्छालाभसंतुष्टो द्वंद्वातीतो विमत्सरः।
समः सिद्धावसिद्धौ च कृत्वापि न निबद्ध्यते ।२२।

कैसी अधिकाधिक आवडी। घेत महासुखाची गोडी। सांडोनियां आशा कुरोंडी। अहंभावेतीं ।८। म्हणोनि अवसरें जें जें पावे। तेणेंचि ता सुखावे। जया आपुले आणि परावें। दोन्ही नाहीं ।६। तो दिठी जें पाहे। तें आपणचि होऊन जाये। आइके तें आहे। तोचि जाहला ।११०। चरणीं हन चाले। मुखें जें जें बोले। ऐसे चेष्टजात तेतुलें। आपणचि जो ।११। हें असो विश्व पाही। जयासी आपणपेंवाचूनि नाहीं। आतां कवण तें कर्म कायी। बाधी तयातें ।१२। हा मत्सर जेथ उपजे। तेतुले नुरेचि जया दुजे। तो निर्मत्सर काइ म्हणिजे। बोलवरी ।१३। म्हणोनि सर्वांपरी मुक्त। तो सकर्मचि कर्मरहित। सगुण परी गुणातीत। एथ भ्रांति नाहीं ।१४।

गतसंगस्य मुक्तस्य ज्ञानावस्थितचेतसः।
यज्ञायाचरतः कर्म समग्रं प्रविलीयते ।२३।

तो देहसंगें तरी असे। परि चैतन्यासारिखा दिसे। पाहतां परब्रह्माचेनि कसें। चोखाळ भला।१५। ऐसाही परी कौतुकें। जरी कर्मे करी यज्ञादिकें। तरी तिये लया जाती निःशेखें। तयाच्याचि ठायीं।१६। अकाळींची अभ्रे जैशीं। ऊर्मीवीण आकाशीं। हरपती आपैशीं। उदयली सातीं।१७। तैसीं विधिविधानें विहितें। जरी आचरे तो समस्तें। तरी तियें ऐक्यभावें ऐक्यातें। पावतीचि गा।१८।

ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना।२४।

हें हवन मी होता। कां इये यज्ञीं हा भोक्ता। ऐसिया बुद्धीसि नाहीं भिन्नता। म्हणऊनियां।१९। जे इष्टयज्ञ यजावें। तें हविमंत्रादि आघवें। तो देखतसे अविनाशभावें। आत्मबुद्धि।१२०। म्हणऊनि ब्रह्म तेचि कर्म। ऐसे बोधा आले जया सम। तया कर्तव्य तें नैष्कर्म्य। धनुर्धरा।२१। आतां अविवेक कुमारत्वा मुकले। जया विरक्तीचें पाणिग्रहण जाहालें। मग उपासन जिहीं आणिलें। योगाग्नीचें।२२।

दैवमेवापरे यज्ञं योगिनः पर्युपासते।
ब्रह्माग्नावपरे यज्ञं यज्ञेनैवोपजुह्वति।२५।

जे यजनशील अहर्निशी। जिहीं अविद्या हविली मनेंसीं। गुरुवाक्यहुताशीं। हवन केलें।२३। तिहीं योगाग्निकीं यजिजे। तो दैवयज्ञ म्हणिजे। जेणें आत्मसुख कामिजे। पंडुकुमरा।२४। दैवास्तव पाळण। जो चिंतीना देहभरण। तो महायोगी जाण। दैवयोगें।२५। आतां अवधारी सांगेन आणिक। जे ब्रह्माग्नि साग्निक। तयातें यज्ञेचि यज्ञ देख। उपासिजे।२६।

श्रोत्रादीनीन्द्रियाण्यन्ये संयमाग्निषु जुह्वति।
शब्दादीन्विषयानन्य इन्द्रियाग्निषु जुह्वति।२६।

एक संयमाग्निहोत्री। ते युक्तित्रयाच्या मंत्रीं। यजन करिती पवित्रीं। इन्द्रियद्रव्यीं।२७। एकां वैराग्य रवि विवळे। तंव संयती विहार केले। तेथ अपावृत जाहाले। इन्द्रियानळ।२८। तिहीं विरक्तीची ज्वाळा घेतली। तंव विकारांची इंधनें पळिपलीं। तेथ आशाधूमें सांडिलीं। पांचही कुंडें।२९। मग वाक्यविधीचिया निरवडी। विषयी आहुती उदंडी। हवन केलें कुंडीं। इन्द्रियाग्नीच्या।१३०।

सर्वाणीन्द्रियकर्माणि प्राणकर्माणि चापरे।
आत्मसंयमयोगाग्नौ जुह्वति ज्ञानदीपिते।२७।

एकीं ययापरी पार्था। दोष क्षाळिले सर्वथा। एकीं हृदयारणीं मंथा। विवेक केला।३१। तो उपशम निहटिला। धैर्यभारे दाटिला। गुरुवाक्यें काढिला। बळकटपणें।३२। ऐसें समरसें मंथन केलें। तेथ झडकरी काजा आलें। जे उज्जीवन जाहालें। ज्ञानाग्नीचें।३३। पहिला ऋद्धिसिद्धींचा संभ्रम। तो निवर्तोनि गेला धूम। मग प्रगटला सूक्ष्म। विस्फुलिंग।३४। तया मनाचें मोकळें। तेंचि पेटवण घातलें। जें यमनियमीं हळवारलें। आइतें होतें।३५। तेणें सादुकपणें ज्वाळा समृद्धा। मग वासनांतराचिया समिधा। स्नेहेंसीं नानाविधा। जाळिलिया।३६। तेथ सोहंमंत्रे दीक्षितीं। इंद्रियकर्माचिया आहुती। तिये ज्ञानानळी प्रदीप्तीं। दिधलिया।३७। पाठी प्राणकर्माचिये स्रुवेनिशीं। पूर्णाहुती पडलिया हुताशीं। तेथ अवभृथ समरसीं। सहजें जाहलें।३८। मग आत्मबोधींचें सुख। जें संयमाग्नीचें हुतशेष। तोचि पुरोडाश देख। घेतला तिहीं।३९। एक ऐशिया इहीं यजनीं। मुक्त तें जाहालें त्रिभुवनीं। या यज्ञक्रिया तरी आनानी। परी प्राप्य तें एक।१४०।

द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञा योगयज्ञास्तथाऽपरे।
स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्च यतयः संशितव्रताः।२८।

एक द्रव्ययज्ञ म्हणिपती। एक तपसामग्रिया निपजविती। एक योगयागही आहाती। जे सांगितले।४१। एकीं शब्दीं शब्द यजिजे। तो वाग्यज्ञ म्हणिजे। ज्ञानें ज्ञेय गमिजे। तो ज्ञानयज्ञ।४२। हें अर्जुना सकळ कुवाडें। जें अनुष्ठितां अतिसांकडें। परी जितेंद्रियासीचि घडे। योग्यतावशें।४३। ते प्रवीण तेथ भले। आणि योगसमृद्धि आथिले। म्हणोनि आपणपां तिहीं केलें। आत्महवन।४४।

अपाने जुह्वति प्राणं प्राणेऽपानं तथाऽपरे।
प्राणापानगती रुद्ध्वा प्राणायामपरायणाः।२९।

मग अपानाग्नीचे मुखीं। प्राणद्रव्यें देखीं। हवन केलें एकीं। अभ्यासयोगें।४५। एक अपान प्राणीं अर्पिती। एक दोहींतेंही निरुंधिती। ते प्राणायामी म्हणिपती। पंडुकुमरा।४६।

अपरे नियताहाराः प्राणान्प्राणेषु जुह्वति।
सर्वेऽप्येते यज्ञविदो यज्ञक्षपितकल्मषाः।३०।

एक वज्रयोगक्रमें। सर्वाहारसंयमें। प्राणी प्राण संभ्रमें। हवन करिती।४७। ऐसे मोक्षकाम सकळ। समस्त हे यजनशीळ। जिहीं यज्ञद्वारा मनोमळ। क्षाळण केले।४८। जया अविद्याजात जाळितां। जें उरलें निजस्वभावता। जेथ अग्नि आणि होता। उरेचि ना।४६। जेथ यजितयाचा काम पुरे। यज्ञींचे विधान सरे। मागुते जेथोनि वोसरे। क्रियाजात।१५०। विचार जेथ न रिगे। हेतु जयाते नेघे। जें द्वैतदोषसंगें। लिंपेचि ना।५१।

यज्ञशिष्टामृतभुजो यान्ति ब्रह्म सनातनम्।
नायं लोकोऽस्त्ययज्ञस्य कुतोन्यः कुरुसत्तम।३१।

ऐसें अनादिसिद्ध चोखट। जें ज्ञान यज्ञावशिष्ट। तें सेविती ब्रह्मनिष्ठ। ब्रह्माहंमंत्रें।५२। ऐसें शेषामृतें धालें। कीं अमर्त्यीाावा आले। म्हणोनि ब्रह्म ते जाहलें। अनायासें।५३। येरां विरक्ति माळ न घालीचि। जयां संयमाग्नीची सेवा न घडेचि। जे योगयाग न करितीचि। जन्मले साते।५४। जयां ऐहिक धड नाहीं। तयांचे परत्र पुससी काई। म्हणोनि असो हे गोष्टी पाहीं। पंडुकुमरा।५५।

एवं बहुविधा यज्ञा वितता ब्रह्मणो मुखे।
कर्मजान्विद्धि तान्सर्वानेवं ज्ञात्वा विमोक्ष्यसे।३२।

ऐसें बहुतीं परी अनेग। जे सांगीतले तुज कां याग। ते विस्तारूनि वेदें चांग। म्हणितले आहाती।५६। परी तेणें विस्तारें काय करावें। हेंचि कर्मसिद्ध जाणावें। येतुलेनि कर्मबंध स्वभावें। पावेल गा।५७।

श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञः परन्तप।
सर्वं कर्माखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते।३३।

अर्जुना वेद जयांचे मूळ। जे क्रियाविशेष स्थूळ। जया नव्हाळियेचें फळ। स्वर्गसुख।५८। ते द्रव्यादियाग कीर होती। परी ज्ञानयज्ञाची सरी न पवती। जैसी तारातेजसंपत्ती। दिनकरापाशीं।५६। देखें परमात्मसुखनिधान। साधावया योगीजन। जे न विसंबिती अजन। उन्मेषनेत्रीं।१६०। जें धावतयां कर्पाची लाणी। नैष्कर्म्यबोधाची खाणी। जें मुकेलिया धणी। साधनाची।६१। जेथ प्रवृत्ति पांगुळ जाहाली। तर्काची दृष्टी गेली। जेणें इन्द्रियें विसरली। विषयसंग।६२। मनाचें मनपण गेले। जेथ बोलाचे बोलकेपण ठेलें। जयामाजीं सांपडलें। ज्ञेय दिसे।६३। जेथ वैराग्याचा पांग फिटे। विवेकाचाहीं सोस तुटे। जेथ न पाहतां सहज भेटे। आपणपें।६४।

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः।३४।

तें गा ज्ञान पैं बरवें। जरी मनीं आथि जाणावें। तरी संतांतें भजावें। सर्वस्वेंसीं।६५। जे ज्ञानाचा कुरुठा। तेथ सेवा हा दारवंटा। तो स्वाधीन करिती सुभटा। वोळगोनि।६६। तरी तनुमनजीवें। चरणांसी लागावें। आणि अगर्वता करावें। दास्य सकळ।६७। मग अपेक्षित जें आपुलें। तेंही सांगतील पुसिलें। जेणे अंतःकरण बोधले। संकल्पा न ये।६८।

यजात्वा न पुनर्मोहमेवं यास्यसि पांडव।
येन भूतान्यशेषेण द्रक्ष्यस्यात्मन्यथो मयि।३५।

जयाचेनि वाक्य उजिवडें। जाहालें चित्त निधडे। ब्रह्माचेनि पाडें। निःशंक होय।६६। तेवेळीं आपणपेयासहितें। इयें अशेषेही भूते। माझ्या स्वरूपीं अखंडितें। देखसी तूं।१७०। ऐसें ज्ञानप्रकाशे पाहेल। तै मोहांधकार जाईल। जैं श्रीगुरुकृपा होईल। पार्था गा।७१।

अपि चेदसि पापेभ्यः सर्वेभ्यः पापकृत्तमः।
सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं संतरिष्यसि।३६।

जरी कल्मषाचा आगर। तूं भ्रांतीचा सागर। व्यामोहाचा डोंगर। होऊनि अससी।७२। तरी ज्ञानशक्तीचेनि पाडें। हें आघवेंचि गा थोकडें। ऐसें सामर्थ्य असे चोखडें। ज्ञानीं इये।७३। देखें विश्वसंभ्रमाऐसा। जो अमूर्ताचा कडवसा। तो जयाचिया प्रकाशा। पुरेचिना।७४। तया कायसे हे मनोमळ। हें बोलताचि अति किडाळ। नाहीं येणे पाडें ढिसाळ। दुजें जगीं।७५।

यथैधांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन।
ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा।३७।

सांगें भुवनत्रयाची काळजी। जे गगनामाजी उधवली। तिये प्रळयींचे वावटुळी। काय अभ्र पुरे।७६। कीं पवनाचेनि कोपें। पाणियेंचि जो पळिपे। तो प्रळयानळ दडपे। तृणकाष्ठें काई।७७।

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।
तत्स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति।३८।

म्हणोनि असो हें न घडे। तें विचारितांचि असंगडें। पुढती ज्ञानाचेनि पाडें। पवित्र न दिसे।७८। एथ ज्ञान हें उत्तम होये। आणिकही एक तैसें कें आहे। जैसे चैतन्य कां नोहे। दुसरें गा।७९। या महातेजाचेनि कसें। जरी चोखाळ प्रतिबिंब दिसे। कां गिंवसिलें गिंवसे। आकाश हे।१८०। ना तरी पृथ्वीचेनि पाडें। कांटाळें जरी जोडे। तरी उपमा ज्ञानी घडे। पंडुकुमरा।८१। म्हणूनि बहुतीं परी पाहतां। पुढतपुढति निर्धारितां। हे ज्ञानाची पवित्रता। ज्ञानीची आथी।८२। जैसा अमृताची चवी निवडिजे। तरी अमृताचिसारखी म्हणिजे। तैसें ज्ञान हे उपमिजे। ज्ञानेसींचि।८३। आतां यावरी जे बोलणे। तें वायाचि वेळ फेडणें। तंव साचचि हे पार्थ म्हणे। जें बोलत असां।८४। परी तेंचि ज्ञान केवी जाणावें। ऐसें अर्जुनें जंव पुसावे। तव तें मनोगत देवें। जाणीतले।८५। मग म्हणतसे किरीटी। आतां चित्त देई इये गोठी। सांगेन ज्ञानाचिये भेटी। उपाय तुज।८६।

श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति।३९।

आत्मसुखाचिया गोडिया। विटे जो कां सकळ विषयां। जयाच्या ठायीं इंद्रियां। मान नाहीं।८७। जो मनासी चाड न सांगे। जो प्रकृतीचें केलें नेघे। जो श्रद्धेचेनि संभोगें। सुखिया जाहला।८८। तयातेंचि गिंवसित। तें ज्ञान पावे निश्चित। जयामाजि अचुंबित। शांति असे।८९। तें ज्ञान हृदयीं प्रतिष्ठे। आणि शांतिचा अंकुर फुटे। मग विस्तार बहु प्रगटे। आत्मबोधाचा।१९०। मग जेउती वास पाहिजे। तेउती शांतीचि देखिजे। तेथ आपपर नेणिजे। निर्धारितां।९१। ऐसा हा उत्तरोत्तर। ज्ञानबीजाचा विस्तार। सांगतां असे अपार। परी असो आतां।९२।

अज्ञश्चाश्रद्दधानश्च संशयात्मा विनश्यति।
नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः।४०।

ऐकें जया प्राणियाच्या ठायीं। इया ज्ञानाची आवडी नाहीं। तयाचें जियालें म्हणों काई। वरी मरण चांग।९३। शून्य जैसे गृह। कां चैतन्येंवीण देह। तैसें जीवित तें संमोह। ज्ञानहीन।९४। अथवा ज्ञान कीर आपु नोहे। परी ते चाड एकी जरी वाहे। तरी तेथ जिव्हाळा कांहीं आहे। प्राप्तीचा पैं।९५। वांचूनि ज्ञानाची गोठी कायसी। परी ते आस्थाही न धरी मानसी। तरी तो संशयरूप हुताशीं। पडिला जाण।९६। जे अमृतही परी नावडे। ऐसें सांवियाची अरोचक जैं पडे। तैं मरण आलें असें फुडें। जाणो ये कीं।९७। तैसा विषयसुखें रंजे। जो ज्ञानेंसींचि माजे। तो संशयें अंगिकारिजे। एथ भ्रांति नाहीं।९८। मग संशयीं जरी पडिला। तरी निभ्रांत जाणें नासला। तो ऐहिकपरत्रा मुकला। सुखासि गा। ९९। जया काळज्वर आंगीं बाणे। तो शीतोष्णें जैशी नेणे। आगी आणि चांदिणे। सरिसेंचि मानी।२००। तैसें साच आणि लटिकें। विरुद्ध आणि निकें। संशयीं तो नोळखे। हिताहित।१। हा रात्री दिवस पाही। जैसा जात्यंधा ठाउवा नाहीं। तैसें संशयीं असतां कांहीं। मना न ये।२। म्हणऊनि संशयाहूनि थोर। आणिक नाहीं पाप घोर। हा विनाशाची वागुर। प्राणियांसी।३। येणेंकारणें तुवां त्यजावा। आधीं हाचि एक जिणावा। जो ज्ञानाचिया अभावाः। माजि

असे ।४। जैं अज्ञानाचे गडद पडे। तैं हा बहुवस मनीं वाढे। म्हणोनि सर्वथा मार्ग मोडे। विश्वासाचा ।५। हृदयीं हाचि न समाये। बुद्धीतें गिंवसूनि ठाये। तेथे संशयात्मक होये। लोकत्रय ।६।

योगसंन्यस्तकर्माणं ज्ञानसंछिन्नसंशयम्।
आत्मवन्तं न कर्माणि निबध्नन्ति धनंजय ।४१।

ऐसा जरी थोरावे। तरी उपायें एकें आंगवे। जरी हातीं होय बरवें। ज्ञानखड्ग ।७। तरी तेणें ज्ञानशस्त्रें तिखटें। निखळ हा निवटे। मग निःशेष खता फिटे। मानसींचा ।८।

तस्मादज्ञानसंभूतं हृत्स्थं ज्ञानासिनात्मनः।
छित्त्वैनं संशयं योगमातिष्ठोत्तिष्ठ भारत ।४२।

इति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ज्ञानकर्मसंन्यासयोगो नाम चतुर्थोऽध्यायः।

याकारणें पार्था। उठीं वेगीं वरौता। नाश करोनि हृदयस्था। संशयासी ।६। ऐसें सर्वज्ञाचा बाप। जो श्रीकृष्ण ज्ञानदीप। तो म्हणतसे सकृप। ऐकें राया ।२१०। तंव या पूर्वापार बोलाचा। विचार करूनि कुमर पंडूचा। कैसा प्रश्न अवसरींचा। करिता होईल ।११। ते कथेची संगती। भावाची संपत्ती। रसाची उन्नती। म्हणिपेल पुढां ।१२। जयाचिया बरवेपणी। कीजे आठा रसांची वोवाळणी। जो सज्जनाचिये आयणी। विसांवा जगीं ।१३। जो शांतचि अभिनवेल। ते परियेसा मऱ्हाटे बोल। जे समुद्राहूनि सखोल। अर्थभरित ।१४। जैसें बिंब तरी बचकेचि एवढें। परी प्रकाशासी त्रिभुवन थोकडे। शब्दाची व्याप्ति तेणें पाडें। अनुभवावी ।१५। ना तरी कामितयाचिया इच्छा। फळे कल्पवृक्ष जैसा। बोल व्यापक होय तैसा। तरी अवधान द्यावें ।१६। हें असों काय म्हणावें। सर्वज्ञ जाणती स्वभावें। तरी निके चित्त द्यावें। हे विनंती माझी ।१७। जेथ साहित्य आणि शांति। हे रेखा दिसे बोलती। जैसी लावण्यगुण कुळवती। आणि पतिव्रता ।१८। आधींचि साखर आवडे। तेचि जरी ओखदीं जोडे। तरी सेवावी ना कां कोडें। नावानावा ।१६। सहजें मलयानिल मंद सुगंध। तया अमृताचा होय स्वाद। आणि तेथेचि जोडे नाद। जरी दैवगत्या ।२२०। तरी स्पर्शे सर्वांग निववी। स्वादें जिव्हेतें नाचवी। तेवींचि कानाकरवीं म्हणवी। बाप माझा ।२१। तैसें कथेचें इये ऐकणे। एक श्रवणासि होय पारणे। आणि संसारदुःख मूळवणें। विकृतीविणें ।२२। जरी मंत्रेंचि वैरी मरे। तरी वायां कां बांधावे कटारे। रोग जाय दुधें साखरें। तरी निंब का पियावा ।२३। तैसा मनाचा मार न करितां। आणि इंद्रिया दुःख न देतां। एथ मोक्ष असे आयता। श्रवणाचिमाजि ।२४। म्हणोनि आथिलिया आराणुका। गीतार्थ हा निका। ज्ञानदेव म्हणे आइका। निवृत्तिदास ।२२५।

इति श्रीज्ञानदेवविरचितायां भावार्थदीपिकायां चतुर्थोऽध्यायः ।४।

श्लोक ४२, ओव्या २२५

ज्ञानेश्वरी अध्याय पाचवा–कर्मसंन्यासयोग

अर्जुन उवाच– संन्यासं कर्मणां कृष्ण पुनर्योगं च शंससि।
यच्छ्रेय एतयोरेकं तन्मे ब्रूहि सुनिश्चितम्।१।

मग पार्थ श्रीकृष्णातें म्हणे। हांहो हें कैसें तुमचे बोलणें। एक होय तरी अंतःकरणें। विचारूं ये।१। मागां सकळ कर्मांचा संन्यास। तुम्हींच निरोपिला होता बहुवस। तरी कर्मयोगीं केवीं अतिरस। पोखीतसां पुढती।२। ऐसें व्यर्थ हें बोलतां। आम्हां नेणतयांच्या चित्ता। आपुलिये चाडे श्रीअनंता। उमज नोहे।३। ऐकें एकसारातें बोधिजे। तरी एकनिष्ठचि बोलिजे। हें आणिकीं काय सांगिजें। तुम्हांप्रति।४। तरी याचिलागीं तुमतें। म्या राउळासी विनविलें होतें। जे हा परमार्थ ध्वनितें। न बोलावा।५। परी मागील असो देवा। आतां प्रस्तुती उकल देखावा। सांगें दोहींमाजि बरवा। मार्ग कवण।६। जो परिणामींचा निर्वाळा। अचुंबित ये फळा। आणि अनुष्ठिता प्रांजळा। सावियाचि।७। जैसें निद्रेचे सुख न मोडे। आणि मार्ग तरी बहुसाल सांडे। तैसें सुखासना सांगडें। सोहपें होय।८। येणें अर्जुनाचेनि बोले। देवो मनीं रिझले। मग होईल ऐकें म्हणितलें। संतोषोनियां।९। देखा कामधेनुऐसी माये। सदैवा जया होये। तो चंद्रही परी लाहे। खेळावया।१०। पाहें पां श्रीशंभूची प्रसन्नता। तया उपमन्यूचिया आर्ता। काय क्षिराब्धि दूधभाता। देइजेचिना।११। तैसा औदार्याचा कुरुठा। श्रीकृष्ण आपु जाहालिया सुभटा। कां सर्व सुखाचा वसौटा। तोचि नोहावा।१२। एथ चमत्कार कायसा। गोसावी श्रीलक्ष्मीकांताऐसा। आतां आपुलिया सवेसा। मागावा कीं।१३। म्हणोनि अर्जुने म्हणितलें। तें हांसोनि येरें दिधलें। तेंचि सांगेन बोलिलें। काय कृष्णें।१४।

श्रीभगवानुवाच– संन्यासः कर्मयोगश्च निश्रेयसकरावुभौ।
तयोस्तु कर्मसंन्यासात्कर्मयोगो विशिष्यते।२।

तो म्हणे गा कुंती सुता। हे संन्यास योग विचारितां। मोक्षकर तत्वतां दोनीही होती।१५। तरी जाणांनेणां सकळां। हा कर्मयोग कीर प्रांजळा। जैसी नाव स्त्रियां बाळां। तोयतरणी।१६। तैसें सारासार पाहिजे। तरी सोहपा हाचि देखिजे। येणें संन्यासफळ लाहिजे। अनायासें।१७। आतां याचिलागीं सांगेन। तुज संन्यासियाचें चिह्न। मग सहजें हे अभिन्न। जाणसी तू।१८।

ज्ञेयः स नित्यसंन्यासी यो न द्वेष्टि न कांक्षति।
निर्द्वन्द्वो हि महाबाहो सुखं बन्धात्प्रमुच्यते।३।

तरी गेलीयाची से न करी। न पवतां चाड न धरी। जो सुनिश्चळ अंतरीं। मेरु जैसा।१९। आणि मी माझे ऐसी आठवण। विसरलें जयाचें अंतःकरण। पार्था तो संन्यासी जाण। निरंतर।२०। जो मनें ऐसा जाहला। संगीं तोचि सांडिला। म्हणोनि सुखें सुख पावला। अखंडित।२१। आतां गृहादिक आघवें। तें कांहीं न लगें त्यजावें। जें घेते जाहलें स्वभावें। निःसंग म्हणऊनि।२२। देखें अग्नि विझोनि जाये। मग जे राखोंडी केवळ होये। तैं तें कापुसें गिवसूं ये। जियापरी।२३। तैसा असतेनि उपाधी। नाकळिजे तो कर्मबंधीं। जयाचिये बुद्धि। संकल्प नाहीं।२४। म्हणोनि कल्पना जै सांडे। तैचि गा संन्यास घडे। इये कारणें दोनी सांगडे। संन्यास योग।२५।

सांख्ययोगौ पृथग्बालाः प्रवदन्ति न पण्डिताः।
एकमप्यास्थितः सम्यगुभयोर्विन्दते फलम्।४।

येऱ्हवीं तरी पार्था। जे मूर्ख होती सर्वथा। ते सांख्ययोगसंस्था। जाणती केवी।२६। सहजें ते अज्ञान। म्हणोनि म्हणती ते भिन्न। येऱ्हवीं दीपाप्रति काइ आनान। प्रकाश आहाती।२७। पैं सम्यक एकें अनुभवें। जिहीं देखिलें तत्त्व आघवें। दोहींतेंहीं ऐक्यभावें। मानिती गा।२८।

यत्सांख्यैः प्राप्यते स्थानं तद्योगैरपि गम्यते।
एकं सांख्यं च योगं च यः पश्यति स पश्यति।५।

आणि सांख्यीं जे पाविजे। तेंचि योगीं गमिजे। म्हणोनि ऐक्य दोहीतें सहजें। इयापरी।२९। देखे आकाशा आणि अवकाशा। भेद नाहीं जैसा। तैंसें ऐक्य योगसंन्यासा। वोळखे जो।३०। तयांसीचि जगीं पाहले। आपणपें तेणेंचि देखिलें। जया सांख्य योग जाणवले। भेदेंविण।३१।

संन्यासस्तु महाबाहो दुःखमाप्तमयोगतः।
योगयुक्तो मुनिर्ब्रह्म नचिरेणाऽधिगच्छति।६।

जो युक्तिपंथें पार्था। चढे मोक्षपर्वता। तो महासुखाचा निमथा। वहिला पावे। येरा योगस्थिती जया सांडे। तो वायांची गा हव्यासी पडे। परी प्राप्ति कंहीं न घडे। संन्यासाची।३३।

योगयुक्तो विशुद्धात्मा विजितात्मा जितेन्द्रियः।
सर्वभूतात्मभूतात्मा कुर्वन्नपि न लिप्यते।७।

जेणें भ्रांतिपासूनि हिरतलें। गुरुवाक्यें मन धुतलें। मग आत्मस्वरूपीं घातलें। रोऊनिया।३४। जैसें समुद्रीं लवण न पडे। तंव वेगळे अल्प आवडे। मग होय सिंधूचियेवढें। मिळे तेव्हां।३५। तैसें संकल्पोनि काढिलें। जयाचें मनचि चैतन्य जाहालें। तेणें एकदेशियें परी व्यापिलें। लोकत्रय।३६। आतां कर्ता कर्म करावें। हें खुंटले तया स्वभावें। आणि करी जऱ्ही आघवें। तऱ्ही अकर्ता तो।३७।

नैव किंचित्करोमीति युक्तो मन्येत तत्त्ववित्।
पश्यंश्रृण्वन्स्पृशंजिघ्रन्नश्नन्गच्छन्स्वपंश्वसन्।८।
प्रलपन्विसृजन्गृह्णन्नुन्मिषन्निमिषन्नपि।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेषु वर्तन्त इति धारयन्।९।

जे पार्था तया देहीं। मीं ऐसा आठवू नाहीं। तरी कर्तृत्व कैचें कांई। उरे सांगे।३८। ऐसे तनुत्यागेविण। अमूर्ताचे गुण। दिसती संपूर्ण। योगयुक्तां।३९। येऱ्हवीं आणिकांचिये परी। तोही एक शरीरी। अशेषाही व्यापारी। वर्तत दिसे।४०। तोही नेत्रीं पाहे। श्रवणीं ऐकत आहे। परी तेथिंचा सर्वथा नोहे। नवल देखें।४१। स्पर्शासी तरी जाणे। परिमळ सेवी घ्राणें। अवसरोचित बोलणें। तयाहि आथी।४२। आहारातें स्वीकारी। त्यजावें ते परिहरी। निद्रेचिया अवसरीं। निदिजे सुखें।४३। आपुलेनि इच्छावशें। तोही गा चालत दिसे। पैं सकळ कर्म ऐसें। राहाटे कीर।४४। हें सांगों काइ एकैक। देखें श्वासोच्छ्वासादिक। आणि निमिषोन्निमिष। आदिकरूनि।४५। पार्था तयाचे ठायीं। हें आघवेचि आथि पाहीं। परी तो कर्ता नव्हे कांहीं। प्रतीतिबळें।४६। जै भ्रांतिसेजे सुतला। तैं स्वप्नसुखें भुतला। मग तो ज्ञानोदयीं चेइला। म्हणोनिया।४७।

ब्रह्मण्याधाय कर्माणि संगं त्यक्त्वा करोति यः।
लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवाम्भसा।१०।

आता अधिष्ठानसंगती। अशेषाही इन्द्रियवृत्ती। आंपुलालिया अर्थी। वर्तत आहाती।४८। दीपाचेनि प्रकाशें। गृहींचे व्यापार जैसे। देहीं कर्मजात तैसे। योगयुक्ता।४९। तो कर्में करी सकळें। परी कर्मबन्धा नाकळे। जैसें न सिंपे जळीं जळें। पद्मपत्र।५०।

कायेन मनसा बुद्ध्या केवलैरिन्द्रियैरपि।
योगिनः कर्म कुर्वन्ति संगं त्यक्त्वात्मशुद्धये।११।

देखें बुद्धीची भाष नेणिजे। मनाचा अंकुर नुदैजे। ऐसा व्यापार तो बोलिजे। शारीर गा।५१। हेंच मराठें परियेसी। तरी बाळकाची चेष्टा जैसी। योगिये कर्में करिती तैसी। केवळा तनु।५२। मग पांचभौतिक संचलें। जेव्हां शरीर जसे निदेलें। तेथें मनचि राहाटे एकलें। स्वप्नीं जेवीं।५३। नवल ऐकें धनुर्धरा। कैसा वासनेचा संसारा। देहा हों नेदी उजगरा। परी सुखदुःखें भोगी।५४। इन्द्रियांच्या गांवीं नेणिजें। ऐसा व्यापार जो निपजें। तो केवळ गा म्हणिजे। मानसाचा।५५। योगिये तोही करिती। परी कर्में ते न बंधिजती। जे सांडिली आहे संगती। अहंभावाची।५६। आतां जाहालिया भ्रमहत। जैसे पिशाचाचें चित्त। मग इन्द्रियांचे चेष्टित। विकळ दिसे।५७। स्वरूप तरी देखे। आळविलें आइके। शब्द बोले मुखें। परी ज्ञान नाही।५८। हें असो काजेविणें। जें जें कांहीं करणें। तें केवळ कर्म जाणें। इन्द्रियांचें।५९। मग सर्वत्र जे जाणतें। तें बुद्धीचे कर्म निरुतें। वोळखें अर्जुनातें। म्हणे श्रीहरी।६०। ते बुद्धि धुरे करुनी। कर्म करिती चित्त देउनि। परी ते कर्मापासुनी। मुक्त दिसती।६१। जे बुद्धीचिये ठावूनि देहीं। तया अहंकाराची सेचि नाहीं। म्हणोनि कर्म करितां पाहीं। चोखाळले।६२। अगा करितेनवीण कर्म। तेंचि तें निष्कर्म। हें जाणती सुवर्म। गुरुगम्य जें।६३। आतां शांतरसाचें भरितें। सांडीत आहे पात्रातें। जें बोलणें बोलापरौतें। बोलविलें।६४। एथ इन्द्रियांचा पांग। जया फिटला आहे चांग। तयासीचि

आधि लाग। परिसावया।६५। हा असो अति प्रसंग। न संडी पां कथालाग। होईल श्लोकसंगतीभंग। म्हणऊनियां।६६। जें मना आकळितां कुवाडें। घाघुसितां बुद्धीसी नातुडे। तें दैवाचेनि सुरवाडें। सांगवलें तुज।६७। जें शब्दातीत स्वभावें। तें बोलींचि जरी फावें। तरी आणिकें काय करावें। कथा सांगें।६८। हा आर्तिविशेष श्रोतयांचा। जाणोनि दास निवृत्तीचा। म्हणे संवाद दोघांचा। परिसोनि परिसा।६९। मग श्रीकृष्ण म्हणे पार्थातें। आतां प्राप्ताचें चिह्न पुरतें। सांगेन तुज निरुतें। चित्त देई।७०।

युक्तः कर्मफलं त्यक्त्वा शांतिमाप्नोति नैष्ठिकीम्।
अयुक्तः कामकारेण फले सक्तो निबध्यते।१२।

तरी आत्मयोगें आथिला। जो कर्मफळांसी विटला। तो घर रिघोनि वरिला। शांती जगीं।७१। येर कर्मबंधें किरीटी। अभिलाषाचिया गांठी। कळासला खुंटीं। फळभोगाच्या।७२।

सर्वकर्माणि मनसा संन्यस्यास्ते सुखं वशी।
नवद्वारे पुरे देही नैव कुर्वन्न कारयन्।१३।

जैसा फळाचिये हांवें। तैसें कर्म करी आघवें। मग न कीजेचि येणे भावें। उपेक्षी जो।७३। तो जयाकडे वास पाहे। तेउची सुखाची सृष्टि होये। तो म्हणे तेथ राहे। महाबोध।७४। नवद्वार देहीं। तो असतचि परी नाहीं। करीतचि न करी कांहीं। फळत्यागी।७५।

न कर्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभु।
न कर्मफलसंयोगं स्वभावस्तु प्रवर्तते।१४।

जैसा कां सर्वेश्वर। पाहिजे तंव निर्व्यापार। परी तोचि रचि विस्तार। त्रिभुवनाचा।७६। आणि कर्ता ऐसें म्हणिपे। तरी कवणें कर्मीं न शिंपे। जे हातपायो न लिंपे। उदासवृत्तीच्या।७७। योगनिद्रा तरी न मोडे। अकर्तेपणा सळु न घडे। परी महाभूतांचें दळवाडें। उभारी भलें।७८। जगाच्या जीवीं आहे। परी कवणाचा कंहीं नोहे। जगचि हे होय जाये। तो शुद्धीही नेणे।७९।

नादत्ते कस्यचित्पापं न चैव सुकृतं विभुः।
अज्ञानेनावृतं ज्ञानं तेन मुह्यन्ति जन्तवः।१५।

पापपुण्यें अशेषें। पासींचि असतु न देखे। आणि साक्षीही होऊं न ठाके। येरी गोष्टी कायसी।८०। पैं मूर्तीचेनि मेळें। तो मूर्तचि होऊनि खेळे। परी अमूर्तपण न मैळे। दादुलयाचें।८१। तो सृजी पाळी संहारी। ऐसें बोलती जे चराचरीं। तें अज्ञान गा अवधारीं। पंडुकुमरा।८२।

ज्ञानेन तु तदज्ञानं येषां नाशितमात्मनः।
तेषामादित्यवज्ज्ञानं प्रकाशयति तत्परम्।१६।

तें अज्ञान जैं समूळ तूटे। तैं भ्रांतीचें मसैरें फिटे। मग अकर्तृत्व प्रगटे। मज ईश्वराचें।८३। एथ ईश्वर एक अकर्ता। ऐसें मानलें जरी चित्ता। आणि तोचि मी हे स्वभावता। आदीचि आहे।८४। ऐसेनि विवेकें उदो चित्तीं। तयासी भेद कैसा त्रिजगतीं। देखें आपुलिया प्रतीती। जगचि मुक्त।८५। जैसी पूर्वदिशेच्या राउळीं। उदया येतांचि सूर्य दिवाळी। कीं येरीही दिशां तियेचि काळीं। काळिमा नाहीं।८६।

तद्बुद्धयस्तदात्मानस्तन्निष्ठास्तत्परायणाः।
गच्छन्त्यपुनरावृत्तिं ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः।१७।

बुद्धिनिश्चयें आत्मज्ञान। ब्रह्मरूप भावी आपणा आपण। ब्रह्मनिष्ठा राखे पूर्ण। तत्परायण अहर्निशीं।८७। ऐसें व्यापक ज्ञान भलें। जयांचिया हृदया गिंवसित आलें। तयांची समतादृष्टि बोले। विशेषु काई।८८। एक आपणपेंचि जैसें। ते देखती विश्व तैसे। हें बोलणे कायसें। नवल एथ।८९। परी दैव जैसें कवतिकें। कहींचि दैन्य न देखे। कां विवेक हा नोळखें। भ्रांतीतें जेवीं।९०। ना तरी अंधकाराची वानी। जैसा सूर्य न देखे स्वप्नीं। अमृत नायके कानीं। मृत्युकथा।९१। हें असो संताप कैसा। चंद्र न स्मरे जैसा। भूतीं भेद नेणती तैसा। ज्ञानिये ते।९२।

विद्याविनयसंपन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि।
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः।१८।

मग हा मशकु हा गज। कीं श्वपच हा द्विज। पैल इतर हा आत्मज। हें उरलें कें।९३। ना तरी हे धेनु हें श्वान। एक गुरु एक हीन। हें असो कैचें स्वप्न। जागतया।९४। एथ भेद तरी कीं देखावा। जरी अहंभाव उरला होआवा। तो आधींचि नाहीं आघवा। आतां विषम काई।९५।

इहैव तैर्जितः सर्गो येषां साम्ये स्थितं मनः।
निर्दोषं हि समं ब्रह्म तस्माद्ब्रह्मणि ते स्थिताः।१९।

म्हणोनि सर्वत्र सदा सम। तें आपणचि अद्वय ब्रह्म। हें संपूर्ण जाणे वर्म। समदृष्टीचें।९६। जिहीं विषयसंग न सांडितां। इंद्रियातें न दंडितां। परी भोगिली निःसंगता। कामनेविण।९७। जिहीं लोकांचेनि आधारें। लौकिकेंचि व्यापारें। परी सांडिलें निदसुरें। लौकिक हें।९८। जैसा जनामाजि खेचर। असतूचि जना नव्हे गोचर। तैसा शरीरीं परी संसार। नोळखे तयातें।९९। हें असो पवनाचेनि मेळें। जैसें जळींचि जाळ लोळे। तें आणिकें म्हणती वेगळे। कल्लोळ हे।१००। तैसें नामरूप तयाचें। येऱ्हवीं ब्रह्मचि तो साचें। मन साम्या आलें जयाचें। सर्वत्र गा।१। ऐसेनि समदृष्टी जो होये। तया पुरुषा लक्षणही आहे। अर्जुना संक्षेपें सांगेन पाहें। अच्युत म्हणे।२।

न प्रहृष्येत्प्रियं प्राप्य नोद्विजेत्प्राप्य चाऽप्रियम्।
स्थिरबुद्धिरसंमूढो ब्रह्मविद्ब्रह्मणि स्थितः।२०।

जरी मृगजळाचेनि पूरें। जैसें न लोटिजे कां गिरिवरें। तैसा शुभाशुभीं न विकरे। पातलिया जो।३। तोचि तो निरुतां। समदृष्टि तत्त्वतां। हरि म्हणे पंडुसुता। तोचि ब्रह्म।४।

बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्मा विन्दत्यात्मनि यत्सुखम्।
स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा सुखमक्षय्यमश्नुते।२१।

जया आपणपें सांडूनि कंहीं। इंद्रियग्रामावरी येणे नाहीं। तो विषय न सेवी हें काई। विचित्र येथ।५। सहजें स्वसुखाचेनि अपारें। सुरवाडलेनि अंतरें। रचिला म्हणऊनि बाहिरें। पाउल न घली।६। सांगें कुमुददळाचेनि ताटें। जो जेविला चंद्रकिरणें चोखटें। तो चकोर कायि वाळुवंटें। चुंबित असे।७। तैसें आत्मसुख उपाइलें। जयासि आपणपेंचि फावलें। तया विषय सहज सांडवले। म्हणों काई।८। येऱ्हवीं तरी कौतुकें। विचारूनि पाहें पां निकें। या विषयांचेनि सुखें। झकविजती कवण।९।

ये हि संस्पर्शजा भोगा दुःखयोनय एव ते।
आद्यन्तवन्तः कौंतेय न तेषु रमते बुधः।२२।

जिहीं आपणपें नाहीं देखिलें। तेचि इहीं इंद्रियार्थी रंजलें। जैसें रंक कां आळुकैलें। तुषातें सेवी।११०। ना तरी मृगे तृषापीडितें। संभ्रमें विसरोनि जळातें। मग तोयबुद्धी बरडीतें। ठाकूनि येती।११। तैसें आपणपें नाहीं दिठें। जयांते स्वसुखाचे सदा खरांटे। तेयांसीचि विषय हे गोमटे। आवडती।१२। येऱ्हवीं विषयीं सुख आहे। हें बोलणेंचि सारिखें नोहे। तरी विद्युत्स्फुरणें कां न पाहे। जगामाजी।१३। सांगें वातवर्षआतप धरे। ऐसी अभ्रछायाचि जरी सरे। तरी त्रिमाळिकें धवळारें। करवीं कां।१४। म्हणोनि विषयसुख जें बोलिजे। तें नेणतां गा वायां जल्पिजे। जैसें महुर कां म्हणिजे। विषकंदातें।१५। ना तरी भौमा नाम मंगळ। रोहिणीतें म्हणती जळ। सुखप्रवाद बरळ। वैषयिक हा।१६। हे असो आघवी बोली। सांग पां सर्पफणीचि साउली। ते शीतल होईल केतुली। मूषकासी।१७। जैसा आमिषकवळ पांडवा। मीन न सेवी तंवचि बरवा। तैसा विषयसंग आघवा। निभ्रांत जाणें।१८। हें विरक्तांचियें दृष्टी। जै न्याहाळिजे किरीटी। तैं पांडुरोगाचिये पुष्टी। सारिखे दिसे।१९। म्हणोनि विषयभोगीं जे सुख। तें साद्यंतचि जाण दुःख। परी काय करिती मूर्ख। न सेवितां न सरे।१२०। तें अंतर नेणती बापुडे। म्हणोनि अगत्य सेवणें घडे। सांगें पूयपंकींचे किडे। काय चिळसी घेती।२१। तयां दुःखिया दुःखचि जिव्हार। ते विषयकर्दमींचे दुर्दुर। ते भोगजळींचे जळचर। सांडिती केवीं।२२। आणि दुःखयोनी जिया आहाती। तिया निरर्थका तरी नव्हती। जरी विषयांवरी विरक्ती। धरिती जीव।२३। ना तरी गर्भवासादि संकट। कां जन्ममरणींचे कष्ट। हे विसांवेवीण वाट। वाहावी कवणें।२४। जरी विषयीं विषयो सांडिजेल। तरी महादोषीं कें वसिजेल। आणि संसार हा शब्द नव्हेल। लटिका जगीं।२५। म्हणोनि अविद्याजात नाथिलें। तें तिहींचिं साच दाविलें। जिहीं सुखबुद्धी घेतलें। विषयदुःख।२६। याकारणें गा सुभटा। हा विचारितां विषय वोखटा। तूं झणे कंहीं या वाटा। विसरोनि जाशी।२७। पैं यातें विरक्त पुरुष। त्यजिती कां जैसें विष। निराशा तयां दुःख। दाविलें नावडे।२८।

शक्नोतिहैव यः सोढुं प्राक् शरीरविमोक्षणात्।
कामक्रोधोद्भवं वेगं स युक्तः स सुखी नरः।२३।

ज्ञानियांच्या हन ठायीं। याची मातही कीर नाहीं। देहीं देहभाव जिहीं। स्ववश केलें।२६। जयातें बाह्यची भाष। नेणिजेचि निःशेष। अंतरी सुख। एक आथी।१३०। परी तें वेगळेपणें भोगिजे। जैसें पक्षियें फळ चुंबिजे। तैसें नव्हे तेथ विसरीजे। भोगितेपणहीं।३१। भोगीं अवस्था एक उठी। ते अहंकाराचा अंचळ लोटी। मग सुखेंसिं घे आंठी। गाढेपणें।३२। तिये आलिंगनमेळीं। होय आपेंआप कवळी। तेथ जळ जैसें जळीं। वेगळे न दिसे।३३। कां आकाशीं वायों हरपे। तेथ दोन्ही हे भाष लोपे। तैसें सुखचि उरे स्वरूपें। सुरती तिये।३४। ऐसी द्वैताची भाष जाय। मग म्हणो जरी एकचि होय। तरी तेथ साक्षी कवण आहे। जाणतें जें।३५।

योऽन्तः सुखोऽन्तरारामस्तथान्तर्ज्योतिरेव यः।
स योगी ब्रह्मनिर्वाणं ब्रह्मभूतोऽधिगच्छति।२४।
लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणमृषयः क्षीणकल्मषाः।
छिन्नद्वैधा यतात्मानः सर्वभूतहिते रताः।२५।

म्हणोनि असो हें आघवें। एथ न बोलणें काय बोलावें। ते खुणाचि पावेल स्वभावें। आत्माराम।३६। जे ऐसेनि सुख मातले। आपणपांचि आपण राहिले। ते मी जाणे निखिळ वोतले। सामरस्याचे।३७। ते आनंदाचे अनुकार। सुखाचे अंकुर। कीं महाबोधें विहार। केले जैसे।३८। ते विवेकाचे गांव। कीं परब्रह्मींचे स्वभाव। ना तरी अळंकारले अवयव। ब्रह्मविद्येचे।३६। ते सत्वाचे सात्विक। कीं चैतन्याचे आंगिक। हें बहु असो एकैक। वानिसी काई।१४०। तूं संतस्तवनीं रतसी। तरी कथेची से न करिसी। कीं निराळीं बोल देखसी। सनागर।४१। परी तो रसातिशयो मुकुळीं। मग ग्रंथार्थदीप उजळीं। करीं साधुहृदयराउळीं। मंगळउखा।४२। ऐसा गुरुचा उवायिला। निवृत्तिदासासी पातला। मग तो म्हणे कृष्ण बोलिला। तेंचि आइका।४३। अर्जुना अनंतसुखाच्या डोहीं। एकसरां तळजि घेतला जिहीं। मग स्थिरावूनि तेही। तेंचि जाहाले।४४। अथवा आत्मप्रकाशे चोखें। जो आपणपेंचि विश्व देखे। तो देहींचि परब्रह्म सुखें। मानूं येईल।४५। जे साचोकारें परम। ना तें अक्षर निःसीम। जिये गांवींचे निष्काम। अधिकारिये।४६। जें महर्षी वाढलें। विरक्तां भागा फिटलें। जें निसंशयां पिकलें। निरंतर।४७।

कामक्रोधवियुक्तानां यतीनां यतचेतसाम्।
अभितो ब्रह्मनिर्वाणं वर्तते विदितात्मनाम्।२६।

जिहीं विषयांपासोनि हिरतलें। चित्त आपुलें आपण जिंतिलें। ते निश्चित जेथ सुतले। चेतीचिना।४८। तें परब्रह्म निर्वाण। जें आत्मविदांचे कारण। तेंचि ते पुरुष जाण। पंडुकुमरा।४६। ते ऐसे कैसेनि जाहाले। जें देहींचि ब्रह्मत्वा आले। हे पुससी तरी भलें। संक्षेपे सांगों।१५०।

स्पर्शान्कृत्वा बहिर्बाह्यांश्चक्षुश्चैवान्तरे भ्रुवोः।
प्राणापानौ समौ कृत्वा नासाभ्यन्तरचारिणौ।२७।

तरी वैराग्याचेनि आधारें। जिहीं विषय दवडूनि बाहिरें। शरीरीं एकंदरें। केलें मन।५१। सहजे तिहीं संधी भेटी। जेथ भ्रूपल्लवां पडे गांठी। तेथ पाठिमोरी दिठी। पारुखोनियां।५२। सांडूनि दक्षिणवाम। प्राणापानसम। चित्तेसी व्योम–। गामिये करिती।५३।

यतेन्द्रियमनोबुद्धिर्मुनिर्मोक्षपरायणः।
विगतेच्छाभयक्रोधो यःसदा मुक्त एव सः।२८।

तेथ जैसी रथ्योदकें सकळें। घेऊनि गंगा समुद्रीं मिळे। मग एकेक वेगळें। निवडूं न ये।५४। तैसी वासनांतराची विवंचना। मग आपैसी पारुखे अर्जुना। जे वेळी गगनीं लयो मना। पवनें कीजे।५५। जेथ हें संसारचित्र उमटे। तों मनोरूप पट फाटे। जैसें सरोवर आटे। मग प्रतिभा नाहीं।५६। तैसे मन एथ मुदल जाय। मग अहंभावादिक कें आहे। म्हणोनि शरीरेचि ब्रह्म होंये। अनुभवी तो।५७।

भोक्तारं यज्ञतपसां सर्वलोकमहेश्वरम्।
सुहृदं सर्वभूतानां ज्ञात्वा मां शान्तिमृच्छति।२६।

इति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मसंन्यासयोगो नाम पंचमोऽध्यायः।।

आम्ही मागां हन सांगितले। जे देहींचि ब्रह्मत्व पावले। ते येणे मार्गे आले। म्हणऊनियां।५८। आणि यमनियमांचे डोंगर। अभ्यासाचे सागर। क्रमोनि हें पार। पातले ते।५६। तिहीं आपणपें करूनि निर्लेप। प्रपंचाचे घेतलें माप। साच शांतीचेच रूप। होऊनि ठेले।६०। ऐसा योगयुक्तीचा उद्देश। जेथ बोलिला हृषीकेश। तेथ

अर्जुन सुदंश। म्हणोनि चमत्कारिला।६१। तें देखिलिया कृष्णें जाणितलें। मग हांसोनि पार्था म्हणितलें। काइ पां चित्त उवाइलें। इये बोलीं तुझे।६२। तंव अर्जुन म्हणे देवो। परचित्तलक्षणाचा रावो। भला जाणितला जी भावो। मानस माझा।६३। म्यां जे कांहीं विवरूनि पुसावें। तें आधींचि जाणितले देवें। तरी बोलिलें तेंचि सांगावे।विवळ करूनि।६४। येऱ्हवीं तरी अवधारा। जो दाविला तुम्ही अनुसारा। तो पव्हण्याहूनि पायउतारा। सोहपा जैसां।६५। तैसा सांख्याहूनि प्रांजळा। आम्हांसारिखिया अबळां। एथ आथि कांहीं परी काळा। तो साहो ये वर।६६। म्हणोनि एक वेळ देवा। तोचि पडताळा घेयावा। विस्तारेल तरी सांगावा। साद्यंतचि।६७। तंव श्रीकृष्ण म्हणती हो कां। तुज हा मार्ग गमला निका। तरी काय जाहाले आइकें जो कां। सुखें बोलों।६८। अर्जुना तूं परिससी। परिसोनि अनुष्ठिसी। तरी आम्हांसीचि वाणि कायसी। सांगावयाची।६९। आधींच चित्त मायेचें। वरी मिष जाहालें पढियंताचें। आतां तें अद्भुतपण स्नेहाचे। कवण जाणे।१७०। तें म्हणो कारुण्यरसाची वृष्टी। कीं नवया स्नेहाची सृष्टी। हें असो नेणिजे दृष्टी। हरीची वानूं।७१। जे अमृताची वोतली। कीं प्रेमचि पिऊन मातली। म्हणोनि अर्जुनमोहें गुंतली। निघो नेणे।७२। हें बहु जें जें जल्पिजेल। तेथे कथेसि फांक होईल। परी तें स्नेहरूपा न येल। बोलवरी।७३। म्हणोनि विसुरा काय येणें। तो ईश्वर कवळावा कवणें। जो आपुलें मान नेणे। आपणचि।७४। तरी मागील ध्वनीआंत। मज गमला सावियाचि मोहित। जे बळात्कारें असे म्हणत। परिस बापा।७५। अर्जुना जेणें जेणें भेदें। तुझे कां चित्त बोधे। तैसें तैसें विनोदें। निरूपिजेल।७६। तो काइसया नांव योग। तयाचा कवण उपेग। अथवा अधिकारप्रसंग। कवणा एथ।७७। ऐसें जें जें कांहीं। उक्त असे इये ठायीं। तें आघवेंचि पाहीं। सांगेन आतां।७८। तूं चित्त देऊनि अवधारीं। ऐसें म्हणोनि श्रीहरी। बोलिजेल ते पुढारी। कथा आहे।७९। श्रीकृष्ण अर्जुनासी संग। न सांडोनि सांगेल योग। तो व्यक्त करूं प्रसंग। म्हणे निवृत्तिदास।१८०।

इति श्रीज्ञानदेवकृतायां भावार्थदीपिकायां पंचमोऽध्यायः।। श्लोक २९, ओव्या १८०

ज्ञानेश्वरी अध्याय सहावा–आत्मसंयमयोग

मग रायातें संजयो म्हणे जो। तोचि अभिप्राय अवधारिजो। श्रीकृष्ण सांगती आतां जो। योगरूप ।१। सहजें ब्रह्मरसाचें परगुणें। केले अर्जुनालागी नारायणें। कीं तेचि अवसरीं पाहुणे। पातलों आम्ही ।२। कैसी दैवाची थोरी नेणिजे। जैसें तान्हेलिया तोय सेविजे। कीं तेचि चवी करूनि पाहिजे। तंव अमृत आहे ।३। तैसें आम्हां तुम्हां जाहालें। जें आडमुठी तत्त्व फावलें। तंव धृतराष्ट्रें म्हणितलें। हें न पुसों तूतें ।४। तया संजया येणे बोलें। रायाचें हृदय चोजवलें। जे अवसरी आहे घेतलें। कुमरांचिया ।५। हें जाणोनि मनीं हांसिला। म्हणे म्हातारा मोहें नाशिला। येऱ्हवीं बोल तरी भला जाहाला। अवसरीं इये ।६। परी तें तैसें कैसेनि होईल। जात्यंधा कैसें पाहेल। तेवींचि येरू रोष घेईल। म्हणोनि विहे ।७। परी आपण चित्तीं आपुला। निकियापरी संतोषला। जे तो संवाद फावला। श्रीकृष्णार्जुनांचा ।८। तेणें आनंदाचेनि धालेपणें। साभिप्राय अंताकरणें। आतां आदरेसीं बोलणें। घडेल तया ।९। तो गीतेमाजि षष्ठींचा। प्रसंग असे आयणीचा। जैसा क्षीरार्णवीं अमृताचा। निवाड जाहाला ।१०। तैसें गीतार्थाचें सार। जें विवेकसिंधूचें पार। नाना योगविभवभांडार। उघडलें कां ।११। जें आदिप्रकृतीचें विसवणें। जें शब्दब्रह्मासी न बोलणें। जेथूनि गीतावल्लीचें ठाणें। प्ररोह पावे ।१२। तो अध्याय साहावा। वरी साहित्याचिया बरवा। सांगिजेल म्हणोनि परिसावा। चित्त देउनी ।१३। माझा मऱ्हाठाचि बोल कौतुकें। परी अमृतातेंही पैजा जिंके। ऐसीं अक्षरें रसिकें। मेळवीन ।१४। जिये कोवळिकेचेनि पाडें। दिसतीं नादींचे रंग थोडे। वेधें परिमळाचें बीक मोडे। जयाचेनि ।१५। एका रसाळपणाचिया लोभा। कीं श्रवणींचि होती जिभा। बोलें इंद्रियां लागे कळंभा। एकमेकां ।१६। सहजें शब्द तरी विषो श्रवणाचा। परी रसना म्हणे रस हा आमुचा। घ्राणासि भाव जाय परिमळाचा। हा तोचि होईल ।१७। नवल बोलेती रेखेची वहाणी। देखतां डोळा पुरों लागे धणी। ते म्हणती उघडली खाणी। रूपाची हे ।१८। जेथ संपूर्ण पद उभारे। तेथ मनचि धांवे बाहिरें। बोल भुजांहीं आविष्करे। आलिंगावया ।१९। ऐसीं इंद्रिये आपुलालिया भावीं। झोंबती परी तो सरिसेपणेचि बुझावी। जैसा एकला जग चेववी। सहस्रकर ।२०। तैसें शब्दाचे व्यापकपण। देखिजे असाधारण। पाहातयां भावज्ञा फावती गुण। चिंतामणीचे ।२१। हें असो तयां बोलांचीं ताटें भलीं। वरी कैवल्यरसें वोगरली। ही प्रतिपत्ति मियां केली। निष्कामासी ।२२। आतां आत्मप्रभा नित्य नवी। तेचि करूनि ठाणदिवी। जो इंद्रियातें चोरून जेवी। तयासीचि फावे ।२३। तेथ श्रवणाचेनि पांगें॑। वीण श्रोतयां व्हावें लागे। हे मनाचेनि निजांगें। भोगिजे गा ।२४। अहाच बोलाची वालीफ फेडिजे। आणि ब्रह्माचियाचि आंगा घडिजे। मग सुखेसीं सुरवाडिजे। सुखाचिमाजि ।२५। ऐसें हळुवारपण जरी येईल। तरीच हें उपयोगा जाईल। येऱ्हवीं आघवी गोष्टी होईल। मुकया बहिरयाची ।२६। परी तें असो आतां आघवें। नलगे श्रोतयांतें कडसावें। जे अधिकारिये एथ स्वभावें। निष्कामकाम ।२७। जिहीं आत्मबोधाचिया आवडी। केली स्वर्गसंसाराची कुरोंडी। तेवांचूनि एथींची गोडी। नेणती आणिक ।२८। जैसा वायसी चंद्र नोळखिजे। तैसा प्राकृतीं ग्रंथ हा नेणिजे। आणि तो हिमांशुचि जेविं खाजें। चकोराचें ।२९। तैसा सज्ञानासी तरी हा ठावो। आणि अज्ञानासी आन गांवो। म्हणोनि बोलावया विषय पहा हो। विशेष नाहीं ।३०। परी अनुवादलों मी प्रसंगें। तें सज्जनीं उपसाहावें लागे। आतां सांगेन काय श्रीरंगें। निरोपिलें जें ।३१। तें बुद्धीही आकळितां सांकडें। म्हणऊनि बोली विपायें सांपडे। परी श्रीनिवृत्तिकृपादीपउजियेडें। देखेन मी ।३२। जें दिठीही न पविजे। तें दिठीवीण देखिजे। जी अतींद्रिय लाहिजे। ज्ञानबळ ।३३। ना तरी जें धातुवादाही न जोडे। तें लोहीचि पंधरें सांपडे। जरी दैवयोगे चढे। परिस हाता ।३४। तैसी सद्‌गुरुकृपा होये। तरी करितां काय आपु नोहे। म्हणऊनि ते अपार मातें आहे। ज्ञानदेव म्हणे ।३५। तेणेंकारणें मी बोलेन। बोलीं अरूपाचे रूप दावीन। अतींद्रिय परी भोगवीन। इंद्रियांकरवीं ।३६। आइका यश श्री औदार्य। ज्ञान वैराग्य ऐश्वर्य। हे साही गुणवर्य। वसती जेथ ।३७। म्हणोनि तो भगवंत। जो निःसंगाचा सांगात। तो म्हणे पार्था दत्तचित्त। होईं आतां ।३८।

श्रीभगवानुवाच– अनाश्रितः कर्मफलं कार्यं कर्म करोति यः।
स संन्यासी च योगी च न निरग्निर्न चाक्रियः ।१।

आइकें योगी आणि संन्यासी जनीं। हे एकचि सिनाने झणीं मानीं। येऱ्हवीं विचारिजती जंव दोन्ही। तंव एकचि ते ।३९। सांडिजे दुजया नामाचा आभास। तरी योग तोचि संन्यास। पाहतां ब्रह्मीं नाहीं अवकाश। दोहींमाजि ।४०। जैसें नामाचेनि अनारिसेपणें। एका पुरुषातें बोलावणें। कां दोहीं मार्गीं जाणें। एकाचि ठाया ।४१। ना तरी एकचि उदक सहजें। परी सिनाना घटीं भरिजे। तैसें भिन्नत्व जाणिजे। योगसंन्यासांचें ।४२। आइकें सकळ संमतें जगीं। अर्जुना पाहें तोचि योगी। जो कर्मे करूनि रागी। नोहेचि फळीं ।४३। जैसी मही हे उद्भिजें। जनी अहंबुद्धिवीण सहजें। आणि तेथींचीं तियें बीजें। अपेक्षीना ।४४। तैसा अन्वयाचेनि आधारें। जातीचेनि अनुकारें। जें जेणें अवसरें। करणें पावें ।४५। तें तैसेंचि उचित करी। परी साटोप नोहे शरीरीं। आणि बुद्धीही करोनि फळवेरी। जायेचि ना ।४६। ऐसा तोचि संन्यासी।

पार्था गां परियेसीं। तोचि भरंवसेनिसीं। योगीश्वर।४७। वांचूनि उचित कर्मप्रासंगिक। तयातें म्हणे हें सांडावें बद्धक। तरी टांकोटाकीं आणिक एक। मांडीचि तो।४८। जैसा क्षाळूनियां लेप एक। सवेंचि लाविजे आणिक। तैसेनि आग्रहाचा पाइक। विचंबे वायां।४६। गृहस्थाश्रमाचें वोझें। कपाळीं आधींचि आहे सहजें। कीं तेंचि संन्यासें वाढविजे। सरिसें पुढती।५०। म्हणूनि अग्निसेवा न सांडितां। कर्माची रेखा नोलांडितां। आहे योगसुख स्वभावता। आपणपांचि।५१।

यं संन्यासमिति प्राहुर्योगं तं विद्धि पाण्डव।
न ह्यसंन्यस्तसंकल्पो योगी भवति कश्चन।२।

ऐके संन्यासी तोचि योगी। ऐसी एकवाक्यतेची जगीं। गुढी उभविली अनेगीं। शास्त्रांतरीं।५२। जेथ संन्यासिला संकल्प तुटे। तेथचि योगाचे सार भेटे। ऐसें हें अनुभवाचेनि धटें। साचें जया।५३।

आरुरुक्षोर्मुनेर्योगं कर्म कारणमुच्यते।
योगारूढस्य तस्यैव शमः कारणमुच्यते।३।

आतां योगाचळाचा निमथा। जरी ठाकावा आथि पार्था। तरी सोपाना या कर्मपथा। चुका झणीं।५४। येणें यमनियमाचेनि तळवटे। रिगें आसनाचिये पाउलवाटे। येईं प्राणायामाचेनि आडकाठें। वरौता गा।५५। मग प्रत्याहाराचा अधाडा। जो बुद्धीचियाहि पायां निसरडां। जेथ हटिये सांडिती होडा। कडेलग।५६। तरी अभ्यासाचेनि बळें। प्रत्याहारीं निराळें। नखी लागेल ढाळेंढाळें। वैराग्याची।५७। ऐसा पवनाचेनि पांठारें। येतां धारणेचेनि पैसारें। क्रमी ध्यानाचे चवरें। सांडे तंव।५८। मग तया मार्गाची धांव। पुरेल प्रवृत्तीची हांव। जेथ साध्य साधनां खेंव। समरसें होय।५६। जेथ पुढील पैस पारुखे। मागील स्मरावें तें ठाके। ऐसिये सरिसीये भूमिके। समाधि राहे।६०। येणें उपायें योगारूढ। जो निरवधि जाहाला प्रौढ। तयाचिया चिन्हाचा निवाड। सांगेन आइकें।६१।

यदा हि नेन्द्रियार्थेषु न कर्मस्वनुषज्जते।
सर्व संकल्पसंन्यासी योगारूढस्तदोच्यते।४।

तरी जयाचिया इंद्रियाचिया घरा। नाहीं विषयाचिया येरझारा। जो आत्मबोधाच्या वोवरां। पहुडला असे।६२। जयाचे सुखदुःखाचेनि आंगे। झगटले मानस चेवो नेघे। विषयपासींही आलिया से न रिघे। हें काय म्हणऊनि।६३। इंद्रिये कर्माच्या ठायीं। वाढीनली परी कंहीं। फळहेतूची चाड नाहीं। अंतःकरणीं।६४। असतेनि देहें एतुला। जो चेतुचि दिसे निदेला। तोचि योगारूढ भला। वोळखें तूं।६५। तेथ अर्जुन म्हणे अनंता। हें मज विस्मो बहु आइकतां। सांगे तया ऐसी योग्यता। कवणें दिजे।६६।

उद्धरेदात्मनात्मानमात्मानमवसादयेत्।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः।५।

तंव हासोनि कृष्ण म्हणे। तुझें नवल ना हें बोलणें। कवणासि काय दीजेल कवणें। अद्वैतीं एथ।६७। पैं व्यामोहाचिये शेजे। बळिया अविद्या निद्रित होइजे। ते वेळीं दुःस्वप्न हा भोगिजे। जन्ममृत्युचा।६८। पाठीं अवसांत ये चेवां। तैं तें अवघेंचि होय वावो। ऐसा उपजे नित्य सद्भावो। तोही आपणपांचि।६६। म्हणऊनि आपणचि आपणयां। घात किजत असे धनंजया। चित्त देऊनि नाथिलिया। देहाभिमाना।७०।

बन्धुरात्मात्मनस्तस्य येनात्मैवात्मना जितः।
अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वर्तेतात्मैव शत्रुवत्।६।

हा विचारूनि अहंकार सांडिजे। मग असतीच वस्तु होइजे। तरी आपली स्वस्ति सहजें। आपण केली।७१। येऱ्हवीं कोशकीटकाचिया परी। तो आपणयां आपण वैरी। जो आत्मबुद्धि शरीरीं। चारुसीळी।७२। कैसे प्राप्तीचिये वेळे। निदैवां आंधळेपणाचे डोहळे। कीं असते आपुले डोळे। आपण झांकी।७३। कां कवण एक भ्रमलेपणें। मी तीं नव्हे गा चोरलों म्हणे। ऐसा नाथिला छंद अंतःकरणें। घेऊन ठाके।७४। येरवीं होय तें तोचि आहे। परी काइ कीजे ब्रुद्धि तैसी नोहे। देखा स्वप्नींचेनि घायें। कीं मरे साचें।७५। जैसी ते शुकाचेनि आंगभारें। नळिका भोविन्नली एरी मोहरें। तरीं तेणें उडावें परी न पुरे। मनशंका।७६। वायांचि मान पिळी। अटुवें हियें आंवळी। टिटांतु नळीं। धरूनि ठाके।७७। म्हणे बांधला मी फुडा। ऐसिया भावनेचिया पडे खोडां। कीं मोकळिया पायांचा चवडा। गोंवी अधिकें।७८। ऐसा

काजेंवीण आतुडला। तो सांग पां काय आणिकें बांधला। मग न सोडीच जऱ्ही नेला। तोडुनि अर्धा।७६। म्हणऊनि आपणयां आपणचि रिपु। जेणें वाढविला हा संकल्पु। येर स्वयंबुद्धी म्हणे बापु। जो नाथिलें नेघे।८०।

जितात्मनः प्रशान्तस्य परमात्मा समाहितः।
शीतोष्णसुखदुःखेषु तथा मानापमानयोः।७।

तया स्वान्तःकरणजिता। सकळकामोपशांता। परमात्मा परौता। दूर नाहीं।८१। जैसा किडाळाचा दोष जाये। तरी पंधरें तेंचि होये। तैसें जीवा ब्रह्मत्व आहे। संकल्पलोपीं।८२। हा घटाकार जैसा। निमालिया तया अवकाशा। नलगे मिळों जाणे आकाशा। आना ठाया।८३। तैसा देहाहंकार नाथिला। हा समूळ जयाचा नाशिला। तोचि परमात्मा संचला। आधींचि आहे।८४। आतां शीतोष्णांचिया वाहणी। तेथ सुखदुःखांची कडसणी। इयें न समाती कांहीं बोलणी। मानापमानांचीं।८५। जे जिये वाटा सूर्य जाये। तेउ तें तेजाचें विश्व होये। तैसें तया पावे तें आहे। तोचि म्हणउनि।८६। देखें मेघौनि सुटती धारा। तिया न रूपती जैसिया सागरा। तैसीं शुभाशुभें योगीश्वरा। नव्हती आनें।८७।

ज्ञानविज्ञानतृप्तात्मा कूटस्थो विजितेन्द्रियः।
युक्त इत्युच्यते योगी समलोष्टाश्मकांचनः।८।

जो हा विज्ञानात्मक भावो। तया विवरितां जाहला वावो। मग लागला जंव पाहों। तंव ज्ञान तें तोचि।८८। आतां व्यापक कीं एकदेशी। ऊहापोहो जे ऐसी। ते करावी ठेली आपैसी। दुजेनवीण।८९। ऐसा शरीरीचि परी कौतुकें। परब्रह्माचेनि पाडें तुके। जेणें जिंतलीं एकें। इन्द्रियें गा।९०। तो जितेंद्रिय सहजें। तोचि योगयुक्त म्हणिजे। जेणें सानें थोर नेणिजे। कवणे काळीं।९१। देखें सोनयाचें निखळ। मेरुयेसणें ढिसाळ। आणि मातियेचें डिखळ। कीं सरिसेंचि मानी।९२। पाहातां पृथ्वीचे मोल थोडें। ऐसे अनर्घ्य रत्न चोखडें। देखे दगडाचेनि पाडें। निचाड ऐसा।९३।

सुहृन्मित्रार्युदासीनमध्यस्थद्वेष्यबन्धुषु।
साधुष्वपि च पापेषु समबुद्धिर्विशिष्यते।९।

तेथ सुहृद आणि शत्रु। कां उदास आणि मित्रु। हा भावभेदे विचित्रु। कल्पू कैंचा।९४। तया बन्धु कोण काह्याचा। द्वेषिया कवण तयाचा। मीचि विश्व ऐसा जयाचा। बोध जाहाला।९५। मग तयाचिये दृष्टी। अधमोत्तम असे किरीटी। काय परिसाचिये कसवटी। वानिया कीजे।९६। ते जैसी निर्वाण सुवर्णचि करी। तैसी जयाचि बुद्धि चराचरी। होय साम्यचि उजरी। निरंतर।९७। जे ते विश्वाळंकाराचे विसुरे। जरी आहाती आनाने आकारें। तरी घडले एकचि भांगारें। परब्रह्में।९८। ऐसें जाणणें जें बरवें। तें फावलें तया आघवें। म्हणोनि अहाचवाहाचे न झकवे। येजें आकारचित्रें।९९। घापे पटामाजी दृष्टी। दिसे तंतूची सैंघ सृष्टी। परी तो एकवांचूनि गोष्टी। दुजी नाहीं।१००। ऐसेनि प्रतीती हे गवसे। ऐसा अनुभव जयातें असे। तोचि समबुद्धी हें अनारिसें। नव्हे जाणें।१। जयाचें नांव तीर्थरावो। दर्शनें प्रशस्तीसी ठावो। जयाचेनि संगें ब्रह्मभावो। भ्रांतासही।२। जयाचेनि बोले धर्म जिये। दिठी महासिद्धितें विये। देखें स्वर्गसुखादि इयें। खेळ जयाचा।३। विपायें जरी आठवला चित्ता। तरी दे आपुली योग्यता। हें असो तयातें प्रशंसितां। लाभ आथी।४।

योगी युंजीत सततमात्मानं रहसि स्थितः।
एकाकी यतचित्तात्मा निराशीरपरिग्रहः।१०।

पुढती अस्तवेना ऐसें। जया पाहलें अद्वैतदिवसें। मग आपणयांचि आपण असे। अखंडित।५। ऐसिया दृष्टी जो विवेकी। पार्था तो एकाकी। सहजें अपरिग्रही जो तिहीं लोकीं। तोचि म्हणउनी।६। ऐसियें असाधारणें। निष्पन्नाचीं लक्षणें। आपुलेनि बहुवसपणें। श्रीकृष्ण बोले।७। जो ज्ञानियांचा बाप। देखणेयांचे दिठीचा दीप। जया दादुलयाचा संकल्प। विश्व रची।८। प्रणवाचिये पेठे। जाहांलें शब्दब्रह्म माजिठें। तें जयाचिये यशा धाकुटें। वेढूं न पुरे।९। जयाचेनि आंगिकें तेजें। आवो रविशशींचिये वणिजे। म्हणऊनि जग हें वेसजे। वीण असे तया।११०। हां गा नामचि एक जयाचें। पाहातां गगनही दिसे टांचें। गुण एकैक काय तयाचें। कलिशील तूं।११। म्हणोनि असो हें वानणें। सांगो नेणो कवणाची लक्षणें। दावावी मिषें येणें। कां बोलिलों तें।१२। ऐकें द्वैताचा ठावोचि फेडी। ते ब्रह्मविद्या किजेल उघडी। अर्जुन पढिये हे गोडी। नासेल हन।१३। म्हणोनि तें तैसें बोलणें। नव्हे सपातळ आड लावणें। केलें मनचि वेगळवाणें। भोगावया।१४। जया सोहंभाव अटक। मोक्षसुखालागोनि रंक। तयाचिये दिठीचा झणें कलंक। लागेल तुझिया प्रेमा।१५। विपायें अहंभाव जयाचा जाईल। मी तेंचि हा जरी होईल। तरी मग काय कीजेल। एकलेया।१६। दिठीचि

पाहतां निविजे। कां तोंड भरोनि बोलिजे। ना तरी दाटूनि खेंव दीजे। ऐसें कोण आहे।१७। आपुलिया मना बरवी। असमाई गोठी जीवीं। ते कवणेंसि चावळावी। जरी ऐक्य जाहलें।१८। इया काकुळती जनार्दनें। अन्योपदेशाचेनि हातासनें। बोंलामाजि मन मनें। आलिंगूं सरलें।१९। हें परिसतां जरी कानडें। तरी जाण पां पार्थ उघडें। श्रीकृष्ण सुखाचेनि रूपडें। वोतलें गा।१२०। हें असो वयसेचिये शेवटीं। जैसें एकचि विये वांझोटी। मग ते मोहाचि त्रिपुटी। नाचों लागे।२१। तैसें जाहलें श्रीअनंता। ऐसें तरी मी न म्हणतां। जरी तयाचा न देखतां। अतिशय एथ।२२। पाहां पां नवल कैसे चोज। कें उपदेश केउतें झुंज। परी पुढे वालभाचें भोज। नाचत असे।२३। आवडी आणि लाजवी। व्यसन आणि शिणवी। पिसें आणि न भुलवी। तरी तें काइ।२४। म्हणऊनि भावार्थ तो ऐसा। अर्जुन मैत्रियेचा कुवसा। कीं सुखें शृंगारलिया मानसा। दर्पण तो।२५। यापरी बाप पुण्यपवित्र। जगीं भक्तिबीजासि सुक्षेत्र। तो श्रीकृष्णकृपे पात्र। याचिलागीं।२६। हो कां आत्मनिवेदनातळींची। जे पीठिका होय सख्याची। पार्थ अधिष्ठात्री तेथिंची। मातृका गा।२७। पासींचि गोसांवीवर न वानिजे। मा गा पाइकाचा गुण घेइजे। ऐसा अर्जुन तो सहजें। पढिये हरी।२८। पाहां पां अनुरागें भजे। जे प्रियोत्तमें मानिजे। ते पतीहूनि काय न वानिजे। पतिव्रता।२९। तैसा अर्जुनचि विशेषें स्तवावा। ऐसें आवडलें मम जीवा। जे तो त्रिभुवनींचिया दैवां। एकायतन जाहला।१३०। जयाचिया आवडीचेनि पांगें। अमूर्तही मूर्ति आवगे। पूर्णाहि परी लागे। अवस्था जयाची।३१। तंव श्रोते म्हणती दैव। कैसी बोलाची हवाव। काय नादातें हन बरव। जिणोनि आली।३२। हांहो नवल नोहे देशी। मऱ्हाटी बोलिजे तरी ऐशीं। वाणे उमटताहे आकाशीं। साहित्य रंगाचें।३३। कैसें उन्मेखचांदिणें तार। आणि भावार्थ पडे गार। हेचि श्लोकार्थकुमुदिनी फार। साविया होती।३४। चाडचि निचाडां करी। ऐसी मनोरथीं ये थोरी। तेणें विवळले अंतरीं। तेथ डोल आला।३५। तें निवृत्तिदासें जाणितलें। मग अवधान द्या म्हणितलें। नवल पांडवकुळी पाहलें। कृष्णदिवसें।३६। देवकीया उदरीं वाहिला। यशोदा सायासें पाळिला। शेखीं उपेगा गेला। पांडवांसी।३७। म्हणऊनि बहुदिवस वोळगावा। कां अवसरू पाहोनि विनवावा। हाही सोस तया सदैवा। पडेचिना।३८। हें असो कथा सांगे वेगीं। मग अर्जुन म्हणे सलगी। देवा इयें संतचिन्हें आंगी। न ठकती माझ्या।३९। येऱ्हवीं या लक्षणांचिया निजसारा। मी अपाडें कीर अपुरा। परी तुमचेनि बोलें अवधारा। थोरावें जरी।१४०। जी तुम्ही चित्त देयाल। तरी ब्रह्म मियां होइजेल। काय जाहालें अभ्यासिजेल। सांगाल जें।४१। हांहो नेणो कवणाची काहाणी। आइकोनि श्लाघिजत असों अंतःकरणीं। ऐसी जाहालेंपणाची शिरयाणी। कायसी देवा।४२। हें आंगें म्यां होइजो कां। येतुलें गोसावी आपुलेपणें कीजो कां। तंव हांसोनि श्रीकृष्ण हो कां। करूं म्हणती।४३। देखा संतोष एक न जोडे। तंवचि सुखाचें सैंघ सांकडें। मग जोडलिया कवणेकडे। अपुरें असे।४४। तैसा सर्वेश्वर बळिया सेवकें। म्हणोनि ब्रह्महीं होय तो कौतुकें। परि कैसा भारें आतला पिकें। दैवाचेनि।४५। जो जन्मसहस्रांचियासाठीं। इंद्रादिकांही महाग भेटी। तो अधीन केतुला किरीटी। जे बोलही न साहे।४६। मग ऐका जे पांडवें। म्हणितलें म्यां ब्रह्म होआवें। तें अशेषही देवें। अवधारिलें।४७। तेथ ऐसेंचि एक विचारिलें। जे या ब्रह्मत्वाचे डोहळे जाहले। परी उदरा वैराग्य आहे आलें। बुद्धीचिया।४८। येऱ्हवी दिवस तरी या अपुरे। परी वैराग्यवसंताचेनि भरें। जे सोहंभाव महुरें। मोडोनि आला।४९। म्हणोनि प्राप्ताफळीं फळतां। ययासि वेळ न लागेल आतां। होय विरक्त ऐसा अनंता। भरंवसा जाहाला।१५०। म्हणे जें जें हा अधिष्ठील। तें आरंभीच यया फळेल। म्हणोनि सांगितला नवचेल। अभ्यास वायां।५१। ऐसें विवरोनियां श्रीहरी। म्हणितलें तिये अवसरीं। अर्जुना हा अवधारीं। पंथराज।५२। तेथ प्रवृत्तितरूंच्या बुडीं। दिसती निवृत्तिफळाचिया कोडी। जिये मार्गींचा कापडी। महेश आझुनी।५३। पैं योगिवृंदें वहिलीं। आडवीं आकाशीं निघालीं। कीं तेथ अनुभवाच्या पाउलीं। धोरण पडिला।५४। तिही आत्मबोधाचेनि उजुकारें। धांव घेतली एकसरें। कीं येर सकळ मार्ग निदसुरे। सांडूनियां।५५। पाठीं महर्षी येणें आले। साधकांचे सिद्ध जाहाले। आत्मविद थोरावले। येणेचि पंथें।५६। हा मार्ग जैं देखिजे। तैं तहान भूक विसरिजे। रात्रिदिवस नेणिजे। वाटे इये।५७। चालतां पाउल जेथ पडे। तेथ अपवर्गाची खाणी उघडे। आव्हांटलिया तरी जोडे। स्वर्गसुख।५८। निगिजे पूर्वीलिया मोहरा। कीं येइजे पश्चिमेचिया घरा। निश्चळपणे धनुर्धरा। चालणें एथिंचें।५९। येणे मार्गे जयां ठाया जाइजे। तो गांव आपणचि होइजे। हें सांगो काय सहजें। जाणसी तूं।१६०। तेंथे पार्थे म्हणितलें देवा। तरी तेंचि मग केव्हां। कां आर्तिसमुद्रौनि न काढावा। बुडतु जी मी।६१। तंव कृष्ण म्हणती ऐसें। हें उत्संखळ बोलणें कायसें। आम्ही सांगतसों आपैसें। वरी पुशिलें तुवां।६२।

शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य स्थिरमासनमात्मनः।
नात्युच्छ्रितं नातिनीचं चैलाजिनकुशोत्तरम्।११।

तरी विशेषें आतां बोलिजेल। परी तें अनुभवें उपेगा जाईल। म्हणोनि तैसे एक लागेल। स्थान पाहावें।६३। जेथ आराणुकेचेनि कोडें। बैसलिया उठो नावडे। वैराग्यासी दुणीव चढे। देखलिया जें।६४। जो संती वसविला ठावो। संतोषासि सावावो। मना होय उत्सावो। धैर्याचा।६५। अभ्यासचि आपण यातें करी। हृदयातें अनुभव वरी। ऐसी रम्यपणाची थोरी। अखंड जेथ।६६। जया आड जातां पार्था। तपश्चर्या मनोरथा। पाखांडियाही आस्था। समूळ होय।६७। स्वभावें वाटे येतां। जरी

वरपडा जाहाला अवचिता। तरी सकामही परी माघौता। निघो विसरे।६८। ऐसेनि न राहतयातें राहावी। भ्रमतयातें बैसवी। थापटूनि चेववी। विरक्तीतें।६९। हें राज्य वर सांडिजे। मग निवांता एथेंचि असिजे। ऐसें श्रृंगारियांहि उपजे। देखतखेवो।१७०। जें येणेंमानें बरवंट। आणि तैसेचि अति चोखट। जेथ अधिष्ठान प्रगट। डोळां दिसे।७१। आणिकही एक पहावें। जें साधकीं वसतें होआवें। आणि जनाचेनि पायरवे। रुळेचिना।७२। जेथ अमृताचेनि पाडें। मुळाहीसकट गोडें। जोडती दाटें झाडें। सदा फहती।७३। पाउला पाउला उदकें। वर्षाकाळावीण अतिचोखें। निर्झरें कां विशेषें। सुलभें जेथें।७४। हा आतपाही अळुमाळ। जाणिजे तरी शीतळ। पवन अति निश्चळ। मंद झुळके।७५। बहुतकरूनि निःशब्द। दाट न रिघे श्वापद। शुक हन षट्पद। तेउतें नाहीं।७६। पाणिलगें हंसें। दोनी चारी सारसें। कवणें एके वेळे बैसे। कोकिळही हो कां।७७। निरंतर नाहीं। तरी आलीं गेलीं कांहीं। होतु कां मयूरेंहीं। आम्ही ना न म्हणो।७८। परी आवश्यक पांडवा। ऐसा ठाव जोडावा। तेथ निगूढ मठ होआवा। कां शिवालय।७९। दोहींमाजी आवडे तें। जें मानवलें होय चित्तें। बहुतकरूनि एकांतें। वैसिजे गा।१८०। म्हणोनि तैसें तें जाणावें। मनराहतें पाहावें। राहेल तेथ रचावें। आसन ऐसें।८१। वरी चोखट मृगसेवडी। माजि धूतवस्त्राची घडी। तळवटीं अमोडी। कुशांकुर।८२। सकोमळ सरिसे। सुबद्ध राहती आपैसे। एकपाडें तैसें। वोजा घाली।८३। परी सावियाचि उंच होईल। तरी आंग हन डोलेल। नीच तरी पावेल। भूमिदोष।८४। म्हणोनि तैसें न करावे। समभाव धरावें। हें बहु असो होआवें। आसन ऐसें।८५।

तत्रैकाग्रं मनः कृत्वा यतचित्तेन्द्रियक्रियः।
उपविश्यासने युंज्याद्योगमात्मविशुद्धये।१२।

मग तेथ आपण। एकाग्र अंतःकरण। करूनि सद्गुरुस्मरण। अनुभविजे।८६। जेथ स्मरतेनि आदरें। सबाह्य सात्विकें भरे। जंव काठिण्य विरे। अहंभावाचें।८७। विषयांचा विसर पडे। इंद्रियांची कसमस मोडे। मनाची घडी घडे। हृदयामाजी।८८। ऐसें ऐक्य हें सहजें। फावे तंव राहिजे। मग तेणेचि बोधें बैसिजे। आसनावरी।८९। आतां आंगातें आंग वरी। पवनातें पवन धरीं। ऐसी अनुभवाची उजरी। होंचि लागे।१९०। प्रवृत्ति माघौती मोहरे। समाधि ऐलाडी उतरे। आघवे अभ्यासूं सरे। बैसतखेवो।९१। मुद्रेची प्रौढी ऐसी। तेचि सांगिजेल आतां परियेसीं। तरी उरु या जघनासी। जडोनि घालीं।९२। चरणतळें देव्हडीं। आधारद्रुमाच्या बुडीं। सुघटितें गाढी। संचरीं पां।९३। सव्य तो तळीं ठेविजे। तेणें सिवणीमध्य पीडिजे। वरी बैसे तो सहजें। वामचरण।९४। गुदमेद्राआंतौतीं। चारी अंगुळें निगुतीं। तेथ सार्ध सार्ध प्रांतीं। सांडूनियां।९५। माजि अंगुळ एक निगे। तेथ टांचेचेनि उत्तरभागें। नेहेटिजे वरी आंगें। पेललेनी।९६। उचलिले कां नेणिजे। तैसें पृष्ठांत उचलिजे। गुल्फद्वय धरिजे। तेणेंचि मानें।९७। मग शरीर संचु पार्था। अशेषही सर्वथा। पार्ष्णीचा माथा। स्वयंभू होय।९८। अर्जुना हें जाण। मूळबंधाचे लक्षण। वज्रासन गौण। नाम यासी।९९। ऐसी आधारीं मुद्रा पडे। आणि अधींचा मार्ग मोडे। तेथ अपान आंतुलेकडे। वोहोटों लावे।२००।

समं कायशिरोग्रीवं धारयन्नचलं स्थिरः।
संप्रेक्ष्य नासिकाग्रं स्वं दिशश्चानवलोकयन्।१३।

तंव करसंपुट आपैसें। वामचरणीं बैसे। बाहुमूळीं दिसे। थोरीव आली।१। माजि उभारिलेनि दंडे। शिरकमळ होय गाढें। नेत्रद्वारींची कवाडें। लागूं पाहती।२। वरचिली पातीं न ढळती। तळींची तळीं पुंजाळती। तेथ अर्धोन्मीलित स्थिती। उपजे तया।३। दिठी राहोनि आंतुलेकडे। बाहेर पाउल घाली कोडें। ते ठायी ठावो पडे। नासाग्रपीठीं।४। ऐसें आंतच्या आंतचि रचे। बाहेरी मागुतें नवचे। म्हणोनि राहणें आधिये दिठीचें। तेथेंचि होय।५। आतां दिशांची भेटी घ्यावी। कां रूपाची वाट पहावी। हे चाड सरे आघवी। आपसया।६। मग कंठनाळ आटे। हनुवटी हडौती दाटे। ते गाढी होऊनि नेहटे। वक्षस्थळीं।७। माजि घटिका लोपे। वरी बंध जो आरोपे। तो जाळंधर म्हणिपे। पंडुकुमरा।८। नाभी वरी पोखे। उदर हें थोके। अंतरीं फांके। हृदयकोश।९। स्वाधिष्ठानावरीचिले काठीं। नाभिस्थानातळवटीं। बंध पडे किरीटी। वोढियाणा तो।२१०। ऐसी शरीराबाहेरलीकडे। अभ्यासाची पाखर पडे।—

प्रशान्तात्मा विगतभीर्ब्रह्मचारिव्रते स्थितः।
मनः संयम्य मच्चितो युक्त आसीत मत्परः।१४।

तंव आंत त्राय मोडे। मनोधर्माची।११। कल्पना निमे। प्रवृत्ति शमे। आंग मन विरमे। सावियाची।१२। क्षुधा काय जाहाली। निद्रा केउती गेली। हे आठवणही हारपली। न दिसे वेगां।१३। जो मूळबंधें कोंडला। अपान माघौता मुरडला। तो सवेचि वरी सांकडला। धरी फुगू।१४। क्षोभलेपणें माजे। उवाइका ठायीं गाजे। मणिपुरेंसीं झुंजे। राहोनियां।१५। मग थांबलिये वाहटुळी। सेंघ घेऊनि घर डहुळी। बाळपणींची कुहीटुळी। बांहेर घाली।१६। भीतरी वळी न धरे। कोठ्यामाजी संचरे।

कफपित्तांचे थारे। उरों नेदी।१७। धातूचे समुद्र उलंडी। मेदाचे पर्वत फोडी। आंतली मज्जा काढी। अस्थिगत।१८। नाडीतें सोडवी। गात्रांतें बिघडवी। साधकांतें भेडसावी। परी बिहावें ना।१९। व्याधीतें दावी। सवेंचि हारवी। आप पृथ्वी कालवी। एकवाट।२२०। तंव येरीकडे धनुर्धरा। आसनाचा उबारा। शक्ति करी उजगरा। कुंडलिनी ते।२१। नागिणीचें पिले। कुंकुमें नाहलें। वळण घेऊनि आलें। सेजे जैसे।२२। तैसी ते कुंडलिनी। मोटकी औठ वळणी। अधोमुख सर्पिणी। निदेली असे।२३। विद्युल्लतेची विडी। वन्हिज्वाळांची घडी। पंधरेयाची चोखडी। घोंटीव जैसी।२४। तैसी सुबंध आटली। पुटीं होती दाटली। ते वज्रासने चिमुटली। सावध होय।२५। तेथ नक्षत्र जैसे उलंडले। कीं सूर्याचे आसन मोडलें। तेंजाचें बीज विरूढलें। अंकुरेशी।२६। तैसी वेढियांतें सोडिती। कवतिकें आंग मोडिती। कंदावरी शक्ती। उठिली दिसे।२७। सहजें बहुतां दिवसांची भूक। वरी चेवविली तें होय मिष। मग आवेशें पसरी मुख। ऊर्ध्व उजू।२८। तेथ हृदयकोशातळवटीं। जो पवन भरे किरीटी। तया सगळेयाची मिठी। देऊन घाली।२९। मुखींच्या ज्वाळीं। तळीं वरी कवळी। मांसाची वडवाळी। आरोगूं लागे।२३०। जे जे ठाय समांस। तेथ आहाच जोडे घाउस। पाठी एक दोनी घांस। हियाही भरी।३१। मग तळवे तळहात शोधी। ऊर्ध्वींचे खंड भेदी। झाडा घे संधी। प्रत्यंगाचा।३२। अधोभाग तरी न सांडी। परी नखींचेंही सत्व काढी। त्वचा धुवूनि जडी। पांजरेंशी।३३। अस्थींचे नळे निरपे। शिरांचे हीर वोरपे। तंव बाहेरी विरूढी करपे। रोमबीजांची।३४। मग सप्तधातूंच्या सागरीं। ताहानेली घोट भरी। आणि सवेंचि उन्हाळा करी। खडखडीत।३५। नासापुटौनि वारा। जो जातसे अंगुळे बारा। तो गचिये धरूनि माघारा। आंत घाली।३६। तेथ अध वरौतें आकुंचे। ऊर्ध्व तळौतें खाचे। तया खेंवामाजी चक्राचे। पदर उरती।३७। येऱ्हवीं तरी दोन्ही तेव्हांचि मिळती। परी कुंडलिनी नावेक दुचित होती। ते तयांतें म्हणे परौती। तुम्हीचि काय एथें।३८। आइकें पार्थिव धातु आघवी। आरोगितां कांहीं नुरवी। आणि अपातें तंव ठेवी। पुसोनियां।३९। ऐसीं दोनी भूतें धाये। ते वेळीं संपूर्ण धाये। मग सौम्य होऊनि राहे। सुषुम्नेंपाशीं।२४०। तेथ तृप्तीचेनि संतोषें। गरळ जें वमी मुखें। तेणें तियेचेनि पीयूषें। प्राण जिये।४१। तो अग्नि आंतून निघे। परी सबाह्य निववूंचि लागे। ते वेळीं कसु बांधिती आंगे। सांडिली पुढती।४२। मार्ग सोडती नाडीचे। नवविधपण वायूचे। जाय म्हणऊनि शरीराचे। धर्म नाहीं।४३। इडा पिंगळा एकवटती। गांठी तिन्हीं सुटती। साही पदर फुटती। चक्रांचे हे।४४। मग शशी आणि भानु। ऐसा कल्पिजे जो अनुमानु। तो वातीवरी पवनु। गिंवसितां न दिसे।४५। बुद्धीची फुलिका विरे। परिमळ घ्राणीं उरे। तोही शक्तीसवें संचरे। मध्यमेमाजी।४६। तंव वरिलेकडोनि ढाळें। चंद्रामृताचें तळें। कानवडोनि मिळे। शक्तिमुखीं।४७। तेणे नाळकें रस भरे। तो सर्वांगामाजि संचरे। जेथिंचा तेथ मुरे। प्राणपवनें।४८। तातलिये मुसें। मेण निघोनि जाय जैसें। मग कोंदली राहे रसें। वोतलेनी।४९। तैसें पिंडाचेनि आकारें। ते कळाचि कां अवतरे। वरी त्वचेचेनि पदरें। पांगुरली असे।२५०। जैसी आभाळाची बुंथी। करूनि राहे गभस्ती। मग फिटलिया दीप्ती। धरून ये।५१। तैसा आहाचवरि कोरडा। त्वचेचा लसे पातोडा। तो झडोनि जाय कोंडा। जैसा होय।५२। मग काश्मीरीचें स्वयंभ। कां रत्नबीजा निघालें कोंभ। अवयवेकांतीचा भांव। तैसी दिसे।५३। ना तरी संध्यारागींचे रंग। काढूनि वळिलें तें आंग। कीं अंतरज्योतीचें लिंग। निर्वाळिलें।५४। कुंकुमाचें भरीव। सिद्ध रसाचें वोतींव। मज पाहतां सावेव। शांतीचि ते।५५। तें आनंदचित्रींचे लेप। ना तरी महासुखाचें रूप। कीं संतोषतरूंचे रोप। थांबले जैसें।५६। तो कनकचंपकाचा कळा। कीं अमृताचा पुतळा। ना ना सासिंनला मळा। कोंवळिकेचा।५७। हो कां जे शारदियेचेनि बोलें। चंद्रबिंब पाल्हेले। कां तेजचि मूर्त बैसलें। आसनावरी।५८। तैसें शरीर होये। जे वेळीं कुंडलिनी चंद्र पिये। मग देहाकृति विहे। कृतांत गा।५९। वार्धक्य तरी बहुडे। तारुण्याची गांठी विघडे। लोपली उघडे। बाळदशा।२६०। वयसा तेरी येतुलेवरी। येऱ्हवीं बाळाचा बळार्थ करी। धैर्याची थोरी। निरुपम।६१। कनकद्रुमाच्या पालवीं। रत्नकलिका नित्य नवी। नखें तैसी बरवीं। नवीं निघती।६२। दांतही आन होती। परि अपाडें सानेजती। जैसी दुबाहीं बैसे पाती। हिरेयांची।६३। मणिकुलियांचिया कणिया। साावियाची अनुप्राणिया। तैसिया सर्वांगीं उधवती आणिया। रोमांचिया।६४। करचरणतेळें। जैसीं कां रातोत्पलें। पाखाळींव होती डोळे। काय सांगो।६५। निडाराचेनि कोंदाटें। मोतियें नावरती संपुटें। मग शिवणी जैसी उतटे। शुक्तिपल्लवांची।६६। तैसी पातियांचिये कवळिये न समाये। दिढी आकळोनि निघों पाहे। आधिलीचि परी होये। गगना कवळिती।६७। आइकें देह होय सोनियाचें। परि लाघव घे वायूचें। जे आप आणि पृथ्वीचें। अंश नाही।६८। मग समुद्रापैलीकडील देखे। स्वर्गींचा आलोच आइके। मनोगत ओळखें। मुंगियेचे।६९। पवनाचा वारिका वळघे। चाळे तरी उदकीं पाउल न लागे। येणें येणें प्रसंगें। येती बहुता सिद्धि।२७०। आइकें प्राणाचा हात धरूनि। गगनाची पाउटी करूनि। मध्यमेचेनि दादराहुनी। हृदया आली।७१। ते कुंडलिनी जगदंबा। जे चैतन्यचक्रवर्तीची शोभा। जया विश्वबीजाचिया कोंभा। साउली केली।७२। जे शून्यलिंगाची पिंडी। जे परमात्मया शिवाची करंडी। जे प्रणवाची उघडी। जन्मभूमी।७३। हें असो ते कुंडलिनीबाळी। हृदयआंत आली। तंव अनाहताची बोली। चावळे ते।७४। शक्तीचिया आंगा लागलें। बुद्धीचे चैतन्य होतें जाहलें। तें तेणें आइकिलें। अळुमाळ।७५। घोषाच्या कुंडीं। नादचित्रांची रूपडीं। प्रणवाचिया मोडी। रेखिली ऐसीं।७६। हेंचि कल्पावें तरी जाणिजे। परि कल्पितें कैंचें आणिजे। तरी नेणो काय गाजे। तिये ठायीं।७७। विसरोनि गेलो अर्जुना। जंव नाश नाहीं पवना। तंव वाचा आथि गगना। म्हणऊनि धुमे।७८। तया अनाहताचेनि मेघें। आकाश

दुमदुमो लागे। तंव ब्रह्मस्थानींचें बेगें। सहज फिटे।७९। आइकें कमळगर्भाकारें। जें महदाकाश दुसरें। जेथ चैतन्यें आधातुरें। होऊनि असिजे।२८०। तया हृदयाच्या परिवरीं। कुंडलिनिया परमेश्वरी। तेजाची शिदोरी। विनियोगिली।८१। बुद्धीचेनि शाकें। हातबोनें निकें। द्वैत तेथ न देखे। तैसें केले।८२। निजकांती हारविली। मग प्राणचि केवळ जाहाली। तें वेळीं कैसी गमली। म्हणावी पां।८३। हो कां जे पवनाची पुतळी। पांघुरली होती सोनेसळी। ते फेडूनिया वेगळी। ठेविली तिया।८४। ना तरी वायूचेनि आंगे झगटली। दीपाची दृष्टी निमटली। कां लखलखोनि हारपली। वीज गगनीं।८५। तैसी हृदयकमळवेऱ्ही। दिसे जैसी सोनियाची सरी। ना तरी प्रकाशजळाची झरी। वाहत आली।८६। मग ते हृदयभूमी पोकळे। जिराली कां एके वेळे। तैसें शक्तीचें रूप मावळे। शक्तीचिमाजी।८७। तेऱ्हां तरी शक्तीचि म्हणिजे। येऱ्हवी तो प्राण केवळ जाणिजे। आतां नादबिंदु नेणिजे। कळाज्योति।८८। मनाचा हन मार। कां पवनाचा आधार। ध्यानाचा आदर। नाहीं परी।८९। हे कल्पना घे सांडी। ते नाहीं इये परवडी। हे महाभूतांची फुडी। आटणी देखां।२९०। पिंडे पिंडाचा ग्रास। तो हा नाथसंकेतींचा दंश। परि दाऊनि गेला उद्देश। श्रीमहाविष्णु।९१। तया ध्वनियाचें केणें सोडुनि। यथार्थाची घडी झाडुनि। उपलविली म्यां जाणुनि। ग्राहीक श्रोते।९२।

युंजन्नेवं सदात्मानं योगी नियतमानसः।
शान्तिं निर्वाणपरमां मत्संस्थामधिगच्छति।१५।

ऐकें शक्तीचें तेज जेव्हां लोपे। तेथ देहाचें रूप हारपे। मग तो डोळ्यांमाजी लपे। जगाचिया।९३। येऱ्हवीं आधिलाचिऐसें। सावयव तरी दिसे। परी वायूचें जैसें। वळिलें होय।९४। ना तरी कर्दळीचा गाभा। बुथी सांडोनि उभा। कां अवयवचि नभा। उदयला तो।९५। तैसें होय शरीर। तै तें म्हणिजे खेचर। हें पद होता चमत्कार। पिंडजनीं।९६। देखें साधक निघोनि जाये। मागां पाउलांची वोळ राहे। तेथ ठायीं ठायीं होये। अणिमादिक।९७। परी तेणें काय काज आपणयां। अवधारीं ऐसा धनंजया। लोप आथी भूतत्रया। देहींच्या देहीं।९८। पृथ्वीतें आप विरवी। आपातें तेज जिरवी। तेजातें पवन हरवी। हृदयामाजी।९९। पाठी आपण एकला उरे। परी शरीराचेनि अनुकारें। मग तोही निगे अंतरें। गगना मिळे।३००। ते वेळीं कुंडलिनी हे भाष जाये। मारुत ऐसें नाम होये। परी शक्तिपण तें आहे। जंव न मिळे शिवीं।१। मग जालंधर सांडी। ककारांत फोडी। गगनाचिये पाडीं। पैठी होय।२। ते !काराचिये पाठी। पाय देत उठाउठी। पश्यंतीचिये पाउठी। मागां घाली।३। पुढें तन्मात्रा अर्धवरी। आकाशाच्या अंतरी। भरती गमे सागरीं। सरिता जेवीं।४। मग ब्रह्मरंध्रीं स्थिरावोनी। सोहंभावाच्या बाह्या पसरुनीं। परमात्मलिंगा धांवोनि। आंगा घडे।५। तंव महाभूतांची जवनिक फिटे। मग दोहींसि होय झटें। तेथ गगनासकट आटे। समरसीं तिये।६। पैं मेघाचेनि मुखीं निवडला। समुद्र कां वोघीं पडिला। तो मागुता जैसा आला। आपणपयां।७। तेवीं पिंडाचेनि मिषें। पदीं पद प्रवेशे। तें एकत्व होय तैसें। पंडुकुमरा।८। आतां दुजे हन होतें। कीं एकचि हें आइतें। ऐसिए विवंचनेपुरतें। उरेचिना।९। गगनीं गगन लया जाये। ऐसें जे कांहीं आहे। तें अनुभवें जो होये। तो होऊनि ठाके।३१०। म्हणोनि तेथींची मात। न चढेचि बोलाचा हात। जेणें संवादाचिया गांवाआंत। पैठी कीजे।११। अर्जुना येऱ्हवीं तरी। इया अभिप्रायाचा जे गर्व धरी। ते पाहें पां वैखरी। दुरी ठेली।१२। भ्रूलता मागलीकडे। तेथ मकाराचेचि आंग न मांडे। सडेया प्राणा सांकडें। गगना येतां।१३। पाठीं तेथेचि तो भेसळला। तैं शब्दा दिवो मावळला। मग तयाहिवरी आटु भविन्नला। आकाशाचा।१४। आतां महाशून्याचिया डोहीं। जेथ गगनासीचि थावो नाहीं। तेथ तागा लागेल काई। बोलाचा इया।१५। म्हणूनि आखरामाजि सांपडे। कीं कानावरी जोडे। हें तैसें नव्हे फुडे। त्रिशुद्धी गा।१६। जैं कांहीं दैवें। अनुभविलें फावे। तैं आपणचि हे ठाकावें। होऊनियां।१७। पुढती जाणणे तें नाहींचि। म्हणोनि असो किती हेचि। बोलावें आतां वायांचि। धनुर्धरा।१८। ऐसें शब्दजात माघौतें सरे। तेथ संकल्पाचें आयुष्य पुरे। वाराही जेथ न शिरे। विचाराचा।१९। जें उन्मनियेचे लावण्य। जे तुर्येचें तारुण्य। अनादि जे अगण्य। परमतत्त्व।३२०। जें विश्वाचें मूळ। जें योगद्रुमाचे फळ। जें आनंदाचे केवळ। चैतन्य गा।२१। जें आकाशाचा प्रांत। जो मोक्षाचा एकांत। जेथ आदि आणि अंत। विरोनि गेले।२२। जे महाभूतांचे बीज। जें महातेजाचें तेज। एवं पार्था जें निज। स्वरूप माझें।२३। ते हे चतुर्भुज कोंभेली। जयाचि शोभा रूपासी आली। देखोनि नास्तिकीं नोकिलीं। भक्तवृंदें।२४। तें अनिर्वाच्य महासुख। पैं आपणचि जाहले जे पुरुष। जयांचे कां निष्कर्ष। प्राप्तीवेरीं।२५। आम्हीं साधन हें जें सांगितलें। तेंचि शरीरा जिही केलें। ते आमुचेनि पाडें आले। निर्वाळलेया।२६। परब्रह्माचेनि रसें। देहाकृतीचिये मुसें। वोतीव जाहाले तैसें। दिसती आंगें।२७। जरी हे प्रतीति हन अंतरी फाकें। तरी विश्वचि हे अवघे झांके। तंव अर्जुन म्हणे निकें। साचचि जी हें।२८। कां जे आपण आतां देव। हा बोलिले जो उपाव। तो प्राप्तीचा ठाव। म्हणोनि घडे।२९। इयें अभ्यासीं जे दृढ होती। ते भरंवसेनि ब्रह्मत्वा येती। हें सांगतियाचि रीती। कळलें मज।३३०। देवा गोठीचि हे ऐकतां। बोध उपजतसे चित्ता। मा अनुभवें तल्लीनता। नोहेल केवीं।३१। म्हणऊनि एथ कांहीं। अनारिसें नाहीं। परी नावभरी चित्त देई। बोला एका।३२। आतां कृष्णा तुवां सांगीतला योग। तो मना तरी आला चांग। परी न शकेकरूं पांग। योग्यतेचा।३३। सहजें आंगिक जेतुले आहे। तेतुलियाचि जरी सिद्धि जाये। तरी हाचि मार्ग सुखोपायें। अभ्यासीन।३४। ना तरी देव जैसें

सांगतील। तैसें आपणपें जरी न ठकेल। तरी योग्यतेवीण होईल। तेंचि पुसों।३५। जीवींची ऐसी धारण। म्हणोनि पुसावया जाहाले कारण। मग म्हणे तरी आपण। रित्त देइजो।३६। हांहो जी अवधारिलें। जें हें साधन तुम्ही निरूपिलें। तें आवडतयाहि अभ्यासिलें। फावो शके।३७। कीं योग्यतेवीण नाहीं। ऐसें हन आहे कांहीं। तेथ श्रीकृष्ण म्हणती काई। धनुर्धरा।३८। हें काज कीर निर्वाण। परी आणिकही जें कांहीं साधारण। तेंही अधिकाराचे वोडवेविण। काय सिद्धी जाय।३९। पैं योग्यता जे म्हणिजे। ते प्राप्तीचि अधीन जाणिजे। कां जें योग्य होऊनि कीजे। तें आरंभिलें फळे।३४०। तरी तैसी एथ कांहीं। सावियाची केणी नाहीं। आणि योग्यतेची काई। खाणी असे।४१। नावेक विरक्त। जाहला देहधर्मी नियत। तरी तोचि नव्हे व्यवस्थित। अधिकारिया।४२। येतुलालिये आयणीमाजिवडें। योग्यपण तुतेंही जोडे। ऐसें प्रसंगें सांकडे। फेडिलें तयाचें।४३। मग म्हणे पार्था। ते हे ऐसी व्यवस्था। अनियतासि सर्वथा। योग्यता नाहीं।४४।

नात्यश्नतस्तु योगोऽस्ति न चैकान्तमनश्नतः।
न चातिस्वप्नशीलस्य जाग्रतो नैव चार्जुन।१६।

जो रसनेंद्रियाचा अंकिला। कां निद्रेसि जीवें विकला। तो नाहीं येथ म्हणितला। अधिकारिया।४५। अथवा आग्रहाचिये बांदोडी। क्षुधा तृषा कोंडी। आहारातें तोडी। मारूनियां।४६। निद्रेचिया वाटा न वचे। ऐसा दृढिवेचेनि अवतरणें नाचे। तें शरीरचि नव्हे तयाचें। मग योग कवणाचा।४७। म्हणोनि अतिशयें विषय सेवावा। ऐसा बोध नोहावा। कां सर्वथा निरोधावा। हेंही नको।४८।

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा।१७।

आहार तरी सेविजे। परी युक्तिचेनि मापें मविजे। क्रियाजात आचरिजे। तयाचि स्थिति।४९। मापितला बोल बोलिजे। मितलिया पाउलीं चालिजे। निद्रेही मान दीजे। अवसरें एकें।३५०। जागणें जरी जाहलें। तरी व्हावें तें मितलें। येतुलेनि धातुसाम्य संचलें। असेल सुख।५१। ऐसें युक्तिचेनि हातें। जैं इंद्रियां वोपिजे भातें। तैं संतोषासी वाढतें। मनचि करी।५२।

यदा विनियतं चित्तमात्मन्येवावतिष्ठते।
निस्पृहः सर्वकामेभ्यो युक्त इत्युच्यते तदा।१८।

बाहेर युक्तीची मुद्रा पडे। तंव आंत आंत सुख वाढें। तेथें सहजचि योग घडे। नाभ्यासितां।५३। जैसें भाग्याचिये भडसें। उद्यमाचेनि मिषें। मग समृद्धिजात आपैसें। घर रिघे।५४। तैसा युक्तिमंत कौतुकें। अभ्यासाचिया मोहरा ठाके। आणि आत्मसिद्धीचि पिके। अनुभव तयाचा।५५। म्हणोनि युक्ति हे पांडवा। घडे जया सदैवा। तो अपवर्गीचिये राणिवा। अळंकरिजे।५६।

यथा दीपो निवातस्थो नेंगते सोपमा स्मृता।
योगिनो यतचित्तस्य युंजतो योगमात्मनः।१९।

युक्ति योगाचें आंग पावे। ऐसें प्रयाग जेथ होय बरवें। तेथ क्षेत्रन्यासें स्थिरावे। मानस जयाचें।५७। तयातें योगयुक्त तूं म्हण। हेंही प्रसंगें जाण। हें दीपाचें उपलक्षण। निर्वातींचिया।५८। आतां तुझें मनोगत जाणोनी। कांहीं एक आम्ही म्हणोनी। तें निकें चित्त देऊनि परिसावें गा।५९। तूं प्राप्तीची चाड वाहसी। परी अभ्यासी दक्ष न होसी। तें सांग पां कां विहसी। दुवाडपणें।३६०। तरी पार्था हें झणें। सायास घेशी हो मनें। वाया बागूल इयें दुर्जनें। इंद्रियें करिती।६१। पाहें पां आयुष्यातें अढळ करी। जें सरतें जीवित वारी। तया औषधातें वैरी। काय जिव्हा न म्हणे।६२। ऐसें हितासि जें जें निकें। तें सदाचि या इंद्रियां दुखे। येऱ्हवीं सोपें योगासारिखें। काहीं आहे।६३।

यत्रोपरमते चित्तं निरुद्धं योगसेवया।
यत्र चैवात्मनात्मानं पश्यन्नात्मनि तुष्यति।२०।
सुखमात्यन्तिकं यत्तद्बुद्धिग्राह्यमतीन्द्रियम्।
वेत्ति यत्र न चैवायं स्थितश्चलति तत्त्वतः।२१।

म्हणोनि आसनाचिया गाढिका। जो आम्हीं अभ्यास सांगितला निका। तेणें होईल तरी हो कां। निरोध ययां।६४। येऱ्हवीं तरी येणें योगें। जैं इंद्रियां विंदाण लागे। तैं चित्त भेटों रिगे। आपणपेयां।६५। परतोनि पाठिमोरें ठाके। आणि आपणियातें आपण देखे। देखतखेंवो वोळखे। म्हणे तत्व हें मी।६६। तिये वोळखीचि सरिसें। सुखाचिया साम्राज्यीं बैसे। मग आपणपां समरसें। विरोनि जाय।६७। जयापरतें आणिक नाहीं। जयातें इंद्रियें नेणती कंहीं। तें आपणचि आपुलिया ठायीं। होऊन ठाके।६८।

यं लब्ध्वा चापरं लाभं मन्यते नाधिकं ततः।
यस्मिंस्थितो न दुःखेन गुरुणापि विचाल्यते।२२।

मग मेरूपासूनि थोरें। देह दुःखाचेनि डोंगरें। दाटिजो पां परी भारें। चित्त न दाटे।६९। कां शस्त्रें वरी तोडिलिया। देह अग्नीमाजि पडलिया। चित्त महासुखीं पहुडलिया। चेवो न ये।३७०। ऐसें आपणपां रिगोनि ठाये। मग देहाची वास न पाहे। आणिकचि सुख होऊनि जाये। म्हणूनि विसरे।७१।

तं विद्याद्दुःखसंयोगवियोगं योगसंज्ञितम्।
स निश्चयेन योक्तव्यो योगो निर्विण्णचेतसा।२३।

जया सुखाचिया गोडी। मन आर्तीचि सेचि सोडी। संसाराचें तोडी। गुंतलें जें।७२। जें योगाची बरव। संतोषाची राणिव। ज्ञानाची जाणीव। जयालागीं।७३। ते अभ्यासिलेनि योगें। सावयव देखावें लागे। देखिलें तरी आंगें। होइजेल गा।७४।

संकल्पप्रभवान्कामांस्त्यक्त्वा सर्वानशेषतः।
मनसैवेन्द्रियग्रामं विनियम्य समन्ततः।२४।

तरी तोचि योग बापा। एके परी आहे सोपा। जरी पुत्रशोक संकल्पा। दाखविजे।७५। हा विषयातें निमालिया आइके। इन्द्रियें नेमाचिया धारणीं देखे। तरी हियें घालूनि मुके। जीवित्वासी।७६। ऐसें वैराग्य हें करी। तरी संकल्पाची सरे वारी। सुखे धृतीचिया धवळारीं। बुद्धि नांदे।७७।

शनैः शनैरुपरमेद्बुद्ध्या धृतिगृहीतया।
आत्मसंस्थं मनः कृत्वा न किंचिदपि चिन्तयेत्।२५।
यतो यतो निश्चलति मनश्चंचलमस्थिरम्।
ततस्ततो नियम्यैतदात्मन्येव वशं नयेत्।२६।

बुद्धि धैर्या होय वसौटा। तरी मनातें अनुभवाचिया वाटा। हळु हळु आणूनि करी प्रतिष्ठा। आत्मभुवनीं।७८। याही एके परी। प्राप्ति आहे विचारीं। हें न ठके तरी सोपारी। आणिक ऐकें।७९। आतां नियमचि हा एकला। जीवें करावा आपुला। जैसा कृतनिश्चयाचिया बोला। बाहेरा नोहे।३८०। जरी येतुलेनि चित्त स्थिरावे। तरी काजा आले स्वभावें। नाहीं तरी घालावें। मोकलुनी।८१। मग मोकलिलें जेथ जाईल। तेथूनि नियमूचि घेऊन येईल। ऐसेनि स्थैर्याची होईल। सवेचि यया।८२।

प्रशांतमनसं ह्येनं योगिनं सुखमुत्तमम्।
उपैति शान्तरजसं ब्रह्मभूतमकल्मषम्।२७।

पाठीं केतुलेनि एके वेळे। तया स्थैर्याचेनि मेळे। आत्मस्वरूपा जवळें। येईल सहजें।८३। तयातें देखोनि आंगा घडेल। तेथ अद्वैती द्वैत बुडेल। आणि ऐक्यतेजें उघडेल। त्रैलोक्य हें।८४। आकाशीं दिसे दुसरें। तें अभ्र जैं विरे। तैं गगनचि कां भरे। विश्व जैसें।८५। तैसें चित्त लया जाये। आणि चैतन्यचि आघवें होये। ऐसी प्राप्ति सुखोपायें। आहे येणें।८६।

युंजन्नेवं सदात्मानं योगी विगतकल्मषः।
सुखेन ब्रह्मसंस्पर्शमत्यन्तं सुखमश्नुते।२८।

या सोपया योगस्थिती। उकल देखिला गा बहुतीं। संकल्पाचिया संपत्ती। रुसोनियां।८७। तें सुखाचेनि सांगातें। आलें परब्रह्मा आंतौतें। तेथ लवण जैसें जळातें। सांडूं नेणे।८८। तैसें होय तिये मेळीं। मग सामरस्याचिया राउळीं। महासुखाची दिवाळी। जगेसीं दिसे।८९। ऐसें आपले पायवरी। चालिजे आपुले पाठीवरी। हें पार्थ नागवे तरी। आन ऐकें।३९०।

सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि।
ईक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शनः।२९।
यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति।
तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति।३०।

तरी मी तंव सकळ देहीं। असें एथ विचार नाहीं। आणि तैसेंचि माझ्या ठायीं। सकळ असे।९१। हें ऐसेंचि संचलें। परस्परें मिसळलें। बुद्धी घेपे एतुलें। होआवें गा।९२। येऱ्हवीं तरी अर्जुना। जो एकवटलिया भावना। सर्वभूतीं अभिन्ना। मातें भजे।९३। भूतांचेनि अनेकपणें। अनेक नोहे अंतःकरणें। केवळ एकत्वचि माझें जाणे। सर्वत्र जो।९४। मग तो एक हा मियां। बोलतां दिसतसे वायां। येऱ्हवीं न बोलिजे तरी धनंजया। तो मीचि आहे।९५। दीपा आणि प्रकाशा। एकवंकीचा पाड जैसा। तो माझ्या ठायीं तैसा। मी तयामाजी।९६। जैसा उदकाचेनि आयुष्यें रस। कां गगनाचेनि मानें अवकाश। तैसा माझेनि रूपें रूपस। पुरुष तो गा।९७।

सर्वभूतस्थितं यो मां भजत्येकत्वमास्थितः।
सर्वथा वर्तमानोऽपि स योगी मयि वर्तते।३१।

जेणें ऐक्याचिये दिठी। सर्वत्र मातेंचि किरीटी। देखिला जैसा पटीं। तंतु एक।९८। कां स्वरूपें तरी बहुतें आहाती। परी तैसी सोनीं बहुवें न होती। ऐसी ऐक्याचळाची स्थिती। केली जेणें।९९। ना तरी वृक्षांचीं पानें जेतुलीं। तेतुलीं रोपें नाहीं लाविलीं। ऐसी अद्वैतदिवसें पाहली। रात्री जया।४००। तो पंचात्मकीं सांपडे। तरी मग सांग पां कैसेनि अडे। तो प्रतीतीचेनि पाडें। मजसीं तुके।१। माझें व्यापकपण आघवें। गवसलें तयाचेनि अनुभवें। तरी न म्हणतां स्वभावें। व्यापक जाहाला।२। आतां शरीरी तरी आहे। परी शरीराचा तो नोहे। ऐसें बोलवरी होये। तें करूं ये।३।

आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन।
सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः।३२।

म्हणोनि असो तें विशेषें। अथवा आपणपेंयासारिखें। जो चराचर देखे। अखंडित।४। सुखदुःखादि वर्में। कां शुभाशुभें कर्में। दोनी ऐसी मनोधर्में। नेणेचि जो।५। हे समविषम भाव। आणिकही विचित्र जें सर्व। तें मानी जैसें अवयव। आपुले होती।६। हें एकैक काय सांगावें। जया त्रैलोक्यचि आघवें। मी ऐसें स्वभावें। बोधा आलें।७। तयाही देह एक कीं आथी। लौकिकी सुखदुःखी तयातें म्हणती। परी आम्हातें ऐसी प्रतीती। परब्रह्मचि हा।८। म्हणोनि आपणपां विश्व देखिजे। आणि आपण विश्व होइजे। ऐसें साम्यचि एक उपासिजे। पांडवा गा।९। हें तूतें बहुतीं प्रसंगीं। आम्ही म्हणों याचिलागीं। जे साम्यापरौती जगीं। प्राप्ति नाहीं।४१०।

अर्जुन उवाच– योऽयं योगस्त्वया प्रोक्तः साम्येन मधुसूदन।
एतस्याहं पश्यामि चंचलत्वात्स्थितिं स्थिराम्।३३।
चंचलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम्।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम्।३४।

तंव अर्जुन म्हणे देवा। तुम्ही सांगा कीर आमुचिया कणवा। परी न पुरो जी स्वभावा। मनाचिया।११। हें मन कैसें केवढें। ऐसें पाहो म्हणों तरी न सांपडे। येऱ्हवीं राहटावया थोडें। त्रैलोक्य यया।१२। म्हणोनि ऐसें कैसे घडेल। जें मर्कट समाधी येईल। कां राहा म्हणितलिया राहेल। महावात।१३। जें बुद्धीतें सळी। निश्चयातें टाळी। धैर्येसीं हातफळी। मिळऊनि जाय।१४। जें विवेकातें भुलवी। संतोषासी चाड लावी। बैसिजे तरी हिंडवी। दाही दिशा।१५। जें निरोधलें घे उवावो। जया संयमचि होय सावावो। तें मन आपुला स्वभावो। सांडील काई।१६। म्हणोनि मन एक निश्चळ राहेल। मग आम्हासि साम्य होईल। हें विशेषेंही न घडेल। याचिलागीं।१७।

श्रीभगवानुवाच– असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम्।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते।३५।

तंव श्रीकृष्ण म्हणती साचचि। बोलत आहासि तें तैसेचि। यया मनाचा कीर चपळचि। स्वभावो गा।१८। परी वैराग्याचेनि आधारें। जरी लाविलें अभ्यासाचिये मोहरें। तरी केतुलेनि एके अवसरें। स्थिरावेल।१९। कां जें यया मनाचें एक निकें। जें देखिलें गोडीचिया ठाया सोके। म्हणोनि अनुभवसुखचि कवतिकें। दावीत जाइजे।४२०।

असंयतात्मना योगो दुष्प्राप इति मे मतिः।
वश्यात्मना तु यतता शक्योऽवाप्तुमुपायतः।३६।

येऱ्हवीं विरक्ति जयासीं नाहीं। जें अभ्यासीं न रिघती कंहीं। तयां नाकळे हें आम्हीही। न मनूं कायी।२१। परी यमनियमांचिया वाटा न वचिजे। कंहीं वैराग्याची से न करिजे। केवळ विषयजळीं ठाकिजे। बुडी देऊन।२२। यया जालिया मानसा कंहीं। युक्तीची कांबी लागली नाहीं। तरी निश्चळ होईल काई। कैसेनि सांगें।२३। म्हणोनि मनाचा निग्रह होये। ऐसा उपाय जो आहे। तो आरंभी मग नोहे। कैसा पाहों।२४। तरी योगसाधन जितुकें। तें अवघेचि काय लटिकें। परि आपणयां अभ्यासें न टके। हेचि म्हणें।२५। आंगीं योगाचे होय बळ। तरी मन केतुलें चपळ। काय महदादि हें सकळ। आपु नोहे।२६। तेथ अर्जुन म्हणे निकें। देवो बोलती तें न चुके। साचचि योगबळेंसीं न तुके। मनोबळ।२७। तरि तोच योग कैसा केविं जाणो। आम्ही येतुले दिवस याची मातुही नेणो। म्हणोनि मनाते जी म्हणों। अनावर।२८। हा आतां आघवेया जन्मा। तुझेनि प्रसादें पुरुषोत्तमा। योगपरिचय आम्हां। जाहला आजी।२९।

अर्जुन उवाच– अयतिः श्रद्धयोपेतो योगाच्चलितमानसः।
अप्राप्य योगसंसिद्धिं कां गतिं कृष्ण गच्छति।३७।
कच्चिन्नोभयविभ्रष्टश्छिन्नाभ्रमिव नश्यति।
अप्रतिष्ठो महाबाहो विमूढो ब्रह्मणः पथि।३८।
एतन्मे संशयं कृष्ण छेत्तुमर्हस्यशेषतः।
त्वदन्यः संशयस्यास्य छेत्ता न ह्युपपद्यते।३९।

परी आणीक एक गोसांविया। मज संशय असे साविया। तो तूंवांचूनि फेडावया। समर्थ नाहीं।४३०। म्हणोनि सांगें श्रीगोविंदा। कवण एक मोक्षपदा। झोंबत होता श्रद्धा। उपायेंविण।३१। इंद्रियग्रामोनि निगाला। अस्थेचिये वाटा लागला। आत्मसिद्धीचिया पुढिला। नगरा यावया।३२। तंव आत्मसिद्धि न ठकेचि। आणि मागुतें न येववेचि। ऐसा अस्तु गेला माझारींचि। आयुष्यभानु।३३। जैसें अकाळीं आभाळ। अळुमाळ सपातळ। विपायें आलें केवळ। वसे ना वर्षे।३४। तैसीं दोन्ही दुरावलीं। जे प्राप्ती तंव अलग ठेली। आणि अप्राप्तिही सांडवली। श्रद्धा तया।३५। ऐसा दोहोला अंतरला कां जी। जो श्रद्धेच्या समाजीं। बुडाला तया हो जी। कवण गति।३६।

श्रीभगवानुवाच– पार्थ नैवेह नामुत्र विनाशस्तस्य विद्यते।
न हि कल्याणकृत्कश्चिद्दुर्गतिं तात गच्छति।४०।

तंव श्रीकृष्ण म्हणती पार्था। जया मोक्षसुखीं आस्था। तया मोक्षावाचूनि अन्यथा। गति आहे गा।३७। परी एतुलें हेंचि एक घडे। जें माझारीं विसावावें पडे। तेंहीं परी ऐसेनि सुरवाडें। जो देवां नाहीं।३८। येऱ्हवीं अभ्यासाचा उचलता। पाउलीं जरी चालता। तरी दिवसा आधीं ठाकता। सोहंसिद्धीतें।३९। परी तेतुला वेग नव्हेचि। म्हणऊनि विसावा तरी निकाचि। पाठीं मोक्ष तंव तैसाचि। ठेविला असे।४४०।

प्राप्य पुण्यकृतॉल्लोकानुषित्वा शाश्वतीः समाः।
शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते।४१।

ऐकें कवतिक हें कैसें। जे शतमखा लोक सायासें। ते तो पावे अनायासें। कैवल्यकाम।४१। मग तेथिंचे जे अमोघ। अलौकिक भोग। भोगितांही सांग। कांटाळे मन।४२। हा अंतराय अवचितां। कां वोढवला श्रीभगवंता। दिविभोग भोगितां। अनुतापी नित्य।४३। पाठीं जन्मे संसारी। परी सकळ धर्मांचिया माहेरी। लांबा उगवे आगरीं। विभवश्रियेचा।४४। जयातें नीतिपंथें चालिजे। सत्यधूत बोलिजे। देखावें तें देखिजे। शास्त्रदृष्टी।४५। वेद तो जागेश्वरू। जया व्यवसाय निजाचारु। सारासार विचारु। मंत्री जया।४६। जयाच्या कुळीं चिंता। जाली ईश्वराची पतिव्रता। जयातें गृहदेवता। आदि ऋद्धि।४७। ऐसी निजपुण्याची जोडी। वाढिन्नली सर्वसुखाची कुळवाडी। तिये जन्मे तो सुरवाडी। योगच्युत।४८।

अथवा योगिनामेव कुले भवति धीमताम्।
एतद्धि दुर्लभतरं लोके जन्म यदीदृशम्।४२।
तत्र तं बुद्धिसंयोगं लभते पौर्वदेहिकम्।
यतते च ततो भूयः संसिद्धौ कुरुनन्दन।४३।

अथवा ज्ञानाग्निहोत्री। जे परब्रह्मश्रोत्री। महासुखक्षेत्रीं। आदिवंत।४६। जे सिद्धांताचिया सिंहासनीं। राज्य करिती त्रिभुवनीं। जे कूजती कोकिल वनीं। संतोषाच्या।४५०। जे विवेकद्रुमाचे मुळीं। बैसले आहाती नित्य फळीं। तयां योगियांचिया कुळीं। जन्म पावें।५१। मोटकी देहाकृति उमटे। आणि निजज्ञानाची पाहांट फुटे। सूर्यापुढें प्रगटे। प्रकाश जैसा।५२। तैसी दशेची वाट न पाहतां। वयसेचिया गावां न येता। बाळपणीच सर्वज्ञता। वरी तयातें।५३। तिये सिद्धप्रज्ञेचेनि लाभें। मनचि सारस्वतें दुभे। मग सकल शास्त्रें स्वयंभें। निघती मुखें।५४। ऐसें जें जन्म। जयालागीं देव सकाम। स्वर्गीं ठेले जप होम। करिती सदा।५५। अमरीं भाट होईजे। मग मृत्युलोकातें वानिजें। ऐसें जन्म पार्था गा जें। तें तो पावे।५६।

पूर्वाभ्यासेन तेनैव ह्रियते ह्यवशोऽपि सः।
जिज्ञासुरपि योगस्य शब्दब्रह्मातिवर्तते।४४।

आणि मागील जे सद्‌बुद्धि। जेथ जीवित्वा जाहाली होती अवधि। मग तेचि पुढती निरवधि। नवी लाहे।५७। तेथ सदैवा आणि पायाळा। वरी दिव्यांजन होय डोळां। मग देखे जैसी अवलीळा। पाताळधनें।५८। तैसे दुर्भेद जे अभिप्राय। कां गुरुगम्य हन ठाय। तेथ संसरेवीण जाय। बुद्धि तयाची।५९। बळियें इंद्रियें येती मना। मन एकवटे पवना। पवन सहजें गगना। मिळोंचि लागे।४६०। ऐसें नेणो काय आपैसें। तयातेंचि कीजे अभ्यासें। समाधि घर पुसे। मानसाचें।६१। जाणिजे योगपीठींचा भैरव। काय हा आरंभभरेचा गौरव। कीं वैराग्यसिद्धीचा अनुभव। रूपा आला।६२। हा संसार उमाणितें माप। कां अष्टांगसामग्रीचे द्वीप। जैसें परिमळेंचि धरिजे रूप। चंदनाचें।६३। तैसा संतोषाचा काय घडिला। कीं सिद्धिभांडारींहुनि काढिला। दिसे तेणेंमानें रूढला। साधकदशे।६४।

प्रयत्नाद्यतमानस्तु योगी संशुद्धकिल्बिषः।
अनेकजन्मसंसिद्धस्ततो याति परां गतिम्।४५।

जे वर्षशतांचिया कोडी। जन्मसहस्रांचिया आडी। लंधितां पातला थडी। आत्मसिद्धीची।६५। म्हणोनि साधनजात आघवें। अनुसरे तया स्वभावें। मग आयतिये बैसे राणिवे। विवेकाचिये।६६। पाठी विचारितया वेगां। तो विवेकही ठाके मागां। मग अविचारणीय ते आंगा। घडोनि जाय।६७। तेथ मनाचें मेहुडें विरे। पवनाचे पवनपण सरे। आपणपां आपण मुरे। आकाशही।६८। प्रणवाचा माथा बुडे। येतुलेनि अनिर्वाच्य सुख जोडे। म्हणोनि आधींचि बोल बहुडे। तयालागीं।६९। ऐसी ब्रह्मींची स्थिती। जे सकळा गतींसी गती। तया अमूर्तीची मूर्ती। होऊन ठाके।४७०। तेणें बहुतीं जन्मीं मागिलीं। विक्षेपांची पाणिवळें झाडिलीं। म्हणोनि उपजतखेवो बुडाली। लग्नघटिका।७१। आणि तद्रूपतेसीं सुलग्न। लागोनि ठेलें अभिन्न। जैसें लोपले अभ्र गगन। होऊनि ठाके।७२। तैसें विश्व जेथ होये। मागौतें जेथ लया जाये। तें विद्यमानेंचि देहें। जाहाल तो गा।७३।

तपस्विभ्योऽधिको योगी ज्ञानिभ्योऽपि मतोऽधिकः।
कर्मिश्चाऽधिको योगी तस्माद्योगी भवाऽर्जुन।४६।

जया लाभाचिया आशा। करूनि धैर्यबाहूचा भरंवसा। घालीत षट्‌कर्मांचा धारसां। कर्मनिष्ठ।७४। कां जिये एक वस्तुलागीं। बाणोनि ज्ञानाची वज्रांगी। जुंझत प्रपंचेसीं समरंगीं। ज्ञानिये गा।७५। अथवा निलागें निसरडा। तपोदुर्गाचा आडकडा। झोंबतीं तपिये चाडा। जयाचिया।७६। जें भजतिया भज्य। याज्ञिकांचे याज्य। एवं जें पूज्य। सकळां सदा।७७। तेंचि तो आपण। स्वयं जाहाला निर्वाण। जे साधकांचे कारण। सिद्ध तत्त्व।७८। म्हणोनि कर्मनिष्ठां वंद्य। तो ज्ञानियांसि वेद्य। तापसांचा आद्य। तपोनाथ।७९। पैं जीवपरमात्मासंगमा। जयाचे येणे जाहालें मनोधर्मा। तो शरीरीची परी महिमा। ऐसी पावे।४८०। म्हणोनि याकारणें। तूतें मी सदा म्हणे। योगी होई अंतःकरणें। पंडुकुमरा।८१।

योगिनामपि सर्वेषां मद्‌गतेनान्तरात्मना।
श्रद्धावान्भजते यो मां स मे युक्ततमो मतः।४७।

। इति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे अभ्यासयोगो नाम षष्ठोऽध्यायः।

अगा योगी जो म्हणिजे। तो देवाचा देव जाणिजे। आणि सुखसर्वस्व माझें। चैतन्य तो।८२। तेथ भजता भजन भजावें। हें भक्तिसाधन जें आघवें। तो मीचि जाहालों अनुभवें। अखंडित।८३। मग तया आम्हां प्रीतीचे। स्वरूप बोलीं निर्वचे। ऐसें नव्हे गा तो साचें। सुभद्रापती।८४। तया एकवटलिया प्रेमा। जरी पाडें पाहिजे उपमा। तरी मी देह तो आत्मा। हेचि होय।८५। ऐसें भक्तचकोरचंद्रे। बोलिलें गुणसमुद्रें। त्रिभुवनैकनरेंद्रें। संजय म्हणे।८६। तेथ आदिपासूनि पार्था। ऐकिजे ऐसीचि आस्था। दुणावली हें यदुनाथा। भावों सरलें।८७। कीं सावियाचि मनीं संतोषला। जे बोला आरिसा जोडला। तेणें हरिखें आतां उपलवला। निरूपील।८८। तो प्रसंग आहे फुडां। जेथ शांत दिसेल उघडा। तो पालविजेल मुडा। प्रमेयबीजाचा।८९। जे सात्विकाचेनि वडपें। गेलें आध्यात्मिक खरपें। सहजे निडारले वाफे। चतुरचित्ताचे।४९०। वरी अवधानाचा वाफसा। लाधला सोनयाऐसा। म्हणोनि पेरावया धिंवसा। श्रीनिवृत्तीसी।९१। ज्ञानदेव म्हणे मी चाडें। सद्गुरूंनी केलें कोडें। माथां हात ठेविला तें फुडें। बीजचि वाइलें।९२। म्हणऊनि येणें मुखें जें जें निगे। तें संतांच्या हृदयीं साचेंचि लागे। हें असो सांगे श्रीरंगे। बोलिलें जें।९३। परी तें मनाच्या कानीं ऐकावें। बोल बुद्धीच्या डोळां देखावें। हे साटोवाटीं आघवें। चित्ताचिया।९४। अवधानाचेनि हातें। नेयावें हृदयाआंतौतें। हें रिझवील आयणीतें। सज्जनांचिये।९५। हें स्वहितातें निववितीं। परिणामातें जीववितीं। सुखाची वाहती। लाखोली जीवां।९६। आतां अर्जुनेंसीं श्रीमुकुंदें। नागर बोलिजेल विनोदें। तें वोंवियेचेनि प्रबंधें। सांगेन मी।४९७।

। इति श्रीज्ञानदेवकृतायां भावार्थदीपिकायां षष्ठोऽध्यायः।

श्लोक ४७, ओव्या ४९७.

ज्ञानेश्वरीः अध्याय सातवा–ज्ञानविज्ञानयोग

श्रीभगवानुवाच– मय्यासक्तमनाः पार्थ योगं युंजन्मदाश्रयः।
असंशयं समग्रं मां यथा ज्ञास्यसि तच्छृणु।१।
ज्ञानं तेऽहं सविज्ञानमिदं वक्ष्याम्यशेषतः।
यज्ज्ञात्वा नेह भूयोऽन्यज्ज्ञातव्यमवशिष्यते।२।

आइका मग तो श्रीअनंत। पार्थातें असे म्हणत। पैं गा तूं योगयुक्त। जालासि आतां।१। मज समग्राते जाणसी ऐसें। आपलिया तळहातींचें रत्न जैसें। तुज ज्ञान सांगेन तैसें। विज्ञानेंसी।२। एथ विज्ञानें काय करावें। ऐसें घेसी जरी मनोभावें। तरी पै आधीं जाणावें। तेंचि लागे।३। मग ज्ञानाचिये वेळे। झांकती जाणिवेचे डोळे। जैसी तीरीं नाव न ढळे। टेंकलीसांती।४। तैसी जाणीव जेथ न रिगे। विचार मागुतापाउलीं निघे। तर्क आयणी नेघे। आंगीं जयाच्या।५। अर्जुना तया नांव ज्ञान। येर प्रपंच हे विज्ञान। तेथ सत्यबुद्धि तें अज्ञान। हेंहि जाण।६। आतां अज्ञान अवघें हारपे। विज्ञान निःशेष करपे। आणि ज्ञान तें स्वरूपें। होऊनि जाइजे।७। जेणें सांगयताचें बोलणें खुंटे। ऐकतयाचें व्यसन तुटे। हें जाणणें सानें मोठें। उरों नेदी।८। ऐसें वर्म जें गूढ। तें किजेल वाक्यारूढ। जेणे थोडेनि पुरे कोड। बहुत मनींचें।९।

मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये।
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः।३।

पैं गा मनुष्यांचिया सहस्रशाः। माजि विपाइलेचिया येथ धिंवसा। तैसें या धिंवसेकरां बहुवसांः। माजि विरळा जाणे।१०। जैसा भरलेला त्रिभुवनाः। आंत एक एक चांग अर्जुना। निवडूनि कीजे सेना। लक्षवरी।११। कीं तयाहीपाठीं। जें वेळीं लोह मांसातें घांटी। ते वेळीं विजयश्रियेच्या पाटीं। एकचि बैसे।१२। तैसे आस्थेच्या महापुरीं। रिघताती कोटीवरी। परी प्राप्तीच्या पैलतीरीं। विपाइला निगे।१३। म्हणऊनि सामान्य गा नोहे। हें सांगतां वडिल गोठि गा आहे। परी तें बोलो येईल पाहें। आतां प्रस्तुत ऐकें।१४।

भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च।
अहंकार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा।४।

तरी अवधारीं गा धनंजया। हे महदादिक माझी माया। जैसी प्रतिबिंबे छाया। निजांगाची।१५। आणि इयेतें प्रकृति म्हणिजे। जे अष्टधा भिन्न जाणिजे। लोकत्रय निफजे इयेस्तव।१६। हे अष्टधा भिन्न कैसी। ऐसा ध्वनि धरिसी जरी मानसीं। तरी तेचि गा आतां परियेसीं। विवंचना।१७। आप तेज गगन। मही मारुत मन। बुद्धि अहंकार हे भिन्न। आठै भाग।१८।

अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मे पराम्।
जीवभूतां महाबाहो ययेदं धार्यते जगत्।५।

या आठांची जे साम्यावस्था। ते माझी परम प्रकृति पार्था। तिये नाम व्यवस्था। जीव ऐसी।१९। जें जडातें जीववी। चेतनेतें चेतवी। मनाकरवीं मानवी। शोक मोहो।२०। पैं बुद्धीच्या अंगीं जाणणें। तें जिये जवळिकेचें करणें। जिया अहंकाराचे विंदाणें। जगचि धरिजे।२१।

एतद्योनीनि भूतानि सर्वाणीत्युपधारय।
अहं कृत्स्नस्य जगतः प्रभवः प्रलयस्तथा।६।

ते सूक्ष्म प्रकृति कोडें। जैं स्थूलाचिया आंगा घडे। तैं भूतसृष्टीची पडे। टांकसाळ।२२। चतुर्विध ठसा। उमटों लागे आपैसा। मोला तरी सरिसा। परी थरचि आनान।२३। होती चौऱ्यासीं लक्ष थरा। येरा मिती नेणिजे भांडारा। भरे आदिशून्याचा गाभारा। नाणेयांसी।२४। ऐसें एकतुकें पांचभौतिक। पडती बहुवस टांक। मग तिये समृद्धीचे लेख। प्रकृतीचि धरी।२५। जें आखूनि नाणे विस्तारी। पाठीं तयाची आटणी करी। माजी कर्माकर्माचिया व्यवहारीं। प्रवर्तु दावी।२६। हें रूपक परी

असो। सांगों उघड जैसें ये परियेसों। तरी नामरूपाचा अतिसो। प्रकृतीच कीजे।२७। आणि प्रकृति तंव माझ्या ठायीं। बिंबे येथ आन नाहीं। म्हणोनि आदि मध्य अवसान पाहीं। जगासि मीं।२८।

मत्तः परतरं नान्यत्किंचिदस्ति धनंजय।
मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव।७।

हे रोहिणीचें जळ। तयाचें पाहातां येइजे मूळ। तैं रश्मि नव्हती केवळ। होय तें भानु।२९। तयाचिपरी किरीटी। इया प्रकृती जालिये सृष्टी। जैं उपसंहरूनि कीजेल ठी। तैं मीचि आहे।३०। ऐसें होय दिसे न दिसे। हें मजचिमाजी असे। मियां विश्व धरिजे। जैंसें सूत्रें मणि।३१। सुवर्णाचे मणी केले। तें सोनियाचे सुतीं वोंविले। तैसे म्यां जग धरिलें। सबाह्याभ्यंतरी।३२।

रसोऽहमप्सु कौन्तेय प्रभास्मि शशिसूर्ययोः।
प्रणवः सर्ववेदेषु शब्दः खे पौरुषं नृषु।८।
पुण्यो गंधः पृथिव्यां च तेजश्चास्मि विभावसौ।
जीवनं सर्वभूतेषु तपश्चास्मि तपस्विषु।९।

म्हणोनि उदकीं रस। कां पवनीं जो स्पर्श। शशिसूर्यी जो प्रकाश। तो मीचि जाण।३३। तैसाचि नैसर्गिक शुद्ध। मी पृथ्वीच्या ठायीं गंध। गगनीं मी शब्द। वेदीं प्रणव।३४। नराच्या ठायीं नरत्व। जें अहंभाविये सत्व। ते पौरुष मी हे तत्व। बोलिजत असे।३५। अग्नि ऐसे अहाच। तेजीं नामाचें आहे कवच। तें परतें केलिया साच। निजतेज तें मी।३६। आणि नानाविध योनी। जन्मोनी भूतें त्रिभुवनीं। वर्तत आहाती जीवनीं। आपुलाल्या।३७। ऐके पवनचि पिती। एकें तृणास्तव जिती। एकें अन्नाधारें राहती। जळें एकें।३८। ऐसें भूतप्रति आनान। जें प्रकृतिवशें दिसे जीवन। तें आघवाठायीं अभिन्न। मीचि एक।३९।

बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम्।
बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम्।१०।
बलं बलवतां चाहं कामरागविवर्जितम्।
धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ।११।

पैं आदिचेनि अवसरें। विरूढे गगनाचेनि अंकुरे। जें अंती गिळी अक्षरें। प्रणवपीठींची।४०। जंव हा विश्वाकार असे। तंव जे विश्वाचिसारिखें दिसे। मग महाप्रळयदशे। कैसेनि नव्हे।४१। ऐसें अनादि जें सहज। तें मी गा विश्वबीज। हें हातातळीं तुज। देइजत असे।४२। मग उघड करूनि पांडवा। जैं हें आणिसी सांख्याचिया गांवा। तैं ययाचा उपेग बरवा। देखसील।४३। परी हे अप्रासंगिक आलाप। आतां असतु बोलो संक्षेप। जाण तपियांच्या ठायीं तप। तें रूप माझे।४४। बळियांमाजी बळ। तें मी जाण अढळ। बुद्धिमंती केवळ। बुद्धि ते मी।४५। भूतांच्या ठायीं काम। तो मी म्हणे आत्माराम। जेणें अर्थास्तव धर्म। थोर होय।४६। येऱ्हवीं विकाराचेनि पैसें। करी कीरी इंद्रियांच्याचि ऐसें। परी धर्मासि वेखासें। जावो नेदी।४७। जो अप्रवृत्तीचा अव्हांटा। सांडूनि विधीचिया निघे वाटा। तेवींचि नियमाचा दिवटा। सवें चाले।४८। काम ऐशिया वोजा प्रवर्ते। म्हणोनि धर्मासि होय पुरते। मोक्षतीर्थीचे मुक्तें। संसार भोगी।४९। जो श्रुतिगौरवाच्या मांडवी। काम सृष्टीचा वेल वाढवी। जंव कर्मफळेसीं पालवी। अपवर्गी टेके।५०। ऐसा नियत का किदर्प। जो भूतां या बीजरूप। तो मी म्हणे बाप। योगियांचा।५१। हें एकेक किती सांगावें। आतां वस्तुजातचि आघवें। मजपासूनि जाणावें। विकारलें असे।५२।

ये चैव सात्विका भावा राजसास्तामसाश्च ये।
मत्त एवेति तान्विद्धि न त्वहं तेषु ते मयि।१२।

जे सात्विक हन भाव। कां रजतमादि सर्व। ते ममरूपसंभव। वोळखें तूं।५३। ते हे जाले तरी माझ्या ठायीं। परी तयांमाजी मी नाहीं। जैसीं स्वप्नींच्या डोहीं। जागृती न बुडे।५४। जैसी रसाचीच सुघट। बीजकर्णिका घनवट। परी तियेस्तव होय काष्ट। अंकुरद्वारें।५५। मग तया काष्टाच्या ठायीं। सांग पां बीजपण असे काई। तैसा मी विकारी नाहीं। जरी विकारला दिसें।५६। पैं गगनीं उपजे आभाळ। परी तेथ गगन नाहीं केवळ। अथवा आभाळीं होय सलिल। तेथ अभ्र नाहीं।५७। मग त्या

उदकाचेनि आवेशें। प्रगटलें तेज जें लखलखीत दिसे। तिये विजूमाजि असे। सलिल कायि।५८। सांगें अग्नीस्तव धूम होये। तिये धूमीं काय अग्नि आहे। तैसा विकार हा मी नोहे। जरी विकारला असे।५९।

त्रिभिर्गुणमयैर्भावैरेभिः सर्वमिदं जगत्।
मोहितं नाभिजानाति मामेभ्यः परमव्ययम्।१३।

परी उदकीं जाली बाबुळी। ते उदकातें जैसी झांकोळी। कां वायांचि आभाळीं। आकाश लोपे।६०। हां गा स्वप्न लटिकें म्हणों ये। परी निद्रावशे बाणलें होये। तंव आठव काय देत आहे। आपणपेयां।६१। हें असों डोळ्यांचें। डोळाचि पडळ रचे। तेणें देखणेपण डोळ्यांचे। न गिळिजे कायि।६२। तैसी हे माझीच बिंबली। त्रिगुणात्मक साउली। कीं मजचि आड वोडवली। जवनिका जैसी।६३। म्हणऊनि भूतें मातें नेणती। माझीच परी मी नव्हती। जैसी जळींची जळीं न विरती। मुक्ताफळें।६४। पैं पृथ्वीयेचा घट कीजे। सवेंचि पृथ्वीसी मिळे जरी मेळविजे। येऱ्हवीं तोचि अग्निसंगें सिजे। तरी वेगळा होय।६५। तैसें भूतजात सर्व। हे माझेचि कीर अवयव। परी मायायोगें जीव। दशे आले।६६। म्हणोनि माझेचि मी नव्हती। माझेचि मज नोळखती। अहंममताभ्रांती। विषया जाले।६७।

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माय दुरत्यया।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते।१४।

आतां महदादि हे माझी माया। उतरोनियां धनंजया। मी होइजे हें आया। कैसेनि ये।।६८। जिये ब्रह्माचळाचा आधाडां। पहिल्या संकल्पजळाचा उभडा। सवेंचि महाभूतांचा बुडबुडा। साना आला।६९। जे सृष्टिविस्ताराचेनि वोघें। चढत काळकलनेचेनि वेगें। प्रवृत्तिनिवृत्तीचीं तुंगे। तटें सांडी।७०। जे गुणघनाचेनि वृष्टिभरें। भरली मोहाचेनि महापुरें। घेऊनि जात नगरें। यमनियमांची।७१। जे द्वेषाच्या आवर्ती दाटत। मत्सराचे वळसे पडत। माजि प्रमादादि तळपत। महामीन।७२। जेथ प्रपंचाचीं वळणें। कर्माकर्माचीं वोभाणें। वरी तर्ताती वोसाणें। सुखदुःखांची।७३। रतीचिया बेटा। आदळति कामाचिया लाटा। जेथ जीवफेन संघाटा। सैंध दिसे।७४। अहंकाराचिया चळिया। वरी मदत्रयाचिया उकळिया। जेथ विषयोर्मीच्या आकळिया। उल्लाळ घेती।७५। उदयास्तांचे लोंढे। पाडित जन्ममरणांचे चोंढे। जेथ पांचभौतिक बुडबुडे। होती जाती।७६। संमोह विभ्रम मासे। गिळिताती धैर्याचीं आमिषें। तेथ देव्हडे भोंवत वळसे। अज्ञानाचे।७७। भ्रांतीचेनि खडुळें। रेवलें आस्थेचें अवगाळें। रजोगुणाचेनि खळाळें। स्वर्ग गाजे।७८। तमाचे धारसे वाड। सत्वाचे स्थिरपण जाड। किंबहुना हे दुवाड। मायानदी।७९। पैं पुनरावृत्तीचेनि उभडे। झळंवती सत्यलोकींचे हुडे। घायें गडबडती धोंडे। ब्रह्मगोळकाचे।८०। तया पाणियाचेनि वहिलेपणें। अझुनी न धरती वोभाणे। ऐसा मायापूर हा कवणें। तरिजेल गा।८१। येथ एक नवलावो। जो जो कीजे तरणोपावो। तो तो अपावो। होय तें ऐक।८२। एक स्वयंबुद्धीच्या बाहीं। रिगाले तयांची शुद्धीचि नाहीं। एक जाणिवेचे डोहीं। गर्वेंचि गिळिले।८३। एकीं वेदत्रयाचिया सांगडी। घेतल्या अहंभावाचिया धोंडी। ते मदमीनाच्या तोंडीं। सगळेचि गेले।८४। एकीं वयसेचें जाड बांधलें। मग मन्थाचिये कांसे लागले। ते विषयमगरीं सांडिले। चघळूनिया।८५। आतां वार्धक्याच्या तरंगाः। माजि मतिभ्रंशाचा जरंगा। तेणे कवळिजताति पैं गा। चहूंकडे।८६। आणि शोकाचा कडा उपडत। क्रोधाच्या आवर्ती दाटत। आपदागिधीं चुंबिजत। उधवलाठायीं।८७। मग दुःखाचेनि बरबटें बोबले। पाठीं मरणाचे रेंवे रेंवले। ऐसे कामाचे कांसे लागले। ते गेले वायां।८८। एकी यजनक्रियेची पेटी। बांधोनि घातली पोटीं। ते स्वर्गसुखाच्या कपाटीं। शिरकोनि ठेले।८९। एकीं मोक्षीं लागावयाचिया आशा। केला कर्मबाह्यांचा भरंवसा। परी ते पडिले वळसां। विधिनिषेधांच्या।९०। जेथ वैराग्याची नाव न रिगे। विविकेच्या तागा न लगे। वरि कांहीं तरों ये योगें। तरी विपाय तो।९१। ऐसे तरी जीवाचिये आंगवणें। इये मायानदीचे तरणें। हें कासयासारिखें बोलणें। म्हणावें पां।९२। जरी अपथ्यशीळा व्याधी। आंकळे साधूंसि दुर्जनाची बुद्धी। कीं रागी सांडी सिद्धी। आली सांती।९३। जरी चोरा सभा दाटे। अथवा मीना गळ घोटे। ना तरी भेडा उलटे। विवसी जरी।९४। पाडस वागुर करांडी। कां मुंगी मेरू वोलांडी। तरी मायेची पैलथडी। देखती जीव।९५। म्हणऊन गा पंडुसुता। जैसी सकामा न जिणवेचि वनिता। तेवीं मायामयीं हे सरिता। न तरवें जीवां।९६। येथ एकचि लीला तरले। जे सर्वभावें मज भजले। तयां ऐलीच थडी सरलें। मायाजळ।९७। जयां सद्गुरू तारू फुडें। जे अनुभवाचें कांसे गाढे। जयां आत्मनिवेदन तरांडे। आकळलें।९८। जे अहंभावाचे वोझें सांडुनी। विकल्पाचिया झुळका चुकाउनि। अनुरागाचा निरुता होउनि। पाणिढाळ।९९। जया ऐक्याचिया उतारा। बोधाचा जोडला तारा। मग निवृत्तीचिया पैलतीरा। झेंपावले जे।१००। ते उपरतीच्या वांवीं सेलत। सोहंभावाचेनि थावें पेलत। मग निघाले अनकळित। निवृत्तितटीं।१। येणें उपायें मज भजले। ते हे माझी माया तरले। परी ऐसे भक्त विपाइले। बहुवस नाहीं।२।

न मां दुष्कृतिनो मूढाः प्रपद्यन्ते नराधमाः।
माययापहृतज्ञाना आसुरं भावमाश्रिताः।१५।
चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन।
आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ।१६।

जे बहुतां एकां अवांतर। अहंकाराचा भूतसंचार। जाहाला म्हणोनि विसर। आत्मबोधाचा।३। तें वेळीं नियमाचें वस्त्र नाठवे। पुढील अधोगतीची लाज नेणवे। आणि करितात जें न करावें। वेद म्हणे।४। पाहें पां शरीराचिया गांवा। जयालागीं आले पांडवा। तो कार्यार्थ आघवा। सांडूनियां।५। इंद्रियग्रामींचे राजबिदीं। अहंममतेचिया जल्पवादी। विकारांतरांची मांदी। मेळवूनियां।६। दुःखशोकांच्या घाईं। मारिलियाची सेचि नाहीं। हें सांगावया कारण काई। जे ग्रासिले माया।७। म्हणोनि ते मातें चुकले। एक चतुर्विध मज भजले। जिहीं आत्महित केले। वाढतें गा।८। तो पहिला आर्त म्हणिजे। दुसरा जिज्ञासु बोलिजे। तिजा अर्थार्थी जाणिजे। ज्ञानिया चौथा।९।

तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते।
प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः।१७।

तेथ आर्त तो आर्तीचेनि व्याजें। जिज्ञासु तो जाणावयालागीं भजे। तिजेनि तेणें इच्छिजे। अर्थसिद्धि।११०। मग चौथियाच्या ठायीं। कांहींच करणें नाहीं। म्हणोनि भक्त एक पाहीं। ज्ञानिया जो।११। जे तया ज्ञानाचेनि प्रकाशे। फिटलें भेदाचे कवडसे। मग मीचि जाहला समरसें। आणि भक्तही तेवींचि।१२। परी आणिकांचिये दिठी नावेक। जैसा स्फटिकचि भासे उदक। तैसा ज्ञानी नव्हे कौतुक। सांगतां तो।१३। जैसा वारा कां गगनीं विरे। मग वारेपण वेगळे नुरे। तेवीं भक्त हे पैज न सरे। जरी ऐक्या आला।१४। जरी पवन हालवूनि पाहिजे। तरी गगनावेगळा देखिजे। येऱ्हवीं गगन तों सहजें। असे जैसें।१५। तैसें शरीरी हन कर्में। तो भक्त ऐसा गमे। परी अंतरप्रतीतिधर्में। मीचि जाला।१६। आणि ज्ञानाचेनि उजिडलेपणें। मी आत्मा ऐसें तो जाणे। म्हणऊनि मीही तैसेचि म्हणें। उचंबळलासांता।१७। हां गा जीवापैलीकडिली खुणे। जो पावोनि वावरों जाणे। तो देहाचेनि वेगळेपणे। काय वेगळा होय।१८।

उदारा सर्व एवैते ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम्।
आस्थितः स हि युक्तात्मा मामेवानुत्तमां गतिम्।१८।

म्हणोनि आपुलाल्या हिताचेनि लोभें। मज आवडे तोही भक्त झोंबे। परी मीचि करी वालभें। ऐसा ज्ञानिया एक।१९। पाहें पां दुभतेयाचिया आशा। जग धेनूसि करीतसे फांसा। परी दोरेवीण कैसा। वत्सा चाबळी।१२०। कां जे तनुमनप्राणे। तें आणिक कांहींचि नेणें। देखतसांते म्हणें। हे माय माझी।२१। तें येणेंमानें अनन्यगती। म्हणऊनि धेनूही तैसीचि प्रीती। तयालागीं लक्ष्मीपती। बोलिले साचें।२२। हें असो मग म्हणितलें। जे कां तुज सांगितले। तेहो भक्त भले। पढियंते आम्हां।२३। परी जाणोनिया मातें। जे पाहीं विसरले माघौतें। जैसें सागरा येऊनि सरिते। मुरडावें ठेलें।२४। तैसी अंतःकरणकुहरीं जन्मली। जयाची प्रतीतिगंगा मज मीनली। तो मी हे काय बोली। फार करूं।२५। येऱ्हवीं ज्ञानिया जो म्हणिजे। तो चैतन्यचि केवळ माझे। हें न म्हणावें परी काय कीजे। न बोलणें बोलों।२६।

बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते।
वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः।१९।

जे तो विषयाची मोठी झाडी। माजि कामक्रोधां सांकडीं। चुकवूनि आला पाडी। सद्वासनेचिया।२७। मग साधुसंगें सुभटा। उजू सत्कर्माचिया वाटा। अप्रवृत्तीचा अव्हांटा। डावलूनी।२८। आणि जन्मशतांचा वाहतवणा। तेवीं आस्थेचिया न लेचि वाहणा। तेथ फळहेतूचा उगाणा। कवण चाळी।२९। ऐसा शरीरसंयोगाचिये राती। माजि धावतां सडिया आयती। तंव कर्मक्षयाची पाहाती। पाहांट जाली।१३०। तैसीच गुरुकृपा उखा उजळली। ज्ञानाची वोतपली पडली। तेथ साम्याची ऋद्धि उघडली। तयाचिये दृष्टी।३१। तें वेळीं जयाकडे वास पाहे। तेउता मीचि तया एक आहे। अथवा निवांत जरी राहे। तरी मीचि तया।३२। हें असो आणिक काहीं। तया सर्वत्र मीवांचूनि नाहीं। जैसें सबाह्य जळ डोहीं। बुडालिया घटा।३३। तैसा जो मजभीतरी। मी तया आंतबाहेरी। हें सांगिजेल बोलवरी। तैसे नव्हे।३४। म्हणोनि असो हें इयापरी। तो देखे ज्ञानाची बाखारी। तेणें संसरलेनि करी। आप विश्व।३५। हें समस्तही वासुदेव। ऐसा प्रतीतिरसाचा वोतला भाव। म्हणोनि भक्तांमाजी राव।

आणि ज्ञानिया तोचि ।३६। जयाचिये प्रतीतीच्या वाखारां। पवाड होय चराचरा। तो महात्मा धनुर्धरा। दुर्लभ आथी ।३७। येर बहुत जोडती किरीटी। जयांची भजनें भोगासाठीं। जे आशातिमिरें दृष्टी। मंद जाले ।३८।

कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाः प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः।
तं तं नियममास्थाय प्रकृत्या नियताः स्वया ।२०।

आणि फळाचिया हांवा। हृदयीं कामा झाला रिगावा। कीं तयाचिये घसणी दिवा। ज्ञानाचा गेला ।३६। ऐसे उभयतां आंधारीं पडले। म्हणोनि पासींचि मातें चुकले। मग सर्वभावें अनुसरले। देवतांतरां ।१४०। आधींच प्रकृतीचे पाइक वरी। भोगालागीं तंव रंक। मग तेणें लोलुपत्वें कौतुक। कैसेनि भजती ।४१। कवणी तिया नियमबुद्धि। कैसिया हन उपचारसमृद्धि। कां अर्पण यथाविधि। विहित करणें ।४२।

यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति।
तस्य तस्याऽचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम् ।२१।

पैं जो जिये देवतांतरीं। भजावयाची चाड करी। तयाची ते चाड पुरी। पुरविता मी ।४३। देवोदेवीं मीचि पाहीं। हाही निश्चय त्यासी नाहीं। भाव ते ते ठायीं। वेगळाला धरी ।४४।

स तया श्रद्धया युक्तस्तस्याराधनमीहते।
लभते च ततः कामान्मयैव विहितान्हि तान् ।२२।

मग तिया श्रद्धायुक्त। तेथिंचे आराधना जे उचित। तें सिद्धिवरी समस्त। वर्तों लागे ।४५। ऐसें जेणें जें भाविजे। तें फळ तेणें पाविजे। परी तेंही सकळ निपजे। मजचिस्तव ।४६।

अंतवत्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम्।
देवान्देवयजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति मामपि ।२३।

परी ते भक्त मातें नेणती। जे कल्पनेबाहेरी न निघती। म्हणोनि कल्पित फळा पावती। अंतवंत ।४७। किंबहुना ऐसें भजन। तें संसाराचेचि साधन। येर फळभोग तो स्वप्न। नावभरी दिसे ।४८। हें असो परौतें। मग हो कां आवडतें। परी यजी जो देवतांतें। तो देवत्वासीचि ये ।४६। येर तनुमनप्राणीं। जे अनुसरले माझेयाचि वाहणीं। ते देहाच्या निर्वाणीं। मीचि होती ।१५०।

अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामबुद्धया।
परं भावमजानन्तो ममाव्ययमनुत्तमम् ।२४।

परी तैसें न करिता प्राणिये। वांयां आपल्या हितीं वाणिये। जे पोहताती पाणियें। तळहातिंचेनि ।५१। नाना अमृताच्या सागरीं बुडिजे। मग तोंडा कां वज्रमिठी पाडिजे। आणि मनीं तरी आठविजे। थिल्लरोदकातें ।५२। हें ऐसें कासया करावें। जें अमृतींहीं रिगोनि मरावें। तें सुखें अमृत होऊनि कां नसावें। अमृतामाजी ।५३। तैसा फळहेतूचा पांजरा। सांडूनिया धनुर्धरा। कां प्रतीतिपाखीं चिदंबरा। गोसाविया नोहावें ।५४। जेथ उंचावलेनि पवाडें। सुखाचा पैसार जोडे। आपुलेनि सुरवाडें। उडों ये ऐसा ।५५। तया उमपा माप कां सुवावें। मज अव्यक्ता व्यक्त कां मानावें। सिद्ध असतां कां निमावें। साधनवरी ।५६। परी हा बोल आघवा। जरी विचारिजतसे पांडवा। तरी विशेषें या जीवा। न चोजवे गा ।५७।

नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः।
मूढोऽयं नाभिजानाति लोको मामजमव्ययम् ।२५।

कां जे योगमायापडळें। हे जाले आहाती आंधळे। म्हणोनि प्रकाशाचेनि देहबळें। न देखती मातें ।५८। येऱ्हवीं मी नसे ऐसें। काय वस्तुजात असे। पाहें पां लवण जळरसें। रहित आहे ।५६। पवन कवणातें न शिवेचि। आकाश कें न समायेचि। हें असो एक मीचि। विश्वीं आहें ।१६०।

वेदाहं समतीतानि वर्तमानानि चाऽर्जुन।
भविष्याणि च भूतानि मां तु वेद न कश्चन ।२६।

येथें भूतें जियें अतीतलीं। तियें मीचि होऊनि ठेलीं। आणि वर्तत आहाति जेतुली। तींही मीचि।६१। कां भविष्यमाणें जियें हीं। तींही मजवेगळी नाहीं। हा बोलचि ये-हवीं कांहीं। होय ना जाय।६२। दोराचिया सापासी। डोंबा बडिया ऐसी। संख्या न करवे कोण्हासी। तेवीं भूतांसि मिथ्यत्वें।६३। ऐसा मी पंडुसुता। अनुस्यूत सदा असतां। या संसार जो भूतां। तो आनें बोलें।६४। तरी तेचि आतां थोडीसी। गोठी सांगिजेल परियेसी। जेथ अहंकारतनूंसी। वालभ पडिलें।६५।

इच्छाद्वेषसमुत्थेन द्वन्द्वमोहेन भारत।
सर्वभूतानि संमोहं सर्गे यान्ति परंतप।२७।

तेथ इच्छा हे कुमारी जाली। मग ते कामाचिया तारुण्या आली। तेथ द्वेषेंसीं मांडिली। वराडिक।६६। तया दोघांस्तव जन्मला। ऐसा द्वंद्वमोह जाला। मग तो आजेयानें वाढविला। अहंकारें।६७। तो धृतीसि सदा प्रतिकूळ। नियमाही नागवे स्थूळ। आशारसें दोंदिल। जालासांता।६८। असंतुष्टचिया मदिरा। मत्त होवोनि धनुर्धरा। विषयाचे वोवरां। विकृतीसीं असे।६९। तेणें भावशुद्धीचिया वाटे। विखुरले विकल्पाचे कांटे। मग चिरिले अव्हांटे। अप्रवृत्तीचे।१७०। तेणें भूतें भांबावलीं। म्हणोनि संसाराचिया आडवामाजि पडिलीं। मग महादुःखाच्या घेतलीं। वोझेंवरी।७१।

येषां त्वन्तगतं पापं जनानां पुण्यकर्मणाम्।
ते द्वन्द्वमोहनिर्मुक्ता भजन्ते मां दृढव्रताः।२८।

ऐसे विकल्पाचे वायाणें। कांटे देखोनि सिसाणे। जे मतिभ्रमाचे पासावणें। घेतीचिना।७२। उजू एकनिष्ठेंच्या पाउलीं। रगडूनि विकल्पाचिया भाली। महापातकांची सांडिली। अटवी जिहीं।७३। मग पुण्याचे धावा घेतले। आणि माझी जवळीक पावले। किंबहुना ते चुकले। वाटवधेयां।७४।

जरामरणमोक्षाय मामाश्रित्य यतन्ति ये।
ते ब्रह्मतद्विदुः कृत्स्नमध्यात्मं कर्म चाऽखिलम्।२९।

ये-हवीं तरी पार्था। जन्ममरणाची निमे कथा। ऐसिया प्रयत्नातें आस्था। विये जयांची।७५। तयां तो प्रयत्नचि एके वेळे। मग समग्र परब्रह्म फळे। जया पिकलेया रस गळे। पूर्णतेचा।७६। तें वेळीं कृतकृत्यता जग भरे। तेथ अध्यात्माचें नवलपण पुरे। कर्माचे काम सरे। विरमे मन।७७। ऐसा अध्यात्मलाभ तया। होय गा धनंजया। भांडवल जया। उद्यमीं मी।७८। तयातें साम्याचिये वाढी। ऐक्याची सांदे कुळवाडी। तेथ भेदाचिया दुबळवाडी। नेणिजे तया।७९।

साधिभूताधिदैवं मां साधियज्ञं च ये विदुः।
प्रयाणकालेऽपि च मां ते विदुर्युक्तचेतसः।३०।

इति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ज्ञानविज्ञानयोगो नाम सप्तमोऽध्यायः।

जिहीं साधिभूता मातें। प्रतीतीचेनि हातें। धरूनि अधिदैवातें। शिवतले गा।१८०। जया जाणिवेचेनि वेगें। मी अधियज्ञ दृष्टि रिगे। ते तनूचेनि वियोगें। वि-हये नव्हती।८१। ये-हवीं आयुष्याचें सूत्र विघडतां। भूतांची उमटे खडाडता। काय न मरतयाहि चित्ता। युगांत नोहे।८२। परी नेणो कैसें पैं गा। जें जडोनि गेले माझिया आंगा। ते प्रयाणींचिया लगबगा। त सांडितीच मातें।८३। ये-हवीं तरी जाण। ऐसे जे निपुण। तेचि अंतःकरण-। युक्त योगी।८४। तंव इये शब्दकुपिकेतळीं। नोडवेचि अवधानाची अंजुळी। जे नावेक अर्जुन तये वेळीं। मागांचि होता।८५। जेथ तद्ब्रह्मवाक्यफळें। जियें नानार्थरसें रसाळें। बहकतें आहाति परिमळें। भावाचेनि।८६। सहज कृपामंदानिळें। श्रीकृष्णद्रुमाची वचनफळें। अर्जुनश्रवणाचिये खोळे। अवचित पडली।८७। तियें प्रमेयांची हो कां वळलीं। कीं ब्रह्मरसाच्या सागरीं चुबुकळिली। मग तैसींच का घोळिलीं। परमानंदें।८८। तेणें बरवेपणें निर्मळें। अर्जुना उन्मेषाचे डोहळे। घेताती गळाळे। विस्मयामृताचे।८९। तिया सुखसंपत्ती जोडलिया। मग स्वर्गा वाये वांकुलिया। हृदयाच्या जीवीं गुतकुलिया। हीत आहाती।१९०। ऐसें वरचिलीचि बरवा। सुख जावो लागलें फावा। तंव रसास्वादाचिया हांवा। लाहो केला।९१। झडकरी अनुमानाचेनि करतळें। घेऊनि तियें वाक्यफळें। प्रतीतिमुखीं एकेवेळें। घालू पाहे।९२। तंव विचाराचिया रसना न दाटती। परी हेतूच्या दशनीं न फुटती। ऐसें जाणोनि सुभद्रापती। चुंबीचिना।९३। मग चमत्कारला म्हणे। इये जळींचीं मा तारागणें। कैसा झकविलो असलागपणें। अक्षरांचेनि।९४। इयें पदें नव्हती फुडिया। गगनाचिया घडिया। येथ आमुची मती बुडालिया। थाव न निघे।९५। वांचूनि जाणावयाचि कें गोठी। ऐसें जीवीं कल्पूनि किरीटी। तिया पुनरपि केली दृष्टी। यादवेंद्रा।९६। मग विनविलें सुभटें। हां हो जी ये एकवाटे। सातही पदें अनुच्छिष्टें। नवलें आहाती।९७। ये-हवीं अवधानाचेनि वहिलेपणें।नाना प्रमेयांचे उगाणे। काय श्रवणाचेनि आंगवणे। बोलो राहती।९८। परी तैसें हें नोहेचि देवा। देखिला अक्षरांचा मेळावा। आणि विस्मयाचिया जीवा। विस्मयो जाला।९९। कानाचेनि गवाक्षद्वारें। बोलाचे रश्मी अभ्यंतरें।

पाहेना तंव चमत्कारें। अवधान ठाकलें।२००। तेवींचि अर्थाची चाड मज आहे। ते सांगताही वेळ न साहे। म्हणूनि निरूपण लवलाहे। कीजो देवा।१। असा मागील पडताळा घेउनी। पुढां अभिप्राय दृष्टी सूनी। तेवींचिमाजि शिरउनी। आर्ती आपुली।२। कैसी पुसती पाहें पां जाणिव। भिडेचि तरी लंघो नेदी शींव। येऱ्हवीं श्रीकृष्णहृदयासि खेंव। देवों सरला।३। अहो श्रीगुरूतें जैं पुसावें। तें येणेंमानें सावध व्हावें। हें एकचि जाणें आघवे। सव्यसाची।४। आतां तयाचें तें प्रश्न करणें। वरी सर्वज्ञ श्रीहरीचें बोलणें। हें संजयो आवडलेपणें। सांगेल कैसें।५। तिये अवधान द्यावे गोठी। बोलिजेल नीट मऱ्हाठी। जैसीं कानाचे आधी दृष्टी। उपेगा जाये।६। बुद्धीचिया जिभा। बोलाचा न चाखता गाभा। अक्षरांचिया भांवा। इंद्रियें जिती।७। पाहा पां मालतीचे कळे। घ्राणासि कीर वाटले परिमळें। परी वरचिया बरवा काइ डोळे। सुखिवे नव्हती।८। तैसें देशियेचिया हवावा। इंद्रियें करिती राणिवा। मग प्रमेयाचिया गांवा। लेसां जाइजे।९। ऐसेनि नागरपणें। बोल निमे तें बोलणें। ऐका ज्ञानदेव म्हणे। निवृत्तीचा।२१०।

इति श्रीज्ञानेश्वरविरचितायां भावार्थदीपिकायां सप्तमोऽध्यायः।। श्लोक ३०, ओव्या २१०.

अर्जुन उवाच– किं तद्ब्रह्म किमध्यात्मं किं कर्म पुरुषोत्तम।
अधिभूतं च किं प्रोक्तमधिदैवं किमुच्यते।१।

मग अर्जुने म्हणितलें। हां हो जी अवधारिलें। जें म्यां पुसिलें। तें निरूपिजे।१। सांगा कवण तें ब्रह्म। कायसया नाम कर्म। अथवा अध्यात्म। काय म्हणिचे।२। अधिभूत तें कैसें। एथ अधिदैवत तें कवण असे। हें उघड मी परियेसें। ऐसें बोला।३।

अधियज्ञः कथं कोऽत्र देहेऽस्मिन्मधुसूदन।
प्रयाणकाले च कथं ज्ञेयोऽसि नियतात्मभिः।२।

देवा अधियज्ञ तो काई। कवण पां इये देहीं। हे अनुमानासि कांहीं। दिठी न भरे।४। आणि नियता अंतःकरणीं। तूं जाणिजसी देहप्रयाणीं। तें कैसेनि हे शार्ङ्गपाणी। परिसवा मातें।५। देखा ळधवारीं चिंतामणींचा। जरी पहुडला होय दैवाचा। तरी वोसणतांही बोल तयाचा। सोप न वचे।६। तैसें अर्जुनाचिया बोलासवें। आलें तेंचि म्हणितलें देवें। परियेसें गा बरवें। जें पुसिलें तुवां।७। किरीटी कामधेनूचा पाडां। वरी कल्पतरूचा आहे मांदोडा। म्हणोनि मनोरथसिद्धीचिया चाडा। तो नवल नोहे।८। श्रीकृष्ण कोपोनि ज्यासि मारी। तो पावे परब्रह्मसाक्षात्कारीं। मा कृपेनें उपदेश करी। तो कैशापरी न पवेल।९। जैं कृष्णचि होइजे आपण। तैं कृष्ण होय आपुलें अंतःकरण। तेधवां संकल्पाचें आंगण। वोळंगती सिद्धी।१०। परी ऐसें जें प्रेम। तें अर्जुनींचि आथि निःसीम। म्हणऊनि तयाचें काम। सदा सफळ।११। याकारणें श्रीअनंतें। तें मनोगत तयाचें पुसतें। होईल जाणूनि आइतें। वोगरूनि ठेविलें।१२। जें अपत्य थानीं निगे। तयाची भूक तें मातेसीचि लागे। येऱ्हवीं तें शब्दें काय सांगे। मग स्तन्य दे येरी।१३। म्हणवोनि कृपाळुवा गुरुचिया ठायीं। हें नवल नोहें कांहीं। परी तें असो आइका काई। जें देव बोलते जाहाले।१४।

श्रीभगवानुवाच– अक्षरं ब्रह्म परमं स्वभावोऽध्यात्म उच्यते।
भूतभावोद्भवकरो विसर्गः कर्मसंज्ञितः।३।

मग म्हणितलें सर्वेश्वरें। आकारीं इये खोंकरें। कोंदलें असत न खिरे। कवणे काळीं।१५। येऱ्हवीं सपुरपण तयाचें पाहावें। तरी शून्यचि नव्हे स्वभावें। वरी गगनाचेनि पालवें। गाळूनि घेतलें।१६। जें ऐसेही परी विरुळें। इयें विज्ञानाचिया खोळें। हालवलेंही न गळें। ते परब्रह्म।१७। आणि आकाराचेनि जालेपणें। जन्मधर्मातें नेणें। आकारलोपी निमणें। नाहीं कंही।१८। ऐसिया आपलियाचि सहजस्थिती। जया ब्रह्माची नित्यता असती। तया नाम सुभद्रापतीं। अध्यात्म गा।१९। मग गगनीं जेवीं निर्मळें। नेणो कैचीं एक वेळे। उठती घनपटळें। नानावर्णे।२०। तैसें अमूर्ती तिमे विशुद्धे। महदादि भूतभेदें। ब्रह्मांडाचे बांधे। होंचि लागती।२१। पैं निर्विकल्पाचिये बरडी। फुटे आदिसंकल्पाची विरूढी। आणि ते सवेचि मोडोनि ये ढोंढी। ब्रह्मगोळकांच्या।२२। तया एकैकाचें भीतरीं पाहिजे। तंव बीजाचाचि भरिला देखिजे। माजि होतिया जातियां नेणिजे। लेख जीवां।२३। मग तया ब्रह्मगोळकांचे अंशांश। प्रसवती आदिसंकल्प असमास। हें असो ऐसी बहुवस। सृष्टी वाढे।२४। परी दुजेनवीण एकला। परब्रह्मचि संचला। अनेकत्वाचा आला। पूर जैसा।२५। तैसें समविषमत्व नेणों कैचें। वायांचि चराचर रचे। पाहातां प्रसवतिया योनीचे। लक्ष दिसती।२६। येरी जीवभावाचिये पालविये। कांहीं मर्यादा करूं न ये। पाहिजे कवण हें आघवें विये। तंव मूळ तें शून्य।२७। म्हणूनि कर्ता मुदल न दिसे। आणि सेखीं कारणही कांहीं नसें। माजि कार्यचि आपैसें। वाढोंचि लागे।२८। ऐसा करितेनवीण गोचर। अव्यक्तीं हा आकार। निपजे जो व्यापार। तया नाम कर्म।२९।

अधिभूतं क्षरो भावः पुरुषश्चाधिदैवतम्।
अधियज्ञोऽहमेवात्र देहे देहभृतां वर।४।

आतां अधिभूत जें म्हणिपे। तेंही सांगो संक्षेपे। तरी होय आणि हारपे। अभ्र जैसें।३०। तैसें असतेपण आहाच। नाहीं होईजे हें साच। जयातें रूपा आणिती पांचपांच। मिळोनियां।३१। भूतांतें अधिकरूनि असे। आणि भूतसंयोगें तरी दिसे। जे वियोगवेळे भ्रंशे। नामरूपादिक।३२। तयातें अधिभूत म्हणिजे। मग अधिदैवत पुरुष जाणिजे। जेणें प्रकृतीचें भोगिजे। उपार्जिलें।३३। जो चेतनेचा चक्षु। जो इंद्रियदेशींचा अध्यक्षु। जो देहास्तमानी वृक्षु। संकल्पविहंगमाचा।३४। जो परमात्माचि परि दुसरा। जे अहंकारनिद्रा निदसुरा। म्हणोनि स्वप्नाचिया वोरबारा। संतोषें शिणे।३५। जीव येणे नांवें। जयातें आळविजे स्वभावें। तें अधिदैवत जाणावें। पंचायतनींचे।३६। आतां इयेचि शरीरग्रामीं। जो शरीरभावातें उपशमी। तो अधियज्ञ येथ गा मी। पंडुकुमरा।३७। येर अधिदैवाधिभूत। तेही मीचि कीर समस्त। परी पंधरें

किडाळा मिळत। तें काय साकें नोहे।३८। तरी तें पंधरेपण न मैळे। आणि किडाळाचियाही अंशा न मिळे। परी जंव असे तयाचेनि मेळे। तंव सांकेंचि म्हणिजे।३९। तैसें अधिभूतादि आघवें। हें अविद्येचेनि पालवें। झांकलें तंव मानावें। वेगळें ऐसें।४०। तेचि अविद्येची जवनिक फिटे। आणि भेदभावाची अवधी तुटे। मग म्हणों एक होऊनि जरी आटे। तरी दोनी काय होती।४१। पै केशांचा गुंडाळा। वरी ठेविली स्फटिकशिळा। ते जंव पाहिजे डोळां। तंव भेदली गमती।४२। पाठीं केश परौते नेले। आणि भेदलेपण काय नेणों जाहालें। तरी डांक देऊनि सांदिलें। शिळेतें काई।४३। ना ते अखंडचि आयती। परी संगे भिन्न गमली होती। ते सारिलिया मागौती। जैसी कां तैसी।४४। तेवींचि अहंभाव जाये। तरी ऐक्य तें आधींचि आहे। हेंचि साचें जेथ होये। तो अधियज्ञ मी।४५। पैं गा आम्ही तुज। सकळ यज्ञ कर्मज। सांगीतलें जे काज। मनीं धरूनि।४६। तो हा सकळ जीवांचा विसावा। नैष्कर्म्यसुखाचा ठेवा। परी उघड करूनि पांडवा। दाविजत असे।४७। पहिलें वैराग्यइंधनपरिपूर्ती। इंद्रियानळीं प्रदीप्ती। विषयद्रव्यांचिया आहुती। देऊनियां।४८। मग वज्रासन तेचि उर्वी। शोधूनि आधारमुद्रा बरवी। वेदिका रचे मांडवी। शरीराच्या।४९। तेथ संयमाग्नीचीं कुंडें। इंद्रियद्रव्याचेनि पवाडें। पूजिजती उदंडें। युक्तिवोपे।५०। मग मनप्राणसंयम। हाचि हवनसंपदेचा संभ्रम। येणें संतोषविजे निर्धूम। ज्ञाननळ।५१। ऐसेनि हें सकळ ज्ञानी समर्पे। मग ज्ञान तें ज्ञेयीं हारपे। पाठीं ज्ञेयचि स्वरूपें। निखिल उरे।५२। तया नांव गा अधियज्ञ। ऐसें बोलिला जंव सर्वज्ञ। तंव अर्जुन अतिप्राज्ञ। तया पातलें तें।५३। हें जाणोनि म्हणितले देवें। पार्था परिसत आहासि बरवें। या कृष्णाचिया बोलासवें। येरु सुखाचा जाहाला।५४। देखा बाळकाचिया धणी धाइजे। कां शिष्याचेनि जाहालेपणें होइजे। हे सद्‌गुरूचि एकलेनि जाणिजे। कां प्रसवतिया।५५। म्हणोनि सात्विक भावांची मांदी। कृष्णाआंगीं अर्जुनाआधीं। न समातसे परी बुद्धी। सांवरूनि देवें।५६। मग पिकलिया सुखाचा परिमळ। कीं निवालिया अमृताचा कल्लोळ। तैसा कोवळा आणि रसाळ। बोल बोलिला।५७। म्हणे परिसणेयाच्या राया। आइकें बापा धनंजया। ऐसी जळों सरलिया माया। तेथ जाळितें तेंही जळे।५८।

अन्तकाले च मामेव स्मरन्मुक्त्वा कलेवरम्।
यः प्रयाति स मद्भावं याति नास्त्यत्र संशयः।५।

जें आतांचि सांगीतलें होतें। अगा अधियज्ञ म्हणितला जयातें। जे आदिचि तया मातें। जाणोनि अंतीं।५९। ते देह झोळ ऐसें मानुनी। ठेलें आपणपें आपण होउनी। जैसा मठ गगना भरूनी। गगनींचि असे।६०। ये प्रतीतीचिया माजघरीं। तया निश्चयाची वोवरी। आली म्हणोनि बाहेरी। नव्हेचि से।६१। ऐसे सबाह्य ऐक्य संचलें। मीचि होऊनि असतां रचिलें। बाहेरी भूतांचीं पांचही खवळें। नेणतांचि पडिलीं।६२। आतां उभेया उभेपण नाहीं जयाचें। मा पडिलिया गहन कवण तयाचें। म्हणोनि प्रतीतीचिये पोटींचे। पाणी न हाले।६३। ते ऐक्याची आहे वोतिली। कीं नित्यतेचिया हृदयीं घातली। जैसी समरससमुद्रीं धुतली। रुळेचिना।६४। पैं अथावीं घट बुडाला। ती आंतबाहेरी उदकें भरला। पाठीं दैवगेत्या जरी फुटला। तरी उदक काय फुटे।६५। ना तरी सर्पे कवच सांडिलें। कां उबारेनें वस्त्र फेडिलें। तरी सांग पां काय मोडलें। अवेवामाजीं।६६। तैसा आकार हा आहाच भ्रंशे। वांचूनि वस्तु ते सांचलीचि असे। तेचि बुद्धि जालिया विसुकुसे। कैसेनि आतां।६७। म्हणोनि यापरी मातें। अंतकाळीं जाणसतासे। जे मोकलिती देहातें। ते मीचि होती।६८। येऱ्हवीं तरी साधारण। उरीं आदळलिया मरण। जो आठव धरीं अंतःकरण। तेंचि होइजे।६९। जैसा कवण ऐक काकुळती। पळतां पवनगती। दुपावलीं अवचितीं। कुहामाजी पडियेला। ७०। आतां तया पडणयाआरौतें। पडण चुकवावया परौतें। नाहीं म्हणोनि तेथें। पडावेंचि पडे।७१। तेवीं मृत्यूचेनि अवसरें एकें। जें येऊनि जीवासमोर ठाके। तें होणें मग न चुके। भलतयापरी।७२। आणि जागता जंव असिजे। तंव जेणें ध्यानें भावना भाविजे। डोळा लागतखेंवो देखिजे। तेंचि स्वप्नीं।७३।

यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम्।
तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भावभावितः।६।

तेवीं जितेनि अवसरें। जें आवडोनि जीवीं उरे। तेंचि मरणाचिये मेरे। फार हों लागे।७४। आणि मरणीं जया जें आठवें। तो तेचि गतीतें पावे।–

तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्मामेवैष्यस्यसंशयः।७।

म्हणोनि सदा स्मरावें। मातेंचि तुवां।७५। डोळां जें देखावें। कां कानीं हन ऐकावें। मनीं जें भावावें। बोलावें वाचे।७६। तें आंतबाहेरी आघवें। मीचि करूनि घालावें। मग सर्वी काळीं स्वभावें। मीचि आहे।७७। अर्जुना ऐसें जाहालिया। मग न मरिजे देह गेलिया। मा संग्राम केलिया। भय काय तुज।७८। तूं मन बुद्धि

साचेंसीं। जरी माझिया स्वरूपीं अर्पिसी। तरी मातेंचि गा पावसी। हे माझी भाक।७९। हेंचि कायिसयावरी होये। ऐसा जरी संदेह वर्तत आहे। तरी अभ्यासून आदीं पाहें। मग नव्हे तरी कोपें।८०।

अभ्यासयोगयुक्तेन चेतसा नान्यगामिना।
परमं पुरुषं दिव्यं याति पार्थाऽनुचिन्तयन्।८।

येणेंचि अभ्यासेंसी योगूं। चित्तासि करी पां चांगूं। अगा उपायबळें पंगू। पहाड ठाकी।८१। तेवीं सदभ्यासें निरंतर। चित्तासि परमपुरुषाची मोहर। लावीं मग शरीर। राहो अथवा जावो।८२। जें नाना गतीतें पाववितें। तें चित्त वरील आत्मयातें। मग कवण आठवी देहातें। गेलें कीं आहे।८३। पैं सरितेचेनि ओघें। सिंधुजळा मीनले घोंघे। ते काय वर्तत आहे मागे। म्हणोनि पाहों येती।८४। ना ते समुद्रचि होऊन ठेले। तेवीं चित्ताचें चैतन्य जाहालें। जेथ यातायात निमालें। घनानंद जें।८५।

कविं पुराणमनुशासितारमणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः।
सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूपमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्।९।

जयाचें आकारावीण असणें। जया जन्म ना निमणें। जें आघवेचि आघवेपणें। देखत असे।८६। जें गगनाहूनि जुनें। जें परमाणूहूनि सानें। जयाचेनि सन्निधानें। विश्व चळे।८७। जें सर्वांतें यया विये। विश्व सर्व जेणें जिये। हेतु जया विहे। अचिन्त्य जें।८८। देखे वोळंबा इंगळ न चरे। तेजीं तिमिर न शिरे। जें दिहाचि आंधारें। चर्मचक्षूसीं।८९। सुसडा सूर्यकणांच्या राशी। जो नित्य उदो ज्ञानियांसी। अस्तमानाचें जयासी। आडनांव नाहीं।९०।

प्रयाणकाले मनसाचलेन भक्त्या युक्तो योगबलेन चैव।
भ्रुवोर्मध्ये प्राणमावेश्य सम्यक् स तं परं पुरुषमुपैति दिव्यम्।१०।

तया अव्यंगवाणेया ब्रह्मातें। प्रयाणकाले प्राप्ते। जो स्थिरावलेनि चित्तें। जाणोनि स्मरे।९१। बाहेर पद्मासन रचुनी। उत्तराभिमुख बैसोनी। जीवीं सुख सूनी। कर्मयोगाचे।९२। आंतु मिनलेनि मनोधर्में। स्वरूपप्राप्तीचेनि प्रेमें। आपेंआप संभ्रमें। मिळावया।९३। आकळलेनि योगें। मध्यमा मध्यमार्गें। अग्निस्थानौनि निगे। ब्रह्मरंध्रा।९४। तेथ अचेत चित्ताचा सांगात। आहाचवाणा दिसे मांडत। जेथ प्राण गगनाआंत। संचरे कां।९५। परि मनाचेनि स्थैर्यें धरिला। भक्तिचिया भावना भरला। योगबळें आवरला। सज्ज होउनी।९६। तो जडाजडातें विरचितू। भ्रलतामाजी संचरतु। जैसा घंटानाद लयस्तु। घंटेसीच होय।९७। कां झांकलिये घटींचा दिवा। नेणिजे काय जाहला केंव्हा। या रीती जो पांडवा। देह ठेवी।९८। तो केवळ परब्रह्म। जया परमपुरुष ऐसें नाम। तें माझे निजधाम। होऊनि ठाके।९९।

यदक्षरं वेदविदो वदन्ति विशन्ति यद्यतयो वीतरागाः।
यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदं संग्रहेण प्रवक्ष्ये।११।

सकळा जाणणेया जे लाणी। तिये जाणिवेची जे खाणी। तया ज्ञानियांचिये आयणी। जयातें अक्षर म्हणिपे।१००। चंडवातेंही न मोडे। तें गगनचि कीं फुडें। वांचूनि जरी होईल मेहुडें। तरी उरेल कैचें।१। तेवीं जाणणेया जें आकळलें। तें जाणिवलेंपणेंचि उमाणलें। मग नेणवेचि तया म्हणितलें। अक्षर सहजें।२। म्हणोनि वेदविद नर। म्हणतीं जयातें अक्षर। जें प्रकृतीसी पर। परमात्मरूप।३। आणि विषयांचे विष उलंडूनि। जे सर्वेंद्रियां प्रायश्चित्त देऊनि। आहाति देहाचिया बैसोनि। झाडातळीं।४। ते यापरी विरक्त। जयाची निरंतर वाट पहात। निष्कामासि अभिप्रेत। सर्वदा जें।५। जयाचिया आवडी। न गणती ब्रह्मचर्याचीं सांकडीं। निष्ठुर होऊनि बापुडी। इंद्रियें करिती।६। ऐसें जें पद। दुर्लभ आणि अगाध। जयाचिये थडिये वेद। चुबुकळिले ठेले।७। तें ते पुरुष होती। जे यापरी लया जाती। तरी पार्था हेचि स्थिती। एक वेळ सांगों।८। तेथ अर्जुनें म्हणितले स्वामी। हेंचि म्हणावया होतो पां मी। तंव सहजें कृपा केली तुम्हीं। तरी बोलिजो कां।९। परी बोलावें ते अति सोहोपें। तेथें म्हणितलें त्रिभुवनदीपें। तुज काय नेणों संक्षेपें। सांगेन ऐक।११०। तरी मना बाहेरिलीकडे। येयाची साविया सवे मोडे। हें हृदयाचिया डोहीं बुडे। तैसें कीजे।११।

सर्वद्वाराणि संयम्य मनो हृदि निरुध्य च।
मूर्ध्न्याधायात्मनः प्राणमास्थितो योगधारणाम्।१२।

परी हें तरीच घडे। जरी संयमाचीं अखंडें। सर्वद्वारीं कवाडें। कळासती।१२। तरी सहजें मन कोंडलें। हृदयींचि असेल उगलें। जैसें करचरणीं मोडलें। परिवर न संडी।१३। तैसें चित्त राहिल्या पांडवा। प्राणांचा प्रणवचि करावा। मग अनुवृत्तिपंथें आणावा। मूर्ध्निवरी।१४। तेथ आकाशीं मिळे न मिळे। तैसा धरावा धारणाबळें। जंव मात्रात्रय मावळें। अर्धबिंबीं।१५। तंववरी तो समीरु। निराळीं कीजे स्थिरु। मग लग्नीं जेवीं ओंकारु। बिंबींचि विलसे।१६।

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन्।
यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम्।१३।

तैसें ओम् हें स्मरों सरे। आणि तेथेचि प्राण पुरे। मग प्रणवातीत उरे। पूर्णघन जें।१७। म्हणोनि प्रणवैकनाम। हें एकाक्षर ब्रह्म। जो माझें स्वरूप परम। स्मरतसाता।१८। यापरी त्यजी देहातें। तो त्रिशुद्धी पावे मातें। जया पावणयापरौतें। आणिक पावणें नाहीं।१९। तेथ अर्जुना जरी विपायें। तुझ्या जीवीं अन ऐसें जाये। ना हे स्मरण मग होये। कायसयावरी अंतीं।१२०। इंद्रियां अनघड पडिलिया। जीविताचें सुख बुडालिया। आंतबाहेरि उघडलिया। मृत्युचिन्हें।२१। तें वेळीं बैसावेचि कवणें। मग कवण निरोधी करणें। तेथ काह्याचेनि अंतःकरणें। प्रणव स्मरावा।२२। तरी गा ऐशिया हो ध्वनी। झणें थारा देशी गा मनीं। पैं नित्य सेविला मी निदानीं। सेवक होय।२३।

अनन्यचेताः सततं यो मां स्मरति नित्यशः।
तस्याहं सुलभं पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिनः।१४।
मामुपेत्य पुनर्जन्म दुःखालयमशाश्वतम्।
नाप्नुवन्ति महात्मानः संसिद्धिं परमां गताः।१५।

जे विषयांसि तिळांजली देउनी। प्रवृत्तीवरी निवड वाउनी। मातें हृदयीं सूनी। भोगिताती।२४। परी भोगितया नाराणुका। भेटणें नाहीं क्षुधादिकां। तेथ चक्षुरादि रंका। कवण पाड।२५। ऐसे निरंतर एकवटले। जे अंतःकरणीं मजशीं लिगटलें। मीचि होऊनि आंतले। उपासिती।२६। तया देहावसान जैं पावे। तैं तिहीं मातें स्मरावें। मग म्यां जरी न पावावें। तरी उपास्ति ते कायसी।२७। पैं रंक एक आडलेपणें। काकुळती धांव गा धांव म्हणे। तरी तयाचिये ग्लानी धांवणें। काय न घडे मज।२८। आणि भक्तांही तेचि दशा। तरी भक्तीचा सोस कायसा। म्हणऊनि हा ध्वनी ऐसा। न वाखाणावा।२९। तिहीं जे वेळी मी स्मरावा। ते वेळीं स्मरिला कीं पावावा। तो आभारही जीवा। साहावेचि ना।१३०। तें ऋणवैपण देखोनि आंगीं। मी आपुलियाचि उत्तीर्णत्वालागीं। भक्तांचिया तनुत्यागीं। परिचर्या करीं।३१। देहवैकल्याचा वारा। झणें लागेल या सुकुमारा। म्हणोनि आत्मबोधाचे पांजिरां। सुयें तयातें।३२। वरी आपुलिया स्मरणाची उवाइली। हींव ऐसी करी साउली। ऐसेनि नित्य बुद्धि संचली। मी आणीं तयातें।३३। म्हणोनि देहांतींचें सांकडें। माझिया कहींचि न पडे। मी आपुलियांतें आपुलीकडे। सुखेचि आणीं।३४। वरचील देहाची गवसणी फेडुनी। आहाच अहंकाराचे रज झाडुनी। शुद्ध वासना निवडुनि। आपणपां मेळवीं।३५। आणि भक्तां तरी देहीं। विशेष एकवंकीचा ठाव नाहीं। म्हणऊनि अव्हेर करितां कांहीं। वियोग ऐसा न वाटे।३६। ना तरी देहांतींचि मियां यावें। मग आपणपें यातें न्यावें। हेंही नाहीं जें स्वभावें। जे आधीचि मज मिनले।३७। येरी शरीराचिया सलिलीं। असतेपण हेचि साउली। वांचूनि चंद्रिका ते ठेली। चंद्रीच आहे।३८। ऐसे जे नित्ययुक्त। तयांसि सुलभ मी सतत। म्हणऊनि देहांती निश्चित। मीचि होती।३९। मग क्लेशतरूची वाडी। जे तापत्रयाग्नीची सगडी। जे मृत्यकाकासि कुरोंडी। सांडिली आहे।१४०। जें दैन्याचें दुभतें। जें महाभयातें वाढवितें। जें सकळ दुःखांचे पुरतें। भांडवल।४१। जें दुर्मतीचें मूळ। जें कुकर्माचे फळ। जें व्यामोहाचे केवळ। स्वरूपचि।४२। जें संसाराचें बैसणें। जें विकाराचें उद्यानें। जें सकळ रोगांचे भाणें। वाढिलें आहे।४३। जें काळाचा खिच उशिटा। जें आशेचा आंगवठा। जन्ममरणाचा वोलिंवटा। स्वभावें जें।४४। जें भुलीचें भरीव। जें विकल्पाचें वोतींव। किंबहुत पेंव। विंचुवांचें।४५। जें व्याघ्राचें क्षेत्र। जें पण्यांगनांचे मित्र। जें विषयविज्ञानयंत्र। सुपूजित।४६। जें लावेचा कळवळा। निवालिया विषोदकाचा गळाळा। जें विश्वासु आंगवळा। संवचोराचा।४७। जें कोढियाचें खेंव। जें काळसर्पाचे मार्दव। गोरियाचें स्वभाव। गायन जें।४८। जें वैरियाचा पाहुणेर। जें दुर्जनाचा आदर। हें असो जें सागर। अनर्थाचा।४९। जें स्वप्नीं देखिलें स्वप्न। जें मृगजळें सासिन्नलें वन। जें धूम्ररजाच गगन। ओतलें आहे।१५०। ऐसें जें हें शरीर। तें ते न पवतीचि पुढती नर। जें होऊनि ठेले अपार। स्वरूप माझें।५१।

आब्रह्मभुवनाँल्लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन।
मामुपेत्य तु कौंतेय पुनर्जन्म न विद्यते।१६।

` येऱ्हवीं ब्रह्मपणाचिये भडसे। न चुकतीचि पुनरावृत्तीचे वळसे। परीं निवटलियाचें जैसें। पोट न दुखे।५२। ना तरी चेइलियानंतरें। न बुडिजे स्वप्नींचेनि महापूरें। तेवीं मातें पावले ते संसारें। लिंपतीचि ना।५३। येरवीं जगदाकाराचें सिरें। जें चिरस्थाईयांचे धुरे। ब्रह्मभुवन गा चवरें। लोकाचळाचें।५४। जिये गांवींचा पहार दिवोवरी। एका अमरेंद्राचें आयुष्य नधरी। विळोनि पांती उठी एकसरी। चवदा जणांची।५५।

सहस्रयुगपर्यन्तमहर्यद्ब्रह्मणो विदुः।
रात्रिं युगसहस्रां तां तेऽहोरात्रविदो जनाः।१७।

जैं चौकडिया सहस्र जांये। तैं ठायेठावो विळचि होये। आणि तैसेंचि सहस्रवरिये पाहे। रात्री जेथ।५६। येवढें अहोरात्र जेथींचें। तेणें न लोटती जे भाग्याचे। देखती ते स्वर्गींचे। चिरंजीव।५७। येरां सुरगणांची नवाई। विशेष सांगावी तेथ काई। मुदल इंद्राचीचि दशा पाहीं। जे दिहाचे चौदा।५८। परी ब्रह्मयाचियाही आठां प्रहरांतें। आपुलिया डोळा देखते। जे आहाति गा तयांते। अहोरात्रविद् म्हणिजे।५९।

अव्यक्ताद्व्यक्तयः सर्वाः प्रभवन्त्यहरागमे।
रात्र्यागमे प्रलीयन्ते तत्रैवाव्यक्तसंज्ञके।१८।
भूतग्रामः स एवाऽयं भूत्वा भूत्वा प्रलीयते।
रात्र्यागमेऽवशः पार्थ प्रभवत्यहरागमे।१९।

तये ब्रह्मभुवनीं दिवसें पाहे। ते वेळीं गणना केंही न समाये। ऐसें अव्यक्तांचे होये। व्यक्त विश्व।१६०। पुढती देहाची चौपाहारी फिटे। आणि हा आकारसमुद्र आटे। पाठीं तैसाचि मग पाहांटे। भरों लागे।६१। शारदीयेचिये प्रवेशीं। अभ्रें जिरती आकाशीं। मग ग्रीष्मांतीं जैसीं। निगती पुढती।६२। तैसी ब्रह्मदिनाचिये आदी। हे भूतसृष्टीची मांदी। मिळे जंव सहस्रावधी। निमित्त पुरे।६३। पाठी रात्रीचा अवसर होये। आणि विश्व अव्यक्तीं लया जाये। तोही युगसहस्र मोटका पाहे। आणि तैसेचि रचे।६४। हें सांगावया काय उपपत्ती। जे जगाचा प्रळयो आणि संभूती। इये ब्रह्मभुवनींचिया होती। अहोरात्रामाजी।६५। कैसें थोरियेचें मान पाहें पां। तो सृष्टिबीजाचा सांटोपा। परी पुनरावृत्तीचिया मापा। शीग जाहाला।६६। येऱ्हवीं त्रैलोक्य हें धनुर्धरा। तिये गावींचा गा पसारा। तो हा दिनोदयीं एकसरां। मांडत असे।६७। पाठीं रात्रीचा समो पावे। आणि आपैसाचि सांठवे। म्हणिये जेथींचें तेथ स्वभावें। साम्यासि ये।६८। जैसें वृक्षपण बीजासि आलें। कीं मेघ हें गगन जाहालें। तैसें अनेकत्व जेथ सामावले। तें साम्य म्हणिपे।६९।

परस्तस्मात्तु भावोऽन्यो व्यक्तोऽव्यक्तात्सनातनः।
यः स सर्वेषु भूतेषु नश्यत्सु न विनश्यति।२०।

तेथ समविषम न दिसे कांहीं। म्हणोनि भूतें ही भाष नाहीं। जेवीं दूधचि जाहालिया दहीं। नामरूप जाय।१७०। तेवीं आकारलोपासरिसें। जगाचें जगपण भ्रंशे। परी जेथें जाहालें ते जैसें। तैसेंचि असे।७१। तै तया नांव सहज अव्यक्त। आणि आकार ये तेंचि व्यक्त। हें एकास्तव एक सूचित। येंऱ्हवीं दोनी नाहीं।७२। जैसें आटलिया रूपें। आटलेपण ते खोटे म्हणिपे। पुढती तो घनाकार हारपे। जे वेळीं अळंकार होती।७३। हीं दोन्ही जैसीं होणीं। एकीं साक्षिभूत सुवर्णीं। तैसी व्यक्ताव्यक्ताची कडसणी। वस्तूच्या ठायीं।७४। तें तरी व्यक्त ना अव्यक्त। नित्य ना नाशवंत। या दोहीं भावांअतीत। अनादिसिद्ध।७५। जें हें विश्वचि होऊनि असे। परी विश्वपण नासलेनि न नासे। अक्षरें पुसिल्या न पुसे। अर्थ जैसा।७६। पाहें पां तरंग तरी होत जात। परि तेथ उदक तें अखंड असत। तेवीं भूताभावीं न नाशत। अविनाशी जें।७७। ना तरी आटतिये अळंकारीं। नाटते कनक असे जयापरी। तेवो मरतिये जीवाकारीं। अमर जें आहे।७८।

अव्यक्तोऽक्षर इत्युक्तस्तमाहुः परमां गतिम्।
यं प्राप्य न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम।२१।
पुरुषः स परः पार्थ भक्त्या लभ्यस्त्वनन्यया।
यस्यान्तःस्थानि भूतानि येन सर्वमिदं ततम्।२२।

जयातें अव्यक्त म्हणों ये कोडें। म्हणतां स्तुति हे ऐसें नावडे। जें मन बुद्धी न सांपडे। म्हणऊनियां।७९। आणि आकारा आलिया जयाचें। निराकारपण न वचे। आकारलोपें न विसंचे। नित्यता गा।१८०। म्हणोनि अक्षर जें म्हणिजे। तेवींचि म्हणतां बोधही उपजे। जयापरौता पैस न देखिजे। या नाम परमगती।८१। परी आघवा

इहीं देहपुरीं। आहे निजेलियाचे परी। जे व्यापार करवी ना करी। म्हणऊनियां।८२। येऱ्हवीं जे शारीरचेष्टा। त्यामाजी एकिही न ठके गा सुभटा। दाही इंद्रियांचिया वाटा। वाहतचि आहाती।८३। उकलूनि विषयांचा पेंटा। होत मनाचा चोहटा। तो सुखदुःखांचा राजवांटा। भितराही पावे।८४। परी रावो पहुडलिया सुखें। जैसा देशींचा व्यापार न ठके। प्रजा आपुलालेनि अभिलाखें। करितीच असती।८५। तैसें बुद्धीचे हन जाणणें। कां मनाचें घेणें देणें। इंद्रियांच करणें। स्फुरण वायूचें।८६। हे देहक्रिया आघवी। न करितां होय बरवी। जैसा न चलवितेनि रवी। लोक चाले।८७। अर्जुना तया परी। सुतला ऐसा आहे शरीरीं। म्हणोनि पुरुष गा अवधारीं। म्हणिपे जयातें।८८। आणि प्रकृति पतिव्रते। पडिला एकपत्नीव्रतें। येणेंही कारणें जयातें। पुरुष म्हणो ये।८९। पैं वेदांचे बहुवसपण। देखेचिना जयाचें आंगण। हें गगनाचें पांघुरण। होय देखा।१९०। ऐसें जाणूनि योगीश्वर। जयातें म्हणती परात्पर। जें अनन्यगतीचें घर। गिंवसीत ये।९१। जे तनू वाचां चित्तें। नाइकती दुजिये गोष्टीतें। तयां एकनिष्ठांचें पिकतें। सुक्षेत्र जे।९२। हें त्रैलोक्यचि पुरुषोत्तम। ऐसा साचा जयाचा मनोधर्म। तया आस्तिकाचा आश्रम। पांडवा गा।९३। जें निगर्वाचें गौरव। जें निर्गुणाची जाणिव। जें सुखाची राणिव। निराशांसी।९४। जें संतोषिया वाढिलें ताट। जें अर्चिता अनाथाचें मायपोट। भक्तीसी उजू वाट। जया गांवा।९५। हें एकैक सांगोनि वायां। काय फार करूं धनंजया। पैं गेलिया जया ठाया। तो ठावोचि होइजे।९६। हिंवाचिया झुळुका। जैसें हिंवचि पडे उष्णोदका। कां सामोरा जालिया अर्का। तमचि प्रकाश होये।९७। तैसा संसार जया गांवा। गेलासांता पांडवा। होऊन ठाके आघवा। मोक्षाचाचि।९८। तरी अग्निमाजी आलें। जैसें इंधनचि अग्नि जाहालें। पाठीं न निवडेचि कांहीं केलें। काष्ठपण।९९। ना तरी साखरेचा माघौता। बुद्धिमंतपणेंही करितां। परी ऊंस नव्हे पंडुसुता। जियापरी।२००। लोहाचे कनक जाहालें। हें एकें परिसेंचि केलें। आतां आणिक कैचें तें गेलें। लोहत्व आणी।१। म्हणोनि तूप होऊनि माघौतें। जेवीं दूधपणा न येचि निरुतें। तेवीं पावोनियां जयातें। पुनरावृत्ति नाहीं।२। तें माझें परम। साचोकारें निजधाम। हें अंतुवट तुज वर्म। दाविजत असे।३।

यत्र काले त्वनावृत्तिमावृत्तिं चैव योगिनः।
प्रयाता यान्ति तं कालं वक्ष्यामि भरतर्षभ।२३।

तेवींचि आणिकेंही एकें प्रकारें। हें जाणतां आहे सोपारें। तरी देह सांडितेनि अवसरें। जेथें मिळती योगी।४। अथवा अवचटें ऐसें घडे। जे अनवसरें देह सांडे। तरी माघौते येणें पडे। देहासीचि।५। म्हणोनि काळशुद्धी जरी देह ठेविती। तरी ठेवतखेंवीं ब्रह्मचि होती। एरवीं अकाळीं तरी येती। संसारा पुढती।६। तैसें सायुज्य आणि पुनरावृत्ती। या दोन्ही अवसरा आहाती। तोचि अवसर तुजप्रती। प्रसंगें सांगो।७। तरी ऐके गा सुभटा। पातलिया मरणाचा माजिवटा। पांचै आपुलिया वाटा। निघती अंती।८। ऐसा वरि वरिपडिला प्रयाणकाळीं। बुद्धितें भ्रम न गिळी। स्मृति नव्हे आंधळी। न मरे मन।९। हा चेतनावर्ग आघवा। मरणीं दिसे टवटवा। परि अनुभवलिया ब्रह्मभावा। गंवसणी होउनी।२१०। ऐसा सावध हा समभावो। आणि निर्वाणवेऱ्हीं निर्वाहो। हें तरीच घडे सावावो। अग्नीचा आथी।११। पाहा पां वारेनें कां उदकें। जैं दिवियाचें दिवेपण झांके। तैं असतीच काय देखे। दिठी आपुली।१२। तैसें देहांतींचेनि विषमवातें। देह आंत बाहेरि श्लेष्माआते। तैं विझोनि जाय उजितें। अग्नीचें जेव्हां।१३। ते वेळीं प्राणासि प्राण नाहीं। तेथ बुद्धि असोनि करील काई। म्हणोनि अग्निवीण देहीं। चेतना न थारे।१४। अगा देहींचा अग्नि जरी गेला। तरी देह नव्हे चिखल ओला। वायां आयुष्यवेळ आपुला। आंधारें गिंवसी।१५। आणि मागील स्मरण आघवें। तें तेणें अवसरें सांभाळावें। मग देह त्यजूनि मिळावें। स्वरूपीं कीं।१६। तंव तया देहश्लेष्माचे चिखलीं। चेतनाचि बुडोनि गेली। तेथ मागिली पुढिलीही ठेली। आठवण।१७। म्हणोनि आधीं अभ्यास जो केला। तो मरण न येतां निमोनि गेला। जैसें ठेवणे न दिसतां मालवला। दीप हातींचा।१८। आतां असो हें सकळ। जाण पां ज्ञानासि अग्नि मूळ। तया अग्नीचें प्रयाणीं बळ। संपूर्ण आथी।१९।

अग्निर्ज्योतिरहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम्।
तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः।२४।

आंत अग्निज्योतीचा प्रकाश। बाहेरी शुक्लपक्ष आणि दिवस। आणि सामासांमाजि मास। उत्तरायण।२२०। ऐसिया समयोगाची निरुती। लाहोनी जे देह ठेविती। ते ब्रह्मचि होती। ब्रह्मविद।२१। अवधारीं गा धनुर्धरा। येथवरी सामर्थ्य यया अवसरा। तेवींचि हा उजू मार्ग स्वपुरा। यावया पैं।२२। एथ अग्नी हें पहिलें पायतरें। ज्योतिर्मय हें दुसरें। दिवस जाणें तिसरें। चौथें शुक्लपक्ष।२३। आणि सामास उत्तरायण। तें वरचील गा सोपान। येणें सायुज्यसिद्धिसदन। पावती योगी।२४। हा उत्तम काळ जाणिजे। यातें अर्चिरादि मार्ग म्हणिजे। आतां अकाळ तोही सहजें। सांगेन आइक।२५।

धूमो रात्रिस्तथा कृष्णः षण्मासा दक्षिणायनम्।
तत्र चांद्रमसं ज्योतिर्योगी प्राप्य निवर्तते।२५।

तरी प्रयाणाचिया अवसरें। वातश्लेष्मां सुभरें। तेणें अंतःकरणीं आंधारें। कोंदलें ठाके।२६। सर्वेंद्रियां लांकुड पडे। स्मृति भ्रमामाजि बुडे। मन होय वेडें। कोंडे प्राण।२७। अग्नीचें अग्निपण जाये। मग तो धूमचि अवघा होये। तेणें चेतता गिवसिली ठाये। शरीरींची।२८। जैसें चंद्राआडें आभाळ। सदट दाटे सजळ। मग गडद ना उजाळ। ऐसें झांबळें होय।२९। कां मरे ना सावध। ऐसें जीवितासि पडे स्तब्ध। आयुष्य मरणाची मर्याद। वेळ ठाकी।२३०। ऐसी मनबुद्धिकरणीं। सभोंवतीं धूमाकुळाची कोंडणी। तेथ जन्में जोडलिये वाहणी। युगचि बुडे।३१। हां गा हातींचे जे वेळी जाये। ते वेळीं आणिका लाभाची गोठी कें आहे। म्हणऊनि प्रयाणी तंव होये। येतुली दशा।३२। ऐसी देहाआंत स्थिती। बाहेरि कृष्णपक्ष वरि राती। आणि सामासही वोडवती। दक्षिणायन।३३। इये पुनरावृत्तीचीं घराणी। आघवीं एकवटती जयाचिया प्रयाणीं। तो स्वरूपसिद्धिची कहाणी। कैसेनि आइके।३४। ऐसा जयाचा देह पडे। तया योगी म्हणोनि चंद्रवेरी जाणें घडे। मग तेथूनि मागुता बहुडे। संसारा ये।३५। आम्हीं अकाळ जो पांडवा। म्हणितला तो हा जाणावा। आणि हाचि धूम्रमार्ग गांवा। पुनरावृत्तीचिया।३६। येर तो अर्चिरादि मार्ग। तो वसता आणि असलग। साविया स्वस्त चांग। निवृत्तीवेरी।३७।

शुक्लकृष्णे गती ह्येते जगतः शाश्वते मते।
एकया यात्यनावृत्तिमन्ययाऽऽवर्तते पुनः।२६।

ऐसिया अनादिया दोनी वाटा। एकी उजू एकी अव्हांटा। म्हणवूनि बुद्धिपूर्वक सुभटा। दाविलिया तुज।३८। कां जे मार्गामार्ग देखावे। साच लटिके वोळखावें। हिताहित जाणावें। हिताचिलागी।३९। पाहें पां नांव देखतां बरवी। कोणी आड घाली काय अथावीं। कां सुपंथ जाणोनि अडवी। रिगवत असे।२४०। जो विष अमृत वोळखे। तो अमृत काय सांडूं शके। तेवीं जो उजू वाट देखे। तो अव्हांटा न वचे।४१। म्हणोनि पुढें। पारखावें खरें कुडें। पारखिलें तरी न पडे। अनवसरें कांहीं।४२। एऱ्हवीं देहांतीं थोर विषम। या मार्गांचें आहे संभ्रम। जन्में अभ्यासिलियांचे हन काम। जाईल वायां।४३। जरी अर्चिरादि मार्ग चुकलिया। अवचटें धूम्रपंथीं पडिलिया। तरी संसारपांथीं जुंतलिया। भंवतचि असावें।४४। हे सायास देखोनि मोठे। आतां कैसेनि पां एकवेळ फिटे। म्हणोनि योगमार्ग गोमटें। शोधिले दोन्ही।४५। तंव एके ब्रह्मत्वा जाइजे। आणि एके पुनरावृत्ती येइजे। परी दैवगत्या जो लाहिजे। देहांतीं जेणें।४६।

नैते सृती पार्थ जानन्योगी मुह्यति कश्चन।
तस्मात्सर्वेषु कालेषु योगयुक्तो भवाऽर्जुन।२७।

ते वेळीं म्हणितलें हें नव्हे। वायां अवचटें काय पावे। देह त्यजुनि वस्तु होआवें। मार्गेंच कीं।४७। तरी आतां देह असो अथवा जावो। आम्ही तो केवळ वस्तूचि आहों। कां जें दोरी सर्पत्व वावो। दोराचिकडूनी।४८। मज तरंगपण असे की नसे। ऐसें हें उदकाप्रति कंहीं भासे। तें भलतेव्हां जैसें तैसें। उदकचि कीं।४९। तरंगाकारें न जन्मेचि। ना तरंगलोपें निमेचि। तेवीं देही जे देहेंचि। वस्तु जाहाले।२५०। आतां शरीरांचे तयांचिया ठाई। आडनांवही उरलें नाहीं। तरी कोणें काळें काई। निमे ते पाहें पां।५१। मग मार्गातें कायसा शोधावें। कोणें कोठूनि के जावें। जरी देशेकाळादि आघवें। आपणचि असे।५२। आणि हां गा घट जे वेळीं फुटे। ते वेळीं तेथिंचें आकाश लागे नीट वाटे। वाटा लागलें तरी गगना भेटे। येरवीं चुके।५३। पाहे पां ऐसें हन आहे। कीं तो आकारुचि जाये। येर गगन तें गगनींचि आहे। घटत्वाहीं आधीं।५४। ऐसिया बोधाचेनि सुरवाडें। मार्गामार्गांचे सांकडें। तया सोहंसिद्धां न पडे। योगियांसी।५५। या कारणें पंडुसुता। तुवां होआवें योगयुक्ता। तेतुलेनि सर्वकाळीं साम्यता। आपैसया होईल।५६। मग भलतेथ भलतेव्हां। देह असो अथवा जावा। परी अबंधा नित्य ब्रह्मभावा। विघड नाहीं।५७। तो कल्पादि जन्मा नागवे। कल्पांतीं मरणें नाप्लवे। माजि स्वर्गसंसाराचेनि लाघवें। झकवेना।५८। येणें बोधें जो योगी होये। तयासीचि या बोधाचे नीटपण आहे। कां जे भोगांतें पेलून पायें। निजरूपा ये।५९। पैं गा इंद्रादिकां देवां। जयां सर्वस्वें स्वर्गीं गाजती राणिवा। तें सांडणें मानूनि पांडवा। डावली जो।२६०।

वेदेषु यज्ञेषु तपःसु चैव दानेषु यत्पुण्यफलं प्रदिष्टम्।
अत्येति तत्सर्वमिदं विदित्वा योगी परं स्थानमुपैति चाद्यम्।२८।

इति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे अक्षरब्रह्मयोगो नाम अष्टमोऽध्यायः।

जरी वेदाध्ययनाचे जालें। अथवा यज्ञाचें शेत पिकलें। कीं तपदानांचे जोडलें। सर्वस्व हन जें।६१। तया अघवां पुण्याचा मेळा। भार आतौनि जया ये फळा। तें परब्रह्मा निर्मळा। सांटी न सरें।६२। जें नित्यानंदाचेनि मानें। उपमेचा कांटाळां न दिसें सानें। पाहा पां वेदयज्ञादिसाधनें। जया सुखा।६३। जें विटें ना सरे। भोगितयाचेनि पवाडें पुरे। पुढती महासुखाचें सोयरें। भावंडचि।६४। ऐसें दृष्टीचेनि सुखपणें। जयासी अदृष्टाचें बैसणें। जें शतमखाही आंगवणें। नोहेचि एका।६५।

तयांतें योगीश्वर अलौकिकें। दिठीचेनि हाततुकें। अनुमानती कौतुकें। तंव हळुवार आवडे।६६। मग तया सुखाची किरीटी। करूनिया गा पाउठी। परब्रह्माचिये पाठीं। आरूढती।६७। ऐसें चराचरैक भाग्य। जें ब्रह्मेशां आराधने योग्य। योगियांचे भोग्य। भोगधन जें।६८। जो सकळा कळांची कळा। जो परमानंद पुतळा। जो जीवाचा जिव्हाळा। विश्वाचिया।६९। जो सर्वज्ञतेचा वोलावा। जो यादवकुळींचा कुळदिवा। तो श्रीकृष्णजी पांडवा–। प्रती बोलिला।२७०। ऐसा कुरुक्षेत्रींचा वृत्तांत। संजयो रायासि असे सांगत। तेचि परियेसा पुढारी मात। ज्ञानदेव म्हणे।२७१।

इति श्रीज्ञानेश्वरकृतायां भावार्थदीपिकायां अष्टमोऽध्यायः।८। श्लोक २८ ओव्या २७१.

ज्ञानेश्वरीः अध्याय नववा–राजविद्याराजगुह्ययोग

तरी अवधान येकलें दीजे। मग सर्वसुखासि पात्र होइजे। हें प्रतिज्ञोत्तर माझें। उघड आइका।१। परी प्रौढी न बोलें हो जी। तुम्हां सर्वज्ञांच्या समाजी। देवींचें अवधान हे माझी। विनवणी सलगीची।२। कां जे लळेयांचे लळे सरती। मनोरथांचे मनोरथ पुरती। जरी माहेरें श्रीमंतें होती। तुम्हांऐसीं।३। तुमचे या दिठिवेयाचिये बोले। सासिन्नले प्रसन्नतेचे मळे। ते साउली देखोनी लोळें। श्रांत जी मी।४। प्रभू तुम्ही सुखामृताचे डोहो। म्हणोनि आपुलिया स्वेच्छा वोलावा लाहों। तेथही जरी सलगी करूं बिहों। तरी निवों कें पां।५। ना तरी बाळक बोबडां बोलीं। वांकुडां विचुकां पाउलीं। ते चोज करूनि माउली। रिझे जेवीं।६। तेवीं तुम्हां संतांचा पढियावो। कैसेनि तरी आम्हावरी हो। या बहुवा आळुकिया जी आहों। सलगी करीत।७। वांचूनि माझिये बोलतिये योग्यते। सर्वज्ञ भवादृश श्रोते। काय धड्यावरी सारस्वतें। पढो सिकिजे।८। अवधार आवडे तेसणां धुंधुरु। परी महातेजीं न मिरवे काय करूं। अमृताचिया ताटीं वोगरूं। ऐसी रससोय कैंची।९। हां हो हिमकरासी विंजणे। कीं नादापुढें आइकवणें। लेणियासी लेणें। हें कंहीं आथी।१०। सांगों परिमळे काय तुरंबावें। सागरें कवणे ठायीं नाहावें। हे गगनचि आडे आघवें। ऐसा पवाडु कैंचा।११। तैसे तुमचे अवधान धाये। आणि तुम्ही म्हणां हें होये। ऐसें वक्तृत्व कवणा आहे। जेणें रिझा तुम्ही।१२। तरी विश्वप्रगटितिया गभस्ती। काय हातिवेन न कीजे आरती। कां चुळोदकें अपांपती। अर्घ्य नेदिजे।१३। प्रभु तुम्ही महेशाचिया मूर्ती। आणि मी दुबळा अर्चितसे भक्ती। म्हणोनि बोल जन्ही गंगावती। तऱ्ही स्वीकाराल कीं।१४। बाळक बापाचिये ताटीं रिगे। आणि बापातेंच जेववूं लागे। कीं तो संतोषलेनि वेगें। मुखचि वोढवी।१५। तैसा मी जरी तुम्हांप्रती। चावटी करीतसें बाळमती। तरी तुम्ही संतोषिजे ऐसी जाती। प्रेमाची असे।१६। आणि तेणें आपुलेपणाचेनि मोहे। तुम्ही संत घेतले असा बौहें। म्हणोनि केलिये सलगीचा नोहे। आभार तुम्हां।१७। अहो तान्हयाचें लागता झटें। तेणें अधिकचि पान्हा फुटे। रोषें प्रेम दुणवटे। पढियंतयाचेनि।१८। म्हणऊनि मज लेंकुरवाचेनि बोले। तुमचें कृपाळुपण निदैलें। तें चेइलें ऐसें जी जाणवलें। यालागीं बोलिलो मी।१९। येऱ्हवीं चांदिणें पिकविजत आहे चेपणीं। कीं वारया घापत आहे वाहणीं। हां हो गगनासि गवसणी। घालिजे केवीं।२०। आइका पाणी वोथिजावें न लगे। नवनीतीं माथुला न रिगे। तेवीं लाजिलें व्याख्यान निगे। देखोनि जयातें।२१। हें असो शब्दब्रह्म जिये बाजे। शब्द मावळलेया निवांत निजे। तो गीतार्थ मऱ्हाठिया बोलिजे। हा पाड काई।२२। परी ऐसियाही मज धिंवसा। तो पुढतीं याचि येकि आशा। जे धिटींवा करून भवादृशां। पढियंतया होआवें।२३। तरी आतां चंद्रापासोनि निववितें। जें अमृताहूनि जीववितें। तेणें अवधानें कीजे वाढतें। मनोरथा माझिया।२४। कां जैं दिठिवा तुमचा वरुषे। तैं सकळार्थसिद्धि मती पिके। येऱ्हवीं कोंभेला उन्मेष सुके। जरी उदास तुम्ही।२५। सहजें तरी अवधारा। वक्तृत्वा अवधानाचा होय चारा। तरी दोंदें पेलती अक्षरां। प्रमेयाचीं।२६। अर्थ बोलाची वाट पाहे। तेथ अभिप्रावोचि अभिप्रायातें विये। भावाचा फुलोरा होत जाये। मतिवरी।२७। म्हणूनि संवादाचा सुवावो ढळे। तऱ्ही हृदयाकाशा सारस्वत वोळे। आणि श्रोता दुश्चित तरी वितुळे। मांडला रस।२८। अहो चंद्रकांत द्रवता कीर होये। परि ते हातवटी चंद्रीं कीं आहे। म्हणऊनि वक्ता तो वक्ता नोहे। श्रोतेनिविण।२९। परी आतां आंमुतें गोड करावें। ऐसें तांदुळीं कासया विनवावें। साइखडियानें काइ प्रार्थावें। सूत्रधारातें।३०। तो काय बाहुलियांचिया काजा नाचवी। कीं आपुलिये जाणिवेची कळा वाढवीं। म्हणऊनि आम्हां या ठेवाठेवी। काय काज।३१। तंव श्रीगुरु म्हणती काइ जाहालें। हें समस्तही आम्हां पावले। आतां सांगें जें निरोपिलें। श्रीकृष्णदेवें।३२। तेथ संतोषोनि निवृत्तीदासें। जी जी म्हणऊनि उल्हासें। अवधारा श्रीकृष्ण ऐसें। बोलते जाहाले।३३।

श्रीभगवानुवाच– इदं तु ते गुह्यतमं प्रवक्ष्याम्यनसूयवे।
ज्ञानं विज्ञानसहितं यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात्।१।

ना तरी अर्जुना हें बीज। पुढती सांगिजेल तुज। जें हें अंतःकरणींचें गुज। जिवाचिये।३४। येणें मानें जिवाचें हियें फोडावें। मग गुज कां पां मज सांगावें। ऐसें काहीं स्वभावें। कल्पिशी जरी।३५। तरी परियेसीं गा प्राज्ञा। तूं आस्थेचीच संज्ञा। बोलिलिये गोष्टीची अवज्ञा। नेणसी करूं।३६। म्हणोनि गूढपण आपुलें मोडो। वरी न बोलणेंही बोलावें घडो। परी आमुचिये जीवीचें पडो। तुझ्या जीवीं।३७। अगा थानी कीर दूध गूढ। परी थानासींचि नव्हे कीं गोड। म्हणोनि सरो कां सेवितयाची चाड। जरी अनन्य मिळे।३८। मुडांहूनि बीज काढिलें। मग निर्वाळलिये भूमी पेरिलें। तरी तें सांडिविखुरीं गेलें। म्हणों हे काय।३९। यालागीं सुमन आणि शुद्धमती। जो अनिंदक अनन्यगती। पैं गा गौप्यही परी तयाप्रती। चावळिजे सुखें।४०। तरी प्रस्तुत आतां गुणीं इंहीं। तूंवाचून आणिक नाहीं। म्हणोनि गुज तरी तुझ्या ठायीं। लपवूं नये।४१। आतां किती नावानावा गुज। म्हणतां कानडें वाटेल तुज। तरी सांगेन ज्ञान सहज। विज्ञानेसीं।४२। परी तेंचि ऐसेनि निवाडें। जैसें भेसळलें खरें कुडें। मग

काढिजे फाडोवाडें। पारखूनियां।४३। कां चांचूचेनि सांडसें। सांडिजे पय पाणी राजहंसें। तुज ज्ञान विज्ञान तैसें। वांटूनि देऊं।४४। मम वारयाचिया धरसां। पडिन्नला कोंडा कां नुरेचि जैसा। आणि कणाचा आपैसा। राशिवा जोडे।४५। तैसें जें जाणितलेयासाठीं। संसार संसाराचिये गांठीं। लाऊनि बैसवी पाठीं। मोक्षश्रियेच्या।४६।

राजविद्या राजगुह्यं पवित्रमिदमुत्तमम्।
प्रत्यक्षावगमं धर्म्यं सुसुखं कर्तुमव्ययम्।२।

जें जाणणेयां सुविद्येच्या गांवीं। गुरुत्वाची आचार्य पदवी। जें सकळ गुह्यांचा गोसावी। पवित्रां रावो।४७। आणि धर्माचें निजधाम। तेवींचि उत्तमाचें उत्तम। पैं जया येता नाहीं काम। जन्मांतराचें।४८। मोटकें गुरुमुखें उदैजत दिसे। आणि हृदयीं स्वयंभूचि असे। प्रत्यक्ष फावों लागे तैसें। अपैसयाचि।४९। तेवींचि गा सुखाच्या पाउटीं। चढतां येइजे जयाच्या भेटीं। मग भेटल्या कीर मिठी। भोगणेयाहि पडे।५०। परी भोगाचिये ऐलीकडलिये मेरे। चित्त उभें ठेलें सुखभरें। ऐसें सुलभ आणि सोपारें। वरि परब्रह्म।५१। पैं गा आणिकही एक याचें। जें हाता आलिया तरी न वचे। आणि अनुभवितां कांहीं न वेचे। वरी विटेहि ना।५२। येथ जरी तूं तार्किका। ऐसी हन घेसी शंका। ना येवढी वस्तु हे लोकां। उरली केवीं पां।५३। जे एकोत्तरेयाचिया वाढी। जळतिये आगीं घालिती उडी। तें अनायासें स्वगोडी। सांडिती केवीं।५४। तरी पवित्र आणि रम्य। तेवींचि सुखोपाय सुगम्य। आणि सुसुख परम धर्म्य। वरी आपणपां जोडे।५५। ऐसा आघवाचि हा सुरवाड आहे। तरी जनाहातीं केवीं उरो लाहे। हा शंकेचा ठाव कीर होये। परी न धरावी तुवां।५६।

अश्रद्दधानाः पुरुषा धर्मस्यास्य परन्तप।
अप्राप्य मां निवर्तन्ते मृत्युसंसारवर्त्मनि।३।

पाहें पां दूध पवित्र आणि गोड। पासीं त्वचेचिया पदराआड। परी तें अव्हेरूनि गोचिड। अशुद्धचि सेवी।५७। कां कमलकंदा आणि दर्दुरी। नांदणूक एकेचि घरीं। परी पराग सेविजे भ्रमरीं। येरा चिखलचि उरे।५८। ना तरी निदैवाच्या परिवरीं। लोह्या रुतलिया आहाति सहस्रवरी। परि तेथ बसोनि उपवास करी। कां दरिद्रें जिये।५९। तैसां हृदयामध्यें मी राम। असतां सर्वसुखाचा आराम। कीं भ्रांतासी काम। विषयांवरी।६०। बहु मृगजळ देखोनि डोळां। थुंकिजे अमृताचा गिळितां गळाळा। तोडिला परिस बांधिला गळां। शुक्तिकालाभें।६१। तैसी अहंममतेचिये लवडसवडी। मातें न पवतीचि बापुडीं। म्हणोनि जन्ममरणाचिये दुथडीं। डहुळितें ठेलीं।६२। येऱ्हवीं मी तरी कैसा। मुखाप्रति भानु कां जैसा। केंही नसे न दिसे ऐसा। वाणीचा नोहें।६३।

मया ततमिदं सर्वं जगदव्यक्तमूर्तिना।
मत्स्थानि सर्वभूतानि न चाऽहं तेष्ववस्थितः।४।

माझेया विस्तारलेपणाचेनि नांवें। हें जगचि नोहे आघवें। जैसें दूध मुरालें स्वभावें। तरी तेंचि दही।६४। कां बीजचि जाहलें तरू। अथवा भांगारचि अळंकारु। तैसा मज एकाचा विस्तारु। तें हें जग।६५। हें अव्यक्तपणें थिजलें। तेंचि मग विश्वाकारें वोथिजलें। तैसें अमूर्त मूर्तिमय विस्तारलें। त्रैलोक्य जाणें।६६। महदादि देहांतें। इयें अशेषेंही भूतें। पैं माझ्या ठायीं बिंबितें। जैसे जळीं फेण।६७। परी तया फेनाआंत पाहतां। जेवीं जळ न दिसे पंडुसुता। ना तरी स्वप्नींची अनेकता। चेइलिया नोहिजे।६८। तैसीं भूतें इयें माझ्या ठायीं। बिंबती तयामाजि मी नाहीं। इया उपपत्ती तुज पाहीं। सांगितलिया मगां।६९। म्हणऊनि बोलिलिया बोलाचा अतिसो। न कीजे यालागीं हे असो। परी मज आंत पैसो। दिठी तुझी।७०।

न च मत्स्थानि भूतानि पश्य मे योगमैश्वरम्।
भूतभृन्न च भूतस्थो ममात्मा भूतभावनः।५।

आमुच्या प्रकृतीपैलीकडील भावो। जरी कल्पनेवीण लागसी पाहों। तरी मजमाजि भूतें हेंही वावो। जें मी सर्व म्हणउनी।७१। येऱ्हवीं संकल्पाचिये सांजवेळे। नावेक तिमिरेजती बुद्धीचे डोळे। म्हणोनि अखंडितचि परी झावळें। भूतभिन्न ऐसें देखे।७२। तेचि संकल्पाची सांज जैं लोपे। तैं अखंडितचि आहे स्वरूपें। जैसें शंका जातखेंवो लोपे। सापपण माळेचें।७३। येऱ्हवीं तरी भूमीआंतूनि स्वयंभ। काय घडेयांगाडगेयांचे निघती कोंभ। परी ते कुलालमतीचें गर्भ। उमटलें कीं।७४। ना तरी सागरींच्या पाणीं। काय तरंगांचिया आहाती खाणी। ते अवांतर करणी। वारयाची नव्हे।७५। पाहें पां कापसाच्या पोटीं। काय कापडाची होती पेटी। तो वेढितयाचिया दिठी। कापड जाहला।७६। जरी सोनें लेणें होऊनि घडे। तरी तयाचें सोनेपण न मोडे। येर अलंकार हे वरचिलीकडे। लेतयाचेनि भावें।७७। सांगें पडिसादाची प्रत्युत्तरें। कां आरिसा जें आविष्करें। ते आपले कीं साचोकारें। तेथेचि होतें।७८। तैसी इये निर्मळ माझ्या स्वरूपीं। जो भूतभावना आरोपी। तयासि तयाच्या संकल्पीं। भूताभास

असे ।७६। तेचि कल्पिती प्रकृति पुरे। तरी भूताभास आधींच सरें। मग स्वरूप उरे एकसरें। निखळ माझे ।८०। हें असो आंगीं भरलिया भवंडी। जैशा भोंवत दिसती अरडीदरडी। तैसीं आपुलिया कल्पना अखंडी। मग ती भूतें ।८१। तेचि कल्पना सांडूनि पाही तरी। मी भूतीं भूतें माझिया ठायीं। स्वप्नीही परी नाहीं। कल्पावयाजोगे ।८२। आतां मीच एक भूतांतें धर्ता। अथवां भूतांमाजि मी असतां। या संकल्पसन्निपाता॰। आंतुलिया बोलिया ।८३। म्हणोनि परियेसीं गा प्रियोत्तमा। यापरी मी विश्वेसीं विश्वात्मा। जो इया लटकिया भूताग्रामा। भाव्य सदा ।८४। रश्मीचेनि आधारें जैसें। नव्हतेंचि मृगजळ आभासे। माझ्या ठायीं भेदजात तैसें। आगि मातेंही भावी ।८५। मी येपरीचा भूतभावनु। परी सर्व भूतासि अभिन्नु। जैसे प्रभा आणि भानु। एकचि ते ।८६। हा आमुचा ऐश्वर्ययोग। तुवां देखिला कीं चांग। आतां सांगें काहीं एथ लाग। भूतभेदाचा असे ।८७। यालागीं मजपासूनि भूतें। आनें नव्हती हें निरुतें। आणि भूतांवेगळिया माते। कंहींच न मनीं हो ।८८।

यथाकाशस्थितो नित्यं वायुः सर्वत्रगो महान्।
तथा सर्वाणि भूतानि मत्स्थानीत्युपधारय ।६।

पैं गगन जेवढें जैसें। पवनहि गगनीं तेवढाचि असे। सहजें हालविया वेगळा दिसे। येऱ्हवीं गगन तेंचि तो ।८६। तैसें भूतजात माझ्या ठायीं। कल्पिजे तरी आभासे कांहीं। निर्विकल्पीं तरी नाहीं। तेथ मीचि मी आघवें ।६०। म्हणऊनि नाहीं आणि असे। हें कल्पनेचेनि सौरसें। जें कल्पनालोपें भ्रंशे। आणि कल्पनेसवें होय ।६१। तेंचि कल्पितें मुदल जाये। तैं असे नाहीं हें कें आहे। म्हणऊनि पुढती तूं पाहें। हा ऐश्वर्ययोग ।६२। ऐसिया प्रतीतिबोधसागरीं। तूं आपणेयातें कल्लोळ एक करीं। मग जंव पाहासी चराचरीं। तंव तूंचि आहासी ।६३। या जाणणेयाचा चेवो। तुज आला ना म्हणती देवो। तरी आतां द्वैत स्वप्न वावो। जालें कीं ना ।६४। तरी पुढती जरी विपायें। बुद्धीसि कल्पनेची झोंप ये। तरी अभेदबोधे जाये। जैं स्वप्नीं पडिजे ।६५। म्हणोनि ये निद्रेची वाट मोडे। निखिळ उद्बोधाचेंचि आपणपें घडे। ऐसें वर्म जें आहे फुडें। तें दावों आतां ।६६। तरी धनुर्धरा धैर्या। निकें अवधान देईं बा धनंजया। पैं सर्व भूतांतें माया। करी हरी गा ।६७।

सर्वभूतानि कौन्तेय प्रकृतिं यान्ति मामिकाम्।
कल्पक्षये पुनस्तानि कल्पादौ विसृजाम्यहम् ।७।

जिये नांव गा प्रकृती। जे द्विविध सांगितली तुजप्रती। एकी अष्टधा भेदव्यक्ती। दुजी जीवरूपा ।६८। हा प्रकृतीविखो आघवा। तुवां मागा परिसिलासे पांडवा। म्हणोनि असो काइ सांगावा। पुढतपुढती ।६६। तरी ये माझिये प्रकृती। महाकल्पाच्या अंती। सर्व भूतें अव्यक्तीं। ऐक्यासि येती ।१००। ग्रीष्माच्या अतिरसीं। सबीजें तृण जैसी। मागुती भूमीसी। सुलीनें होती ।१। कां वार्षिये ढेंढें फिटे। जेव्हां शारदीयेचा अनुघडु फुटे। जेव्हां घनजात आटे। गगनींचे गगनीं ।२। ना तरी आकाशाचें खोंपे। वायु निवांतचि लोपे। कां तरंगाकार हारपे। जळींजेवीं ।३। अथवा जागिनलिये वेळे। स्वप्न मनींचे मनीं मावळे। तैसें प्राकृत प्रकृतीं मिळे। कल्पक्षयीं ।४। मग कल्पादि पुढती। मीचि सृजी ऐसी वदंती। तरी इयेविषयीं निरुती। उपपत्ती आइक ।५।

प्रकृतिं स्वामवष्टभ्य विसृजामि पुनः पुनः।
भूतग्राममिमं कृत्स्नमवशं प्रकृतेर्वशात् ।८।

तरी हेचि प्रकृती किरीटी। मी स्वकीया सहजें अधिष्ठीं। तेथ तंतुसमवाय पटीं। जेवीं विणावणी दिसे ।६। मग तिये विवावणीचेनि आधारें। लाहाना चौकडिया पटत्व भरे। तैसी पंचात्मकें आकारें। प्रकृतीचि होय ।७। जैसें विरजणियाचेनि संगें। दूधचि आटेजों लागे। तैसी प्रकृती आंगा रिगे। सृष्टीपणाचिया ।८। बीज जळाची जवळीक लाहे। आणि तेचि शाखोपशाखीं होये। तैसें मज करणें आहे। भूतांचें हें ।६। अगा नगर हें रायें केले। या म्हणण्या साचपण कीर आले। परी निरुते पाहातां काय सिणले। रायाचे हात ।११०। आणि मी प्रकृंती अधिष्ठीं ते कैसें। जैसा स्वप्नीं जो असे। मग तोचि प्रवेशे। जागृतावस्थे ।११। तरी स्वप्नौनि जागृती येतां। काय पाय दुखती पंडुसुता। कीं स्वप्नामाजी असतां। प्रवास होय ।१२। या आघवियाचा अभिप्रावो कायी। जे हें भूतसृष्टीचें कांहीं। मज एकही करणें नाहीं। ऐसाचि अर्थ ।१३। जैसी राये अधिष्ठिली प्रजा। व्यापारे आपुलालिया काजा। तैसा प्रकृती संग माझा। येर करणें तें इयेचें ।१४। पाहें पां पूर्णचंद्राचिये भेटी। समुद्रीं अपार भरते दाटी। तेथ चंद्रासि काय किरीटी। उपखा पडे ।१५। जड परी जवळिका। लोह चळे तरी चळो कां। तरी कवण शीण भ्रामका। सन्निधानाचा ।१६। किंबहुना यापरी। मी निजप्रकृती अंगिकारी। आणि भूतसृष्टी एकसरी। प्रसवोचि लागे ।१७। जो हा भूतग्राम आघवा। असे प्रकृतीअधीन पांडवा। जैसी बीजाचिया वेलपालवा। समर्थ भूमी ।१८। ना तरी बाळादिकां वयसां। गोसावी देहसंग जैसा। अथवा घनावळी आकाशा। वार्षिये जेवी ।१६। कां स्वप्नासि कारण निद्रा। तैसी प्रकृति हे नरेंद्रा। या अशेषाहि भूतसमुद्रा।

गोसाविणी गा।१२०। स्थावरा आणि जंगमा। स्थूळा आणि सूक्ष्मा। हे असो भूतग्रामा। प्रकृतीचि मूळ।२१। म्हणोनि भूतें हन सृजावीं। कां सृजिलीं प्रतिपाळावीं। इयें करणीनें येती आघवी। आमुचिया आंगा।२२। जळीं चंद्रिकेचिया पसरती वेली। तें वाढी चंद्रे नाहीं केली। तेवीं मातें पावोनी ठेलीं। दूरी कर्मे।२३।

न च मां तानि कर्माणि निबध्नन्ति धनंजय।
उदासीनवदासीनमसक्तं तेषु कर्मसु।६।

आणि सुटलिया सिंधुजळाचा लोट। न शके धरूं सैंधवाचा घाट। तेवीं सकळ कर्मा मीच शेवट। तीं काय बांधतीं मातें।२४। धूमरजांची पिंजरी। वाजतिया वायूते जरी होकारी। कां सूर्यबिंबामाझारीं। आंधारें शिरे।२५। हें असो पर्वताचिये हृदयींचे। जेवीं पर्जन्यधारास्तव न खोचे। तेवीं कर्मजात प्रकृतीचे। न लगे मज।२६। येऱ्हवीं इयें प्रकृतिविकारीं। एक मीचि असें अवधारीं। परी उदासीनाचिया परी। करीं ना करवी।२७। जैसा दीप ठेविला परिवरीं। कवणातें नियमी ना निवारी। आणि कवण कवणिये व्यापारीं। राहाटें तेही नेणे।२८। तो जैसा कां साक्षिभूतु। गृहव्यापारप्रवृत्तिहेतु। तैसा भूतकर्मी अनासक्तु। मी भूतीं असें।२९। हा एकचि अभिप्रावा पुढतपुढती। काय सांगो बहुतां उपपत्ती। येथ एकहेळा सुभद्रापती। येतूलें जाण पां।१३०।

मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरम्।
हेतुनानेन कौंतेय जगद्विपरिवर्तते।१०।

जे लोकचेष्टां समस्ता। जैसा निमित्तमात्र का सविता। तैसा जगत्प्रभवीं पंडुसुता। हेतु मी जाणें।३१। कां जें मिया अधिष्ठिलिया प्रकृती। होती चराचराचिया संभूती। म्हणोनि मी हेतु हें उपपत्ती। घडे यया।३२। आतां येणें उजियेडें निरूतें। न्याहाळीं पां ऐश्वर्ययोगातें। जे माझ्या ठायीं भूतें। परी भूतीं मी नसे।३३। अथवा भूतें ना माझ्या ठायीं। आणि भूतांमाजि मी नाहीं। या खुणा तूं कंहीं। चुकों नको।३४। हें सर्वस्व आमुचे गूढ। परीं दाखविलें तुज उघड। आतां इंद्रियां देऊनि कवाड। हृदयीं भोगी।३५। हा दंश जंव न ये हाता। तंव माझें साचोकारपण पार्था। न सापडे गा सर्वथा। जेवीं तुषीं कण।३६। येऱ्हवीं अनुमानाचेनि पैसें। आवडे कीर कळलें ऐसे। परी मृगजळाचेनि वोलांशे। काय भूमी तिमे।३७। जें जाळ जळीं पांगिलें। तेथ चंद्रबिंब दिसे आतुडलें। परी थडिये काढूनि झाडिलें। तेव्हां बिंब कें सांगें।३८। तैसे बोलवरी वाचाबळें। वायांचि झकविजती प्रतीतीचे डोळे। मग साचोकारें बोधावेळें। आथि ना होइजे।३९।

अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुमाश्रितम्।
परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम्।११।

किंबहुना भवा बिहाया। आणि साचें चाड आथि जरी मियां। तरी तूं गा उपपत्ती इया। जतन कीजे।१४०। येऱ्हवीं दिठी वेधली कवळें। तै चांदिणियातें म्हणे पिवळें। तेवीं माझ्या स्वरूपीं निर्मळें। देखिती दोष।४१। ना तरी ज्वरें विटाळलें मुख। तें दुधातें म्हणे कडु विख। तेवीं अमानुषा मानुष। मानिती मातें।४२। म्हणऊनि पुढतपुढती धनंजया। झणें विसंबसी या अभिप्राया। जे इया स्थूलदृष्टीं वायां। जाइजेल गा।४३। पैं स्थूलदृष्टी देखती मातें। तेंचि न देखणें जाण निरुतें। जैसें स्वप्नींचेनि अमृतें। अमर नोहिजे।४४। एऱ्हवीं स्थूळदृष्टी मूढ। माते जाणती कीर दृढ । परी तें जाणणेंचि जाणणेया आड। रिगोनि ठाकें।४५। जैसा नक्षत्राचिया आभासा:। साठीं घात झाला तया हंसा। माजि रत्नबुद्धीचिया आशा। रिगोनियां।४६। सांगे गंगा या बुद्धी मृगजळ। ठाकोनि आलियाचे कवण फळ। काय सुरतरु म्हणोनि बाबुळ। सेविली करी।४७। हा निळयाचाचि दुसरा। या बुद्धी हात घातला विखारा। कां रत्नें म्हणोनि गारा। वेंची जेवीं।४८। अथवा निधान हें प्रगटलें। म्हणोनि खदिरांगार खोळे भरिले। कां सांउली नेणतां घातलें। कुहां सिंहें।४९। तेवीं मी म्हणोनि प्रपंची। जिहीं बुडी दिधली कृतनिश्चयाची। तिहीं चंद्रासाठीं जेवीं जळींची। प्रभा धरिली।१५०। तैसा कृतनिश्चय वाया गेला। जैसा कोणी एक कांजी प्याला। मग परिणाम पाहो लागला। अमृताचा।५१। तैसें स्थूळाकारीं नाशिवंतें। भरंवसा बांधोनि चित्तें। पाहती मज अविनाशातें। तरी कैचा दिसें।५२। अगा काइ पश्चिमसमुद्राचिया तटा। निघिजेत आहे पूर्विलिया वाटा। कां कोंडा कांडितां सुभटा। कण जोडे।५३। तैसें विकारलें हें स्थूळ। जाणितलेया मी जाणवतसें केवळ। काइ फेण पितां जळ। सेविलें होय।५४। म्हणोनि मोहिलेनि मनोधर्मे। हेंचि मी मानूनि संभ्रमें। मग येथींचीं जिये जन्मकर्मे। तियें मजचि म्हणती।५५। येतुलेनि अनामा नाम। मज अक्रियासी कर्म। विदेहासि देहधर्म। आरोपिती।५६। मज आकारशून्या आकार। निरुपाधिका उपचार। मज विधिवर्जिता व्यवहार। आचारादिक।५७। मज वर्णहीना वर्ण। गुणातीतासि गुण। मज अचरणा चरण। अपाणिया पाणी।५८। मज अमेया मान। सर्वगतासी स्थान। जैसें सेजेमाजी वन। निदेला देखे।५९। तैसें अश्रवणा श्रोत्र। मज अचक्षूसी नेत्र। अगोत्रा गोत्र। अरूपा रूप।१६०। मज अव्यक्तासि व्यक्ती। अनार्तासी आर्ती। स्वयंतृप्ता तृप्ती। भाविती गा।६१। मज अनावरणा प्रावरण। भूषणातीतासि भूषण। मज सकळकरणा कारण। देखती ते।६२। मज सहजातें

करिती। स्वयंभातें प्रतिष्ठिती। निरंतरातें आव्हानिती। विसर्जिती गा।६३। मी सर्वदा स्वतःसिद्ध। तो कीं बाळ तरुण वृद्ध। मज एकरूपा संबंध। जाणती ऐसे।६४। मज अद्वैतासि दुजे। मज अकर्तयासि काजें। मी अभोक्ता कीं भुंजे। ऐसें म्हणती।६५। मज अकुळाचे कुळ वानिती। मज नित्याचें निधनें शिणती। मज सर्वांतरातें कल्पिती। अरि मित्र गा।६६। मी स्वानंदाभिराम। तया मज अनेक सुखांचा काम। आघवाचि मी असें सम। कीं म्हणती एकदेशी।६७। मी आत्मा एक चराचरीं। म्हणती एकाचा कैपक्ष करीं। आणि कोपोनि एकातें मारी। हेंचि रूढविती।६८। किंबहुना ऐसे समस्त। जे हे मानुषधर्म प्राकृत। तयाचि नांव मी ऐसें विपरी। ज्ञान तयांचे।६९। जंव आकार एक पुढां देखती। तंव हा देव येणें भावें भजती। मग तोचि विघडलिया टाकिती। नाहीं म्हणोनि।१७०। मातें येणें येणें प्रकारें। जाणती मनुष्य ऐसेनि आकारें। म्हणऊनि ज्ञानचि तें आंधारें। ज्ञानासि करी।७१।

मोघाशा मोघकर्माणो मोघज्ञाना विचेतसः।
राक्षसीमासुरीं चैव प्रकृतिं मोहिनीं श्रिताः।१२।

यालागीं जन्मले ते मोघ। जैसे वार्षियेवीण मेघ। कां मृगजळाचें तरंग। दुरूनीचि पाहावे।७२। अथवा कोल्हेरीचे असिवार। ना तरी वोडंबरीचे अळंकार। कीं गंधर्वनगरीचे आबार। आभासती कां।७३। साबरी वाढिन्नल्या सरळा। वरी फळ नाहीं आंत पोकळा। कां स्तन जाले गळां। शेळिये जैसे।७४। तैसें मूर्खांचे तया जियालें। आणि धिग् कर्म तयांचें निपजलें। जैसें सावरी फळ आलें। घेपे ना दीजे।७५। मग जें कांहीं ते पढिन्नले। तें मर्कटें नारेळ तोडिले। कां आंधळ्याहातीं पडिलें। मोती जैसें।७६। किंबहुना तयांची शास्त्रें। जैसी कुमारीहातीं दिधली शस्त्रें। कां अशौच्या मंत्रें। बीजें कथिलीं।७७। तैसें ज्ञानजात तयां। आणि जें कांहीं आचरलें गा धनंजया। तें आघवेंचि गेलें वायां। जे चित्तहीन।७८। पैं तमोगुणाची राक्षसी। जे सुबुद्धीतें ग्रासी। विवेकाचा ठावच पुसी। निशाचरी जे।७९। तिये प्रकृती वरपडे जाले। म्हणऊनि चिंतेचेनि कपाटें गेले। वरी तामसीयेचे पडिले। मुखामाजी।१८०। जेथ आशेचिये लाळे। आंत हिंसा जीभ लोळे। तेवींचि असंतोषाचे चाकळे। अखंड चघळी।८१। जे अनर्थाचे कानवेरी। आवाळुवें चाटीत निघे बाहेरी। जे प्रमादपर्वतीचीं दरी। सदाचि मातली।८२। जेथ द्वेषाचिया दाढा। खसखसां ज्ञानाचा करिती रगडा। जे त्वगस्थि गवसणी मूढां। स्थूळबुद्धी।८३। ऐसे आसुरिये प्रकृतीचे तोंडीं। जे जालें गा भूतोंडी। ते बुडोनि गेले कुंडीं। व्यामोहाच्या।८४। एवं तमाजिये पडिलें गर्ते। न पविजतीचि विचाराचेनि हातें। हें असो ते गेले जेथें। ते शुद्धीचि नाहीं।८५। म्हणोनि असोत इयें वायाणीं। कायसी मूर्खांची बोलणी। वायां वाढविता वाणी। शिणेल हन।८६। ऐसें बोलिलें देवें। तेथ जी जी म्हणितलें पांडवें। आइकें जेथ वाचा विसवे। ते साधुकथा।८७।

महात्मानस्तु मां पार्थ दैवीं प्रकृतिमाश्रिताः।
भजन्त्यनन्यमनसो ज्ञात्वा भूतादिमव्ययम्।१३।

तरी जयाचे चोखटे मानसीं। मी होऊनि असें क्षेत्रसंन्यासी। जया निजेल्यातें उपासी। वैराग्य गा।८८। जयाचिया आस्थेचिया सद्भावा। आंत धर्म करी राणिवा। जयाचें मन ओलावा। विवेकासी।८९। जे ज्ञानगंगे नाहाले। पूर्णता जेऊनि धाले। जे शांतीसि झाले। पल्लव नवे।१९०। जें परिणामा निघाले कोंभ। जे धैर्यमंडपाचे स्तंभ। जे आनंदसमुद्रीं कुंभ। चुबुकळोनि भरिले।९१। जया भक्तीची येतुली प्राप्तीं। जे कैवल्यातें परतें सर म्हणती। जयांचिये लीलेमाजि नीती। जियाली दिसे।९२। जे आघवांची करणी। लेइलें शांतीचीं लेणीं। जयांचें चित्त गवसणी। व्यापका मज। ९३। ऐसें जे महानुभाव। दैविये प्रकृतीचें दैव। जे जाणोनियां सर्व। स्वरूप माझे।९४। मग वाढतेनि प्रेमें। मातें भजती जे महात्मे। परी दुजेपण मनोधर्में। शिवतलें नाहीं।९५। ऐसें मीच होऊनि पांडवा। करिती माझी सेवा। परी नवलाव तो सांगावा। असे आइक।९६।

सततं कीर्तयन्तो मां यतन्तश्च दृढव्रताः।
नमस्यन्तश्च मां भक्त्या नित्ययुक्ता उपासते।१४।

तरी कीर्तनाचेनि नटनाचें। नाशिले व्यवसाय प्रायश्चित्तांचे। जें नामचि नाहीं पापाचें। ऐसें केलें।९७। यमदमा अवकळा आणिली। तीर्थें ठायावरूनि उठविलीं। यमलोकींची खुंटिली। राहाटी आघवी।९८। यम म्हणे काय यमावें। दम म्हणे कवणातें दमावें। तीर्थें म्हणती काय खावें। दोष औषधासि नाहीं।९९। ऐसें माझेनि नामघोषें। नाहींचि करिती विश्वाचीं दुःखें। अवघे जगचि महासुखें। दुमदुमित भरलें।२००। ते पाहांटेवीण पाहावित। अमृतेवीण जीववित। योगेंवीण दावित। कैवल्य डोळां।१। परी राया रंका पाड धरूं। नेणती सानेयां थोरां कडसणी करूं। एकसरें आनंदाचें आवारूं। होत जगा।२। कंहीं एकाधेनि वैकुंठा जावें। तें तिंहीं वैकुंठचि केले आघवें। ऐसें नामघोषगौरवें। धवळलें विश्व।३। तेजें सूर्य तैसे सोज्ज्वळ। परी तोही अस्तवें हे किडाळ। चंद्र संपूर्ण एकादे वेळ। हे सदा पुरते।४। मेघ उदार

परी वोसरे। म्हणऊनि उपमेसि न पुरे। हे निःशंकपणें सपाखरे। पंचानन।५। जयांचे वाचेपुढां भोजें। अखंड नाम नाचत असे माझें। जें जन्मसहस्रीं वोळगिजे। एक वेळ यावया।६। तो मी वैकुंठीं नसें। वेळ एक भानुबिंबीही न दिसें। वरी योगियांचीही मानसें। उमरडोनि जाय।७। परीं तयांपासीं पांडवा। मी हारपला गिंवसावा। जेथ नामघोष बरवा। करिती माझा।८। कैसे माझ्या गुणीं धालें। देशकाळातें विसरलें। कीर्तनसुखें सुखावले। आपणपांचि।९। कृष्ण विष्णु हरि गोविंद। या नामांचे निखिल प्रबंध। माजी आत्मचर्चा विशद। उदंड गाती।२१०। हें बहु असो यापरी। कीर्तित मातें अवधारीं। एक विचरती चराचरीं। पांडुकुमरा।११। मग आणिक ते अर्जुना। साविया बहुवा जतना। पंचप्राण मना। पाढाउ घेउनी।१२। बाहेरीं यमनियमांची कांटी लाविली। आंत वज्रासनाची पौळी पन्नासिली। वरी प्राणायामाचीं मांडिलीं। वाहाती यंत्रें।१३। तेथ उल्हाटशक्तीचेनि उजिवडें। मनपवनाचेनि सुरवाडें। सतरावियेचें पाणियाडे। बळाविलें।१४। तेव्हां प्रत्याहार ख्याती केली। विकारांची संपली बोहली। इंद्रियें बांधोनि आणिलीं। हृदयाआंत।१५। तंव धारणावारूं दाटिलें। महाभूतांतें एकवटिलें। मग चतुरंग सैन्य निवटिलें। संकल्पांचे।१६। तयावरी जैत रे जैत। म्हणोनि ध्यानाचें निशाण वाजत। दिसे तन्मयाचें झळकत। एकछत्र।१७। पाटीं समाधिश्रियेचा अशेखा। आत्मानुभवराज्यसुखा। पट्टाभिषेक देखा। समरसें जाहाला।१८। ऐसें हें गहन। अर्जुना माझे भजन। आतां ऐकें सांगेन। जे करिती एक।।१९। तरी दोन्ही पालववेरीं। जैसा एक तंतू अंबरी। तैसा मीवांचूनि चराचरीं। जाणती ना।२२०। आदि ब्रह्मा करूनी। शेवटीं मशक धरूनी। माजी समस्त हें जाणोनी। स्वरूप माझें।२१। मग वाड धाकुटें न म्हणती। सजीव निर्जीव नेणती। देखिलिये वस्तु उजूं लुंटिती। मीचि म्हणोनि।२२। आपलें उत्तमत्व नाठवे। पुढील योग्यायोग्य नेणवे। एकसरें व्यक्तिमात्राचेनि नांवें। नमूंचि आवडे।२३। जैसें उंचीहूनि उदक पडिलें। तें तळवटवरी येऊं लागलें। तैसें नमिजे भूतजात देखिलें। ऐसा स्वभावचि तयांचा।२४। कां फळतिया तरूची शाखा। सहजें भूमिसी उतरें देखा। तैसें जीवमात्रा अशेखां। खालावती ते।२५। अखंड अगर्वता होऊनि असती। तयांची विनय हेचि संपत्ती। जयजयमंत्रें अर्पिती। माझ्या ठायीं।२६। नमितां मानापमान गळाले। म्हणोनि अवचिता मीचि जाहाले। ऐसें निरंतर मिसळले। उपासिती।२७। अर्जुना हे गुरुवी भक्ती। सांगीतली तुजप्रती। आतां ज्ञानयज्ञें यजिती। ते भक्त आइकें।२८। परी भजन करती हातवटी। तूं जाणत आहासि किरीटी। जे मागां इया गोष्टी। केलिया आम्हीं।२९। तंव आथिजी अर्जुन म्हणे। हें दैविकियाप्रसादाचें करणें। तरी काय अमृताचें आरोगणें। पुरे म्हणवेल।२३०। या बोला श्रीअनंतें। लागटा देखिलें तयातें। कीं सुखावलेनि चित्तें। डोलत असे।३१। म्हणे भलें केलें पार्था। येऱ्हवीं हा अनवसर सर्वथा। परी बोलवितसे आस्था। तुझी मातें।३२। तंव अर्जुन म्हणे हें कायी। चकोरेंवीण चांदिणेचि नाहीं। जगचि निवविजे हा तयाच्या ठायीं। स्वभावो कीं जी।३३। येरें चकोरें तिये आपुलिये चाडे। चांचू करिती चंद्राकडे। तेवीं आम्ही विनवूं तें थोकडें। देवो कृपासिंधू।३४। जी मेघ आपुलिये प्रौढी। जगाची आर्ती दवडी। वांचूनि चातकाची ताहान केवढी। तो वर्षाव पाहुनी।३५। परी चुळा एकाचिया चाडे। जेवी गंगेतेचि ठाकणें पडे। तेवीं आर्त बहु कां थोडे। तरी सांगावे देवें।३६। तेथें देवे म्हणितलें राहें। जो संतोष आम्हां जाहाला आहे। तयावरी स्तुती साहे। ऐसें उरलें नाहीं।३७। पैं परिसतु आहासि निकियापरी। तेंचि वक्तृत्वा वऱ्हाडी करी। ऐसें पुरस्करोनि श्रीहरी। आदरिलें बोलों।३८।

ज्ञानयज्ञेन चाप्यन्ये यजन्तो मामुपासते।
एकत्वेन पृथक्त्वेन बहुधा विश्वतोमुखम्।१५।

तरी ज्ञानयज्ञ तो एवंरूप। जेथ आदिसंकल्प हा यूप। महाभूतें मंडप। भेद तो पशू।३९। मग पाचांचें जे विशेष गुण। अथवा इंद्रियें आणि प्राण। हेचि यज्ञोपचारभरण। अज्ञान घृत।२४०। तेथ मनबुद्धीचिया कुंडाः। आंत ज्ञानाग्नि धडफुडा। साम्य तेचि सुहाडा। वेदिका जाणे।४१। सविवेकमतिपाटव। तेचि मंत्र विद्यागौरव। शांति स्रुक्स्रुव। जीव यज्वा।४२। तो प्रतीतीचेनि पात्रें। विवेकमहामंत्रें। ज्ञानाग्निहोत्रें। भेद नाशी।४३। तेथ अज्ञान सरोनि जाये। आणि यजिता यजन हें ठाये। आत्मसमरसीं न्हाये। अवभृथीं जेव्हां।४४। तेव्हां भूतें विषय करणें। हें वेगळालें काहीं न म्हणें। आघवें एकचि ऐसें जाणे। आत्मबुद्धि।४५। जैसा चेइला तो अर्जुना। म्हणे स्वप्नींची हे विचित्र सेना। मीचि जाहालो होतो ना। निद्रावशें।४६। आतां सेना ते सेना नव्हे। हें मीचि एक आघवें। ऐसें एकत्वें मानवे। विश्व तयां।४७। मग तो जीव हे भाष सरे। आब्रह्म परमात्मबोधें भरे। ऐसे भजती ज्ञानाध्वरें। एकत्वें येणें।४८। अथवा अनादि हें अनेक। जें आनासारिखें एका एक। आणि नामरूपादिक। तेंही विषम।४९। म्हणोनि विश्व भिन्न भिन्न। परी न भेदे तयाचें ज्ञान। जैसे अवयव तरी आन आन। परी एकेचि देहींचे।२५०। कां शाखा सानिया थोरा। परी आहाति एकाचि तरुवरा। बहु रश्मि परी दिनकरा। एकाचे जेवीं।५१। तेवीं नानाविधा व्यक्ती। आनानें नामें आनानी वृत्ती। ऐसें जाणती भेदलां भूतीं। अभेदा मातें।५२। येणें वेगळालेपणें पांडवा। करिती ज्ञानयज्ञ बरवा। जे न भेदती जाणिवा। जाणते म्हणउनि।५३। ना तरी जेधवां चिये ठायीं। देखती कां जें जें काहीं। ते मीवांचूनि नाहीं। ऐसाचि बोध।५४। पाहें पां बुडबुडा जेउता जाये। तेउतें जळ तया एक आहे। मग विरे अथवा राहे। तऱ्ही जळाचिमाजी।५५। कां पवनें परमाणु

उचलले। ते पृथ्वीपणावेगळे नाहीं गेले। आणि माघौते जरी पडले। तरी पृथ्वीचिवरुते।५६। तैसें भलतेथ भलतेणें भावें। भलतेही हो अथवा नोहावें। परी तें मी ऐसें आघवें। होऊनि ठेलें।५७। अगा हे जेव्हडी माझी व्याप्ती। तेव्हडीचि तयांची प्रतीती। तैसें बहुधाकारीं वर्तती। मीचि होऊनी।५८। हें भानुबिंब आवडे तया। संमुख जैसे धनंजया। तैसे तें विश्वा इया। समोर सदा।५९। अगा तयांचिया ज्ञाना। पाठी पोट नाहीं अर्जुना। वायु जैसा गगना। सर्वांगी असे।२६०। तैसा मी जेतुला आघवा। तेंचि तुक तयांचिया सद्भावा। तरी न करितां पांडवा। भजन जाहालें।६१। येऱ्हवीं तरी सकळ मीचि आहें। तरी कवणीं कें उपासिला नोहें। एथ एकें जाणणेवीण ठाये। अप्राप्तीसी।६२। परी तें असों येणे उचितें। ज्ञानयज्ञें यजितसांते। उपासिती मातें। तें सांगितलें।६३। अखंड सकळ हें सकळां मुखीं। सहज अर्पत असे मज एकीं। कीं नेणणें यासाठीं मूर्खीं। न पविजेचि मातें।६४।

अहं क्रतुरहं यज्ञः स्वधाऽहमहमौषधम्।
मंत्रोऽहमहमेवाज्यमहमग्निरहं हुतम्।१६।

तोचि जाणिवेचा जरी उदय होये। तरी मुदल वेद मीचि आहें। आणि तो विधानातें जया वियें। तो क्रतुही मिचि।६५। मग तया कर्मापासूनि बरवा। जो सांगोपांग आघवा। यज्ञ प्रगटे पांडवा। तोही मी गा।६६। स्वाहा मी स्वधा। सोमादि औषधी विविधा। आज्य मी समिधा। मंत्र मी हवि।६७। होता मी हवन कीजे। तेथ अग्नि तो स्वरूप माझें। आणि हुतवस्तु जें जें। तेंही मीचि।६८।

पिताऽहमस्य जगतो माता धाता पितामहः।
वेद्यं पवित्रमोंकार ऋक् साम यजुरेव च।१७।

पैं जयाचेनि अंगसंगें। इये प्रकृतीस्तव अष्टांगें। जन्म पाविजत असे जगें। तो पिता मी गा।६९। अर्धनारीनटेश्वरीं। जो पुरुष तोचि नारी। तेवीं मी चराचरीं। माताही होय।२७०। आणि जाहालें जग जेथ राहे। जेणें जीवित वाढत आहे। तें मीवांचूनि नोहे। आन निरुतें।७१। इयें प्रकृतिपुरुषें दोन्ही। उपजलीं जयाचिया अमनमनीं। तो पितामह त्रिभुवनीं। विश्वाचा मी।७२। आणि आघवेया जाणणेयाचिया वाटा। जया गांवा येती गा सुभटा। वेदांचिया चोहटां। वेद्य जे म्हणिजे।७३। जेथ नाना मतां बुझावणी आली। एकमेकां शास्त्रांची अनोळखी फिटली। चुकलीं ज्ञानें जेथ मिळो आलीं। जें पवित्र म्हणिजे।७४। पैं ब्रह्मबीजा जाहला अंकुर। घोषध्वनीनादाकार। तयाचें गा भवन जो ओंकार। तोही मी गा।७५। जया ओंकाराचिये कुशी। अक्षरें होती अउमकारेंसीं। जियें उपजत वेदेंसीं। उठली तीन्ही।७६। म्हणोनि ऋग् यजुः साम। हे तीन्ही म्हणे मी आत्माराम। एवं मीचि कुलक्रम। शब्दब्रह्माचा।७७।

गतिर्भर्ता प्रभुः साक्षी निवासः शरणं सुहृत्।
प्रभवः प्रलयः स्थानं निधानं बीजमव्ययम्।१८।

हें चराचर आघवें। जिये प्रकृतीआंत सांठवे। ते शिणली जेथ विसंवे। ते परम गती मी।७८। आणि जयाचेनि प्रकृती जिये। जेणें अधिष्ठिली विश्व विये। जो येऊनि प्रकृती इये। गुणातें भोगी।७९। तो विश्वश्रियेचा भर्ता। मीचि गा एथ पंडुसुता। मी गोसावी समस्ता। त्रैलोक्याचा।२८०। आकाशें सर्वत्र वसावें। वायूनें नावभरी उगें नसावें। पावकें दाहावें। वर्षावें जळें।८१। पर्वतीं बैसका न संडावी। समुद्रीं रेखा नोलांडावी। पृथ्वीया भूतें वाहावीं। हे आज्ञा माझी।८२। म्यां बोलविल्या वेद बोले। म्यां चालविल्या सूर्य चाले। म्यां हालविल्या प्राण हाले। जो जगातें चाळिता।८३। मियांचि नियमिलासांता। काल ग्रासीतसे भूतां। इयें म्हणियागतें पांडुसुता। सकळें जयाचीं।८४। जो ऐसा समर्थ। तो मी जगाचा नाथ। आणि गगनाऐसा साक्षिभूत। तोही मीचि।८५। इंहीं नामरूपीं आघवा। जो भरला असे पांडवा। आणि नामरूपांचाही वोल्हावा। आपणचि जो।८६। जैसे जलाचे कल्लोळ। आणि कल्लोळीं आथी जळ। ऐसेनि वसवीतसे सकळ। तो निवास मी।८७। जो मज होय अनन्यशरण। त्याचें निवारी मी जन्ममरण। यालागीं शरणागता शरण्य। मीचि एक।८८। मीचि एक अनेकपणें। वेगळालेनि प्रकृतिगुणें। जीत जगाचेनि प्राणें। वर्तत असें।८९। जैसा समुद्र थिल्लर न म्हणतां। भलतेथ बिंबे सविता। तैसा ब्रह्मादि सर्वां भूतां। सुहृद तो मी।२९०। मीचि गा पांडवा। या त्रिभुवनासि वोलावा। सृष्टिक्षयप्रभवा। मूळ तें मी।९१। बीज शाखांतें प्रसवे। मग तें रूखपण बीजीं समावे। तैसें संकल्पें होय आघवें। पाठीं संकल्पीं मिळे।९२। ऐसें जगाचें बीज संकल्प। अव्यक्त वासनारूप। तया कल्पांतीं जेथ निक्षेप। होय तें मी।९३। इये नामरूपें लोटती। वर्णव्यक्ती आटती। जातीचे भेद फिटती। जैं आकार नाहीं।९४। तैं संकल्पवासनासंस्कार। माघौते रचावया आकार। जेथ राहोनी असती अमर। तें निधान मी।९५।

तपाम्यहमहं वर्षं निगृह्णाम्युत्सृजामि च।
अमृतं चैव मृत्युश्च सदसच्चाहमर्जुन।१९।

मी सूर्याचेनि वेषें। तपें तैं हें शोषे। पाठीं इंद्र होऊनि वर्षे। तैं पुढती भरे।९६। अग्नि काष्ठें खाये। तें काष्ठचि अग्नि होये। तैसें मरतें मारितें पाहें। स्वरूप माझें।९७। यालागीं मृत्युच्या भागीं जें जें। तें तेंही पैं रूप माझें। आणि न मरतें तंव सहजें। मीचि आहे।९८। आतां बहु बोलोनि काय सांगावें। तें एकेहेळां घे पां आघवें। तरी सतासतही जाणावें। मीचि पैं गा।९९। म्हणोनि अर्जुन मी नसें। ऐसा कवण ठाव असे। परी प्राणियांचें दैव कैसें। जे न देखती मातें।३००। तरंग पाणियेवीण सुकती। रश्मि वातिवीण न देखती। तैसे मीचि ते मी नोहती। विस्मो देखें।१। हें आंतबाहेर मियां कोंदलें। जग निखिल माझेंचि वोतिलें। कीं कैसें कर्म तया आड आलें। जे मीचि नाहीं म्हणती।२। परी अमृतकुहां पडिजे। कां आपणपयातें कडिये काढिजे। ऐसे अर्थी काय कीजे। अप्राप्तासी।३। ग्रासा एका अन्नासाठीं। अंध धांवताहे किरीटी। आडळला चिंतामणि पायें लोटी। आंधळेपणें।४। तैसें ज्ञान जैं सांडूनि जाये। तैं ऐसी हे दशा आहे। म्हणोनि कीजे तें केलें नोहे। ज्ञानेंविण।५। आंधळेया गरुडाचे पांख आहाती। ते कवणा उपेगा जाती। तैसे सत्कर्माचे उपखे ठाती। ज्ञानेंविण।६।

त्रैविद्या मां सोमपाः पूतपापा यज्ञैरिष्ट्वां स्वर्गतिं प्रार्थयन्ते।
ते पुण्यमासाद्य सुरेंद्रलोकमश्नंति दिव्यान्दिवि देवभोगान्।२०।

देख पां गा किरीटी। आश्रमधर्माचिया राहाटी। विधिमार्गा कसवटी। जे आपणची होती।७। यजन करितां कौतुकें। तिहीं वेदांचा माथा तुके। क्रिया फळेंसीं उभी ठाके। पुढां जया।८। ऐसें दीक्षित जे सोमप। जे आपणचि यज्ञाचें स्वरूप। तिहीं तया पुण्याचेनि नांवें पाप। जोडिलें देखें।९। जे श्रुतित्रयातें जाणोनि। शतवरी यज्ञ करूनि। यजिलिया मातें चुकोनि। स्वर्गा वरिती।३१०। जैसें कल्पतरुतळवटीं। बैसोनि झोळिये देतसे गांठी। मग निदैव निघे किरीटी। दैन्यचि करूं।११। तैसें शतक्रतु यजिलें मातें। कीं ईप्सितातित स्वर्गसुखातें। आता पुण्य कीं हें निरुतें। पाप नोहे।१२। म्हणोनि मजवीण पाविजे स्वर्ग। तो अज्ञानाचा पुण्यमार्ग। ज्ञानिये तयातें उपसर्गः। हानि म्हणती।१३। येऱ्हवीं तरी नरकींचे दुःख। पावोनि स्वर्गा नाम कीं सुख। वांचूनि नित्यानंद गा निर्दोख। तें स्वरूप माझें।१४। मज येतां पै सुभटा। या द्विविधा गा अव्हांटा। स्वर्ग नरक या वाटा। चोरांचिया।१५। स्वर्गा पुण्यात्मकें पापें येइजे। पापात्मकें पापें नरका जाइजे। मग मातें जेणें पाविजे। तें शुद्ध पुण्य।१६। आणि मजचिमाजी असतां। जेणें मी दुऱ्हावें पांडुसुतां। तें पुण्य ऐसें म्हणतां। जीभ न तुटे काई।१७। परी हें असो आतां प्रस्तुत। ऐकें यापरी जे दीक्षित। यजूनि मातें याचित। स्वर्गभोग।१८। मग मी न पविजे ऐसें। जें पापरूप पुण्य असे। तेणें लाधलेनि सौरसें। स्वर्गा येती।१९। जेथ अमरत्व हें सिंहासन। ऐरावतासारखें वाहन। राजधानीभुवन। अमरावतीं।३२०। जेथ महासिद्धींची भांडारे। अमृताची कोठारें। जिये गांवीं खिल्लारें। कामधेनूंचीं।२१। जेथ वोळगे देव पाइका। सैंध चिंतामणीचिया भूमिका। विनोदवनवाटिका। सुरतरूंचिया।२२। गंधर्व गात गाणी। जेथ रंभेऐशिया नाचणी। उर्वशी मुख्य विलासिनी। अंतोरिया।२३। मदन वोळगे शेजारें। जेथ चंद्र शिंपे सांबरें। पवनाऐसे म्हणियारे। धांवणे जेथ।२४। पैं बृहस्पती मुख्य आपण। ऐसे स्वस्तीश्रियेचे ब्राह्मण। भाटिवेचे सुरगण। बहुवस जेथें।२५। लोकपाळरांगेचे। राउत जिये पदवीचे। उच्चैःश्रवा खांचे। खोलणिये।२६। हें असो बहु ऐसे। भोग इंद्रसुखासरिसे। ते भोगीजती जंव असे। पुण्यलेश।२७।

ते तं भुक्त्वा स्वर्गलोकं विशालं क्षीणेपुण्ये मर्त्यलोकं विशंति।
एवं त्रयीधर्ममनुप्रपन्ना गतागतं कामकामा लभंते।२१।

मग तया पुण्याची पाउठी सरे। सवेंचि इंद्रपणाची उटी उतरे। आणि येऊं लागती माघारें। मृत्युलोका।२८। जैसा वेश्याभोगीं कवडां वेंचे। मग दारही चेपूं न ये तियेचे। तैसें लाजिरवाणें दीक्षितांचें। काय सांगों!।२९। एवं थितिया मातें चुकलें। जिंहीं पुण्यें स्वर्ग कामिले। तयां अमरपण तें वावों आलें। अंती मृत्युलोक।३३०। मातेचिया उदरकुहरीं। पचूनि विष्ठेच्या दाथंरीं। उकडूनि नवमासवरी। जन्मजन्मोनि मरती।३१। अगा स्वप्नीं निधान फांवे। परी चेईलिया हारपे आघवें। तैसे स्वर्गसुख जाणावें। वेदज्ञाचें।३२। अर्जुना वेदविद जऱ्ही जाहला। तरी मातें नेणता वायां गेला। कण सांडूनि उपणिला। कोंडा जैसा।३३। म्हणऊनि मज एकेंविण। हें त्रयीधर्म अकारण। आतां मातें जाणोनि कांहीं नेण। तूं सुखिया होसी।३४।

अनन्याश्चिंतयंतो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।

पैं सर्वभावेसीं उखितें। जे वोपिले मज चित्तें। जैसा गर्भगोळ उद्यमातें। कोण्याही नेणे।३५। तैसा मीवाचूनि कांहीं। आणीक गोमटेंचि नाहीं। मजचि नाम पाहीं। जिणेया ठेविलें।३६। ऐसे अनन्यगतिकें चित्तें। चिंतितसांते मातें। जे उपासिती तयांतें। मीचि सेवी।३७। तें एकवटूनि जिये क्षणीं। अनुसरले गा माझिये वाहणीं। तेव्हांचि तयांची चिंतवणी। मजचि पडली।३८। मग तिहीं जें जें करावें। तें मजचि पडलें आघवें। जैसी अजातपक्षाचेनि जीवें। पक्षिणी जिये।३९। आपुली तहान भूक नेणे। तान्हया निकें तें माउलीसचि करणें। तैसें अनुसरलें मज प्राणें। तयांचे सर्व मी करी।३४०। तयां माझिया सायुज्याची चाड। तरी तेंचि पुरवी कोड। का सेवा म्हणती तरी आड। प्रेम सुयें।४१। ऐसा मनीं जो जो धरिती भावो। तो पुढां पुढां लागें तयां देवों। आणि दिधलीयाचा निर्वाहो। तोही मीचि करी।४२। हा योगक्षेम आघवा। तयांचा मजचि पडिला पांडवा। जयांचिया सर्वभावा। आश्रय मी।४३।

येप्यन्यदेवताभक्ता यजंते श्रद्धयान्विताः।
तेऽपि मामेव कौंतेय यजंत्यविधिपूर्वकम्।२३।

आतां आणिकही संप्रदायें। परी मातें नेणती समवायें। जे अग्निइंद्रसूर्यसोमांये। म्हणउनि यजिती।४४। तेंही कीर मातेंचि होये। कां जें हें आघवें मीचि आहें। परी ते भजती उजरी नव्हे। विषम पडे।४५। पाहें पां शाखा पल्लव रुखाचे। हे काय नव्हती एकाचि बीजाचे। परी पाणी घेणें मुळाचें। तें मुळींचि घापे।४६। कां दहाही इंद्रिये आहाती। इयें जरी एकचि देहींचीं होती। आणि इंहीं सेविले विषय जाती। एकाचि ठायां।४७। तरी करोनि रससोय बरवी। कानीं केवीं भरावी। फुलें आणोनि तुरंबावीं। डोळां केवीं।४८। तेथ रस तो मुखेंचि सेवावा। परिमळ तो घ्राणेचि घ्यावा। तैसा मी तो यजावा। मीचि म्हणोनि।४९। येर मातें नेणोनि भजन। तें वायाचि गा आनेंआन। म्हणोनि कर्माचे डोळे ज्ञान। तें निर्दोष होआवें।३५०।

अहं हि सर्वयज्ञानां भोक्ता च प्रभुरेव च।
न तु मामभिजानंति तत्त्वेनातश्च्यवंति ते।२४।

येऱ्हवीं पाहें पां पांडुसुता। या यज्ञोपहारां समस्तां। मीवांचूनि भोक्ता। कवण आहे।५१। मी सकळां यज्ञांची आदि। आणि यजना यया मीचि अवधि। कीं मातें चुकोनि दुर्बुद्धि। देवां भजले।५२। गंगेचें उदक गंगे जैसें। अर्पिजे देवपितरोद्देशें। माझे मज देती तैसें। परी आनानीं भावीं।५३। म्हणऊनि ते पार्था। मातें न पवतीचि सर्वथा। मग मनीं वाहिली जे आस्था। तेथ आले।५४।

यांति देवव्रता देवान्पितृन्यांति पितृव्रताः।
भूतानि यांति भूतेज्या यांति मद्याजिनोऽपि माम्।२५।

मनें वाचा करणीं। जयांचिया भजनीं देवांचिया वाहणीं। ते शरीर जातियेक्षणीं। देवचि जाळे।५५। अथवा पितरांची व्रतें। वाहती जयांचीं चित्तें। जीवित सरलिया तयांतें। पितृत्व वरी।५६। का क्षुद्रदेवतादि भूतें। तियेंचि जयांचीं परमदैवतें। जिंही अभिचारिकीं तयांतें। उपासिलें।५७। तयां देहाची जवनिका फिटली। आणि भूतत्वाची प्राप्ति जाहाली। एवं संकल्पवशें फळलीं। कर्में तयां।५८। मग मीचि डोळां देखिला। जिंहीं कानीं मीचि ऐकिला। मीचि मनीं भाविला। वानिला वाचा। ५९। सर्वांगी सर्वां ठायीं। मीचि नमस्कारिला जिंहीं। दानपुण्यादिकें जें कांहीं। तें माझियाचि मोहरां।३६०। जिंहीं मातेंचि अध्ययन केलें। जे आतबाहेरी मियांचि धालें। जयांचे जीवित्व जोडलें। मजचिलागीं।६१। जे अहंकार वाहत आंगीं। आम्ही हरीचे भूषावयालागीं। जे लोभिये एकचि जागीं। माझेनि लोभें।६२। जें माझेनि कामें सकाम। जे माझेनि प्रेमें सप्रेम। जे माझिया भुली सभ्रम। नेणती लोक।६३। जयांची जाणती मजचि शास्त्रें। मी जोडे जयांचेनि मंत्रे। ऐसे जे चेष्टामात्रें। भजले मज।६४। ते मरणा ऐलीचकडे। मज मिळोनि गेले फुडे। मग मरणीं आणिकीकडे। जातील केवीं।६५। म्हणोनि मद्याजी जे जाहाले। ते माझिया सायुज्या आले। जिंहीं उपचारमिषें दिधलें। आपणपें मज।६६। अर्जुना माझे ठायीं। आपणपेंवीण सौरस नाहीं। मी उपचारें कवणाहीं। नाकळे गा।६७। एथ जाणीव करी तोचि नेणें। आथिलेपण मिरवी तेंचि उणें। आम्ही जाहालो ऐसें जो म्हणे। तो कांहींच नव्हे।६८। अथवा यज्ञदानादि किरीटी। का तपें हन जे हुटहुटी। ते तृणा एकासाठीं। न सरे एथ।६९। पाहें पां जाणिवेचेनि बळें। कोण्ही वेदांपासूनि आगळें?। कीं शेषाहूनि तोंडाळें। बोलकें आथी?।३७०। तोही आंथरुणातळवटीं दडे। येरु नेति नेति म्हणोनि बहुडे। एथ सनकादिक वेडे। पिसे जाहाले।७१। करितां तापसांची कडसणी। कवण जवळां ठेविजे शूलपाणी। तोहि अभिमान सांडूनि पायवणी। माथां वाहे।७२। नातरी आथिलेपणें सरिशी। कवणी आहे लक्ष्मियेऐसी। श्रियेसारिखिया दासी। घरीं जियेतें।७३। तियां खेळतां करितीं घरकुलीं। तयां नामें अमरपुरें जरी ठेविली। तरी न होती काय बाहुलीं। इंद्रादिक तयांची?।७४। तिया नावडोनि जेव्हां मोडती। तेव्हां महेंद्राचे रंक होती। तिया जिया झाडाकडे पाहाती। ते कल्पवृक्ष।७५। ऐसिया जियेचिया जवळिका। सामर्थ्य

घरीचिया पाइका। ते लक्ष्मी मुख्यनायका। न मनेचि एथ ।७६। मग सर्वस्वें करूनी सेवा। अभिमान सांडूनि पांडवा। ते पाय धुवावयाचिया दैवा। पात्र जाहाली ।७७। म्हणोनि थोरपण पऱ्हां सांडिजे। एथ व्युत्पत्ती आघवी विसरिजे। जैं जगा धाकुटें होइजे। तैं जवळीक माझी ।७८। अगा सहस्रकिरणाचिये दिठी। पुढां चंद्रही लोपे किरीटी। तेथ खद्योत कां हुटहुटी। आपुलेनि तेजे ।७९। तैसें लक्ष्मियेचें थोरपण न सरे। जेथ शंभूचेंही तप न पुरे। तेथ येर प्राकृत हेंदरें। केवीं जाणों लाहे ।३८०। यालागीं शरीरसांडोवा कीजे। सकळ गुणांचें लोण उतरिजे। संपत्तिमद सांडिजे। कुरवंडी करूनी ।८१।

पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति।
तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः ।२६।

मग निःसीमभावउल्हासें। मज अर्पावयाचेनि मिसें। फळ एक आवडे तैसें। भलतयाचें हो ।८२। भक्त माझियाकडे दावी। आणि मी दोन्ही हात वोडवीं। मग देठ न फेडितां सेवीं। आदरेसीं ।८३। पैं गा भक्तीचेनि नावें। फूल एक मज द्यावें। तें लेखें परी म्या तुरंबावें। परी मुखींचि घाली ।८४। हें असो कायसी फुलें। पानचि एक आवडतें जाहालें। तें साजुकही न हो सुकलें। भलतैसें ।८५। परी सर्वभावे भरलें देखें। आणि भुकेला अमृतें तोखें। तैसें पत्रचि परी तेणें सुखें। आरोगूं लागें ।८६। अथवा ऐसेही एक घडे। जे पालाही परी न जोडे। तरी उदकाचें तंव सांकडें। नव्हेल कीं ।८७। तें भलतेथ निमोलें। न जोडिता आहे जोडलें। तेंचि सर्वस्व करूनि अर्पिलें। जेणें मज ।८८। तेणें वैकुंठापासोनि विशाळें। मजलागीं केलीं राऊळें। कौस्तुभाहोनि निर्मळें। लेणी दिधलीं ।८९। दुधाचीं सेजारें। क्षीराब्धीऐसीं मनोहरें। मजलागी अपारें। सृजिलीं तेणें ।३९०। कर्पूर चंदन अगरु। ऐसेया सुगंधाचा महामेरु। मज हातिवा लाविला दिनकरु। दीपमाळे ।९१। गरुडासारिखीं वाहनें। मज सुरतरूंची उद्यानें। कामधेनूंचीं गोधनें। अर्पिलीं तेणें ।९२। मज अमृताहूनि सुरसें। बोनी वोगरिलीं बहुवसें। ऐसा भक्तांचेनि उदकलेशें। परितोषे गां ।९३। हें सांगावें काय किरीटी। तुवांचि देखिलें आपुलिया दिठी। मी सुदामयाचिया सोडीं गांठी। पव्हयांसाठीं ।९४। पैं भक्ती एकी मी जाणें। तेथ सानें थोर न म्हणें। आम्ही भावाचे पाहुणे। भलतेया ।९५। येर पत्र पुष्प फळ। हें भजावया मिस केवळ। वांचूनि आमुचियालागीं निष्कळ। भक्तितत्त्व ।९६। म्हणोनि अर्जुना अवधारीं। तूं बुद्धी एकी सोपारी करीं। तरी सहजें आपुलिया मनोमंदिरीं। न विसंबे मातें ।९७।

यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोसि ददासि यत्।
यत्तपस्यसि कौंतेय तत्कुरुष्व मदर्पणम् ।२७।

जे जे कांहीं व्यापार करिसी। का भोग हन भोगिसी। अथवा यज्ञीं यजिसी। नानाविधीं ।९८। नातरी पात्रविशेषीं दानें। का सेवका देसी जीवनें। तपादि हन साधनें। व्रतें करिसी ।९९। तें क्रियाजात आघवें। जैसें निपजेल स्वभावें। तें भावना करोनि करावें। माझिया मोहरा ।४००। परी सर्वथा आपुले जीवीं। केलियाची से कांहींची नुरवी। ऐसीं धुवोनि कर्में द्यावीं। माझिया हातीं ।१।

शुभाशुभफलैरेवं मोक्ष्यसे कर्मबंधनैः।
संन्यासयोगयुक्तात्मा विमुक्तो मामुपैष्यसि ।२८।

मग अग्निकुंडीं बीजें घातलीं। तिथे अंकुरदशें जेवीं मुकलीं। तेवी न फळतीचि मज अर्पिलीं। शुभाशुभें ।२। अगा कर्मां जैं उरावें। तैं तिहीं सुखदुःखीं फळावें। आणि तयातें भोगावया यावें। देहा एका ।३। तें उगाणिलें मज कर्म। तेव्हांचि पुसिले मरणजन्म। जन्मासवें श्रम। वरचिलही गेले ।४। म्हणऊनि अर्जुना यापरी। पाहेचा वेह नव्हेल भारी। हे संन्यासयुक्ति सोपारी। दिधली तुज ।५। या देहाचिये बांदाडी न पडिजे। सुखदुःखांचिया सागरीं न बुडिजे। सुखें सुखरूपा घडिजे। माझियाचि आंगा ।६।

समोऽहं सर्वभूतेषु न मे द्वेष्योऽस्ति न प्रियः।
ये भजन्ति तु मां भक्त्या मयि ते तेषु चाऽप्यहम् ।२९।

तो मी पुससी कैसा। तरी जो सर्वभूतीं सदा सरिसा। जेथ आप पर ऐसा। भाग नाहीं ।७। जे ऐसिया मातें जाणोनि। अहंकाराचा कुरठा मोडोनि। जे जीवें कर्में करूनि। मातें भजले ।८। तें वर्तत दिसती देहीं। परी तें देहीं ना माझ्या ठायीं। आणि मी तयांच्या हृदयीं। समय असें ।९। सविस्तर वटत्व जैसें। बीजकणिकेमाजी असे। आणि बीजकण वसे। वटीं जेवीं ।४१०। तेवीं आम्हां तयां परस्परें। बाहेर नामांचीचि अंतरें। वांचूनि आंतुवट वस्तुविचारें। मी तेचि ते ।११। आतां जायांचें जैसें

लेणें। आंगावरी आहाचवाणें। तैसें देह धरणें। उदास तयांचें।१२। परिमळ निघालिया पवनापाठीं। मागें वोस फूल राहे देठीं। तैसें आयुष्याचिये मुठीं। केवळ देह।१३। येर अवष्टंभ जो आघवा। तो आरूढोनि मद्भावा। मजचि आंत पांडवा। पैठा जाहला।१४।

अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक्।
साधुरेव स मंतव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः।३०।

ऐसें भजतेनि प्रेमभावें। जयां शरीरही पाठीं न पवें। तेणें भलतया व्हावें। जातीचीया।१५। आणि आचरण पाहातां सुभटा। तो दुष्कृताचा कीर सेलवांटा। परी जीवित वेंचिलें चोहटां। भक्तीचिया कीं।१६। अगा अंतीचिया मती। साचपण पुढिले गती। म्हणोनि जीवित जेणें भक्ती। दिधलें शेखीं।१७। तो आधीं जरी दुराचारी। तरी सर्वोत्तमचि अवधारीं। जैसा बुडाला महापूरीं। न मरत निघाला।१८। तयाचें जीवित ऐलथडिये आलें। म्हणोनि बुडालेपण वायां गेलें। तेवीं नुरेचि पाप केलें। शेवटलिये भक्ती।१९। यालागीं दुष्कृती जऱ्ही जाहाला। तरी अनुतापतीर्थीं न्हाला। न्हाऊनि मजआंत आला। सर्वभावें।४२०। तरी आतां पवित्र तयाचें कुळ। आभिजात्य तोंचि निर्मळ। जन्मलेयाचे फळ। तयासीच जोडलें।२१। तो सकळहि पढिंनला। तपें तोचि तपिंनला। अष्टांग अभ्यासिला। योग तेणें।२२। हें असो बहुत पार्था। तो उतरला कर्मे सर्वथा। जयाची अखंड गा आस्था। मजचिलागीं।२३। अवघिया मनोबुद्धीचिया राहाटी। भरोनि एकनिष्ठेचि पेटी। मजमाजीं किरीटी। निक्षेपिली जेणें।२४।

क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छांति निगच्छति।
कौंतेय प्रतिजानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति।३१।

तो आतां अवसरें मजसारिखा होईल। ऐसा हन भाव तुज जाईल। हां गा अमृताआंत राहील। तया मरण कैचें।२५। पैं सूर्य जो वेळु नुदैजे। तया वेळा कीं रात्र म्हणिजे। तेवीं माझिये भक्तीविण जें कीजें। तें महापाप नोहे?।२६। म्हणोनि तयाचिया चित्ता। माझी जवळिक पांडुसुता। तेव्हांचि तो तत्त्वतां। स्वरूप माझें।२७। जैसा दीपें दीप लाविजे। तेथ आदिल कोण हें नोळखिजे। तैसा सर्वस्वें जो मज भजे। तो मीचि होऊनि ठाके।२८। मग माझी नित्यशांति। किंबहुना जिती। माझेनि जीवें।२९। एथ पार्था पुढतपुढती। तेंचि तें सांगो किती। जरी मियां चाड तरी भक्ती। न विसंबिजे गा।४३०। अगा कुळाचिया चोखटपणा न लगा। आभिजात्य झणीं श्लाघा। व्युत्पत्तीचा वाउगा। सोस कां वाहावा।३१। कां रूपवयसा माजा। आथिलेपणें कां गाजा। एक भाव नाहीं माझा। तरी पाल्हाळ तें।३२। कणेंवीण सोपटें। कणसें लागली घनदाटें। काय करावें गोमटें। वोस नगर।३३। नातरी सरोवर आटलें। रानीं दुःखियां दुःखी भेटलें। का वांझ फुलीं फुललें। झाड जैसें।३४। तैसें सकळ ते वैभव। अथवा कुळ जाति गौरव। जैसें शरीर आहे सावेव। परी जीवचि नाहीं।३५। तैसें माझिये भक्तीविण। जळो तें जियालेपण। अगा पृथ्वीवरी पाषाण। नसती काई?।३६। पैं हिवराची दाट साउली। सज्जनीं जैसी वाळिळी। तैसीं पुण्यें डावलूनि गेलीं। अभक्तातें।३७। निंब निंबोळियां मोडोनि आला। तरी तो काउळियांसींचि सुकाळ जाहाला। तैसा भक्तिहीन वाढिंनला। दोषांचिलागीं।३८। का षड्रस खापरीं वाढिले। वाढूनि चोहटां ठेविले। सुणियांचे उपेगा आले। जियापरी।३९। तैसें भक्तिहीनाचे जिणें। जो स्वप्नींहि परी सुकृत नेणे। तेणे संसारदुःखासि माणें। वोगरिलें।४४०। म्हणोनि कुळ उत्तम नोहावें। जाती अंत्यजही व्हावें। वरी देहाचेनि नांवें। पशूचेंही लाभो।४१। पाहें पां सावजें हातिरूं धरिलें। तेणे तया काकुळती मातें स्मरिलें। कीं तयाचें पशुत्व वावो जाहालें। पावलिया मातें।४२।

मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः।
स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यांति परां गतिम्।३२।

अगा नांवें घेतां वोखटीं। जे आघवेया अधमाचिये शेवटी। तिये पापयोनीही किरीटी। जन्मलें जे।४३। ते पापयोनी मूढ। मूर्ख जैसे का दगड। परी माझ्या ठायीं दृढ। सर्वभावें।४४। जयांचिये वाचे माझे आलाप। दृष्टी भोगी माझेचि रूप। जयांचे मन संकल्प माझाचि वाहे।४५। माझिया कीर्तीविण। जयांचे रिते नाहीं श्रवण। जयां सर्वांगीं भूषण। माझी सेवा।४६। जयांचे ज्ञान विषो नेणें। जाणीव मज एकातेंचि जाणे। जयां ऐसें लाभे तरी जिणें। येऱ्हवीं मरण।४७। ऐसा आघवांचिपरी पांडवा। जिहीं आपुलिया सर्वभावा। जियावयालागीं वोलावा। मींचि केला।४८। ते पापयोनीही होतु का। ते श्रुताधीतही न होतु का। परी मजसी तुकितां तुका। तुटी नाहीं।४९। पाहें पां भक्तीचेनि आथिलेपणें। दैत्यीं देवां आणिले उणें। माझे नृसिंहत्व लेणें। जयाचिये महिमे।४५०। तो प्रल्हाद गा मजसाठीं। घेतां द्वंद्वें बहुता कष्टी। कां जें मियां द्यावे ते गोष्टी। तयाचिया जोडे।५१। येऱ्हवीं दैत्यकुळ साचोकारें। परी इंद्रही सरी न लाहे उपरें। म्हणोनि भक्ति गा एथ सरे। जाती अप्रमाण।५२। राजाज्ञेची अक्षरें आहाती। तिये चामा एक जया पडती। तया चामासाठीं जोडती। सकळ वस्तु।५३। वांचूनि सोने रुपें प्रमाण नोहे। एथ राजाज्ञाचि समर्थ आहे। तेंचि चाम एक जै लाहे। तेणें विकती आघवीं।५४। तैसें उत्तमत्व तैंचि तरे। तैंचि सर्वज्ञता सरे। जैं मनोबुद्धि भरे। माझेनि प्रेमें।५५। म्हणोनि कुळ जाति वर्ण। हें आघवेंचि गा अकारण।

एथ अर्जुना माझेपण। सार्थक एक।५६। तेंचि भलतेणे भावें। मन मज आंतु येतें होआवें। आलें तरी आघवें। मागील वावो।५७। जैसे तंवचि वहाळ वोहळ। जंव न पवती गंगाजळ। मग होऊनि ठाकती केवळ। गंगारूप।५८। का खैर चंदन काष्टें। हें विवंचना तंवचि घटे। जंव न घापती एकवटे। अग्निमाजीं।५९। तैसे क्षत्री वैश्य स्त्रिया। का शूद्र अंत्याजादि इया। जाती तंवचि वेगळालिया। जंव न पवती मातें।४६०। मग जातीं व्यक्तीं पडे बिंदुलें। जेव्हां भावें होती मज मीनले। जैसें लवणकण घातले। सागरामाजीं।६१। तंववरी नदनदींची नांवें। तंवचि पूर्वपश्चिमेचे यावे। जंव न येती आघवे। समुद्रामाजीं।६२। हेंचि कवणे एकें मिसें। चित्त माझे ठायीं प्रवेशे। थेतुले हो मग आपैसें। मींचि होणे असे।६३। अगा वरी फोडावयाचि लागीं। लोहो मिळो का परिसाचे आंगीं। कां जे मिळतिये प्रसंगीं। सोनेचि होईल।६४। पाहे पां वल्लभाचेनि व्याजें। तिया व्रजांगनांची निजें। मज मिनलिया काय माझे। स्वरूप नव्हती?। नातरी भयाचेनि मिसें। मातें न पविजेचि काय कंसें। कीं अखंड वैरवशें। चैद्यादिकीं।६६। अगा सोयरेपणेंचि पांडवा। माझें सायुज्य यादवां। कीं ममत्वें वसुदेवा–। दिकां सकळां।६७। नारदा ध्रुवा अक्रूरा। शुका हन सनत्कुमारा। इयां भक्ती मी धनुर्धरा। प्राप्य जैसा।६८। तैसाचि गोपिकांसि कामें। तया कंसा भयसंभ्रमें। येरां घातकां मनोधर्मे। शिशुपालादिकां।६९। अगा मी एकलाणीचें खागें। मज येवों ये भलतेनि मार्गे। भक्ति का विषय विरागें। अथवा वैरें।४७०। म्हणोनि पार्था पाहीं। प्रवेशावया माझ्या ठायीं। उपायांची नाहीं। वाणी एथ।७१। आणि भलतिया जाति जन्मावें। मग भजिजे कीं विरोधावें। परी भक्तां कां वैरिया व्हावे। माझियाचि।७२। अगा कवणें एके बोले। माझेपण जऱ्ही जाहालें। तरी मी होणे आलें। हाता निरुतें।७३। यालागी पापयोनीही अर्जुना। कां वैश्य शूद्र अंगना। मातें भजतां सदना। माझिया येती।७४।

किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्या भक्ता राजर्षयस्तथा।
अनित्यमशुभं लोकमिमं प्राप्य भजस्व माम्।३३।

मग वर्णांमाजीं छत्रचामर। स्वर्ग जयाचें अग्रहार। मंत्रविद्येसि माहेर। ब्राह्मण जे।७५। जें पृथ्वीतळींचे देव। जे तपोवतार सावयव। सकळ तीर्थांसि दैव। उदयलें जे।७६। जेथ अखंड वसिजे यागीं। जे वेदांची वज्रांगी। जयांचिये दिठीचिया उत्संगी। मंगळ वाढे।७७। जयांचिये आस्थेचेनि बोलें। सत्कर्म पाल्हाळी गेलें। संकल्पें सत्य जियालें। जयांचेनी।७८। जयांचेनि गा बोलें। अग्नीसि आयुष्य जाहालें। म्हणोनि समुद्रे पाणी आपुलें। दिधलें यांचिया प्रीती।७९। मियां लक्ष्मी डावलोनि केली परौति। फेडोनि कौस्तुभ घेतला हातीं। मग वोढवली वक्षस्थळाची वाखती। चरणरजां।४८०। आझूनि पाउलाची मुद्रा। मी हृदयीं वाहें गा सुभद्रा। जे आपुलिया दैवसमुद्रा। जतनेलागीं।८१। जयांचा कोप सुभटा। काळाग्निरुद्राचा वसौटा। जयांचे प्रसादीं फुकटा। जोडती सिद्धी।८२। ऐसे पुण्यपूज्य जे ब्राह्मण। आणि माझ्या ठायीं अतिनिपुण। आतां मातें पावती ते हे कवण। समर्थणें।८३। पाहें पां चंदनाचेनि अंगानिळें। शिवतिले निंब होते जे जवळें। तिंहीं निर्जीवींही देवाही निडळें। बैसणीं केली।८४। मग तो चंदन तेथें न पवे। ऐसें मनीं कैसेनि धरावें। अथवा पावला हें समर्थावें। तेव्हां कायी साच?।८५। तेथ निववील ऐसिया आशा। हरें चंद्रमा आधा ऐसा। वाहिजत असे शिरसा। निरंतर।८६। तेथ निवविता आणि सगळा। परिमळ चंद्राहून आगळा। तो चंदन केवीं अवलीळा। सर्वांगीं न बैसे?।८७। का रथ्योदकें जियेचिये कासे। लागलिया समुद्र जालीं अनायासें। तिये गंगेसि काय अनारिसें। गत्यंतर असे।८८। म्हणोनि राजर्षी का ब्राह्मण। जयां गति मति मीचि शरण। तयां त्रिशुद्धी मीचि निर्वाण। स्थितीही मीचि।८९। यालागीं शतजर्जर नावे। रिगोनि केवीं निश्चिंत होआवें। कैसोनि उघडिया असावें। शस्त्रवर्षी।४९०। आंगावरी पडतां पाषाण। न सुवावें केवीं वोडण। रोगें दाटला आणि उदासपण। वोखदेंसीं।९१। जेथ चहूंकडे जळत वणवा। तेथूनि न निगिजे केंवी पांडवा। तेवीं लोका येऊनि सोपद्रवा। केवीं न भजिजे मातें?।९२। अगा मातें न भजावयालागीं। कवण बळ पां आपुलिया आंगीं। काइ घरीं कीं भोगीं। निश्चिंती केली?।९३। नातरी विद्या कीं वयसा। ययां प्राणियांसि हा ऐसा। मज न भजतां भरंवसा। सुखाचा कोण।९४। तरी भोग्यजात जेतुलें। तें एका देहाचिया निकिया लागलें। आणि एथ देह तंव असें पडिलें। काळाचिये तोंडीं।९५। बाप दुःखाचें केणें सुटलें। जेथ मरणाचे भरे लोटलें। तिये मृत्युलोकींचे शेवटिलें। हाटवेळें येणें जाहालें।९६। आतां सुखेंसि जीविता। कैंची ग्राहिकी किजेल पांडुसुता। काय राखाडी फुंकितां। दीप लागे?।९७। अगा विषाचे कांदे वांटुनी। जो रस घेइजे पिळुनी। तया नाम अमृत ठेउनी। जैसें अमर होणें!।९८। तेवीं विषयांचें जें सुख। तें केवळ परम दुःख। परी काय कीजे मूर्ख। न सेवितां न सरे।९९। का शीस खांडूनि आपुलें। पायींच्या खतीं बांधिलें। तैसें मृत्युलोकींचे भलें। आहे आघवें।५००। म्हणोनि मृत्युलोकीं सुखाची कहाणी। ऐकिजेल कवणाचिये श्रवणीं। कैंची सुखनिद्रा आंथरुणीं। इंगळांच्या।१। जिये लोकींचा चंद्र क्षयरोगी। जेथ उदय होय अस्तालागीं। दुःख लेऊनि सुखाची आंगी। सळित जगातें।२। जेथ मंगळाचिया अंकुरीं। सवेंचि अमंगळाची पडे पोरी। मृत्यु उदराचिया परिवरीं। गर्भ गिंवसी।३। जें नाहीं तयातें चिंतवी। तंव तेंचि नेइजे गंधर्वीं। गेलियाची कवणें गांवीं। शुद्धी न लगे।४। अगा गिंवसितां आघविया वाटीं। परतलें पाउलचि नाहीं किरीटी। सैंध निमालियांचिया गोष्टी। तियें पुराणें जेथींचीं।५। तेथींचिये अनित्यतेची थोरी। करितया ब्रह्मयाचे आयुष्यवेरी। कैसें नाहीं होणें अवधारीं।

निपटुनियां ।६। ऐसी लोकींची जिये नांदणुक। तेथ ते जन्मले आथि जे लोक। तयांचिये निश्चिंतीचे कौतुक। दिसत असे ।७। पैं दृष्टादृष्टाचिये जोडी-। लागीं भांडवल न सुटे कवडी। जेथ सर्वस्वें हानि तेथ कोडी। वेंचिती गा ।८। जो बहुवे विषयविलासें गुंफे। तो म्हणती उवाई पडिला सांपें। जो अभिलाषभारें दडपे। तयातें सज्ञान म्हणती ।६। जयांचे आयुष्य धाकुटें होय। बळ प्रज्ञा जिरोनि जाय। तयाचे नमस्कारिती पाय। वडिल म्हणुनी ।५१०। जंव जंव बाळ बळिया वाढे। तंव तंव भोजें नाचती कोडें। आयुष्य निमालें आंतुलियेकडे। ते ग्लानीचि नाहीं ।११। जन्मलिया दिवसदिवसें। हों लागे काळाचेयाचि ऐसें। कीं वाढती करिती उल्हासे। उभविती गुढिया ।१२। अगा मर हा बोल न साहती। आणि मेलिया तरी रडती। परी असतें जात न गणिती। गहिंसपणें ।१३। दर्दुर सापें गिळिजतु आहे उभा। कीं तो मासिया वेंटाळी जिभा। तैसे प्राणिये कवणे लाभा। वाढविती तृष्णा ।१४। अहा कटकटा हें वोखटें। इये मृत्युलोकींचे उफराटें। एथ अर्जुना जरी अवचटें। जन्मलासी तूं ।१५। तरी झडझडोनि वायिला निघ। इये भक्तीचिये वाटे लाग। जिया पावशी अव्यंग। निजधाम माझें ।१६।

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।
मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः ।३४।

इति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे राजविद्याराजगुह्ययोगोनाम नवमोऽध्यायः।

तूं मन हें मीचि करी। माझिया भजनीं प्रेम धरीं। सर्वत्र नमस्कारीं। मज एकातें ।१७। माझेनि अनुसंधानें देख। संकल्प जाळणें निःशेख। मद्याजी चोख। याचि नांव ।१८। ऐसा मियां आथिला होसी। तेथ माझियाचि स्वरूपा पावसी। हें अंतःकरणींचें तुजपासीं बोलिजत असें ।१६। अगा अवघिया चोरिया आपुलें। जें सर्वस्व आम्हीं असे ठेविलें। तें पावोनि सुख संचलें। होऊनि ठासी ।५२०। ऐसें सावळेनि परब्रह्में। तेणें भक्तकामकल्पद्रुमें। बोलिले श्रीआत्मारामें। संजयो म्हणे ।२१। अहो ऐकिजत असे कीं अवधारा। तंव इया बोला निवांत म्हातारा। जैसा म्हैसा नुठी का पुरा। तैसा उगाचि असे ।२२। तेथ संजयें माथा तुकिला। अहो अमृताचा पाऊस वर्षला। कीं हा एथ असतुचि गेला। सेजिया गावां ।२३। तर्‍ही दातार हा आमुचा। म्हणोनि हें बोलतां मैळेल वाचा। काय कीजे ययाचा। स्वभावचि ऐसा ।२४। परी बाप भाग्य माझें। जे वृत्तांत सांगावयाचेनि व्याजें। कैसा रक्षिलों मुनिराजें। श्रीव्यासदेवें ।२५। येतुलें हें वाड सायासें। जंव बोलत असे दृढमानसें। तंव न धरवेचि आपुलिया ऐसें। सात्त्विकें केलें ।२६। चित्त चाकांटलें आटु घेत। वाचा पांगुळली जेथींची तेथ। आपादकंचुकित। रोमांच आले ।२७। अर्धोन्मीलित डोळे। वर्षताति आनंदजळें। आंतुलिया सुखोर्मीचेनि बळे। बाहेरीं कांपे ।२८। पैं आघवाचि रोममूळीं। आली स्वेदकणिका निर्मळीं। लेइला मोतियांची कडियाळी। आवडे तैसा ।२६। ऐसा महासुखाचेनि अतिरसें। जेथ आटणी हों पाहे जीवदशे। तेथ निरोपिलें व्यासें। तें नेदीच हों ।५३०। आणिक श्रीकृष्णाचे बोलणें। घोंकरी आले श्रवणें। की देहस्मृतीचा तेणें। वापसा केला ।३१। तेव्हां नेत्रींचे जळ विसर्जी। सर्वांगींचा स्वेद परिमार्जी। तेवींचि अवधारा म्हणे हो जी। धृतराष्ट्रातें ।३२। आतां श्रीकृष्णवाक्यबीजनिवाड। आणि संजय सात्त्विकाचा बिवड। म्हणोनि श्रोतयां होईल सुरवाड। प्रमेयपिकाचा ।३३। अहो अळुमाळ अवधान देयावें। येतुलेनि आनंदाचे राशीवरी बैसावें। बाप श्रवणेंद्रियां दैवें। घातली माळ ।३४। म्हणोनि विभूतींचा जो ठावो। अर्जुना दावील सिद्धांचा रावो। तो ऐका म्हणे ज्ञानदेवो। निवृत्तीचा ।५३५।

इति श्रीज्ञानदेवविरचितायां भावार्थदीपिकायां नवमोऽध्यायः। श्लोक ३४, ओव्या ५३५

ज्ञानेश्वरीः अध्याय दहावा–विभूतियोग

नमो विशदबोधविदग्धा। विद्यारविंदप्रबोधा। पराप्रमेयप्रमदा–। विलासिया।१। नमो संसारतमसूर्या। अपरिमितपरमवीर्या। तरुणतरतुर्या–। लालनलीला।२। नमो जगदखिलपालना। मंगळमणिनिधाना। सज्जनवनचंदना। आराध्यलिंगा।३। नमो चतुरचित्तचकोरचंद्रा। आत्मानुभवनरेंद्रा। श्रुतिसारसमुद्रा। मन्मथमन्मथा।४। नमो सुभावभजना। भवेभकुंभभंजना। विश्वोद्भवभुवना। श्रीगुरुराया।५। तुमचा अनुग्रहो गणेश। जैं आपुला दे सौरस। तैं सारस्वती प्रवेश। बाळकाही आथि।६। जी दैविकी उदार वाचा। जैं उद्देश दे नाभिकाराचा। तैं नवरससुधाब्धीचा। थाउ लाभे।७। जी आपुलिया स्नेहाची वागीश्वरी। जरी मुकेयातें अंगीकारी। तो वाचस्पतीसीं करी। प्रबंधहोडा।८। हें असो दिठि जयावरी झळके। कीं हा पद्मकर माथां पारुखे। तो जीवचि परी तुके। महेशेंसी।९। एवढें जिये महिमेचें करणें। ते वाचाबळें वानूं मी कवणें। कां सूर्याचिया आंगा उटणें। लागत असे।१०। केउता कल्पतरुवरी फुलौरा। कायसेनि पाहुणेर क्षीरसागरा। कवणें वासीं कापुरा। सुवास देवों?।११। चंदनातें कायसेनि चर्चावे। अमृतातें केउतें रांधावें। गगनावरी उभवावें। घडे केवीं।१२। तैसें श्रीगुरुचे महिमान। आकळितें कें असे साधन। हें जाणोनियां नमन। निवांत केलें।१३। जरी प्रज्ञेचेनि आथिलेपणें। श्रीगुरु सामर्थ्य रूप करूं म्हणे। तरी तें मोतिया भिंग देणें। तैसें होईल।१४। का साडेपंधरया रजतवणीं। तैसीं स्तुतीचीं बोलणी। उगियाचि माथा ठेविजे चरणीं। हेंचि भले।१५। मग म्हणितले जी स्वामी। भलेनि ममत्वें देखिला तुम्ही। म्हणोनि कृष्णार्जुनसंगमीं। प्रयागवट जाहालों।१६। मागां दूध दे म्हणितलियासाठीं। आघविया क्षीराब्धीची करूनि वाटी। उपमन्यूपुढें धूर्जटी। ठेविली जैसी।१७। नातरी वैकुंठपीठनायकें। रुसला ध्रुव कवतिकें। बुझाविला देऊनि भातुकें। ध्रुवपदाचें।१८। तैसी जे ब्रह्मविद्यारावो। सकळशास्त्रांचा विसंबता ठावो। ते भगवद्गीता वोविये गावों। ऐसें केले।१९। जे बोलणियाचे रानीं हिंडतां। नायकिजे फळलिया अक्षराची वार्ता। परी ते वाचाचि केली कल्पलता। विवेकाची।२०। होती देहबुद्धी एकसरी। ते आनंदभांडारा केली वोवरी। मग गीतार्थक्षीरसागरीं। जळशयन जाले।२१। ऐसें एकेक देवाचें करणें। तें अपार बोलों केवीं मी जाणें। तऱ्ही अनुवादलों धीटपणें। तें उपसाहिजो जी।२२। आतां आपुलेनि कृपाप्रसादें। मियां भगवद्गीता वोवीप्रबंधें। पूर्वखंड विनोदें। वाखाणिलें।२३। प्रथमीं अर्जुनाचा विषाद। दुजीं बोलिला योग विशद। परी सांख्यबुद्धीसि भेद। दावूनियां।२४। तिजीं केवळ कर्म प्रतिष्ठिलें। तेंचि चतुर्थी ज्ञानेसीं प्रगटिलें। पंचमीं गव्हरिलें। योगतत्त्व।२५। तेंचि षष्ठामाजीं प्रगट। आसनालागोनि स्पष्ट। जीवात्मभाव एकवट। होती जेणें।२६। तैसीं जे योगस्थिती। आणि योगभ्रष्टा जे गती। ते आघवीचि उपपत्ती। सांगीतली षष्ठीं।२७। तयावरी सप्तमीं। प्रकृतिपरिहार उपक्रमीं। भजती जे पुरुषोत्तमीं। ते बोलिले चाऱ्ही।२८। पाठीं सप्त प्रश्नसिद्धी। बोलोनि प्रयाणसमयशुद्धी। एवं सकळवाक्यावधी। अष्टमाध्यायीं।२९। मग शब्दब्रह्मीं असंख्याकें। जेतुला कांहीं अभिप्राय पिकें। तेतुला महाभारतें एकें। लक्षे जोडे।३०। तिये आघवांचि जें महाभारतीं। तें लाभे कृष्णार्जुनवचनोक्तीं। आणि जो अभिप्रावो गीतें सातें शतीं। तो एकलाचि नवमीं।३१। म्हणोनि नवमीचिया अभिप्राया। सहसा मुद्रा लावावया। बेहाला वेद मग मी वायां। गर्व कां करूं।३२। अहो गुळा साखरे मालयाचे। बांधे जरी एकचि रसाचे। परी स्वाद गोडियेचे। आन आन जैसे।३३। एक जाणोनिया बोलती। एक ठायेठाय जाणविती। एक जाणो जातां हारपती। जाणतें गुणेसीं।३४। हे ऐसे अध्याय गीतेचे। परी अनिर्वाच्यपण नवमाचे। तो अनुवादलों हें तुमचे। सामर्थ्य प्रभू।३५। अहो एकाची शाटी तपिन्नली। एकीं सृष्टिवर सृष्टि केली। एकी पाषाणीं वाऊनि उतरली। समुद्रीं कटकें।३६। एकीं आकाशीं सूर्यातें धरिलें। एकीं चुळींचि सागरातें भरिलें। तैसें मज मुकयाकरवीं बोलविलें। अनिर्वाच्य तुम्ही।३७। परी हें असो एथ ऐसें। श्रीराम रावण जुंझिनले कैसे। श्रीराम रावण जैसे। मीनले समरीं।३८। तैसें नवमीं कृष्णाचे बोलणें। तें नवमीचियाचि ऐसें मी म्हणे। या निवाडा तत्त्वज्ञ जाणें। जया गीतार्थ हातीं।३९। एवं नवही अध्याय पहिले। मियां मतीसारिखे वाखाणिले। आतां उत्तरखंड उपाईलें। ग्रंथाचे ऐका।४०। जेथ विभूती प्रतिविभूती। प्रस्तुत अर्जुना सांगिजती। ते विदग्धा रसवृत्ती। म्हणिपैल कथा।४१। देशियेचेनि नागरपणें। शांत शृंगारातें जिणे। तरी वोविया होती लेणें। साहित्यासी।४२। मूळ ग्रंथीचिया संस्कृता। वरी मऱ्हाटी नीट पाहातां। अभिप्राय मानलिया चित्ता। कवण भूमी हें न चोजवे।४३। जैसें आंगाचेनि सुंदरपणें। लेणिया आंगचि होय लेणें। तेथ अळंकारिलें कवण कवणें। हें निर्वचेना।४४। तैसी देशी आणि संस्कृत वाणी। एका भावार्थाच्या सुखासनीं। शोभती आयणी। चोखट आइका।४५। उदयलिया भावा रूप। करितां रसवृत्तीचें लागे वडप। चातुर्य म्हणे पडप। जोडलें आम्हां।४६। तैसें देशियेचें लावण्य। हिरोनि रसा आणिलें तारुण्य। मग रचिलें अगण्य। गीतातत्त्व।४७। जो चराचरपरमगुरू। चतुरचित्तचमत्कारू। तो ऐका यादवेश्वरू। बोलता जाहला।४८। ज्ञानदेव निवृत्तीचा म्हणें। ऐसें बोलिलें श्रीहरी तेणें। अर्जुना आघवियाचि मातू अंतःकरणें। धडौता आहासी।४९।

श्रीभगवानुवाच– भूय एव महाबाहो शृणु मे परमं वचः।
यत्तेऽहं प्रीयमाणाय वक्ष्यामि हितकाम्यया।१।

आम्हीं मागील जें निरूपण केलें। तें तुझें अवधानचि पाहिलें। तंव टांचें नव्हें भलें। पुरतें आहे।५०। घटीं थोडेसें घालिजे। तेणें न गळे तरी वरिता भरिजे। ऐसा परिसौनि पाहिलासि तंव परिसविजे। ऐसेंचि होतसे।५१। अवचितयावरी सर्व सांडिजे। मग चोख तरी तोचि भांडारी कीजे। तैसा किरीटी तूं आतां माझें। निजधाम कीं।५२। ऐसें अर्जुना येउतें सर्वेश्वरें। पाहोनि बोलिलें अत्यादरें। गिरी देखोनि सुभरे। मेघ जैसा।५३। तैसा कृपाळुवांचा रावो। म्हणे आइकें गा महाबाहो। सांगितलाचि अभिप्रावो। सांगेन पुढती।५४। पैं प्रतिवर्षीं क्षेत्र पेरिजे। पिकाची जरी वाढी देखिजे। यालागीं नुबगिजे। वाहो करितां।५५। पुढतपुढती पुटें देतां। जोडे वानियेची अधिकता। म्हणोनि सोनें पांडुसुता। शोधूंचि आवडे।५६। तैसें एथ पार्था। तुज आभार नाहीं सर्वथा। आम्ही आपुलियाचि स्वार्था। बोलों पुढती।५७। जैसें बाळका लेवविजे लेणें। तयाप्रमाणें बाळ काई जाणे?। परी ते सुखाचे सोहळे भोगणें। माउलिये दिठी।५८। तैसें तुझे हित आघवें। जंव जंव का तुज फावे। तंव तंव आमुचे सुख दुणावे। ऐसें आहे।५९। आतां अर्जुना असो हे विकडी। मज उघड तुझी आवडी। म्हणोनि तृप्तीची सवडी। बोलतां न पडे।६०। आम्हां येतुलियाचि कारणें। तेंचि तें तुजशीं बोलणें। परी असो हें अंतःकरणें। अवधान देईं।६१। तरी ऐकें ऐकें गा सुवर्म। वाक्य माझे परम। जें अक्षरें लेऊनि परब्रह्म। तुज खेंवासि आलें।६२। परी किरीटी तूं मातें। नेणसी ना निरुतें। तरी तो गा जो मी एथें। तें विश्वचि हें।६३।

न मे विदुः सुरगणाः प्रभवं न महर्षयः।
अहमादिर्हि देवानां महर्षीणां च सर्वशः।२।

एथ वेद मुके जाहाले। मन पवन पांगुळलें। रातीविण मावळले। रविशशी।६४। अगा उदरींचा गर्भ जैसा। न देखे आपुलिये मायेची वयसा। मी आघवेया देवां तैसा। नेणवें कांहीं। ६५। आणि जळचरां उदधीचे मान। मशका नोलांडवेचि गगन। तेवीं महर्षींचें ज्ञान। न देखेचि मातें।६६। मी कवण पां केतुला। कवणाचा कैं जाहला। या निरुती करितां बोला। कल्प गेले।६७। का जे महर्षी आणि या देवां। येरां भूतजातां सर्वां। मीचि आदि म्हणोनि पांडवा। अवघड जाणतां।६८। उतरलें उदक पर्वत वळघे। जरी झाड वाढत मूळीं लागे। तरी मियां जालेनि जगें। जाणिजे मातें।६९। का गाभेवनें वट गिंवसवे। जरी तरंगीं सागर साठवें। का परमाणुमाजीं समावे। भूगोळ हा।७०। तरी मियां जालिया जीवां। महर्षी अथवा देवां। मातें जाणावया होआवा। अवकाश गा।७१। ऐसाही जरी विपायें। सांडुनि पुढील पाये। सर्वेंद्रियांसी होये। पाठिमोरा जो।७२। प्रवर्तलाही वेगीं बहुडे। देह सांडुनि मागिलीकडे। महाभूतांचिया चढे। माथयावरी।७३।

यो मामजमनादिं च वेत्ति लोकमहेश्वरम्।
असंमूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते।३।

तेथ राहोनि ठायठिके। स्वप्रकाशें चोखें। अजत्व माझें देखे। आपुलिया डोळां।७४। मी आदीसीं पर। सकळ लोकमहेश्वर। ऐसिया मातें जो नर। यापरी जाणे।७५। तो पाषाणामाजीं परिस। जैसा रसाआंत सिद्धरस। तैसा मनुष्याआंत तो अंश। माझाचि जाण।७६। तें चालतें ज्ञानाचें बिंब। तयाचे अवयव तें सुखाचे कोंभ। येर माणुसपण तें भांब। लौकिक भाग।७७। अगा अवचितां कापुरा–। माजीं सांपडला हिरा। वरी पडिलिया नीरा। नागवे कांहीं?।७८। तैसा मनुष्यलोकाआंत। तो जरी जाहला प्राकृत। तऱ्ही प्रकृतिदोषाची मात। नेणेचि कीं।७९। तो आपभयेचि सांडिजे पापीं। जैसा जळत चंदन सर्पीं। तेवीं मातें जाणे तो संकल्पीं। वर्जूनि घापे।८०। तेंचि आमुतें कैसें जाणिजे। ऐसें कल्पी जरी चित्त तुझें। तरी मी ऐसा हे माझे। भाव ऐकें।८१। जे वेगळालिया भूतीं। सारिखे होऊनि प्रकृती। विखुरले आहेति त्रिजगतीं। आघवियें।८२।

बुद्धिर्ज्ञानमसंमोहः क्षमा सत्यं दमः शमः।
सुखं दुःखं भवो भावो भयं चाऽभयमेव च।४।
अहिंसा समता तुष्टिस्तपो दानं यशोऽयशः।
भवन्ति भावा भूतानां मत्त एव पृथग्विधाः।५।

तेथ प्रथम जाण बुद्धी। मग ज्ञान जें निरवधी। असंमोह सहनसिद्धी। क्षमा सत्य।८३। मग शम दम दोन्ही। सुख दुःख वर्तत जनीं। अर्जुना भावाभाव मानीं। भावाचिमाजीं।८४। पै भय आणि निर्भयता। अहिंसा आणि समता। तुष्टि तप पांडुसुता। ओळख तूं।८५। अगा दान यश अपकीर्ती। हे जे भाव सर्वत्र दिसती। ते

मजचिपासूनि होती। भूतांचिया ठायीं।८६। जैसीं भूतें आहाती सिनानीं। तैसेचि हेही वेगळाले मानीं। एक उपजती माझ्या ज्ञानी। एक नेणती मातें।८७। प्रकाश आणि कडवसें। हें सूर्याचिस्तव जैसें। प्रकाश उदयीं दिसे। तम अस्तुसीं।८८। आणि माझें जाणणें नेणणें। तें तंव भूतांचिया भावाचे करणें। म्हणोनि भूतीं भावाचिया होणें। विषम पडे।८९। यापरी माझिया भावीं। हे जीवसृष्टि आहे आघवी। गुंतली असे जाणावी। पांडुकुमरा।९०। आतां इये जे सृष्टिचे पालक। जयांअधीन वर्तती लोक। ते अकरा भाव आणिक। सांगेन तुज।९१।

महर्षयः सप्त पूर्वे चत्वारो मनवस्तथा।
मद्भावा मानसा जाता येषां लोक इमाः प्रजाः।६।

तरी आघवांचि गुणीं वृद्ध। जे महर्षीमाजीं प्रबुद्ध। कश्यपादि प्रसिद्ध। सप्त ऋषी गा।९२। आणिकही सांगिजतील। जे का चौदाआंतुल मुदल। स्वयंभू मुख्य वडिल। चारी मनु।९३। ऐसे हे अकरा। माझ्या मनीं जाहाले धनुर्धरा। सृष्टीचिया व्यापारा। लागोनियां।९४। जैं लोकांची व्यवस्था न पडे। जैं या त्रिभुवनाचें कांहीं न माडे। तैं महानुभूतांचे दळवाडें। अचुंबित असे।९५। तैंचि हे जाहले। मग इहीं लोक केले। तेथ अध्यक्ष रचूनि ठेविले। इहीं जन।९६। म्हणोनि अकाराही हे राजा। मग येर जग यांचिया प्रजा। एवं विश्वविस्तार हा माझा। ऐसेंचि जाण।९७। पाहें पां आरंभीं बीज एकलें। मग तेचि विरूढलिया बुड जाहालें। बुडीं कोंभ निघाले। खांदियांचे।९८। खांदियांपासूनि अनेका। फुटिलिया नाना शाखा। शाखांस्तव देखा। पल्लव पानें।९९। पल्लवीं फूल फळ। एवं वृक्षत्व जाहालें सकळ। तें निर्धारितां केवळ। बीजचि आघवें।१००। तैसे मी एकचि पहिलें। मग मी तेंचि मनातें व्यालें। तेथ सप्तऋषी आणि जाहाले। चारी मनु।१। इंहीं लोकपाळ केले। लोकपाळीं विविध लोक स्रजिले। लोकांपासूनि निपजलें। प्रजाजात।२। ऐसेनि हे विश्व येथें। मीचि विस्तारिलोंसें निरुतें। परी भावाचेनि हातें। माने जया।३।

एतां विभूतिं योगं च मम यो वेत्ति तत्त्वतः।
सोऽविकम्पेन योगेन युज्यते नात्र संशयः।७।

यालागीं सुभद्रापती। हे भाव इया माझिया विभूती। आणि यांचिया व्याप्ती। व्यापिलें जग।४। म्हणोनि गा यापरी। ब्रह्मादिपिपीलिकावरी। मी वांचूनि दुसरी। गोष्टीच नाहीं।५। ऐसें जाणे जो साचें। तया चेयिरें जाहाले ज्ञानाचें। म्हणोनि उत्तमाधम भेदाचें। स्वप्न न देखे।६। मी माझिया विभूती। विभूतीं अधिष्ठिलिया व्यक्ती। हें आघवे योगप्रतीती। एकचि मानी।७। म्हणोनि निःशंकें येणे महायोगें। मज मीनले मनाचेनि आंगे। एथ संशय करणें न लगे। तो त्रिशुद्धी जाहला।८। का जें ऐसे किरीटी। मातें भजे जो अभेदा दिठी। तयाचिये भजनाचे नाटीं। मीचि लाभें।९। म्हणऊनि अभेदे जो भक्तियोग। तेथ शंका नाहीं नये खंग। करितां ठेला तरी चांग। तें सांगितलें षष्ठीं।१०। तोचि अभेद कैसा। हें जाणावया मानसा। साद जाली तरी परियेसा। बोलिजेल।११।

अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्वं प्रवर्तते।
इति मत्वा भजंते मां बुधा भावसमन्विताः।८।

तरी मीचि एक सर्वां। या जगा जन्म पांडवा। आणि मजचिपासूनि आघवा। निर्वाह यांचा।१२। कल्लोळमाळा अनेगा। जन्म जळींचि पैं गा। आणि तया जळचि आश्रय तरंगा। जीवनही जळ।१३। ऐसें आघवांचि ठायीं। तयां जळचि जेविं पाहीं। तैसा मीवाचूनि नाहीं। विश्वीं इये।१४। ऐसिया व्यापका मातें। मानूनि जे भजती भलतेथें। परी साचोकारें उदितें। प्रेमभावें।१५। देश काळ वर्तमान। आघवें मजसीं करूनि अभिन्न। जैसा वायू होऊनि गगन। गगनींचि विचरे।१६। ऐसेनि जे निजज्ञानी। खेळत सुखें त्रिभुवनीं। जगद्रूपा मनीं। सांठवूनि मातें।१७। जें जें भेटे भूत। तें तें मानिजे भगवंत। हा भक्तियोग निश्चित। जाण माझा।१८।

मच्चित्ता मद्गतप्राणा बोधयंतः परस्परम्।
कथयंतश्च मां नित्यं तुष्यंति च रमंति च।९।

चित्तें मीचि जाहाले। मियेंचि प्राणें धाले। मग जीवों मरों विसरले। बोधाचिया भुली।१९। मग बोधाचेनि माजें। नाचती संवादसुखाचीं भोजें। आतां एकमेकां घेपे दीजें। बोधचि वरी।१२०। जैसीं जवळिकेचीं सरोवरें। उचंबळलिया कालवती परस्परें। मग तरंगांसी धवळारें। तरंगचि होती।२१। तैसी येरयेरांचिये मिळणी। पडत आनंदकल्लोळांची वेणी। तेथें बोध बोधांची लेणीं। बोधेंचि मिरवी।२२। जैसें सूर्यें सूर्यातें वोंवाळिलें। कीं चंद्रे चंद्रम्या क्षेम दिधले। नातरी सरिसेनि पाडें मिनले। दोन वाघ।२३। तैसें प्रयाग होत सामरस्याचें। वरी वोसाण तरत सात्त्विकाचें। ते संवादचतुष्पथींचे। गणेश जाहाले।२४। तेव्हां तया महासुखाचेनि भरें। धांवोनि देहाचिये गावांबाहेरें। मियां धाले तेणें उद्गारें। लागती गाजो।२५। पैं गुरुशिष्यांचिया एकांतीं। जे अक्षरा एकाची वदंती। ते मेघाचियापरी त्रिजगतीं। गर्जती सैंध।२६। जैसी

कमळकळिका जालेपणें। हृदयींचिया मकरंदातें राखों नेणें। दे राया रंका पारणें। आमोदाचें।२७। तैसेचि मातें विश्वीं कथित। कथितेनि तोषें कथूं विसरत। मग तया विसरामाजीं विरत। आंगें जीवें।२८। ऐसें प्रेमाचेनि बहुवसपणें। नाहीं रातीं दिवो जाणणें। केलें माझें सुख अव्यंगपणे। आपणपेयां जिहीं।२९।

तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम्।
ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयांति ते।१०।

तयां मग जें आम्ही कांहीं। द्यावें अर्जुना पाही। ते ठायींचीच तिहीं। घेतली सेल।१३०। का जे ते जिया वाटा। निगाले गा सुभटा। ते सोय पाहोनि अव्हांटा। स्वर्गापवर्ग।३१। म्हणोनि तिहीं जें प्रेम धरिलें। तेंचि आमुचे देणें उपाईलें। परी आम्हीं देयावें तेंही केलें। तिंहीं म्हणिपें।३२। आतां यावरी येतुलें घडे। जें तेंचि सुख आगळे वाढे। आणि काळाची दृष्टी न पडे। हें आम्हां करणें।३३। लळेयाचिया बाळका किरीटी। गवसणी करूनि स्नेहाचिया दिठी। जैसी खेळतां पाठोपाठीं। माउली धावे।३४। तें जो जो खेळ दावी। तो तो पुढे सोनयाचा करूनि ठेवी। तैसी उपास्तीची पदवी। पोषित मी जायें।३५। जिये पदवीचेनि पोषकें। तें मातें पावती यथासुखें। हे पाळती मज विशेखे। आवडे करूं।३६। पैं गा भक्तांसि माझे कोड। मज तयांचे अनन्यगतीची चाड। कां जें प्रेमळांचे सांकड। आमुचिया घरीं।३७। पाहें पां स्वर्ग मोक्ष उपायिले। दोन्ही मार्ग तयांचिये वाहणी केले। आम्ही आंगही शेखीं वेचिलें। लक्ष्मियेसी।३८। परी आपणपेंवीण जें एक। तें तैसेचि सुख साजुक। सप्रेमालागीं देख। ठेविले जतन।३९। हा ठायवरी किरीटी। आम्ही प्रेमळ घेवो आपणयासाठीं। या बोली बोलाविया गोष्टी। तैसिया नव्हती गा।१४०।

तेषामेवाऽनुकम्पार्थमहमज्ञानजं तमः।
नाशयाम्यात्मभावस्थो ज्ञानदीपेन भास्वता।११।

म्हणोनि मज आत्मयाचा भाव। जिंहीं जियावया केला ठाव। एक मीवांचूनि वाव। येर मानिलें।४१। तयां तत्त्वज्ञान चोखटा। दिवी पोतासाची सुभटां। मग मीचि होऊनि दिवटा। पुढां पुढां चाले।४२। अज्ञानाचिये राती–। माजी तमाचि मिळणी दाटती। ते नाशूनि घाली परौती। तयां करीं नित्योदय।४३। ऐसें प्रेमळांचेनि प्रियोत्तमें। बोलिलें जेथ पुरुषोत्तमें। तेथ अर्जुन मनोधर्में। निवालो म्हणतसे।४४। हां हो जी अवधारा। भला केर फेडिला संसारा। जाहलों जननीजठरजोहरा–।वेगळा प्रभू।४५। जे जन्मलेपण आपुलें। हें आजी मियां डोळां देखिलें। जीवित हातां चढलें। आवडेतैसें।४६। आजी आयुष्या उजवण जाहली। माझिया दैवा दशा उदयली। जे वाक्यकृपा लाधली। दैविकेनि मुखें।४७। आतां येणें वचनतेजाकारें। फिटलें आंतील बाहेरील आंधारें। म्हणोनि देखतसे साचोकारें। स्वरूप तुझें।४८।

अर्जुन उवाच– परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं भवान्।
पुरुषं शाश्वतं दिव्यमादिदेवमजं विभुम्।१२।

तरी होसी गा तूं परब्रह्म। जें या महाभूतां विसंबतें धाम। पवित्र तूं परम। जगन्नाथा।४९। तूं परम दैवत तिहीं देवा। तूं पुरुष जी पंचविसावा। दिव्य तूं प्रकृतिभावा–। पैलीकडील।१५०। अनादिसिद्ध तूं स्वामी। जो नाकळिजसी जन्मधर्मीं। तो तूं हें आम्ही। जाणितलें आतां।५१। तूं या कालयंत्रासि सूत्री। तूं जीवकळेची अधिष्ठात्री। तूं ब्रह्मकटाहधात्री। हें कळले फुडें।५२।

आहुस्त्वामृषयः सर्वे देवर्षिर्नारदस्तथा।
असितो देवलो व्यासः स्वयं चैव ब्रवीषि मे।१३।

पैं आणीकही एके परी। इये प्रतीतीची येतसे थोरी। जे मागें ऐसेंचि ऋषीश्वरीं। सांगितलें तूतें।५३। परी तया सांगितलियाचें साचपण। हें आतां माझे देखतसे अंतःकरण। जे कृपा केली आपण। म्हणोनि देवा।५४। येऱ्हवीं नारद अखंड जवळां ये। तो ऐसेंचि वचनी गाये। परी अर्थ न बुजोनि ठायें। गीतसुखचि ऐकों।५५। जी आंधळेयाच्या गांवीं। आपणपें प्रगटिलें रवी। तरी तिहीं वोतपलीचि घ्यावी। वांचूनि प्रकाश कैचा।५६। परी देवर्षी अध्यात्म गातां। आहाच रागांगेंसीं जे मधुरता। तेंच फावे येर चित्ता। न लगेचि कांहीं।५७। पै असितादेवलाचेनि मुखें। मी एवंविधा तूंतें आइकें। परी तैं बुद्धी विषयविखें। धारिली होती।५८। विषयविषाचा पडिपाडू। गोड परमार्थ लागे कडू। कडू विषय तो गोडू। जीवासी जाहाला।५९। आणि हें आणिकांचें काय सांगावें। राउळा आपणचि येऊनि व्यासदेवें। तुझें स्वरूप आघवें। सर्वदा सांगिजे।१६०। परी तो आंधारीं चिंतामणी देखिला। जेवीं नव्हे या बुद्धी उपेक्षिला। पाठीं दिनोदयीं वोळखिला। होय म्हणोनि।६१। तैसीं व्यासादिकांची बोलणी। तिया मजपाशीं चिद्रत्नांचिया खाणी। परी उपेक्षिल्या जात होतिया तरणी। तुजवीण कृष्णा।६२।

सर्वमेतदृतं मन्ये यन्मां वदसि केशव।
न हि ते भगवन्व्यक्तिं विदुर्देवा न दानवाः।१४।

तें आतां वाक्यसूर्यकर तुझे फांकले। आणि ऋषींनीं मार्ग होते जे कथिले। तयां आघवयांचेंचि फिटलें। अनोळखपण।६३। जी ज्ञानाचें बीज तंव तयांचे बोल। माझिये हृदयभूमिके पडिले सखोल। वरी इये कृपेची जाहाली वोल। म्हणोनि संवादफळ।६४। अहो नारदादिकां संतां। त्यांचिया उक्तिरूप सरितां। मी महोदधी जाहलो अनंता। संवादसुखाचा।६५। प्रभु आघवेन येणें जन्में। जियें पुण्यें केली मियां उत्तमें। तयांची न ठकतीचि अंगें कामें। सद्‌गुरु तुवां।६६। येऱ्हवीं वडिलवडिलांचेनि मुखें। मी सदा तूंतें कानीं आइकें। परी कृपा न कीजेचि तुवां एकें। तंव नेणवेचि कांहीं।६७। म्हणोनि भाग्य जैं सानुकूळ। जालिया केले उद्यम सदा सफळ। तैसे श्रुताधीत सकळ। गुरुकृपा साच।६८। जी बनकर झाडें सिंपी जीवेंसाटी। पाडूनि जन्में काढी आटी। परी फळेंसीं तैंचि भेटी। जैं वसंत पावे।६९। अहो विषमा जै वोहट पडे। तैं मधुर तें मधुर आवडे। पैं रसायन तैं गोडें। जैं आरोग्य देहीं।१७०। का इंद्रियें वाचा प्राण। यां जालियांचें तैंचि सार्थकपण। जैं चैतन्य येऊनि आपण। संचरे माजीं।७१। तैंसें शब्दजात आलोडिलें। अथवा योगादिक जें अभ्यासिलें। तें तैंचि म्हणों ये आपुलें। जैं सानुकूळ श्रीगुरु!।७२। ऐसिये जालिये प्रतीतीचेनि माजें। अर्जुन निश्चयाचीं नाचतुसे भोजें। तेवींचि म्हणे देवा तुझे। वाक्य मज मानलें।७३। तरी साचचि हे कैवल्यपति। मज त्रिशुद्धी आली प्रतीती। जे तूं देवां दानवांचिचये मती–। जोगा नव्हसी।७४। तुझे वाक्य व्यक्ती न येतां देवा। जो आपुलिया जाणे जाणिवा। तो कहींचि नोहे हें मद्भावा। भरंवसेनि आलें।७५।

स्वयमेवात्मनात्मानं वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम।
भूतभावन भूतेश देवदेव जगत्पते।१५।

एथ आपुलें वाडपण जैसें। आपणचि जाणिजे आकाशें। का मी येतुली घनवट ऐसें। पृथ्वीचि जाणें।७६। तैसा आपुलिये सर्वशक्ती। तुज तूंचि जाणसी लक्ष्मीपति। येर वेदादिक मती। मिरवती वायां।७७। हां गा मनानें मागां सांडावे?। पवनातें वांवीं मवावें?। आदिशून्य उतरोनि जावें। केउतें बाहीं।७८। तैसें हें तुझें जाणणें आहे। म्हणोनि कोणाही ठावकें नोहे। आतां तुझें ज्ञान होये। तुजचिजोगें।७९। जी आपणयातें तूंचि जाणसी। आणिकांतें सांगावयाही समर्थ होसी। तरी आतां एक वेळ घाम पुसीं। आर्तीचिये निडळींचा।१८०। हें आइकिलें की भूतभावना। भवगजपंचानना। सकळदेवदेवतार्चना। जगन्नायका।८१। जरी थोरी तुझी पाहत आहों। तरी पासीं उभे ठाकावयाही योग्य नोहों। या शोच्यता जरी विनवूं बिहों। तरी आन उपाय नाहीं।८२। भरले समुद्र सरिता चहूंकडे। तरी ते वापियासि कोरडे। कां जैं मेघौनि थेंबुटा पडे। तैं पाणी कीं तया।८३। तैसे श्रीगुरु सर्वत्र आथि। परी कृष्णा आम्हां तूंचि गती। हें असो मजप्रती। विभूति सांगें।८४।

वक्तुमर्हस्यशेषेण दिव्या ह्यात्मविभूतयः।
याभिर्विभूतिभिर्लोकानिमांस्त्वं व्याप्य तिष्ठसि।१६।

जी तुझिया विभूती आघविया। परी व्यापिती शक्ति दिव्या जिया। तिया आपुलिया दावाविया। आपण मज।८५। जिंहीं विभूतीं ययां समस्तां। लोकांतें व्यापूनि आहासी अनंता। तिया प्रधाना नामांकिता। प्रगटा करीं।८६।

कथं विद्यामहं योगिस्त्वां सदा परिचिंतयन्।
केषु केषु च भावेषु चिंत्योऽसि भगवन्मया।१७।

जी कैसें मियां तूतें जाणावें। काय जाणेनि सदा चिंतावें। जरी तूंचि म्हणो आघवें। तरी चिंतनचि न घडे।८७। म्हणोनि मागां भाव जैसे। सांगीतले तुवां उद्देशें। आतां विस्तारोनि तैसें। एक वेळ बोलें।८८। जया जया भावांचिया ठायीं। तुतें चिंतितां मज सायास नाहीं। तो विवळ करूनि देई। योग आपुला।८९।

विस्तरेणात्मनो योगं विभूतिं च जनार्दन।
भूयः कथय तृप्तिर्हि शृण्वतो नास्ति मेऽमृतम्।१८।

आणि पुसलिया जिया विभूती। त्याही बोलाविया भूतपती। एथ म्हणसी जरी पुढतीं। काय सांगो।१९०। तरी हा भाव मना। झणे जाय हो जनार्दना। पैं प्राकृताही अमृतपाना। ना न म्हणवे जेवीं।९१। जें काळकूटाचे सहोदर। हें मृत्युभेणें प्याले अमर। तरी दिहाचे पुरंदर। चौदा जाती।९२। ऐसा कवण एक क्षीराब्धीचा रस। जया वायांचि अमृतपणाचा आभास। तयाचाहीं मिठांश। जे पुरे म्हणो नेदी।९३। तया पाबळयाहि येतुलेवरी। गोडियेची आथि थोरी। मग हें तंव अवधारीं। परमामृत साचें।९४। जें मंदराचळ न ढाळितां। क्षीरसागर न डहुळतां। अनादि स्वभावतां। आइतें आहे।९५। जें स्रवे ना द्रवे नव्हे बद्ध। जेथ नेणिजती रस गंध। जें भलतयाही

सिद्ध। अठवलेंचि फावे।९९। जयाची गोठीचि ऐकतखेंवो। अवघा संसार होय वावो। बळिया नित्यता लागे येवों। आपणपेयां।९७। जन्ममृत्यूंची भाख। हारपोनि जया निःशेख। आंतबाहेरीं महासुख। वाढोंचि लागे।९८। मग दैवगत्या जरी सेविजे। तरी तें आपणचि होऊनि ठाकिजे। तें तुज देतां चित्त माझें। पुरे म्हणों न शके।९९। तंव तुझे नामचि आम्हां नावडे। वरी भेटी होय आणि जवळिक जोडे। पाठीं गोठी सांगसी सुरवाडें। आनंदाचेनी।२००। आतां हें सुख कायिसयासारिखें। कांहीं निर्वचेना मज परितोखें। तरी येतुलें जाणें जे येणें मुखें। पुनरुक्तही हो।१। हां गा सूर्य काय शिळा। अग्नि म्हणों येत आहे वोंविळा। का नित्य वाहतया गंगाजळा। पारसेपण असे?।२। तुवां स्वमुखें जें बोलिलें। हें आम्हीं नादासि रूप देखिलें। आजी चंदनतरूचीं फुलें। तुरंबीत आहों मा!।३। तया पार्थाचिया बोला। सर्वांगें श्रीकृष्ण डोलला। म्हणें भक्तिज्ञानासि जाहला। आगर हा।४। ऐसा पतिकराचिया तोषाआंत। प्रेमाचा ओघ उचंबळत। सायासें सांवरूनि अनंत। काय बोले।५।

श्रीभगवानुवाचः– हंत ते कथयिष्यामि दिव्या ह्यात्मविभूतयः।
प्राधान्यतः कुरुश्रेष्ठ नास्त्यंतो विस्तरस्य मे।१९।

मी पितामहाचा पिता। हें आठवितांही नाठवे चित्ता। कीं म्हणतसे बा पांडुसुता। भलें केलें।६। अर्जुनातें बा म्हणे एथ कांहीं। आम्हां विस्मो करावया कारण नाहीं। आंगें तो लेंकरूं काई। नव्हेचि नंदाचें?। परी प्रस्तुत ऐसें असो। हें करवी आवडीचा अतिसो। मग म्हणे आइकें सांगतसों। धनुर्धरा।८। तरी तुवां पुसलिया विभूति। तयाचे अपारपण सुभद्रापती। जे माझियाचि परी माझिये मती। आकळतीना।९। आंगीचिया रोमा किती। जयाचिया तयासि न गणवती। तैसिया माझिया विभूति। असंख्य मज।२१०। येरवीं तरी मी कैसा केवढा। म्हणोनि आपणपयांही नव्हेचि फुडा। यालागीं प्रधाना जिया नामी रूढा। तिया विभूति आइकें।११। जिया जाणितलियासाठीं। आघविया जाणवतील किरीटी। जैसें बीज आलिया मुठी। तरूचि आला होय।१२। का उद्यान हाता चढिन्नलें। तरी आपैसी सांपडलीं फळें फुलें। तेवीं देखिलिया जिया देखवलें। विश्व सकळ।१३। येऱ्हवीं साचचि गा धनुर्धरा। नाहीं शेवट माझिया विस्तारा। पैं गगनाऐशिया अपारा। मजमाजीं असणें।१४।

अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः।
अहमादिश्च मध्यं च भूतानामंत एव च।२०।

आइकें कुटिलालालकमस्तका। धनुर्वेदत्र्यंबका। मी आत्मा असें एकैका। भूतमात्राच्या ठायीं।१५। आंतुलीकडे मीचि यांचे अंतःकरणीं। भूतांबाहेरी माझीचि गंवसणी। आदि मी निर्वाणीं। मध्यही मीचि।१६। जसें मेघां या तळीं वरी। एक आकाशचि आंतबाहेरीं। आणि आकाशींचि जाले अवधारी। असणेंही आकाशीं।१७। पाठीं लयया जे वेळीं जाती। ते वेळी आकाशचि होऊनि ठाती। तेवीं आदि स्थिती। अंतगती भूतांसि मी।१८। ऐसें बहुवस आणि व्यापकपण। माझें विभूतियोगें जाण। तरी जीवचि करूनि श्रवण। आइकोनि आइक।१९। याहीवर त्या विभूती। सांगणें ठेलें सुभद्रापती। सांगेन म्हणितलें तुजप्रती। त्या प्रधाना आइकें।२२०।

आदित्यानामहं विष्णुर्ज्योतिषां रविरंशुमान्।
मरीचिर्मरुतामस्मि नक्षत्राणामहं शशी।२१।

हें बोलोनि तो कृपावंत। म्हणे विष्णु मी आदित्यांत। रवी मी रश्मिवंत। सुप्रभांमाजीं।२१। मरुद्गणांच्या वर्गीं। मरीचि म्हणे मी शाङ्र्गी। चंद्र मी गगनरंगीं। तारांमाजीं।२२।

वेदानां सामवेदोऽस्मि देवानामस्मि वासवः।
इंद्रियाणां मनश्चास्मि भूतानामस्मि चेतना।२२।

वेदांआंत सामवेदु। तो मी म्हणे गोविंदु। देवांमाजीं मरुद्बंधु। महेंद्र तो मी।२३। इंद्रियांमाजीं अकरावें। मन तें मी हें जाणावें। भूतांमाजीं स्वभावें। चेतना ते मी।२४।

रुद्राणां शंकरश्चास्मि वित्तेशो यक्षरक्षसाम्।
वसूनां पावकश्चास्मि मेरुः शिखरिणामहम्।२३।

अशेषांही रुद्रांमाझारीं। शंकर जो मदनारी। तो मी येथ न धरीं। भ्रांति कांहीं।२५। यक्षरक्षोगणांआंत। शंभूचा सखा जो धनवंत। तो कुबेर मी हें अनंत। म्हणता जाहला।२६। मग आठांही वसूंमाझारीं। पावक तो मी अवधारीं। शिखराथिलियां सर्वोपरी। मेरु तो मी।२७।

पुरोधसां च मुख्यं मां विद्धि पार्थ बृहस्पतिम्।
सेनानीनामहं स्कंदः सरसामस्मि सागरः।२४।
महर्षीणां भृगुरहं गिरामस्मेकमक्षरम्।
यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि स्थावराणां हिमालयः।२५।

जो स्वर्गसिंहासना सावावो। सर्वज्ञते आदिचा ठावो। तो पुरोहितांमाजीं रावो। बृहस्पती मी।२८। त्रिभुवनींचिया सेनापतीं–। आंत स्कंध तो मी महामती। जो हरवीर्यें अग्निसंगतीं। कृत्तिकांत जाहाला।२६। सकळिकां सरोवरांसी। माजीं समद्र तो मी जळराशी। महर्षींआंत तपोराशी। भृगु तो मी।२३०। अशेषांही वाचां–। माजीं नटनाच सत्याचा। तें अक्षर एक मी वैकुंठीचा। वेल्हाळ म्हणे।३१। समस्तांही यज्ञांच्यापैकीं। जपयज्ञ तो मी ये लोकीं। जो कर्मत्यागें प्रणवादिकीं। निपजविजे।३२। नाम जपयज्ञ तो परम। बाधूं न शके स्नानादिकर्म। नामें पावन धर्माधर्म। नाम परब्रह्म वेदार्थी।३३। स्थावरां गिरींआंत। पुण्यपूज्य जो हिमवंत। मो मी म्हणे कांत। लक्ष्मियेचा।३४।

अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां देवर्षीणां च नारदः।
गंधर्वाणां चित्ररथः सिद्धानां कपिलो मुनिः।२६।
उच्चैःश्रवसमश्वानां विद्धि माममृतोद्भवम्।
ऐरावतं गजेन्द्राणां नराणां च नराधिपम्।२७।

कल्पद्रुम हन पारिजात। गुणें चंदनही वाड विख्यात। तरी ययां वृंक्षजाताआंत। अश्वत्थ तो मी।३५। देवऋषीआंत पांडवा। नारद तो मी जाणावा। चित्ररथ मी गंधर्वां। सकळिकांमाजीं।३६। ययां अशेषांही सिद्धां–। माजीं कपिलाचार्य मी प्रबुद्धा। तुरंगजाता प्रसिद्धा। आंत उच्चैःश्रवा मी।३७। राज्यभूषणां गजांआंत। अर्जुना मी गा ऐरावत। पयोराशि सुरमथित। वियाला तो मी।३८। ययां नरांमाजीं राजा। तो विभूतिविशेष माझा। जयातें सकळ लोक प्रजा। होऊनि सेविती।३६।

आयुधानामहं वज्रं धेनूनामस्मि कामधुक्।
प्रजनश्चास्मि कंदर्पः सर्पाणामस्मि वासुकिः।२८।
अनंतश्चास्मि नागानां वरुणो यादसामहम्।
पितृणामर्यमा चास्मि यमः संयमतामहम्।२६।

पैं आघवेया हतियेरां–। आंत वज्र तें मी धनुर्धरा। जें शतमखोत्तीर्णकरा। आरूढोनि असे।२४०। धेनूंमध्यें कामधेनु। ते मी म्हणे विश्वक्सेनु। जन्मवितयाआंत मदनु। तो मी जाणें।४१। सर्पकुळांआंत अधिष्ठाता। वासुकी मी कुंतीसुता। नागांमाजीं समस्तां। अनंत तो मी।४२। अगा यादसांआंत। जो पश्चिमप्रमदेचा कांत। तो वरुण मी हें अनंत। सांगत असे।४३। आणि पितृगणां समस्तां। माजीं अर्यमा जो पितृदेवता। तो मी हें तत्त्वतां। बोलत आहे।४४। जगाची शुभाशुभें लिहिती। प्राणियांच्या मानसांचा झाडा घेती। मग केलियानुरूप होती। भोगनियम जे।४५। तयां नियमितयांमाजीं यम। जो कर्मसाक्षी धर्म। तो मी म्हणे आत्माराम। रमापती।४६।

प्रह्लादश्चास्मि दैत्यानां कालः कलयतामहम्।
मृगाणां च मृगेंद्रोऽहं वैनतेयश्च पक्षिणाम्।३०।

अगा दैत्यांचिया कुळीं। प्रह्लाद तो मी न्याहाळीं। म्हणोनि दैत्यभावादिमेळीं। लिंपेचिना।४७। पैं कळितयांमाजीं महाकाळ। तो मी म्हणे गोपाळ। श्वापदांमाजीं शार्दूळ। तो मी जाण।४८। पक्षिजातीमाझारीं। गरुड तो मी अवधारीं। यालागीं जो पाठीवरी। वाहों शके मातें।४६।

पवनः पवतामस्मि रामः शस्त्रभृतामहम्।
झषाणां मकरश्चास्मि स्रोतसामस्मि जाह्नवी।३१।

पृथ्वीचिया पैसारा–। माजीं घडी न लगतां धनुर्धरा। एकेचि उड्डाणें सातांही सागरां। प्रदक्षिणा कीजे।२५०। तयां वहिलियां गतिमंतां–। आंत पवन तो मी पांडुसुता। शस्त्रधरां समस्तां–। माजीं श्रीराम तो मी।५१। जेणें सांकडलिया धर्माचे कैवारें। आपणपया धनुष्य करूनि दुसरें। विजयलक्ष्मिये एक मोहरें। केले त्रेतीं।५२। पाठीं उभे ठाकूनि सुवेळीं। प्रतापलंकेश्वराच्या सिसाळीं। गगनीं उदो म्हणतयां हस्तबळी। दिधली भूतां।५३। जेणें देवांचा मान गिंवसिला। धर्मासि जीर्णोद्धार केला।

सूर्यवंशी उदेला। सूर्य जो का।५४। तो हातियेरपरजितयाआंत। रामचंद्र मी रमाकांत। मकर मी पुच्छवंत। जळचरांमाजीं।५५। पैं समस्तांही वोघां–। मध्यें जे भागीरथें आणिता गंगा। जन्हूनें गिळिली मग जंघा। फाडूनि दिधली।५६। ते त्रिभुवनैकसरिता। जाह्नवी मी पंडुसुता। जळप्रवाहां समस्तां। माझारीं जाणें।५७। ऐसेनि वेगळालां सृष्टीपैकीं। विभूती नाम ठेवितां एकेकीं। सगळेन जन्मसहस्रें अवलोकीं। अर्घ्या नव्हती।५८।

सर्गाणामादिरंतश्च मध्यं चैवाहमर्जुन।
अध्यात्मविद्या विद्यानां वादः प्रवदतामहम्।३२।
अक्षराणामकारोऽस्मि द्वंद्वः सामासिकस्य च।
अहमेवाक्षयः कालो धाताऽहं विश्वतोमुखः।३३।

जैसीं अवघींचि नक्षत्रें वेचावीं। ऐसी चाड उपजेल जै जीवीं। तैं गगनाची बांधावी। लोथ जेवीं।५६। का पृथ्वीये परमाणूंचा उगाणा घ्यावा। तरी भूगोलचि काखे सुवावा। तैसा विस्तार माझा पाहावा। तरी जाणावें मातें।२६०। जैसे शाखांसी फूल फळ। एकिहेळां वेटाळूं म्हणिजे सकळ। तरी उपडूनियां मूळ। जेवीं हातीं घेपे।६१। तेवीं माझे विभूतिविशेष। जरी जाणो पाहिजेती अशेष। तरी स्वरूप एक निर्दोष। जाणिजे माझें।६२। येऱ्हवीं वेगळालिया विभूति। कायिक परिससी किती। म्हणोनि एकिहेळां महामती। सर्व मी जाण।६३। मी आघवियेचि सृष्टी। आदि मध्यांतीं किरीटी। ओतप्रोत पटीं। तंतु जेवीं।६४। ऐसिया व्यापका मातें जैं जाणावें। तैं विभूतिभेदें काय करावें। परी हे तुझी योग्यता नव्हे। म्हणोनि असो।६५। कां जे तुवां पुसिलिया विभूति। म्हणोनि तिया आईक सुभद्रापति। तरी विद्यांमाजीं प्रस्तुती। अध्यात्मविद्या ते मी।६६। अगा बोलतयांचिया ठायीं। वाद तो मी पाहीं। सकलशास्त्रसंमतें कांहीं। सरेचिना।६७। जो निर्वचूं जातां वाढे। आइकतयां उत्प्रेक्षे सळ चढे। जयावरी बोलतियांचीं गोडें। बोलणी होती।६८। ऐसा प्रतिपादनामाजीं वाद। तो मी म्हणे गोविंद। अक्षरांमाजीं विशद। अकार तो मी।६६। पैं गा समासांमाझारीं। द्वंद्व तो ती अवधारीं। मशका लागोनि ब्रह्मावेरी। ग्रासिता तो मी।२७०। मेरुमंदरादिकीं सर्वीं। सहित पृथ्वीतें विरवी। जो एकार्णवातेही जिरवी। जेथींचा तेथें।७१। जो प्रळयतेजा देत मिठी। सगळिया पवनातें गिळी किरीटी। आकाश जयाचिया पोटीं। सामावलें।७२। ऐसा अपार जो काळ। तो मी म्हणे लक्ष्मीलीळ। मग पुढती सृष्टीचा मेळ। सृजिता तो मी।७३।

मृत्युः सर्वहरश्चाहमुद्भवश्च भविष्यताम्।
कीर्तिः श्रीवाक्च नारीणां स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा।३४।

आणि सृजिलिया भूतांतें मीचि धरीं। सकळां जीवनही मीचि अवधारीं। शेखीं सर्वांतें या संहारीं। तेव्हां मृत्युही मीचि।७४। आतां स्त्रीगणांच्या पैकीं। माझिया विभूती सात आणिकी। तिया ऐक कवतिकीं। सांगिजतील।७५। तरी नित्य नवी जे कीर्ती। अर्जुना ते माझी मूर्ती। आणि औदार्येंसीं जे संपत्ती। तेही मीचि जाणें।७६। आणि ते गा मी वाचा। जे सुखासनीं न्यायाच्या। आरूढोनि विवेकाच्या। मार्गीं चाले।७७। देखिलेनि पदार्थें। जे आठवूनि दे मातें। तें स्मृतिही एथें। त्रिशुद्धी मी।७८। पैं स्वहिता अनपायिनी। मेधा ते गा मी इयें जनीं। धृती मी त्रिभुवनीं। क्षमा ते मी।७६। एवं नारींमाझारीं। या सातही शक्ति मी अवधारीं। ऐसें संसारगजकेसरी। म्हणता जाहला।२८०।

बृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छंदसामहम्।
मासानां मार्गशीर्षोऽहमृतूनां कुसुमाकरः।३५।

वेदराशीचिया सामा–। आंत बृहत्साम जे प्रियोत्तमा। ते मी म्हणे रमा–। प्राणेश्वर।८१। गायत्रीछंद जें म्हणिजे। तें सकळां छंदांमाजीं माझें। स्वरूप हें जाणिजे। निभ्रांत तुवां।८२। मासांआंत मार्गशिर। तो मी म्हणे शाङ्‍र्गधर। ऋतूंमाजीं कुसुमाकर। वसंत तो मी।८३।

द्यूतं छलयतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम्।
जयोऽस्मि व्यवसायोऽस्मि सत्वं सत्ववतामहम्।३६।
वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि पांडवानां धनंजयः।
मुनीनामप्यहं व्यासः कवीनामुशना कविः।३७।

छळितयां विंदाणा–। माजीं जूं तें मी विचक्षणा। म्हणोनि चोहटां चोरी परी कवणा। निवारूं नये।८४। अगा अशेषांही तेजसां–। आंत तेज तें मी भरंवसा। विजयो मी कार्योद्देशां। सकळांमाजीं।८५। जेणें चोखाळत दिसे न्याय। तो व्यवसायांत व्यवसाय। माझें स्वरूप हें राय। सुरांचा म्हणे।८६। सत्वाथिलियांआंत। सत्य म्हणे मी अनंत। यादवांमाजीं श्रीमंत। तोचि तो मी।८७। जो देवकी वसुदेवास्तव जाहला। कुमारीसाठीं गोकुळीं गेला। तो मी प्राणासकट पियाला। पूतनेनें।८८। नुघडतां बाळपणाची फुली। जेणें मियां अदानवी सृष्टी केली। करीं गिरि धरूनि उमाणिली। महेंद्रमहिमा।८९। कालिंदीचें हृदयशल्य फेडिलें। जेणें मियां जळत गोकुळ राखिलें। वासरुवांसाठीं लाविलें। विरंचीस पिसें।२९०। प्रथमदशेचिये पहांटें। माजीं कंसाऐशीं अचाटें। महाधेंडी अवचटें। लीळाचि नासिली।९१। हें काय कितीएक सांगावें। तुवांही देखिलें ऐकिलें असे आघवें। तरी यादवांमाजीं जाणावें। हेंचि स्वरूप माझें।९२। आणि सोमवंशी तुम्हां पांडवां–। माजीं अर्जुन तो मी जाणावा। म्हणोनि एकमेकांचिया प्रेमभावा। विघड न पडे।९३। संन्यासी तुवां होऊनि जनीं। चोरूनि नेली माझी भगिनी। तऱ्ही विकल्प नुपजे मनीं। मी तूं दोन्ही स्वरूप एक।९४। मुनीं आंत व्यासदेव। तो मी म्हणे यादवराव। कवीश्वरांमाजीं धैर्या ठाव। उशनाचार्य तो मी।९५।

दंडो दमयितामस्मि नीतिरस्मि जिगीषताम्।
मौनं चैवास्मि गुह्यानां ज्ञानं ज्ञानवतामहम्।३८।

अगा दमितयांमाझारीं। अनिवार दंड तो मी अवधारीं। जो मुंगियेलागोनि ब्रह्मावेरी। नियमित पावे।९६। पैं सारासार निर्धारितयां। धर्मज्ञानाचा पक्ष धरितयां। सकळ शास्त्रांमाजीं ययां। नीतिशास्त्र तें मी।९७। आघवियाची गूढां। माजीं मौन तें सुहाडा। म्हणोनि बोलतयां पुढां। स्रष्टाही नेण होय।९८। अगा ज्ञानियांच्या ठायीं। ज्ञान तें मी पाहीं। आतां असो हें ययां कांहीं। पार न देखों।९९।

यच्चापि सर्वभूतानां बीजं तदहमर्जुन।
न तदस्ति विना यत्स्यान्मया भूतं चराचरम्।३९।
नांतोऽस्ति मम दिव्यानां विभूतीनां परंतप।
एष तूद्देशतः प्रोक्तो विभूतेर्विस्तरो मया।४०।

पैं पर्जन्याचिया धारा। वरी लेख करवेल धनुर्धरा?। का पृथ्वीचिया तृणांकुरा। होईल ठी।३००। पैं महोदधीचिया तरंगां। व्यवस्था धरूं न ये जेवी गा। तेवीं माझिया विशेषलिंगां। नाहीं मिती।१। ऐशियाही सातपांच या प्रधाना। विभूती सांगीतलिया तुज अर्जुना। तो हा उद्देश जो गा मना। आहाच गमला।२। येरां विभूतिविस्तारांसि कांहीं। एथ सर्वथा लेख नाहीं। म्हणोनि परिससी तूं काई। आम्ही सांगों किती।३। यालागीं एकिहेळां तुज। दाऊं आतां वर्म निज। सर्वभूतांकुरें बीज। विरूढत असे तें मी।४। म्हणोनि सानें थोर न म्हणावें। उंच नीच भाव सांडावें। एक मीचि ऐसें मानावें। वस्तुजातातें।५। तरी यावरी साधारण। आईक पां आणीकही खूण। तरी अर्जुना तें तूं जाण। विभूती माझी।६।

यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वं श्रीमदूर्जितमेव वा।
तत्तदेवाऽवगच्छ त्व मम तेजोंशसंभवम्।४१।

जेथ जेथ संपत्ति आणि दया। दोन्ही वसती आलिया ठाया। ते ते जाण धनंजया। अंश माझे।७।

अथवा बहुनैतेन किं ज्ञातेन तवार्जुन।
विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत्।४२।

इति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे विभूतियोगो नाम दशमोऽध्यायः।१०।

अथवा एकलें एक बिंब गगनीं। परी प्रभा फांके त्रिभुवनीं। तेवीं मज एकाची सकळ जनीं। आज्ञा पाळिजे।८। तयातें एकलें झणीं म्हण। तो निर्धन या भाषा नेण। काय कामधेनूसवें सर्व साहान। चालत असे?।९। तियेतें जे जेधवां जो मागे। तें ते एकसरेंचि प्रसवों लागे। तेवीं विश्वविभव ता आंगें। होऊनी असती।३१०। तयातें वोळखावया हेचि संज्ञा। जे जगें नमस्कारिजे आज्ञा। ऐसें आथि ते जाण प्राज्ञा। अवतार माझे।११। आणि सामान्य विशेष। हें जाणणें एथ महा दोष। कां जे मीचि एक अशेष। विश्व आहें म्हणोनि।१२। तरी आतां साधारण आणि चांग। ऐसा कैसेनि पां कल्पावा विभाग। वायां आपुलिये मती वंग। भेदाचा लावावा।१३। येऱ्हवीं तूप कासया घुसळावें। अमृत कां रांधूनि अर्धे करावें। हां गा वायूसि काय पां डावें उजवें। आंग आहे?।१४। पैं सूर्यबिंबासि पोट पाठी। पाहतां नासेल आपुली दिठी। तेवीं

माझ्या स्वरूपीं गोठी। सामान्यविशेषाची नाहीं।१५। आणि सिनांना इहीं विभूतीं। मज अपारातें मविसील किती। म्हणोनि किंबहुना सुभद्रापती। असो हें जाणणें।१६। आतां पैं माझेनि एक अंशे। हें जग व्यापिले असे। यालागीं भेद सांडूनि सरिसें। साम्यें भज।१७। ऐसें विबुधवनवसंतें। तेणें विरक्तांचेनि एकांतें। बोलिलें जेथ श्रीमंतें। श्रीकृष्णदेवें।१८। तेथ अर्जुन म्हणे स्वामी। येतुलें हें राभस्य बोलिलें तुम्हीं। जे भेद एक आणि आम्ही। सांडावा एकीं।१९। हां हो सूर्य म्हणे काय जगातें। आंधारें दवडा का परौतें। तेवीं धसाळ म्हणो देवातें। तरी आधिक हा बोल।३२०। तुझे नामचि एक कोण्ही वेळे। जयांचिये मुखासि कां कानां मिळे। तयांचियां ह्रदयातें सांडूनि पळे। भेद जी साच।२१। तो तूं परब्रह्मचि असकें। मज दैवें दिधलासि हस्तोदकें। तरी आतां भेद कायसा कें। देखावा कवणें।२२। जी चंद्रबिंबाचा गाभारां। रिगालियावरीही उबारा। परी राणेपणें शाङ्‍र्गधरा। बोला हे तुम्ही।२३। तेथ सावियाचि परितोषोनि देवें। अर्जुनातें आलिंगिलें जीवें। मग म्हणे तुवां न कोपावें। आमुचिया बोला।२४। आम्ही तुज भेदाचिया वाहणीं। सांगीतली जे विभूतींची कहाणी। ते अभेदें काय अंतःकरणीं। मानली कीं न मने।२५। हेंचि पाहावयालागीं। नावेक बोलिलों बाहेरिसवडिय भंगीं। तंव विभूती तुज चांगी। आलिया बोधा।२६। तेथ अर्जुन म्हणे देवें। हें आपुले आपण जाणावें। परी देखतसें विश्व आघवें। तुवां भरलें।२७। पैं राया तो पांडुसुत। ऐसिये प्रतीतीसि जाहला वरित। या संजयाचिया बोला निवांत। धृतराष्ट्र आहे।२८। कीं संजय दुखवलेनि अंतःकरणें। म्हणतसे नवल नव्हे दैवा दवडणें। हा जीवीं धडसा आहें मी म्हणें। तंव आंतही आंधळा।२९। परी असो हें तो अर्जुन। स्वहिताचा वाढवीतसे मान। कीं याहीवरी तया आन। धिंवसा उपनला।३३०। म्हणे हेचि ह्रदयाआंतुली प्रतीती। बाहेरी अवतरो का डोळ्यांप्रती। इये आर्तीचिया पाउलीं मती। उठती जाहाली।३१। मियां इहींच दोहीं डोळां। झोंबावें विश्वरूपा सकळा। येवढी हांव तो दैवाआगळा। म्हणऊनि करी।३२। आजि तो कल्पतरूची शाखा। म्हणोनि वांझोळे न लगती देखा। जें जें येईल तयाचिया मुखां। तें तें साचची करीतसे येरु।३३। जो प्रह्लादाचिया बोला। विषाही सकट आपणचि जाहला। तो सद्‍गुरु असे जोडला। किरीटीसीं।३४। म्हणोनि विश्वरूप पुसावयालागीं। पार्थ रिगंता होईल कवणें भंगीं। तें सांगेन पुढलिये प्रसंगीं। ज्ञानदेव म्हणे निवृत्तीचा।३३५।

इति श्रीज्ञानदेवविरचितायां भावार्थदीपिकायां दशमोऽध्यायः।१०।

श्लोक ४२, ओव्या ३३५

ज्ञानेश्वरीः—अध्याय अकरावाः—विश्वरूपदर्शन योग

आतां यावरी एकादशीं। कथा आहे दोहीं रसीं। जेथ पार्था विश्वरूपेसीं। होईल भेटी।१। जेथ शांताचिया घरां। अद्भुत आला आहे पाहुणेरा। आणि येरांही रसां पांतिकरां। जाहाला मान।२। अहो वधूवरांचिये मिळणीं। जैसी वराडियांही लुगडीं लेणीं। तैसे देशियेच्या सुखासनीं। मिरवले रस।३। परी शांताद्भुत बरवे। जें डोळ्यांच्या अंजुळीं घ्यावे। जैसे हरिहर प्रेमभावें। आलें खेंवा।४। नातरी अंवसेच्या दिवसीं। भेटलीं बिंबें दोनी सरसीं। तेवीं एकवळा रसीं। केला एथ।५। मिनले गंगेयमुनेचे ओघ। तैसें रसां जाहालें प्रयाग। म्हणोनि सुस्नात होत जग। आघवें एथ।६। माजी गीता सरस्वती गुप्त। आणि दोनी रस ते ओघ मूर्त। यालागीं त्रिवेणी हे उचित। फावली बापा।७। एथ श्रवणाचेनि द्वारें। तीर्थीं रिघतां सोपारें। ज्ञानदेव म्हणे दातारें। माझेनि केले।८। तीरें संस्कृताची गहनें। तोडोनि मऱ्हाटी शब्दसोपानें। रचिली धर्मनिधानें। श्रीनिवृत्तिदेवें।९। म्हणोनि भलतेणें एथ सद्भावें नाहावें। प्रयागमाधव विश्वरूप पहावें। येंतुलेनि संसारासि द्यावें। तिळोदक।१०। हें असो ऐसें सावयव। एथ सासिन्नलें आथि रसभाव। जेथ श्रवणसुखाची राणीव। जोडली जगा।११। जेथ शांताद्भुत रोकडे। आणि येरा रसां पडप जोडे। हें अल्पचि परी उघडें। कैवल्य जेथ।१२। तो हा अकरावा अध्याय। जो देवाचा आपणपें विसंवता ठाव। परी अर्जुन सदैवाचा राव। जे एथही पातला।१३। एथ अर्जुनची काय म्हणो पातला। आजि आवडतयाही सुकाळ जाहलां। जे गीतार्थ आला। मऱ्हाठिये।१४। याचिलागीं माझें। विनविलें आइकिजे। तरी अवधान दीजे। सज्जनीं तुम्हीं।१५। तेवींचि तुम्हां संतांचिये सभे। ऐसी सलगी कीर करूं न लभे। परी मानावें जी तुम्हीं लोभें। अपत्या मज।१६। अहो पुंसा आपणचि पढविजे। मग पढे तरी माथा तुकिजे। कां करविलेनि चोजें न रिझे। बाळका माय।१७। तेवीं मी जें जें बोलें। तें प्रभु तुमचेचि शिकविलें। म्हणोनि अवधारिजो आपुलें। आपण देवा।१८। हें सारस्वताचे गोड। तुम्हींचि लाविलें जी झाड। तरी आतां अवधानामृतें वाड। सिंपोनि कीजे।१९। मग हें रसभाव फुली फुलेल। नानार्थ फळभारें फळा येईल। तुमचेनि धर्में होईल। सुरवाड जगा।२०। या बोला संत रिझलें। म्हणती तोषलों गा भले केले। आतां सांगे जें बोलिलें। अर्जुनें तेथें।२१। तंव निवृत्तिदास म्हणे। जी कृष्णार्जुनांचें बोलणें। मी प्राकृत काय सांगों जाणें। परी सांगवा तुम्ही।२२। अहो रानीचिया पालेखाइरां। नेवाणें करविले लंकेश्वरा। एकला अर्जुन परी अक्षौहिणी अकरा। न जिणेचि काई।२३। म्हणोनि समर्थ जे जें करी। तें न हों न ये चराचरीं। तुम्ही संत तयापरी। बोलवा मातें।२४। आतां बोलिजतसें आइका। हा गीताभाव निका। जो श्रीवैकुंठनायका। मुखौनि निघाला।२५। बाप बाप ग्रंथ गीता। जो वेदीं प्रतिपाद्य देवता। तो श्रीकृष्ण वक्ता। जिये ग्रंथीं।२६। तेथींचे गौरव कैसें वानावें। जें श्रीशंभूचिये मती नागवे। तें आतां नमस्कारिजे जीवेंभावें। हेंचि भले।२७। मग आइका तो किरीटी। घालूनि विश्वरूपीं दिठी। पहिली कैसी गोठी। करिता जाहला।२८। हें सर्वही सर्वेश्वर। ऐसा प्रतीतिगत जो पतिकर। तो बाहेरी होआवा गोचर। लोचनासी।२९। जिवाआंतुली चाड। परी देवासि सांगतं सांकड। कां जें विश्वरूप गूढ। कैसेनि पुसावें।३०। म्हणे मागां कवणीं। जें पढियंतेनें पुसिलें नाहीं। तें सहसा कैसें काई। सांगा म्हणों।३१। मी जरी सलगीचा चांग। तरी काय आइसीहूनि अंतरंग। परी तेही हा प्रसंग। बिहाली पुसों।३२। माझी आवडेतैसी सेवा जाहली। तरी काय होईल गरुडाचिया येतुली। परी तोहि हे बोली। करीचिना।३३। मी काय सनकादिकांहूनि जवळां। परी तयांही नागवेचि हा चाळा। मी आवडेन काय प्रेमळां। गोकुळींचिया ऐसा।३४। तयांतेंही लेकुरपणें झुकविलें। एकाचे गर्भवासही साहिले। परी विश्वरूप हें राहाविलें। न दावीच कवणा।३५। हा ठायवरी गुज। याचिये अंतरींचें हें निज। केवी उराउरीं मज। पुसों ये पां।३६। आणि न पुसोंचि जरी म्हणें। तरी विश्वरूप देखिलियाविणें। सुख नोहेचि परी जिणें। तेंही विपाये।३७। म्हणोनि आतां पुसों अळुमाळसें। मग करूं देवा ठाके तैसें। येणें प्रवर्तला साध्वसें। पार्थ बोलों।३८। परी तेचि ऐसेनि भावें। जे एका दो उत्तरांसवें। दावी विश्वरूप आघवें। झाडा देउनी।३९। अहो वांसरूं देखिलियाचिसाठीं। धेनु खडबडोनि मोहें उठीं। मग स्तनामुखाचिये भेटी। काय पान्हा धरे।४०। पाहा पां तयां पांडवांचेनि नांवें। जो कृष्ण रानींही प्रतिपाळूं धावे। तयातें अर्जुनें जंव पुसावें। तंव साहील काई।४१। तो सहजेचि स्नेहाचें अवतरण। आणि येरू स्नेहा घातले आहे माजवण। ऐसिये मिळणीं वेगळेपण। उरे हेचि बहु।४२। म्हणोनि अर्जुनाचिया बोलासरिसा। देव विश्वरूप होईल आपैसा। तोचि पहिला प्रसंग ऐसा। ऐकिजे तरी।४३।

अर्जुन उवाचः— मदनुग्रहाय परमं गुह्यमध्यात्मसंज्ञितम्।
यत्त्वयोक्तं वचस्तेन मोहोऽयं विगतो मम।१।

मग पार्थ देवातें म्हणे। जी तुम्ही मजकारणें। वाच्य केलें जें न बोलणें। कृपानिधे।४४। जैं महाभूतें ब्रह्मीं आटती। जीवमहदादिचे ठाय फिटती। तैं जें देव होऊन ठाकती। तें विसवणें शेषींचें।४५। होते हृदयाचिये परिवरीं। ठेविले कृपणाचिये परी। शब्दब्रह्मासिही चोरी। जयाची केली।४६। तें तुम्हीं आजि आपुलें। मजपुढां हियें

फोडिले। जया अध्यात्मा वोंवाळिलें। ऐश्वर्य हरें।४७। ते वस्तु मज स्वामी। एकिहेळां दिधली तुम्हीं। हें बोलों तरी आम्ही। तुजपासोनि भिन्न कैंचे।४८। परी साचचि महामोहाचिये पुरीं। बुडिलिया देखोनि सीसवरी। तुवां आपणपें घालोनि श्रीहरी। मग काढिलें मातें।४९। एक तूंवाचूनि कंही। विश्वीं दुजियाची भाष नाहीं। कीं आमुचे कर्म पाहीं। जे आम्ही आथी म्हणों।५०। मी जगीं एक अर्जुन। ऐसा देहीं वाहें अभिमान। आणि कौरवांतें इयां स्वजन। आपुले म्हणे।५१। याहीवरी यांतें मी मारीन। म्हणें तेणें पापें कें रिगेन। ऐसें देखत होतो दुःस्वप्न। तो चेवविला प्रभु।५२। देवा गंधर्वनगरीची वस्ती। सोडूनि निघालों लक्ष्मीपती। होतों उदकाचिया आर्ती। रोहिणी पीत।५३। जी किरडूं तरी कापडाचें। परी लहरी येत होतिया साचें। वायां मरतयां जीवांचें। श्रेय तुवां घेतलें।५४। आपुलें प्रतिबिंब नेणतां। सिंह कुवां घालील देखेनि आतां। ऐसा धरिजे तेवीं अनंता। राखिलें मातें।५५। येऱ्हवीं माझा तरी येतुलेवरी। एथ निश्चय होता अवधारीं। जे आतांचि सातांही सागरीं। एकत्र मिळिजे।५६। हें जगचि आघवें बुडावें। वरी आकाशही तुटोनि पडावें। परी झुंजणें न घडावें। गोत्रजेसीं मज।५७। ऐसिया अहंकाराचिये वाढीं। मियां आग्रहजळीं दिधली होती बुडी। चांगचि तूं जवळां येऱ्हवीं काढीं। कवण मातें।५८। नाथिलें आपण पां एक मानिलें। आणिण नव्हतयां नाम गोत्र ठेविलें। थोर पिसें होतें लागलें। परी राखिलें तुम्हीं।५९। मागां जळत काढिलें जोहरी। तैं तें देहासीच भय अवधारीं। आतां हे जोहरवाहार दुसरी। चैतन्यासकट।६०। दुराग्रहें हिरण्याक्षें। माझी बुद्धिवसुंधरा सूदली काखे। मग मोहार्णव गवाक्षें। रिघोनि ठेला।६१। तेथ तुझेनि गोसावीपणें। एक वेळ बुद्धीचे या ठाया येणें। हें दुसरें वराह होणें। पडिलें तुज।६२। ऐसें अपार तुझें केलें। एकी वाचा काय मी बोलें। परी पांचही पालव मोकलिले। मजप्रति।६३। तें कांहीं न वचेचि वायां। भलें यश फावलें देवराया। जे साद्यंत माया। निरसिली माझी।६४। आजि आनंदसरोवरींचीं कमळें। तैसे हे जे तुझे डोळे। आपुलिया प्रसादाची राऊळें। जयालागीं करिती।६५। हां हो तयाही आणि मोहाची भेटी। हे कायसी पाबळी गोठी। केउती मृगजळाची वृष्टी। वडवानळेंसीं।६६। आणि मी तंव दातारा। ये कृपेचिये रिघोनि गाभारां। घेत आहें चारा। ब्रह्मरसाचा।६७। तेणें माझा जी मोह जाये। एथ विस्मो कांहीं काय आहें। तरी उद्धरलो कीं तुझे पाये। शिवतले आहाती।६८।

भवाप्ययौ हि भूतानां श्रुतौ विस्तरशो मया।
त्वत्तः कमलपत्राक्ष माहात्म्यमपि चाऽव्ययम्।२।

पैं कमलायतडोळसा। सूर्यकोटितेजसा। मियां तुजपासोनि महेशा। परिसिलें आजीं।६९। इयें भूतें जयापरी होती। अथवा लया हन जैसेनि जाती। ते मजपुढां प्रकृती। विवंचिली देवें।७०। आणि प्रकृती कीर उगाणा दिधला। वरी पुरुषाचाही ठाव दाविला। जयाचा महिमा पांघरोनि जाहला। धडौता वेद।७१। जी शब्दराशि वाढे जिये। का धर्माऐशिया रत्नातें विये। ते एथींचे प्रभेचि पाये। वोळगे म्हणोनी।७२। ऐसें अगाध माहात्म्य। जें सकळमार्गैकगम्य। जें स्वात्मानुभवरम्य। तें इयापरी दाविलें।७३। जैसा केरु फिटलिया आभाळीं। दिठी रिगे सूर्यमंडळीं। का हातें सारूनि बाबुळी। जळ देखिजे।७४। ना तरी उकलूनियां सापाचे वेढे। जैसें चंदना खेंव देणें घडे। अथवा विवसी पळे मग चढे। निधान हाता।७५। तैसी प्रकृती हे आड होती। ते देवेंचि सारोनि परौति। मग परतत्त्व माझिये मती। शेजार केलें।७६। म्हणोनि इयेविषयींचा मज देवा। भंरवसा कीर जाहला जीवा। परी आणिक एक हेवा। उपनला असे।७७। तो भिडां जरी म्हणो राहों। तरी आना कवणा पुसों जावों। काय तुजवांचोनि ठावो। जाणत आहों आम्ही?। जळचर जळाचा आभार धरी। बाळक स्तनपानीं उपरोध करी। तरी तयां जिणयां श्रीहरी। आन उपायों असे।७९। म्हणोनि भडसांकडी न धरवे। जीवा आवडे तेंही तुजपुढां बोलावें। तंव रों म्हणितलें देवें। चाड सांगें।८०।

एकमेतद्यथात्थ त्वमात्मानं परमेश्वर।
द्रष्टुमिच्छामि ते रूपमैश्वरं पुरुषोत्तम।३।

मग बोलिला तो किरीटी। म्हणे तुम्हीं केली जें गोठी। तिया प्रतीतीची दिठीं। निवाली माझी।८१। आतां जयाचेनि संकल्पें। हे लोकपरंपरा होय हारपे। जया ठायातें आपणपें। मी ऐसें म्हणसी।८२। तें मुदल रूप तुझें। जेथूनि इयें द्विभुजें हन चतुर्भुजें। सुरकार्याचेनि व्याजें। घेवों घेवों येसी।८३। पैं जळशयनाचिया अवगणिया। कां मत्स्य कूर्म इया मिरवणिया। खेळ सरलिया तूं गुणिया। सांठवसी जेथ।८४। उपनिषदें जे गाती। योगिये हृदयीं रिगोनि पाहाती। जयातें सनकादिक आहाती। पोटाळुनियां।८५। ऐसें अगाध जें तुझें। विश्वरूप कानीं ऐकिजे। तें देखावया चित्त माझें। उतावीळ देवा।८६। देवें फेडूनियां सांकड। लोभें पुसिली जरी चाड। तरी हेचि एकी वाड। आर्ति जी मज।८७। तुझें विश्वरूप आघवें। माझियें दिठीसी गोचर होआवें। ऐशी थोर आस जीवें। बांधोनि आहें।८८।

मन्यसे यदि तच्छक्यं मया द्रष्टुमिति प्रभो।
योगेश्वर ततो मे त्वं दर्शयात्मानमव्ययम्।४।

परी आणिक एक एथ शाङ्‌र्गी। तुज विश्वरूप देखावयालागीं। पैं योग्यता माझिया आंगीं। असे कीं नाहीं।८६। हें आपलें आपण मी नेणें। तें कां नेणसी जरी देव म्हणे। तरी रोगिया काय जाणे। निदान रोगाचें।९०। आणि जी आर्तीचेनि पडिभरें। आर्त आपली ठाकी पैं विसरें। जैसा तान्हेला म्हणे न पुरे। समुद्र मज।९१। ऐसा सचाडपणाचिये भुली। न सांभाळवे समस्या आपुली। यालागीं योग्यता जेवीं माउली। बाळकाची जाणे।९२। तयापरी श्रीजनार्दना। विचारिजो माझी संभावना। मग विश्वरूपदर्शना। उपक्रम कीजे।९३। तरी ऐसी ते कृपा करा। येऱ्हवीं नव्हे हें म्हणा अवधारा। वायां पंचमालापें बधिरा। सुख केउतें देणें।९४। येऱ्हवीं एकले बापियाचे तृषे। मेघ जगापुरतें काय न वर्षे। परी जाहालीही वृष्टि उपखे। जऱ्हीं खडकीं होय।९५। चकोरा चंद्रामृत फावलें। येरां आण वाहूनि काय वारिलें। परी डोळ्यांवीण पाहलें। वायां जाय।९६। म्हणोनि विश्वरूप तूं सहसां। दाविसी कीर हा भंरवसा। कां जे कडाडां आणि गहिंसां। मा जी नित्य नवा तूं कीं।९७। तुझें औदार्य जाणें स्वतंत्र। देतां न म्हणसी पात्रापात्र। पैं कैवल्याऐसें पवित्र। वैरियांही दिधलें!।९८। मोक्ष दुराराध्य कीर होय। परी तोही आराधी तुझे पाय। म्हणोनि धडिसी तेथ जाय। पाइक जैसा।९९। तुवां सनकादिकांचेनि मानें। सायुज्यीं सौरस दिधला पूतनें। जे विषाचेनि स्तनपानें। मारूं आली।१००। हां गा राजसूज्ञ यागाचिया सभासदीं। देखतां त्रिभुवनांची मांदी। कैसा शतधा दुर्वाक्य शब्दीं। निस्तेजिलासी।१। ऐशिया अपराधिया शिशुपाळा। आपणपें ठावो दिधला गोपाळा। आणि उत्तानचरणाचिया बाळा। काय ध्रुवपदीं चाड।२। तो वना आला याचिलागीं। जे बैसावें पितयाचिया वोसंगीं। कीं तो चंद्रसूर्यादिकांपरिस जगीं। श्लाघ्य केला!।३। ऐसा वनवासियां सकळां। देतां एकचि तूं धसाळा। पुत्रा आळवितां अजामिळा। आपणपें देसी।४। जेणें उरीं हाणितलासि पांपरा। तयाचा चरण वाहासी दातारा। अझुनी वैरियाचिया कलेवरा। विसंबसीना।५। ऐसा अपकारियां तुझा उपकार। तूं अपात्रींही परी उदार। दे दान म्हणोनि दारवंठेकार। जाहालासी बळीचा।६। तूतें आराधी ना आयके। होती पुंसा बोलावीत कौतुकें। तिये वैकुंठीं तुवां गणिके। सुरवाड केला।७। ऐसीं पाहूनि वायाणीं मिषें। आपणपें देवों लागसी वानिवसें। तो तूं कां अनारिसें। मजलागीं करिसी?। ।८। हां गा दुभतयाचेनि पवाडें। जे जगाचें फेडी सांकडें। तिये कामधेनूचे पाडे। काय भुकेले ठायीं।९। म्हणोनि मिया जें विनविलें कांहीं। तें देव न दाखविती हें कीर नाहीं। परी देखावयालागीं देईं। पात्रता मज।११०। तुझें विश्वरूप आकळें। ऐसे जरी आणसी माझे डोळे। तरी आर्तीचे डोहळे। पुरवी देवा।११। ऐसी ठायेंठाव विनंती। जंव करूं सरला सुभद्रापती। तंव तया षड्‌गुणचक्रवर्ती। साहवेचिना।१२। तो कृपापीयूषसजळ। आणि येरू जवळां आला वर्षाकाळ। नाना श्रीकृष्ण कोकिळ। अर्जुन वसंत।१३। नातरी चंद्रबिंब वाटोळें। देखोनि क्षीरसागर उचंबळे। तैसा दुणेंहीवरी प्रेमबळें। उल्लसित जाहला।१४। मग तिये प्रसन्नतेचेनि आटोपें। गाजोनि म्हणितले सकृपें। पार्था देख देख अमूपें। स्वरूपें माझी।१५। एकचि विश्वरूप देखावें। ऐसा मनोरथ केला पांडवें। कीं विश्वरूपमय आघवें। करूनि घातलें।१६। बाप उदार देव अपरिमित। याचक स्वेच्छा सदोदित। असे सहस्रवरी देत। सर्वस्व आपुलें।१७। अहो शेषाचेही डोळे चोरिले। वेद जयालागीं झकविलें। लक्ष्मियेही राहाविलें। जिव्हार जें।१८। तें आतां प्रगटुनी अनेकधा। करीत विश्वरूपदर्शनाचा धांदा। बाप भाग्या अगाधा। पार्थाचिया।१९। जो जागता स्वप्नावस्थे जाये। तो जेवीं स्वप्नींचें आघवें होये। तेवीं अनंत ब्रह्मकटाह आहे। आपणचि जाहाला।१२०। ते सहसा मुद्रा सोडिली। आणि स्थूलदृष्टीची जवनीक फेडिली। किंबहुना उघडली। योगऋद्धी।२१। परी हा हें देखेल कीं नाहीं। ऐसी सेचि न करी कांहीं। एकसरां म्हणतसे पाहीं। स्नेहातुर।२२।

श्रीभगवानुवाचः– पश्य मे पार्थ रूपाणि शतशोऽथ सहस्रशः।
नानाविधानि दिव्यानि नानावर्णाकृतीनि च।५।

अर्जुना तुवां एक दावा म्हणितलें। आणि तेंचि दावूं तरी काय दाविलें। आतां देखें आघवें भरिलें। माझ्याचि रूपीं।२३। एकें कृशें एकें स्थूळें। एके ऱ्हस्वें एकें विशाळें। पृथुतरें सरळें। अप्रांतें एकें।२४। एकें अनावरें प्रांजळें। सव्यापारें एकें निश्चळें। उदासीनें स्नेहाळें। तीव्रें एकें।२५। एकें धूर्णितें सावधें। असलगें अगाधें। एकें उदारें अतिबद्धें। क्रुद्धें एकें।२६। एकें शांतें सन्मदें। स्तब्धें एकें सानंदें। गर्जितें निःशब्दें। सौम्यें एकें।२७। एकें साभिलाषें विरक्तें। उन्निद्रितें एकें निद्रितें। परितुष्टेंएकें आर्तें। प्रसन्नें एकें।२८। एके अशस्त्रें सशस्त्रें। एकें रौद्रें अतिमित्रें। भयानकें एकें विचित्रें। लयस्थें एकें।२९। एकें जननलीलाविलासें। एकें पालनशीलें लालसें। एकें संहारकें सावेशें। साक्षीभूतें एकें।१३०। एवं नानाविधें परी बहुवसें। आणि दिव्यतेजप्रकाशें। तेवींचि एकाएकाऐसें। वर्णही नव्हे।३१। एकें तातलें साडेपंधरें। तैसीं कपिलवर्णें अपारें। एकें सर्वांगीं जैसें सिंदुरें। डवरलें नभ।३२। एकें सावियाचि चुळुकीं। जैसे ब्रह्मकटाह खचिलें माणिकीं। एकें अरुणोदयासारिखीं। कुंकुमवर्णें।३३। एकें शुद्धस्फुटिकसोज्ज्वळें। एकें इंद्रनीळसुनीळें। एकें अंजनवर्णें सकाळें। रक्तवर्णें एकें।३४। एकें लसत्कांचनसम पिंवळी। एकें सजलजलदश्यामळीं। एकें चांपेगौरीं केवळीं। हरितें एकें।३५। एकें तप्तताम्रतांबडीं। एकें श्वेतचंद्रचोखडी। ऐसीं नानावर्णें रूपडीं। देखें माझी।३६। हें जैसे का आनान वर्ण। तैसें आकृतींही अनारिसेपण। लाजा कंदर्प रिघाला शरण। तैसीं सुंदरें एकें।३७। एकें अतिलावण्यसाकारें। एकें स्निग्धवपुमनोहरें। शृंगारश्रियेची भांडारें। उघडिलीं जैसी।३८। एकें पीनावयवमांसळें।

एकें शुष्कें अतिविक्राळें। एकें दीर्घकंठें विताळें। विकटें एकें।३६। एवं नानाविधाकृती। इयां पाहतां पार नाहीं सुभद्रापती। ययांच्या एकेकी अंगप्रांतीं। देख पां जगा।१४०।

पश्यादित्यान्वसून् रुद्रानश्विनौ मरुतस्तथा।
बहून्यदृष्टपूर्वाणि पश्याश्चर्याणि भारत।६।

जेथ उन्मीलन होत आहे दिठी। तेथ पसरती आदित्यांचिया सृष्टी। पुढती निमीलनीं मिठी। देत आहाती।४१। वदनीचिया वाफेसवें। होत ज्वाळामय आघवें। जेथ पावकादिक पावे। समूह वसूंचा।४२। आणि भ्रूलतांचें शेवट। कोपें मिळो पाहती एकवट। तेथें रुद्रगणांचे संघाट। अवतरत देखें।४३। पै सौम्यतेचा बोलावा। मिती नेणिजे अश्विनौदेवा। श्रोत्रीं होती पांडवा। अनेक वायु।४४। यापरी एकेकाचिये लीळे। जन्मती सुरसिद्धांची कुळें। ऐसी अपारें आणि विशाळें। रूपें इयें पाहीं।४५। जयांतें सांगावया वेद बोबडे। पाहावया काळाचेही आयुष्य थोकडें। धातयाही परी न सांपडे। ठाव जयांचा।४६। जयांतें वेदत्रयी कधीं नायके। तियें इयें प्रत्यक्ष देख अनेकें। भोगी आश्चर्याची कवतिकें। महासिद्धी।४७।

इहैकस्थं जगत्कृत्स्नं पश्याद्य सचराचरम्।
मम देहे गुडाकेश यच्चान्यद्द्रष्टुमिच्छसि।७।

इया मूर्तीचिया किरीटी। रोममूळीं देखें पां सृष्टी। सुरतरुतळवटीं। तृणांकुर जैसे।४८। वातायनाचेनि प्रभासें। उडत परमाणु दिसती जैसे। भ्रमत ब्रह्मकटाह तैसे। अवयवसंधी।४६। एथ एकैकाचिया प्रांतदेशीं। विश्व देख विस्तारेंसी। आणि विश्वाहीपरौतें मानसीं। जरी देखावें वर्ते।१५०। तरी इयेही विषयींचें कांहीं। एथ सर्वथा सांकडें नाहीं। सुखें आवडे तें माजिया देहीं। देखसी तूं।५१। ऐसें विश्वमूर्ती तेणें। बोलिलें कारुण्यपूर्णें। तंव देखत आहे कीं नाहीं न म्हणे। निवांतचि येरू।५२। एथ कां पां उगला। म्हणोनि श्रीकृष्णें जव पाहिला। तंव आर्तीचे लणें लेइला। तैसाचि आहे।५३।

न तु मां शक्यसे द्रष्टुमनेनैव स्वचक्षुषा।
दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य मे योगमैश्वरम्।८।

मग म्हणे उत्कुंठे वोहट न पडे। अझुनी सुखाची सोय न सांपडे। परी दाविलें तें फुडें। नाकळेचि यया।५४। हें बोलोनि देव हांसिले। हांसोनि देखणिया म्हणितलें। आम्हीं विश्वरूप तरी दाविलें। परी देखसीच ना तूं।५५। यया बोला येरें विचक्षणें। म्हणितलें हां जी कवणासि तें उणें। तुम्ही बकाकरवीं चांदिणें। चरवूं पहा मी!।५६। हां हो उटोनियां आरिसा। आंधळिया दावूं बैसा। बहिरियांपुढें हृषीकेशा। गाणीव करा!।५७। मकरंदकणाचा चारा। जाणतां घालूनि दर्दुरा। वायां धाडा शाङ्र्गधरा। कोपा कवणा?।५८। जें अतींद्रिय म्हणोनि व्यवस्थिलें। केवळ ज्ञानदृष्टीचिया भागा फिटलें। तें तुम्हीं चर्मचक्षूंपुढें सूदलें। मी कैसेनि देखें!।५६। परी हें तुमचें उणें न बोलावें। मीचि साहें तेंचि बरवें। एथ आथि म्हणितलें देवें। मानूं बापा।१६०। साच विश्वरूप जरी आम्ही दावावें। तरी आधीं देखावया सामर्थ्य कीं द्यावें। परी बोलत प्रेमभावें। धसाळ गेलों।६१। काय जाहालें न वाहतां भुईं पेरिजे। तरी तो वेलु निलया जाइजे। तरी आतां माझें निजरूप देखिजे। ते दृष्टी देवों तुज।६२। मग तिया दृष्टी पांडवा। आमचा ऐश्वर्ययोग आघवा। देखोनियां अनुभवा। माजिवडा करीं।६३। ऐसें तेणें वेदांतवेद्यें। सकळलोकैकआद्यें। बोलिलें आराध्यें। जगाचेनि।६४।

संजय उवाचः— एवमुक्त्वा ततो राजन्महायोगेश्वरो हरिः।
दर्शयामास पार्थाय परमं रूपमैश्वरम्।६।

पैं कौरवकुळचक्रवर्ती। मज हाचि विस्मय पुढतपुढती। जे श्रियेहूनि त्रिजगतीं। सदैव असे कवणी।६५। नातरी खुणेचें वानावयालागीं। श्रुतीवांचूनि दावा पां जगी। ना सेवकपण तरी आंगीं। शेषाच्याचि आथि।६६। हां हो जयाचेनि सोसें। शिणत आठही पाहार योगी जैसे। अनुसरले गरुडाऐसे। कवण आहे।६७। परी तें आघवेचि एकीकडे ठेलें। सांपे कृष्णसुखा एकंदरें जाहालें। जिये दिवसींहूनि जन्मले। पांडव हे!।६८। परी पांचांही आंत अर्जुना। श्रीकृष्ण सावियाची जाहला अधीना। कामुक का जैसा अंगना। आपैता कीजे।६६। पढविलें पाखिरूं ऐसें न बोले। यापरी क्रीडामृगही तैसा न चले। कैसें दैव एथें सुरवाडलें। तें जाणों न ये।१७०। आजि परब्रह्म हें सगळें। भोगावया सदैव याचेचि डोळे। कैसे वाचेचे हन लळे। पाळीत असे।७१। हो कोपे कीं निवांत साहे। हा रुसे तरी बुझावीत जाये। नवल पिसें लागलें आहे। पार्थाचे देवा!।७२। येऱ्हवीं विषय जिणेनि जन्मले। जे शुकादिक दादुले। ते विषयची वानिता जाहाले। भाट ययाचे।७३। हा योगियांचे समाधिधन। कीं होऊनि ठेले

पार्थाअधीन। यालागीं विस्मय माझे मन। करीतसे राया।७४। तेवींचि संजय म्हणे कायसा। विस्मयो एथें कौरवेशा। श्रीकृष्णें स्वीकारिजे तयाऐसा। भाग्योदय होय।७५। म्हणोनि तो देवांचा रावो। म्हणे पार्थातें तुज दिव्य दृष्टि देवों। जया विश्वरूपाचा ठावो। देखसी तूं।७६। ऐसी श्रीमुखौनि अक्षरें। निघतीना जंव एकसरें। तंव अविद्येचे आधारें। जावोंचि लागे।७७। तीं अक्षरें नव्हती देखा। ब्रह्मसाम्राज्यदीपिका। अर्जुनालागीं चित्कळिका। उजळलिया श्रीकृष्णें।७८। मग दिव्यचक्षु प्रकटला। तय ज्ञानदृष्टी फांटा फुटला। ययापरी दाविता जाहला। ऐश्वर्य आपुलें।७९। हे अवतार जे सकळ। ते जिये समुद्रींचे का कल्लोळ। विश्व हें मृगजळ। जया रश्मीस्तव दिसे।१८०। जिये अनादिभूमिके निटे। चराचर हें चित्र उमटे। आपणपें श्रीवैकुंठें। दाविलें तया।८१। मागां बाळपणीं येणें श्रीपती। जैं एक वेळ खादली होती माती। तैं कोपोनियां हातीं। यशोदां धरिला।८२। मग भेणेंभेणें जैसें। मुखीं झाडा द्यावयाचेनि मिसें। चवदाही भुवनें सावकाशें। दाविली तिये।८३। नातरी मधुवनीं ध्रुवासि केलें। जैसें कपोल शंखें शिवतलें। आणि वेदांचियेही मती ठेलें। तें लागला बोलों।८४। तैसा अनुग्रह पैं राया। श्रीहरि केला धनंजया। आतां कवणेकडे ही माया। ऐसी भाष नेणेचि तो।८५। एकसरें ऐश्वर्यतेजें पाहलें। तया चमत्काराचें एकार्णव जाहलें। चित्त समाजीं बुडोनि ठेलें। विस्मयाचिया।८६। जैसा आब्रह्म पूर्णोदकीं। पोहे मार्कंडेय एकाकी। जैसा विश्वरूपकौतुकीं। पार्थ लोळे।८७। म्हणे केवढे गगन एथ होते। तें कवणे नेले पां केउतें। ती चराचरें महाभूतें। काय जाहालीं।८८। दिशांचे ठावही हारपले। अधोर्ध्व काय नेणो जाहाले। चेइलिया स्वप्न तैसे गेले। लोकाकार।८९। नाना सूर्यतेजप्रतापें। सचंद्र तारागण जैसें लोपें। तैसी गिळिली विश्वरूपें। प्रपंचरचना।१९०। तेव्हां मनासी मनपण न स्फुरे। बुद्धि आपणपें न सांवरे। इंद्रियांचे रश्मी माघारे। हृदयवरी भरले।९१। तेथ ताटस्थ्या ताटस्थ्य पडिलें। टकासी टक लागलें। जैसे मोहनास्त्र घातलें। विचारजातां।९२। तैसा विस्मित पाहे कोडें। तंव पुढां होते चतुर्भुज रूपडें। तेंचि नानारूप चहूंकडे। मांडोनि ठेलें।९३। जैसे वर्षाकाळींचे मेघौडे। का महाप्रळयींचें तेज वाढे। तैसें आपणावीण कवणीकडे। नेदीचि उरों।९४। प्रथम स्वरूप समाधान। पावोनि ठेला अर्जुन। सवेंचि उघडिले लोचन। तंव विश्वरूप देखे।९५। इहींचि दोहीं डोळां। पाहावें विश्वरूपा सकळां। तो श्रीकृष्णें सोहळा। पुरविला ऐसा।९६।

अनेकवक्त्रनयनमनेकाद्भुतदर्शनम्।
अनेकदिव्याभरणं दिव्यानेकोद्यतायुधम्।१०।

मग तेथ सैंघ देखे वदनें। जैसीं रमानायकाची राजभुवनें। नाना प्रगटलीं निधानें। लावण्यश्रियेचीं।९७। कीं आनंदाचीं वनें सासिन्नलीं। जैसी सौंदर्या राणीव जोडली। तैसीं मनोहरें देखिली। हरीची वक्त्रें तेणें।९८। तयांहीमाजीं एकैकें। सावियाचि भयानकें। काळरात्रींचीं कटकें। उठावलीं जैसीं।९९। कीं मृत्यूसीचि मुखें जाहालीं। हो का जे भयाचीं दुर्गें पन्नासिलीं। कीं महाकुंडें उघडलीं। प्रळयानळाचीं।२००। तैसी अद्भुतें भयासुरें। तेथ वदनें देखिली वीरें। आणिकें असाधारणें साळंकारें। सौम्यें बहुतें।१। पैं ज्ञानदृष्टीचेनि अवलोकें। परी वदनांचा शेवट न टके। मग लोचन ते कवतिकें। लागला पाहों।२। तंव नानावर्णें कमळवनें। विकासिलीं तैसे अर्जुनें। नेत्र देखिले पालिंगनें। आदित्यांचीं।३। तेथेंचि कृष्णमेघाचिया दाटी–। माजीं कल्पांत विजूंचिया फुटी। तैसिया वन्हिपिंगळा दिठी। भ्रूभंगातळीं।४। हें एकैक आश्चर्य पाहातां। तिये एकेचि रूपीं पांडुसुता। दर्शनांची अनेकता। प्रतिफळली।५। मग म्हणे चरण ते कवणेकडे। केउते मुकुट कें दोंदडें। ऐसी वाढविताहे कोडें। चाड देखावयाची।६। तेथ भाग्यनिधि पार्था। कां विफलत्व होईल मनोरथा। काय पिनाकपाणीचिया भातां। वायकांडीं आहाती?।७। नातरी चतुराननाचिये वाचे। काय आहाती लटिकिया अक्षरांचे सांचे। म्हणोनि साद्यंतपण अपाराचें। देखिलें तेणें।८। जयाची सोय वेदां नाकळे। तयाचे सकळावयव एकाचि वेळे। अर्जुनाचे दोन्ही डोळे। भोगिते जाहाले।९। चरणौनी मुकुटवरी। देखत विश्वरूपाची थोरी। जे नाना रत्न अलंकारी। मिरवत असे।२१०। परब्रह्म आपुलेनि आंगें। ल्यावया जाहाला आपणचि अनेगें। तियें लेणीं मी सांगें। काइसयासारिखीं।११। जिये प्रभेचिये झळाळा। उजाळू चंद्रादित्यमंडळां। जे महातेजाचा जिव्हाळा। जेणें विश्व प्रगटे।१२। तो दिव्यतेजशृंगार। कोणाचिये मतीसी होय गोचर। देव आपणपेंचि लेइले ऐसें वीर। देखत असे।१३। मग तेथेचि ज्ञानाचिया डोळां। पहात करपल्लवा जंव सरळां। तंव तोडित कल्पांतींचिया ज्वाळा। तैसीं शस्त्रें झळकत देखे।१४। आपण आंग आपण अळंकार। आपण हात आपण हतियार। आपण जीव आपण शरीर। देखे चराचर कोंदलें देवें।१५। जयाचिया किरणांचे निखरेपणें। नक्षत्रांचे होत फुटाणे। तेजें खिरडला वह्नि म्हणे। समुद्रीं रिघों।१६। मग काळकूटकल्लोळीं कवळिलें। नाना महविजूंचे दांग उमटलें। तैसे अपार कर देखिले। उद्यतायुधीं।१७।

दिव्यमाल्यांबरधरं दिव्यगंधानुलेपनम्।
सर्वाश्चर्यमयं देवमनंतं विश्वतोमुखम्।११।

कीं भेणें तेथूनि काढली दिठी। मग कंठ मुगुट पहातसे किरीटी। तंव सुरतरूची सृष्टी। जयांपासोनि का जाहाली।१८। जिये महासिद्धींची मूळपीठें। शिणली कमळा जेथ वावटे। तैसी कुसुमें अतिचोखटें। तुरंबिली देखिलीं।१६। मुकुटावरी स्तबक। ठायीं पूजाबंध अनेक। कंठीं रुळताति अलौकिक। माळादंड।२२०। स्वर्गी सूर्यतेज वेढिलें। जैसें पंधरेनें मेरुतें मढिलें। तैसें नितंबावरी गाढिलें। पीतांबर झळके।२१। श्रीमहादेव कापुरें उटिला। का कैलास पारदें डवरिला। नाना क्षीरोदकें पांघरविला। क्षीरार्णव जैसा।२२। जैसी चंद्रमयाची घडी उपलविली। मग गगनाकरवीं बुंथी घेवविली। तैसी चंदनीं पंजरी देखिली। सर्वांगीं तेणें।२३। जेणें स्वप्रकाशा कांति चढे। ब्रह्मानंदाचा निदाघ मोडे। जयाचेनि सौरभ्यें जीवित जोडे। वेदवतीये।२४। जयाचे निर्लेप अनुलेप करी। जें अनंगही सर्वांगीं धरी। तया सुगंधाची थोरी। कवण वानी।२५। ऐसी एकैक शृंगारशोभा। पाहातां अर्जुन जातसे क्षोभा। तेवींचि देव बेसला कीं उभा। कीं सन्मुख हें नेणवें।२६। बाहेर दिठी उघडूनि पाहे। तंव आघवें मूर्तिमय देखत आहे। मग आतां न पाहें म्हणोनि उगा राहे। तरी आंतही तैसेंचि।२७। अनावर मुखें समोर देखे। तयाभेणें पाठीमोरा जंव ठाके। तंव तयाहीकडे श्रीमुखें। करचरण तैसेचि।२८। अहो पाहतां कीर प्रतिभासे। एथ नवलावो काय असे। परी न पहातांही दिसे। चोज आइका।२६। कैसे अनुग्रहाचें करणें। पार्थाचें पाहणें आणि न पाहणें। तयाही सकट नारायणें। व्यापूनि घेतलें।२३०। म्हणोनि आश्चर्याच्या पूरीं एकीं। पडिला ठायेठाव तडी ठाकीं। तंव चमत्काराचिया आणिकीं। महार्णवीं पडे।३१। ऐसा अर्जुन असाधारणें। आपुलिया दर्शनाचेनि विंदाणें। कवळूनि घेतला तेणें। अनंतरूपें।३२। तो विश्वतोमुख स्वभावें। आणि तेंचि दावावयालागीं पांडवें। प्रार्थिला आतां आघवें। होऊन ठेला।३३। आणि दीपें कां सूर्यें प्रगटे। अथवा निमुटलिया देखावेंचि खुंटे। तैसी दिठी नव्हे जे वैकुंठें। दिधली आहे।३४। म्हणोनि किरीटीसि दोहीं परी। देखावेंचि पडताहे अवधारीं। हें संजय हस्तिनापुरीं। सांगतसे राया।३५। म्हणे किंबहुना अवधारिलें। पार्थें विश्वरूप देखिलें। नाना अभरणीं भरलें। विश्वतोमुख।३६।

दिवि सूर्यसहस्रस्य भवेद्युगपदुत्थिता।
यदि भाः सदृशी सा स्याद्भासस्तस्य महात्मनः।१२।

तिये अंगप्रभेचा देवा। नवलावा काइसयाऐसा सांगावा। कल्पांतीं एकचि मेळावा। द्वादशादित्यांचा होय।३७। तैसे ते दिव्यसूर्य सहस्रवरी। जरी उदयजती का एकेचि अवसरीं। तऱ्ही तय तेजाची थोरी। उपमूं न ये।३८। आघवयाचि विजूंचा मेळावा कीजे। आणि प्रळयाग्नीची सर्व सामग्री आणिजे। तेवींचि दशकही मेळविजे। महातेजांचा।३६। तऱ्ही तिये अंगप्रभेचेनि पाडें। हें तेज कांहीं कांहीं होईल थोडें। आणि तयाऐसें कीर चोखडें। त्रिशुद्धी नोहे।२४०। ऐसें माहात्म्य या श्रीहरीचें सहज। फांकतसे सर्वांगींचे तेज। तें मुनिकृपा जी मज। दृश्य जाहालें।४१।

तत्रैकस्थं जगत्कृत्स्नं प्रविभक्तमनेकधा।
अपश्यद्देवदेवस्य शरीरे पांडवस्तदा।१३।

आणि तिये विश्वरूपीं एकीकडे। जग आघवें आपुलेनि पवाडें। जैसे महोदधीमाजी बुडबुडे। सिनाने दिसती।४२। का आकाशीं गंधर्वनगर। भूतळीं पिपीलिका बांधे घर। नाना मेरूवरी सपूर। परमाणु जैसे।४३। विश्व आवघेंचि तयापरी। तिया देवचक्रवर्तीचिया शरीरीं। अर्जुन तिये अवसरीं। देखता जाहाला।४४।

ततः स विस्मयाविष्टो हृष्टरोमा धनंजयः।
प्रणम्य शिरसा देवं कृतांजलिरभाषत।१४।

तेथ एक विश्व एक आपण। ऐसें अळुमाळू होतें जें दुजेपण। तेंही आटोनि गेलें अंतःकरण। विरालें सहसा।४५। आंतू आनंदा चेइरें जाहालें। बाहेरी गात्रांचे बळ हारपोनि गेलें। आपाद पांगुंतलें। पुलकांचलें।४६। वार्षिये प्रथमदशे। वोहळलया शैलांचें सर्वांग जैसें। विरूढे कोमलांकुरीं तैसे। रोमांच जाहाले।४७। शिवतला चंद्रकरीं। सोमकांत द्राव धरी। तैसि या स्वेदकणिका शरीरीं। दाटलिया।४८। माजीं सापडलेनि अलिकुळें। जळावरी कमळकळिका जेवीं आंदोळे। तवीं आंतुलिया सुखोर्मीचेनि बळें। बाहेरी कांपे।४६। कर्पूरकर्दळीचीं गर्भपुटें। उकलतां कापुराचेनि कोंदाटें। पुलिका गळती तेवीं थेंबुटें। नेत्रौनि पडती।२५०। उदयलेनि सुधाकरें। जैसा भरलाचि समुद्र भरे। तैसा वेळोवेळां उर्मिभरें। उचंबळत असे।५१। ऐसा सात्विकांही आठां भावां। परस्परें वर्ततसे हेवा। तेथ ब्रह्मानंदाची जीवा। राणीव फावली।५२। तैसाचि तया सुखानुभवापाठीं। केला द्वैताचा सांभाळा दिठी। मग उससोनि किरीटी। वास पाहिली।५३। तेथ बैसला होता जिया सवा। तियाचिकडे मस्तक खालविला देवा। मग जोडूनि करसंपुट बरवा। बोलत असे।५४।

अर्जुन उवाचः— पश्यामि देवांस्तव देव देहे

सर्वांस्तथा भूतविशेषसंघान्।
ब्रह्माणमीशं कमलासनस्थ–
मृषींश्च सर्वानुरगांश्च दिव्यान्।१५।

म्हणे जयजयाजी स्वामी। नवल कृपा केली तुम्हीं। जें हें विश्वरूप कीं आम्ही। प्राकृत देखों।५५। परी साचचि भले केलें गोसाविया। मज परितोष जाहाला साविया। जी देखिलासि जो इया। सृष्टीसी तूं आश्रय।५६। देवा मंदराचेनि अंगलगें। ठायीं ठायीं श्वापदांची दांगें। तैसीं इये तुझ्या देहीं अनेगें। देखतसे भुवनें।५७। अहो आकाशाचिया खोळे। दिसती ग्रहगणांचीं कुळें। कां महावृक्षीं अविसाळें। पक्षिजातीचीं।५८। तयापरी श्रीहरी। तुझिया विश्वात्मकीं इये शरीरीं। स्वर्ग देखतसे अवधारीं। सुरगणेसीं।५९। प्रभु महाभूतांचे पंचक। येथ देखत आहें अनेक। आणि भूतग्राम एकेक। भूतसृष्टीचे।२६०। जी सत्यलोक तुजमाजीं आहे। देखिला चतुरानन हा नोहे। आणि येरीकडे जंव पाहें। तंव कैलासही दिसे।६१। श्रीमहादेव भवानियेंशीं। तुझ्या दिसतसे एके अंशीं। आणि तूंतेही गा हृषीकेशी। तुजमाजीं देखे।६२। पैं कश्यपादि ऋषिकुळें। इयें तुझिया स्वरूपीं सकळें। देखतसें पाताळें। पन्नगेसीं।६३। किंबहुना त्रैलोक्यपती। तुझिया एकेकाचि अवयवाचिये भिंती। चतुर्दश भुवनें चित्राकृती। अंकुरली जाणो।६४। आणि तेथींचे जे जे लोक। ते चित्ररचना जी अनेक। ऐसें देखतसें अलोलिक। गांभीर्य तुझें।६५।

अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रं
पश्यामि त्वां सर्वतोऽनंतरूपम्।
नांतं न मध्यं न पुनस्तवादिं
पश्यामि विश्वेश्वर विश्वरूपम्।१६।

या दिव्यचक्षूंचेनि पैसें। चहूंकडे जंव पहात असें। तंव दोईंडिका जैसें। आकाश कोंमैलें।६६। तैसे एकचि निरंतर। देवा देखत असें तुझे कर। करीत आघवेचि व्यापार। एकेंचि काळीं।६७। मग महाशून्याचेनि पैसारें। उघडलीं ब्रह्मकटाहाची भांडारें। तैसीं देखतसें अपारें। उदरें तुझी।६८। जी सहस्रशीर्षयाचे देखिले। कोटीवरी होताति एकेवेळे। कीं परब्रह्मचि वदनफळें। मोडोनि आलें।६९। तैसीं वक्त्रें जेउतीं तेउतीं। तुझीं देखतसें विश्वमूर्ती। आणि तयाचिपरी नेत्रपंक्ति। अनेका सैंध।२७०। हें असो स्वर्ग पाताळ। कीं भूमी दिशा अंतराळ। हे विवक्षा ठेली सकळं। मूर्तिमय देखतसें।७१। तुजविण एकादियाकडे। परमाणूहि एतुला कोडें। अवकाश पहातसें परी न सांपडे। ऐसें व्यापिलें तुवां।७२। इयें नानापरी अपरमितें। जेतुलीं सांठविलीं होतीं महाभूतें। तेतुलाही पवाड तुवा अनंतें। कोंदला देखतसें।७३। ऐसा कवणे ठायाहूनि तूं आलासी। एथ बैसलासि कीं उभा आहासी। आणि कवणिये मायेचिये पोटीं होतासी। तुझे ठाण केवढें।७४। तुझे रूप वय कैसें। तुजपैलीकडे काय असे। तूं कायिसयावरी आहासि ऐसें। पाहिलें मियां।७५। तंव देखिले जी आघवेचि। तरी आतां तुझा ठाव तूंचि। तूं कवणाचा नव्हेसि ऐसाचिं। अनादि आयता।७६। तूं उभा ना बैठा। दिघडा ना खुजटा। तुज तळीं वरी वैकुंठा। तूंचि आहासी।७७। तूं रूपें आपणयाचि ऐसा। देवा तुझी तूंचि वयसा। पाठीपोट परेशा। तुझे तूं गा।७८। किंबहुना आतां। तुझें तूंचि आघवें अनंता। हें पुढतपुढती पाहातां। देखिलें मियां।७९। परी या तुझिया रूपाआंत। जी उणीव एक असे देखत। जे आदि मध्य अंत। तीन्ही नाहीं।२८०। येऱ्हवीं गिंवसिलें आघवाठायीं। परी सोय न लाहेचि कंहीं। म्हणोनि त्रिशुद्धी हे नाहीं। तिन्ही एथ।८१। एवं आदिमध्यांतरहिता। तूं विश्वेश्वरा अपरिमिता। देखिलासि जी तत्वतां। विश्वरूपा।८२। तुज महामूर्तीचिया आंगीं। उमटलिया पृथक्मूर्ती अनेगी। लेइलासि वानेपरीचीं आंगीं। ऐसा आवडतू आहासी।८३। नाना पृथ्क् मूर्ती तिया द्रुमवल्ली। तुझिया स्वरूपमहाचळीं। दिव्यालंकार फुलीं फळीं। सासिन्नलिया।८४। हो का जे महोदधी तूं देवा। जहालासि तरंगमूर्ती हेलावा। कीं तूं एक वृक्ष बरवा। मूर्तिफळीं फळलासी।८५। जी भूतीं भूतळ मांडिलें। जैसें नक्षत्रीं गगन गुढारलें। तैसें मूर्तिमय भरलें। देखतसें तुझें रूप।८६। जी एकेकीच्या अंगप्रांतीं। होय जाय हे त्रिजगती। एवढियाही तुझ्या आंगीं मूर्ती। कीं रोमा जालिया।८७। ऐसा पवाड मांडूनि विश्वाचा। तूं कवण पां एथ कोणाचा। हें पाहिलें तंव आमुचा। सारथी तोचि तूं।८८। तरी मज पाहतां मुकुंदा। तूं ऐसाचि व्यापक सर्वदा। मग भक्तानुग्रहें तसर मुग्धा। रूपांतें धरिसी।८९। कसे चहु भुजांचे सावळें। पाहातां वोल्हावती मन डोळे। खेम देऊं जाइजे तरि आकळे। दोहींचि बाहीं।२९०। ऐसी मूर्ति कोडिसवाणी कृपा। करूनि होसी ना विश्वरूपा। कीं आमुचियाचि दिठी सलेपा। जे सामान्यत्वें देखती।९१। तरी आतां दिठीचा विटाळ गेला। तुवां सहजें दिव्यचक्षु केला। म्हणोनि यथारूपें देखवला। महिमा तुझा।९२। परीमकरतुंडामागिलेकडे। होतासि तोचि तूं एवढें। रूप जाहालासि हें फुडें। वोळखिलें मियां।९३।

किरीटिनं गदिनं चक्रिणं च
तेजोराशिं सर्वतो दिप्तिमंतम्।
पश्यामि त्वां दुर्निरीक्ष्यं समंता–
द्दीप्तानलार्कद्युतिमप्रमेयम्।१७।

नोहे तोचि हा शिरीं। मुकुट लेइलासि श्रीहरि। परी आतांचें तेज आणि थोरी। नवल कीं बहु हें।९४। तेंचि हें वरिलियेचि हातीं। चक्र परिजितयां आयती। सांवरितासि विश्वमूर्ति। ते न मोडे खूण।९५। येरीकडे तेचि हे नोहे गदा। आणि ताळिलिया दोनी भुजा निरायुधा। वागोरे सांवरावया गोविंदा। संसरिलिया।९६। आणि तेणोंचि वेगें सहसा। माझिया मनोरथासरिसा। जाहालासि विश्वरूपा विश्वेशा। म्हणोनी जाणें।९७। परी कायसें बाहें चोज। विस्मय करावयाही पाड नाहीं मज। चित्त होऊनि जातसे निबुज। आश्चर्यें येणें।९८। हें एथ आथी का येथ नाहीं। ऐसें विवरों नये कांहीं। नवल अंगप्रभेची नवाई। कैसी कोंदली सैंध।९९। एथ अग्नीचीही दिठी करपत। सूर्य खद्योततैसा हारपत। ऐसें तीव्रपण अद्भुत। तेजाचें यया।३००। हो कां महातेजाच्या महार्णवीं। बुडोनि गेली सृष्टि आघवी। कीं युगांतविजूच्या पालवीं। झाकलें गगन।१। नातरी संहारतेजाच्या ज्वाला। तोडोनि माच बांधला अंतराळां। आतां दिव्यज्ञानाचिया डोळां। पहावेना।२। उज्ज्वळ अधिकाधिक बहुवस। धडाडीत आहे अतिदाहस। पडत दिव्यचक्षूसही त्रास। न्याहाळितां।३। हो कां जे महाप्रळयींचा भडाड। होता काळाग्निरुद्राचिया ठायीं गूढ। तो तृतीयनयनाचा मढ। फुटला जैसा।४। तैसें पसरलेनि प्रकाशें। सैंध पांचवनिचेया ज्वाळांचे वळसे। पडतां ब्रह्मकटाह कोळिसे। होत आहाती।५। ऐसा अद्भुत तेजोराशी। जन्मा नवल म्यां देखिलासी। नाहीं व्याप्ती आणि कांतीसी। पार जी तुझिये।६।

त्वमक्षरं परमं वेदितव्यं त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।
त्वमव्ययः शाश्वतधर्मगोप्ता सनातनस्त्वं पुरुषो मतो मे।१८।
अनादिमध्यांतमनंतवीर्यमनंतबाहुं शशिसूर्यनेत्रम्।

देवा तूं अक्षर। औटाविये मात्रेसि पर। श्रुती जयाचें घर। गिवसीत आहाती।७। जें आकाराचें आयतन। जें विश्वनिक्षेपैक निधान। तें अव्यय तूं गहन। अविनाश जी।८। तूं धर्माचा वोलावा। अनादिसिद्ध तूं नित्य नवा। जाणें मी सततिसावा। पुरुष विश्वेश तूं।९। तूं आदिमध्यांतरहित। स्वसामर्थ्य तूं अनंत। विश्वबाहु अपरिमित। विश्वचरण तूं।३१०। पैं चंद्र चंडांशु डोळां। दावितासि कोपप्रसाद लीळा। एकां रुससी तमाचिया डोळा। एका पाळितोसि कृपादृष्टिं।११।

पश्यामि त्वां दीप्तहुताशवक्त्रं स्वतेजसा विश्वमिदं तपन्तम्।१९।

जी एवंविधा तूतें। मी देखतसें हें निरुतें। पेटलें प्रलयाग्नीचें उजितें। तैसें वक्त्र हे तुझें।१२। वणिवेनि पेटले पर्वत। कवळूनि ज्वाळांचे उभड उठत। तैसी चाटीत दाढा दातांत। जीभ लोळे।१३। इये वदनींचिये उबा। आणि जी सर्वांगकांतीचिया प्रभा। विश्व तातलें अतिक्षोभा। जात आहे।१४।

द्यावापृथिव्योरिदमंतरं हि
व्याप्तं त्वयैकेन दिशश्च सर्वाः।
दृष्ट्वाद्भुतं रूपमुग्रं तवेदं
लोकत्रयं प्रव्यथितं महात्मन्।२०।

का जे द्यौर्लोक आणि पाताळ। पृथिवी आणि अंतराळ। अथवा दशदिशा समाकुळ। दिशाचक्र।१५। हें आघवेंचि तुवां एकें। भरलें देखत आहे कौतुकें। परी गगनाहीसकट भयानकें। आप्लविजे जेवीं।१६। नातरी अद्भुतरसाचिया कल्लोळीं। जहाली चवदाही भुवनांसि कढियाळी। तैसें आश्चर्यच मग मी आकळी। काय एक।१७। नावरे व्याप्ती हे असाधारण। न साहवे रूपाचें उग्रपण। सुख दूरी गेलें तरी प्राण। विपायें धरी जग।१८। देवा ऐसें देखोनि तूंतें। नेणों कैसें आलें भयाचें भरितें। आतां दुःखकल्लोळीं झळंबतें। तीन्हीं भुवनें।१९। येन्हवीं तुज महात्मयाचें देखणे। तरी भयदुःखासि कां मेळवणें। परी हें सुख नव्हेचि जेणे गुणें। तें जाणवत आहें मज।३२०। जंव तुझें रूप नोहे दिठें। तंव जगासि संसारिक गोमटें। आतां देखिलासी तरी विषय विटें। उपजला त्रास।२१। तेवींचि तुज देखिलियासाठीं। काय सहसा तुज देवों येईल मिठी। आणि नेदी तरी शोकसंकटीं। राहों केवीं।२२। म्हणोनि मागां सरों तंव संसार। अडवीत येतसे अनिवार। आणि पुढां तूं तंव अनावर। न

येसि धेवों ।२३। ऐसा माझारिलिया सांकडा। बापुड्या त्रैलोक्याचा होतसे हुरडा। ऐसा हा ध्वनी जी फुडां। चोजवला ।२४। जैसा आरंबळला आगीं। तो समुद्रा ये निवावयालागीं। तंव कल्लोळपाणियाचिया तरंगीं। आगळा बिहे ।२५। तैसें या जगासि जाहालें। तूं तें देखोनि तळमळित ठेले।

अमी हि त्वां सुरसंघा विशन्ति
केचिद्भिताः प्रांजलयो गृणन्ति।
स्वस्तीत्युक्त्वा महर्षिसिद्धसंघाः
स्तुवंति त्वां स्तुतिभिः पुष्कलाभिः ।२१।

यामाजीं पैल भले। सुरांचे मेळावे ।२६। हें तुझेनि आंगिकें तेजें। जाळूनि सर्व कर्मांचीं बीजें। मिळत तुजआंत निजें। सद्भावेंसीं ।२७। आणिक एक सावियाचि भयभीरू। सर्वस्वें धरूनि तुझी मोहरूं। तुज प्रार्थितताति करू। जोडोनिया ।२८। देवा अविद्यार्णवीं पडिलों। जी विषयवागरें आतुडलों स्वर्गसंसाराचिया सांकडलों। दोहीं भागीं ।२९। ऐसें आमुचें सोडविणें। तुजवांचोनि कीजेल कवणें। तुज शरण गा सर्वप्राणें। म्हणत देवा ।३३०। आणि महर्षी अथवा सिद्ध। विद्याधरसमूह विविध। हें बोलत तुज स्वस्तिवाद। करिती स्तवन ।३१।

रुद्रादित्या वसवो ये च साध्या
विश्वेऽश्विनौ मरुतश्चोष्मपाश्च।
गंधर्वयक्षासुरसिद्धसंघा
वीक्षंते त्वां विस्मिताश्चैव सर्वे ।२२।

हे रुद्रादित्यांचे मेळावे। वसु हन साध्य आघवे। अश्विनौ देव विश्वदेव विभवें। वायुही हे जी ।३२। अवधारा पितर हन गंधर्व। पैल यक्षरक्षोगण सर्व। जी महेंद्रमुख्य देव। का सिद्धादिक ।३३। हे आघवेचि आपुलालिया लोकीं। उत्कंठित अवलोकी। हे महामूर्ती दैविकीं। पाहात आहाती ।३४। मग पाहात पाहात प्रतिक्षणीं। विस्मित होऊनि अंतःकरणीं। करित निजमुकुटीं वोवाळणी। प्रभुजी तुज ।३५। ते जय जय घोष कलरवें। स्वर्ग गाजविती आघवे। ठेवित ललाटावरी बरवे। करसंपुट ।३६। तिये विनयद्रुमाचिये अटवीं। सुरवाडली सात्विकांची माधवी। म्हणोनि करसंपुटपल्लवीं। तूं होतासि फळ ।३७।

रूपं महत्ते बहुवक्त्रनेत्रं
महाबाहो बहुबाहूरुपादम्।
बहूदरं बहुदंष्ट्राकरालं
दृष्ट्वा लोकाः प्रव्यथितास्तथाऽहम् ।२३।

जी लोचना भाग्य उदेलें। मना सुखाचें सुयाणें पाहलें। जे अगाध तुझें देखिलें। विश्वरूप इंहीं ।३८। हें लोकत्रयव्यापक रूपडें। पाहातां देवांही वचक पडे। याचें सन्मुखपण जोडे। भलतयाकडुनी ।३९। ऐसें एकचि परी विचित्रें। आणि भयानकें वक्त्रें। बहुलोचन हे सशस्त्रें। अनंतभुजा ।३४०। अनंत ऊरु बाहु चरण। बहूदर आणि नानावर्ण। कसें प्रतिवदनीं मातलेपण। आवेशाचें ।४१। हो का महाकल्पाचिया अंतीं। तवकलेनि यमें जेउततेउतीं। प्रळयाग्नीचीं उजितीं। आंबुखिलीं जैसीं ।४२। नातरी संहारत्रिपुरारीचीं यंत्रें। कीं प्रळयभैरवाचीं क्षेत्रें। नाना युगांतशक्तीचीं पात्रें। भूतखिचा वोडवली ।४३। तैसी जियेतियेकडे। तुझीं वक्त्रें जी प्रचंडें। न समाती दरीमाजीं सिंहाडे। तैसे दर्शन दिसती रागिट ।४४। जैसें काळरात्रीचेनि आधारें। उल्हासत निघती संहारखेचरें। तैसिया वदनीं प्रळयरुधिरें। काटलिया दाढा ।४५। हें असो काळें अवंतिले रण। का सर्व संहारें मातलें मरण। तैसें अतिभिंगुळवाणेपण। वदनीं तुझिये ।४६। हे बापडी लोकसृष्टी। मोटकीयेचि पाहिली दिठीं। आणि दुःखकाळिंदीचिया तटीं। झाड होऊनि ठेली ।४७। तुज महामृत्यूचिया सागरीं। आतां हे त्रैलोक्यजीविताची तरी। शोकदुर्वातलहरीं। आंदोळत असे ।४८। एथ कोपोनि जरी वैकुंठें। ऐसें हन म्हणिपैल अवचटें। जे तुज लोकांचे काई वाटे। तूं ध्यानसुख हें भोगी ।४९। तरी जी लोकांचे कीर साधारण। वायां आड सूतसें वोडण। केवीं सहसा म्हणे प्राण। माझेचि कांपती ।३५०। ज्या मज संहाररुद्र वासिपें। ज्या मजभेणें मृत्यु लपे। तो मी एथें अहाळबाहळीं कांपे। ऐसें तुवां केलें ।५१। परी नवल बापा हे महामारी। इया नाम विश्वरूप जरी। हें भ्यासुरपणें हारी। भयासि आणी ।५२।

नभःस्पृशं दीप्तमनेकवर्णं
व्यात्ताननं दीप्तविशालनेत्रम्।
दृष्ट्वा हि त्वां प्रव्यथितांतरात्मा
धृतिं न विंदामि शमं च विष्णो।२४।

ठेलीं महाकाळेंसीं हटेतटें। तैसी कितीएकें मुखें रागिटें। इंहीं वाढोनियां धाकुटें। आकाश केलें।५३। गगनाचेनि वाडपणें नाकळे। त्रिभुवनींचियाही वारिया न वेंटाळे। ययाचेनि वाफा आगी जळे। कैसें धडाडीत असे।५४। तेवींचि एकासारिखें एक नोहे। एथ वर्णावर्णांचा भेद आहे। हो का जे प्रळयीं सावावो लाहे। वह्नी ययाचा।५५। जयाचिये आंगीची दीप्ती येवढी। जे त्रैलोक्य कीजे राखोंडी। कीं तयाही तोंडें आणि तोंडीं। दांत दाढा!।५६। कैसा वारया धनुर्वात चढला। समुद्र कीं महापूरीं पडिला। विषाग्नि मारा प्रवर्तला। वडवानळासी।५७। हळाहळ अग्नि पियालें। नवल मरण मारा प्रवर्तलें। तैसें संहारतेजा या जाहाले। वदन देखा।५८। परी कोणें मानें विशाल। जैसें तुटिलिया अंतराळ। आकाशासि कव्हाळ। पडोनि ठेले।५९। नातरी काखे सूनि वसुंधरी। जैं हिरण्याक्ष रिगाला विवरीं। तैं उघडलें हाटकेश्वरीं। जेवीं पाताळकुहर।३६०। तैसा वक्त्रांचा विकाश। माजीं जिव्हांचा आगळाची आवेश। विश्व न पुरे म्हणोनि घांस। न भरीचि कोडें।६१। आणि पाताळव्याळांचिया फूत्कारीं। गरळज्वाळा लागती अंबरीं। तैसी पसरलिये वदनदरी–। माजीं हे जिव्हा।६२। काढूनि प्रळयविजूचीं जुंबाडें। जैसे पन्नासिले गगनाचे हुडे। तैसे आवाळुवांवरी आकडे। धगधगीत दाढांचे।६३। आणि ललाटपटाचिये खोळे। जैसे भयातें भेडविताति डोळे। हो कां जे महामृत्यूचे उमाळें। कडवसां राहिले।६४। ऐसें वाऊनि भयाचें भोज। एथ काय निपजवूं पाहतोसि काज। तें नेणों परी मज। मरणभय आलें।६५। देवा विश्वरूप पाहावयाचे डोहळे। केले तियें पावलों प्रतिफळें। बापा देखिलासि आतां डोळे। निवावे तैसे निवाले।६६। अहो देह पार्थिव कीर जाये। ययाची काकुळती कवणा आहे। परी आतां चैतन्य माझें विपायें। वांचे कीं न वांचें।६७। येऱ्हवीं भयास्तव आंग कांपे। नावेक आगळें तरी मन तापें। अथवा बुद्धिही वासिपे। अभिमान विसरिजे।६८। परी येतुलियाही वेगळा। जो केवळ आनंदैककळा। तया अंतरात्मयाही निश्चळा। आली शियारी।६९। बाप साक्षात्काराचा वेध। कैसा देशधडी केला बोध। हा गुरुशिष्य संबंध। विपायें नांदे।३७०। देवा तुझ्या ये दर्शनीं। जें वैकल्य उपजलें आहे अंतःकरणीं। तें सावरापयालागीं गंवसणी। धैर्याची करितसें।७१। तंव माझेनि नामें धैर्य हारपलें। कीं तयाहीवरी विश्वरूपदर्शन जाहालें। हें असो परि मज भलें आतुडविलें। उपदेशा इया।७२। जीव विसंबावयाचिया चाडा। सैंध धांवाधांवी करितसे बापुडा। परी सोयही कवणेकडां। न लभे एथ।७३। ऐसें विश्वरूपाचिया महामारी। जीवित्व गेलें आहे चराचरीं। जी न बोलें तरी काय करीं। कैसेनि राहें।७४।

दंष्ट्राकरालानि च ते मुखानि
दृष्ट्वैव कालानलसन्निभानि।
दिशो न जाने न लभे च शर्म
प्रसीद देवेश जगन्निवास।२५।

पैं अखंड डोळ्यांपुढें। फुटलें जैसें महाभयाचें भांडे। तैसीं तुझीं मुखें वितंडे। पसरली देखें।७५। असो दांतदाढांची दाटीं। न झांकवे मा दोहो वोठीं। सैंध प्रळयशस्त्रांचिया दाट कांटी। लागलिया जैशा।७६। जैसे तक्षका विष भरलें। हो का जे काळरात्रीं भूत संचरलें। कीं आग्नेयास्त्र परजिलें। वज्राग्नीं जैसें।७७। तैसी तुझीं वक्त्रें प्रचंडें। वरी आवेश हा बाहेरी वोसंडे। आलें मरणरसाचे लोंढें। आम्हांवरी।७८। संसारसमयींचा चंडानिळ। आणि महाकल्पांत प्रळयानळ। या दोहीं जै होय मेळ। तैं काय एक न जळे।७९। तैसीं संहारकें तुझीं मुखें। देखोनि धीर कां आम्हां पारुखे। आतां भुललो मी दिशा न देखें। आपणपें नेणें।३८०। मोटकें विश्वरूप डोळां देखिलें। आणि सुखाचे अवर्षण पडिलें। आतां जापाणीं जापाणीं आपुलें। अस्ताव्यस्त हें।८१। ऐसें करिसी म्हणोनि जरी जाणें। तरी हे गोष्टी सांगावी का मी म्हणें। आतां एकवेळ वांचविजो प्राणें। या स्वरूपप्रळयापासोनी।८२। जरी तूं गोसावी आमुचा अनंता। तरि सुई वोडण माझिया जीविता। सांटवी पसारा हा मागुता। महामारीचा।८३। आइकें सकळ देवांचिये परदेवते। तुवां चैतन्यें गा विश्व वसते। तें विसरलासि हें उपरतें। संहारूं आदरिलें।८४। म्हणोनि वेगीं प्रसन्न होईं देवराया। संहरीं संहरीं आपुली माया। काढीं मातें महाभया–। पासोनियां।८५। हा ठायवरी पुढतपुढती। तूतें म्हणिजे बहुवा काकुळती। ऐसा मी विश्वमूर्ती। भेडका जाहालों।८६। जै अमरावतीये आला धाडा। तैं म्यां एकलेनि केला उवेडा। जो मी काळाचियाही तोंडा। वासिपू न धरीं।८७। परी तयाआंतुल नव्हे देवा। एथ मृत्यूसही करूनि चढावा। तुवां आमुचाचि घोंट भरावा। या सकळ विश्वेसीं।८८। कैसा नव्हतां प्रळयाचा वेळ। गोखां तूंचि मिनलासि काळ। बापुडा हा त्रिभुवनगोळ। अल्पायु

जाहाला ।८९। अहा भाग्या विपरीता। विघ्न उठिलें शांति करितां। कटकटा विश्व गेलें आतां। तूं लागलासि ग्रासूं।३९०। हें नव्हे मा रोकडें। सैंघ पसरूनियां तोंडें। कवळितासि चहूंकडे। सैन्यें इयें।९१।

अमी च त्वां धृतराष्ट्रस्य पुत्राः
सर्वे सहैवावनिपालसंघैः।
भीष्मो द्रोणः सूतपुत्रस्तथाऽसौ
सहास्मदीयैरपि योधमुख्यैः।२६।

नोहेति हे कौरवकुळींचे वीर। आंधळिया धृतराष्ट्राचे कुमर। हे गेले गेले सहपरिवार। तुझिया वदनीं।९२। आणि जे जे यांचेनि सावायें। आले देशोदेशींचे राये। तयांचें सांगावया जावान लाहें। ऐसे सरकटित आहासी।९३। मदमुखांचिया संघटा। घेत आहासि घटघटां। आधोरणा हन थाटा। देतासि मिठीं।९४। जंत्रावरिची मार। पदातींचे मोगर। मुखआंत भार। हारपतासि मा।९५। कृतांताचिया जावळी। जें एकचि विश्वातें गिळी। तियें कोटीवरी सगळीं। गिळितासि शस्त्रें।९६। चतुरंगा परिवारा। संजोडियां रहंवरां। दांत न लाविसी मा परमेश्वरा। कैसा तुष्टलासि बरवा।९७। हां गा भीष्माऐसा कवण। सत्यशौर्यनिपुण। तोही आणि ब्राह्मण द्रोण। ग्रासिलासि कटकटा।९८। अहा सहस्रकराचा कुमर। एथ गेला गेला कर्ण वीर। आणि आमुचिया आघवयांचा केर। फेडिला देखें।९९। कटकटा धातया। कैसें जहालें अनुग्रहा यया। मियां प्रार्थूनि जगा बापुडिया। आणिलें मरण।४००। मागां थोडियाबहुवा उपपत्ती। येणें सांगीतलीया विभूती। तैसा नसेचि मा पुढती। बैसलो पुसों।१। म्हणोनि भोग्य ते त्रिशुद्धी न चुके। आणि बुद्धीही होणारासारिखी ठाकें। माझ्या कपाळीं पिटावें लोकें। तें लोटेल काह्मां।२। पूर्वी अमृतही हातां आले। परी देव नसतीचि उगले। मग काळकूट उठविलें। शेवटीं जैसें!।३। परी ते एकबगीं थोडें। केलिया प्रतिकारामाजिवडें। आणि तिये अवसरींचे तें सांकडे। निस्तरविलें शंभू।४। आतां हा जळता वारा कें वेंटाळे। कोणा हें विषा भरलें गगन गिळें?। महाकाळेंसिं कें खेळें। आंगवत असे?।५। ऐसा अर्जुन दुःखें शिणत। शोधित असे जीव आंत। परी न देखे तो प्रस्तुत। अभिप्राय देवाचा।६। जे मी मारिता हे कौरव मरते। ऐसेनि वेटाळिला होता मोहें बहुतें। तो फेडावयालागी अनंतें। हे दाखविलें निज।७। अरे कोण्ही कोणातें न मारी। एथ मीचि हो सर्व संहारी। हें विश्वरूपव्याजें हरी। प्रकटित असे।८। परी व्यायांचि व्याकुळता। तें न चोजवेची पांडुसुता। मग अहा कंप नव्हता। वाढवित असे।९।

वक्त्राणि ते त्वरमाणा विशंति दंष्ट्राकरालानि भयानकानि।
केचिद्विलग्ना दशनांतरेषु संदृश्यंते चूर्णतैरुत्तमांगैः।२७।

तेथ म्हणे पहा हो एके वेळे। सासिकवचेंसिं दोन्हीं दळें। वदनीं गेलीं आभाळें। गगनीं का जैसीं।४१०। कां महा कल्पाचिया शेवटीं। जैं कृतांत कोपला होय सृष्टी। तैं एकविसांही स्वर्गां मिठी। पाताळासकट दे।११। नातारी उदासीनें दैवें। संचकाची वैभवें। जेथींचीं तेथ स्वभावें। विलया जाती।१२। तैसीं सासिंनलीं सैन्यें एकवटें। इयें मुखीं जाहाली प्रविष्टें। परी एकही तोंडौनि न सुटे। कैसे कर्म देखा।१३। अशोकाचे अंगवसे। चघळिले करेनि जैसे। लोक वक्त्रांताजीं तैसे। वायां गेले।१४। परी सिसांळें मुकुटेंसी। पडिलीं दाढांचे सांडसीं। पीठ होत कैसी। दिसत आहाती।१५। तिथें रत्नें दांतांतिचे सवडीं। कूट लागलें जिभेच्या बुडी। कांहीं कांहीं आगरडीं। दंष्ट्रची माखलीं।१६। हो कां जे विश्वरूपें काळें। ग्रासिली लोकांची शरीरबळें। परी जीवदेहींची सालें। अवश्य कीं राखिली।१७। तैसी शरीरांमाजीं चोखडी। इयें उत्तमांगें होती फुडी। म्हणोनि महाकाळाचियाहि तोंडीं। परी उरली शेखीं।१८। मग म्हणे हे काई। जन्मलयां आन मोहरचि नाहीं। जग आपेसेंचि वदनडोहीं। संचरताहे मा।१९। यया आपेआप आघविया सृष्टी। लागलिया आहाती वदनाचिया शेवटीं। आणि हा जेथीचा तेथ मिठी। देतसे उगला।४२०। ब्रह्मादिक समस्त। उंचा मुखामाजीं धांवत। येर सामान्य हे भरत। ऐलीच वदनीं।२१। आणीकही भूतजात। तें उपजलेचि ठायीं ग्रासित। परी याचिया मुखा निभ्रांत। न सुटेचि कांहीं।२२।

यथा नदीनां बहवोऽबुवेगाः
समुद्रमेवाभिमुखा द्रवंति।
तथा तवामी नरलोकवीरा
विशंति वक्त्राण्यभिविज्वलंति।२८।

जैसे महानदीचे वोघ। वहिले ठाकती समुद्राचें आंग। तैसे आघवांचिकडूनि जग। प्रवेशत मुखीं।२३। आयुष्यपंथें प्राणिगणीं। करोनि अहोरात्रांचीं सोवाणीं। वेगें वक्त्रमिळणीं। साधिजत आहाती।२४।

यथा प्रदीप्तं ज्वलनं पतंगा
विशंति नाशाय समृद्धवेगाः।
तथैव नाशाय विशंति लोका–
स्तवापि वक्त्राणि समृद्धवेगाः।२६।

जळतया गिरीच्या गवाखा। माजी धापती पतंगाचिया झाका। तैसे समग्र लोक देखा। इये वदनीं पडती।२५। परी जेतुलें येथ प्रवेशलें। तें तातलिया लोहें पाणी पां गिळिलें। वहिवाटीही पुसिलें। नाम रूप तयांचें।२६।

लेलिह्यसे ग्रसमानः समंता–
ल्लोकान् समग्रान्वदनैर्ज्वलद्भिः।
तेजोभिरापूर्य जगत्समग्रं
भासस्तवोग्राः प्रतपंति विष्णो।३०।

आणि येतुलियाही आरोगण। करितां भुके नाहीं उणेपण। कैसें दीपन असाधारण। उदयलें यया।२७। जैसा रोगिया ज्वराहूनि उठिला। का भणगा दुष्काळ पाहला। तैसा जिभांचा लवलवाट देखिला। आवाळुवें चाटितां।२८। तैसे आहाराचे नांवें कांहीं। तोंडापासूनि उरलेच नाहीं। कैसी समसमित नवाई। भुकेलेपणाची।२९। काय सागराचा घोंट भरावा। कीं पर्वताचा घांस करावा। ब्रह्मकटाह घालावा। आवघाचि दाढे।४३०। दिशा सगळियाचि गिळावियां। चांदिणिया चाटूनि घ्याविया। ऐसें वर्तत आहे साविया। लोलुप्य बा तुझें।३१। जैसा भोगीं काम वाढे। कां इंधनें आगीसि हाकाक चढे। तैसीं खातखातांचि तोंडें। खाखातें ठेली।३२। कैसें एकचि केवढे पसरलें। त्रिभुवन जिव्हाग्रीं आहे टेंकलें। जैसें का कवींठ घातलें। वडवानळीं।३३। ऐसीं अपार वदनें। आतां येतुलीं कैंची त्रिभुवनें। कां आहार न मिळतां येणें मानें। वाढविली सैंघ।३४। अगा हा लोक बापुडा। जाहाला वदनज्वाळां वरपडा। जैसीं वणवेयाचिया वेढां। सांपडती मृगें।३५। आतां तैसें या विश्वां जाहालें। देव नव्हे हें कर्म आले। का जगजळचरां पांगिलें। जाळें काळें।३६। आतां इये अंगप्रभेचिये वागुरे। कोणीकडूनि निगिजैल चराचरें। ही वक्त्रें नोहेति जोहरें। वोडविली जगा।३७। आगी आपुलेनि दाहकपणें। कैसेनि पोळिजे तें नेणें। परी जया लागे तया प्राणें। सुटिका नाहीं।३८। नातरी माझेनि तिखटपणें। कैसे निवटे हें शस्त्र कायी जाणें। का आपुलिया मारा नेणे। विष जैसे।३९। तैसी तुज कांहीं। आपुलिया उग्रपणाची सेचि नाहीं। परी ऐलीकडिले मुखीं खाई। हों सरली जगाची।४४०। अगा आत्मा तूं एक। सकळ विश्वव्यापक। तरी कां आहां अंतक। तैसा वोडवलासी।४१। तरी मियां सांडिली जीवित्वाची चाड। आणि तुंवाही न धरावी भीड। मनीं आहे तें उघड। बोल पां सुखें।४२। किती वाढविसी या उग्ररूपा। आंगींचें भगवंतपण आठवीं बापा। नाहीं तरी कृपा। मजपुरती पाहीं।४३।

आख्याही मे को भवानुग्ररूपो
नमोस्तु ते देववर प्रसीद।
विज्ञातुमिच्छामि भवंतमाद्यं
न हि प्रजानामि तव प्रवृत्तिम्।३१।

तरी एक वेळ वेदवेद्या। जी त्रिभुवनैक आद्या। विनवणी विश्ववंद्या। आइकें माझी।४४। ऐसे बोलोनि वीरें। चरण नमस्कारिले शिरें। मग म्हणे तरी सर्वेश्वरें। अवधारिजे।४५। मिया होआवया समाधान। जी पुसिलें विश्वरूपध्यान। आणि एकेचि काळें त्रिभुवन। गिळितचि उठिलासी।४६। तरी तूं कोण कां येतुलीं। इयें भ्यासुरें मुखें कां मेळविली। अवघियाचि करीं परजिलीं। शस्त्रें काह्यां।४७। जी जंव तंव रागीटपणें। वाढोनि गगना आणितोसि उणें। कां डोळे करूनि भिंगुळवाणे। भेडसावीत आहासी।४८। एथ कृतांतेंसीं देवा। कासया किजतसे हेवा। हा आपुला तुवां सांगावा। अभिप्राय मज।४९। या बोला म्हणे अनंत। मी कोण हें आहासी पुसत। आणि कायिसययालागीं असें वाढत। उग्रतेसीं।४५०।

श्रीभगवानुवाचः– कालोऽस्मि लोकक्षयकृतप्रवृद्धो
लोकान् समाहर्तुमिह प्रवृत्तः।
ऋतेऽपि त्वां न भविष्यंति सर्वे
येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः।३२।

तरी मी काळ गा हें फुडें। लोकसंहारावयालागीं वाढें। सैंघ पसरिली आहाती तोंडे। आतां ग्रासीन हें आघवें।५१। एथ अर्जुन म्हणे कटकटा। उबगिलों मागिल्या संकटा। म्हणोनि आळविला तंव वोखटा। उवाइला हा।५२। तेवींचि कठिण बोलें आसतुटी। अर्जुन होईल हिंपुटी। म्हणोनि सवेचि म्हणे किरीटी। परी आन एक असे।५३। तरी आतांचि ये संहारवाहरें। तुम्ही पांडव असां बाहिरें। तेथ जातजातां धनुर्धरें। सांवरिले प्राण।५४। होता मरणमाहामारीं गेला। तो मागुता सावध जाहाला। मग लागला बोला। चित्त देऊं।५५। ऐसें म्हणिजत आहे देवें। अर्जुना माझे तुम्हीं हें जाणावें। येर जाण मी आघवें। सरलो ग्रासूं।५६। वज्रानळीं प्रचंडीं। जैसी घापे लोणियाची उंडी। तैसें जग हें माझिया तोंडीं। तुवां देखिलें जें।५७। तरी तयामाझारीं काहीं। भरवसेनि उणे नाहीं। इयें वायांचि सैन्यें पाही। वल्गिजत अहाती।५८। ऐशा चतुरंगाचिया संपदा। करित महाकाळेंसीं स्पर्धा। वांटिवेचिया मदा। वळंघले जे।५९। हे जे मिळोनिया मेळें। कुंथती वीरवृत्ताचेनि बळें। जयावरी गजदळें वाखाणिजताती।४६०। म्हणती सृष्टीवरी सृष्टी करूं। आण वाहूनि मृत्यूतें मारूं। आणि जगाचा भरूं। घोट यया।६१। पृथ्वी सगळीचि गिळूं। आकाश वरिचियावरी जाळूं। काय बाणवरी खिळूं। वारयातें।६२। बोल हतियेराहूनि तिखट। दिसती अग्निपरिस दासट। मारकपणें कालकूट। महुर म्हणत।६३। तरी हें गंधर्वनगरींचे उमाळें। जाण पोकळीचे पेंडवळे। अगा चित्रीचे पुतळे। वीर हे देखें।६४। हां गा मृगजळाचा पूर आला। दळ नव्हे कापडाचा साप केला। इया शृंगारूनियां खाला। मांडिलिया पै।६५।

तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो लभस्व
जित्वा शत्रून्भुंक्ष्व राज्यं समृद्धम्।
मयैवैते निहताः पूर्वमेव
निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन्।३३।

येर चेष्टवितें जें बळ। तें मागाचि मियां ग्रासिले सकळ। आतां कोल्हेरिचे वेताळ। तैसे निर्जीव हे आहाती।६६। हालविती दोरी तुटली। तरी तिये खांबावरील बाहुली। भलतेणें लोटली। उलथोनि पडती।६७। तैसा सैन्याचा यया बगा। मोडतां वेळ न लगे पै गा। म्हणोनि उठीं उठीं वेगा। शहाणा होईं।६८। तुवां गोग्रहणाचेनि अवसरें। घातलें मोहनास्त्र एकसरें। मग विराटाचेनि महाभेडें उत्तरें। आसडूनि नागविलें।६९। आतां हे त्याहूनि निपटारें जाहालें। निवटीं आयिते रण पडिलें। घेईं यश रिपु जिंतिले। एकलेनि अर्जुनें।४७०। आणि कोरडे यशचि नोहे। समग्र राज्यही आले आहे। तूं निमित्तमात्रचि होयें। सव्यसाची।७१।

द्रोणं च भीष्मं च जयद्रथं च
कर्णं तथान्यानपि योधवीरान्।
मया हतांस्त्वं जहि मा व्यथिष्ठा
युद्ध्यस्व जेताऽसि रणे सपत्नान्।३४।

द्रोणाचा पाड न करी। भीष्माचे भय न धरी। कैसेनि कर्णावरी। परजूं हें न म्हणें।७२। कोण उपाय जयद्रथा कीजे। हें न चितूं चित्त तुझे। आणीकही आथि जे जे। नावाणिगे वीर।७३। तेही एक एक आघवे। चित्रींचे सिंहाडे मानावे। जैसे बोलेनि हातें घ्यावें। पुसोनिया।७४। यांवरी पांडवा। कायसा युद्धाचा मेळावा। हा आभास गा आघवा। येर ग्रासिलें मियां।७५। जेव्हां तुवां देखिलें। हे माझिया वदनीं पडिले। तेव्हांचि यांचे आयुष्य सरलें। आतां रिती सोपें।७६। म्हणोनि वहिला उठीं। मियां मारिले तूं निवटीं। न रिघे शोकसंकटीं। नाथिलिया।७७। आपणचि आडखिळा कीजे। तो कौतुकें जैसा विंधोनि पाडिजे। तैसें देखें गा तुझें। निमित्त आहे।७८। बापा विरुद्ध जे जाहालें। तें उपजताचि वाघे नेलें। आतां राज्येसीं संचलें। यश तूं भोगी।७९। सावियाचि उतत होते दायाद। आणि बळिये जगीं दुर्मद। ते वधिले विशद। सायास न लागतां।४८०। ऐसिया इया गोष्टी। विश्वाच्या वाक्पटीं। लिहूनी घाली किरीटी। विजयी होईं।८१।

संजय उवाचः– एतच्छ्रुत्वा वचनं केशवस्य
कृतांजलिर्वेपमानः किरीटी।
नमस्कृत्वा भूय एवाह कृष्णं
सगद्गदं भीतभीतः प्रणम्य ।३५।

ऐसी आघवीची हे कथा। तया अपूर्णमनोरथा। संजय सांगे कुरुनाथा। ज्ञानदेव म्हणे ।८२। मग सत्यलोकौनि गंगाजळ। सुटलिया वाजत खळाळ। तैसी वाचा विशाळ। बोलतां तया ।८३। नातरी महामेघांचे उमाळे। घडघडीत एके वेळे। का घुमघुमिला मंदराचळें। क्षीराब्धि जैसा ।८४। तैसे गंभीरें महानादें। हें वाक्य विश्वकंदें। बोलिलें अगाधें। अनंतरूपें ।८५। तें अर्जुनें मोटके ऐकिलें। आणि सुख कीं भय दुणावलें। हें नेणों परी कांपिनलें। सर्वांग तयाचें ।८६। सखोलपणें वळली मोट। आणि तैसेचि जोडले करसंपुट। आणि वेळोवेळां ललाट। चरणीं ठेवी ।८७। तेवींचि कांहीं बोलो जाये। तंव गळा बुजलाचि ठाये। हें सुख कीं भय होये। हें विचारा तुम्ही ।८८। परी तेव्हां देवाचियें बोलें। अर्जुना हें ऐसें जाहालें। मियां पदावरूनि देखिलें। श्लोकाचिया ।८९। मग तैसाचि भेणभेण। पुढती जोहारूनि चरण। मग म्हणे जी आपण। ऐसें बोलिलेति ।४९०।

अर्जुन उवाचः– स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या
जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवंति
सर्वे नमस्यंति च सिद्धसंघाः ।३६।

नातरी अर्जुना मी काळ। आणि ग्रसिजे तो माझा खेळ। हा बोल तुझा कीर अढळ। मानूं आम्ही ।९१। परी तुवां जी काळें। आजी स्थितीचिये वेळे। ग्रासिजे हे न मिळे। विचारासी ।९२। कसेनि आंगींचें तारुण्य काढावें। कैचें नव्हे तें वार्धक्य आणावें। म्हणोनि करूं म्हणसी तें नव्हे। बहुत करुनी ।९३। हां जी चौपाहरी न भरतां। कोणेही वेळे श्रीअनंता। काय माध्याह्नीं सविता। मावळत आहे? ।९४। पै तुज अखंडिता काळा। तिन्ही आहाती जी वेळा। त्या तिन्ही परी सबळा। आपुलालिया समयीं ।९५। जे वेळीं हो लागे उत्पत्ती। ते वेळीं स्थिति प्रळय हारपती। आणि स्थितिकाळीं न मिरवती। उत्पत्ती प्रळय ।९६। पाठीं प्रळयाचिये वेळे। उत्पत्ति स्थिति मावळे। हे कायसेनही न ढळे। अनादि ऐसें ।९७। म्हणोनि आजी तंव भरें भोगें। स्थिति वर्तिजत आहे जगें। एथ ग्रसिसी तूं हे न लगे। माझ्या जीवीं ।९८। तंव संकेतें देव बोले। अगा या दोहीं सैन्यांचें मरण पुरलें। तें प्रत्यक्षचि तुज दाविलें। येर यथाकाळें जाण ।९९। हा संकेत जंव अनंता। वेळ लागला बोलतां। तंव अर्जुनें लोक मागुता। देखिला यथास्थित ।५००। मग म्हणतसे देवा। तूं सूत्रीं विश्वलाघवा। जग आला मा आघवा। पूर्वस्थिती पुढती ।१। परी पडिलिया दुःखसागरीं। तूं काढिसी का जया परी। ते कीर्ति तुझी श्रीहरी। आठवित असे ।२। कीर्ति आठवितां वेळोवेळां। भोगीतसे महासुखाचा सोहळा। तेथ हर्षामृतकल्लोळा–। वरी लोळत आहें ।३। देवा जियालेपणें जग। धरी तुझ्या ठायीं अनुराग। आणि दुष्टां तयां भंग। अधिकाधिक ।४। पैं त्रिभुवनींचिया राक्षसा। महाभय तूं हृषीकेशा। म्हणोनि पळताती दाही दिशां। पैलीकडे ।५। एथ सुर नर सिद्ध किन्नर। किंबहुना चराचर। ते तुज देखोनि हर्षनिर्भर। नमस्कारित असती ।६।

कस्माच्च ते न नमेरन् महात्मन्
गरीयसे ब्रह्मणोऽप्यादिकर्त्रे।
अनंत देवेश जगन्निवास
त्वमक्षरं सदसत्तत्परं यत् ।३७।

एथ गा कवणा कारणा। राक्षस हे नारायणा। न लगतीचि चरणा। पळते जाहाले ।७। आणि हें काय तूंतें पुसावें। येतुलें आम्हांसिही जाणवे। तरी सूर्योदयीं राहावें। कैसेनि तमें ।८। जी तूं स्वप्रकाशाचा आगर। आणि जाहाला आहासी गोचर। म्हणोनियां निशाचरां केर। फिटला सहजें ।९। हें येतुले दिवस आम्हा। कांहीं नेणवेचि श्रीरामा। आतां देखतसें महिमा। गंभीर तुझा ।५१०। जेथूनि नाना सृष्टीचिया वोली। पसरती भूतग्रामाचिया वेली। तया महद्ब्रह्मातें व्याली। दैविकी इच्छा ।११। देव निःसीमसत्व सदोदित। देव निःसीमगुण अनंत। देव निःसीमसाम्य सतत। नरेंद्र देवांचा ।१२। जी तूं त्रिजगतिये वोलावा। अक्षर तूं सदाशिवा। तूंचि सद्सत् देवा। तयाही अतीत तें तूं ।१३।

त्वमादिदेवः पुरुषः पुराण–
स्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।
वेत्ताऽसि वेद्यं च परं च धाम
त्वया ततं विश्वमनंतरूप।३८।

तूं प्रकृतिपुरुषांचिया आदि। जी महत्तत्वा तूंचि अवधी। स्वयें तूं अनादि। पुरातन।१४। तूं सकळविश्वजीवन। जीवांसि तूचि निधान। भूतभविष्याचें ज्ञान। तुझ्याचि हातीं।१५। जी श्रुतीचिया लोचनां। स्वरूपसुख तूंचि अभिन्ना। त्रिभुवनाचिया आयतना। आयतन तूं।१६। म्हणोनि जी परम। तूंते म्हणिजे महाधाम। कल्पांतीं महद्ब्रह्म। तुजमाजी रिगे।१७। किंबहुना तुवां देवें। विश्व विस्तारिलें आहे आघवें। तरी अनंतरूपा वागावें। कवणें तूंतें।१८।

वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशांकः
प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च।
नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः
पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते।३९।
नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते
नमोस्तु ते सर्वत एव सर्व।
अनंतवीर्यामितविक्रमस्त्वं
सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः।४०।

जी काय एक तूं नव्हसी। कवणेठायीं नससी। हें असो जैसा आहासी। तैसिया नमो।१९। वायु तूं श्रीअनंता। यम तूं नियमिता। प्राणिगणीं वसता। अग्नि तो तूं।५२०। वरुण तूं सोम। स्रष्टा तूं ब्रह्म। पितामहाचाही परम। आद्य जनक तूं।२१। आणिकही जे जें कांहीं। रूप आथि अथवा नाहीं। तया नमो तुज तैसयाही। श्रीजगन्नाथा।२२। ऐसें सानुरागें चित्तें। नमन केले पांडुसुतें। मग पुढती म्हणें नमस्ते। नमस्ते प्रभो।२३। पाठीं तियें साद्यंते। न्याहाळी श्रीमूर्तीतें। आणि पुढती म्हणे नमस्ते। नमस्ते प्रभो।२४। पाहतां पाहतां प्रांतें। समाधान पावे चित्तें। आणि पुढती म्हणे नमस्ते। नमस्ते प्रभो।२५। इयें चराचरी जी भूतें। सर्वत्र देखे तयांतें। आणि पुनःपुनः म्हणे नमस्ते। नमस्ते प्रभो।२६। ऐसी रूपें तिये अद्भुतें। आश्चर्ये स्फुरती अनंतें। तंव तंव नमस्ते। नमस्तेचि म्हणे।२७। आणिक स्तुतीही नाठवे। आणि निवांतही नसवे। नेणें कैसा प्रेमभावें। गाजोचि लागे।२८। किंबहुना इयापरी। नमन केले सहस्रवरी। कीं पुढती म्हणे श्रीहरी। तुज सन्मुखा नमो।२९। देवासि पाठी पोट आथि कीं नाहीं। येणें उपयोग आम्हां काई। तरी तुज पाठिमोरेयाही। नमों स्वामी।५३०। उभा माझिये पाठीसीं। म्हणोनि पाठिमोरें म्हणावे तुम्हांसी। सन्मुख विमुख जगेंसी। न घडे तुज।३१। आतां वेगळालिया अवयवां। नेणें रूप करूं देवा। म्हणोनि नमो तुज सर्वां। सर्वात्मका।३२। जी अनंतबळसंभ्रमा। तुज नमों अमितविक्रमा। सकलकाळीं समा। सर्वदेशा।३३। आघविया आकाशीं जैसें। अवकाशचि होऊनि आकाश असें। तूं सर्वपणें तैसें। पातलासि सर्व।३४। किंबहुना केवळ। सर्व हें तूंचि निखळ। परी क्षीरार्णवीं कल्लोळ। पयाचे जैसें।३५। म्हणोनिया देवा। तूं वेगळा नव्हसी सर्वां। हें आले मज सद्भावा। आतां तूंचि सर्व।३६।

सखेति मत्वा प्रसभं मदुक्तं
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति।
अजानता महिमानं तवेदं
मया प्रमादात्प्रणयेन वाऽपि।४१।

परी ऐसिया तूं तें स्वामी। कहींच नेणों जी आम्ही। म्हणोनि सोयरे संबंधधर्मीं। राहटलों तुजसीं।३७। अहा थोर वाउर जाहालें। अमृतें संमार्जन म्यां केलें। वारिके घेऊनि दिधलें। कामधेनूतें।३८। परिसाचा खडवाचि जोडला। कीं फोडूनि आम्हीं गाडोरा घातला। कल्पतरू तोडोनि केला। कूप शेता।३९। चिंतामणीची खाणी लागलीं। परी नोळखेची म्हणोनि अव्हेरिली। तैसी तुझी जवळीक धाडिलीं। सांगातीपणें।५४०। हें आजीचेंचि पाहें पां रोकडें। कवण जुंझ हे केवढें। एथ परब्रह्म तूं

उघडें। सारथी केलासी।४१। ययां कौरवांचिया घरा। शिष्टाई धाडिलासी दातारा। ऐसा वणिजेसाठीं जगेश्वरा। विकलासि आम्ही।४२। तूं योगियाचें समाधिसुख। कैसा जाणेचिना मी मूर्ख। उपरोध जी सन्मुख। तुजसीं करूं।४३।

यच्चावहासार्थमसत्कृतोऽसि
विहारशय्यासनभोजनेषु।
एकोऽथवाऽप्यच्युत तत्समक्षं
तत्क्षामये त्वामहमप्रमेयम्।४२।

तूं या विश्वाची अनादि आदी। बैससी जिये सभासदीं। तेथें सोयरीकीचिया संबंधी। रळीं बोलों।४४। विपायें राउळा येवों। तरी तुझेनि अंगें मान पावों। न मानिसी तरी जावों। रुसोनि सलगी।४५। पायां लागोनि बुझावणी। तुझ्या ठायीं शाङ्‌र्गपाणी। पाहिजे ऐशी करणीं। बहु केली आम्हीं।४६। स्वजनपणाचिया वाटा। तुजपुढें बैसे उफराटा। हा पाड काय वैकुंठा। परी चुकलों आम्ही।४७। देवेंसि कोलकाठी धरूं। आखाडां झोंबीलोंबी करूं। सारी खेळतां तस्करूं। निकरेंही भांडों।४८। चांग ते उराउरीं मागों। सर्वज्ञासि कीं बुद्धि सांगों। तेवींचि म्हणो काय लागों। तुझे आम्हीं।४९। ऐसा अपराध हा आहे। जो त्रिभुवनीं न समाये। जीं नेणताचि कीं पाये। शिवतलें तुझे।५५०। देव बोनयाच्या अवसरीं। लोभें कीर आठवण करी। परी माझा निसुग सर्व अवधारीं। जे फुगूनचि बैसें।५१। देवाचिया भोगायतनीं। खेळतां आशंकेना मनीं। जी रिगोनिया शयनीं। सरिसा पहुडें।५२। कृष्णा म्हणोनि हाकारिजे। यादवपणें तूंतें लेखिजे। आपली आण घालिजे। जातां तुज।५३। मज एकासनीं बैसणें। का तुझा बोल न मानणें। हें वोतटीचेनि दाटपणें। बहुत घडलें।५४। म्हणोनि काय काय आतां। निवेदिजेल अनंता। मी राशि आहें समस्तां। अपराधांची।५५। यालागीं पुढां अथवा पाठीं। जिथें राहाटलों बहुवें वोखटी। तियें मायेचियावरी पोटीं। सामावीं प्रभो।५६। जी कोणे एके वेळे। सरिता घेऊनि येती खडुळें। तियें सामाविजेती सिंधुजळें। आन उपाय नाहीं।५७। तैसीं प्रीती का प्रमादें। देवेंसीं मज विरुद्धे। बोलाविलीं तियें मुकुंदें। उपसाहावीं जी।५८। आणि देवाचेनि क्षमत्वें क्षमा। आधार जाली आहे या भूतग्रामा। म्हणोनि जी पुरुषोत्तमा। विनवूं ते थोडें।५९। तरी आतां अप्रमेया। मज शरणागता आपुलिया। क्षमा कीजो जी यया। अपराधांसी।५६०।

पितासि लोकस्य चराचरस्य
त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरीयान्।
न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो
लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभावः।४३।

जी जाणीतले मियां साचें। महिमान आतां देवाचें। देवो होय चराचराचें। जन्मस्थान।६१। हरिहरादि समस्तां। देवा तूं परमदेवता। वेदातेंही पढविता। आद्य गुरु तूं।६२। गंभीर तूं श्रीरामा। नानाभूतैकसमा। सकळ गुणीं अप्रतिमा। अद्वितीया।६३। तुजसीं नाहीं सरिसें। हें प्रतिपादनचि कायसें। तुवां जालेनि अवकाशें। सामाविलें जग।६४। तया तुंझेनि पाडे दुजें। ऐसें बोलताचि लाजिजे। तेथ अधिकचि कीजे। गोष्टी केवीं।६५। म्हणोनि त्रिभुवनीं तूं एक। तुजसारिखा नाहीं आणिक। तुझा महिमा अलौकिक। नेणिजे वानूं।६६।

तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायं
प्रसादये त्वामहमीशमीड्यम्।
पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः
प्रियः प्रियायार्हसि देव सोढुम्।४४।

ऐसें अर्जुनें म्हणितलें। मग पुढती दंडवत घातलें। तेथें सात्विकाचें आलें। भरतें तया।६७। मग म्हणतसे प्रसीद प्रसीद। वाचा होतसे सद्‌गद। काढीं जी अपराध। समुद्रौनी।६८। तुज विश्वसुहृदातें कंहीं। सोयरेपणें न मनूंचि पाहीं। तुज विश्वेश्वराच्या ठायी। ऐश्वर्य केलें।६९। तूं वर्णनीय परी लोभें। मातें वर्णिसी पां सभें। तरी मियां वल्गिजे क्षोभें। अधिकाधिक।५७०। आतां ऐसिया अपराधा। मर्यादा नाहीं मुकुंदा। म्हणोनि रक्ष रक्ष प्रमादा–। पासोनियां।७१। जी हेंचि विनवावयालागीं। कैंची योग्यता माझिया आंगीं। परी अपत्य जैसे सलगी बापेसीं बोले।७२। पुत्राचे अपराध। जरी जाहाले अगाध। तरी पिता साहें निर्द्वंद्व। तैसें साहिजो जी।७३। सख्याचें

उद्धत। सखा साहे निवांत। तैसें तुवां समस्त। साहिजो जी ।७४। प्रियाचिया ठायीं सन्मान। प्रिय न पाहे सर्वथा जाण। तेवीं उच्छिष्ट काढिलें आपण। तें क्षमा कीजो जी ।७५। नातरी प्राणाचें सोयरें भेटे। मग जीवें भूतली जियें संकटें। तिथें निवेदितां न वाटे। संकोच कांहीं ।७६। कां उखितें आंगेंजीवें। आपणपें दिधलें जिया मनोभावें। तिया कांत मिनलिया न राहवें। हृदय जेवीं ।७७। तयापरी जी मियां। हें विनविलें तुमतें गोसांविया। आणीक कांहीं एक म्हणावया। कारण असे ।७८।

अदृष्टपूर्वं हृषितोऽस्मि दृष्ट्वा
भयेन च प्रव्यथितं मनो मे।
तदेव मे दर्शय देव रूपं
प्रसीद देवेश जगन्निवास ।४५।

तरी देवेसीं सलगी केली। जे विश्वरूपाची आळी घेतली। ते मायबापें पुरविली। स्नेहाळाचेनि ।७९। सुरतरूंची झाडें। आंगणीं लावावी कोडें। देयावे कामधेनूचें पाडे। खेळावया ।५८०। मियां नक्षत्रीं डाव पाडावा। चंद्र चंडुवालागीं आणावा। हा छंद सिद्धी नेला आघवा। माउलिये तुवां ।८१। जिया अमृतलेशालागीं सायास। त्याचा पाऊस केला चारी मास। पृथ्वी वाहोनि चासेमास। चिंतामणी पेरिले ।८२। ऐसा कृतकृत्य केलो स्वामी। बहु लळा पाळिला तुम्हीं। दाविलें जे हरब्रह्मीं। नायकिजे कानीं ।८३। मा देखावयाची केउती गोठी। जयाची उपनिषदां नाहीं भेटी। ते जिव्हारींची गाठी। मजलागीं सोडिली ।८४। जी कल्पादि लागौनि। आजीची घडी धरुनी। माझीं जेतुलीं होउनी। गेली जन्में ।८५। तया आघवियाचि आंत। घरडोळीं घेउनि असें पाहत। परी ही देखिली ऐकिली मात। आतुडेचिना ।८६। बुद्धीचे जाणणें। कंहीं नवचेचि याचेनि आंगणें। हें सादही अंतःकरणें। करवेचिना ।८७। तेथ डोळ्यांदेखी होआवी। ही गोष्टीचि कायसया करावी। किंबहुना ऐसें पूर्वी। दृष्ट ना श्रुत ।८८। तें हे विश्वरूप आपुलें। तुम्हीं मज डोळां दाविलें। तरी माझें मन झालें। हृष्ट देवा ।८९। परी आतां ऐशी चाड जीवीं। जे तुजसीं गोठी करावी। जवळीक हे भोगावी। आलिंगावयासी ।५९०। ते इयेचि रूपीं करूं म्हणिजे। तरी कोणे एकेमुखेसी चावळिजे। आणि कवणा खेंव देइजे। तुज लेख नाहीं ।९१। म्हणोनि वारियासवें धावणें। न ठके गगना खेंव देणें। जळकेली खेळणें। समुद्री केउतें ।९२। यालागीं जी देवा। एथींचे भय उपजतसे जीवा। म्हणोनि येतुला लळा पाळावा। जे पुरे हें आतां ।९३। पैं चराचर विनोदें पाहिजे। मग तेणें सुखें घरीं राहीजे। तैसे चतुर्भुज रूप तुझें। तो विसावा आम्हां ।९४। आम्ही योगजात अभ्यासावें। तेणें याचि अनुभवा यावें। शास्त्रातें आलोडावें। परी सिद्धांत तो हाचि ।९५। आम्हीं यजनें किजती सकळें। परी तियें फळावीं येणेंचि फळें। तीर्थें होतू सकळे। याचिलागीं ।९६। आणीकही कांहीं जें जें। दान पुण्य आम्हीं कीजे। तया फळीं फळ तुझें। चतुर्भुज रूप ।९७। ऐसी तेथींची जीवा आवडी। म्हणोनि तेंचि देखावया लवडसवडी। वर्तत असे ते सांकडी। फेडिजे वेगीं ।९८। अगा जीवींचे जाणतेया। सकळ विश्ववसवितेया। प्रसन्न होईं पूजितया। देवांचिया देवा ।९९।

किरीटिनं गदिनं चक्रहस्तमिच्छामि त्वां द्रष्टुमहं तथैव।
तेनैव रूपेण चतुर्भुजेन सहस्रबाहो भव विश्वमूर्ते ।४६।

कैसें नीलोत्पलातें रांवित। आकाशाही रंग लावित। तेजाची वोज दावित। इंद्रनीला ।६००। जैसा परिमळ जाहाला मरगजा। का आनंदासि निघालिया भुजा। ज्याचे जानूवरी मकरध्वजा। जोडली बरव ।१। मस्तकीं मुकुटातें लेवविलें। कीं मुकुटा मुकुटमस्तक झालें। शृंगारा लेणें लाधलें। आंगाचेनि जया ।२। इंद्रधनुष्याचिये आडणी–। माजी मेघ गगनरंगणीं। तैसें आवरिलें शाङ्‍र्गपाणी। वैजयंतिया ।३। आतां कवणी तें उदार गदा। असुरां देत कैवल्यपदा। कैसें चक्र हन गोविंदा। सौम्य तेजें मिरवे ।४। किंबहुना स्वामी। तें देखावया उत्कंठित पां मी। म्हणोनि आतां तुम्हीं। तैसया हो आवें ।५। हे विश्वरूपाचे सोहळे। भोगून निवाले जी डोळे। आतां होताति आधले। कृष्णमूर्तिलागीं ।६। तें साकार कृष्णरूपडें। वांचूनि पाहों नावडे। तें न देखतां थोडें। मानिताति हे ।७। आम्हां भोगमोक्षाचिया ठायीं। श्रीमूर्तीवांचूनि नाहीं। म्हणोनि तैसाचि साकार होईं। हें उपसंहारीं आतां ।८।

श्रीभगवानुवाचः– मया प्रसन्नेन तवार्जुनेदं
रूपं परं दर्शितमात्मयोगात्।
तेजोमयं विश्वमनंतमाद्यं
यन्मे त्वदन्येन न दृष्टपूर्वम् ।४७।

या अर्जुनाचिया बोला। विश्वरूपा विस्मयो जाहाला। म्हणे ऐसा नाहीं देखिला। धसाळ कोणी।६। कोण हे वस्तु पावला आहासी। तया लाभाचा तोष न घेसी। मा भेणे काय नेणों बोलसी। हेकड ऐसा।६१०। आम्हीं सावियाचि जै प्रसन्न होणें। तैं आंगचिवरी म्हणें देणें। वांचोनि जीव असे वेंचणें। कवणासि गा।११। तें हें तुझिये चाडे। आजि जीवाचेंचि दळवाडें। कामऊनियां येवढें। रचिलें ध्यान।१२। ऐसी काय नेणों तुझिये आवडी। जाहाली प्रसन्नता आमुची वेडीं। म्हणोनि गौप्याची ही गुढी। उभविली जगीं।१३। तें हें अपारा अपार। स्वरूप माझें परात्पर। एथूनि ते अवतार। कृष्णादिक।१४। हें ज्ञानतेजाचें निखळ। विश्वात्मक केवळ। अनंत हे अढळ। आद्य सकळां।१५। हें तुजवांचूनि अर्जुना। पूर्वीं श्रुत दृष्ट नाहीं आना। जे जोगे नव्हे साधना। म्हणोनियां।१६।

न वेदयज्ञाध्ययनैर्न दानैर्न च क्रियाभिर्न तपोभिरुग्रैः।
एवंरूपः शक्य अहं नृलोके द्रष्टुं त्वदन्येन कुरुप्रवीर।४८।

याची सोय पातले। आणि वेदीं मौनचि घेतलें। यज्ञकीर माघौते आले। स्वर्गौनियां।१७। साधकीं देखिला आयास। म्हणोनि वाळिला योगाभ्यास। आणि अध्ययनीं सौरस। नाहीं एथ।१८। सीगेचीं सत्कर्मै। धांविन्नलीं स्वसंभ्रमें। तिंहीं बहुतेकी श्रमें। सत्यलोक ठाकिला।१६। तपीं ऐश्वर्य देखिलें। आणि उभयांचि उग्रपण सांडिलें। एवं तपसाधना जें ठेलें। अपारांतरें।६२०। तें हें तुवां अनायासें। विश्वरूप देखिलें जैसें। इये मनुष्यलोकीं तैसें। न फावेची कवणा।२१। आजि ध्यानसंपत्तीलागीं। तूं एकचि आथिला जगीं। हें परम भाग्य आंगीं। विरंचीही नाहीं।२२।

मा ते व्यथा मा च विमूढभावो
दृष्ट्वा रूपं घोरमीदृङ्ममेदम्।
व्यपेतभीः प्रीतमनाः पुनस्त्वं
तदेव मे रूपमिदं प्रपश्य।४६।

म्हणोनि विश्वरूपलाभें श्लाघ। एथींचे भय नेघ नेघ। हें वांचूनि अन्य चांग। न मनीं कांहीं।२३। हां गा समुद्र अमृतांचा भरला। आणि अवसांत वरपडा जाहला। मग कोणीही आथि वोसंडिला। बुडिजेल म्हणोनि?।२४। नातरी सोनयाचा डोंगर। वेसणा न चले हा थोर। ऐसें म्हणोनि अव्हेर। करणें घडे।२५। दैवें चिंतामणी लेइजे। कीं हें ओझे म्हणोनि सांडिजे?। कामधेनू दवडिजे। न पोसवे म्हणोनि?।२६। चंद्रमा आलिया घरा। म्हणिजे निगें करितोसि उबारा। पडिसायि पाडितोसि दिनकरा। परता सर।२७। तैसें ऐश्वर्य हें महातेज। आजि हातां आलें आहे सहज। कीं एथ तुज गजबज। होआवी कां।२८। परी नेणसीच गांवढिया। काय कोपों आतां धनंजया। आंग सांडोनि छाया। आलिंगितोसि मा।२६। हें नव्हे जो मी साचें। एथ मन करूनियां कांचें। प्रेम धरिसी अवगणियेचें। चतुर्भुज जें।६३०। तरी आझुनीवरी पार्था। सांडी सांडी हे आस्था। इयेविषयीं अनास्था। करिसी झणें।३१। हें रूप जरी घोर। विकृत आणि थोर। तरी कृतनिश्चयाचें घर। हेंचि करी।३२। कृपण चित्तवृत्ति जैसी। रोंवोनि घाली ठेवयापासीं। मग नुसधेन देहेंसीं। आपण असे।३३। कां अजातपक्षिया जवळां। जीव ठेऊनि अविसाळां। पक्षिणी अंतराळा–। माजी जाय।३४। नाना गाय चरे डोंगरीं। परी चित्त बांधिलें वत्सें घरीं। तैसें प्रेम एथींचें करी। स्थानपती।३५। येरें वरिचिलेनि चित्तें। बाह्य सख्य सुखापुरतें। भोगिजो कां श्रीमूर्तीते। चतुर्भुज।३६। परी पुढपुढती पांडवा। हा एक बोल न विसरावा। जे इये रूपींहुनी सद्भावा। नेदावें निघों।३७। हें कंहीं नव्हतेंचि देखिलें। म्हणोनि भय जें तुज उपजलें। तें सांडी एथ संचलें। असों दे प्रेम।३८। आतां करूं तुजया सारिखें। ऐसें म्हणितलें विश्वतोमुखें। तरी मागील रूप सुखें। न्याहाळी पां तूं।३६।

संजय उवाचः– इत्यर्जुनं वासुदेवस्तथोक्त्वा
स्वकं रूपं दर्शयामास भूयः।
आश्वासयामास च भीतमेनं
भूत्वा पुनः सौम्यवपुर्महात्मा।५०।

ऐसें वाक्य बोलतखेवों। मागुता मनुष्य जाहला देवो। हें ना परी नवलावो। आवडीचा तिये।६४०। श्रीकृष्णचि कैवल्य उघडें। वरी सर्वस्व विश्वरूपायेवढें। हातीं दिधलें कीं नावडे। अर्जुनासी।४१। वस्तु घेउनि वाळिजे। जैसें रत्नासि दूषण ठेविजे। नातरी कन्या पाहूनियां म्हणिजे। मना न ये हे।४२। तया विश्वरूपायेवढी दशा। करितां प्रीतीचा वाढ कैसा। शेल दिधलीसे उपदेशा। किरीटीसि देवें।४३। मोडोनि भांगाराचा रवा। लेणें घडिलें आपुलिया सवां। मग नावडे जरी जीवा। तरी आटिजे पुढति।४४। तैसें शिष्याचिये प्रीती जाहालें। कृष्णत्व होतें तें विश्वरूप जालें। तें मनानयेचि मग आणिलें। कृष्णपण मागुतें।४५। हा ठाववरी शिष्याची निकसीं। साहाते

गुरु आहाती कवणे देशीं। परी नेणिजे आवडी कैशी। संजय म्हणे।४६। मग विश्व व्यापूनि भगवंतें। जें दिव्य तेज प्रकटलें होतें। तेंचि सानावलें मागुतें। कृष्णस्पीं तिये।४७। जसें त्वंपद हें आघवें। तत्पदीं सामावे। अथवा द्रुमाकार सांठवे। बीजकणिकें जेवीं।४८। नातरी स्वप्नसंभ्रम जैसा। गिळीं चेइली जीवदशा। श्रीकृष्णें योग हा तैसा। संहरिला तो।४९। जैसी प्रभा हारपली बिंबीं। कीं जळदसंपत्ती नभीं। नाना भरतें सिंधुगर्भीं। रिगालें राया।६५०। हो कां जे कृष्णाकृतीचिये मोडी। होती विश्वरूपपटाची घडी। ते अर्जुनाचिये आवडी। उकलुनि दाविली।५१। तंव परिमाणू वा रंग। तेणें देखिला साविया चांग। तेथ ग्राहकीये नव्हेचि लाग। म्हणोनि घडी केली पुढती।५२। तैसें वाढीचेनि बहुवसपणें। रूपें विश्व जिंतिलें जेणें। तें सौम्य कोडिसवाणें। साकार जाहालें।५३। किंबहुना अनंतें। धरिले धाकुटपण मागुतें। परी आश्वासिलें पार्थातें। बिहालियासी।५४। जो स्वप्नीं स्वर्गा गेला। तो अवसांत जैसा चेइला। तैसा विस्मय जाहाला। किरीटीसी।५५। नातरी गुरुकृपेसवें। वोसरलेया प्रपंचज्ञान आघवें। स्फुरे तत्व तेवीं पांडवें। श्रीमूर्ति देखिली।५६। तया पांडवा ऐसें चित्तीं। आड विश्वरूपाची जवनिका होती। ते फिटोनि गेली परौती। हें भलें जाहाले।५७। काय काळातें जिणोनि आला। की महावात मागां सांडिला। आपुलिया बाहीं उतरला। सातही सिंधु।५८। ऐसा संतोष बहु चित्तें। घेइजत असे पंडुसुतें। विश्वरूपापाठीं कृष्णातें देखोनियां।५९। मग सूर्याचिया अस्तमानीं। मागुती तारा उगवती गगनीं। तैसा देखो लागला अवनी। लोकांसहित।६६०। पाहे तंव तेंचि कुरुक्षेत्र। तैसेचि देखे दोहीं भागीं गोत्र। वीर वर्षताती शस्त्रास्त्र। संघाटवरी।६१। तया बाणांचिया मांडवाआंत। तैसाचि रथ देखे निवांत। धुरे बैसला लक्ष्मीकांत। आपण तळीं।६२।

अर्जुन उवाचः– दृष्ट्वेदं मानुषं रूपं तव सौम्यं जनार्दन।
इदानीमस्मि संवृत्तः सचेतः प्रकृतिं गतः।५१।

एवं मागितलें जैसें तैसें। तेणें देखिलें वीरविलासें। मग म्हणे जी जियालों ऐसें। जाहालें आतां।६३। बुद्धीतें सांडोनि ज्ञान। भेणें वळघलें रान। अहंकारेंसी मन देशधडी जाहालें।६४। इंद्रियें प्रवृत्ती भुलली। वाचा वाचकपणा चुकली। ऐसी आपांपरी होती जाली। शरीरग्रामीं।६५। तियें आघवीचि मागुतीं। जीवंतें भेटलीं प्रकृती। आतां जिताणें श्रीमूर्ती। जाहालें इयां।६६। ऐसें सुख जीवीं घेतलें। मग श्रीकृष्णातें म्हणितलें। मियां तुमचें रूप देखिलें। मानुष हें।६७। हें रूप दाखविणें देवराया। कीं मज अपत्या चुकलिया। बुझावोनि तुवां मायां। स्तनपान दिधलें।६८। जी विश्वरूपाचियां सागरीं। होतों तरंग मवित वांवेवरी। तो इये निजमूर्तीच्या तीरीं। निगालों आतां।६९। आइकें द्वारकापुरसुहाडा। मज सुकतिया जी झाडा। हे भेटी नव्हे बहुडा। मेघाचा केला।६७०। जी सावियाची तृषा फुटला। तया मज अमृतसिंधु हा भेटला। आतां जिणयाचा फिटला। अभरंवसा।७१। माझिया हृदयरंगणीं। होताहे हर्षलतांची लावणी। सुखेसीं बुझावणी। जाहाली मज।७२।

श्रीभगवानुवाचः– सुदुर्दर्शमिदं रूपं दृष्टवानसि यन्मम।
देवा अप्यस्य रूपस्य नित्यं दर्शनकांक्षिणः।५२।

यया पार्थाचिया बोलासवें। हें काय म्हणितले देवे। तुवां प्रेम ठेवूनि यावें। विश्वरूपीं कीं।७३। मग इये श्रीमूर्ती। भेटावें सडिया आयती। ते शिकवण सुभद्रापती। विसरलासि मा।७४। अगा आंधळिया अर्जुना। हाता आलिया मेरुही होय साना। ऐसा आथि मना। चुकीचा भावो।७५। तरी विश्वात्मक रूपडें। जें दाविलें आम्हीं तुजपुढे। तें शंभूही परी न जोडे। तपें करितां।७६। आणि अष्टांगादि संकटीं। योगी शिणताति किरीटी। परी अवसर नाहीं भेटीं। जयाचिये।७७। तें विश्वरूप एकादे वेळ। कैसेनि देखों अळुमाळ। ऐसें स्मरतां काळ। जातसे देवां।७८। आशेचिया अंजुळी। ठेऊनि हृदयाचिया निडळीं। तें चातक निराळीं। लागले जैसे।७९। तैसे उत्कंठानिर्भर। होऊनिया सुरवर। घोकीत आठही पाहर। भेटी जयाची।६८०। परी विश्वरूपासारिखें। स्वप्नीही कोण्ही न देखें। तें प्रत्यक्ष तुवां सुखें। देखिले हें।८१।

नाहं वेदैर्न तपसा न दानेन न चेज्यया।
शक्य एवंविधो द्रष्टुं दृष्टवानसि मां यथा।५३।

पैं उपायासि वाटा। न वाहती एथ सुभटा। साहीसहित वोहटा। वाइला वेदी।८२। मज विश्वरूपाचिया मोहरा। चालावया धनुर्धरा। तपाचियाही सर्वभारा। नव्हेचि लाग।८३। आणि दानादि कीर कानडें। मी यज्ञाही तैसा न सांपडें। जैसैनि कां सुरवाडें। देखिला तुवां।८४। तैसा मी एकीचि परी। आतुडें गा अवधारी। जरी भक्ती येऊनि वरी। चित्तातें गा।८५।

भक्त्या त्वनन्यया शक्य अहमेवंविधोऽर्जुन।
ज्ञातुं द्रष्टुं च तत्त्वेन प्रवेष्टुं च परंतप।५४।

परी तेचि भक्ती ऐसी। पर्जन्याची सुटिका जैसी। धरावांचूनि अनारिसी। गतीची नेणें।८६। का सकळ जळसंपत्ति। घेऊनि समुद्रातें गिवसिती। गंगा जैसी अनन्यगती। मिनलीच मिळे।८७। तैसें सर्वभावसंभारें। न धरत प्रेम एकसरें। मजमाजीं संचरे। मीचि होऊनी।८८। आणि तेवींचि मी ऐसा। थडिये आणि माझारी सरिसा। क्षीराब्धि का जैसा। क्षीराचाचि।८९। तैसें मजलागुनी मुंगीवरी। किंबहुना चराचरीं। भजनासि का दुसरी। परीचि नाहीं।६९०। तयाचि क्षणासवें। एवंविध मी जाणवें। जाणितला तरी स्वभावें। दृष्टही होय।९१। मग इंधनीं अग्नि उद्दीपे। आणि इंधन हे भाष हारपे। तें अग्नीचि होऊनि आरोपें। मूर्त जेंवी।९२। का उदय न कीजे तेजाकारें। तंव गगनचि होऊन असे आधारें। मग उदैलिया एकसरें। प्रकाश होय।९३। तैसें माझिये साक्षात्कारीं। सरे अहंकाराची वारी। अहंकारलोपीं अवधारीं। द्वैत जाय।९४। मग मी तो हे आघवें। एक मीचिं आथि स्वभावें। किंबहुना सामावे। समरसें तो।९५।

मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्तः संगवर्जितः।
निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पांडव।५५।

इति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे विश्वरूपदर्शन योगो नाम एकादशोऽध्यायः।

जो मजचि एकलागीं। कर्मे वाहतसे आंगीं। जया मजवांचोनि जगीं। गोमटें नाहीं।९६। दृष्टादृष्ट सकळ। जयाचें मीचि केवळ। जेणें जिणयाचें फळ। मजचि नाम ठेविलें।९७। मग भूतें हें भाष विसरला। जे दिठी मीचि आहे सूदला। म्हणोनि निर्वैर जाहाला। सर्वत्र भजे।९८। ऐसा जो भक्त होये। तयाचें त्रिधातुक हें जै जाये। तै मीचि होऊनि ठाये। पांडवा गा।९९। ऐसें जगदुदरदोंदिलें। तेणें करुणारसरसाळें। संजयो म्हणे बोलिलें। श्रीकृष्णदेवें।७००। ययावरी तो पंडुकुमर। जाहला आनंदसंपदा थोर। आणि कृष्णचरणचतुर। एक तों जगीं।१। तेणें देवाचिया दोनही मूर्ती। निकिया न्याहाळिलिया चित्तीं। तंव विश्वरूपहि कृष्णाकृतीं। देखिला लाभ।२। परी तयाचिये जाणिवे। मान न कीजेचि देवें। जे व्यापकाहूनि नव्हे। एकदेशीं।३। हेंचि समर्थावयालागीं। एक दोन चांगी। उपपत्ती शाङ्‌र्गी। दाविता जाहाला।४। तिया ऐकोनि सुभद्राकांत। चित्तीं आहे म्हणत। तरी होय बरवें दोहीआंत। तें पुढती पुसों।५। ऐसा आलोच करून जीवीं। आतां पुसती वोज बरवी। आदरील तें परिसावी। पुढें कथा।६। प्रांजळ ओवीप्रबंधें। गोष्टी सांगिजेल विनोदें। ते परिसा आनंदे। ज्ञानदेवो म्हणे।७। भरोनि सद्भावाची अंजुळीं। मियां वोवियाफुलें मोकळीं। अर्पिलीं अंघ्रियुगुलीं। विश्वरूपाच्या।७०८।

इति श्रीज्ञानदेवविरचितायां भावार्थदीपिकायां एकादशोऽध्यायः। श्लोक ५५, ओव्या ७०८

ज्ञानेश्वरीः—अध्याय बारावाः—भक्तियोग

जयजय वो शुद्धे। उदारे प्रसिद्धे। अनवरत आनंदें। वर्षतिये।१। विषयव्याळें मिठी। दिधलिया नुठी ताठी। ते तुझिये कृपादृष्टी। निर्विष होय।२। तरि कवणातें ताप पोळी। कैसेनि वो शोक जाळी। जरि प्रसादरसकल्लोळीं। पुरें येसि तूं।३। योगसुखाचे सोहळे। सेवकां तुझेनि स्नेहाळें। सोहंसिद्धी लळे। पाळिसी तूं।४। आधारशक्तींचिया अंकीं। वाढविसी कौतुकीं। हृदयाकाशपालखीं। परिये देसी निजें।५। प्रत्यक्ज्योतीचीं वोवाळणीं। करिसी मनपवनाचीं खेळणीं। आत्मसुखाची बाळलेणी। लेवविसी।६। सतरावियेचें स्तन्य देसी। अनाहताचा हल्लर गासी। समाधिबोधें निजविसी। बुझाउनी।७। म्हणोनि साधका तूं माउली। पिके सारस्वत तुझिया पाउलीं। याकारणें मी साउली। ना संडी तुझी।८। अहो सद्गुरूचिये कृपादृष्टी। तुझें कारुण्य जयातें अधिष्ठीं। तो सकळ विद्यांचिये सृष्टी। धात्रा होय।९। म्हणोनि अंबे श्रीमंते। निजजनकल्पलते। आज्ञापीं मातें। ग्रंथनिरूपणीं।१०। नवरसीं भरवीं सागर। करवीं उचितरत्नांचे आगर। भावार्थाचे गिरिवर। निफजवी माये।११। साहित्यसोनियांचिया खाणी। उघडवीं देशियेचिया क्षोणी। विवेकवल्लीची लावणी। हों देईं सैंध।१२। संवादफळनिधानें। प्रमेयाची उद्यानें। लावीं म्हणें गहनें। निरंतर।१३। पाखांडाचे दरकुटे। मोडी वाग्वादआव्हांटे। कुतर्कांची दुष्टें। सावजें फेडी।१४। श्रीकृष्णगुणीं मातें। सर्वत्र करीं वो सरतें। राणिवे बैसवीं श्रोतयातें। श्रवणाचिये।१५। ये मऱ्हाठियेचिया नगरीं। ब्रह्मविद्येचा सुकाळ करीं। घेणें देणें सुखाचिवरी। हों देईं या जगा।१६। तूं आपुलेनि स्नेहपल्लवें। मातें पांघुरविशील सदैवें। तरि आतांचि हें आघवें। निर्मीन माये।१७। इये विनवणीयेसाठीं। अवलोकिले गुरुकृपादृष्टी। म्हणे गीतार्थेंसीं उठीं। न बोलें बहु।१८। तेथ जी जी महाप्रसाद। म्हणोनि साविया जाहला आनंद। आतां निरोपी प्रबंध। अवधान दिजे।१९।

अर्जुन उवाचः— एवं सततयुक्ता ये भक्तास्त्वां पर्युपासते।
ये चाप्यक्षरमव्यक्तं तेषां के योगवित्तमाः।१।

तरी सकळविराधिराज। जो सोमवंशी विजयध्वज। तो बोलता जाहला आत्मज। पांडुनृपाचा।२०। कृष्णातें म्हणे अवधारिलें। आपण विश्वरूप मज दाविलें। तें नवल म्हणोनि बिहालें। चित्त माझें।२१। आणि इये कृष्णमूर्तीची सवे। यालागीं सोय धरिली जीवें। तंव नको म्हणोनि देवें। वारिलें मातें।२२। तरी व्यक्त आणि अव्यक्त। हें तूंचि एथ निभ्रांत। भक्ति पाविजे व्यक्त। अव्यक्त योगें।२३। या दोनी जी वाटा। तूंतें पाववया वैकुंठा। व्यक्ताव्यक्त दारवंठा। रिगिचे येथ।२४। पैं वानी श्यातुका। तेचि वेगळिये वाला येका। म्हणोनि एकदेशीया व्यापका। सरिसा पाड।२५। अमृताचिया सागरीं। जे लाभे सामर्थ्याची थोरी। तेचि दे अमृतलहरी। चुळी घेतलिया।२६। हे करि माझ्या चित्तीं। प्रतीति आथि जी निरुतीं। परी पुसणें योगपति। तें याचिलागीं।२७। जें देवा तुम्हीं नावेक। अंगीकारिलें व्यापक। तें साचचि कीं कवतिक। हें जाणावया।२८। तरी तुजलागी कर्म। तूंचि जयांचे परम। भक्तीसि मनोधर्म। विकोनि घातला।२९। इत्यादि सर्वीपरी। जे भक्त तूंतें श्रीहरी। बांधोनियां जिव्हारीं। उपासिती।३०। आणि जें प्रणवापैलीकडे। वैखरीयेसि जें कानडें। कायिसयाहि सांगडें। नव्हेचि जें वस्तू।३१। तें अक्षर जी अव्यक्त। निर्दोष देशरहित। सोहंभावें उपासित। ज्ञानिये जे।३२। तया आणि जी भक्तां। येरयेरांमाजीं अनंता। कवणें योग तत्त्वतां। जाणितला सांग।३३। इया किरीटीचिया बोला। तो जगद्बंधु संतोषला। म्हणे हो प्रश्न भला। जाणसी करूं।३४।

श्रीभगवानुवाचः— मय्यावेश्य मनो ये मां नित्ययुक्ता उपासते।
श्रद्धया परयोपेतास्ते मे युक्ततमा मताः।२।

तरी अस्तगिरीचिया उपकंठीं। रिगालिया रविबिंबापाठीं। रश्मी जैसे किरीटी। संचरती।३५। का वर्षाकाळीं सरिता। जैसी चढो लागे पांडुसुता। तैसी नीच नवी भजतां। श्रद्धा दिसे।३६। परी ठाकिलियाहि सागर। जैसा मागीलहा यावा अनिवार। तिये गंगेचिये ऐसा पडिभर। प्रेमभावा।३७। तैसें सर्वेंद्रियांसहित। मजमाजीं सूनि चित्त। जे रात्रि दिवस न म्हणत। उपासिती।३८। इयापरी जे भक्त। आपणपें मज देत। तेचि मी योगयुक्त। परम मानीं।३९।

ये त्वक्षरमनिर्देश्यमव्यक्तं पर्युपासते।
सर्वत्रगमचिंत्यं च कूटस्थमचलं ध्रुवम्।३।

आणि येर तेही पांडवा। जे आरूढोनि सोहंभावा। झोंबती निरवयवा। अक्षरासी।४०। मनाची नखी न लगे। जेथ बुद्धीची दृष्टी न रिगे। इंद्रियां कीर जोगें। काय होईल?।४१। परी ध्यानाही कुवाडें। म्हणोनि एके ठायीं न सांपडे। व्यक्तीसी माजिवडें। कवणेही नोहे।४२। जया सर्वत्र सर्वपणें। सर्वांही काळीं असणें। जें पावूनि

चिंतवणें। हिंपुटी जाहलें।४३। जें होय ना नोहे। जें नाहीं ना आहे। ऐसें म्हणोनि उपाये। उपजतीचिना।४४। जें चळे ना ढळे। सरे ना मैळे। तें आपुलेनीचि बळें। आंगविलें जिंहीं।४५।

संनियम्येंद्रियग्रामं सर्वत्र समबुद्धयः।
ते प्राप्नुवंति मामेव सर्वभूतहिते रताः।४।

पैं वैराग्यमहापावकें। जाळूनि विषयांची कटकें। अधपली तवकें। इंद्रियें धरिलीं।४६। मग संयमाची थाटी। सूनि मुरडिली उफराटीं। इंद्रियें कोंडिली कपाटीं। हृदयाचिया।४७। अपानींचिया तोंडा। लावोनि आसनमुद्रा सुहाडा। मूळबंधाचा हुडा। पन्नासिला।४८। आशेचे लाग तोडिले। अधैर्याचे कडे झाडिले। निद्रेचें शोधिलें। काळवखें।४९। वज्राग्नीचिया ज्वाळीं। करूनि सप्तधातूंची होळीं। व्याधींच्या सिसाळीं। पूजिली यंत्रें।५०। मग कुंडलिनियेचा टेंभा। आधारीं केला उभा। तया चोजविलें प्रभा। निमथावरी।५१। नवद्वारांचिया चौचकी। बाणूनि संयतीची अडवंकी। उघडली खिडकी। ककारांतींची।५२। प्राणशक्तिचामुंडे। पहारूनि संकल्पांचे मेंढे। मनोमहिषाचेनि मुंडें। दिधलीं बळी।५३। चंद्रसूर्यां बुझावणी। करूनि अनाहताची मुडावणी। सतरावियेचे पाणी। जिंकिलें वेगीं।५४। मग मध्यमा मध्यविवरें। तेणें कोरिवें दादरें। ठाकिलें चवरें। ब्रह्मरंध्र।५५। वरी मकरांत सोपान। तें सांडोनियां गहन। काखे सूनिया गगन। भरलें ब्रह्मीं।५६। ऐसे जें समबुद्धी। मिळावया सोहंसिद्धी। आगविताती निवरधी। योनदुर्गें।५७। आपुलिया साटोवाटी। शून्य घेती उठाउठी। तेही मातेंचि किरीटी। पावती गा।५८। वांचूनि योगाचेनि बळें। अधिक कांहीं मिळे?। ऐसें नाहीं आगळें। कष्टचि तयां।५९।

क्लेशोऽधिकतरस्तेषामव्यक्तासक्तचेतसाम्।
अव्यक्ता हि गतिर्दुःखं देहवद्भिरवाप्यते।५।

जिंहीं सकळभूतांचिया हितीं। निरालंबीं अव्यक्तीं। पसरलिया आसक्ती। भक्तीविणें।६०। तयां महेंद्रादि पदें। करीताति वाटवधें। आणि ऋद्धिसिद्धींची द्वंद्वें। पडोनि ठाती।६१। कामक्रोधांचे विलग। उठावती अनेग। आणि शून्येसीं आंग। झुंझवावें कीं।६२। ताहानें ताहानचि पियावी। भुकेलिया भूकचि खावी। अहोरात्र वावीं। मवावा वारा।६३। उनिदियाचें पहुडणें। निरोधाचें वेल्हावणें। झाडांसि साजणें। चावळावें गा।६४। शीत वेढावें। उष्ण पांघुरावें। वृष्टीचिया असावें। घरांआंत।६५। किंबहुना पांडवा। हा अग्निप्रवेश नित्य नवा। भ्रतारावीण करावा। तो हा योग।६६। एथ स्वामीचें काज। ना बापिकें व्याज। परी मरणेंसीं जुंझ। नित्य नवें।६७। ऐसें मृत्युहूनि तीख। का घोंटे कढत विख। डोंगर गिळतां मुख। न फाटे काई।६८। म्हणोनि योगाचिया वाटा। जे निगाले गा सुभटा। तयां दुःखाचाचि वांटा। भागा आला।६९। पाहें पां लोहाचे चणे। जैं बोचरिया पडती खाणें। तैं पोट भरणें कीं मरणें। शुद्धी नेणे।७०। म्हणोनि समुद्र बाहीं। तरणें आथि केंही। का गगनामाजीं पायीं। खोलिजत असे।७१। वळघलिया रणाची थाटी। आंगीं न लागतां काठी। सूर्याची पाउठी। का होय गा।७२। यालागीं पांगुळा हेवा। नव्हे वायूसि पांडवा। तेवीं देहवंतां जीवां। अव्यक्तीं गति!।७३। ऐसाही जरी धिंवसा। बांधोनिया आकाशा। झोंबती तरी क्लेशा। पात्र होती।७४। म्हणोनि येर ते पार्था। नेणतीचि हे व्यथा। जे का भक्तिपंथा। वोठंगले।७५।

ये तु सर्वाणि कर्माणि मयि संन्यस्य मत्पराः।
अनन्येनैव योगेन मां ध्यायंत उपासते।६।

कर्मेंद्रियें सुखें। करिती कर्मे अशेखें। जियें का वर्णविशेखें। भागा आली।७६। विधितें पाळित। निषेधातें गाळित। मज देऊनि जाळित। कर्मफळें।७७। ययापरी पाहीं। अर्जुना माझे ठायीं। संन्यसूनि नाहीं। करिती कर्मे।७८। आणीकही जे जे सर्व। कायिक वाचिक मानसिक भाव। तया मीवांचूनि धांव। आनौती नाहीं।७९। ऐसे जे मत्पर । उपासिती निरंतर। ध्यानमिषें घर। माझें झाले।८०। जयांचिये आवडी। केली मजशीं कुळवाडी। भोग मोक्ष बापुडीं। त्यजिलीं कुळें।८१। ऐसें अनन्ययोगें। विकलें जीवें मनें आंगें। तयांचें कायी एक सांगें। जें सर्व मी करीं।८२।

तेषामहं समुद्धर्ता मृत्युसंसारसागरात्।
भवामि नचिरात्पार्थ मय्यावेशितचेतसाम्।७।

किंबहुना धनुर्धरा। जो मातेचिया ये उदरा। तो मातेचा सोयरा। केतुला पां।८३। तेवीं मी तयां। जैसें असती तैसियां। कळिकाळ नोकोनियां। घेतला पटा।८४। ये-हवीं तरी माझिया भक्तां। आणि संसाराची चिंता। काय समर्थाची कांता। कोरान्न मागे।८५। तैसे ते माझे। कलत्र हे जाणिजे। कायिसेनिही न लाजे। तयांचेनि

मी ।८६। जन्ममृत्यूंचिया लाटी। झळंबती इया सृष्टी। तें देखोनिया पोटीं। ऐसें जाहालें ।८७। भवसिंधूचेनि माजें। कवणासी धाक नुपजे। तेथ जरी की माझें। बिहिती हन ।८८। म्हणोनि गा पांडवा। मूर्तीचा मेळावा। करूनि त्यांचिया गांवा। धांवत आलो ।८६। नामाचेया सहस्रवरी। नावा इया अवधारीं। सजूनियां संसारीं। तारू जाहलों ।६०। सडे जे देखिले। ते ध्यानकांसे लाविले। परिग्रही घातले। तरियांवरी ।६१। प्रेमाची पेटी। बांधली एकाचिया पोटी। मग आणिले तटीं। सायुज्याचिया ।६२। परी भक्तांचेनि नांवे। चतुष्पदादि आघवे। वैकुंठींचिये राणिवे। योग्य केले ।६३। म्हणोनि गा भक्तां। नाहीं एकही चिंता। तयांतें समुद्धर्ता। आथि मी सदा ।६४। आणि जेंव्हाचि का भक्तीं। दिधली आपुली चित्तवृत्ती। तेव्हांचि मज सूती। त्यांचिये नाटीं ।६५। याकारणें गा भक्तराया। हा मंत्र तुवां धनंजया। शिकिजे जे यया। मार्गा भजिजे ।६६।

मय्येव मन आधत्स्व मयि बुद्धिं निवेशय।
निवसिष्यसि मय्येव अत ऊर्ध्वं न संशयः ।८।

अगा मानस हे एक। माझ्या स्वरूपीं सवृत्तिक। करूनि घाली निष्टंक। बुद्धि निश्चयेसीं ।६७। इयें दोनी सरिसीं। मजमाजीं प्रेमेसीं। रिगाली तरी पावसी। मातें तूं गा ।६८। जे मन बुद्धि इंहीं। घर केलें माझ्या ठायीं। तरी सांगें मग काई। मी तूं उरे ।६६। म्हणोनि दीप पालवे। सवेंचि तेज मालवे। का रविबिंबासवें। प्रकाश जाय ।१००। उचललेया प्राणासरिसीं। इंद्रियेंही निगती कैसीं। तैसा मनबुद्धिपासीं। अहंकार ये ।१। म्हणोनि माझिया स्वरूपीं। मन बुद्धि इये निक्षेपी। येतुलेनीं सर्वव्यापी। मीचि होसी ।२। यया बोला कांहीं अनारिसें नाहीं। आपली आण पाहीं। वाहतसें गा ।३।

अथ चित्तं समाधातुं न शक्नोसि मयि स्थिरम्।
अभ्यासयोगेन ततो मामिच्छाप्तुं धनंजय ।६।

अथवा हें चित्त। मनबुद्धिसहित। माझ्या हातीं अचुंबित। न शकसी देवों ।४। तरीं गा ऐसें करीं। यया आठा पाहारांमाझारीं। मोटकें निमिषभरी। देत जाईं ।५। मग जें जें का निमिख। देखेल माझे सुख। तेतुलें अरोचक। विषयीं घेईल ।६। जैसें शरत्काळ रिगे। आणि सरिता वोहटूं लागे। तैसें चित्त काढेल वेगें। प्रपंचौनी ।७। मग पुनवेहूनि जैसें। शशिबिंब दिसेंदिसें। हारपत अवसे। नाहींची होय ।८। तैसे भोगाआंतुनि निगतां। चित्त मजमाजीं रिगता। हळूहळू पांडुसुता। मीचि होईल ।६। अगा अभ्यासयोग म्हणिजे। तो हा एक जाणिजे। येणें कांहीं न निपजे। ऐसें नाहीं ।११०। पैं अभ्यासाचेनि बळें। एकां गति अंतराळें। व्याघ्र सर्प प्रांजळे। केलें एकीं ।११। विष कीं आहारीं पडे। समुद्रीं पायवाट जोडे। एकी वाग्ब्रह्म थोकडें। अभ्यासें केलें ।१२। म्हणोनि अभ्यासासि कांहीं। सर्वथा दुष्कर नाहीं। यालागीं माझ्या ठाईं। अभ्यासें मिळें ।१३।

अभ्यासेऽप्यसमर्थोऽसि मत्कर्मपरमो भव।
मदर्थममि कर्माणि कुर्वन्सिद्धिमवाप्स्यसि ।१०।

का अभ्यासालागीं। कस नाहीं तुझिया आंगीं। तरी आहासी जया भागीं। तैसाचि अस ।१४। इंद्रियें न कोंडी। भोगातें न तोडीं। अभिमान न सांडीं। स्वजातीचा ।१५। कुळधर्म चाळी। विधिनिषेध पाळीं। मग सुखें तुज सरळी। दिधली आहे ।१६। परी मनें वाचा देहें। जैसा जो व्यापार होये। तो मी करीत आहें। ऐसें न म्हणें ।१७। करणें का न करणें। हे आघवें तोचि जाणे। विश्व चळतसे जेणें। परमात्मेनि ।१८। उणयापुरेयाचें कांहीं। उरों नेदीं आपुलिया ठायीं। स्वजातीची करूनि घेईं। जीवित्व हें ।१६। माळियें जेउतें नेलें। तेउतें निवांतचि गेलें। तया पाणिया ऐसें केलें। होआवेंगा ।१२०। म्हणोनि प्रवृत्ति आणि निवृत्ति। इयें वोझीं नेघे मती। अखंड चित्तवृत्ति माझ्या ठायीं ।२१। येन्हवीं तरी सुभटा। उजूं का अव्हांटा। रथ काई खटपटा। करित असे? ।२२। आणि जें जें कर्म निपजे। तें थोडें बहु न म्हणिजे। निवांतचि अर्पिजे। माझ्या ठायीं ।२३। ऐसिया मद्भावना। तनुत्यागीं अर्जुना। तूं सायुज्यसदना। माझिया येसी ।२४।

अथैतदप्यशक्तोऽसि कर्तुं मद्योगमाश्रितः।
सर्वकर्मफलत्यागं ततः कुरु यतात्मवान् ।११।

नातरी हेंही तुज। नेदवे कर्म मज। तरी गा तूं भज। पांडुकुमरा ।२५। बुद्धीचिये पाठींपोटीं। कर्माआदि का शेवटीं। मातें बांधणें किरीटी। दुवाड जरी ।२६। तरी हेंहीं असो। सांडी माझा अतिसो। परी संयतिसीं वसो। बुद्धि तुझी ।२७। आणि जेणें जेणें वेळें। घडती कर्में सकळे। तयांची तियें फळें। त्यजित जाय ।२८। वृक्ष का वेली। लोटती फळें आली। तैसीं सांडी निपजलीं। कर्में सिद्धें ।२६। परी मातें मनीं धरावें। का मज उद्देशे करावें। हें कांहीं नको आघवें। जाऊं दे शून्यीं ।१३०। खडकीं जैसें

वर्षलें। का आगीमाजीं पेरिलें। कर्म मानीं देखिलें। स्वप्न जैसें ।३१। अगा आत्मजेच्या विषीं। जीव जैसा निरभिलाषी। तैसा कर्मी अशेषीं। निष्काम होई ।३२। वन्हीची ज्वाला जैसी। वायां जाय आकाशीं। क्रिया जिरों ते तैसी। शून्यामाजीं ।३३। अर्जुना हा फलत्याग। आवडे कीर असलग। परी योगांमाजी योग। धुरेचा हा ।३४। येणें फलत्यागें सांडे। तें तें कर्म न विरूढे। एकचि वेळु झाडें। वांझे जैसी ।३५। तैसें येणेचि शरीरें। शरीरा येणें सरे। किंबहुना येरझारे। चिरा पडे ।३६। पै अभ्यासाचिया पाउटी। ठाकिजे ज्ञान किरीटी। ज्ञानें येइजे भेटी। ध्यानाचिये ।३७। मग ध्यानासि खेंव। देती आघवेचि भाव। तेव्हां कर्मजात सर्व। दूरी ठाके ।३८। कर्म जेथ दुरावें। तेथ फलत्याग संभवे। त्यागास्तव आंगवे। शांति सगळी ।३९। म्हणोनि यावया शांति। हाचि क्रम सुभद्रापती। अभ्यासचि प्रस्तुतीं। करणें एथ ।१४०।

श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते।
ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छांतिरनंतरम् ।१२।

अभ्यासाहून गहन। पार्था मग ज्ञान। ज्ञानापासोनि ध्यान विशेषिजे ।४१। मग कर्मफलत्याग। तो ध्यानापासोनि चांग। त्यागाहूनि भोग। शांतिसुखाचा ।४२। ऐसिया यया वाटा। इहींचि पेणीं सुभटा। शांतीचा माजिवटा। ठाकिला जेणें ।४३।

अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च।
निर्ममो निरहंकारः समदुःखसुखः क्षमी ।१३।

तो सर्व भूतांच्या ठायीं। द्वेषातें नेणेचि कांहीं। आपपर नाहीं। चैतन्या जैसा ।४४। उत्तमातें धरिजे। अधमातें अव्हेरिजे। हें कांहींचि नेणिजे। वसुधा जेवीं ।४५। का रायाचें देह चाळूं। रंका परौतें गाळूं। हें न म्हणेचि कृपाळू। प्राण पैं गा ।४६। गाईची तृषा हरूं। व्याघ्रा विष होऊनि मारूं। ऐसें नेणेचि का करूं। तोय जैसें ।४७। तैसी आघवियांची भूतमात्रीं। एकपणें जया मैत्री। कृपेसी धात्री। आपण जो ।४८। आणि मी हे भाष नेणें। माझे कांहींचि न म्हणे। सुखदुःख जाणणें। नाहीं जया ।४९। तेवींचि क्षमेलागीं। पृथ्वीसि पवाड आंगीं। संतोषा उत्संगीं। दिधले घर ।१५०।

संतुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढनिश्चयः।
मय्यार्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः ।१४।

वार्षियेवीण सागर। जैसा जळें निर्भर। तैसा निरुपचार। संतोषी जो ।५१। वाहूनि आपली आण। धरी जो अंतःकरण। निश्चया साचपण। जयाचेनि ।५२। जीव परमात्मा दोनी। बैसले एकासनीं। जयाचिया हृदयभुवनीं। विराजती ।५३। ऐसा योगसमृद्धि। होऊनि जो निरवधि। अर्पी मनोबुद्धि। माझ्या ठायीं ।५४। आंतबाहेरि योग। निर्वाळलेयाही चांग। तरी माझा अनुराग। सप्रेम जया ।५५। अर्जुना तो भक्त। तोचि योगी तोचि मुक्त। तो वल्लभा मी कांत। ऐसा पढिये ।५६। हें ना तो आवडे। मज जीवाचेनि पाडें। हेंही एथ थोकडें। रूप करणें ।५७। तरी पढियंतयाची काहाणी। हे भुलीची भारणी। इयें तंव न बोलणी। परी बोलवी श्रद्धा ।५८। म्हणोनि गा आम्हां। वेगा आली उपमा। येऱ्हवीं काय प्रेमा। अनुवाद असे? ।५९। आतां असो हें किरीटी। पैं प्रियाचिया गोष्टी। दुणा थांव उठी। आवडी गा ।१६०। तयाही वरी विपायें। प्रेमळ संवादिया होये। तिये गोडीसि आहे। कांटाळें मग? ।६१। म्हणोनि गा पांडुसुता। तूंचि प्रिय आणि तूंचि श्रोता। वरी प्रियाची वार्ता। प्रसंगें आली ।६२। तरी आतां बोलों। भलेया सुखा मीनलों। ऐसें म्हणतखेवों डोलों। लागला देवो ।६३। मग म्हणे जाण। तया भक्ताचें लक्षण। जया मी अंतःकरण। बैसों घालीं ।६४।

यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः।
हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तो यः स च मे प्रियः ।१५।

तरी सिंधूचेनि माजें। जळचरां भय नुपजे। आणि जळचरीं नुबजे। समुद्र जैसा ।६५। तेवीं उन्मत्तें जगें। जयासि खंती न लगे। आणि जयाचेनि आंगें। न शिणे लोक ।६६। किंबहुना पांडवा। शरीर जैसे अवयवां। तैसा नुबगे जीवा। जीवपणें जो ।६७। जगचि देह जाहालें। म्हणोनि प्रियाप्रिय गेलें। हर्षामर्ष ठेले। दुजेविण ।६८। ऐसा द्वंद्वनिर्मुक्त। भयोद्वगरहित। याहीवरी भक्त। माझ्या ठायीं ।६९। तरी तयाचा गा मज मोहो। काय सांगो तो पढियावो। हें असो जीवीं जीवो। माझेनि तो ।१७०। जो निजानंदें धाला। परिणाम आयुष्या आला। पूर्णते जाहाला। वल्लभ जो ।७१।

अनपेक्षः शुचिर्दक्ष उदासीनो गतव्यथः।
सर्वारंभपरित्यागी यो मद्भक्तः स मे प्रियः ।१६।

तयाचिया ठायीं पांडवा। अपेक्षे नाहीं रिगावा। सुखासि चढावा। जयाचें असणें।७२। मोक्ष देऊनि उदार। काशी होय कीर। परी वेंचणें लागे शरीर। तिये गांवीं।७३। हिमवंत दोष खाये। परी जीविताची हानी होये। तैसे शुचित्व नोहे सज्जनाचें।७४। शुचित्वें शुचि गंगा होये। आणि पाप तापही जाये। परी तेथें आहे। बुडणें एथ। खोलिये पार नेणिजे। तरी भक्तीं न बुडिजे। रोकडाचि लाहिजे। न मरतां मोक्ष।७६। संताचेनि अंगलगें। पापातें जिणणें गंगे। तेणें संतसंगें। शुचित्व कैसे।७७। म्हणोनि असो जो ऐसा। शुचित्वें तीर्थां कुवासा। जेणें उल्लंघविले दिशां। मनोमळ।७८। आंतबाहेरीं चोखाळ। सूर्य जैसा निर्मळ। आणि तत्त्वार्थीचा पायाळ। देखणा जो।७६। व्यापक आणि उदास। जैसें का आकाश। तैसें जयाचें मानस। सर्वत्र गा।१८०। संसारव्यथें फिटला। जो नैराश्यें विनटला। व्याधाहातोनि सुटला। विहंगम जैसा।८१। तैसा सतत जो सुखें। कोणीही टवंच न देखे। नेणिजे गतायुषें। लज्जा जेवी।८२। आणी कर्मारंभालागीं। जया अहंकृती नाहीं आंगीं। जैसे निरिंधन आगीं। विझोनि जाय।८३। तैसा उपशमचि भागा। जयासि आला पैं गा। जो मोक्षाचिया आंगा। लिहिला असे।८४। अर्जुना हा ठाववरी। जो सोहंभाव सरोभरी। तो द्वैताच्या पैलतीरीं। निगों सरला।८५। कीं भक्तिसुखालागीं। आपणपेंचि दाहीं भागीं। वांटूनियां आंगी। सेवकै बाणी।८६। येरा नाम मी ठेवी। मग भजती वोज बरवी। न भजतया दावी। योगिया जो।८७। तयाचें आम्हां व्यसन। आमुचें तो निजध्यान। किंबहुना समाधान। तो मिळे तैं।८८। तयालागीं मज रूपा येणें। तयाचेनि मज एथें असणें। तया लोण कीजे जीवेंप्राणें। ऐसा पढिये।८६।

यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न कांक्षति।
शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान्यः स मे प्रियः।१७।

जो आत्मलाभासारिखें। गोमटें कांहींच न देखे। म्हणोनि भोगविशेखें। हरिखेना जो।१६०। आपणचि विश्व जाहाला। तरी भेदभाव सहजचि गेला। म्हणोनि द्वेष ठेला जया पुरुषा।६१। पैं आपुलें जें साचें। तें कल्पांतींही न वचे। हें जाणोनि गताचें न शोचि जो।६२। आणि जयापरौतें कांहीं नाहीं। तें आपणपेंचि आपल्या ठायीं। जाहाला यालागीं जो कांहीं। आकांक्षीना।६३। वोखटें का गोमटें। हें कांहींही तया नुमटे। रात्रिदिवस न घटे। सूर्यासि जेवीं।६४। ऐसा बोधचि केवळ। जो होऊनि असे निष्फळ। त्याहीवरी भजनशीळ। माझ्या ठायीं।६५। तरी तयाऐसें दुसरें। आम्हां पढियंते सोयरें। नाहीं गा साचोकारें। तुझी आण।६६।

समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः।
शीतोष्णसुखदुःखेषु समः संग विवर्जितः।१८।

पार्था जयाचिया ठायीं। वैषम्याची वार्ता नाहीं। रिपुमित्रां दोहीं। सरिसा पाडू।६७। का घरीचियां उजियेड करावा। पारिकियां आंधार पाडावा। हें नेणेचि गा पांडवा। दीप जैसा।६८। जो खांडावया घाव घाली। का लावणी जयानें केली। दोघां एकचि साउली। वृक्ष दे जैसा।६६। नातरी इक्षुदंडू। पाळितया गोडू। गाळितया कडू। नोहेचि जेवीं।२००। अरिमित्रीं तैसा। अर्जुना जया भाव ऐसा। मानापमानीं सरिसा। होत जाय।१। तिहीं ऋतूं समान। जैसें का गगन। तैसा एकचि मान। शीतोष्णीं जया।२। दक्षिण उत्तर मारुता। मेरु जैसा पांडुसुता। तैसा सुखदुःखप्राप्ता। मध्यस्थ जो।३। माधुर्यें चंद्रिका। सरिसी राया रंका। तैसा जो सकळिकां। भूतां सम।४। आघविया जगा एक। सेव्य जैसें उदक। तैसें जयातें तिन्ही लोक। कांक्षिती गा।५। जो बाह्य संग। सांडोनियां लाग। एकाकी असे आंग। आंगीं सुनी।६।

तुल्यनिंदास्तुतिर्मौनी संतुष्टो येनकेनचित्।
अनिकेतः स्थिरमतिर्भक्तिमान्मे प्रियो नरः।१६।

जो निंदेतें नेघे। स्तुती न श्लाघे। आकाशा न लगे। लेप जैसा।७। तैसें निंदे आणि स्तुती। मान करूनि एके पंक्ती। विचरे प्राणवृत्ती। जनींवनीं।८। साच लटिकें दोन्हीं। न बोले जाहला मौनी। जो भोगितां उन्मनी। आरायेना।६। जो यथालाभें संतोखे। अलाभें न पारुखे। पाउसेंवीण न सुके। समुद्र जैसा।२१०। आणि वायूसि एके ठायीं। बिढार जैसें नाहीं। तैसा न धरीच कहीं। आश्रय जी।११। आघवाचि आकाशस्थिती। जेवीं वायूसि नित्य वस्ती। तेवीं जगचि विश्रांति–। स्थान जया।१२। हें विश्वचि माझे घर। ऐसी मती जयाची स्थिर। किंबहुना चराचर। आपण जाहाला।१३। मग यावरीही पार्था। माझ्या भजनीं आस्था। तरी तयातें मी माथा। मुकुट करीं।१४। उत्तमासि मस्तक। खालविजे हे काय कौतुक। परी मान करिती तीन्ही लोक। पायवणिया।१५। तरी श्रद्धावस्तूसी आदरू। करितां जाणिजे प्रकारू। जरी होय श्रीगुरू। सदाशिव।१६। परी हें असो आतां। महेशातें वानिता। आत्मस्तुती होतां। संचार असे।१७। ययालागीं हें नोहे। म्हणितले रमानाहें। अर्जुना मी वाहे। शिरीं तयातें।१८। जे पुरुषार्थसिद्धी चौथी। घेऊनि आपुलिया हातीं। रिगाला भक्तिपंथीं। जगा देत।१६। कैवल्याचा अधिकारी। मोक्षाची सोडीबांधी करी। कीं जलाचिया परी। तळवट घे।२२०। म्हणोनि गा नमस्कारू। तयातें आम्ही माथां मुकुट करूं। तयाची टांच धरूं। हृदयीं आम्ही।२१। तयाचिया गुणांची लेणीं। लेववूं आपुलिये वाणीं।

तयाची कीर्ती श्रवणीं। आम्ही लेऊं।२२। तो पहावा हे डोहळे। म्हणोनि अचक्षूसी मज डोळे। हातींचेनि लीलाकमळें। पूजूं तयातें।२३। दोंवरी दोनी। भुजा आलो घेउनी। आलिंगावयालागुनी। तयाचें आंग।२४। तया संगाचेनि सुरवाडें। मज विदेहा देह धरणें घडे। किंबहुना आवडे। निरुपम।२५। तेणेंसी आम्हां मैत्र। एथ कायसें विचित्र। परी तयाचे चरित्र। ऐकती जे।२६। तेही प्राणापरौते। आवडती हें निरुतें। जे भक्तचरित्रातें। प्रशंसिती।२७। जो हा अर्जुना साद्यंत। सांगितला प्रस्तुत। भक्तियोग समस्त। योगरूप।२८। जे मी प्रीति करीं। का मनीं शिरसा धरीं। येवढी थोरी। जया स्थितिये।२९।

ये तु धर्म्यामृतमिदं यथोक्तं पर्युपासते।
श्रद्दधाना मत्परमा भक्तास्तेऽतीव मे प्रियाः।२०।

इति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे भक्तियोगो नाम द्वादशोऽध्यायः।

ये हे गोष्टी रम्य। अमृतधारा धर्म्य। करिती प्रतीतिगम्य। आइकोनि जे।२३०। तसीचि श्रद्धेचेनि आदरें। जयाचे ठायीं विस्तरे। जीवीं जया थारे। जे अनुष्ठिती।३१। परी निरूपिली जैसी। तैसीच स्थिती मानसीं। मग सुक्षेत्रीं जैसी। पेरणी जाहाली।३२। परी मातें परम करूनि। इये अर्थीं प्रेम धरूनि। हें सर्वस्व मानूनि। येती जे पैं।३३। पार्था गा जगीं। तेचि भक्त तेचि योगी। उत्कंठा तयालागीं। अखंड मज।३४। ते तीर्थ ते क्षेत्र। जगीं तेचि पवित्र। भक्तिकथेसि मैत्र। जयां पुरुषां।३५। आम्ही तयांचे करूं ध्यान। ते आमुचें देवतार्चन। तेवांचूनि आन। गोमटें न मानूं।३६। तयांचें आम्हां व्यसन। ते आमुचें निधिनिधान। किंबहुना समाधान। ते मिळती तैं।३७। पैं प्रेमळांची वार्ता। जे अनुवादती पांडुसुता। ते मानूं परम देवता। आपुली आम्ही।३८। ऐसें निजजनानंदें। तेणें जगदादिकंदें। बोलिलें मुकुंदें। संजयो म्हणे।३९। राया जो निर्मळू। निष्कलंक लोककृपाळू। शरणांगतां स्नेहाळू। शरण्य जो।२४०। पैं सुरसहायशीळ। लोकलालनलीळ। प्रणतप्रतिपाळ। खेळ जयाचा।४१। जो धर्मकीर्ति धवळ। अगाधदातृत्वें सरळ। अतुळ बळें प्रबळ। बळिबंधन।४२। जो भक्तजनवत्सल। प्रेमळजनप्रांजळ। सत्यसेतु सकळ। कलानिधि।४३। तो श्रीकृष्ण वैकुंठीचा। चक्रवर्ती निजांचा। सांगे, येरू दैवाचा। आइकत असे।४४। आतां ययावरी। निरूपिती परी। संजय म्हणे अवधारीं। धृतराष्ट्रातें।४५। तेचि रसाळ कथा। म्हाटिया प्रतिपथा। आणिजेल आतां। अवधारिजो।४६। ज्ञानदेव म्हणे तुम्ही। संत वोळगावेति आम्हीं। हें पढविलें स्वामी। निवृत्तिदेवें।२४७।

इति ज्ञानदेवविरचितायां भावार्थदीपिकायां द्वादशोऽध्यायः। **श्लोकः २०, ओव्याः २४७.**

जयाचे केलिया स्मरण। होय सकळ विद्यांचें अधिकरण। ते वंदूं श्रीचरण। श्रीगुरूचे।१। जयांचेनि आठवें। शब्दसृष्टी आंगवे। सारस्वत आघवें। जिह्वेसि ये।२। वक्तृत्व गोडपणें। अमृतातें पारुष म्हणे। रस होती वोळगणे। अक्षरांसी।३। भावाचें अवतरण। अवतरवी निजखूण। हाता चढे संपूर्ण। तत्त्वबोध।४। श्रीगुरूचे पाय। जैं हृदय गिवसूनि ठाय। तैं एवढें भाग्य होय। उन्मेषासी।५। ते नमस्कारूनि आतां। जो पितामहाचा पिता। लक्ष्मीयेचा भर्ता। ऐसें म्हणे।६।

श्रीभगवानुवाचः— इदं शरीरं कौंतेय क्षेत्रमित्यभिधीयते।
एतद्यो वेत्ति तं प्राहुः क्षेत्रज्ञमिति तद्विदः।१।

तरी पार्था परिसिजे। देह हे क्षेत्र म्हणिजे। हें जाणे तो बोलिजे। क्षेत्रज्ञ एथें।७।

क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्वक्षेत्रेषु भारत।
क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोर्ज्ञानं यत्तज्ज्ञानं मतं मम।२।

तरी क्षेत्रज्ञ जो एथें। तो मीचि जाण निरुतें। जो सर्व क्षेत्रांतें। संगोपोनि असे।८। क्षेत्र आणि क्षेत्रज्ञातें। जाणणें जे निरुतें। ज्ञान ऐसें तयातें। मानूं आम्ही।९।

तत्क्षेत्रं यच्च यादृक् च यद्विकारि यतश्च यत्।
स च यो यत्प्रभावश्च तत्समासेन मे शृणु।३।

तरी क्षेत्र येणें नांवें। हें शरीर जेणें भावें। म्हणितलें तें आघवें। सांगों आतां।१०। हें क्षेत्र कां म्हणिजे। कैसें कें हें उपजे। कवण कवणीं वाढविजे। विकारी एथ।११। औट हात मोटकें। कीं केवढें पां केतुकें। बरड कीं पिकें। कोणाचे हें।११। इत्यादि सर्व। जे जे याचे भाव। ते बोलिजती सावेव। अवधान देईं।१३। पैं याचि स्थळाकारणें। श्रुति सदा बोबाणे। तर्क येणेंचि ठिकाणें। तोंडाळ केला।१४। चाळितां हेचि बोली। दर्शनें शेवटा आली। तेवींचि नाहीं बुझविलीं। अझुनि द्वंद्वें।१५। शास्त्रांचिये सोयरिके। विचळिजे येणेंच एकें। याचेनि एकवंकें। जगा वाद।१६। तोंडेंसी तोंड न पडे। बोला बोलेंसी न घडे। इया युक्ति बडबडे। त्राय जाहाली।१७। नेणों कोणाचें हें स्थळ। परी कैसें अभिलाषाचें बळ। जे घरोघरीं कपाळ। पिटवीत असे।१८। नास्तिका द्यावया तोंड। वेदांचें गाढें बंड। तें देखोनि पाषांड। आनचि वाजे।१९। म्हणें तुम्ही निर्मूळ। लटिकें वाग्जाळ। ना म्हणसी तरी पोफळ। घातलें आहे।२०। पाषांडाचिये कडे। नागवीं लुंचिती मुंडें। नियोजिलीं वितंडें। तळासि येती।२१। मृत्युबळाचेनि माजें। हें जाई वीण काजें। तें देखोनियां व्याजें। निघाले योगी।२२। मृत्यूसि आधाधिले। तिंहीं निरंजन सेविले। यमनियमांचे केले। मेळावे पुरे।२३। येणेंचि क्षेत्राभिमानें। राज्य त्यजिलें ईशानें। गुंति जाणोनि श्मशानें। वास केला।२४। ऐसिया पैजा महेशा। पांघुरणें दाही दिशा। लांचकर म्हणोनि कोळसा। काम केला।२५। पैं सत्यलोकनाथा। वदनें आली बळार्था। तऱ्ही तो सर्वथा। जाणेचि ना।२६।

ऋषिभिर्बहुधा गीतं छंदोभिर्विविधैः पृथक्।
ब्रह्मसूत्रपदैश्चैव हेतुमद्भिर्विनिश्चितैः।४।

एक म्हणती हें स्थळ। जीवाचेंचि समूळ। मग प्राण हें कुळ। तयाचें एथ।२७। जया प्राणाचे घरीं। अंगें राबती भाऊ चारी। आणि मना ऐसा आवरी। कुळवाडीकर।२८। तयातें इंद्रियबैलांचीं पेटी। न म्हणे अवसी पाहाटी। विषयक्षेत्रीं आटी। काढी भली।२९। मग विधीची वाफ चुकवी। आणि अन्याय बीज वाफवी। कुकर्माचा करवी। राब जरी।३०। तरी तयाचिसारिखें। असंभाव्य पाप पिके। मग जन्मकोटी दुःखें। भोगी जीव।३१। नातरी विधीचिये वाफे। सत्क्रिया बीज आरोपे। तरी जन्मकोटीमापें। सुखचि मविजे।३२। तंव आणिक म्हणती हें नव्हे। हें जिवाचेंचि न म्हणावें। आमुतें पुसा आघवें। क्षेत्राचें या।३३। अहो जीव एथ उखिता। वस्तीकर वाटे जातां। आणि प्राण हा बलौता। म्हणोनि जागे।३४। अनादि जे प्रकृति। सांख्य जियेतें गाती। क्षेत्र हे वृत्ति। तियेची जाणा।३५। आणि तियेतेंचि आघवा। आथी घरमेळावा। म्हणोनि ते वाहिवा। घरीं वाहे।३६। वाहिव्याचिये रहाटी। जे मुदल तिघे इये सृष्टी। ते तियेचिया पोटीं। जहाले गुण।३७। रजोगुण पेरी। तेतुले सत्त्व सोकरी। मग वेळे तम करी। संवगणी।३८। रचूनि महत्तत्त्वाचे खळे। मळी एके काळुगेनि पोळें। तेथ अव्यक्ताची मिळे। सांज भली।३९। तंव एकी मतिगमतीं। या बोलाचिया खंती। म्हणितलें यया ज्ञप्ती। अर्वाचीनां।४०। हां हो परतत्त्वाआंत। कें प्रकृतिची मात। हा क्षेत्रवृत्तांत। उगेचि आइका।४१। शून्यसेज—साळिये। सुलीनतेचिये तुळिये। निद्रा केली होती बळियें। संकल्पें येणें।४२। तो आवसांत चेइला। उद्यमी सदैव भला। म्हणोनि ठेवा जोडला। इच्छावशें।४३। निरालंबीची वाडी। होती

त्रिभुवनायेवढी। हे तयाचिये जोडी। रूपा आली।४४। मग महाभूतांचे एकवाट। सैरा वेटाळूनि भाट। भूतग्रामाचे आघाट। चिरिले चारी।४५। यावरी आदी। पांचवटेयांची बांधी। बांधली प्रभेदीं। पांचभौतिकीं।४६। कर्माकर्माचे गुंडे। बांध घातले दोहींकडे। नपुंसकें बरडें। रानें केलीं।४७। तेथ येरझारेलागीं। जन्ममृत्यूंची सुरंगी। सुहाविली निलागीं। संकल्पें येणें।४८। मग अहंकारासि एकलाधी। करूनि जीवितावधी। वहाविलें बुद्धी। चराचर।४९। यापरी निराळी। वाढे संकल्पाची डाळी। म्हणोनि तो मूळी। प्रपंचा यया।५०। ययापरी मतमुक्तकीं। तेथ पडिघायिले आणिकी। म्हणती हां हो विवेकी। कैसे तुम्ही।५१। परतत्त्वाचिया गांवीं। संकल्पसेज देखावी। तरी कां पां न मनावी। प्रकृती तयाचि।५२। परी असो हें नव्हे। तुम्हीं या न लगावें। आतांचि हे आघवें। सांगिजैल।५३। तरी आकाशीं कवणें। केलीं मेघांची भरणें। अंतरिक्ष तारांगणें। धरी कवण।५४। गगनाचा चांदवा। कोणें ओढिला केधवां। पवन हिंडत असावा। कवणाचें मत।५५। रोमा कवण पेरी। सिंधू कवण भरी। पर्जन्याचिया करी । धारा कवण।५६। तैसें क्षेत्र हें स्वभावें। वृत्ती कवणाची नव्हे। हें वाहे तया फावे। येरां तुटे।५७। तंव आणिकें एकें। क्षोभें म्हणितले निकें। तरी भोगिजे एकें। काळें केवीं हें।५८। तरी ययाचा मार। देखताति अनिवार। तरी स्वमतीं भर। अभिमानियां।५९। हें जाणें मृत्यू रागिटा। सिंहाडयाचा दरकुटा। परी काय कीजे वांजटा। पूरिजत असे।६०। महाकल्पापरौती। कव घालूनि अवचितीं। सत्यलोकभद्रजाती। आंगविजे।६१। लोकपाळ नित्य नवे। दिग्गजांचे मेळावे। स्वर्गींचिये आडवे। रिगोनि मोडी।६२। येर ययाचेनि अंगवातें जन्ममृत्यूचिये गर्तें। निर्जीवें होऊनि भ्रमतें। जीवमृगें।६३। न्याहाळीं पां केव्हडा। पसरलासे चवडा। करूनियां माजीवडा। आकारगज।६४। म्हणोनि काळाची सत्ता। हाचि बोल निरुता। ऐसे वाद पांडुसुता। क्षेत्रालागीं।६५। हे बहु उखिविखी। ऋषीं केली नैमिखी। पुराणें इयेविखीं। मतपत्रिका।६६। अनुष्टुभादि छंदें। प्रबंधी जियें विविधें। तें पत्रावलंबन मदें। करिती अझुनी।६७। वेदींचे बृहत्सामसूत्र। जें देखणेपणें पवित्र। परी तयाही हें क्षेत्र। नेणवेचि।६८। आणिक आणिकींही बहुती। महाकवीं हेतुमंतीं। यालागीं मती। वेंचिलिया।६९। परी ऐसें हें एवढें। कीं अमुकेयाचेचि फुडें। हें कोण्हाही वरपडें। होयचिना।७०। आतां यावरी जैसें। क्षेत्र हे असे। तुज सांगों तैसें। साद्यंत गा।७१।

महाभूतान्यहंकारो बुद्धिरव्यक्तमेव च।
इंद्रियाणि दशैकं च पंच चेंद्रियगोचराः।५।
इच्छा द्वेषः सुखं दुःखं संघातश्चेतना धृतिः।
एतत्क्षेत्रं समासेन सविकारमुदाहृतम्।६।

तरी महाभूतपंचक। आणि अहंकार एक। बुद्धी अव्यक्त दशक। इंद्रियांचा।७२। मग आणीकही एक। विषयांचा दशक। द्वेष सुख दुःख। संघात इच्छा।७३। आणि चेतना धृति। एवं क्षेत्रव्यक्ती। सांगितली तुजप्रती। आथवीची।७४। आतां महाभूतें कवणें। कवण विषय कैसीं करणें। हें वेगळालेपणें। एकैक सांगों।७५। तरी पृथ्वी आप तेज। वायु व्योम इयें तुज। सांगीतली बुझ। महाभूतें।७६। आणि जागतिये दशे। स्वप्न लपालें असे। नातरी अंवसे। चंद्र गूढ।७७। नाना अप्रौढबाळकीं। तारुण्य राहे थोकीं। का न फुलतां कळिकीं। आमोद जैसा।७८। किंबहुना काष्ठीं। वह्नि जेवीं किरीटी। तेवीं प्रकृतीचिया पोटीं। गोप्य जो असे।७९। जैसा ज्वर धातुगत। अपथ्याचे मिष पाहात। मग जालिया आंत–। बाहेरी व्यापी।८०। तैसी पांचांही गांठी पडे। जैं देहाकार उघडें। तैं नाचवी चहूंकडे। तो अहंकार गा।८१। नवल अहंकाराची गोठी। विशेषे न लगे अज्ञानापाठीं। सज्ञानाचे झोंबें कंठी। नाना संकटीं नाचवी।८२। आतां बुद्धि जे म्हणिजे। ते ऐशिया चिन्हीं जाणिजे। बोलिलें यदुराजें। आइकें सांगो।८३। तरी कंदर्पाचेनि बळें। इंद्रियवृत्तीचेनि मेळे। विभांडूनि येती पाळे। विषयांचे।८४। तो सुखदुःखाचा नागोवा। जेथ उगाणों लागे जीवा। तेथ दोहींसी बरवा। पाडू जे धरी।८५। हें सुख हें दुःख। हे पुण्य हे दोख। हें मैळ हें चोख। ऐसें निवडिजे।८६। जिये अधमोत्तम सुझे। जिये साने थोर बुझे। जिया दिठी पारखिजे। विषो जीवो।८७। जे तेजतत्त्वांची आदि। जे सत्त्वगुणाची वृद्धी। ते आत्मया जीवाची संधि। वसवीत असे।८८। अर्जुना ते गा जाण। बुद्धि तूं संपूर्ण। आतां आईक वोळखण। अव्यक्ताचें।८९। पैं सांख्याचिया सिद्धांतीं। प्रकृती जे महामती। तेचि एथें प्रस्तुतीं। अव्यक्त गा।९०। आणि सांख्ययोगमतें। प्रकृती परिसविली तूंतें। ऐसी दोन्ही परी जेथें। विवंचली।९१। जेथ दुजी जे जीवदशा। तिये नांव वीरेशा। अव्यक्त एथ ऐसा। पर्याय हा।९२। तरी पाहालया रजनीं। तारा लोपती गगनीं। का हारपे अस्तमानीं। भूतक्रिया।९३। नातरी देह गेलियापाठीं। देहादिक किरीटी। उपाधि लपे पोटीं। कृतकर्माच्या।९४। कां बीजमुद्रेआंतू। थोके तरु समस्तू। का वस्त्रपण तंतु–। दशे राहे।९५। तैसें सांडूनियां स्थूळ धर्म। महाभूतें भूतग्राम। लया जाती सूक्ष्म। होऊनि जेथ।९६। अर्जुना तया नांवें। अव्यक्त हें जाणावें। आतां आइक आघवे। इंद्रियभेद।९७। तरी श्रवण नयन। त्वचा घ्राण रसन। इयें जाण ज्ञान–। करणें पांचै।९८। इये तत्त्वमेळांपैकीं। सुखदुःखांची उखिविखी। बुद्धि करिते मुखीं। पांचे इहीं।९९। मग वाचा आणि कर। चरण आणि अधोद्वार। पायू हे प्रकार। पांच आणिक।१००। कर्मेंद्रियें म्हणिपती। तिये इये जाणिजती। आइकें कैवल्यपती।

सांगतसें ।१। पैं प्राणाची अंतौरी। क्रियाशक्ति जे शरीरीं। तियेचि रिगिनिगी द्वारीं। पांचें इहीं ।२। एवं दाहाही करणें। सांगीतली देव म्हणे। परिस आतां फुडेपणें। मन तें ऐसें ।३। जें इंद्रियां आणि बुद्धी। माझारिलिये संधी। रजोगुणाच्या खांदीं। तरळत असे ।४। नीळिमा अंबरीं। का मृगतृष्णालहरी। तैसा वायांचि फरारी। वावो जाहाला ।५। आणि शुक्रशोणितांचा सांधा। मिळतां पांचांचा बांधा। वायुतत्त्व दशधा। एकचि जाहालें ।६। मग तिहीं दाहीं भागीं। देहधर्माच्या खैवंगी। आधिष्ठिलें आंगीं। आपुलाल्या ।७। तेथ चांचल्या निखळ। एकलें ठेले निढाळ। म्हणोनि रजाचें बळ। धरिलें तेणें ।८। तें बुद्धिसीं बाहेरी। अहंकाराच्या उरावरी। ऐसें ठायीं माझारी। बळियावलें ।९। वायां मन हे नांव। येऱ्हवीं कल्पनाची सावेव। जयाचेनि संगे जीव। दशा वस्तु ।११०। जें प्रकृतीस मूळ। कामा जयाचें बळ। जें अखंड सुये सळ। अहंकारासी ।११। जें इच्छेतें वाढवी। आशेतें चढवी। जें पाठी पुरवी। भयासि गा ।१२। द्वैत जेथ उठी। अविद्या जेणे लाठी। जें इंद्रियांतें लोटी। विषयांमाजीं ।१३। संकल्पें सृष्टी घडी। सवेंचि विकल्पूनि मोडी। मनोरथांच्या उतरंडी। उतरी रची ।१४। जें भुलीचें कुहर। वायुतत्त्वाचें अंतर। बुद्धीचे द्वार। झांकविलें जेणें ।१५। तें गा किरीटी मन। या बोला नाहीं आन। आतां विषयाभिधान–। भेद आइकें ।१६। तरी स्पर्श आणि शब्द। रूप रस गंध। हा विषय पंचविध। ज्ञानेंद्रियांचा ।१७। इंहीं पांचै द्वारीं। ज्ञानासि धांव बाहेरी। जैसा का हिरविया चारी। भांबावे पशु ।१८। मग स्वर वर्ण विसर्ग। अथवा स्वीकार त्याग। संक्रमण उत्सर्ग। विण्मूत्रांचा ।१९। हें कर्मेंद्रियांचे पांच। विषय गा साच। जे बांधोनियां माच। क्रिया धांवे ।१२०। ऐसे हे दाही। विषय गा इये देहीं। आतां इच्छा तेही। सांगिजैल ।२१। तरी भूतलें आठवे। का बोले कानू झांकवे। ऐसियावरी चेतवें। जे गा वृत्ती ।२२। इंद्रियविषयांचिया भेटी–। सरसीच जे गा उठी। कामाची बाहुटी। धरूनियां ।२३। जियेचेनि उठिलेपणें। मना सैंध धावणें। न रिघावें तेथ करणें। तोंडें सुती ।२४। जिये वृत्तीचिया आवडी। बुद्धी होय वेडी। विषयां जिया गोडी। ते गा इच्छा ।२५। आणि इच्छिलिया सांगडें। इंद्रिया आमिष न जोडे। ऐसा जो डाव पडे। तोचि द्वेष ।२६। आतां यावरी सुख। तें एवंविध देख। जेणें एकेंचि अशेख। विसरे जीव ।२७। मना वाचे काये। जे आपुली आण वाये। देहस्मृतिची त्राये। मोडित ये जें ।२८। जयाचेनि जालेपणें। पांगुळा होइजे प्राणें। सात्त्विकासी दुणें–। वरीही लाभ ।२९। कां आघवियाचि इंद्रियवृत्ती। हृदयाचियां एकांतीं। थापटूनि सुषुप्ति। आणी जें गा ।१३०। किंबहुना सोये। जीव आत्मयाची लाहे। तेथ जे होये। तया नाम सुख ।३१। आणि ऐसी हे अवस्था। न जोडता पार्था। जें जीजे तेंचि सर्वथा। दुःख जाण ।३२। ते मनोरथसंगें न होये। येरवीं सिद्धि गेलेंचि आहे। हे दोनीचि उपाये। सुखदुःखांसी ।३३। आतां असंगा साक्षीभूता। देहीं चैतन्याची जे सत्ता। तिये नाम पांडुसुता। चेतना एथ ।३४। जे नखौनि केशवरी। उभी जागे शरीरीं। जे तिहीं अवस्थांतरीं पालटेना ।३५। मन बुद्ध्यादि आघवीं। जियेचेनि टवटवी। प्रकृतिवनमाधवी। सदाचि जे ।३६। जडाजडीं अंशी। राहाटे जे सरिसी। ते चेतना गा तुजसीं। लटिकें नाहीं ।३७। पैं रावो परिवार नेणे। आज्ञाचि परचक्र जिणे। का चंद्राचेनि पूर्णपणें। सिंधु भरती ।३८। नाना भ्रामकाचें सन्निधान। लोहो करी सचेतन। का सूर्यसंग जन। चेष्टवी गा ।३९। अगा मुखमेळेंविण। पिलियाचे पोषण। करी निरीक्षण। कूर्मी जेवीं ।१४०। पार्था तयापरी। आत्मसंगती इये शरीरीं। सजीवत्वाचा करी। उपयोग जडा ।४१। मग तियेतें चेतना। म्हणिपे पैं अर्जुना। आतां धृतिविवंचना–। भेद आइकें ।४२। तरी तत्वां परस्परें। उघड जाती स्वभाववैरें। नोहे पृथ्वीतें नीरें। न नाशिजे? ।४३। नीरातें आटी तेज। तेजा वायूसि जुंझ। आणि गगन ते सहज। वायूसि भक्षी ।४४। तेवींची कोणेतही वेळे। आपण कायसयाही न मिळे। आंत रिघोनि वेगळें। आकाश हें ।४५। ऐसीं ही पांच भूतें। न साहती एकमेकांतें। कीं तियेंही ऐक्यातें। देहा येती ।४६। द्वंद्वाची उखिविखी। सोडूनि वसती एकीं। एक एकातें पोखी। निजगुणें गा ।४७। ऐसें न मिळे तयां साजणें। चाले धैर्ये जेणें। तिये नाम मी म्हणे। धृती पैं गा ।४८। आणि जीवेंसी पांडवा। या छत्तिसांचा मेळावा। तो हा एथ जाणावा। संघात पैं गा ।४९। एवं छत्तीसही भेद। सांगीतले तुज विशद। यया येतुलेयाते प्रसिद्ध। क्षेत्र म्हणिजे ।१५०। रथांगांचा मेळावा। जेवीं रथ म्हणिजे पांडवा। का अधोर्ध्व अवेवां। नाम देह ।५१। का चतुरंगसमाजें। सेना नाम निपजे। का वाक्यें म्हणिपती पुंजे। अक्षरांचे ।५२। का जळधरांचा मेळा। वाच्य होय आभाळा। नाना लोकां सकळां। नाम जग ।५३। का स्नेह सूत्र वह्नी। मेळ ऐकिये सीनीं। धरिजे तो जनीं। दीप होय ।५४। तैसीं छत्तीसही इयें तत्त्वें। मिळती जेणें एकत्वें। तेणें समूहपरत्वें। क्षेत्र म्हणिजे ।५५। आणि वाहतेनि भौतिकें। पाप पुण्य एथ पिके। म्हणोनि आम्ही कौतुकें। क्षेत्र म्हणों ।५६। आणि एकाचेनि मतें। देह म्हणती ययातें। परी असो हें अनंतें। नामें यया ।५७। पैं परतत्त्वाअरौतें। सीावराआंतौतें। जें कांहीं होते जातें। तें क्षेत्रचि हें ।५८। परी सुर नर उरगीं। घडत आहे योनिविभागीं। तें गुणकर्मसंगीं। पडिलेंसातें ।५९। हेचि गुणविवंचना। पुढां म्हणिपेल अर्जुना। प्रस्तुत तुज ज्ञाना। रूप दावूं ।१६०। क्षेत्र तंव सविस्तर। सांगितलें सविकार। म्हणोनि आतां उदार। ज्ञान आइकें ।६१। जया ज्ञानालागीं। गगन गिळिताती योगी। स्वर्गाची आडवंगी। उमरडोनि ।६२। न धरिती ऋद्धीची भीड। न करिती सिद्धीची चाड। योगाऐसें दुवाड। हेळसिती ।६३। तपोदुर्गें वोलांडित। क्रतुकोटि वोवांडित। उलथूनि सांडित। कर्मवल्ली ।६४। नाना भजनमार्गीं। धांवत उघडिया आंगीं। एक रिघताती सुरंगीं। सुषुम्नेचियें ।६५। ऐसी जिये ज्ञानी। मुनीश्वरांची उतान्ही। वेदतरूच्या पानोवानी। हिंडताती ।६६। देईल गुरुसेवा। इया बुद्धी पांडवा। जन्मशतांचा सांडोवा। टाकित जे ।६७। जया ज्ञानाची रिगवणी।

अविद्ये उणें आणी। जीवा आत्मया बुझावणी। मांडूनि दे।६८। जे इंद्रियाचीं द्वारे आडी। प्रवृत्तीचे पाय मोडी। जे दैन्यचि फेडी। मानसाचे।६९। द्वैताचा दुकाळ पाहे। साम्याचे सुयाण होये। जया ज्ञानाची सोये। ऐसें करी।१७०। मदाचा ठावोचि पुसी। जें महामोहातें ग्रासी। नेदी आपपर ऐसी। भाष उरों।७१। जें संसारातें उन्मूळी। संकल्पपंक प्रक्षाळी। अनावरातें वेंटाळी। ज्ञेयातें जें।७२। जयाचेनि जालेपणें। पांगुळ होइजे प्राणें। जयाचेनि विंदाणें। जग हे चेष्टे।७३। जयाचेनि उजाळें। उघडती बुद्धीचे डोळे। जीव दोंदावरी लोळे। आनंदाचिये।७४। ऐसें जें ज्ञान। पवित्रैकनिधान। जेथ विटाळलें मन। चोख किजे।७५। आत्मया जीवबुद्धी। जे लागली होती क्षयव्याधी। ते जयाचिया सन्निधी। निरुजा किजे।७६। ते अनिरूप्य कीं निरूपिजे। ऐकतां बुद्धी आणिजे। वांचूनि डोळा देखिजे। ऐसें नाहीं।७७। मग तेचि इये शरीरीं। जैं आपुला प्रभावो करी। तैं इंद्रियांचिया व्यापारीं। डोळांही दिसे।७८। पैं वसंताचें रिगवणें। झाडांचेनि साजेपणें। जाणिजे तेवीं करणें। सांगती ज्ञान।७९। अगा वृक्षासि पाताळीं। जळ सांपडे मूळीं। तें शाखांचिये बाहाळीं। वरीही दिसे।१८०। का भूमीचें मार्दव। सांगे कोंभाची लवलव। नाना आचारगौरव। सुकुलीनाचें।८१। अथवा संभ्रमाचिया आयती। स्नेह जैसा ये व्यक्ती। का दर्शनाचिये प्रशस्ती। पुण्यपुरुष।८२। नातरी केळीं कापूर जाहाला। जेवीं परिमळें जाणों आला। का भिंगारी दीप ठेविला। बाहेरी फांके।८३। तैसें हृदयींचेनि ज्ञानें। जियें देहीं उमटती चिह्नें। तियें सांगो आतां अवधानें। चांगे आइक।८४।

अमानित्वमदंभित्वमहिंसा क्षांतिरार्जवम्।
आचार्योपासनं शौचं स्थैर्यमात्मविनिग्रहः।७।

तरी कवणेंही विषयींचें। साम्य होणें न रुचे। संभावितपणाचें। वोझें जया।८५। आथिलेचि गुण वानितां। मान्यपणें मानिता। योग्यतेचें येतां। आंगा रूप।८६। तैं गजबजो लागे कैसा। व्याधें रुंधला मृग जैसा। का बाहीं तरतां वळसां। दाटला जेवीं।८७। पार्था तेणें पाडें। सन्मानें जो सांकडे। गरिमेतें आंगाकडे। येवोंचि नेदी।८८। पूज्यता डोळा न देखावी। स्वकीर्ति कानीं नायकावी। हा अमुक ऐसी नोहावी। सेचि लोकां।८९। तेथ सत्काराची कें गोठी। कें आदरा देईल भेटी। मरणेंसीं सांटी। नमस्कारितां।१९०। वाचस्पतीचेनि पाडें। सर्वज्ञता तरी जोडे। परी वेडिवेमाजी दडे। महिमे भेणें।९१। चातुर्य लपवी। महत्त्व हारवी। पिसेपण मिरवी। आवडोनी।९२। लौकिकाचा उद्वेग। शास्त्रांवरी उबग। उगेपणीं चांग। आथी भर।९३। जगें अवज्ञाची करावी। संबंधीं सोयचि न धरावी। ऐसी ऐसी जीवीं। चाड बहु।९४। तळवटपण बाणे। आंगी हिणावो खेवणें। तें तेंचि करणें। बहुतकरूनि।९५। हा जीवंत ना नोहें। लोक कल्पी येणें भावें। तैसें जिणें होआवें। ऐसी आशा।९६। पैल चालत कीं नोहे। कीं वारेनि जात आहे। जना ऐसा भ्रम जाये। तैसें होइजे।९७। माझें असतेपण लोपो। नामरूप हारपो। मज झणें वासिपो। भूतजात।९८। ऐसीं जयाची नवसियें। जो नित्य एकांता जात जाये। नामेंचि जो जिये। विजनाचेनी।९९। वायू आणि तया पडे। गगनेंसीं बोलो आवडे। जीवेंप्राणें झाडें। पढियंतीं जया।२००। किंबहुना ऐसेऐसीं। चिह्नें जया देखसी। जाण तया ज्ञानेंसीं। शेज जाहाली।१। पैं अमानित्व पुरुषीं। तें जाणावें इंहीं मिषीं। आतां अदंभाचिया वोळखीसी। सौरस देवों।२। तरी अदंभित्व ऐसें। लोभियाचे मन जैसें। जीव जावो तरी नुमसे। ठेविला ठावों।३। तयापरी किरीटी। पडिलाही प्राणसंकटीं। परी सुकृत ना प्रकटीं। आंगें बोलें।४। खडाणे आला पान्हा। पळवी जेवीं अर्जुना। का लपवी पण्यांगना। वडिलपण।५। आढ्य आतुडे अडवी। मग आढ्यता जेवीं हारवी। नातरी कुळवधू लपवी। अवयवांतें।६। नाना कृषीवळ आपुलें। पांघुरवी पेरिलें। तैसे झांकी निपजलें। दानपुण्य।७। वरीवरी देह न पूजी। लोकांतें न रंजी। स्वधर्म वाग्ध्वजीं। बांधों नेणें।८। परोपकार न बोले। न मिरवी अभ्यासिलें। न शके विकूं जोडलें। स्फीतीसाठीं।९। शरीरभोगाकडे। पाहातां कृपण आवडें। येऱ्हवीं धर्मविषयीं थोडें। बहू न म्हणें।२१०। घरीं दिसे सांकड। देहींची आयती रोड। परी दानीं जया होड। सुरतरूसीं।११। किंबहुना स्वधर्मीं थोर। अवसरीं उदार। आत्मचर्चे चतुर। येऱ्हवीं वेडा।१२। केळीचें दळवाडें। हळू पोकळ आवडे। परी फहोनि गाढें। रसाळ जैसें।१३। का मेघांचे आंग झील। दिसे वारेनी जैसें जाईल। परी वर्षति नवल। घणवट तें।१४। तैसा जो पूर्णपणीं। पाहतां धाती आयणी। येऱ्हवीं तरी वाणी। तोचि ठाय।१५। हें असो या चिह्नांचा। नटनाच ठायीं जयाच्या। जाण ज्ञान तयाच्या हातां चढलें।१६। पैं गा अदंभपण। म्हणितलें तें हें जाण। आतां आइक खूण। अहिंसेची।१७। तरी अहिंसा बहुतीं परी। बोलिली असे अवधारीं। आपुलालिया मतांतरीं। निरूपिली।१८। परी तें ऐसी देखा। जैशा खांडूनिया शाखा। मग तयाचियां बुडुखा। कुंप कीजे।१९। का बाहू तोडोनि पचविजे। मग भुकेची पीडा राखिजे। नाना देऊळ मोडूनि कीजे। पौळि देवा।२२०। तैसी हिंसाची करूनि अहिंसा। निपजविजे हा ऐसा। पैं पर्वमीमांसा। निर्णय केला।२१। जे अवृष्टीचेनि उपद्रवें। गादलें विश्व आघवें। म्हणोनि पर्जन्येष्टी करावे। नाना याग।२२। तंव तिये इष्टींचिया बुडीं। पशुहिंसा तंव रोकडी। मग अहिंसेची थडी। कैची दिसे?।२३। पेरिजे नुसधी हिंसा। तेथ उगवेल काय अहिंसा। परी नवल बापा धिंवसा। या याज्ञिकांचा।२४। आणि आयुर्वेद आघवा। तो याच मोहरा पांडवा। जो जीवाकारणें करावा। जीवघात।२५। नानारोगें आहाळलीं। लोळती भूतें देखिलीं। ते हिंसा निवारावया केली। चिकित्सा पै।२६। तंव ते चिकित्से पहिलें। एकाचे कंद खाणविले। आणि एका उपडविलें। समूळीं सपत्रीं।२७। एकें आड

मोडविली। अजंगमाची खाल काढविली। एकें गर्भिणी उकडविली। पुटामाजीं ।२८। अजातशत्रू तरुवरां। सर्वांगी देववित्या शिरा। ऐसे जीव घेऊनि धनुर्धरा। कोरडे केले ।२९। आणि जंगमाही हात। लाऊनि काढिलें पित्त। मग राखिले शिणत। आणिक जीव ।२३०। अहो वसती धवळारें। मोडूनि केलीं देव्हारें। नागवूनि वेव्हारें। गवादी घातली ।३१। मस्तक पांघुरविलें। तंव तळवटीं उघडें पडिलें। घर मोडोनि केले। मांडव पुढें ।३२। नाना पांघुरणें। जाळूनि जैसें तापणें। का जालें आंगधुणें। कुंजराचें ।३३। नातरी बैल विकूनि गोठा। पुंस लावोनि बांधिजे गांठा। इया करणी कीं चेष्टा। काई हंसों ।३४। एकीं धर्माचिया वाहणी। गाळूं आदरिलें पाणी। तंव गाळितया आहाळणीं। जीव मेले! ।३५। एक न पचवितीचि कण। इये हिंसेचे भेण। तेथ कदर्थले प्राण। तेही हिंसा ।३६। एवं हिंसाचि अहिंसा। कर्मकांडीं हा ऐसा। सिद्धांत सुमनसा। वोळखें तूं ।३७। पहिलें अहिंसेचे नांव। आम्हीं केले जंव। तंव स्फूर्ति बांधली हांव। इये मती ।३८। तरी कैसेनि इयेतें गाळावें। म्हणोनि पडिलें बोलावें। तेवींचि तुवांही जाणावें। ऐसा भाव ।३९। बहुतकरूनि किरीटी। हाचि विषय इये गोठी। येन्हवीं कां अव्हाटीं। धांविजेल गा ? ।२४०। आणि स्वमताचिया निर्धारा–। लागोनियां धनुर्धरा। प्राप्तां मतांतरां। निर्वच कीजे ।४१। ऐसी हे अवधारीं। निरूपिती परी। आतां ययावरी। मुख्य जें गा ।४२। तें स्वमत बोलिजेल। अहिंसे रूप कीजेल। जिया उठलिया आंतुल। ज्ञान दिसे ।४३। परी तें अधिष्ठिलेनी आंगें। जाणिजे आचरतेनि बागें। जैसी कसवटी सांगें। वानियातें ।४४। तैसे ज्ञानामनाचिये भेटी। सरिसेंच अहिंसेचें बिंब उठी। तेंचि ऐसें किरीटी। परिस आतां ।४५। तरी तरंग नोलांडित। लहरी पायें न फोडित। सांचलू न मोडत। पाणियाचा ।४६। वेगें आणि लेसा। दिठी घालूनि आंविसा। जळीं बक जैसा। पाउल सुये ।४७। का कमलावरी भ्रमर। पाय ठेविती हळुवार। कुचंबेल केसर। इया शंका ।४८। तैसे परमाणु पांगुंतले। जाणूनि जीव सानुले। तेथ कारुण्यामाजीं पाउलें। लपवूनि चाले ।४९। ते वाट कृपेची करित। ते दिशाचि स्नेहभरित। जीवातळीं आंथरित। आपुला जीव ।२५०। ऐसिया जतना। चालणें जया अर्जुना। हें अनिर्वाच्य परिमाणा। पुरिजेना ।५१। पैं मोहाचेनि सांगडें। लासी पिलीं धरी तोंडें। तेथ दातांचे आगरडें। लागती जैसे ।५२। का स्नेहाळ माये। तान्हयाची वास पाहे। तिये दिठी आहे। हळुवार जें ।५३। नाना कमळदळें। डोलविजती ढाळढाळें। तो जेणे पाडें बुबुळें। वारा घेपे ।५४। तैसेनि मार्दवें पाय। भूमीवरी न्यसीत जाय। लागती तेथ होय। जीवां सुख ।५५। ऐसिया लघिमा चालतां। कृमि कीटक पांडुसुता। देखे तरी माघुतां। हळूचि निघे ।५६। म्हणे पाय धडफडील। तरी स्वामीची निद्रा मोडेल। रचलेपणा पडेल। झोती हन ।५७। इया काकुळती। वाहणी घे माघुती। कोणेही व्यक्ती। न वचे वरी ।५८। जीवाचेनि नांवें। तृणातेही नोलांडवे। मग न लेखितां जावें। हे कें गोठी ।५९। मुंगिये मेरु नोलांडवे। मशका सिंधु न तरवे। तैसें भेटलिया न करवे। अतिक्रम ।२६०। ऐसी जयाचि चाली। कृपा फुलीं फळा आली। वाचिकी देखसी जियाली। दया वाचे ।६१। स्वयें श्वसणेंचि तें सुकुमार। मुख मोहाचें माहेर। माधुर्या जाहाले अंकुर। दशन तैसे ।६२। पुढां स्नेह पाझरे। माघां चालती अक्षरें। शब्द पाठी अवतरे। कृपा आधी ।६३। तंव बोलणेचि नाहीं। बोलों म्हणे जरी कांहीं। तरी बोल कोणाही। खुपेल का ।६४। बोलतां अधिकही निघे। तरी कोणाचिया वर्मी न लगे। आणि कोणासि न रिघे। शंका मनीं ।६५। मांडिली गोठी हन मोडेल। वासिपेल कोणी उडेल। आइकोनि वोवांडिल। कोण्ही जरी ।६६। तरी दुवाळी कोणा नोहावी। भंवई कवणाची नुचलावी। ऐसा भाव जीवीं। म्हणोनियां ।६७। मग प्रार्थिला विपायें। जरी लोभें बोलों जाये। तरी परिसत्या होये। मायबाप ।६८। का नादब्रह्मचि मुसे आलें। कीं गंगापय असळलें। पतिव्रते आलें। वार्धक्य जैसें ।६९। तैसे साच आणि मवाळ। मितले आणि रसाळ। शब्द जैसें कल्लोळ। अमृताचे ।२७०। विरोधवादबळू। प्राणितापढाळू। उपहास छळू। वर्मस्पर्श ।७१। आटू वेगू विंदाण। आशा शंका प्रतारण। हे संन्यसिले अवगुण। जया वाचा ।७२। आणि तयाचिपरी किरीटी। थाऊ जयाचिया दिठी। सांडिलीया भृकुटी। मोकळिया ।७३। कां जे भूतीं वस्तु आहे। तिये रुपों शके विपायें। म्हणोनि वास न पाहे। बहुतकरूनि ।७४। ऐसाही कोणे एके वेळे। भींतरले कृपेचेनि बळें। उघडोनि डोळे। दृष्टी घाली ।७५। तरी चंद्रबिंबौनि धारा। निगतां नव्हती गोचरा। परी एकसरें चकोरां। निघती दोंदें ।७६। तैसे प्राणियां होये। जरी तो कांहीं वास पाहे। तया अवलोकनाची सोये। कुर्मीही नेणें ।७७। किंबहुना ऐसी। दिठी जयाची भूतांसी। करही देखसी। तैसेचि ते ।७८। तरी होऊनियां कृतार्थ। राखिले सिद्धांचे मनोरथ। तैसे जयाचे हात। निर्व्यापार ।७९। अक्षम आणि संन्यासिलें। कां निरिंधन आणि विझालें। मुकेनि घेतलें। मौन जैसें ।२८०। तयापरी कांहीं। जयां करां करणें नाहीं। जे अकर्तव्याच्या ठायीं। बैसो येती ।८१। आसुडेल वारा। नख लागेल अंबरा। इया बुद्धि करां। चळों नेदी ।८२। तेथ आंगावरिलीं उडवावीं। का डोळां रिगतें झाडावीं। पशुपक्ष्यां दावावी। त्रासमुद्रा ।८३। इया केउतिया गोठी। नावडे दंड काठी। मग शस्त्रांचें किरीटी। बोलणें कें ।८४। लीलाकमलें खेळणें। का पुष्पमाळा झेलणें। न करी म्हणे गोफणे–। ऐसें होईल ।८५। हालवतील रोमावळी। यालागीं आंग न कुरवाळी। नखांची गुंडाळीं। बोटांवरी ।८६। तंव करणेंयाचाचि अभाव। परी ऐसाहि पडे डाव। तरी हातां हाचि सराव। जे जोडिजती ।८७। का नाभिकारा उचलिजे। हात पडिलियां देईजे। नातरी आर्तातें स्पर्शिजे। अळुमाळू ।८८। हें ही उपरोधें करणें। तरी आर्तभय हरणें। नेणती चंद्रकिरणें। जिव्हाळा तो ।८९। पावोनि तो स्पर्शू। मलयानिळ खरपुसू। येणें मानें पशू। कुरवाळणें ।२९०। जे सदाचि ते मोकळे। जैशीं चंदनांगें शीतलें। न फळतांही निर्फळें। होतीचिना ।९१। आतां असो हे वाग्जाळ।

जाणें ते करतळ। सज्जनाचें शीळ। स्वभाव जैसें।६२। आतां मन तयाचें। सांगो म्हणे साचें। तरी सांगितलें कोणाचे। विलास हे।६३। काई शाखा नव्हे तरू। जळेंवीण असे सागरू। तेज आणि तेजाकारू। आन काई ?।६४। अवयव आणि शरीर। हे वेगळाले काय कीर। कीं रस आणि नीर। सिनानीं आथी।६५। म्हणोनि हे जे सर्व। सांगितलें बाह्यभाव। तें मनचि सावयव। ऐसें जाण।६६। जें भुईं बीज खोंविलें। तेंचि वरी रुख जाहालें। तैसें इंद्रियद्वारां फांकलें। तें अंतरचि कीं।६७। पैं मानसींचि जरी। अहिंसेची अवसरी। तरी कैची बाहेरी। वोसंडेल ?।६८। आवडे ते वृत्ती किरीटी। आधीं मनौनीचि उठी। मग ते वाचे दिठी। करांसि ये।६९। वांचूनि मनींचि नाहीं। तें वाचेसी उमटेल काई। बीजेंवीण भुईं। अंकुर असे ?।३००। म्हणोनि मनपण जैं मोडे। तैं इंद्रिय आधीचि उबडे। सूत्रधारेंवीण साइखडें। वावो जैसें।१। उगमींचि वाळूनि जाये। तें वोघीं कैचें वाहे। जीवो गेलिया आहे। चेष्टा देहीं।२। तैसें मन हे पांडवा। मूळ इंद्रियभावां। हेंचि राहटें आघवां। द्वारीं इहीं।३। परी जिये वेळीं जैसें। जें होऊनि आंत असे। बाहेरी ये तैसें। व्यापाररूपें।४। यालागीं साचोकारें। मनीं अहिंसा थांबे थोरें। जैसी पिकली द्रुती आदरें। बोभांत निघे।५। म्हणोनि इंद्रिये तेंचि संपदा। वेचितां हीं उदावादा। अहिंसेचा धंदा। करितें आहाती।६। समुद्रीं दाटे भरितें। तैं समुद्रचि भरी तऱ्यांतें। तैसे स्वसंपत्ती चित्तें। इंद्रियां केलें।७। हें बहु असो पंडित। धरूनि बाळाचा हात। वोळी लिही सुव्यक्त। आपणचि।८। तैसें दयालुत्व आपुलें। मनें हातापाया आणिलें। मग तेथ उपजविलें। अहिंसेतें।९। या कारणें किरीटी। इंद्रियाचिया गोठी। मनाचियेचि राहाटी। रूप केलें।३१०। ऐसा मनें देहें वाचा। सर्व संन्यास दंडाचां। जाहाला ठायीं जयाचा। देखशील।११। तो जाण वेल्हाळ। ज्ञानाचें वेळाउळ। हें असो निखळ। ज्ञानचि तो।१२। जे अहिंसा कानें ऐकिजे। ग्रंथाधारें निरूपिजे। ते पाहावी ऐसें जैं उपजे। तैं तोचि पाहावा।१३। ऐसें म्हणितले देवें। तें बोलें एके सांगावें। परी फांकल हें उपसाहावें। तुम्ही मज।१४। म्हणाल हिरवे चारीं गुरूं। विसरे मागील मोंहर धरूं। का वारेलगें पांखिरूं। गगनीं भरे।१५। तैसिया प्रेमाचिया स्फूर्ती। फावलिया रसवृत्ती। बाहविला मती। आकळेना।१६। तरी तैसें नोहे अवधारा। कारण असे विस्तारा। येऱ्हवी पद तरी अक्षरां। तिहींचेंची।१७। अहिंसा म्हणता थोडी। परी तैंचि हे होय उघडी। जैं लोटिजती कोडी। मतांचिया।१८। येऱ्हवीं प्राप्तें मतांतरें। थातंबूनि आंगभरें। बोलिजेल तें न सरे। तुम्हांपाशी।१९। रत्नपारखियाचिया गांवीं। जाईल गंडकी तरी सोडावी। काश्मीरीं न करावी। मिडगण तेथें।३२०। काइसा वास कापुरा। मंद जेथ अवधारा। पिठाचा विकरा। तियेसांते।२१। म्हणोनि इये सभे। बोलकेपणाचेनि क्षोभें। लागसर न लभे। बोला प्रभु।२२। सामान्या आणि विशेखा। सकळै कीजेल देखा। तरी कानाचेया मुखा–। कडे न्याल ना तुम्ही।२। शंकेचेनि गढुळें। जै शुद्ध प्रमेय मैळे। तै मागुतिया पाउलीं पळे। अवधान येतें।२४। का करूनि बाबुळियेची बुंधी। जळें जियें ठाती। तयांची वास पाहाती। हंस काई ?।२५। का अभ्रापैलीकडे। जैं येत चांदिणें कोडें। तैं चकोरें चांचुवडें। उचलितीना।२६। तैसें तुम्ही वास न पाहाल। ग्रंथ नेघा वरी कोपाल। जरी अविसंवाद नोहेल। निरूपण।२७। न बुझावितां मतें। न फिटे आक्षेपांचें लागतें। तें व्याख्यान जी तुमतें। जोडूनि नेदी।२८। आणि माझें तंव आघवें। ग्रथन येणेचि भावें। जे तुम्हीं संती होआवें। सन्मुख सदा।२९। येऱ्हवीं तरी साचोकारें। तुम्ही गीतार्थाचे सोयरे। जाणोनि गीता जीवसरें। धरिली मियां।३३०। जें सर्वस्व आपुलें द्याल। मग इयेतें सोडवूनि न्याल। म्हणोनि ग्रंथ नव्हे वोल। साचचि हे।३१। का सर्वस्वाचा लोभ धरा। वोलीचा अव्हेर करा। तरी गीते मज अवधारा। एकचि गती।३२। किंबहुना मज। तुमचिया कृपा काज। तियेलागीं व्याज। ग्रंथाचें केलें।३३। तरी तुम्हां रसिकांजोगें। व्याख्यान शोधावें लागे। म्हणूनि जी मतांगें। बोलों गेलों।३४। तंव कथेसि पसरू जाहाला। श्लोकार्थ दूरी गेला। कीजो क्षमा यया बोला। अपत्या मज।३५। आणि घांसा आंतिल हरळ। फेडितां लागे वेळ। तें दूषण नव्हे खडळ। सांडावा कीं।३६। का संवचोरा चुकवितां। दिवस लागलिया माता। कोपावें कीं जीवितां। जिताणें कीजे ?।३७। परी यावरील हें नव्हे। तुम्हीं उपसाहिलें तेंचि बरवें। आतां अवधारिजो देवें। बोलिलें ऐसें।३८। म्हणे उन्मेषसुलोचना। सावध होई अर्जुना। करूं तुज ज्ञाना। बोळखी आतां।३९। तरी ज्ञान गा तें एथें। वोळख तूं निरुतें। आक्रोशेंवीण जेथे। क्षमा असे।३४०। अगाधसरोवरीं। कमळिणी जियापरी। का सदैवांचिया घरीं। संपत्ति जैसी।४१। पार्था तेणें पाडें। जयातें वाढे। तेही लक्षे तें फुडें। लक्षण सांगो।४२। तरी पढियंतें लेणें। आंगीं भावे जणे। धरिजे तेवीं साहणें। सर्वचि जया।४३। त्रिविध मुख्य आघवे। उपद्रवांचे मेळावे। वरी पडिलिया नव्हे। वांकडा जो।४४। अपेक्षित पावे। तें जेणें तोषें मानावें। अनपेक्षिताही करवे। मान तोचि।४५। जो मानापमानातें साये। सुखदुःख जेथ सामाये। निंदास्तुति नोहे। दुखंड जो।४६। उन्हाळेनि जो न तापे। हिमवंतीं न कांपे। कायसेनिही न वासिपे। पातलेया।४७। स्वशिखरांचा भारूं। नेणे जैसा मेरू। कीं धरा यज्ञसूकरू। वोझें न म्हणे।४८। नाना चराचरीं भूतीं। दाटणी नव्हे क्षिती। तैसा नाना द्वंद्वप्राप्तीं। घामेजेना।४९। घेऊनि जळाचे लोट। आलिया नदीनदांचे संघाट। करी वाड पोट। समुद्र जेवीं।३५०। तैसें जयाचिया ठायीं। न साहणें कांहींचि नाहीं। आणि साहतसें ऐसेंही। स्मरण नुरे।५१। शरीरा जे पातलें। तें करूनि घालीं आपुलें। तेथ साहतेनि नवलें। घेपिजेना।५२। हे अनाक्रोश क्षमा। जेथ आथी प्रियोत्तमा। जाण तेणें महिमा। ज्ञानासि गा।५३। तो पुरुष पांडवा। ज्ञानाचा वोलावा। आतां परिस आर्जवा। रूप करूं।५४। तरी आर्जव तें ऐसें। प्राणाचे सौजन्य जैसें। आवडतयाही दोषें। एकचि पै गा।५५। का तोंड पाहुनि प्रकाशू। न करी जेवीं चंडांशू। जगा एक अवकाशू।

आकाश जैसें।५६। तैसें जयाचें मन। माणुसाप्रति आनआन। नोहे आणि वर्तन। ऐसें पैं तें।५७। जे जगचि सनोळख। जगेंसीं जुनाट सोयरीक। आप पर हे भाक। जाणणें नाहीं।५८। भलतेणेसीं मेळ। पाणिया ऐसा ढाळ। कवणेविखीं आढळ। नेघे चित्त।५६। वारियाची धांव। तैसा सरळ भाव। शंका आणि हांव। नाहीं जया।३६०। माये पुढें बाळका। रिगतां नाहीं शंका। तैसें मन देतां लोकां। नालोची जो।६१। फांकलिया इंदीवरा। परिवर नाहीं धनुर्धरा। तैसा कोनकोपरा। नेणेचि जो।६२। चोखाळपण रत्नाचें। रत्नावरीकिरणाचें। तैसें पुढें मन जयाचें। करणें पाठीं।६३। आलोचूं जो नेणें। अनुभवचि जोगावणें। धरी मोकली अंतःकरणें। नोहे जया।६४। दिठी नोहे मिणधी। बोलणें नाहीं संदिग्धी। कवणेंसीं हिनबुद्धी। राहाटों नेणें।६५। दाहाही इंद्रियें प्रांजळें। निःप्रपंचें निर्मळें। पांचही पालव मोकळे। आठही पाहर।६६। अमृताची धार। तैसें उजू अंतर। किंबहुना जो माहेर। या चिह्नांचें।६७। तो पुरुष सुभटा। आर्जवाचा आंगवटा। जाण तेथेचि घरटा। ज्ञानें केला।६८। आतां ययावरी। गुरुभक्तीची परी। सांगों गा अवधारी। चतुरनाथा।६६। आघवियांचि दैवां। जन्मभूमी हे सेवा। जे ब्रह्म करी जीवा। शोच्यातेंहीं।३७०। ते आचार्योपास्ती। सांगिजेल तुजप्रती। बैसो दे एक पांती। अवधानाची।७१। तरी सकळ जळसमृद्धि। घेऊनि गंगा निघाली उदधी। कीं श्रुति हे महापदीं। पैठी जाहली।७२। नाना वेंटाळूनि जीवितें। गुणागुण उखितें। प्राणनाथासि उचितें। दिधलें प्रिया।७३। तैसें सबाह्य आपुलें। जेणें गुरुकुळीं वोपिलें। आपणपें केलें। भक्तीचें घर।७४। गुरुगृह जिये देशीं। तो देशचि वसे मानसीं। विरहिणी का जैशी। वल्लभातें।७५। तियेकडोनि येतसे वारा। देखोनि धांवे सामोरा। आड पडे म्हणे घरा। बीजें कीजो।७६। साचा प्रेमाचिया भुली। तिये दिशेसीची आवडे बोली। जीव थानपती करूनि घाली। गुरुगृहीं जो।७७। परी गुरुआज्ञा धरिलें। देह गांवीं असे एकलें। वांसरुवा लाविलें। दावें जैसें।७८। म्हणें कैं हें बिरडें फिटेल। कैं तो स्वामी भेटेल। युगाहूनि वडिल। निमिष मानी।७६। ऐसेया गुरुग्रामींचें आलें। का स्वयें गुरूंनींचि धाडिलें। तरी गतायुष्या जोडलें। आयुष्य जैसें।३८०। का सुकतया अंकुरा। वरी पडलिया पीयूषधारा। नाना अल्पोदकींचा सागरा। आला मासा।८१। नातरें रंके निधान देखिलें। का आंधळिया डोळे उघडले। भणंगाचिया आंगा आलें। इंद्रपद।८२। तैसा गुरुकुळीचेनि नांवें। महासुखें अतिथोरावे। जे कोडे हन पोटाळवें। आकाश का।८३। पैं गुरुकुळीं ऐसी। आवडी जया देखसी। जाण ज्ञान तयापासीं। पाइकी करी।८४। आणि अभ्यंतरिलियेकडे। प्रेमाचेनि पवाडें। श्रीगुरुचें रूपडें। उपासी ध्यानीं।८५। हृदयशुद्धीचिया आवारीं। आराध्य जो निश्चळ धुर करी। मग सर्व भावासी परिवारीं। आपण होय।८६। का चैतन्याचिये पोंवळीं–। माजी आनंदाचिया राउळीं। श्रीगुरुलिंगा ढाळी। ध्यानामृत।८७। उदयितां बोधार्का। बुद्धीची डाल सात्विका। भरोनियां त्र्यंबका। लाखोली वाहे।८८। काळशुद्धी त्रिकाळीं। जीवदशा धूप जाळी। ज्ञानदीपें वोंवाळी। निरंतर।८६। सामरस्याची रससोय। अखंड अर्पित जाय। आपण भराडा होय। गुरु तो लिंग।३६०। नातरी जिवाचिया सेजे। गुरु कांत करूनि भुंजे। ऐसी प्रेमाचेनि भोजें। बुद्धी वाहे।६१। कोणे एके अवसरीं। अनुराग भरे अंतरीं। कीं तया नाम करी। क्षीराब्धी।६२। तेथ ध्येयध्यान बहु सुख। तोचि शषतुळिका निर्दोख। वरी जळशयन देख। भावी गुरु।६३। मग वोळगती पाय। ते लक्ष्मी आपण होय। गरुड होऊनि उभा राहे। आपणची।६४। नाभीं आपण जन्मे। ऐसें गुरुमूर्तिप्रेमें। अनुभवी मनोधर्मे। ध्यानसुख।६५। एकाधिये वेळे। गुरु माय करी भावबळें। मग स्तन्यसुखें लोळे। अंकावरी।६६। नातरी गा किरीटी। चैतन्यतरुतळवटीं। गुरु धेनु आपण पोटीं। वत्स होय।६७। गुरुकृपास्नेहसलिलीं। आपण होय मासोळी। कोणे एके वेळीं। हेंचि भावी।६८। गुरुकृपामृताचे वडप। आपण सेवावृत्तीचें होय रोप। ऐसेसे संकल्प। मनचि विये। ६६। चक्षुपक्षेंवीण। पिलूं होय आपण। कैसें पैं अपारपण। आवडीचें।४००। गुरूतें पक्षिणी करी। चारा घे चांचूवरी। गुरु तारू धरी। आपण कांस।१। ऐसें प्रेमाचेनि थावें। ध्यानचि ध्यानातें प्रसवे। पूर्णसिंधू हेलावे। फुटती जैसे।२। किंबहुना यापरी। श्रीगुरुमूर्ती अंतरीं। भोगी आतां अवधारी। बाह्यसेवा।३। तरी जीवीं ऐसें आवांके। म्हणे दास्य करीन निकें। जैसेनि गुरु कौतुके। माग म्हणती।४। तैसिया साचा उपास्ती। गोसावी प्रसन्न होती। तेथ मी विनंती। ऐसी करीन।५। म्हणेन तुमचा देवा। परिवार जो आघवा। येतुले रूपें होआवा। मीचि एक।६। आणि उपकरतीं आपुलीं। उपकरणें आथि जेतुलीं। माझीं रूपें तेतुली। होआवीं स्वामी।७। ऐसा मागेन वरू। तेथ हो म्हणती श्रीगुरू। मग तो परिवारू। मीचि होईन।८। उपकरणजात सकळिक। तें मीचि होईन एकैक। तेव्हां उपास्तीचे कौतुक। देखिजेल।६। गुरु बहुतांची माये। परी एकोलती होऊनि ठाये। तैसें करूनि आण वायें। कृपें तिये।४१०। तया अनुरागा वेध लावी। एकपत्नीव्रत घेववीं। क्षेत्रसंन्यास करवी। लोभाकरवीं।११। चतुर्दिक्षु वारा। न लाहे निघोन बाहिरा। तैसा गुरुकृपें पांजिरा। मीचि होईन।१२। आपुलिया गुणांची लेणीं। करीन गुरुसेवे स्वामिणी। मी पृथ्वी होईन गवसणी। गुरुभक्तीसी।१३। गुरुस्नेहाचिये वृष्टि। मी पृथ्वी होईन तळवटी। ऐसिया मनोरथांचिया सृष्टी। अनंता रची।१४। म्हणे श्रीगुरूचें भुवन। आपण मी होईन। आणि दास होऊनि करीन। दास्य तेथींचें।१५। निर्गमागमीं दातारें। जे वोलांडिजती उंबरे। ते मी होईन आणि द्वारें। द्वारपाळ।१६। पाउवा मी होईन। तियां मीचि लेववीन। छत्र आणि मी करीन। बारी पण।१७। मी तळ उपर जाणविता। चवरधर हात देता। स्वामीपुढें खोलता। होईन मी।१८। मीचि होईन सागळा। करू सुईन गुरुळां। सांडिती तो नेपाळा। पडिघां मीचि।१६। हडप मी वोळगेन। मीचि उगाळू घेईन। उळिग मी करीन। आंघोळीचें।४२०। होईन गुरूचें आसन। अळंकार परिधान।

चंदनादि होईन। उपचार ते।२१। मीचि होईन सुआरू। वोगरीन उपहारू। आपणपें श्रीगुरू। वोवाळीन।२२। जे वेळीं देवो आरोगिती। तेव्हां पांतीकर मीचि पांती। मीचि होईन पुढती। देईन विडा।२३। ताट मी काढीन। सेज मी झाडीन। चरणसंवाहन। मीचि करीन।२४। सिंहासन होईन आपण। वरी गुरु करिती आरोहण। होईन पुरेपण। वोळगेचें।२५। श्रीगुरूचें मन। जया देईल अवधान। तो मी पुढां होईन। चमत्कार।२६। तया श्रवणाचे आंगणीं। होईन शब्दांचिया अक्षौहिणी। स्पर्श होईन घसणी। आंगाचिया।२७। श्रीगुरूचें डोळे। अवलोकनें स्नेहाळें। पाहती तियें सकळें। होईन रूपें।२८। तिये रसने जो रुचेल। तो तो रस म्यां होइजेल। गंधरूपें कीजेल। घ्राणसेवा।२९। एवं ब्राह्ममनोगत। श्रीगुरुसेवा समस्त। वेंटाळीन वस्तुजात। होऊनियां।४३०। जंव देह हे असेल। तंव वोळगी ऐसी कीजेल। मग देहांतीं नवल। बुद्धि आहे।३१। इये शरीरींची माती। मेळवीन तिये क्षिती। जेथ श्रीचरण उभे ठाती। श्रीगुरूचे।३२। माझा स्वामी कवतिकें। स्पर्शत जियें उदकें। तेथ लया नेईन निकें। आपीं आप।३३। श्रीगुरू वोंवाळिजती। का भुवनीं जे उजळिजती। तयां दीपांचिया दीप्तीं। ठेवीन तेज।३४। चवरी हन विंजणा। तेथ लय करीन प्राणा। मग आंगाचा वोळगणा। होईन मी।३५। जिये जिये आवकाशीं। श्रीगुरू असती परिवारेंसीं। आकाश लया आकाशीं। नेईन तिये।३६। परी जीत मेला न संडी। निमेष लोकां न धाडी। ऐसेनि गणाविया कोडी। कल्पांचिया।३७। येतुलेवरी धिंवसा। जयाचिया मानसा। आणि करूनिही तैसा। अपार जो।३८। रात्र दिवस नेणे। थोडे बहु न म्हणे। म्हणियाचेनि दाटपणें। साजा होय।३९। तो व्यापार येणे नांवें। गगनाहूनि थोरावे। एकला करी आघवें। एकेचि काळी।४४०। हृदयवृत्ती पुढां। आंगचि घे दवडा। काज करी होडा। मानसेंसीं।४१। एखादिया वेळां। श्रीगुरूचिया खेळा। लोण करी सकळा। जीविताचें।४२। जो गुरुदास्यें कृश। जो गुरुप्रेमें सपोष। जो गुरुआज्ञे निवास। आपणची।४३। जो गुरुकुळें सुकुलीन। जो गुरुबंधुसौजन्यें सुजन। जो गुरुसेवाव्यसने सव्यसन। निरंतर।४४। गुरुसंप्रदायधर्म। तेचि जयाचे वर्णाश्रम। गुरुपरिचर्या नित्यकर्म। जयाचें गा।४५। गुरु क्षेत्र गुरु देवता। गुरु माता गुरु पिता। जो गुरुसेवेपरता। मार्ग नेणे।४६। श्रीगुरूचें द्वार। तें जयाचें सर्वस्व सार। गुरुसेवकां सहोदर–। प्रेमें भजे।४७। जयाचें वक्त्र। वाहे गुरुनामाचे मंत्र। गुरुवाक्यावांचूनि शास्त्र। हातीं न शिवे।४८। शिवतलें गुरुचरणीं। भलतैसें हो पाणी। तया तीर्थयात्रे आणी। तीर्थें त्रैलोक्यींचीं।४९। श्रीगुरूचें उशिटें। लाहे जै अवचटें। तैं तेणें लाभें विटे। समाधीसी।४५०। कैवल्यसुखासाठीं। परमाणु घे किरीटी। उधळती पायांपाठीं। चालता जे।५१। हें असो सांगावे किती। नाहीं पार गुरुभक्ती। परी गा उत्क्रांतमती। कारण हें।५२। जया इये भक्तीची चाड। जया इये विषयींचें कोड। जो हे सेवेवांचून गोड। न मनी कांहीं।५३। तो तत्त्वज्ञानाचा ठावो। ज्ञाना तेणेंचि आवो। हें असो तो देवो। ज्ञान भक्त।५४। हें जाण पां साचोकारें। तेथ ज्ञान उघडोनि द्वारें। नांदत असो गा पुरें। इया रीती।५५। जिये गुरुसेवेविखीं। माझा जीव अभिलाखी। म्हणोनि सोयचुकी। बोली केली।५६। येऱ्हवीं असतां हातीं खुळा। भजनावधानीं आंधळा। परिचर्येलागीं पांगुळा। पासूनि मंद।५७। गुरुवर्णनीं मुका। आळशी पोशिजे फुका। परी मनीं आधी निका। सानुराग।५८। तेणें पैं कारणें। हें स्थूळ पोसणें। पडलें मज म्हणे। ज्ञानदेवो।५९। परी तो बोल उपसाहावा। आणि वोळगे अवसर देयावा। आतां म्हणेन जी बरवा। ग्रंथार्थची।४६०। परिसा परिसा श्रीकृष्णू। जो भूतभारसहिष्णू। तो बोलतसे विष्णू। पार्थ ऐके।६१। म्हणे शुचित्व गा ऐसें। जयापाशीं दिसे। आंग मन जैसें। कापुराचें।६२। का रत्नाचें दळवाडें। जैसें सबाह्य चोखडे। आंतबाहेरीं एके पाडें। सूर्य जैसा।६३। बाहेरीं कर्में क्षाळला। भीतरीं ज्ञानें उजळला। इंहीं दोही परी आला। पाखाळा एका।६४। मृत्तिका आणि जळें। बाह्य येणें मेळें। निर्मळ होय बोले। वेदाचेनी।६५। भलतेथ बुद्धि बळी। रज आरिसा उजळी। सौंदणी फेडी थिगळी। वस्त्रांचिया।६६। किंबहुना इयापरी। बाह्य चोख अवधारीं। आणि ज्ञानदीप अंतरी। म्हणौनि शुद्ध।६७। येऱ्हवीं तरी पांडुसुता। अंतर शुद्ध नसतां। बाहेरीं कर्म तो सर्वथा। विटंबू गा।६८। मृत जैसा शृंगारिला। गाढव तीर्थीं न्हाणिला। कडू दुधिया माखिला। गुळें जैसा।६९। वोसगृहीं तोरण बांधिलें। का उपवासी अन्नें लिंपिलें। कुंकुमसेंदुर केलें। कांतहीनेने।४७०। कलश ढिमाचे पोकळ। जळो वरील ते झळाळ। काय करूं चित्रीव फळ। आंत शेण।७१। तैसें कर्मी वरिचिले कडां। न सरे थोर मोलें कुडा। नव्हे मदिरेचा घडा। पवित्र गंगे।७२। म्हणोनि अंतरी ज्ञान व्हावें। मग बाह्य लाभे स्वभावें। वरी ज्ञान कर्म संभवे। ऐसें कें जोडे।७३। यालागीं बाह्य भाग। कर्में धुतला चांग। ज्ञानें फिटला वंग। अंतरींचा।७४। तेथ अंतरबाह्य गेलें। निर्मळत्व एक जाहालें। किंबहुना उरलें। शुचित्वचि।७५। म्हणोनि सद्भाव जीवगत। बाहेरीं दिसती फांकत। स्फटिकगृहींचे डोलत। दीप जैसे।७६। विकल्प जेणें उपजे। नाथिली विकृती निपजे। अप्रवृत्तीचीं बीजें। अंकुर घेती।७७। तें आइके देखे अथवा भेटे। परी मनीं कांहींची नुमटे। मेघरंगें न काटे। व्योम जैसे।७८। येऱ्हवीं इंद्रियांचेनि मेळें। विषयांवरी तरी लोळे। परी विकाराचेनि विटाळें। लिंपिजेना।७९। भेटलेया वाटेवरी। चोखी आणि माहारीं। तेथ नाटळे तियापरी। राहाटों जाणे।४८०। का पतिपुत्रातें आलिंगी। एकचि ते तरुणांगी। तेथ पुत्रभावाच्या आंगीं। न रिगे काम।८१। तैसें हृदय चोख। संकल्पविकल्पीं सनोळख। कृत्याकृत्य विशेख। फुडें जाणें।८२। पाणियें हिरा न भिजे। आधणी हरळ न शिजे। तैसी विकल्पजातें न लिंपिजे। मनोवृत्ति।८३। तया नांव शुचित्वपण। पार्था गा संपूर्ण। हें देखसी तेथ जाण। ज्ञान असे।८४। आणि स्थिरता साचें। घर रिघाली जयाचें। तो पुरुष ज्ञानाचें। आयुष्य गा।८५। देह तरी वरिचिलीकडे। आपुलिया परी

हिंडे। परी बैसका न मोडे। मानसींची ।८६। वत्सावरूनि धेनूचें। स्नेह रान न वचे। नव्हती भोग सतियेचे। प्रेमभोग ।८७। का लोभिया दूर जाये। परी जीव ठेवा ठाये। तैसा देह चालता न होये। चळ चित्ता ।८८। जातया अभ्रासवें। जैसें आकाश न धांवे। भ्रमणचक्रीं न भंवे। ध्रुव जैसा ।८६। पांथिकाचिया येरझारा। सवें पंथ न चले धनुर्धरा। का नाहीं जेवीं तरुवरां। येणेंजाणें ।४६०। तैसा चळणवळणात्मकीं। असोनि ये पांचभौतिकीं। भूतोर्मी एकी। चळिजेना ।६१। बाहुटोळांचेनि बळें। पृथ्वी जैसी न ढळे। तैसा उपद्रवउमाळें। न लोटे जो ।६२। दैन्यदुःखीं न तपे। भयशोकीं न कंपे। देहमृत्यु न वासिपे। पातलेनी ।६३। आर्तिआशापडिभरें। वयव्याधिगजरें। उजू असतां पाठिमोरें। नव्हे चित्त ।६४। निंदा निस्तेज दंडी। काम लोभा वरपडी। परी रोम नव्हे वांकुडी। मानसाची ।६५। आकाश हें वोसरों। पृथ्वी वरी विरो। परी नेणें मोहरों। चित्तवृत्ती ।६६। हातीं हाला फुलीं। पासवणा जेवी न घाली। तैसा न लोटे दुर्वाक्यशेलीं। शेलिलासांता ।६७। क्षीरार्णवाचिया कल्लोळीं। कंप नाहीं मंदराचळीं। आकाश न जळे जाळीं। वणवियाच्या ।६८। तैशा आल्यागेल्या उर्मी। नव्हे गजबज मनोधर्मीं। किंबहुना धैर्यक्षमी। कल्पांतींही ।६६। पैं स्थैर्य ऐसी भाख। बोलिले जे सविशेख। ते हे दशा गा देख। देखणेया ।५००। हें स्थैर्य निधडें। जेथ आंगेंजीवें जोडे। तें ज्ञानाचे उघडें। निधान साचें ।१। आणि इसाळु जैसा घरा। का दंडिया हतियेरा। न विसंबे भांडारा। लुब्धक जैसा ।२। का एकलौतिया बाळका–। वरी पडौनि ठाके अंबिका। मधुविषयीं मधुमक्षिका। लोभिणी जैसी ।३। अर्जुना जो यापरी। अंतःकरण जतन करी। नेदी उभें ठाकों द्वारीं। इंद्रियांच्या ।४। म्हणे काम बागुल ऐकेल। हे आशा सियारी देखेल। तरी जीवा टेंकेल। म्हणोनि बिहे ।५। बाहेरीं धीट जैसी। दाटुगा पति कळासी। करी टेहणी तैसी। प्रवृत्तीसीं ।६। सचेतनीं वाणेंपणें। देहासकट आटणें। संयमावरी करणें। बुझूनि घाली ।७। मनाचिया महाद्वारीं। प्रत्याहाराचिया ठाणांतरीं। यमदम शरीरीं। जागवी उभे ।८। आधारीं नाभीं कंठीं। बधत्रयाची घरटीं। चंद्रसूर्यसंपुटीं। सुये चित्त ।६। समाधीचे शेजेपासीं। बांधोनि घाली ध्यानासी। चित्त चैतन्यसमरसीं। आंतू रते ।५१०। अगा अंतःकरणनिग्रहों जो। तो हा हें जाणिजो। हा आथि तेथ विजो। ज्ञानाचा पैं ।११। जयाची आज्ञा आपण। शिरीं वाहे अंतःकरण। मनुष्याकारें जाण। ज्ञानचि तो ।१२।

इंद्रियार्थेषु वैराग्यमनहंकार एव च।
जन्ममृत्युजराव्याधिदुःखदोषानुदर्शनम् ।८।

आणि विषयांविखीं। वैराग्याची निकी। पुरवणी मानसीं कीं। जिती आथि ।१३। वमिलिया अन्ना। लाळ न घोंटी जेवी रसना। आंग न सूये आलिंगना। प्रेताचिया ।१४। विष खाणें नागवे। जळत घरीं न रिघवे। व्याघ्रविवरां न वचवे। वस्ती जेवीं ।१५। धडाडीत लोहरसीं। उडी न घालवे जैसी। न करवे उशी। अजगराची ।१६। अर्जुना तेणें पाडे। जयासी विषयवार्ता नावडे। नेदी इंद्रियांचेनि तोंडें। कांहींच जावों ।१७। जयाचें मनीं आलस्य। देहीं अतिकार्श्य। शमदमीं सौरस्य। जयासि गा ।१८। तपोव्रतांचा मेळावा। जयाचे ठायीं पांडवा। युगांत जया गांवा। आंत येतां ।१६। बहु योगाभ्यासीं हांव। विजनाकडे धांव। न साहे जो नांव। संघाताचें ।५२०। नाराचांचीं आंथुरणें। पूयपंकी लोळणें। तैसीं लेखीं भोगणें। ऐहिकींचें ।२१। आणि स्वर्गातें मानसें। ऐकोनि मानी ऐसें। कुहिले पिशित जैसें। श्वानाचें का ।२२। तें हें विषयवैराग्य। आत्मलाभाचें भाग्य। येणें ब्रह्मानंदा योग्य। होती जीव ।२३। ऐसा उभयभोगी त्रास। देखसी जेथ बहुवस। जाण तेथें रहिवास। ज्ञानाचा तूं ।२४। आणि सचाडाचियेपरी। इष्टापूर्ते करी। वरी केलेपण शरीरीं। वसों नेदी ।२५। वर्णाश्रमपोषकें। कर्मै नित्यनैमित्तिकें। यांमाजी कांहीं न ठके। आचरतां ।२६। परी हें मियां केलें। कीं हें माझेनि सिद्धी गेलें। ऐसें नाहीं ठेविलें। वासनेमाजीं ।२७। जैसें अवचितपणें। वायूसीं सर्वत्र विचरणें। कीं निरभिमान उदैजणें। सूर्याचें जैसें ।२८। का श्रुति स्वभावतां बोले। गंगा काजेंविण चाले। तैसें अवष्टंभहीन भलें। वर्तणें ज्याचें ।२६। ऋतुकाळीं तरी फळती। परी फळलो हें नेणती। तयां वृक्षांचिये ऐसी वृत्ती। कर्मीं सदा ।५३०। एवं मनीं कर्मीं बोली। जेथ अहंकारा उखी जाहाली। एकावळीची काढिली। दोरी जैसी ।३१। संबंधेवीण जैसी। अभ्रें असती आकाशीं। देहीं कर्मैं तैसी। जयासि गा ।३२। मद्यपाआंगींचे वस्त्र। का लेपाहातींचें शस्त्र। बैलावरी शास्त्र। बांधलें आहे ।३३। तयापाडे देहीं। जया मी आहें हे सेचि नाहीं। निरहंकारता पाहीं। तया नांव ।३४। हें संपूर्ण जेथें दिसे। तेथेचि ज्ञान असे। इयेविषीं अनारिसें। बोलो नये ।३५। जन्म मृत्यु जरा दुःखें। व्याधि वार्धक्य कलुषें। तिये आंगा न येतां देखे। दुरूनि जो ।३६। साधक विवसिया। का उपसर्ग योगिया। पावे उणेया पुरेया। वोथंबा जेवीं ।३७। वैर जन्मांतरींचें। सर्पा मनौनि न वचे। तेवीं अतीता जन्माचें। उणें जो वाहे ।३८। डोळां हरळ न विरे। घाईं कोत न जिरे। तैसें काळींचे न विसरे। जन्मदुःख ।३६। म्हणे पूयगर्तें रिगाला। अहा मूत्ररंध्रें निघाला। कटा रे मिया चाटिला। कुचस्वेद ।५४०। ऐसऐसिया परी। जन्माचा कांटाळा धरी। म्हणे आतां तें मी न करीं। जेणें ऐसें होय ।४१। हारी उमचावया। जुंवारी जैसा ये डाया। कीं वैरा बापाचेया। पुत्र जचे ।४२। मारिलियाचेनि रागें। पाठीचा जेवीं सूड मागे। तेणें आक्षेपें लागे। जन्मापाठीं ।४३। परी जन्मती ते लाज। न सांडी जयाचें निज। संभाविता निस्तेज। न जिरे जेवीं ।४४। आणि मृत्यु पुढां आहे। तोचि कल्पांतीं का पाहे। परी आजीच होये। सावध जो ।४५। माजी अथांव म्हणतां। थडियेचि पांडुसुता। पोहणार आइता।

कासी जेवीं ।४६। का न पवतां रणाचा ठावो। सांभाळिजे जैसा आवो। वोडण सुइजे घावो। न लागतांचि ।४७। पाहेचा पेणा वाटवधा। तंव आजीचि होइजे सावधा। जीव न वचतां औषधा। धांविजे जेवीं ।४८। येरवीं ऐसें घडे। जो जळत घरीं सांपडे। तो मग न पवाडे। कुहा खणों ।४६। चोंढिये पाथर गेला। तैसेनि जो बुडाला। तो बोंबेही सकट निमाला। कोण सांगे ।५५०। म्हणोनि समर्थेसी वैर। जया पडिलें हाडखाइर। तो जैसा आठही पाहर। परजूनि असे ।५१। नातरी केळवली नोवरी। का संन्यासी जयापरी। तैसा न मरतां जो करी। मृत्युसूचना ।५२। पैं गा जो ययापरी। जन्मेचि जन्म निवारीं। मरणें मृत्यु मारी। आपण उरे ।५३। तया घरीं ज्ञानाचें। सांकडें नाहीं साचें। जया जन्ममृत्यूंचें। निमाले शल्य ।५४। आणि तयाचिपरी जरा। न टेकतां शरीरा। तारुण्याचिया भरा। माजीं देखे ।५५। म्हणे आजिच्या अवसरीं। पुष्टि आहे शरीरीं। ते होईल काचरी। वाळली जैसी ।५६। निदैवाचे व्यवसायें। तैसे ठाकती हातपाये। अमंत्री राजाची परी आहे। बळा यया ।५७। फुलांचिया भोगा। लागीं प्रेम टांगा। तें करेयाचा गुडघा। तैसें होईल ।५८। वोढाळाच्या खुरीं। आषाढवातें बुरी। ते दशा मा या शिरीं। पावेल गा ।५६। पद्मदळेंसीं इसाळें। भांडताति हे डोळे। ते होती पडवळें। पिकली जैसी ।५६०। भंवईचीं पडळें। वोमथती शिनसाळे। उर कुहिजेल जळें। आंसुवांचेनी ।६१। जैसें बाभुळीचे खोड। गिरबडूनि जाती सरड। तैसें पिचडी तोंड। सरकटिजेल ।६२। रांधवणी चुलीपुढें। पऱ्हवे उम्हताति खातवडें। तैसीचि यें नाकाडें। बिडबिडती ।६३। तांबूलें वोंट राऊं। हांसतां दांत दाऊं। सनागर मिरऊं। बोल जेणें ।६४। तयाचिया तोंडा। येईल जळंबटाचा लोंढा। इया उमळती दाढा। दांतांसींही ।६५। कुळवाडी रिणें दाटली। कीं वाकडिया ढोरें बैसली। तैसी नुठी कांहीं केली। जीभची हे ।६६। कुसळें कोरडी। वारेनें जाती बरडी। तैसी आपदा तोंडीं। दाढियेसी ।६७। आषाढीचेनि जळें। जैसी झिरपती शैलाची मौळें। तैसे खांडीहूनि लाळे। पडती पुर ।६८। वाचेसि अपवाड। कानीं अनुघड। पिंड गरुवा माकड। होईल हा ।६६। तृणाचें बुझवणें। आंदोळे वारेनुगुणें। तैसें येईल कांपणें। सर्वांगासी ।५७०। पाया पडती वेंगडी। हात वळती मुरकुंडी। बरवेपणा बागडी। नाचविजेल ।७१। मळमूत्रद्वारें। होऊनि ठाती खांकरें। नवसियें होती इतरें। माझिया निधनीं ।७२। देखोनि थुंकील जग। मृत्यूचा पडेल पांग। सोइरियां उबग। येईल माझा ।७३। स्त्रिया म्हणती विवसी। बाळें जाती मूर्च्छेसी। किंबहुना चिळसी। पात्र होईन ।७४। उभळीचा उजगरा। सेजारियां सोइलियां घरा। शिणवील म्हणती म्हातारा। बहुतांतें हा ।७५। ऐसी वार्धक्याची सूचणी। आपणियां तरुणपणीं। देखे मग मनीं। विटे जो गा ।७६। म्हणे पाहे हे येईल। आणि आतांचें भोगितां जाईल। मग काय उरेल। हितालागीं ।७७। म्हणोनि नाइकणें पावे। तंव आइकोनि घाली आघवें। पंगु न होता जावें। तेथूनिया ।७८। दृष्टी जंव आहे। तंव पाहावें तेतुले पाहे। मूकत्वा आधी वाचा वाहे। सुभाषित ।७६। हात होती खुळे। हें पुढील मोटकें कळे। तंव करूनि घाली सकळें। दानादिकें ।५८०। ऐसी दशा येईल पुढें। तैं मन होईल वेडें। तंव चिंतूनि ठेवी चोखडें। आत्मज्ञान ।८१। जैं चोर पाहे झोंबती। तंव आजीचि रुसिजे संपत्ती। कां झांकाझांकी वाती। न वचतां कीजें ।८२। तैसें वार्धक्य यावें। मग जें वायां जावें। तें आतांचि आघवें। सवतें करी ।८३। आतां मोडूनि ठेलीं दुर्गें। का वळित धरिलें खगें। तेथ उपेक्षूनि जो निघे। तो नागवला कीं ।८४। तैसें वृद्धाप्य होय। आलेपण वायां जाय। जे तो शतवृद्ध आहे। नेणो कैचा ।८५। झाडिलींची कोळें झाडी। तया न फहें जेवीं बोंडी। जाहाला अग्नी तरी राखोंडी। जाळील काई ।८६। म्हणोनि वार्धक्याचेनि आठवें। वार्धक्या जो नागवे। तयाच्या ठायीं जाणावें। ज्ञान आहे ।८७। तैसेचि नानारोग। पडिघातीना जंव पुढा आंग। तंव आरोग्याचे उपेग। करूनि घाली ।८८। सापाच्या तोंडी। पडिली जे उंडी। ते लाऊनि सांडी। प्रबुद्ध जैसा ।८६। तैसा वियोग जेणें दुःखें। विपत्ति शोक पोखें। तें स्नेह सांडूनि सुखें। उदास होय ।५६०। आणि जेणेंजेणें कडें। दोष सूतील तोंडें। तया कर्मरंध्रीं गुंडे। नियमाचे दाटी ।६१। ऐसऐसिया आइती। जयाती परी असती। तोचि तो ज्ञानसंपत्ती। गोसांवी गा ।६२। आतां आणीकही एक। लक्षण अलौकिक। सांगेन आईक। धनंजया ।६३।

असक्तिरनभिष्वंगः पुत्रदारगृहादिषु।
नित्यं च समचित्तत्वमिष्टानिष्टोपपत्तिषु ।६।

तरी जो देहावरी। उदास ऐसिया परी। उखिता जैसा बिढारीं। बैसला आहे ।६४। का वृक्षाची साऊली। वाटे जाता मानली। घरावरी तेतुली। आस्था नाहीं ।६५। साऊली सरिसीच असे। परी हें नेणिजे जैसें। स्त्रियेचे तैसें। लोलुप्य नाहीं ।६६। आणि जे प्रजा जाली। तियें वस्तीकरें आली। का गोरुवें बैसली। रुखातळीं ।६७। जो संपत्तिमाजीं असतां। ऐसा गमे पांडुसुता। जैसा का वाटे जातां। साक्षी ठेविला ।६८। किंबहुना पुंसा। पांजरियामाजीं जैसा। वेदाज्ञेसी तैसा। बिहूनि असे ।६६। येऱ्हवीं दारागृहपुत्रीं। नाहीं जया मैत्री। तो जाण पां धात्रीं। ज्ञानासि गा ।६००। महासिंधु जैसें। ग्रीष्म वर्ष सरिसे। इष्टानिष्ट तैसें। जयाच्या ठायीं ।१। का तीन्ही काळ होतां। त्रिधा नव्हे सविता। तसा सुखदुःखीं चित्ता। भेदू नाहीं ।२। जेथ नभाचेनि पाडें। समत्वा न्यून न पडे। तेथ ज्ञान रोकडे। वोळख तूं ।३।

मयि चानन्ययोगेन भक्तिरव्यभिचारिणी।
विविक्तदेशसेवित्वमरतिर्जनसंसदि।१०।

आणि मीवांचूनि कांहीं। आणिक गोमटें नाहीं। ऐसा निश्चय तिहीं। जयाचा केला।४। शरीर वाचा मानस। पियालीं कृतनिश्चयाचा कोश। एक मीवांचूनि वास। न पाहती आन।५। किंबहुना निकट निज। जयाचें जाहालें मज। तेणें आपणयां आम्हां सेज। एकी केली।६। रिगतां वल्लभापुढें। नाहीं आंगीं जीवीं सांकडें। तिये कांतेचेनि पाडें। एकसरला जो।७। मिळोनि मिळतची असे। समुद्रीं गंगाजळ जैसें। मी होऊन मज तैसें। सर्वस्वें भजती।८। सूर्याच्या होण्या होईजे। का सूर्यासवेंचि जाइजे। हें विकलेपण साजे। प्रभेसि जेवीं।९। पैं पाणियाचिये भूमिके। पाणी तळपे कौतुकें। ते लहरी म्हणती लौकिकें। येऱ्हवीं तें पाणी।६१०। जो अनन्य यापरी। मी जाहलाही मातें वरी। तोचि तो मूर्तधारी। ज्ञान पैं गा।११। आणि तीर्थें धौते तटें। तपोवनें चोखटें। आवडती कपाटें। वसवूं जया।१२। शैलकक्षांची कुहरें। जळाशयपरिसरें। अधिष्ठी जो आदरें। नगरा न ये।१३। बहु एकांतावरी प्रीती। जया जनपदाची खंती। जाण मनुष्याकारें मूर्ती। ज्ञानाची तो।१४। आणिकही पुढती। चिह्नें गा सुमती। ज्ञानाचिये निरुती–। लागीं सांगों।१५।

अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम्।
एतज्ज्ञानमिति प्रोक्तमज्ञानं यदतोऽन्यथा।११।

तरी परमात्मा ऐसें। जें एक वस्तु असे। तें जया दिसे। ज्ञानास्तव।१६। तें एकवांचूनि आनें। जियें भवस्वर्गादि ज्ञानें। तें अज्ञान ऐसा मनें। निश्चय केला।१७। स्वर्गा जाणों हें सांडी। भवविषयीं कान झाडी। दे अध्यात्मज्ञानीं बुडी। सद्भावाची।१८। भंगलिये वाटे। शोधूनियां अव्हांटे। निघिजे जेवीं नीटें। राजपंथें।१९। तसें ज्ञानजातां करी। आघवेंचि एकीकडे सारी। मग मन बुद्धी मोहरी। अध्यात्मज्ञानीं।६२०। म्हणे एक हेंचि आथी। येर जाणणें तें भ्रांति। ऐसी निकरंसीं मती। मेरु होय।२१। एवं निश्चय जयाचा। द्वारीं आत्मज्ञानाचा। ध्रुव देवो गगनींचा। तैसा राहिला।२२। तयाचिया ठायीं ज्ञान। या बोला नाहीं आन। जे ज्ञानीं बैसलें मन। तेव्हांचि तो मी।२३। तरी बैसलेपणें जें होये। तें बैसताचि बोलें न होये। तरी ज्ञाना तया आहे। सरिसा पाड।२४। आणि तत्त्वज्ञान निर्मळ। फळ जें एक फळ। तें ज्ञेयहीवरी सरळ। दिठी जया।२५। येऱ्हवीं बोधा आलेनि ज्ञानें। जरी ज्ञेय न दिसेचि मनें। तरी ज्ञानलाभही न मने। झालासांता।२६। आंधळेया हातीं दिवा। देऊनि काय करावा। तैसा ज्ञाननिश्चय आघवा। वायांचि जाय।२७। जरी ज्ञानाचेनि प्रकाशें। परतत्त्वीं दिठी न पैसे। ते स्फूर्तीचि असे। अंध होउनी।२८। म्हणोनि ज्ञान जेतुले दावी। तेतुली वस्तुचि आघवी। तें देखे ऐसी व्हावी। बुद्धी चोख।२९। यालागीं ज्ञानें निर्दोखें। दाविलें ज्ञेय देखे। तैसेनि उन्मेखें। आथिला जो।६३०। जेवढी ज्ञानाची वृद्धी। तेवढी जयाची बुद्धी। तो ज्ञान हें शब्दीं। करणें न लगे।३१। पैं ज्ञानाचिये प्रभेसवें। जयाची मती ज्ञेयीं पावे। तो हातधरणिया शिवे। परतत्त्वातें।३२। तोचि ज्ञात हे बोलतां। विस्मयो कवण पांडुसुता। काय सवितयातें सविता। म्हणावें असे।३३। तंव श्रोते म्हणती असो। न सांगें तयाचा अतिसो। ग्रंथोक्ती तेथ आडसो। घालिसी कां हा।३४। तुझा हाचि आम्हा थोर। वक्तृत्वाचा पाहुणेर। जे ज्ञानविषो फार। निरोपिला।३५। रस होआवा अतिमात्रू। हा घेतासि कविमंत्रू। तरी अवंतूनि शत्रू। करितोसि कां गा।३६। ठायीं बैसतीये वेळे। जे रससोय होऊनि पळे। तियेचा येर वोडव मिळे। कोणा अर्था ?।३७। आघवांचि विषयीं भादी। परी सांजवणी टेकों नेदीं। ते खुरखोडी नुसधी। पोषी कवण।३८। तैसी ज्ञानीं मती न फांकें। येर जल्पती नेणों केतुकें। परी तें असो निकें। केलें तुंवा।३९। जया ज्ञानलेशोद्देशें। किजती योगादि सायासें। ते धणीचें आणि तुझिया ऐसें। निरूपण।६४०। अमृताची सातवांकडी। लागो का अनुघडी। सुखाच्या दिवसकोडी। गणिजतु का।४१। पूर्णचंद्रेसीं राती। युग एक असोनि पांती। तरी काय न पाहात आहाती। चकोर ते।४२। तैसें ज्ञानाचें बोलणें। आणि येणें रसाळपणें। आतां पुरे कोण म्हणे। आकर्णितां।४३। आणि सभाग्य पाहुणा ये। सुभगाचि वाढती होये। तैं सरो नेणें रससोये। ऐसें आथी।४४। तैसा जाहाला प्रसंग। जे ज्ञानीं आम्हांसी लाग। आणि तुजही अनुराग। आथि तेथ।४५। म्हणोनि यया वाखाणा। प्रेम चढे चौगुणा। ना म्हणों नये देखणा। होसी ज्ञानीं।४६। तरी आतां ययावरी। प्रज्ञेच्या माजघरीं। पदें साच करी। निरूपणीं।४७। या संतवाक्यासरिसें। म्हणितलें निवृत्तिदासें। माझेही जी ऐसें। मनोगत।४८। यावरी आतां तुम्ही। आज्ञापिला स्वामी। तरी वायां वाग्जाळ मी। वाढो नेदीं।४९। एवं इये अठरा। ज्ञानलक्षणें अवधारा। श्रीकृष्णें धनुर्धरा। निरूपिलीं।६५०। मग म्हणे या नांवें। ज्ञान एथ जाणावें। हें स्वमत आणि आघवें। ज्ञानियेही म्हणती।५१। करतळावरी वाटोळा। डोलत देखिजे आंवळा। तैसें ज्ञान आम्हीं डोळां। दाविलें तुज।५२। आतां धनंजया महामती। अज्ञान ऐसी वदंती। तेही सांगों व्यक्ती। लक्षणेंसीं।५३। येऱ्हवीं ज्ञान फुडें जालिया। अज्ञान जाणवे धनंजया। जें ज्ञान नव्हे तें अपैसया। अज्ञानची।५४। पाहें पां दिवस आघवा सरे। मग रात्रीची वारी वावरे। वांचुनि काहीं तिसरें। नाहीं जेवीं।५५। तैसें ज्ञान जेथ नाहीं। तें अज्ञानची पाही। तरी सांगो कांहीं कांहीं। चिह्नें तियें।५६। तरी संभावनें जिये। जो मानाची

वाट पाहे। सत्कारें होये। तोष जया ।५७। गर्वें पर्वताची शिखरें। तैसा महत्त्वावरूनि नितुरे। तयाचिया ठायीं पुरें। अज्ञान आहे ।५८। आणि स्वधर्माची मांगळी। बांधे वाचेच्या पिंपळीं। उभिला जैसा देउळीं। जाणोनि कुंचा ।५९। घाली विद्येचा पसारा। सुये सुकृताचा डांगोरा। करी तेतुलें मोहरा। स्फीतीचिया ।६६०। आंग वरीवरी चर्ची। जनातें अर्चितां वंची। तो जाण अज्ञानाची। खाणी एथ ।६१। आणि वह्नी वनीं विचरें। तेथ जळती जैसी जंगमस्थावरें। तैसे जयाचेनि आचारें। जगा दुःख ।६२। कौतुकें जें जें जल्पे। तें सबळाहुनि तीख रुपे। विषाहूनि संकल्पें। मारक जो ।६३। तयातें बहु अज्ञान। तो अज्ञानाचें निधान। हिंसेसि आयतन। जयाचें जिणें ।६४। आणि फुंकें भाता फुगे। रेचिलिया सवेंची उफगे। तैसा संयोगवियोगें। चढे वोहटे ।६५। पडली वारयाचिया वळसां। धुळी चढे आकाशा। हरिखा वळघे तैसा। स्तुतीवेळे ।६६। निंदा मोटकी आइके। आणि कपाळ धरूनि ठाके। थेंबें विरे वारेनि शोखे। चिखल जैसा ।६७। तैसा मानापमानीं होये। जो कोण्हीची उर्मी न साहे। तयाच्या ठायीं आहे। अज्ञान पुरें ।६८। आणि जयाचिया मनीं गांठी। वरीवरी मोकळी वाचा दिठी। आंगें मिळे जीवें पाठी। भलतया दे ।६९। व्याधाचें चारा घालणें। तैसें प्रांजळ जोगावणें। चांगाचीं अंतःकरणें। विरुद्ध करी ।६७०। गार शेवाळें गुंडाळली। कां निंबोळी जैसी पिकली। तैसी जयाची भली। बाह्यक्रिया ।७१। अज्ञान तयाचिया ठायीं। ठेविलें असे पाही। या बोला आन नाहीं। सत्य मानीं ।७२। आणि गुरुकुळीं लाजे। जो गुरुभक्ती उभजे। विद्या घेऊनि माजे। गुरूसींचि जो ।७३। तयाचें नाम घेणें। तें वाचे शूद्रान्न होणें। परी घडलें लक्षणें। बोलतां इयें ।७४। आतां गुरुभक्तांचें नांव घेवों। तेणें वाचे प्रायश्चित्त देवो। गुरुभक्तांचें नाम पाहों। सूर्य जैसा ।७५। येतुलेनि पांगू पापाचा। निस्तरेल हे वाचा। जो गुरुतल्पगाच्या। नामीं जाला ।७६। हा ठायवरी। तया नामाचें भय हरी। मग म्हणे अवधारीं। आणिकें चिह्नें ।७७। तरी आंगें कर्में ढिला। जो मनें विकल्पें भरला। अडवींचा अवगळला। कुहा जैसा ।७८। तया तोंडीं कांटिवडें। आंत नुसधीं हाडें। अशुचि तेणें पाडें। सबाह्य जो ।७९। जैसें पोटालागीं सुणें। उघडें झांकलें न म्हणे। तैसें आपलें परावें नेणे। द्रव्यालागीं ।६८०। इया ग्रामसिंहाचिया ठायीं। जैसा मिळणीं ठावो अठावो नाहीं। तैसा स्त्रीविषयीं कांहीं। विचारीना ।८१। कर्माचा वेळ चुके। का नित्यनैमित्तिक ठाके। तें जया न दुखे। जीवामाजीं ।८२। पापीं जो निसुग। पुण्याविषयीं अतिनिलाग। जयाचिया मनीं वेग। विकल्पाचा ।८३। तो जाण निखळा। अज्ञानाचा पुतळा। जो बांधोनि असे डोळां। वित्ताशेतें ।८४। आणि स्वार्थें आळुमाळें। जो धैर्यापासोनि चळे। जैसें तृणबीज ढळे। मुंगियेचेनी ।८५। पावो सूदलिया सवें। जैसे थिल्लर कालवे। तैसा भयाचेनि नांवें। गजबजे जो ।८६। मनोरथांचिया धारसा। वाहणें जयाचिया मानसा। पूरीं पडिला जैसा। दुधिया पाहीं ।८७। वायूचेनि सावायें। धूई दिगंतरा जाये। दुःखवार्ता होये। तैसें जया ।८८। वाउधणाचिया परी। आश्रय कंहीचि न धरी। क्षेत्रीं तीर्थीं पुरीं। थारों नेणे ।८९। का मातलिया सरडा। पुढती बुड पुढती शेंडा। हिंडणवारा कोरडा। तैसा जया ।६९०। जैसा रोविल्याविणें। रांजण थारों नेणे। तैसा पडे तैं राहणें। येऱ्हवीं हिंडे ।९१। तयाच्या ठायीं उदंड। अज्ञान असे वितंड। जो चांचल्यें भावंड। मर्कटाचें ।९२। आणि पैं गा धनुर्धरा। जयाचिया अंतरा। नाहीं वोढवारा। संयमाचा ।९३। लेंडिये आला लोंढा। न मनी वाळुवेचा वरवंडा। तैसा निषेधाचिया तोंडा। बिहेना जो ।९४। व्रतातें आड मोडी। स्वधर्म पाये वोलांडी। नियमाची आस तोडी। जयाची क्रिया ।९५। नाहीं पापाचा कंटाळा। नेणे पुण्याचा जिव्हाळा। लाजेचा पेंडवळा। खाणोनि घाली ।९६। कुळेंसी जो पाठमोरा। वेदाज्ञेसीं दुऱ्हा। कृत्याकृत्यव्यापारा। निवाड नेणे ।९७। वसू जैसा मोकाट। वारा जैसा अफाट। फुटला जैसा पाट। निरंजनीं ।९८। आंधळें हातिरूं मातलें। का डोंगरीं जैसें पेटलें। तैसें विषयीं सुटलें। चित्त जयाचें ।९९। पैं उकरडां काय न पडे। मोकाट कोणा नातुडे। ग्रामद्वारींचें आडें। नोलांडी कोण ।७००। जैसें सत्रीं अन्न जालें। का सामान्या बीक आलें। वाणसियेचें उमलें। कोण न रिगे ।१। तैसें जयाचें अंतःकरण। तयाच्या ठायीं संपूर्ण। अज्ञानाची जाण। ऋद्धि आहे ।२। आणि विषयांची गोडी। जीत मेला न संडी। स्वर्गींही खावया जोडी। एथुनीची ।३। जो अखंड भोगा जचे। जया व्यसन कामक्रीडेचे। मुख देखोनि विरक्ताचें। सचैल करी ।४। विषो शिणोनियां जाये। परी न शिणे सावध नोहे। कुहिला हातीं खाये। कोढी जैसा ।५। खरी टेकों नेदी उडे। लातौनि फोडी नाकाडें। तऱ्हीं जेवीं न काढे। माघौता खर ।६। तैसा जो विषयांलागीं। उडी घाली जळते आगीं। व्यसनांची आंगीं। लेणीं मिरवी ।७। फुटोनी पडे तंव। मृग वाढवी हांव। परी न म्हणे ते माव। रोहिणीची ।८। तैसा जन्मोनी मृत्यूवरी। विषयीं त्रासितां बहुती परी। तऱ्ही त्रास नेघे धरी। अधिक प्रेमा ।९। पहिलिये बाळदशे। आई वा हेंचि पिसें। तें सरे मग स्त्रीमांसें। भुलोनि ठाके ।७१०। मग स्त्री भोगितां थावो। वृद्धाप्य लागें येवों। तेव्हां तोचि प्रेमभावो। बाळकांसि आणी ।११। आंधळें व्यालें जैसें। तैसा बाळें परिवसे। परी जीवें मरे तों न त्रासे। विषयांसि जो ।१२। जाण तयाच्या ठायीं। अज्ञानासि पार नाहीं। आतां आणिक कांहीं। चिह्नें सांगों ।१३। तरी देहचि आत्मा। ऐसेया जो मनोधर्मा। वळघोनियां कर्मा। आरंभ करी ।१४। आणि उणें का पुरें। जें जें कांहीं आचरे। तयाचेनि आविष्कारें। कुंथों लागे ।१५। डोईये ठेविलेनि भोजें। देवलविसें जेवीं फुजे। तैसा विद्यावयसा माजे। उताणा चाले ।१६। म्हणे मीचि एक अर्थी। माझ्याचि घरीं संपत्ति। माझी आचरती रिति। कोणा आहे ।१७। नाहीं माझेनि पाडें वाड। मी सर्वज्ञ एकचि रूढ। ऐसा सर्वतुष्टीगंड। घेऊनि ठाके ।१८। व्याधि लागलिया माणुसा। न येचि भोग दाऊं जैसा। निकें न साहे जो तैसा। पुढिलांचें ।१९। पैं गुण तेतुला साय। स्नेह कीं जाळित जाय। जेथ ठेविजे तेथ होय।

मसीऐसें ।७२०। जीवनें शिंपिला तिडपिडी। वीजिला प्राण सांडी। लागला तरी काडी। उरों नेदी ।२१। अळुमाळ प्रकाश करी। तेतुलेनीच उबारा धरी। तैसिया दीपाचिया परी। सुविद्य जो ।२२। औषधाचें नांवें अमृतें। जैसा नवज्वर आंबुथे। का विषचि होऊनि परते। सर्पा दूध ।२३। तसा सद्‌गुणी मत्सर। व्युत्पत्तीं अहंकार। तपोज्ञानें अपार ताठा चढे ।२४। अंत्यज राणिवे बैसविला। आरें धारण गिळिला। तैसा गर्वें फुगला। देखसी जो ।२५। जो लाटणें ऐसा न लवे। पाथरे तेवीं न द्रवे। गुणियासि नागवे। फोडसें जैसें ।२६। किंबहुना तयापासीं। अज्ञान आहे वाढिसीं। हें निकरें गा तुजसीं। बोलत असों ।२७। आणीकही धनंजया। जो गृहदेहसामग्रिया। न देखे कालचेया। जन्मातें गा ।२८। कृतघ्ना उपकार केला। का चोरा व्यवहार दिधला। निसुग स्तविला। विसरे जैसा ।२९। वोढाळतां लाविलें। तें तैसेंचि कान पुंस वोलें। कीं पुढती वोढाळूं आलें। सुणें जैसें ।७३०। बेडूक सापाचिया तोंडीं। जातसे सबुडबुडीं। तो मक्षिकांचिया कोडीं। स्मरेना कांहीं? ।३१। तैसी नवही द्वारें स्रवती। आंगीं देहाची लुती जिती। जेणें जाली तें चित्तीं। सलेना जया ।३२। मातेच्या उदरकुहरीं। सूनि विष्ठेच्या दाथरीं। जठरीं नवमासवरी। उकडला जै ।३३। ते गर्भींची जे व्यथा। का जें जालें उपजतां। तें कांहींचि सर्वथा। नाठवी जो ।३४। मळमूत्रपंकीं। जें लोळतें बाळ अंकीं। देखोनि जो न थुंकी। त्रास नेघे ।३५। कालचि ना जन्म गेलें। पाहेच पुढती आलें। ऐसें हें कांहीं वाटलें। नाहीं जया ।३६। आणि पैं तयाचि परी। जीविताची फरारी। देखोनि जो न करी। मृत्युचिंता ।३७। जिणेयाचेनि विश्वासें। मृत्यु एक एथ असे। हें जयाचेनि मानसें। मानिजेना ।३८। अल्पोदकींचा मासा। हें नाटे ऐसिया आशा। न वचेचि का जैसा। अगाध डोहां ।३९। का गोरीचिया भुली। मृग व्याधा दृष्टी न घाली। गळ न पाहतां गिळिली। उंडी मीनें ।७४०। दीपाचिया झगमगा। जाळील हे पतंगा। नेणवेचि पैं गा। जयापरी ।४१। गंवार निद्रासुखें। घर जळत असे तें न देखे। नेणतां जेवी विखें। रांधिलें अन्न ।४२। तैसा जीविताचेनि मिषें। हा मृत्यूचि आला असे। हें नेणेचि राजसें। सुखें जो गा ।४३। शरीरींची वाढी। अहोरात्रांची जोडी। विषयसुखप्रौढी। साचचि मानी ।४४। परी बापुडा ऐसे नेणे। जें वेश्येचें सर्वस्व देणें। तेंचि तें नागवणें। रूप एथ ।४५। सवचोरांचें साजणें। तेंचि तें प्राण घेणें। लेपा स्नपन करणें। तोचि नाश ।४६। पांडुरोगे आंग सुटलें। तें तयाचि नांवें खुंटलें। तैसें नेणे भुले। आहारनिद्रा ।४७। सन्मुख शूला। धांवतया पायें चपळा। प्रतिपदीं जवळा। मृत्यु जेवीं ।४८। तेवीं देहां जंव जंव वाढ। जंव जंव दिवसाचा पवाड। जंव जंव सुरवाड। भोगाचा यया ।४९। तंव तंव अधिकाधिकें। मरण आयुष्यातें जिंके। मीठ जेवी उदकें। घांसिजत असे ।७५०। तैसें जीवित्व जाये। तयास्तव काळातें पाहे। हें हातोहातींचे न होये। ठाउवें जया ।५१। किंबहुना पांडवा। हा आंगींचा मृत्यु नित्य नवा। न देखे जो मावा। विषयांचिया ।५२। तो अज्ञानदेशींचा रावो। या बोला महाबाहो। न पडे गा ठावो। आणिकांचा ।५३। पैं जीविताचेनि तोषें। जैसा का मृत्यु न देखे। तैसाचि तारुण्यें तोखे। जरा न गणी ।५४। कडाडीं लोटला गाडा। का शिखरौनि सुटला धोंडा। तैसा न देखे जो पुढां। वार्धक्य आहे ।५५। का आडवोहळा पाणी आलें। का जैसें म्हसयांचें झुंज मातलें। तैसें तारुण्याचें चढलें। भुररें जया ।५६। पुष्टि लागे विघरों। कांति पाहे निसरों। मस्तक आदरी शिरो–। भागीं कंप ।५७। दाढी साउळ धरी। मान हालौनि वारी। तरी जो करी। मायेचा पैसू ।५८। पुढील उरीं आदळे। तंव न देखे जेवीं आंधळें। का डोळ्यावरले निगळें। आळसी तोषें ।५९। तैसें तारुण्य आजीचें। भोगितां वृद्धाप्य पाहेचें। न देखे तोचि साचें। अज्ञान गा ।७६०। देखे अक्षमें कुब्जे। कीं विटावूं लागे फुजें। परी न म्हणे पाहें माझें। ऐसेंचि होईल ।६१। आणि आंगीं वृद्धतेची। संज्ञा ये मरणाची। मरी जया तारुण्याची। भुली न फिटे ।६२। तो अज्ञानाचें घर। हें साचचि घे उत्तर। तेवींचि परियेसीं थोर। चिह्नें आणिक ।६३। तरी वाघाचिये अडवे। एक वेळ आला चरोनी दैवें। तेणें विश्वासें पुढती धावें। वसू जैसा ।६४। का सर्पघराआंतू। अवचटे ठेवा आणिला स्वस्थू। येंतुलिया साठीं निश्चितू। नास्तिक होय ।६५। तैसेचि अवचटें हें। एक दोनीचि वेळां लाहे। एथू उरग एक आहे। हें मानीना जो ।६६। वैरिया नीद आली। आतां द्वंद्वें माझीं सरली। हें मानी तो संपिलीं। मुकला जेवीं ।६७। तैसी आहारनिद्रेची उजरी। रोग निवांत जोंवरी। तंव जो न करी। व्याधींची चिंता ।६८। आणि स्त्रीपुत्रादिमेळे। संपत्ति जंव जंव फळे। तेणें रजें डोळे। जाती जयाचे ।६९। सवळेंचि वियोग पडेल। विळौनि विपत्ति येईल। हें दुःख पुढील। देखेना जो ।७७०। तो अज्ञान गा पांडवा। आणि तोही तोचि जाणावा। जो इंद्रियें अव्हासव्हा। चारी एथ ।७१। वयसेचेनि उवायें। संपत्तिचेनि सावायें। सेव्यासेव्य जाये। सरकटित ।७२। न करावें तें करी। असंभाव्य मनीं धरी। चिंतूं नये तें विचारी। जयाची मती ।७३। रिघे जेथ न रिघावें। मागे जें न घ्यावें। स्पर्शे जेथ न लगावें। आंग मन ।७४। न जावें तेथ जाये। न पाहावें तें जो पाहे। न खावें तें खाये। तेवींचि तोषे ।७५। न धरावा तो संग। न लगावें तेथ लाग। नाचरावा तो मार्ग। आचरे जो ।७६। नायकावें तें आइके। न बोलावें तें बके। परी दोष होतील हें न देखे। प्रवर्ततां ।७७। आंगा मनासि रुचावें। येतुलेनि कृत्याकृत्य नाठवे। जो करणेयाचेनि नांवें। भलतेचि करी ।७८। परी पाप मज होईल। का नरकयातना येईल। हें कांहींचि पुढील। देखेना जो ।७९। तयाचेनि आंगलगें। जगीं अज्ञान दाटुगें। जें सज्ञानाही संगें। झोंबों सके ।७८०। परी असो हे आइक। अज्ञानचिह्नें आणिक। जेणें तुज सम्यक। जाणवेल ।८१। तरी जयाची प्रीति पुरी। गुंतली देखसी घरीं। नवगंधकेसरीं। भ्रमरी जैसी ।८२। साकरेचिया राशी। बैसली नुठे माशी। तैसेनि स्त्रीचित्त आवेशी। जयाचे मन ।८३। ठेला बेडूक कुंडीं। मशक गुंतला शेंबुडीं। जैसा ढोर सबुडसुडीं। रुतला पंकीं ।८४। तैसें घरींहुनि निगणे। नाहीं जीवें

मने प्राणें। जया साप होऊनि असणें। भाटीं तिये।८५। प्रियोत्तमाचिया कंठीं। प्रमदा घे आठी। तैसी जीवेंसी कोंपटी। धरूनि ठाके।८६। मधुरसोद्देशें। मधुकर जचे जैसें। गृहसंगोपन तैसें। करी जो गा।८७। म्हातारपणीं आलें। रत्न एक विपायिलें। तयाचें का जेतुलें। मातापितरां।८८। तेतुलेनि पाडें पार्था। घरीं जया प्रेमआस्था। आणि स्त्रीवांचूनि सर्वथा। जाणेना जो।८९। तैसा स्त्रीदेहीं जो जीवें। पडोनिया सर्वभावें। कोण मी काय करावें। कांहीं नेणें।७९०। महापुरुषाचें चित्त। जालिया वस्तुगत। ठाके व्यवहारजात। जयापरी।९१। हानि लज्जा न देखे। परापवाद नाइके। जयाचीं इंद्रियें एकमुखें। स्त्रिया केली।९२। चित्त आराधी स्त्रियेचे। आणि तियेचेचि छंदे नाचे। माकड गारुडियाचें। जैसें होय।९३। आपणपेही शिणवी। इष्टमित्र दुखवी। मग कवडाचि वाढवी। लोभी जैसा।९४। तैसा दानपुण्यें खाची। गोत्रकुटुंबा वंची। परी बाइणी स्त्रियेची। उणी हो नेदी।९५। पूजितीं दैवतें जोगवी। गुरूतें बोलें झकवी। मायबापा दावी। निदारपण।९६। स्त्रियेच्या तरी वीखीं। भोगसंपत्ति अनेकी। आणी वस्तु निकी। जे जे देखे।९७। प्रेमाथिलेनि भक्तें। जैसेनि भजिजे कुळदैवतें। तैसा एकाग्रचित्तें। स्त्री जो उपासी।९८। साच आणि चोख। तें स्त्रियेसीची अशेख। येरींविषयीं जोगावणूक। तेही नाहीं।९९। इयेतें हन कोणी देखेल। इयेसी वेखासें जाईल। तरी युगचि बुडेल। ऐसें जया।८००। नायट्या भेण। न मोडिजे नागांची आण। तैसी पाळी उणखूण। स्त्रियेची जो।१। किंबहुना धनंजया। स्त्रीची सर्वस्व जया। आणि तियेचिया जालियां–। लागीं प्रेम।२। आणीकही जें समस्त। तियेचें संपत्ति जात। तें जीवाहूनि आप्त। मानी जो का।३। तो अज्ञानासि मूळ। अज्ञाना तेणें बळ। हें असो केवळ। तो तेंचि रूप।४। आणि मातलिया सागरीं। मोकलिलिया तरी। लाटांच्या येरझारीं। आंदोळे जेवीं।५। तेवीं प्रिय वस्तु पावे। आणि सुखें जो उंचावे। तैसाचि अप्रियासवें। तळवट ये।६। ऐसेनि जयाचे चित्तीं। वैषम्याची वोळखती। वाहे तो महामती। अज्ञान गा।७। आणि माझ्या ठायीं भक्ती। फळालागीं जया आर्ती। धनोद्देशें विरक्तीं। नटणें जेवीं।८। नातरी कांताच्या मानसीं। रिगोनी स्वैरिणी जैसी। राहटे जारेंसी। जावयालागीं।९। तैसा मातें किरीटी। भजती गा पाउटी। करूनि जो दिठी। विषो सूये।८१०। आणि भजनलियासवें। तोचि विषय जरी न पावे। तरी सांडी म्हणे आघवें। टवाळ हें।११। कुणबट कुळवाडी। तैसा आन आन देव मांडी। आदिलाची परवडी। करी तया।१२। तया गुरुमार्गा टेकें। जयाचा सुगरवा देखे। तरी तयाचा मंत्र शिके। येर नेघे।१३। प्राणिजातेंसीं निष्ठुर। सीवरीं बहु भर। तेवींचि नाहीं एकसर। निर्वाह जया।१४। माझी मूर्ति निफजवी। ते घराचे कोनीं बैसवी। आपण देवोंदेवीं। यात्रे जाय।१५। नित्य आराधन माझें। काजी कुळदेवता भजे। पर्वाविशेषें कीजे। पूजा आना।१६। माझें अधिष्ठान घरीं। आणि वोवसे आनाचे करी। पितृकार्यावसरीं। पितरांचा होय।१७। एकादशीच्या दिवसीं। जेतुला पाड आम्हांसीं। तेतुलाचि नागांसी। पंचमीच्या दिवशीं।१८। चौथ मोटकी पाहे। आणि गणेशाचाचि होये। व उदसीं म्हणे माये। तुझाचि वो दुर्गे।१९। नित्यनैमित्तिकें कर्मे सांडी। मग बैसे नवचंडी। आदित्यवारीं वाढी। बहिरवां पात्रीं।८२०। पाठीं सोमवार पावे। आणि बेलेसीं लिंगा धांवे। ऐसा एकलाचि आवघे। जोगावी जो।२१। ऐसा अखंड भजन करी। उगा नोहे क्षणभरी। अवघेन गांवद्वारीं। अहेव जैसी।२२। ऐसेनि जो भक्त। देखसी सैरा धांवत। जाण अज्ञानाचा मूर्त। अवतार तो।२३। आणि एकांतें चोखटें। तपोवनें तीर्थें तटें। देखोनि जो गा विटे। तोही तोची।२४। आणि आत्मा गोचर होये। ऐसी जे विद्या आहे। ते आइकोनी डौर वाहे। विद्वांसू जो।२६। उपनिषदांकडे न वचे। योगशास्त्र न रुचे। अध्यात्मज्ञानीं जयाचें। मनचि नाहीं।२७। आत्मचर्चा एकी आथी। ऐसिये बुद्धीची भिंती। पाडूनि जयाची मती। वोढाळ जाहाली।२८। कर्मकांड तरी जाणे। मुखोद्गत पुराणें। ज्योतिषी तो म्हणे। तैसेंचि होय।२९। शिल्पीं अतिनिपुण। सूपकर्मीही प्रवीण। विधि आथर्वण। हातीं आथी।८३०। कोकीं नाहीं ठेलें। भारत कीर म्हणतलें। आगम अपाविले। मूर्त होती।३१। नीतिजात सुझे। वैद्यकही बुझे। काव्यनाटकीं दुजें। चतुर नाहीं।३२। स्मृतींची चर्चा। दंश जाणे गारुडीचा। निघंट प्रज्ञेचा। पाइकी करी।३३। पैं व्याकरणीं चोखडा। तर्कीं अतिगाढा। परी एक आत्मज्ञानी फुडा। जात्यंध जो।३४। तें एकवांचूनि आघवां शास्त्रीं। सिद्धांत निर्माणधात्री। परी जळो तें मूळनक्षत्रीं। पाहें गा।३५। मोराआंगीं आशेषें। पिसें असती डोळसें। परी एकली दृष्टी नसे। तैसें तें गा।३६। जरी परमाणूएवढें। संजीवनीमूळ जोडे। तरी बहु काय गाडे। भरणें येरें।३७। आयुष्यावीण लक्षणें। सिसेंवीण अलंकरणें। वोहरेंवीण वाधावणें। तो विटंबू गा।३८। तैसें शास्त्रजात जाण। आघवेंची अप्रमाण। पार्था अध्यात्मज्ञानेंवीण। एकलेनी!।३९। यालागीं अर्जुना पाहीं। अध्यात्मज्ञानाच्या ठायीं। जया नित्यबोध नाहीं। शास्त्रमूढा।८४०। तया शरीर जें जालें। तें अज्ञानाचें बीं विरूढलें। तयाचें व्युत्पन्नत्व गेलें। अज्ञानवेलीं।४१। तो जें जें बोले। तें अज्ञानचि फुललें। तयाचें पुण्य जें फहलें। तें अज्ञान गा।४२। आणि अध्यात्मज्ञान कांहीं। जेणें मानिलेंचि नाहीं। तो ज्ञानार्थ न देखे काई। हें बोलावें असे?। ४३। ऐलीचि थडी न पवतां। पळे जो माघौता। तया पैलद्वीपींची वाता। काय होय?।४४। का दारवंठाचि जयाचे। शीर रोविलें खांचे। तो केवीं परिवरींचें। ठेविलें देखे?।४५। तेवीं अध्यात्मज्ञानीं जया। अनोळख धनंजया। तथा ज्ञानार्थ देखावया। विषो काई।४६। म्हणोनि आतां विशेखें। तो ज्ञानाचें तत्त्व न देखे। हें सांगावें आंखेंलेखें। न लगे तुज।४७। जेव्हां सगर्भे वाढिलें। तेव्हांचि पोटींचें धालें। तैसें मागिले पदें बोलिलें। तेंचि होय।४८। वाचूनियां वेगळें। रूप करणें हें न मिळे। जेवीं अवंतिलें आंधळे। तें दुजेनसीं ये।४९। एवं इये उपरती। ज्ञानचिह्नें मागुती। अमानित्वादिप्रभृती। वाखाणिलीं।८५०। जे ज्ञानपदें अठरा। केलिया येयी

मोहरां। अज्ञान या आकारा। सहजें येती।५१। मागा श्लोकाचेनि अर्धार्धें। ऐसें सांगितलें श्रीमुकुंदें। ना उफराटीं इयें ज्ञानपदें। तेंचि अज्ञान।५२। म्हणोनि इया वाहणीं। केली म्या उपलवणी। वांचूनि दुधा मेळऊनि पाणी। फार कीजे काई?।५३। तैसें जी न बडबडीं। पदाची कोर न सांडीं। मूळध्वनीचिये वाढी। निमित्त जाहलों।५४। तंव श्रोते म्हणती राहें। कें परिहारा ठाव आहे?। बिहिसी कां वायें। कविपोषका!।५५। तूतें श्रीमुरारी। म्हणितलें प्रगट करीं। जे अभिप्राय गव्हारीं। झांकिले आम्हीं।५६। तें देवाचें मनोगत। दावित आहासी तूं मूर्त। हेंही म्हणतां चित्त। दाटेल तुझें।५७। म्हणोनि असो हें न बोलों। परी साविया गा तोषलों। जे ज्ञानतरिये मेळविलों। श्रवणसुखाचें।५८। आतां इयावरी। जें तो श्रीहरी। बोलिला तें करीं। कथन वेगी।५९। इया संतवाक्यसरिसें। म्हणितलें निवृत्तिदासें। जी अवधारा तरी ऐसें। बोलिलें देवें।८६०। म्हणती तुवां पांडवा। हा चिह्नसमुच्चय आघवा। आयिकिला तो जाणावा। अज्ञानभाग।६१। इया अज्ञानभागा। पाठी देऊनि पैं गा। ज्ञानविखीं चांगा। दृढा होईजे।६२। मग निर्वाळिलेनि ज्ञानें। ज्ञेय भेटेल मनें। तें जाणावया अर्जुनें। आस केली।६३। तंव सर्वज्ञाचा रावो। म्हणे जाणोनि तयाचा भावो। परिसें ज्ञेयाचा अभिप्रावो। सांगों आतां।६४।

ज्ञेयं यत्तत्प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वाऽमृतमश्नुते।
अनादिमत्परं ब्रह्म न सत्तन्नासदुच्यते।१२।

तरी ज्ञेय ऐसें म्हणणें। वस्तु तें येणेंचि कारणें। जें ज्ञानेवांचूनि कवणें। उपाया नये।६५। आणि जाणितलेयावरौतें। कांहीं कारणें नाहीं जेथें। जाणणेचि तन्मयातें। आणी जयाचें।६६। जें जाणितलेयासाठीं। संसार काढूनियां कांठीं। जिरोनि जाईजे पोटीं। नित्यानंदाच्या।६७। तें ज्ञेय गा ऐसें। आदि जया नसे। परब्रह्म आपैसें। नाम जया।६८। जें नाहीं म्हणों जाईजे। तंव विश्वाकारें देखिजे। आणि विश्वचि ऐसें म्हणिजे। तरी हे माया।६९। रूप वर्ण व्यक्ति। नाहीं दृश्य द्रष्टा स्थिति। तरी कोण कैसें आथी। म्हणावें पां।८७०। आणि साचचि जरी नाहीं। तरी महदादि कोणे ठाईं। स्फुरत कैचें काई। तेणेंवीण असे।७१। म्हणोनि आथी नाथी हे बोली। जें देखोनि मुकी जाहली। विचाराची मोडली। वाट जेथें।७२। जैसी भांडघटशरावीं। तदाकार असे पृथ्वी। तैसें सर्व होऊनियां सर्वीं। असे जे वस्तु।७३।

सर्वतः पाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम्।
सर्वतः श्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति।१३।

आघवांचि देशीं काळीं। नव्हतां देशकाळांवेगळी। जे क्रिया स्थूळास्थूळीं। तेचि हात जयाचे।७४। तयातें याकारणें। विश्वबाहु ऐसें म्हणणें। जें सर्वचि सर्वपणें। सर्वदा करी।७५। आणि समस्तांही ठायां। एके काळीं धनंजया। आलें असे म्हणोनि जया। विश्वांघ्रिनाम।७६। पैं सवितया आंग डोळे। नाहीत वेगळे वेगळे। तैसें सर्वद्रष्टें सकळें। स्वरूपें जें।७७। म्हणोनि विश्वतश्चक्षू। हा अचक्षूच्या ठायीं पक्षू। बोलावया दक्षू। जाहला वेद।७८। जें सर्वांचे शिरावरी। जें नित्य नांदे सर्वांपरी। ऐसिये स्थितीवरी। विश्वमूर्धा म्हणिपे।७९। पैं गा मूर्ति तेंचि मुख। हुताशना जैसे देख। तैसें सर्वपणें आशेख। भोक्तें जें।८८०। यालागीं तया पार्था। विश्वतोमुख ही व्यवस्था। आली वाक्पथा। श्रुतीचिया।८१। आणि वस्तुमात्रीं गगन। जैसें असे संलग्न। तैसें शब्दजाती कान। सर्वत्र जया।८२। म्हणोनि आम्ही तयातें। म्हणों सर्वत्र आइकतें। एवं जे सर्वांते। आवरूनि असे।८३। प्रायः येऱ्हवीं तरी महामती। विश्वतश्चक्षु इया श्रुती। तयाचिये व्याप्ती। रूप केलें।८४। वांचूनि हस्त नेत्र पाये। हे भाष तेथ कें आहे। सर्व शून्यत्वाचा साहे। निष्कर्ष जें।८५। पैं कल्लोळातें कल्लोळें। ग्रसिजत असे ऐसें कळे। परी ग्रसिते ग्रासावेगळें। असे काई ?।८६। तैसें साचचि जें एक। तेथ कें व्याप्यव्यापक। परी बोलावया नावेक। करावें लागे।८७। पैं शून्य जैं दावावें जाहालें। तै बिंदुलें एक केलें। तैसें अद्वैत सांगावें बोलें। तैं द्वैत कीजे।८८। येऱ्हवीं तरी पार्था। गुरुशिष्यसत्पथा। आडळ पडे सर्वथा। बोल खुंटे।८९। म्हणोनि गा श्रुती। द्वैतभावें अद्वैतीं। निरूपणाची वाहती। वाट केली।८९०। तेंचि आतां अवधारीं। इये नेत्रगोचरें आकारीं। तें ज्ञेय गा जयापरी। व्यापक असे।९१।

सर्वेंद्रियगुणाभासं सर्वेंद्रियविवर्जितम्।
असक्तं सर्वभृच्चैव निर्गुणं गुणभोक्तृ च।१४।

तरी तें गा किरीटी ऐसें। अवकाशीं आकाश जैसें। पटीं पट होऊनि असे। तंतु जेवीं।९२। उदक होऊनि उदकीं। रस जैसा अवलोकीं। दीपपणें दीपकीं। तेज जैसें।९३। कर्पूरत्वें कापुरीं। सौरम्य असे जयापरी। शरीर होऊनि शरीरीं। कर्म जेवीं।९४। किंबहुना जैसें पांडवा। सोनेंचि सोनियाचा रवा। तैसें जें या सर्वा। सर्वांगीं असे।९५। परी असे रवेपणामाजिवडें। तंव रवा ऐसें आवडे। वांचूनि सोनें सांगडें। सोनया जेवीं।९६। पैं गा वोघचि वांकडा। परी पाणी उजूं सुहाडा। वह्नि आला लोखंडा। लोह नव्हे कीं।९७। घटाकारें वेंटाळें। तेथ नभ गमे वाटोळें। मठीं तरी चौफळें। आयें दिसे।९८। परी ते अवकाश जैसें। नोहिजतीचि आकाशें। जें विकार

होऊनि तैसें। विकारी नोहे।९९। मन मुख्य इंद्रियां। सत्त्वादि गुणा ययां–। सारिखें ऐसें धनंजया। आवडे कीर।९००। पैं गुळाची गोडी। नोहे बांधेयासांगडीं। तैसीं गुण इंद्रियें फुडीं। नाहीं तेथ।१। अगा क्षीराचिये दशे। घृत क्षीराकारें असे। परी क्षीरचि नोहे जैसें। कपिध्वजा।२। तैसें जें इये विकारीं। विकार नोहे अवधारीं। पैं आकारा नाम भोंवरी। येर सोनें तें सोनें।३। इया उघड म्हाटिया। तें वेगळेपण धनंजया। जाण गुणइंद्रियां–। पासोनियां।४। नामरूपसंबंध। जातिक्रियाभेद। हा आकारासीच प्रवाद। वस्तूसि नाहीं।५। तें गुण नव्हे कंहीं। गुणा तया संबंध नाहीं। परी तयाच्याचि ठाईं। आभासती।६। येतुलेयासाठीं। संभ्रांताच्या पोटीं। ऐसें जाय किरीटी। जे हेंचि धरीं।७। तरी तें गा धरणें ऐसें। अभ्रातें जेवीं आकाशें। का प्रतिवदन जैसें। आरसेनी।८। नातरी सूर्यप्रतिमंडल। जैसेनि धरी सलिल। का रश्मिकरीं मृगजळ। धरिजें जेवीं।९। तैसें गा संबंधेंविण। यया सर्वांतें धरी निर्गुण। परी तें वायां जाण। मिथ्यादृष्टी।९१०। आणि यापरी निर्गुणें। गुणातें भोगणें। रंका राज्य करणें। स्वप्नीं जैसें।११। म्हणोनि गुणाचा संग। अथवा गुणभोग। हा निर्गुणीं लाग। बोलें नये।१२।

बहिरंतश्च भूतानामचरं चरमेव च।
सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयं दूरस्थं चांतिके च तत्।१५।

जें चराचरभूतां–। माजीं असे पांडुसुता। नाना वह्नीं उष्णता। अभेदे जैसी।१३। तैसेनि अविनाशभावें। जें सूक्ष्मदशें आघवें। व्यापूनि असे तें जाणावें। ज्ञेय एथ।१४। जें एक आंतबाहेरी। जें एक जवळ दूरी। जें एकवांचूनि परी। दुजी नाहीं।१५। क्षीरसागरींची गोडी। माजीं बहू थडिये थोडी। हें नाहीं तया परवडी। पूर्ण जे गा।१६। स्वेदजप्रभृती। वेगळाल्या भूतीं। जयाचिये अनुस्यूती। खोमणें नाहीं।१७। पैं श्रोतेमुख्यटिळका। घटसहस्रां अनेकां–। माजीं बिंबोनि चंद्रिका। न भेदे जेवीं।१८। नाना लवणकणाचिये राशी। क्षारता एक जैसी। का कोडी एकीं उसीं। एकचि गोडी।१९।

अविभक्तं च भूतेषु विभक्तमिव च स्थितम्।
भूतभर्तृ च तज्ज्ञेयं ग्रसिष्णु प्रभविष्णु च।१६।

तैसें अनेकीं भूतजातीं। जें आहे एकी व्याप्ती। विश्वकार्या सुमती। कारण जें गा।९२०। म्हणोनि हा भूताकार। जेथूनि तेंचि तया आधार। कल्लोळ सागर। जियापरी।२१। बाल्यादि तीन्हीं वयसीं। काया एकचि जैसी। तैसें आदिस्थितियासीं। अखंड जें।२२। सायंप्रातर्मध्याह्न। होतां जातां दिनमान। जैसें का गगन। पालटेना।२३। अगा सृष्टीवेळे प्रियोत्तमा। जया नाम म्हणती ब्रह्मा। स्थिती जें विष्णुनामा। पात्र जाहालें।२४। मग आकार हा हारपे। तेव्हां रुद्र जै म्हणिपे। तेंही गुणत्रय जेव्हां लोपे। तैं जें शून्य।२५। नभाचें शून्यत्व गिळून। गुणत्रयातें नुरऊन। तें शून्य तें महाशून्य। श्रुतिवचनसंमत।२६।

ज्योतिषामपि तज्ज्योतिस्तमसः परमुच्यते।
ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्यं हृदि सर्वस्य धिष्ठितम्।१७।

जें अग्नीचें दीपन। जें चंद्राचें जीवन। सूर्याचे नयन। देखिती जेणें।२७। जयाचे उजियेडें। तारागण उघडे। महातेज सुरवाडें। राहाटे जेणें।२८। आदीची जें आदी। वृद्धीची जें वृद्धी। बुद्धीची जें बुद्धी। जीवाचा जीव।२९। जें मनाचें मन। जें नेत्राचें नयन। कानाचे कान। वाचेची वाचा।९३०। जें प्राणाचा प्राण। जें गतीचे चरण। क्रियेचें कर्तेपण। जयाचेनि।३१। आकार जेणें आकारे। विस्तार जेणें विस्तारे। संहार जेणें संहारे। पांडुकुमरा।३२। जे मेदिनीची मेदिनी। जें पाणी पिऊनि असे पाणी। तेजा दिवेलावणी। जेणें तेजें।३३। जें वायूचा श्वासोच्छ्वास। जें गगनाचा अवकाश। हें आघवाचि भास। आभासें जेणें।३४। किंबहुना पांडवा। जें आघवेंचि असे आघवा। जेथ नाहीं रिगावा। द्वैतभावासी।३५। जें देखिलीयाची सवें। दृश्य द्रष्टा हें आघवें। एकवट कालवे। सामरस्यें।३६। मग तेंचि होय ज्ञान। ज्ञाता ज्ञेय हन। जेणें गमिजे स्थान। तेंहि तेंचि।३७। जैसें सरलिया लेख। आंख होती एक। तैसें साध्यसाधनादिक। ऐक्यासि ये।३८। अर्जुना जिये ठाईं। न सरे द्वैताची वही। हें असो जें हृदयीं। सर्वांच्या असे।३९।

इति क्षेत्रं तथा ज्ञानं ज्ञेयं चोक्तं समासतः।
मद्भक्त एतद्विज्ञाय मद्भावायोपपद्यते।१८।

एवं हें तुजपुढां। आदीं क्षेत्र सुहाडा। दाविलें फाडोवाडां। विवंचुनी।९४०। तैसेंचि क्षेत्रापाठीं। जैसेनि देखसी दिठी। तैसें ज्ञानही किरीटी। सांगितलें।४१। अज्ञानाही कौतुकें। रूप केलें निकें। जंव आयणी तुझी टेंके। पुरे म्हणे।४२। आणी आतां हें रोकडें। उपपत्तीचेनि पवाडें। निरूपिलें उघडें। ज्ञेय पैं गा।४३। हे आघवीच विवंचना। बुद्धी भरोनि अर्जुना। मत्सिद्धिभावना। माझिया येती।४४। देहादिपरिग्रहीं। संन्यास करूनियां जिहीं। जीव माझ्या ठाईं। वृत्तिक केला।४५। ते मातें किरीटी।

हेंचि जाणोनियां शेवटीं। आपणपयां साटोवांटीं। मीचि होती।४६। मीचि होती परी। हे मुख्य गा अवधारीं। सोहोपी सर्वांपरी। रचिली आम्हीं।४७। कडां पायरी कीजे। निराळीं माच बांधिजे। अथावीं सुइजे। तरी जैसी।४८। येऱ्हवीं आघवेंचि आत्मा। हें सांगोनि वीरोत्तमा। परी तुझिया मनोधर्मा। मिळेलना।४६। म्हणोनि एकचि संचलें। चतुर्धा आम्हीं केलें। जें अदळपण देखिलें। तुझिये प्रज्ञे।६५०। पैं बाळ जैं जेवविजे। तैं घांस एक विसा ठायीं कीजे। तैसें एकचि हे चतुर्व्याजें। कथिलें आम्हीं।५१। एक क्षेत्र एक ज्ञान। एक ज्ञेय एक अज्ञान। भाग केले अवधान। जाणोनि तुझें।५२। आणि ऐसेनही पार्था। जरी हा अभिप्रावो तुज हाता। न ये तरी हे व्यवस्था। एक वेळ सांगों।५३। आतां चौ ठायीं न करूं। एकही म्हणोनि न सरूं। आत्मानात्मया धरूं। सरिसाची पाड।५४। परी तुवां येतुले करावें। मागों तें आम्हां देआवें। जें कानाचें नांव ठेवावें। आपणपयातें।५५। या श्रीकृष्णाचिया बोला। पार्थ रोमांचित जाहाला। तेथ देव म्हणती भला। उचंबळेना।५६। ऐसेनि तो येतां वेग। धरूनि म्हणे श्रीरंग। प्रकृति पुरुष विभाग। परिसें सांगों।५७। जया मार्गातें जगीं। सांख्य म्हणती योगी। जयाचिये भाटिवेलागी। मी कपिल जाहालों।५८। तो आईक निर्दोख। प्रकृति पुरुष विवेक। म्हणे आदिपुरुख। अर्जुनातें।५६।

प्रकृतिं पुरुषं चैव विद्ध्यनादी उभावपि।
विकारांश्च गुणांश्चैव विद्धि प्रकृतिसंभवान्।१६।

तरी पुरुष अनादि आथी। आणि तैचिलागोनि प्रकृति। सवें सरिसी दिवोराति। जयापरी।६६०। का रूप नोहे वायां। परी रूपा लागली छाया। निकण वाढे धनंजया। कणेंसीं कोंडा।६१। तैंसी जाण जवटें। दोन्हीं इयें एकवटें। प्रकृतिपुरुषें प्रकटें। अनादिसिद्धें।६२। पैं क्षेत्र येणें नांवे। जें सांगितलें आघवें। तेंचि एथ जाणावें। प्रकृति हें गा।६३। आणि क्षेत्रज्ञ ऐसें। जयातें म्हणितलें असे। तो पुरुष हे अनारिसें। न बोलों घेईं।६४। इयें आनानें नांवें। परी निरूप्य आन नोहे। हें लक्षण न चुकावें। पुढतपुढती।६५। तरी केवळ जे सत्ता। तो पुरुष गा पांडुसुता। प्रकृती तें समस्तां। क्रियां नाम।६६। बुद्धि इंद्रियें अंतःकरण। इत्यादि विकारभरण। आणि ते तीन्ही गुण। सत्त्वादिक।६७। हा अघवाची मेळवा। प्रकृती जाहाला जाणावा। हेचि हेतु संभवा। कर्मांचिया।६८।

कार्यकारणकर्तृत्वे हेतुः प्रकृतिरुच्यते।
पुरुषः सुखदुःखानां भोक्तृत्वे हेतुरुच्यते।२०।

तेथ इच्छा आणि बुद्धि। घडवी अहंकारेंसीं आधीं। मग तिया लाविती वेधीं। कारणाच्या।६६। तेंचि कारण ठाकावया। जें सूत्र धरणें उपाया। तया नांव धनंजया। कार्य पैं गा।६७०। आणि इच्छामदाच्या थावीं। लागली मनातें उठवी। तें इंद्रियें रहाटवी। हें कर्तृत्व पैं गा।७१। म्हणोनि तीन्ही या जाणा। कार्यकर्तृत्वकारणा। प्रकृती मूळ हें राणा। सिद्धांचा म्हणे।७२। एवं तिहींचेनि समवायें। प्रकृति कर्मरूप होये। तरी जया गुणा वाढे त्राये। त्याचि सारिखी।७३। जें सत्त्वगुणें अधिष्ठिजे। तें सत्कर्म म्हणिजे। रजोगुणें निपजे। मध्यम तें।७४। जे का केवळ तमें। होती जिये कर्में। निषिद्धें अधमें। जाण तियें।७५। ऐसेनि संतासंतें। कर्म प्रकृतीस्तव होतें। तयापासोनि निर्वाळतें। सुखदुःख गा।७६। असंतीं दुःख उपजे। सत्कर्मीं सुख निपजे। तया दोहींचा बोलिजे। भोग पुरुषा।७७। सुखदुःखें जंववरी। निफजती साचोकरीं। तंव प्रकृति उद्यम करी। पुरुष भोगी।७८। प्रकृतिपुरुषांची कुळवाडी। सांगतां असंगडी। जे आंबुली जोडी। आंबुला खाय।७६। आंबुलिया आंबुलिये। संगती ना सोये। कीं आंबुली जग विये। चोज ऐका।६८०।

पुरुषः प्रकृतिस्थो हि भुंक्ते प्रकृतिजान् गुणान्।
कारणं गुणसंगोऽस्य सदसद्योनिजन्मसु।२१।

जे अनंग तो पेंघा। निकवढा नुसधा। जीर्ण अतिवृद्धा–। पासूनि वृद्ध!।८१। तया आडनांव पुरुख। येऱ्हवीं स्त्री ना नपुंसक। किंबहुना एक। निश्चयो नाहीं।८२। तो अचक्षु अश्रवण। अहस्त अचरण। रूप ना वर्ण। नाम आथी।८३। अर्जुना कांहींचि जेथ नाहीं। तो प्रकृतीचा भर्तार पाहीं। कीं भोगणें ऐसयाही। सुखदुःखांचें।८४। तो तरी अकर्ता। उदास अभोक्ता। परी इया पतिव्रता। भोगविजे।८५। जियेतें अळुमाळ। रूपागुणांचा चाळढाळ। ते भलतैसाही खेळ। लेखा आणी।८६। इयें प्रकृती तंव। गुणमयी हेंचि नांव। किंबहुना सावेव। गुण तेचि हे।८७। हें प्रतिक्षणीं नित्य नवी। रूपा गुणांचीच आघवी। जडातेंही माजवी। इयेचा माज।८८। नामें इयें प्रसिद्धें। स्नेह इया स्निग्धें। इंद्रियें प्रबुद्धें। इयेचेनी।८६। कायी मन हें नपुंसक। कीं तें हिंडवी तिन्ही लोक। ऐसें ऐसें अलौकिक। करणें इयेचें।६६०। हें भ्रमाचें महाद्वीप। हे व्याप्तीचें रूप। विकार उमप। इया केले।६१। हे कामाची मांडवी। हे मोहवनींची माधवी। इये प्रसिद्धची दैवी। माया हे नाम।६२। हे वाङ्मयाची वाढी। हे साकारपणाची जोडी। प्रपंचाची धाडी। अभंग हे।६३। कळा येथूनि जालिया। विद्या इयेच्या केलिया। इच्छा ज्ञान क्रिया। वियाली हें।६४। हे नादाची टांकसाळ। हे चमत्कराचें वेळाउळ।

किंबहुना सकळ। खेळ इयेचा।९५। जे उत्पत्ति प्रलय होत। ते इयेचे सायंप्रात। हें असो अद्भुत। मोहन हे।९६। हे अद्वयाचें दुसरें। हे निःसंगाचें सोयरें। हे निराळेसिं घरें। नांदत असे।९७। इयेतें येतुलावरी। सौभाग्यव्याप्ती थोरी। म्हणोनि तया आवरी। अनावरातें।९८। तयाच्या तंव ठायीं। निपटूनि कांहींचि नाहीं। कीं तया आघवेंही। आपणचि होय।९९। तया स्वयंभाची संभूती। तया अमूर्ताची मूर्ती। आपण होय स्थिती। ठावो तया।१०००। तया अनार्ताची आर्ती। तया पूर्णाची तृप्ती। तया अकुळाची जाती। गोत होय।१। तया अचर्चाचे चिह्न। तया अपाराचे मान। तया अमनस्काचे मन। बुद्धी ही होय।२। तया निराकाराचा आकार। तया निर्व्यापाराचा व्यापार। निरंहकाराचा अहंकार। होऊनि ठाके।३। तया अनामाचें नाम। तया अजाचें जन्म। आपण होय कर्म। क्रिया तया।४। तया निर्गुणाचे गुण। तया अचरणाचे चरण। तया अश्रवणाचे श्रवण। अचक्षूचे चक्षु।५। तया भावातीताचे भाव। तया निरवयवाचे अवयव। किंबहुना होय सर्व। पुरुषाचें हे।६। ऐसेंनि इया प्रकृती। आपुलिया सर्वव्याप्ती। तया अविकारातें विकृती–। माजीं कीजे।७। तेथ पुरुषत्व जें असे। तें ये प्रकृतिदशें। चंद्रमा अंवसे। हरपला जेवीं।८। विदळ बहु चोखा। मीनलिया वाला एका। कस होय पांचका। जयापरी।९। का साधूतें गोंधळी। संचरोनि सुये मैळीं। नाना सुदिनाच्या आभाळीं। दुर्दिन कीजे।१०१०। जेवीं पय पशूच्या पोटीं। का वह्नि जैसा काष्ठीं। गुंडूनी घेतला पटीं। रत्नदीप।११। राजा पराधीन जाहला। कीं सिंह रोगें रुंधला। तैसा पुरुष प्रकृती आला। स्वतेजा मुके।१२। जागता नर सहसा। निद्रा पाडूनि जैसा। स्वप्नींचिया सोसा। वश्य कीजे।१३। तैसें प्रकृतीजालेपणें। पुरुषा गुण भोगणें। उदास अंतुरीगुणें। आतुडे जेवीं।१४। तैसें अजा नित्या होये। आंगीं जन्ममृत्यूंचे घाये। वाजती जंव लाहे। गुणसंगातें।१५। परी तें पांडुसुता। तातलें लोह पिटितां। जेवीं वह्नीसीचि घाता। बोलती जया।१६। का आंदोळलिया उदक। प्रतिमा होय अनेक। तें नानात्व म्हणती लोक। चंद्रीं जेवीं।१७। दर्पणाचिया जवळिका। दुजेपण जैसें ये मुखा। कां कुंकुमें स्फटिका। लोहितत्व ये।१८। तैसा गुणसंगमें। अजन्मा हा जन्मे। पावत ऐसा गमे। येऱ्हवीं नाहीं।१९। अधमोत्तम योनी। यासि ऐसिया मानीं। जैसा संन्यासी होय स्वप्नीं। अंत्यजादि जाती।१०२०। म्हणोनि केवळा पुरुखा। नाहीं होणें भोगणें देखा। एथ गुणसंगचि अशेखा–। लागीं मूळ।२१।

उपद्रष्टाऽनुमंता च भर्ता भोक्ता महेश्वरः।
परमात्मेति चाप्युक्तो देहेऽस्मिन्पुरुषः परः।२२।

हा प्रकृतीमाजीं उभा। परी जुई जैसा वोथंबा। इया प्रकृती पृथ्वीनभा। तेतुला पाड।२२। प्रकृतिसरितेच्या तटीं। मेरु होय हा किरीटी। माजीं बिंबे परी लोटीं। लोटों नेणें।२३। प्रकृति होय जाये। हा तो असतचि आहे। म्हणोनि आब्रह्माचें होये। शासन हा।२४। प्रकृति येणें जिये। याचिया सत्ता जग विये। इयालागीं इये। वरयितु हा।२५। अनंतें काळें किरीटी। जिया मिळती इया सृष्टी। तिया रिगती ययाच्या पोटीं। कल्पांतसमयीं।२६। हा महद्ब्रह्मगोसावी। ब्रह्मगोलकलाघवी। अपारपणें मवी। प्रपंचातें।२७। पैं या देहामाझारी। परमात्मा ऐसी जे परी। बोलिजे ते अवधारीं। ययातेंची।२८। अगा प्रकृतिपरौता। एक आथी पांडुसुता। ऐसा प्रवाद जो तत्त्वतां। पुरुष हा पैं।२९।

य एवं वेत्ति पुरुषं प्रकृतिं च गुणैःसह।
सर्वथा वर्तमानोऽपि न स भूयोऽभिजायते।२३।

जो निखळपणें येणें। पुरुषा यया जाणें। आणि गुणांचे करणें। प्रकृतीचें तें।१०३०। हे रूप हे छाया। पैल जळ हे माया। ऐसा निवाड धनंजया। जेवीं कीजे।३१। तेणें पाडे अर्जुना। प्रकृतिपुरुषविवंचना। जयाचिया मना। गोचर जाहाली।३२। तो शरीराचेनि मेळें। करू का कर्में सकळें। परी आकाश धुई न मैळे। तैसा असे।३३। आथिलेनि देहें। जो न घेपे देहमोहें। देह गेलिया नोहे। पुनरपि तो।३४। ऐसा तया एक। प्रकृतिपुरुषविवेक। उपकार अलौकिक। करी पैं गा।३५। परी हाचि अंतरीं। विवेक भानूचियापरी। उदैजे ते अवधारीं। उपाय बहुत।३६।

ध्यानेनात्मनि पश्यंति केचिदात्मानमात्मना।
अन्ये सांख्येन योगेन कर्मयोगेन चापरे।२४।

कोणी एक सुभटा। विचाराचा आगिटां। आत्मानात्मकिटा। पुटें देउनी।३७। छत्तीसही वानीभेद। तोडोनि निर्विवाद। निवडिती शुद्ध। आपणपें।३८। तया आपणपयाच्या पोटीं। आत्मध्यानाचिया दिठी। देखती गा किरीटी। आपणपेंची।३९। आणि पैं देवबगें। चित्त देती सांख्ययोगें। एक ते अंगलगें। कर्माचेनी।१०४०। यया चतुर्विध प्रकारें। जे मज मिनले पुरे। तयांसि कांहीं नुरे। भोक्तव्य गा।४१।

अन्ये त्वेवमजानंतः श्रुत्वानेभ्य उपासते।
तेऽपि चातितरंत्येव मृत्युं श्रुतिपरायणाः।२५।

येणे येणें प्रकारें। निस्तरती साचोकारें। हें भव काउरें। आघवेंची।४२। परी ते करिती ऐसें। अभिमान दवडूनि देशें। एकाचिया विश्वासें। टेंकती बोला।४३। जे हिताहित देखती। हा निकणवा घेपती। पुसोनि शीण हरिती। देती सुख।४४। तयाचेनि मुखें जें निघे। तेतुलें आदरें चांगें। ऐकोनिया आंगें। मनें होती।४५। तया ऐकणेयाचेनि नांवें। ठेवती गा आघवें। तया अक्षरासीं जीवें। लोण करिती।४६। तेहीं अंतीं कपिध्वजा। इया मरणार्णवसमाजा–। पासूनि निघती वोजा। गोमटेया।४७। ऐसेसे हे उपाये। बहुवस ऐथें पाहें। जाणावया होये। एकी वस्तु।४८। आतां पुरे हें बहुत। पैं सर्वार्थाचे मथित। सिद्धांतनवनीत। देऊं तुज।४९। येतुलेनि पांडुसुता। अनुभव लाहाणा आयिता। येर तंव तुज होतां। सायास नाहीं।१०५०। म्हणोनि ते बुद्धि रचूं। मतवाद खांचूं। सोलींव निर्वचूं। फलितार्थचि।५१।

यावत्संजायते किंचित्सत्त्वं स्थावरजंगमम्।
क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंयोगात्तद्विद्धि भरतर्षभ।२६।

तरी क्षेत्रज्ञ येणें बोलें। तुज आपणपें जें दाविलें। आणि क्षेत्रही सांगितलें। आघवेंची।५२। तया येरयेरांच्या मेळीं। होइजे भूतीं सकळीं। अनिलसंगें सलिलीं। कल्लोळ जैसे।५३। का तेजा आणि उखरा। भेटी जालिया वीरा। मृगजळाचिया पूरा। रूप होय।५४। नाना धाराधरधारीं। झळंबलिया वसुंधरी। उठिजे जेवीं अंकुरीं। नानाविधीं।५५। तैसें चराचर आघवें। जें कांहीं जीव येणें नांवें। तें तों उभययोग संभवे। ऐसे जाण।५६। इयालागीं अर्जुना। क्षेत्रज्ञा प्रधाना–। पासूनि न होती भिन्ना। भूतव्यक्ति।५७।

समं सर्वेषु भूतेषु तिष्ठन्तं परमेश्वरम्।
विनश्यत्स्वविनश्यंतं यः पश्यति स पश्यति।२७।

पैं पटत्व तंतू नव्हे। तरी तंतूचि तें आहे। ऐसें खोलीं डोळां पाहे। ऐक्य हें गा।५८। भूतें आघवींची होती। एकाची एक आहाती। परी पैं भूतप्रतीती। वेगळाली असे।५९। यांचीं नामेंही आनानें। अनारिसी वर्तनें। वेषही सिनाने। आघवेयांचे।१०६०। ऐसे देखोनि किरीटी। भेद सुसी हन पोटीं। तरी जन्माचिया कोटी। न लाहसी निघों।६१। पैं नानाप्रयोजनशीळें। दीर्घें वक्रें वर्तुळें। होती एकीचींच फळें। तुंबिणीयेचीं।६२। होतू का उजू वांकडे। परी बोरीचे हें न मोडे। तैसीं भूतें अवघडें। परी वस्तु उजू।६३। अंगारकणीं बहुवसीं। उष्णता समान जैसी। तैसा नाना जीवराशीं। परेश असे।६४। गगनभरी धारा। परी पाणी एकचि वीरा। तैसा या भूताकारां। सर्वांगीं जो।६५। हे भूतग्राम विषम। तरी वस्तु ते एथ सम। घटमठीं व्योम। जियापरी।६६। हा नाशतां भूताभास। एथ आत्मा तो अविनाश। जैसा केयूरादिकीं कस। सुवर्णाचा।६७। एवं जीवधर्महीन। जो जीवेंसीं अभिन्न। देखे तो सुनयन। ज्ञानियांमाजीं।६८। ज्ञानाचा डोळां डोळसां–। माजीं डोळस तो वीरेशा। हे स्तुति नोहे बहुवसा। भाग्याचा तो।६९।

समं पश्यन् हि सर्वत्र समवस्थितमीश्वरम्।
न हिनस्त्यात्मनामानं ततो याति परां गतिम्।२८।

हे गुणेंद्रिय धोकटी। देह धातूंची त्रिकुटी। पांचमेळावा वोखटी। दारूण हे।१०७०। हे उघड पांचवेउली। पंचधा आंगीं लागली। जीवपंचानना सांपडली। हरिणकुटी हे।७१। ऐसा असोनि इये शरीरीं। कोण नित्यबुद्धीची सुरी। अनित्यभावाच्या उदरीं। दाटीचिना।७२। परी इये देहीं असतां। जो नयेचि आपणया घाता। आणि शेखीं पांडुसुता। तेथेंचि मिळे।७३। जेथ योगज्ञानाचिया प्रौढी। वोलांडूनियां जन्मकोडी। न निगों इया भाषा बुडी। देती योगी।७४। जें आकाराचें पैल तीर। जे नादाची पैल मेर। तुर्येचे माजघर। परब्रह्म जें।७५। मोक्षासगट गती। जेथें येती विश्रांती। गंगादि अपांपती। सरिता जेवीं।७६। ते सुख येणेंचि देहे। पादपाखाळणिया लाहे। जो भूतवैषम्यें नोहे। विषमबुद्धी।७७। दीपांचिया कोडी जैसें। एकचि तेज सरिसें। तैसा जो असतचि असे। सर्वत्र ईश।७८। ऐसेनि समत्वें पांडुसुता। जिये जो देखत साता। तो मरणा आणि जीविता। नागवे फुडा।७९। म्हणोनि जो दैवागळा। वानीत असों वेळोवेळां। जे साम्यसेजे डोळा। लागला तया।१०८०।

प्रकृत्यैव च कर्माणि क्रियमाणानि सर्वशः।
यः पश्यति तथात्मानमकर्तारं स पश्यति।२९।

आणि मनोबुद्धिप्रमुखें। कर्मेंद्रियें अशेखें। करी प्रकृतीचि हें देखे। साचें जो गा।८१। घरींचीं राहटती घरीं। घर कांहीं न करी। अभ्र धांवे अंबरीं। अंबर तें उगें।८२। तैसी प्रकृति आत्मप्रभा। खेळे गुणीं विविधारंभा। येथ आत्मा तो वोथंबा। नेणे कोण।८३। ऐसेनि येणें निवाडें। जयाच्या जीवीं उजिवडे। अकर्तयातें फुडें। देखिलें तेणें।८४।

यदा भूतपृथग्भावमेकस्थमनुपश्यति।
तत एव च विस्तारं ब्रह्म संपद्यते तदा।३०।

ये-हवीं तैचि अर्जुना। होइजे ब्रह्मसंपन्ना। जैं या भूताकृती भिन्ना। दिसती एकीं।८५। लहरी जैसिया जळीं। परमाणुकणिका स्थळीं। रश्मीकर मंडळीं। सूर्याच्या जेवीं।८६। नातरी देहीं अवेव। मनीं आघवेचि भाव। विस्फुंलिग सर्व। वह्नीं एकीं।८७। तैसे भूताकार एकाचे। हें दिठी रिगे जैं साचें। तैंचि ब्रह्मसंपत्तीचें। तारूं लागे।८८। मग जयातयाकडे। ब्रह्मचि दिठी उघडे। किंबहुना जोडे। अपार सुख।८९। येतुलेनि तुज पार्था। प्रकृतिपुरुषव्यवस्था। ठाये ठावो प्रतीतिपथा–। माजीं जहाली।१०९०। अमृत जैसें ये चुळां। का निदान देखिजे डोळां। तेतुला जिव्हाळा। मानावा हा।९१। जी जाहालिये प्रतीती। घर बांधणें जें चित्तीं। तें आतां ना सुभद्रापती। इयावरी।९२। तरी एक दोनी ते बोल। बोलिजती सखोल। देईं मनातें वोल। मग ते घेईं।९३। ऐसें देवें म्हणितलें। मग बोलों आदरिलें। तेथें अवधानाचेंचि केलें। सर्वांग येरें।९४।

अनादित्वान्निर्गुणत्वात्परमात्मायमव्ययः।
शरीरस्थोऽपि कौंतेय न करोति न लिप्यते।३१।

तरी परमात्मा म्हणिपे। तो ऐसा जाण स्वरूपें। जळीं जळें न लिंपे। सूर्य जैसा।९५। कां जे जळा आदी पाठीं। तो असतचि असे किरीटी। माजीं बिंबे तें दृष्टी। आणिकांचिये।९६। तैसा आत्मा देहीं। आथि म्हणिपे हें कांहीं। साचें तरी नाहीं। तो जेथींचा तेथें।९७। आरिसां मुख जैसें। बिंबलिया नांव असे। देहीं वसणें तैसें। आत्मतत्त्वा।९८। तया देहा म्हणती भेटी। हे सपायी निर्जीव गोठी। वारिया वाळुवे गांठी। कें ही आहे ?।९९। आगी आणि कापुसा। दोरा सुवावा कैसा। केउता सांदा आकाशा। पृथ्वीयेसी।११००। एक निघे पूर्वेकडे। एक तें पश्चिमेकडे। तिये भेटीचेनि पाडें। संबंध हा।१। उजियेडा आणि आंधारेया। जो पाड मृता उभया। तोचि गा आत्मया। देहा जाण।२। रात्रीं आणि दिवसा। कनका आणि कापुसा। अपाड का जैसा। तैसाचि यासी।३। देज तंव पांचांचें जालें। हें कर्माचे गुणीं गुंथलें। भंवतसे चाकीं सूदलें। जन्ममृत्यूंच्या।४। हें काळानळाच्या तोंडीं। घातली लोणियाची उंडी। माशी पांख पाखडी। तंव हें सरे।५। हें विपायें आगींत पडे। तरी भस्म होऊनि उडे। जाहालें श्वाना वरपडें। तरी ते विष्ठा।६। या चुके दोहीं काजां। तरी होय कृमींचा पुंजा। हा परिणाम कपिध्वजा। कश्मल गा।७। या देहाची हे दशा। आणि आत्मा तो ऐसा। पैं शुद्ध नित्य अपैसा। अनादिपणें।८। सकळ ना निष्कळ। अक्रिय ना क्रियाशीळ। कृश ना स्थूळ। निर्गुणपणें।९। साभास ना निराभास। प्रकाश ना अप्रकाश। अल्प ना बहुवस। अरूपपणें।१११०। रिता ना भरित। रहित ना सहित। मूर्त ना अमूर्त। शून्यपणें।११। आनंद ना निरानंद। एक ना विविध। मुक्त ना बद्ध। आत्मपणें।१२। येतुला ना तेतुला। आइता ना रचिला। बोलता ना उगला। अलक्षपणें।१३। सृष्टीचा होणा न रचे। सर्वसंहारें न वेंचे। आथी नाथी या दोहींचें। पंचत्व हा।१४। मवे ना चर्चे। वाढे ना खाचे। विटे ना वेंचे। अव्ययपणें।१५। एवंरूप पैं आत्मा। देही जें म्हणती प्रियोत्तमा। तें मठाकारें व्योमा। नाम जैसें।१६। तैसे तयाचिये अनुस्यूती। होती जाती देहाकृती। तो घेना सांडी सुमती। जैसा तैसा।१७। अहोरात्रें जैसी। येती जाती आकाशीं। आत्मसत्तें तैसी। देहें जाण।१८। म्हणोनि इये शरीरीं। कांहीं करवी ना करी। आयताही व्यापारीं। सज्ज न होय।१९। यालागीं स्वरूपें। उणा पुरा न घेपे। हें असो तो न लिंपे। देहीं देहा।११२०।

यथा सर्वगतं सौक्ष्म्यादाकाशं नोपलिप्यते।
सर्वत्रावस्थितो देहे तथात्मा नोपलिप्यते।३२।

अगा आकाश कें नाहीं। हें न रिघेचि कवणे ठायीं ?। परी कायिसेनि कंहीं। गादिजेना जैसें।२१। तैसा सर्वत्र सर्व देहीं। आत्मा असतचि असे पाहीं। परी संगदोषें एकेंही। लिप्त नोहे।२२। पुढतपुढतीं एथें। हेंचि लक्षण निरुतें। जे जाणावें क्षेत्रज्ञातें। क्षेत्रविहीना।२३।

यथा प्रकाशयत्येकः कृत्स्नं लोकमिमं रविः।
क्षेत्रं क्षेत्री तथा कृत्स्नं प्रकाशयति भारत।३३।

संसर्गें चेष्टिजे लोहें। परी लोह भ्रामक नोहे। क्षेत्रक्षेत्रज्ञा आहे। तेतुला पाड ।२४। दीपकाची अर्ची। राहाटी वाहे घरींची। परी वेगळीक कोडीची। दीपा आणि घरा ।२५। पैं काष्ठाच्या पोटीं। वह्नि असे परी किरीटी। काष्ठ नोहे या दृष्टी। पाहिजे हा ।२६। अपाड नभा आभाळा। रवि आणि मृगजळा। तैसाचि हाही डोळां। देखावां पैं ।२७। हें अघवेंचि असो एक। गगनौनि जैसा अर्क। प्रकटवी लोक। नावें नावें ।२८। एथ क्षेत्रज्ञ तो ऐसा। प्रकाशक क्षेत्राभासा। यावरुतें हें न पुसा। शंका नेघा ।२९।

क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोरेवमंतरं ज्ञानचक्षुषा।
भूतप्रकृतिमोक्षं च ये विदुर्यांति ते परम् ।३४।

शब्दतत्त्वसारज्ञा। पैं देखणी तेचि प्रज्ञा। जे क्षेत्रक्षेत्रज्ञा। अपाड देखें ।११३०। इया दोहींचें अंतर। देखावया चतुर। ज्ञानियांचें द्वार। आराधिती ।३१। याचिलागीं सुमती। जोडिती शांतिसंपत्ती। शास्त्रांची दुभतीं। पोषिती घरीं ।३२। योगाचिया आकाशा। वळघिजे येवढा धिंवसा। याचियाचि आशा। पुरुषासि गा ।३३। शरीरादि समस्त। मानिताती तृणवत। जीवें संतांचे होत। वाहणधर ।३४। ऐसैसिया परी। ज्ञानाचिया भरोवरी। करूनियां अंतरीं। निरुते होती ।३५। मग क्षेत्रक्षेत्रज्ञांचे। जें अंतर देखती साचे। ज्ञानें उन्मेख तयांचें। वोवाळूं आम्ही ।३६। आणि महाभूतादिकीं। प्रभेदली अनेकीं। पसरलीसे लटिकी। प्रकृति जे हे ।३७। जें शुकनळिकान्यायें। न लगती लागली आहे। जें जैसें तैसें होये। ठाउवें जयां ।३८। जैसी माळा ते माळा। ऐसीचि देखिजे डोळां। सर्पबुद्धि टवाळा। उखी होउनी ।३९। का शुक्ति ते शुक्ति। हे साच होय प्रतीती। रुपयाची भ्रांती। जाऊनियां ।११४०। तैसी वेगळी वेगळेपणें। प्रकृति जे अंतःकरणें। देखती ते मी म्हणें। ब्रह्म होती ।४१। जें आकाशाहूनि वाड। अव्यक्ताची पैल कड। जें भेटलिया अपाडापाड। पडों नेदी ।४२। आकार जेथ सरें। जीवित्व जेथें विरे। द्वैत जेथ नुरे। अद्वय जें ।४३। तें परमतत्त्व पार्था। होती ते सर्वथा। जे आत्मानात्मव्यवस्था। राजहंस ।४४। ऐसा हा जी आघवा। श्रीकृष्णें तया पांडवा। उगाणा दिधला जीवा। जीवाचिया ।४५। येर कलशींचें येरीं। रिचविजे जयापरी। आपणपें तया श्रीहरी। दिधलें तैसे ।४६। आणि कोणा देता कोण। तो नर तैसा नारायण। वरी अर्जुनातें श्रीकृष्ण। हा मी म्हणे ।४७। परी असों तें नाथिलें। न पुसतां कां मी बोले। किंबहुना दिधलें। सर्वस्व देवें ।४८। कीं तो पार्थ जी मनीं। अझुनी तृप्ती न मनी। अधिकाधिक उतान्ही। वाढवीत असे ।४९। स्नेहाचिया भरोवरी। आंबुथिला दीप घे थोरी। चाड अर्जुना अंतरीं। परिसतां तैसी ।११५०। तेथ सुगरणी आणि उदारे। रसज्ञ आणि जेवणारे। मिळती मग अवतरें। हात जैसा ।५१। तैसें जी होतसे देवा। तया अवधानाचिया लवलवा। पाहतां व्याख्यान चढलें थावा। चौगुणें वरी ।५२। सुवायें मेघ सांवरे। जैसा चंद्रें सिंधू भरे। तैसा मातला रस आदरें। श्रोतयांचेनी ।५३। आतां आनंदमय आघवें। विश्व कीजेल देवें। तें रायें परिसावें। संजयो म्हणे ।५४। एवं जे महाभारतीं। श्रीव्यासें अप्रांतमती। भीष्मपर्वसंगतीं। म्हणतली कथा ।५५। तो श्रीकृष्णार्जुनसंवाद। नागरीं बोलीं विशद। सांगोनि दाऊं प्रबंध। वोवियेचा ।५६। नुसधीचि शांतिकथा। आणिजेल कीर वाक्पथा। जे शृंगाराच्या माथां। पाय ठेवी ।५७। दाऊं वेल्हाळ देशी नवी। जे साहित्यातें वोजावी। अमृतातें चुकी ठेवी। गोडसपणें ।५८। बोल वोल्हवितेनि गुणें। चंद्रासि घे उमाणें। रसरंगा भुलवणें। नाद लोपी ।५९। खेचरांचियाही मना। आणी सात्त्विकाचा पान्हा। श्रवणासवें सुमना। समाधी जोडे ।११६०। तैसा वाग्विलास विस्तारू। गीतार्थेसीं विश्व भरूं। आनंदाचा आवारूं। मांडूं जगा ।६१। फिटो विवेकाची वाणी। हो काना मना जिणी। देखो आवडे तो खाणी। ब्रह्मविद्येची ।६२। दिसो परतत्त्व डोळां। पाहो सुखाचा सोहळा। रिघो महाबोधसुकाळा। माजीं विश्व ।६३। हें निफजेल आतां आघवें। ऐसें बोलिजेल बरवें। जे अधिष्ठिला असे परमदेवें। श्रीनिवृत्तीं मी ।६४। म्हणोनि अक्षरीं सुभेदी। उपमाश्लोक कोंदाकोंदी। झाडा देईन प्रतिपदीं। ग्रंथार्थासी ।६५। हा ठावोवरी मातें। पुरतया सारस्वतें। केलें असे श्रीमंतें। श्रीगुरुराये ।६६। तेणें जी कृपासावायें। मी बोलें तेतुलें सामाये। आणि तुमचिये सभें लाहें। गीता म्हणों ।६७। वरी तुम्हां संतांचे पाये। आजि मी लाधलो आहे। म्हणोनि जी नोहे। अटक कांहीं ।६८। प्रभु काश्मीरीं मुकें। नुपजेही कौतुकें। नाहीं उणी सामुद्रिकें। लक्ष्मीयेसी ।६९। तैसी तुम्हां संतांपासीं। अज्ञानाची गोठी कायसी। यालागीं नवरसीं। वरुषेन मी ।११७०। किंबहुना आतां देवा। अवसरू मज देयावा। ज्ञानदेव म्हणे बरवा। सांगेन ग्रंथ ।११७१।

इति श्रीज्ञानदेवविरचितायां भावार्थदीपिकायां त्रयोदशोऽध्यायः ।१३।

श्लोक ३४, ओव्या ११७१

ज्ञानेश्वरीः–अध्याय चौदावाः–गुणत्रयविभागयोग

जयजय आचार्या। समस्तसुरवर्या। प्रज्ञाप्रभातसूर्या। सुखोदया।१। जयजय सर्वविसांवया। सोहंभावसुहावया। नाना लोक हेलावया। समुद्रा तूं।२। आइकें गा आर्तबंधू। निरंतरकारुण्यसिंधू। विशदविद्यावधू। वल्लभा जी।३। तूं जयांप्रति लपसी। तयां विश्व हें दाविसी। प्रकट तैं करिसी। आघवेंचि तूं।४। की पुढिलांची दृष्टी चोरिजे। हा दृष्टी बंध निफजे। परी नवल लाघव तुझें। जें आपणपें चोरे।५। जी तूंचि तूं सर्वा यया। मा कोणा बोध कोणा माया। ऐसिया आपेंआप लाघविया। नमो तुज।६। जाणों जगीं आप बोलें। तें तुझिया वोला सुरस जालें। तुझेनि क्षमत्व आलें। पृथ्वीयेसीं।७। रविचंद्रादि शुक्ती। उदय करिती त्रिजगतीं। ते तुझिया दीप्ती। तेज तेजां।८। जें चळवळिजे अनिळें। तें दैविकेनि जी निजबळें। नभ तुजमाजी खेळे। लपीथपी।९। किंबहुना माया अशेष। ज्ञान जी तुझेनि डोळस। असो वानणें सायास। श्रुतीसि हें।१०। वेद वानूनि तंवचि चांग। जंव न दिसे तुझें आंग। मग आम्हां तया मूग। एके पांती।११। जी एकार्णवाचे ठाईं। पाहतां प्रळयमेघाचा पाड नाहीं। मा महानदी काई। निवडूं येती।१२। का उदयलिया भास्वत। चंद्र जैसा खद्योत। आम्हां श्रुती तुजआंत। तो पाड असे।१३। आणि दुजया थांव मोडे। जेथ परेसी वैखरी बुडे। तो तूं मा कोणे तोंडें। वानावासी।१४। यालागीं आतां। स्तुती सांडूनि निवांता। चरणीं ठेविजे माथा। हेंचि भलें।१५।तरी तूं जैसा आहासि तैसिया। नमो जी गुरुराया। मज ग्रंथोद्यम फळावया। वेव्हारा होईं।१६। आतां कृपाभांडवल सोडीं। भरीं माझे मतीची पोतडी। करीं ज्ञानपद्य जोडी। थोरा मातें।१७। मग मी संसरेन तेणें। संतांतें कर्णभूषणें। लेववीन सुलक्षणें। विवेकाची।१८। जी गीतार्थनिधान। काढूं माझें मन। सुयीं स्नेहांजन। आपलें तूं।१९। हे वाक्सृष्टी एके वेळे। देखोतू माझे बुद्धीचे डोळे। तैसा उदैजो जी निर्मळें। कारुण्यबिंबें।२०। माझी प्रज्ञावेली वेल्हाळ। काव्यें होय सफळ। तो वसंत होयीं स्नेहाळ। शिरोमणी।२१। प्रमेय महापुरें। हे मतिगंगा ये थोरें। तैसा वर्ष उदारे। दिठीवेनी।२२। अगा विश्वैकधामा। तुझा प्रसादचंद्रमा। करूं मज पूर्णिमा। स्फूर्तीची जी।२३। जी अवलोकिलिया मातें। उन्मेषसागरीं भरितें। वोसंडेल स्फूर्तीतें। रसवृत्तीचे।२४। तंव संतोषोनि श्रीगुरुराजें। म्हणितलें विनतिव्याजें। मांडिलें देखोनि दुजें। स्तवनमिषें।२५। हे असो आतां वांजटा। तो ज्ञापनार्थ करूनि गोमटा। ग्रंथार्थ दावीं उत्कंठा। भंगों नेदीं।२६। हो का जी स्वामी। हेंचि पाहत होतो मी। जे श्रीमुखें म्हणा तुम्ही। ग्रंथ सांग।२७। परी हें म्यां केलें। कीं हे माझेनि जालें। ऐसें नाहीं ठेविलें। वासनेमाजीं।२८। सहजें दूर्वेचा डिरू। आंगेंचि तंव अमरू। वरी आला पूरू। पीयूषाचा।२९। तरी आतां येणें प्रसादें। विन्यासें विदग्धें। मूळशास्त्रपदें। वाखाणीन।३०। परी जीवा आंतुलीकडे। जैसी संदेहाची डोणी बुडे। ना श्रवणी तरी चाडे। वाढी दिसे।३१। तैसी बोली साचारी। अवतरो माझी माधुरी। माले मागूनि घरीं। गुरुकृपेच्या।३२। तरी मागां त्रयोदशी। अध्यायीं गोठी ऐसी। श्रीकृष्ण अर्जुनेंसीं। चावळले।३३। जे क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोगें। होइजे येणें जगें। आत्मा गुणसंगें। संसारिया।३४। आणि हाचि प्रकृतिगतू। सुखदुःख भोगीं हेतू। अथवा गुणातीतू। केवळ हा।३५। तरी कैसा पां असंगा संग। कोण तो क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोग। सुखदुःखादि भोग। केवीं तया।३६। गुण ते कैसे किती। बांधती कवणे रीतीं। तरी गुणातीतीं। चिह्नें काई।३७। एवं इया आघवेया। अर्था रूप करावया। विषो येथ चौदाविया। अध्यायासी।३८। तरी तो आतां ऐसा। प्रस्तुत परियेसा। अभिप्राय विश्वेशा। वैकुंठीचा।३९। तो म्हणे गा अर्जुना। अवधानाची सर्व सेना। मेळऊनि इया ज्ञाना। झोंबावें हो।४०। आम्ही मागां तुज बहुतीं। दाविलें हे उपपत्तीं। तरी आझुनी प्रतीती। कुशीं न रिघे।४१।

श्रीभगवानुवाचः– परं भूयः प्रवक्ष्यामि ज्ञानानां ज्ञानमुत्तमम्।
यज्ज्ञात्वा मुनयः सर्वे परां सिद्धिमितो गताः।१।

म्हणौनि गा पुढतीं। सांगिजेल तुजप्रती। पर म्हण म्हणोन श्रुती। डाहारिलें जें।४२। येऱ्हवीं ज्ञान हे आपुलें। परी पर ऐसेनि जालें। जे आवडोनि घेतलें। भवस्वर्गादिक।४३। अगा याचिकारणें। हें उत्तम सर्वांपरी मी म्हणे। जे वह्नि हें तृणें। येरें ज्ञानें।४४। जियें भवस्वर्गातें जाणती। यागचि चांग म्हणती। पारखी फुडी आथी। भेदीं जयां।४५। तियें आघवींचि ज्ञानें। केली येणें स्वप्नें। जैशा वातोर्मी गगनें। गिळिजती अंतीं।४६। का उदितें रश्मिराजे। लोपिलीं चंद्रादि तेजें। नाना प्रळयांबुमाजे। नदी नद।४७। तैसें येणें पाहलेया। ज्ञानजात जाय लया। म्हणोनियां धनंजया। उत्तम हें।४८। अनादि जे मुक्तता। आपली असे पांडुसुता। तो मोक्ष हातां येता। होय जेणें।४९। जयाचिया प्रतीती। विचारवीरीं समस्ती। नेदिजेचि संसृती। माथा उघऊं।५०। मनें मन घालूनियां मागें। विश्रांति जालिया आंगें। ते देहीं देहाजोगे। होतीचि ना।५१। मग तें देहाचें बेळें। वोलांडुनि एकेचि वेळे। संवतुकी कांटाळें। माझे जाले।५२।

इदं ज्ञानमुपाश्रित्य मम साधर्म्यमागताः।
सर्गेऽपि नोपजायंते प्रलये न व्यथंति च।२।

जे माझिया नित्यता। तेणें नित्य ते पांडुसुता। परिपूर्ण पूर्णता। माझियाची ।५३। मी जैसा अनंतानंद। जैसाचि सत्यसंध। तैसेचि ते भेद। उरेचिना ।५४। जें मी जेव्हढें जैसें। तें तेचि जाले तैसें। घटभंगीं घटाकाशें। आकाश जेवीं ।५५। नातरी दीप मूळकीं। दीपशिखा अनेकी। मिनलिया अवलोकीं। होय जैसें ।५६। अर्जुना तया परी। सरली द्वैताची वारी। नांदे नामार्थ एकाहारी। मीतूंविणें ।५७। येणेंचि पैं कारणें। जैं पहिलें सृष्टीचें जुंपणें। तैहीं तयां होणें। पडेचिना ।५८। सृष्टीचिये सर्वादी। जयां देहाची नाहीं बांधी। ते कैचे प्रळयावधीं। निमतील पां ।५९। म्हणौनि जन्मक्षयां–। अतीत धनंजया। मी जाले ज्ञाना इया। अनुसरोनी ।६०। ऐसी ज्ञानाची वाढी। वानिली देवें आवडी। तेवींचि पार्था ही गोडी। लावावया ।६१। तंव तया जालें आन। सर्वांगी निघाले कान। सपाई अवधान। आतला पां ।६२। आतां देवाचिया ऐसे। जाकळीजत असें वोरसें। म्हणौनि निरूपण आकाशें। वेंटाळेना ।६३। मग म्हणे गा प्रज्ञाकांता। उजवली आजि वक्तृत्वता। जे बोला येवढा श्रोता। जोडलासी ।६४। तरी एक मी अनेकीं। गोविजे देहपाशकीं। त्रिगुणीं लुब्धकी। कवणेपरी ।६५। कैसा क्षेत्रयोगें। वियें इयें जगें। तें परिस सांगें। कवणेपरीं ।६६। पैं क्षेत्र येणें व्याजें। यालागीं हें बोलिजे। जें मत्संगबीजें। भूतीं पिके ।६७।

मम योनिर्महद्ब्रह्म तस्मिन्गर्भं दधाम्यहम्।
संभवः सर्वभूतानां ततो भवति भारत ।३।

येऱ्हवीं तरी महद्ब्रह्म। यालागी हें ऐसें नाम। जे महदादिविश्राम–। शाळिका हें ।६८। विकारां बहुवस थोरी। अर्जुना हेंचि करी। म्हणौनि अवधारी। महद्ब्रह्म ।६९। अव्यक्तवादमतीं। अव्यक्त ऐसी वदंती। सांख्याचिया प्रतीतीं। प्रकृती हेची ।७०। वेदांती इयेतें माया। ऐसें म्हणिजे प्राज्ञराया। असो किती बोलों वायां। अज्ञान हें ।७१। आपला आपणपयां। विसर जो धनंजया। तेंचि रूप इया। अज्ञानासी ।७२। आणिकही एक असे। जें विचारावेळे न दिसे। वातीं पाहतां जैसे। आंधारें का ।७३। हालविलिया जायें। निश्चळी तरी होये। दुधीं जैसी साय। दुधाची ते ।७४। पैं जागर ना स्वप्न। ना स्वरूप अवस्थान। ते सुषुप्ति का घन। जैसी होय ।७५। का न वियतां वायूतें। वांझें आकाश रितें। तया ऐसें निरुतें। अज्ञान गा ।७६। पैल खांब का पुरुख। ऐसा निश्चय नाहीं एक। परी काय नेणों आलोक। दिसत असे ।७७। तेवीं वस्तु जैसी असे। तैसी कीर न दिसे। परी कांहीं अनारिसें। देखिजेना ।७८। ना राती ना तेज। ते संधि जेवीं सांज। तेवीं विरुद्ध ना निज। ज्ञान आथी ।७९। ऐसी कोण्हीएकी दशा। तिये वाद अज्ञान ऐसा। तया गुंडलिया प्रकाशा। क्षेत्रज्ञ नाम ।८०। अज्ञान थोरिये आणिजे। आपणपें तरी नेणिजे। तें रूप जाणिजे। क्षेत्रज्ञाचें ।८१। हाचि उभययोग। बुझें बापा चांग। सत्तेचा नैसर्ग। स्वभाव हा ।८२। आतां अज्ञानासारिखें। वस्तु आपणपांचि देखे। परी रूपें अनेके। नेणों कोणें ।८३। जैसा रंक भ्रमला। म्हणे 'जा रे मी रावो आला'। का मूर्छित गेला। स्वर्गलोका ।८४। तेवीं लचकलिया दिठी। मग देखणें जें जें उठी। तया नाम सृष्टी। मीचि वियें पैं गा ।८५। जैसें का स्वप्नमोहा। तो एकाकी देखे बहुवा। तोचि पाड आत्मया। स्मरणेंवीण असे ।८६। हेंचि निभ्रांति। प्रमेय उपलवूं पुढती। परी तूं प्रतीती। याची घे पां ।८७। तरी माझी हे गृहिणी। अनादि तरुणी। अनिर्वाच्यगुणी। अविद्या हे ।८८। इये नाहीं हेंचि रूप। ठाणें हें अतिउमप। हे निद्रितां समीप। चेतां दुरी ।८९। पैं माझेनिचि आंगें। पहुडल्या हे जागे। आणि सत्तासंभोगें। गुर्विणी होय ।९०। महद्ब्रह्माउदरीं। प्रकृति आठै विकारीं। गर्भाची करी। पेलोवेली ।९१। उभयसंगें पहिलें। बुद्धितत्त्व प्रसवलें। बुद्धितत्त्वें उभारलें। होय मन ।९२। तरुणी ममता मनाचीं। अहंकार तत्त्व रची। तेणें महाभूतांची। अभिव्यक्ति होय ।९३। आणि विषयेंद्रियां गौसी। स्वभावें तंव भूतांसी। म्हणोनि येती सरिसीं। तियेंही रूपा ।९४। जालेनि विकारक्षोभें। पाठीं त्रिगुणाचे उभें। तेव्हां ये वासना गर्भें। ठावेंठाव ।९५। रुखाचा आवांका। जैसी बीजकणिका। जीवीं बांधे उदका। भेटतखेवों ।९६। तैसी माझेनि संगें। अविद्या नाना जगे। आर घेवों लागे। अणियांची ।९७। मग गर्भगोळा तया। कैसें रूप तें ये आया। तें परियेसें राया। सुजनांचिया ।९८। पैं मणिज स्वेदज। उद्भिज जारज। उमटती सहज। अवयव हे ।९९। व्योमवायुवशें। वाढलेनि गर्भरसें। मणिज उससे। अवयव तो ।१००। पोटी सूनि तमरजें। आगळिका तोय तेजें। उठितां निपजे। स्वेदज गा ।१। आप पृथ्वी उत्कटें। आणि तमोमात्रें निकृष्टें। स्थावर उमटे। उद्भिज हा ।२। पांचां पांचही विरजीं। होती मनबुद्ध्यादि साजीं। हीं हेतु जारजीं। ऐसें जाण ।३। ऐसे चारी हे सरळ। करचरणतळ। महाप्रकृति स्थूळ। तेंचि शिर ।४। प्रवृत्ती पेललें पोट। निवृत्ती ते पाठी नीट। सुरयोनी आंगें आठ। ऊर्ध्वाचीं ।५। कंठ उल्हासता स्वर्ग। मृत्युलोक मध्यभाग। अधोदेश चांग। नितंब तो ।६। ऐसें लेकरूं एक। प्रसवली हे देख। जयाचें तिन्ही लोक। बाळसें गा ।७। चौऱ्यायशीं लक्ष योनी। तियें कांडां परां सांदणी। वाढे प्रतिदिनीं। बाळक हें ।८। नाना देह अवयवीं। नामाची लेणी लेववी। मोहस्तन्यें वाढवी। नित्य नवें ।९। सृष्टी वेगळवेगळीया। तिया करांग्रीं आंगोळिया। भिन्नाभिमान सूदलिया। मुदिया तेथें ।११०। हें येकोलतें चराचर। अविचारित सुंदर। प्रसवोनि थोर। थोरावली ।११। पैं ब्रह्मा प्रातःकाळ। विष्णु तो माध्याह्न वेळ। सदाशिव सायंकाळ। बाळा यया ।१२। महाप्रलयसेजें। खेळोनि निवांत निजे। विषमज्ञानें उमजे।

कल्पोदयीं ।१३। अर्जुना इयापरी। मिथ्यादृष्टीच्या घरीं। युगानुवृत्तीच्या करी। चोज पाउलें ।१४। संकल्प जयाचा इष्ट। अहंकार तो विनट। ऐसिया होय शेवट। ज्ञानें यया ।१५। आतां असो हे बहु बोली। ऐसे विश्व माया व्याली। तेथ साह्य जाली। माझी सत्ता ।१६।

सर्वयोनिषु कौंतेय मूर्तयः संभवंति याः।
तासां ब्रह्म महद्योनिरहं बीजप्रदः पिता ।४।

याकारणें मी पिता। महद्ब्रह्म हे माता। अपत्य पांडुसुता। जगडंबर ।१७। आतां शरीरें बहुतें। देखोनि न भेद हो चित्तें। जे मनबुद्ध्यादि भूतें। एकेंचि येथें ।१८। हां गा एकचि देही। काय अनारिसे अवयव नाहीं। तेवीं विचित्र विश्व पाहीं। एकचि हें ।१९। पैं उंचा नीचा डाहाळिया। विषमा वेगळालिया। येकाचि जेवीं जालिया। बीजाचिया ।१२०। आणि संबंध तोही ऐसा। मृत्तिके घट लेंक जैसा। का पटत्व कापुसा। नातू होय ।२१। नाना कल्लोळपरंपरा। संतती जैसी सागरा। आम्हां आणि चराचरा। संबंध तैसा ।२२। म्हणौनि वह्नि आणि ज्वाळ। दोन्ही वह्नीची केवळ। तेवीं मी गा सकळ। संबंध वाव ।२३। जालेनि जग मी झांकें। तरी जगत्वें कोण फांके?। किळेवरी माणिकें। लोपिजे काई ?।२४। अलंकारातें आलें। तरी सोनेपण काइ गेले ?। कीं कमळ फांकलें। कमळत्वा मुके ?।२५। सांग पां धनंजया। अवयवीं अवयविया। आच्छादिजे कीं तया। तेंचि रूप ?। विरूढलिया जोंधळा। कणिसाचा निर्वाळा। वेंचला कीं आगळा। दिसतसे?।२७। म्हणौनि जग परौतें। सारूनि पाहिजे मातें। तैसा नोहें, उखितें। आघवें मीची ।२८। हां तूं साचोकारा। निश्चयाचा खरा। गांठी बांध वीरा। जीवाचिये ।२९। आतां मियां मी दाखविला। शरीरीं वेगळाला। गुणी मीचि बांधला। ऐसा आवडें ।१३०। जैसे स्वप्नीं आपण। उठूनियां आत्ममरण। भोगिजे गा जाण। कपिध्वजा ।३१। का कवळातें डोळे। प्रकाशूनि पिंवळें। देखती तेंही कळे। तयांसीची ।३२। नाना सूर्ये प्रकाशे। प्रकटी तैं अभ्र भासे। तो लोपला हेंही दिसे। सूर्येंचि कीं ।३३। पैं आपणपेनि जालिया। छाया गा आपुलिया। पाहोनि बिहालिया। आन आहे?।३४। तैसीं इये नाना देहें। दाऊनि मी नाना होयें। तेथ ऐसा जो बंध आहे। तेंही देखें ।३५। बंधची कीं न बांधिजे। हें जाणणें मज माझें। नेणणेनि उपजे। आपलेनी ।३६। तरी कोणे गुणें कैसा। मजचि मी बंध ऐसा। आवडें तें परियेसा। अर्जुनदेवा ।३७। गुण ते किती किंधर्म। कायी यया रूप नाम। कें जाले हें वर्म। अवधारीं पां ।३८।

सत्त्वं रजस्तम इति गुणाः प्रकृतिसंभवाः।
निबध्नंति महाबाहो देहे देहिनमव्ययम् ।५।

तरी सत्त्वरजतम। तिघांसि हे नाम। आणि प्रकृति जन्म–। भूमिका ययां ।३९। येथ सत्त्व तें उत्तम। रज तें मध्यम। तिहींमाजीं तम। साविया धारें ।१४०। हें एकेचि वृत्तीच्या ठायीं। त्रिगुणत्व आवडे पाहीं। वयसात्रय देहीं। एकी जेवीं ।४१। का मिनलेनि कीडे। जंव जंव तूक वाढें। तंव तंव सोनें हीन पडे। पांचिका कसीं ।४२। पैं सावधपण जैसें। वाहविलें आळसें। सुषुप्ती बैसे। घणावोनी ।४३। तैसी अज्ञानांगीकारें। निघाली वृत्ति विखुरे। ते सत्त्वरजद्वारें। तमही होय ।४४। अर्जुना गा जाण। ययां नाम गुण। आतां दाखऊं खुण। बांधती ते ।४५। तरी क्षेत्रज्ञदशें। आत्मा मोटका पैसे। हें देह मी ऐसें। मुहूर्त करी ।४६। आजन्ममरणांतीं। देहधर्मी समस्ती। महत्त्वाची सूती। घे ना जंव ।४७। जैसी मीनाच्या तोंडीं। पडेना जंव उडी। तंव गळ आसुडी। जळपारधी ।४८।

तत्र सत्त्वं निर्मलत्वात्प्रकाशकमनामयम्।
सुखसंगेन बध्नाति ज्ञानसंगेन चानघ ।६।

तेवीं सत्त्वें लुब्धकें। सुखज्ञानाचीं पाशकें। वोडिजती मग खुडकें। मृग जैसा ।४९। मग ज्ञानें चडफडी। जाणिवेचे खुरखोडीं। स्वयंसुख हें धाडी। हातींचे गा ।१५०। तेव्हां विद्यमानें तोखे। लाभामात्र हरिखे। मी संतुष्ट हेंही देखे। श्लाघों लागे ।५१। म्हणे भाग्य ना माझें। आजि सुखियें नाहीं दुजें। विकाराष्टकें फुंजे। सात्विकाचेनी ।५२। आणि येणेंही न सरे। लांकण लागे दुसरे। जें विद्वत्तेचें भरे। भूत आंगीं ।५३। आपणचि ज्ञानस्वरूप आहे। तें गेलें हें दुःख न वाहे। कीं विषयज्ञानें होये। गगनायेवढा ।५४। रावो जैसा स्वप्नीं। रंकपणें रिघे धानीं। तो दोंदाणा मानी। इंद्र ना मी ।५५। तैसें गा देहातीता। जालेया देहवंता। हों लागे पांडुसुता। बाह्यज्ञानें ।५६। प्रवृत्तिशास्त्र बुझे। यज्ञविद्या उमजे। किंबहुना सुझे। स्वर्गवरी ।५७। आणि म्हणे आजि आन। मीवांचून नाहीं सज्ञान। चातुर्यचंद्रा गगन। चित्त माझें ।५८। ऐसें सत्त्व सुखज्ञानीं। जीवासि लाउनि कानी। बैलाची करी वानी। पांगुळाचिया ।५९। आतां हाचि शरीरी। रजें जियापरी। बांधिजे तें अवधारी। सांगिजेल ।१६०।

रजो रागात्मकं विद्धि तृष्णासंगसमुद्भवम्।
तन्निबध्नाति कौंतेय कर्मसंगेन देहिनम् ।७।

हें रज याचिकारणें। जीवातें रंजाऊं जाणे। हें अभिलाखाचें तरुणें। सदाचि गा।६१। हें जीवीं मोटकें रिगे। आणि कामाच्या मदीं लागे। मग वारया वळघे। तृष्णेचिया।६२। घृतें आंबुखूनि आगियाळें। वज्राग्नीचें सादुकलें। आतां बहु थेकुलें। आहे तेथ?।६३। तैसी खवळे चाड। होय दुःखासकट गोड। इंद्रश्रीही सांकड। गमों लागे।६४। तैसी तृष्णा वाढिनलिया। मेरूही हातां आलिया। तऱ्हीं म्हणे एखादिया। दारुणा वळघों।६५। जीविताची कुरोंडी। वोवाळूं लागे कवडी। मानी तृणाचिये जोडी। कृतकृत्यता।६६। आजि असतें वेंचिजेल। परी पाहें पां का कीजेल। ऐसा पांगी वडील। व्यवसाय मांडी।६७। म्हणे स्वर्गा हन जावें। तरी काय तेथें खावें। इयालागीं धांवे। याग करूं।६८। व्रतापाठी व्रतें। आचरे इष्टापूर्तें। काम्यावांचूनि हातें। शिवणें नाहीं।६९। पैं ग्रीष्मांतींचा वारा। विसांवो नेणें वीरा। तैसा न म्हणे व्यापारा। रात्र दिवस।१७०। काय चंचळ मासा। कामिनीकटाक्ष जैसा। लवलाहो तैसा। विजूही नाहीं।७१। तेतुलेनि गा वेगें। स्वर्गसंसारपांगें। आगीमाजीं रिगे। क्रियांचिये।७२। ऐसा देही देहावेगळा। ले तृष्णेचिया सांखळा। खटाटोप वाहे गळां। व्यापाराचा।७३। हें रजोगुणाचें दारुण। देहीं देहियासी बंधन। परिस आतां विंदाण। तमाचें तें।७४।

तमस्त्वज्ञानजं विद्धि मोहनं सर्वदेहिनाम्।
प्रमादालस्यनिद्राभिस्तन्निबध्नाति भारत।८।

व्यवहाराचेनि डोळे। मंद जेणें पडळें। मोहरात्रीचें काळें। मेहुडें जें।७५। अज्ञानाचें जियालें। जया एका लागलें। जेणें विश्व भुललें। नाचत असे।७६। अविवेकमहामंत्र। जें मौढ्यमद्याचें पात्र। हें असो मोहनास्त्र। जीवांसि जें।७७। पार्था तें गा तम। रचूनि ऐसें वर्म। चौखुरी देहात्म–। मानियातें।७८। हें येकचि कीर शरीरीं। माजों लागे चराचरीं। आणि तेथ दुसरी। गोठी नाहीं।७९। सर्वेंद्रियां जाड्य। मनामाजीं मौढ्य। माल्हाती दार्ढ्य। आलस्याचें।१८०। आंगें आंग मोडामोडी। कार्यजातीं अनावडी। नुसती परवडी। जांभयांची।८१। उघडियाची दिठी। देखणें नाहीं किरीटी। नाळवितांचि उठी। वो म्हणौनि।८२। पडिलिये धोंडी। नेणे कानी मुरडी। तयाचिपरी मुरकुंडी। उकलूं नेणें।८३। पृथ्वी पाताळीं जावो। का आकाशाहीवरी येवो। परी उठणें जीवें हा भावो। उपजो नेणें।८४। उचितानुचित आघवें। झांसुरतां नाठवे जीवें। जेथीचा तेथ लोळावें। ऐसी मेधा।८५। उभऊंनि करतळें। पडिघाये कपोळें। पायांचें शिरियाळें। मांडूं लागे।८६। आणि निद्रेविषयीं चांग। जीवीं आथि लाग। झोंपीं जातां स्वर्ग। वावो म्हणे।८७। ब्रह्मायु होइजे। मा निजेलियाचि असिजे। हें वांचूनि दुजें। व्यसन नाहीं।८८। का वाटे जातां वोघें। कल्हातांही डोळां लागे। अमृतही परी नेघे। जरी निद आली।८९। तेवींचि आक्रोशबळें। व्यापारें कोणेएके वेळे। निगालें तरी आंधळें। रोषें जैसें।१९०। केधवां कैसें राहाटावें। कोणेसीं काय बोलावें। हें ठाकतें कीं नागवें। हेंही नेणे।९१। वणवा मियां आघवा। पांखें पुसोनि घेयावा। पतंग या हांवा। घाली जेवीं।९२। तैसा वळघे साहसा। अकरणींचि धिंवसा। किंबहुना ऐसा। प्रमादू रुचे।९३। एवं निद्रालयस्यप्रमादीं। तम इया त्रिबंधीं। बांधे निरुपाधि। चोखटातें।९४। जैसा वह्नि काष्ठीं भरे। तैं दिसे काष्ठाकारें। व्योम घटे आवरे। तै घटाकाश।९५। नाना सरोवर भरलें। तैं चंद्रत्व तेथें बिंबलें। तैसें गुणपाशीं बांधलें। आत्मत्व गमे।९६।

सत्त्वं सुखे संजयति रजः कर्मणि भारत।
ज्ञानमावृत्य तु तमः प्रमादे संजयत्युत।९।
रजस्तमश्चाऽभिभूय सत्त्वं भवति भारत।
रजः सत्त्वं तमश्चैव तमः सत्त्वं रजस्तथा।१०।

पैं परिहरूनि कफवात। जैं देहीं आटोपे पित्त। तैं करी संतप्त। देह जेवीं।९७। का वर्ष आतप जैसें। जिणौनि शीतचि दिसे। तेव्हां होय हिंव ऐसें। आकाश हें।९८। नाना स्वप्न जागृती। लोपूनि ये सुषुप्ती। तै क्षण एक चित्तवृत्ती। तेचि होय।९९। तैसी रजतमें हारवी। जैं सत्त्व माजू मिरवी। तैं जीवाकरवी म्हणवी। सुखिया ना मी।२००। तैसेचि सत्त्व रज। लोपूनि तमाचें भोज। वळघे तैं सहज। प्रमादी होय।१। तयाची गा परिपाठीं। सत्त्वतमांतें पोटीं। घालूनि जेव्हां उठी। रजोगुण।२। तेव्हां कर्मावांचूनि कांहीं। आन गोमटे नाहीं। ऐसें मानीं देहीं। देहराज।३। त्रिगुणनिरूपण। तीं श्लोकीं सांगितलें जाण। आतां सत्त्वादिवृद्धिलक्षण। सादर परियेसा।४।

सर्वद्वारेषु देहेऽस्मिन्प्रकाश उपजायते।
ज्ञानं यदा तदा विद्याद्विवृद्धं सत्त्वमित्युत।११।
लोभः प्रवृत्तिरारंभः कर्मणामशमः स्पृहा।
रजस्येतानि जायंते विवृद्धे भरतर्षभ।१२।

अप्रकाशोऽप्रवृत्तिश्च प्रमादो मोह एव च।
तमस्येतानि जायंते विवृद्धे कुरुनंदन।१३।
यदा सत्त्वे प्रवृद्धे तु प्रलयं याति देहभृत्।
तदोत्तमविदाँल्लोकानमलान्प्रतिपद्यते।१४।
रजसि प्रलयं गत्वा कर्मसंगिषु जायते।
तथा प्रलीनस्तमसि मूढयोनिषु जायते।१५।

रजतमविजयें। सत्त्व गा देहीं इयें। वाढतां चिह्नें तिये। ऐसीं होती।५। जे प्रज्ञा आंतुलीकडे। न समाती बाहेरी वोसंडे। वसंती पद्मखंडें। द्रुती जैसी।६। सर्वेंद्रियांच्या अंगणीं। विवेक करी राबणी। साचचि करचरणीं। होती डोळे।७। राजहंसापुढें। चांचूचें आगरडें। तोडी जेवीं झगडे। क्षीरनीरांचे।८। तेवीं दोषादोषविवेकीं। इंद्रियेचि होती पारखी। नियम बा रे पायिकीं। वोळगे तैं।९। नायिकणें तें कानचि वाळी। न पाहणें तें दिठीचि गाळीं। अवाच्य तें टाळी। जीभचि गा।२१०। वातीपुढां जैसें। पळों लागे काळवसें। निषिद्ध इंद्रियां तैसें। समोर नोहे।११। धाराधारकाळें। महानदी उचंबळे। तैसी बुद्धि पघळे। शास्त्रजातीं।१२। अगा पुनवेच्या दिवशीं। चंद्रप्रभा धावे आकाशीं। ज्ञान वृत्ति तैसी। फांके सैंघ।१३। वासना एकवटे। प्रवृत्ति वोहटे। वासना विटे। विषयांवरी।१४। एवं सत्त्व वाढे। तैं हें चिह्न फुडें। आणि निधनही घडे। तेव्हांचि जरी।१५। का पाहालेनि सुयाणे। जालया परगुणें। पढियंते पाहुणे। स्वर्गौनि ये।१६। तरी जैसीचि घरींची संपत्ती। आणि तैसीचि औदार्यधैर्यवृत्ती। मा परत्रा आणि कीर्ति। कां नोहावें?।१७। मग गोमटेया तया। जावळी असे धनंजया। तेवीं सत्त्वें जाणें देहा। कें आथि गा?।१८। जे स्वगुणीं उद्भट। घेऊनि सत्त्व चोखट। निगे सांडूनि कोपट। भोगक्षम हें।१९। अवचटें ऐसा जो जाये। तो सत्त्वाचाचि नवा होये। किंबहुना जन्म लाहे। ज्ञानियांमाजीं।२२०। सांग पां धनुर्धरा। रावो रायपणें डोंगरा। गेलिया अपुरा। होय काई?।२१। नातरी येथींचा दिवा। नेलिया सेजिया गांवा। तो तेथें तरी पांडवा। दीपचि कीं।२२। तैसी तें सत्त्व शुद्धी। आगळी ज्ञानेंसीं वृद्धी। तरंगावों लागे बुद्धी। विवेकावरी।२३। पैं महदादिपरिपाठी। विचारूनि शेवटी। विचारासकट पोटीं। जिरोनि जाय।२४। छत्तीसां सदतीसावें। चोवीसां पंचवीसावें। तिन्हीं नुरोनि स्वभावें। चतुर्थ जें।२५। ऐसें सर्व जें सर्वोत्तम। जालें असे जया सुगम। तयासवें निरुपम। लाहे देह।२६। इयाचि परी देख। तमतत्त्व अधोमुख। बैसोनि जैं आगळीक। धरी रज।२७। आपलिया कार्याचा। धुमाड गांवी देहाचा। माजवी तैं चिह्नांचा। उदय ऐसा।२८। पांजरली वाहटुळी। करी वेगळ वेगळी। तैसीं विषयीं सरळी। इंद्रियां होय।२९। परदारादि पडे। परी विरुद्ध ऐसें नावडे। मग शेळियेचेनि तोंडें। सैंघ चारी।२३०। हा ठायवरी लोभ। करी स्वैरत्वाचा राब। वेटाळितां अलाभ। तें तें उरे।३१। आणि आड पडलिया। उद्यमजातां भलतियां। प्रवृत्ती धनंजया। हात न काढी।३२। तेवींचि एखादा प्रासाद। का करावा अश्वमेध। ऐसा अचाट छंद। घेऊनि उठी।३३। नगरेंचि रचावी। जळाशयें निर्मावी। महावनें लावावीं। नानाविधें।३४। ऐसैंसां अफाटीं कर्मीं। समारंभ उपक्रमीं। आणि दृष्टादृष्टकामीं। पुरे न म्हणे।३५। सागरही सांडी पडे। आगी न लाहे तीन कवडे। ऐसें अभिलाषीं जोडे। दुर्भरत्व।३६। स्पृहा मना पुढां। आशेचा घे दवडा। विश्व घापे चाडा। पायांतळीं।३७। इत्यादि वाढतां रजीं। इयें चिह्नें होती साजी। आणि ऐशा समाजीं। वेंचे जरी देह।३८। तरी आघवाचि इंहीं। परिवारला आनीं देहीं। रिगे परी योनिही। मानुषीची।३९। सुरवाडेंसि भिकारी। वसो पां राजमंदिरीं। तरी काय अवधारीं। रावो होईल?।२४०। बैल तेथें करबाडें। हें न चुके गा फुडें। नेइजो का वऱ्हाडें। समर्थाचेनी।४१। म्हणौनि व्यापाराच्या हातीं। उसंतु देहा ना राती। तैसयाचिये पांती। जुंपिजे तो।४२। कर्मजडांच्या ठायीं। किंबहुना होय देही। जो रजोवृत्तीच्या डोहीं। बुडोनि निमे।४३। मग तैसाचि पुढती। रजसत्त्ववृत्ती। गिळूनि ये उन्नती। तमोगुण।४४। तैंचि जियें लिंगें। देहींचीं सबाह्य सांगें। तियें परिस चांगें। श्रोत्रबळें।४५। तरी होय ऐसें मन। जैसें रविचंद्रहीन। रात्रीचें का गगन। अंवसेचिये।४६। तैसें अंतर असोस। होय स्फूर्तिहीन उद्वस। विचाराची भाष। हारपे तैं।४७। बुद्धि मेचवेना धोंडीं। हा ठायवरी मवाळें सांडी। आठवो देशधडी। जाला दिसे।४८। अविवेकाचेनि माजें। सबाह्य शरीर गाजे। एकलेनि घेपे दीजे। मौढ्यें तेथ।४९। आचारभंगाची हाडें। रूपती इंद्रियांपुढें। मरे जरी तेणेंकडे। क्रिया जाय।२५०। पैं आणिकही एक दिसें। जे दुष्कृतीं चित्त उल्हासे। आंधारीं देखणें जैसें। डुडुळाचें।५१। तैसें निषिद्धाचेनि नांवें। भलतेही भरे हांवे। तियेविषयीं धांवे। घेती करणें।५२। मदिरा न घेतां डुले। सन्निपातेंवीण बरळे। निष्प्रेमेंचि भुले। पिसें जैसें।५३। चित्त जरी गेलें आहे। परी उन्मनी ते नोहे। ऐसें माल्हातिजे मोहें। माजिरेनी।५४। किंबहुना ऐसैसीं। इयें चिह्नें तम पोषी। जैं वाढे आयितीसी। आपुलिया।५५। आणि हेंचि होय प्रसंगें। मरणाचें जरी पडे खागें। तरी तेतुलेनि निगे। तमेसीं तो।५६। राई राईपण बीजीं। सांठवूनियां अंग त्यजी। मग विरूढे तैं दुजी। गोठी आहे?।५७। पैं होऊनि

दीपकलिका। येरू आगी विझो का। का जेथ लागे तेथ असका। तोचि आहे।५८। म्हणौनि तमाचिये लोथे। बांधोनियां संकल्पातें। देह जाय तै मागौतें। तमाचेचि होय।५६। आतां काय येणें बव्हें। जो तमोवृद्धिं मृत्यु लाहे। तो पशु का पक्षी होये। झाड का कृमी।२६०।

कर्मणः सुकृतस्याहुः सात्त्विकं निर्मलं फलम्।
रजसस्तु फलं दुःखमज्ञानं तमसः फलम्।१६।

येणेंचि पैं कारणें। जें निपजें सत्त्वगुणें। तें सुकृत ऐसें म्हणे। श्रौतसमो।६१। म्हणोनि तया निर्मळा। सुखज्ञानी सरळा। अपूर्व ये फळा सात्त्विक तें।६२। मग राजसा जिया क्रिया। तया इंद्रावणी फळलिया। जें सुखें चितारूनियां। फळती दुःखें।६३। का निंबोळियेचें पीक। वरी गोड आंत वीख। तैसें तें राजस देख। क्रियाफळ।६४। तामस कर्म जितुकें। अज्ञान फळेंचि पिकें। विषांकुर विखें। जियापरी।६५।

सत्त्वात्संजायते ज्ञानं रजसो लोभ एव च।
प्रमादमाहौ तमसो भवतोऽज्ञानमेव च।१७।

म्हणौनि बा रे अर्जुना। येथ सत्त्वचि हेतु ज्ञाना। जैसा का दिनमाना। सूर्य हा पैं।६६। आणि तैसेंचि हे जाण। लोभासि रज कारण। आपलें विस्मरण। द्वैता जेवीं।६७। मोहअज्ञानप्रमादा। ययां मैळेया दोषवृंदा। पुढतीपुढती प्रबुद्धा। तमचि मूळ।६८। ऐसे विचाराच्या डोळां। तिन्ही गुण वेगळवेगळां। दाविले जैसा आंवळा। तळहातींचा।६६। तंव रजतमें दोन्ही। देखिलीं प्रौढ पतनीं। सत्त्वावांचुनि नाणी। ज्ञानाकडे।२७०। म्हणौनि सात्त्विक वृत्ती। एक जाले जन्मव्रती। सर्वत्यागें चतुर्थी। भक्ति जैसी।७१।

उर्ध्वं गच्छन्ति सत्त्वस्था मध्ये तिष्ठंति राजसाः।
जघन्यगुणवृत्तिस्था अधो गच्छंति तामसाः।१८।

तैसे सत्त्वाचेनि नटनाचें। असणें जाणें जयांचे। ते तनुत्यागीं स्वर्गींचे। राय होती।७२। इयाचि परी रजें। जिंहीं का जिजे मरिजे। तिंहीं मनुष्य होईजे। मृत्युलोकीं।७३। तेथ सुखदुःखाचें खिचटें। जेविजे एकेचि ताटें। जेथ इये मरणवाटे। पडिलें नुठी।७४। आणि तयाचि स्थिती तमीं। जे वाढोनि निमती भोगक्षमीं। ते घेती नरकभूमी। मूळपत्र।७५। एवं वस्तूचिया सत्ता। त्रिगुणासि पंडुसुता। दाविली सकारणता। आघवीचि।७६। पैं वस्तु वस्तुत्वें असिकें। तें आपणपें गुणासारिखें। देखोनि कार्यविशेखें। अनुकरे गा।७७। जैसें का स्वप्नींचेनि राजें। जैं परचक्र देखिजे। हारि जैत होइजे। आपणचि।७८। तैसे मध्योर्ध्व अध। जे हे गुणवृत्तिभेद। ते दृष्टीवांचूनि शुद्ध। वस्तुचि असे।७६।

नान्यं गुणेभ्यः कर्तारं यदा दृष्टाऽनुपश्यति।
गुणेभ्यश्च परं वेत्ति मद्भावं सोऽधिगच्छति।१६।

परी हे वाहणी असो। तरि तुज आन न दिसो। परिसें तें सांगतसों। मागील गोष्टी।२८०। तरि ऐसें जाणिजे। सामर्थ्ये तिन्ही सहजें। होती देहव्याजें। गुणचि हे।८१। इंधनाचेनि आकारें। अग्नि जैसा अवतरे। कां आघवेनि तरुवरें। भूमिरस।८२। ना ना दहियांचेनि मिसें। परिणमे दूधचि जैसें। कां मूर्त होय उंसें। गोडी जेवीं।८३। तैसें हें सांतःकरण। देहचि होती त्रिगुण। म्हणौनि बंधासि कारण। घडे कीर।८४। परि चोज हे धनुर्धरा। जे येवढा हा गुंफिरा। मोक्षाचा संसारा। उणा नोहे।८५। त्रिगुण आपुलालेनि धर्में। देहींचे मागुतें साउमें। चाळितांही न खोमे। गुणातीतता।८६। ऐसी मुक्ति असे सहज। तें आतां परिसवूं तुज। जे तूं ज्ञानांबुज–। द्विरेफ कीं।८७। आणि गुणीं गुणाजोगें। चैतन्य नोहे मागें। बोलिलो तें खागे। तेवींचि हें।८८। तरी पार्था जैं ऐसें। बोधलेनि जीवें दिसे। स्वप्न कां जैसें। चेइलेनी।८६। ना तरी आपण जळीं। बिंबलो तीरोनि न्याहाळी। चलन होता कल्लोळीं। अनेकधा।२६०। कां नटलेनि लाघवें। नट जैसा न झकवें। तैसें गुणजात देखावें। न होनियां।६१। पैं ऋतुत्रय आकाशें। धरूनियांही जैसें। नेदिजेचि येवों वोंसें। वेगळेपणा।६२। तैसें गुणीं गुणापरौतें। जें आपणपें असे आयितें। तिये अहं बैसे अहंते। मूळकेचिये।६३। पैं तेथूनि मग पाहतां। म्हणे साक्षी मी अकर्ता। हे गुणचि क्रियाजातां। नियोजित।६४। सत्त्वरजतमांच्या। भेदीं प्रसर कर्माचा। होत असे तो गुणांचा। विकार हा।६५। ययामाजीं मी ऐसा। वनीं कां वसंत जैसा। वनलक्ष्मीविलासा। हेतुभूत।६६। कां तारागणीं लोपावें। सूर्यकांती उद्दीपावें। कमली विकासावें। जावें तमें।६७। यया कोणाचें कांहीं। सविता जैसा देखत नाहीं। तैसा अकर्ता मी देहीं। सत्तारूप।६८। मी दाउनी गुण देखे। गुणता हे मियां पोखे। ययाचेनि निःशेखें। उरें ते मी।६६। ऐसेनि विवेके जया। उदया होत धनंजया। ये गुणातीतता तया। ऊर्ध्वपंथें।३००।

गुणानेतानतीत्य त्रीन्देही देहसमुद्भवान्।
ज्न्ममृत्युजरादुःखैर्विमुक्तोऽमृतमश्नुते ।२०।

आतां निर्गुण असे आणिक। तें तो जाणे अचुक। जे ज्ञानें केलें टीक। तयाचि वरी ।१। किंबहुना पंडुसुता। ऐसी तो माझी सत्ता। पावे जैसी सरिता। सिंधुत्व गा ।२। नळिकेवरूनि उठिला। जैसा शुक शाखे बैसला। तैसा मूळअहंता ठेला। तो मी म्हणौनि ।३। अगा अज्ञानाचिया निदा। जो घोरत होता बदबदा। तो स्वरूपीं प्रबुद्धा। चेइला कीं ।४। पै बुद्धिभेदाचा आरिसा। तया हातोनि पडिला वीरेशा। म्हणौनि प्रकृतिमुखाभासा। मुकला तो ।५। देहाभिमाचा वारा। आतां वाजों ठेला वीरा। तैं ऐक्य वीचिसागरां। जीवेशा हें ।६। म्हणौनि मद्भावेंसीं। प्राप्ति पाविजे तेणेंसरिसी। वर्षांतीं आकाशीं। घनजात जेवीं ।७। तेविं मी होऊनि निरुता। मग देहींचि ये असतां। नागवे देहसंभूता। गुणांसि तो ।८। जैसा भिंगाचेनि घरें। दीपप्रकाश नावरे। कां न विझेचि सागरें। वडवानळ ।९। तैसा आलागेला गुणाचा। बोध न मैळे तयाचा। तो देहीं जैसा व्योमींचा। चंद्र जळीं ।३१०। तिन्ही गुण आपुलालिये प्रौढी। देहें नाचविती बागडी। तो पाहोंही न धडी। अहंतेतें ।११। हा ठायवरी। नेहटोनि ठेला अंतरीं। आतां काय वर्ते शरीरीं। हेंही नेणें ।१२। सांडूनि आंगींची खोळी। सर्प रिगालिया पाताळी। ते त्वचा कोण सांभाळी। तैसें जालें ।१३। कां सौरभ्यजीर्ण जैसा। आमोद मिळोनि जाय आकाशा। माघारा कमळकोशा। न येचि तो ।१४। पैं स्वरूपसमरसें। तयाही गा जालें तैसें। तेथ किंधर्म हें कैसें। नेणे देह ।१५। म्हणौनि जन्मजरामरण। इत्यादि जे साही गुण। तें देहींचि ठेले कारण। नाहीं तयां ।१६। घटाचिया खापरिया। घटभंगी फेडिलिया। महदाकाश अपैसया। जालेंचि असे ।१७। तैसी देहबुद्धि जाये। जैं आपणपां आठौ होये। तैं आन कांहीं आहे। तेंवांचुनी ।१८। येणें थोर बोधलेपणें। तयासि गा देहीं असणें। म्हणूनि तो मी म्हणे। गुणातीत ।१९। यया देवाचिया बोला। पार्थ अतिसुखावला। मेघें संबोखिला। मयूर जैसा ।३२०।

अर्जुन उवाचः– कैर्लिंगैस्त्रीन्गुणानेतानतीतो भवति प्रभो।
किमाचारः कथं चैतांस्त्रीगुणानतिवर्तते ।२१।

तेणें तोषें वीर पुसे। जी कोणी चिह्नीं तो दिसे। जयामाजीं वसे। ऐसा बोध ।२१। तो निर्गुण काय आचरे। कैसेनि गुण निस्तरे। हे सांगिजो माहेरें। कृपेचेनि ।२२। यया अर्जुनाचिया प्रश्ना। तो षड्गुणांचा राणा। परिहार आकर्णा। बोलत असे ।२३। म्हणे पार्था तुझी नवाई। हें येतुलेंचि पुससी काई। तें नामचि तया पाही। साच लटिकें ।२४। गुणातीत जया नांवें। तो गुणाधीन तरी नव्हे। ना होय तरी नागवे। गुणां ययां ।२५। परि अधीन का नागवे। हेंचि कैसेनि जाणावें। गुणांचिये रवरवे। माजी असतां ।२६। हा संदेह जरी वाहसी। तरि सुखें पुसों लाहसी। परिस आतां तयासी। रूप करूं ।२७।

श्रीभगवानुवाचः– प्रकाशं च प्रव्त्तिं च मोहमेव च पांडव।
न द्वेष्टि संप्रवृत्तानि न निवृत्तानि कांक्षति ।२२।

तरी रजाचेनि माजें। देहीं कर्माचें आणोजें। प्रवृत्ति जै घेइजे। वेंटाळूनि ।२८। तैं मीचि कां कर्मठ। ऐसा नये श्रीमाठ। कां दरिद्रलिये बुद्धी वीट। तोही नाहीं ।२९। अथवा सत्त्वेंचि अधिकें। जैं सर्वेंद्रियीं ज्ञान फांके। तै सुविद्यतातोखें। उभजेही ना ।३३०। कां वाढिलेनि तमें। न गिळेजेचि मोहभ्रमें। तैं अज्ञानत्वें न श्रमे। घेणेंही नाहीं ।३१। पैं मोहाच्या अवसरीं। ज्ञानाची चाड न धरी। ज्ञानें कर्मे नादरी। होता न दुःखी ।३२। सायंप्रातर्मध्याह्ना। या तिहीं काळांची गणना। नाहीं जेविं तपना। तैसा असे ।३३। तया वेगळाचि काय प्रकाशें। ज्ञानित्व यावें असे। कायि जळार्णव पाउसें। साजा होय ।३४। ना प्रवर्तलेनि कर्में। कर्मठत्व तया कां गमे। सांगें हिमवंतु हिमें। कांपे कायी ।३५। नातरि मोह आलिया। काइ पां ज्ञाना मुकिजेल तया। महा आगीतें उन्हाळेया। जाळवत असे ।३६।

उदासीनवदासीनो गुणैर्यो न विचाल्यते।
गुणा वर्तंत इत्येव योऽवतिष्ठति न नेङ्गते ।२३।

तैसें गुणागुणकार्य हें। आघवेंचि आपण आहें। म्हणौनि एकेका नोहे। तडातोडी ।३७। येवढेया गा प्रतीती। तो देहा आलासे वस्ती। वाटे जातां गुंती–। माजि जैसा ।३८। तो जिणता ना हारवी। तैसा गुण नव्हे ना करवी। जैसी कां श्रोणवी। संग्रामींची ।३९। कां शरीराआंतील प्राणु। घरीं आतिथ्याचा ब्राह्मणु। ना ना चोहटांचा स्थाणु। उदास जैसा ।३४०। आणि गुणाचा यावाजावा। ढळे चळे ना पांडवा। मृगजळाचा हेलावा। मेरु जैसा ।४१। हें बहुत कायि बोलिजे। व्योम वारेनि न वीजिजे। कां सूर्य ना गिळिजे। अंधकारे ।४२। स्वप्न कां गा जियापरी। जागतयातें न सिंतरी। गुणीं तैसा अवधारीं। न बंधिजे तो ।४३। गुणांसि कीर नातुडे। परि दुरूनि जैं पाहे कोडें। तै गुणदोष सायिखडें। सभ्य जैसा ।४४। सत्कर्में सात्विकीं। रज तें रजोविषयकीं। तम मोहादिकीं। वर्तत असे ।४५। परि तयाचिया गा सत्ता। होती गुणक्रिया

समस्ता। हें फुडें जाणें सविता। लौकिका जेवीं।४६। समुद्रचि भरती। सोमकांतचि द्रवती। कुमुदें विकासती। चंद्र तो उगा।४७। कां वाराचि वाजे विझे। गगनें निश्चळ असिजे। तैसा गुणाचिये गजबजे। डोलेना जो।४८। अर्जुना येणें लक्षणें। तो गुणातीतु जाणणें। परिस आतां आचरणें। तयाची जी।४९।

समदुःखसुखः स्वस्थः समलोष्टाश्मकांचनः।
तुल्यप्रियाप्रियो धीरस्तुल्यनिंदात्मसंस्तुतिः।२४।

तरि वस्त्रासि पाठींपोटीं। नाहीं सुतावांचूनि किरीटी। ऐसे सुये दिठी। चराचर मद्रूपें।३५०। म्हणोनि सुखदुःखा सरिसें। कांटाळें आचरे ऐसें। रिपुभक्तां जैसें। हरीचें देणें।५१। येऱ्हवीं तरी सहजें। सुखदुःख तैचि सेविजे। देहजळीं होइजे। मासोळी जैं।५२। आतां तें तव तेणें सांडिलें। आहे स्वस्वरूपेंसींचि मांडिलें। सस्यांती निवडिलें। बीज जैसें।५३। कां वोघ सांडूनि गंगा। रिघोनि समुद्राचे आंगा। निस्तरली लगबगा। खळाळाची।५४। तेविं आपणपांचि जया। वस्ती झाली गा धनंजया। तया देहीं अपैसया। सुख तैसें दुःख।५५। रात्रि तैसें पाहलें। हें धारणा जेंवि एक जालें। आत्माराम देहीं आंतले। द्वंद्व तैसें।५६। पैं निद्रिताचेनि आंगेंसीं। साप तैशी उर्वशी। तेंवि स्वरूपस्था सरिसीं। देहीं द्वंद्वे।५७। म्हणौनि तयाच्या ठायीं। शेणा सोनया विशेष नाहीं। रत्ना गुंडेया कांहीं। नेणिजे भेद।५८। घरा येवो पां स्वर्ग। कां वरिपडो वाघ। परि आत्मबुद्धीसी भंग। कदा नोहे।५९। निवटलें न उपवढे। जळीनलें न विरूढे। साम्यबुद्धि न मोडे। तयापरी।३६०। हा ब्रह्मा ऐसेनि स्तविजो। कां नीच म्हणोनि निंदिजो। परि नेणें जळों विझों। राखवी जैसी।६१। तैसी निंदा आणि स्तुति। न ये कोण्हेचि व्यक्ती। नाहीं आंधारें कां वाती। सूर्याघरीं।६२।

मानापमानयोस्तुल्यस्तुल्यो मित्रारिपक्षयोः।
सर्वारंभपरित्यागी गुणातीतः स उच्यते।२५।

ईश्वर म्हणोनि पूजिला। कां चोर म्हणोनि गांजिला। वृषगजीं वेढिला। केला रावो।६३। कां सुहृद पासीं आले। अथवा वैरी वरपडे जाले। परि नेणे राती पाहालें। तेज जेवीं।६४। साही ऋतु येतां आकाशें। लिंपिजेचि ना जैसे। तेविं वैषम्य मानसें। जाणिजेना।६५। आणीकही एक पाहीं। आचार तयाच्या ठायीं। तरि व्यापारासि नाहीं। जालें दिसे।६६। सर्वारंभा उटकलें। प्रवृत्तीचें तेथ मावळलें। जळती गा कर्मफळें। ते तों आगी।६७। दृष्टादृष्टाचेनि नांवें। भावचि जीवीं नुगवे। तें सेवी जें कां स्वभावें। पैठें होये।६८। सुखे ना शिणे। पाषाण जेणें मानें। तैसी सांडीमांडी मनें। वर्जिली असे।६९। आतां किती हा विस्तार। जाणें ऐसा आचार। जयाचा तोचि साचार। गुणातीत।३७०। गुणांतें अतिक्रमणें। घडे उपायें जेणें। तो आतां आईक म्हणे। श्रीकृष्णनाथू।७१।

मां च योऽव्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते।
स गुणान्समतीत्यैतान् ब्रह्मभूयाय कल्पते।२६।

तरि व्यभिचाररहित चित्तें। भक्तियोगें मातें। सेवी तो गुणांतें। जाकळूं शके।७२। तरि कोण मी कैसी भक्ति। अव्यभिचारा काय व्यक्ति। हे आघवीचि निरुती। होआवी लागे।७३। तरी पार्था परियेसा। मी तंव येथ ऐसा। रत्नीं किळावो जैसा। रत्नचि तो।७४। का द्रवपणचि नीर। अवकाशचि अंबर। गोडी तेचि साखर। आन नाहीं।७५। वह्नि तेवि ज्वाळ। दळाचि नांव कमळ। रूख तेंचि डाळ–। फळादिक।७६। अगा हिम जे आकर्षलें। तेंचि हिमवंत जेविं जालें। नाना दूध मुरालें। तेंचि दहीं।७७। तैसें विश्व येणें नांवें। हें मीचि पैं आघवें। घेईं चंद्रबिंब सोलावें। न लगें जेवीं।७८। घृताचें थिजलेपण। न मोडितां घृतचि जाण। नाटितां कांकण। सोनेंचि तें।७९। न उकलितां पट। तंतुचि असे स्पष्ट। न विरवितां घट। मृत्तिका जेविं।३८०। म्हणोनि विश्वपण जावें। मग तैं मातें घेयावें। तैसा नव्हे आघवें। सकटचि मी।८१। ऐसेनि मातें जाणिजे। ते अव्यभिचारी भक्ति म्हणिजे। येथ भेद कांहीं देखिजें। तरि व्यभिचारें तो।८२। या कारणें भेदातें। सांडूनि अभेदें चित्तें। आपणासकट मातें जाणावें गा।८३। पार्था सोनियाचि टिक। सोनयासी लागली देख। तैसें आपणपें आणिक। मानावें ना।८४। तेजाचा तेजौनि निघाला। परि तेजींचि असे लागला। तया रश्मी ऐसा भला। बोध होआवा। ८५। पै परमाणु भूतळीं। हिमकण हिमाचळीं। मजमाजीं न्याहाळीं। अहं तैसें।८६। हो कां तरंग लहान। परि सिंधूसीं नाहीं भिन्न। तैसा ईश्वरीं मी आन। नोहेचि गा।८७। ऐसेनि बा समरसें। दृष्टी जैं उल्हासे। भक्ति पैं ऐसें। आम्ही म्हणो।८८। आणि ज्ञानाचें चांगावें। इये दृष्टी मानावें। योगाचेंही आघवें। सर्वस्व हें।८९। सिंधू आणि जलधारा–। माजी लागली अखंड धारा। तैसी वृत्ति वीरा। प्रवर्ते ते।३९०। कां कुहेंसीं आकाशा। तोंडी सांदा नाहीं जैसा। तो परमपुरुषीं तैसा। एकवटे गा।९१। प्रतिबिंबोनि बिंबवरी। प्रभेची जैसी उजरी। ते सोहंवृत्ति अवधारी। तैसी होय।९२। ऐसेनि मग परस्परें। ते सोहंवृत्ति जै अवतरे। तैं तियेही सकट सरे। अपैसया।९३। जैसा सैंधवाचा रवा। सिंधूमाजी पांडवा। विरालेया विरवावा। हेंही ठाके।९४। ना तरि जाळूनि तृण। वह्निही विझे आपण। तैसें भेद नाशूनि जाण। ज्ञानही नुरे।९५। माझें पैलपण जाये। भक्त हे ऐलपण ठाये। अनादि ऐक्य जे आहे। तेंचि निवडे।९६। आतां गुणांतें तो किरीटी। जिणे या नव्हती

गोष्टी। जे एकपणाही मिठी। पडों सरली।९७। किंबहुना ऐसी दशा। तें ब्रह्मत्व गा सुदंशा। हे तो पावे जो ऐसा। मातें भजे।९८। पुढती इहीं लिंगीं। भक्त जो माझा जगीं। हे ब्रह्मता तयालागीं। पतिव्रता।९९। जैसें गंगेचेनि वोघें। डळमळीत जळ जें निघे। सिंधुपद तयाजोगें। आन नाहीं।४००। तैसा ज्ञानाचिया दिठी। जो मातें सेवी किरीटी। तो होय ब्रह्मतेच्या मुकुटीं। चूडारत्न।१। यया ब्रह्मत्वासीचि पार्था। सायुज्य ऐसी व्यवस्था। याचि नांवें चौथा। पुरुषार्थ गा।२। परी माझे आराधन। ब्रह्मत्वीं होय सोपान। तेथ मी हन साधन। गमेन हो।३। तरि झणी न ऐसें। तुझ्या चित्तीं पैसे। पैं ब्रह्म आन नसे। मीवांचूनि।४।

ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठाऽहममृतस्याव्ययस्य च।
शाश्वतस्य च धर्मस्य सुखस्यैकांतिकस्य च।२७।

इति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे गुणत्रयविभागयोगो नाम चतुर्दशोऽध्यायः।

अगा ब्रह्म या नांवा। अभिप्राय मी पांडवा। मीचि बोलिजे आघवा। शब्दीं इहीं।५। पैं मंडळ आणि चंद्रमा। दोनी नव्हती सुवर्मा। तैसा मज आणि ब्रह्मा। भेद नाहीं।६। अगा नित्य जे निष्कंप। अनावृत धर्मरूप। सुख जें जें उमप। अद्वितीय।७। विवेक आपुले काम। सारून ठाकी जें धाम। निष्कर्षाचे निःसीम। किंबहुना मी।८। ऐसैसें हो अवधारा। तो अनन्याचा सोयरा। सांगतसे वीरा। पार्थासि पैं।९। येथ धृतराष्ट्र म्हणे। संजया हें तूतें कोणे। पुसलेनिविण वायाणें। कां बोलसी।१०। माझी अवसरीते फेडी। विजयाची सांगे गुढी। येरु जीवीं म्हणे सांडी। गोठी इया।११। संजय विस्मय मानसीं। आहा करूनि रस रसीं। म्हणे कैसें पां दैवेंसीं। द्वंद्व यया।१२। तरि कृपाळु तो तुष्टो। यया विवेक हा घोंटो। मोहाचा फिटो। महारोग।१३। संजयो ऐसे चिंतितां। संवाद तो सांभाळितां। हरिखाचा येत चित्ता। महापूर।१४। म्हणोनि आतां येणें। उत्साहाचे अवतरणें। श्रीकृष्णाचें बोलणें। सांगिजेल।१५। तया अक्षराआंतील भाव। पाववीन मी तुमचा ठाव। आइका म्हणे ज्ञानदेव। निवृत्तीचा।१६।

इति श्रीज्ञानदेवविरचितायां भावार्थदीपिकायां चतुर्दशोऽध्यायः। श्लोक २७, ओव्या ४१६

ज्ञानेश्वरीः– अध्याय पंधरावाः– पुरुषोत्तमयोग

आतां हृदय हें आपुलें। चौफाळूनियां भलें। वरी बैसऊं पाउलें। श्रीगुरूचीं।१। ऐक्यभावाची अंजुळी। सर्वेंद्रियकुड्मळीं। भरूनियां पुष्पांजळी। अर्घ्य देवो।२। अनन्योदकें धुवट। वासना जे तन्निष्ठ। तें लागलेसें अबोट। चंदनाचें।३। प्रमाचेनि भांगारें। निर्वाळूनि नूपुरें। लेववूं सुकुमारें। पदें तियें।४। घणावली आवडी। अव्यभिचारें चोखडी। तियें घालूं जोडी। आंगोळिया।५। आनंदामोदबहुळ। सात्विकाचें मुकुळ। तें उमळलें अष्टदळ। ठेऊं वरी।६। तेथें अहं हा धूप जाळूं। नाहंतेजें वोवाळूं। सामरस्यें पोटाळूं। निरंतर।७। माझी तनु आणि प्राण। इया दोनी पाउवां लेववूं श्रीचरण। करूं भोगमोक्ष निंबलोण। पायां तयां।८। इया गुरुचरणसेवा। हों पात्र तया दैवा। जे सकळार्थमेळावा। पाट बांधे।९। ब्रह्मींचें विसवणेंवरी। उन्मेष लाहे उजरी। जे वाचेतें इये करी। सुधासिंधु।१०। पूर्णचंद्राचिया कोडी। वक्तृत्वा घापे कुरोंडी। तैसी आणि गोडी। अक्षरांतें।११। सूर्ये अधिष्ठिली प्राची। जगा राणीव दे प्रकाशाची। तैशी वाचा श्रोतयां ज्ञानाची। दिवाळी करी।१२। नादब्रह्म खुजे। कैवल्यही तैसें न सजे। ऐसा बाल देखिजे। जेणें देवें।१३। श्रवणसुखाच्या मांडवी। विश्व भोगी माधवी। तैसी सासिने बरवी। वाचावल्ली।१४। ठाय न पवतां जयाचा। मनेंसीं मुरडली वाचा। तो देव होय शब्दाचा। चमत्कारु।१५। जें ज्ञानासि न चोजवे। ध्यानासिही जें नागवे। तें अगोचर फावे। गोठीमाजीं।१६। येवढें एक सौभग। वळघे वाचेचे आंग। श्रीगुरुपादपद्मराग। लाहे जै कां।१७। तरि बहु बोलूं काई। आजि तें आन ठाईं। मातेंवांचूनि नाहीं। ज्ञानदेव म्हणे।१८। जे तान्हेनि मियां अपत्यें। आणि माझे गुरूसि एकुलतें। म्हणोनि कृपेंसि एकहातें। जालें तिये।१९। पाहा पां भरोवरी आघवी। मेघ चातकांसी रिचवी। मजलागीं गोसावी। तैसें केलें।२०। म्हणोनि रिकामें तोंड। करूं गेलें बडबड। कीं गीता ऐसें गोड। आतुडलें।२१। होय अदृष्ट आपैतें। तैं वाळूचि रत्नें परते। उजू आयुष्य तैं मारितें। लोभ करी।२२। आधणीं घातलिया हरळ। होती अमृताचे तांदुळ। जरी भुकेची राखे वेळ। श्रीजगन्नाथ।२३। तयापरी श्रीगुरु। करिती जैं अंगिकारु। तैं होऊनि ठाके संसारु। मोक्षमय आघवा।२४। पाहा पां काई श्रीनारायणें। तया पांडवांचें उणें। कीजेचि ना पुराणें। विश्ववंद्यें।२५। तैसें श्रीनिवृत्तिराजें। अज्ञानपण हे माझें। आणिलें वोजे। ज्ञानाचिया।२६। परि हें असो आतां। प्रेम रुळतसे बोलतां। कें गुरुगौरव वर्णितां। उन्मेष असे।२७। आतां तेणेचि पसायें। तुम्हां संतांचे मी पाये। वोळगेन अभिप्रायें। श्रीगीतेचेनी।२८। तरि तोचि प्रस्तुती। चौदाविया अध्यायाच्या अंती। निर्णय कैवल्यपती। ऐसा केला।२९। जे ज्ञान जयाच्या हातीं। तोचि समर्थ मुक्ती। जैसा शतमख संपत्ती। स्वर्गीचिये।३०। कां शत एक जन्मां। जो जन्मोनि ब्रह्मकर्मा। करी तोचि ब्रह्मा। आन नोहे।३१। नातरी सूर्याचा प्रकाश। लाहे जेविं डोळस। तेविं ज्ञानचि सौरस। मोक्षाचा तो।३२। तरि तया ज्ञानालागीं। कवणा पां योग्यता आंगी। हें पाहतां जगीं। देखिला एक।३३। जें पाताळींचेही निधान। दावील कीर अंजन। परि होआवे लोचन। पायाळाचे।३४। तैसें मोक्ष देईल ज्ञान। येथ कीर नाहीं आन। परि तेंचि थारे ऐसे मन। शुद्ध होआवे।३५। तरी विरक्तीवांचूनि कंहीं। ज्ञानासि तगणेंचि नाहीं। हें विचारूनि ठाईं। ठेविलें देवें।३६। आतां विरक्तीची कवण परी। जे येऊनि मनातें वरी। हेंही सर्वज्ञें श्रीहरी। देखिलें असे।३७। जे विषें रांधिली रससोये। जै जेवणारा ठाउवी होये। तै तो ताटचि सांडूनि जाये। जियापरी।३८। तैसी संसारा या समस्ता। जाणिजे जैं अनित्यता। तैं वैराग्य दवडितां। पाठीं लागे।३९। आतां अनित्यत्व या कैसें। तेंचि वृक्षाकारमिषें। सांगिजत असे विश्वेशें। पंचदशीं।४०। उपडिलें कवतिकें। झाड येरीमोहरा ठाके। तें वेगें जैसें सुके। तैसें हे नोहे।४१। याचि एकेपरी। रूपकाचिया केसरी। सारीतसे वारी। संसाराची।४२। करूनि संसार वावो। स्वरूपीं अहंतेचा ठावो। होआवया अध्यावो। पंधरावा हा।४३। आतां हेंचि आघवें। ग्रंथगर्भींचे चांगावें। उपलविजेल जीवें। आकर्णिजो।४४। तरि महानंदसमुद्र। जो पूर्ण पूर्णिमाचंद्र। तो द्वारकेचा नरेंद्र। ऐसें म्हणे।४५। अगा पैं पंडुकुमरा। येतां पैं स्वरूपाचिया घरा। करीतसे आडवारा। विश्वाभास जो।४६। तो हा जगडंबरु। नोहे येथ संसारु। हा जाणिजे महातरु। थांवला असे।४७। परि येरां रुखासारिखा। तळीं मूळें वरी शाखा। हा तैसा नोहे म्हणोनि लेखा। नयेचि कवणा।४८। आगी कां कुऱ्हाडी। होय रिगावा जरी बुडीं। तरी हो कां भलतेवढी। वरिचील वाढी।४९। जे तुटलिया मूळापासीं। उलेडेल कां शाखांसीं। परी तैसी गोठी कायसी। हा सोपा नव्हे।५०। अर्जुना हें कवतिक। सांगतां असे अलौकिक। जे वाढी अधोमुख। रुखा यया।५१। जैसा भानु उंची नेणों कें। रश्मिजाळ तळीं फांके। संसार हें कावरुखें। झाड तैसें।५२। आणि आथीनाथी तितुकें। रुधलें असे येणेंचि एकें। कल्पांतींचेनि उदकें। व्योम जैसें।५३। कां रवीच्या अस्तमानीं। आंधारेनि कोंदे रजनी। तैसाचि हा गगनीं। मांडला असे।५४। यया फळ ना चुंबितां। फूल ना तुरंबितां। जें कांहीं पंडुसुता। तें रुखचि हा।५५। हा ऊर्ध्वमूळ आहे। परि उन्मूळिला नोहे। येणेंचि हा होये। शाडुळ गा।५६। आणि ऊर्ध्वमूळ ऐसें। निगदिलें कीर असे। परी अधींही असोसें। मूळें यया।५७। प्रबळला चौमेरी। पिंपळा कां वडाचिया परी। जे पारंबियामाझारीं। डहाळिया असती।५८। तेवींचि गा धनंजया। संसारतरू यया। अधींचि आधी खांदिया। हेंही नाहीं।५९। तरी ऊर्ध्वाहीकडे। शाखांचे मांदोडे। दिसताति अपाडें। सासिन्नले।६०। जालें गगनचि पालवीये। कां वारा मांडला रुखाचेंनि आयें। नाना

अवस्थात्रयें। उदय केला असे।६१। ऐसा हा एक। विश्वाकार विटंक। उदयला जाण रुख। ऊर्ध्वमूळ।६२। आतां ऊर्ध्व या कवण। येथें मूळ तें किंलक्षण। कां अधोमुखपण। शाखा कैसिया।६३। अथवा द्रुमा यया। अधीं जिया मुळिया। तिया कोण कैसिया। ऊर्ध्व शाखा।६४। आणि अश्वत्थ हा ऐसी। प्रसिद्धि कायसी। आत्मविदविलासीं। निर्णय केला।६५। हें आघवेंचि बरवें। तुझिये प्रतीतीसि फावे। तैसेनि सांगों सोलिवें। विन्यासें गा।६६। परी ऐकें गा सुभगा। हा प्रसंग असे तुजचिजोगा। कानचि करीं हो सर्वांगा। हियें आथिलिया।६७। ऐसें प्रेमरसें सुरफुरें। बोलिलें जंव यादववीरें। तंव अवधान अर्जुनाकारें। मूर्त जालें।६८। देव निरूपिती तें थेंकुलें। येवढें श्रोतेपण फांकलें। जैसें आकाशा खेंव पसरिलें। दाहीं दिशीं।६९। श्रीकृष्णोक्तिसागरा। हा अगस्तीचि दुसरा। म्हणौनि घोंट भरों पाहे एकसरा। आवघेयाचा।७०। ऐसी सोय सांडूनि खवळिली। आवडी अर्जुनीं देवें देखिली। तेथ जालेनि सुखें केली। कुरवंडी तया।७१।

श्रीभगवानुवाचः— ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम्।
छंदांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित्।१।

मग म्हणे धनंजया। तें ऊर्ध्व गा तरू यया। येणें रुखेंचि कां जया। ऊर्ध्वता गमे।७२। एऱ्हवीं मध्योर्ध्व अध। हे नाहीं जेथ भेद। अद्वयासी एकवद। जया ठायीं।७३। जो नाइकिजता नाद। जो असौरभ्यमकरंद। जो आंगाथिला आनंद। सुरतेंविण।७४। जया जें आऱ्हां परौतें। जया जें पुढें मागौतें। दृश्येंविण देखतें। अदृश्य जें।७५। उपाधीचा दुसरा। घालितां वोपसरा। नामरूपाचा संसारा। होय जयातें।७६। ज्ञातृज्ञेयाविहीन। नुसधेंचि जे ज्ञान। सुखा भरलें गगन। गाळींव जें।७७। जें कार्य ना कारण। जया दुजे ना एकपण। आपणयां जें जाण। आपणचि।७८। ऐसें वस्तु जें साचें। तें ऊर्ध्व गा यया तरूचें। तेथ आर घेणें मूळाचें। तें ऐसें असे।७९। तरी माया ऐसी ख्याति। नसतीच यया आथी। कां वांझेची संतति। वानणें जैसे।८०। तैसी सत् ना असत् होये। जे विचाराचें नाम न साहे। ऐसेया परीची आहे। अनादि म्हणती।८१। जे नानातत्त्वांची मांदुस। जे जगदभ्राचे आकाश। जे आकारजाताचें दुस। घडी केलें।८२। जे भवद्रुमबीजिका। जे प्रपंचचित्र भूमिका। विपरीतज्ञानदीपिका। सांचली जे।८३। ते माया वस्तुच्या ठायीं। असे जैसेनि नाहीं। मग वस्तुप्रभावचि पाहीं। प्रगट होय।८४। जेव्हां आपणया आली नीद। करी आपणपें जेविं मुग्ध। कां काजळी आणी मंद। प्रभा दीपीं।८५। स्वप्नीं प्रियापुढें तरुणांगी। निदेली चेवऊनि वेगी। आलिंगिलेनिवीण आलिंगी। सकाम करी।८६। तैसी स्वरूपीं जाली माया। आणि स्वरूप नेणणें जे धनंजया। तेंचि तरु यया। मूळ पहिलें।८७। वस्तूसी आपुला जो अबोध। तो ऊर्ध्वी आठुळैजे कंद। वेदांतीं हाचि प्रसिद्ध। बीजभाव।८८। घन अज्ञान सुषुप्ति। तो बीजांकुरभाव म्हणति। येर स्वप्न हन जागृति। हा फळभाव तियेचा।८९। ऐसी यया वेदांती। निरूपणभाषाप्रतीती। परी ते असो प्रस्तुती। अज्ञान मूळ।९०। तें ऊर्ध्व आत्मा निर्मळें। अधोर्ध्व सूचिती मूळें। बळिया बांधोनि आळें। मायायोगाचें।९१। मग आधिलीं संदेहांतरें। उठती जिये अपारें। तें चौपासी घेऊनि आगारें। खालावती।९२। ऐसें भवद्रुमाचें मूळ। हें ऊर्ध्वी करी बळ। मग आग्रियांचें बेंबळ। आधीं दावी।९३। तेथ चिद्वृत्ति पहिलें। महत्तत्त्व उमललें। तें पान वाल्हेंदुल्हें। एक निघे। मग सत्त्वरजतमात्मक। त्रिविध अहंकार जो एक। तो तिवणा अधोमुख। डिरु फुटे।९५। तो बुद्धीची घेऊनि आगारी। भेदाची वृद्धी करी। तेथ मनाचें डाळ धरी। साजेपणें।९६। ऐसा मूळाचिया गाढिका। विकल्परस कोंवळिका। चित्तचतुष्टय डाहाळिका। कोंभैजे तो।९७। मग आकाश वायु द्योतक। आप पृथ्वी हे पांच फोंक। महाभूतांचे साराख। सरळे होती।९८। तैसीं श्रोत्रादि तन्मात्रें। तियें अंगवसां गर्भपत्रें। लुळलुळितें विचित्रें। उमळती गा।९९। तेथ शब्दांकुर वरिपडी। श्रोत्रा वाढी देव्हडी। होता करि कांडीं। आकांक्षेची।१००। अंगत्वचेचें वेलपल्लव। स्पर्शांकुरीं घेती धांव। तेथें बांबळ पडे अभिनव। विकारांचें।१। पाठीं रूपपत्र पालोवेलीं। चक्षु लांब तें कांडें घाली। ते वेळीं व्यामोहता भली। पाल्हेली जाय।२। आणि रसाचे आंगवसें। वाढतां वेगें बहुवसें। जिव्हे आर्तीची असोसें। निघती बेंचे।३। तैसेंनि कोंभलेनि गंधें। घ्राणाची डिरी थांव बांधे। तेथ तळ घे स्वानंदें। प्रलोभाचा।४। एवं महदहंबुद्धि। मनें महाभूतसमृद्धि। इये संसाराचिया अवधि। सासनि जें।५। किंबहुना इहीं आठें। आंगीं हा अधिक फांटे। परी शिंपीचियेवढें उमटे। रुपे जेविं।६। कां समुद्राचेनि पैसारें। वरी तरंगता आस्तरे। तैसें ब्रह्मचि होय वृक्षाकारें। अज्ञानमूळ।७। आतां याचाचि हा विस्तार। हाचि यया पैसार। जैसा आपणपें स्वप्नीं परिवार। येकाकिया।८। परि तें असो हें ऐसें। कावरें झाड उससे। यया महदादि आरवसें। अधोशाखा।९। आणि अश्वत्थ ऐसे ययातें। म्हणती जें जाणते। तेंही परिस हो येथें। सांगिजेल।११०। तरि अश्वत्थ म्हणिजे उखा। तंववरी एकसारिखा। नाहीं निर्वाह यया रुखा। प्रपंचरूपा।११। जैसा न लोटतां क्षण। मेघ होय नानावर्ण। कां विजु नसे संपूर्ण। निमेषभरी।१२। कांपतया पद्मदळा। वरिलिया बैसका नाहीं जळा। कां चित्त जैसे व्याकुळा। माणुसाचें।१३। तैसीचि ययाची स्थिति। नासत जाय क्षणाक्षणाप्रती। म्हणोनि ययातें म्हणती। अश्वत्थ हा।१४। आणि अश्वत्थु येणें नांवें। पिंपळ म्हणती स्वभावें। परि तो अभिप्राय नोहे। श्रीहरीचा।१५। एऱ्हवीं पिंपळ म्हणतां विखीं। मियां गति देखिली असे निकी। परि तें असो काय लौकिकीं। तुम्हां काज।१६। म्हणोनि हा प्रस्तुत। अलौकिक परिसा ग्रंथ। तरी क्षणिकत्वेंचि अश्वत्थ। बोलिजे हा।१७। आणीकही येर थोर। यया अव्ययत्वाचा डगर। आथी परी तो भीतर। ऐसा

आहे ।१८। जैसा मेघांचेनि तोंडें। सिंधु एके आंगें काढे। आणि नदी येरीकडे। भरितीची असती ।१९। तेथ वोहटे ना चढे। ऐसा परिपूर्णचि आवडे। परी ते फुली जंव
नुघडे। मेघानदीची ।१२०। ऐसें या रुखाचें होणें जाणें। न तर्के होतेनि वहिलेपणें। म्हणोनि ययातें लोक म्हणे। अव्यय हा ।२१। येऱ्हवीं दानशीळ पुरुष। वेंचकपणें
संचक। तैसा व्ययेंचि हा रुख। अव्यय गमे ।२२। जातां वेगें बहुवसें। न वचे कां भूमी रुतलें असे। रथाचें चक्र दिसे। जिया परी ।२३। तैसें काळातिक्रमें जे वाळे। ते
भूतशाखा जेथ गळे। तेथ कोडीवर उमाळे। उठती आणिक ।२४। परी येकी केधवा गेली। शाखाकोडी केधवां आली। हें नेणवे जेविं उमललीं। आषाढअभ्रें ।२५।
महाकल्पाच्या शेवटीं। उदेलिया उमळती सृष्टि। तैसेंचि आणिखीचें दांग उठी। सासिन्नलें ।२६। संहारवातें प्रचंडें। पडती प्रळयांतींचीं सालडें। तंव कल्पादीचीं जुंबाडें।
पाल्हेजती ।२७। रिगे मन्वंतर मनूपुढें। वंशावरी वंशाचे मांडे। जैसी इक्षुवृद्धि कांडेनकांडें। जिंके जेविं ।२८। कलियुगांतीं कोरडी। चहूं युगांची सालें सांडी। तंव
कृतयुगाची पेली देव्हडी। पडे पुढती ।२९। वर्ततें वर्ष जाये। तें पुढिला मुळ्हारी होये। जैसा दिवसा जात कीं येत आहे। हें चोजवेना ।१३०। जैसा वारियाचा झुळकां।
सांदा ठाउवा नव्हे देखा। तैसिया उठती पडती शाखा। नेणों किती ।३१। एकी देहाची डिरी तुटे। तंव देहांकुरीं बहुवीं फुटे। ऐसेनि भवतरु हा वाटे। अव्यय ऐसा ।३२।
जैसें वाहतें पाणी जाय वेगें। तैसेंचि आणिक मिळे मागे। येथ असंतचि असिजे जगे। मानिजे संत ।३३। कां लागोनि डोळा उघडे। तंव कोडीवरी घडे मोडे। नेणतया
तरंग आवडे। नित्य ऐसा ।३४। वायसा एके बुबुळें दोहींकडे। डोळा चाळितां अपाडें। दोन्ही आथी ऐसा पडे। भ्रम जेविं जगा ।३५। पैं भिंगोरी निधिये पडली। ते गमे
भूमीसी जैसी जडली। ऐसा वेगातिशय भुली। हेतु होय ।३६। हें बहु असो झडती। आंधारीं भोवंडिता कोलती। ते दिसे जैसी आयती। चक्राकार ।३७। हा संसारवृक्ष
तैसा। मोडत मांडत सहसा। न देखोनि लोक पिसा। अव्यय मानी ।३८। परि ययाचा वेग देखे। जो हा क्षणिक ऐसा वोळखे। जाणे कोडिवेळां निमिखें। होत जात ।३९।
नाहीं अज्ञानावांचूनि मूळ। ययाचें असिलेपण टवाळ। ऐसें झाड सीनसाळ। देखिलें जेणें ।१४०। तयातें गा पंडुसुता। मी सर्वज्ञही म्हणे जाणतां। पैं वाग्ब्रह्मीसिद्धांता।
वंद्य तोचि ।४१। योगजाताचें जोडलें। तया एकासीचि उपयोगा गेलें। किंबहुना जियालें। ज्ञानही तेणें ।४२। हें असो बहु बोलणें। वानिजेल तो कवणें। जो भवरुख
जाणें। उखि ऐसा ।४३।

अधश्चोर्ध्वं प्रसृतास्तस्य शाखा गुणप्रवृद्धाविषयप्रवालाः।
अधश्च मूलान्यनुसंततानि कर्मानुबंधीनि मनुष्यलोके ।२।

मग ययाची प्रपंचरूपा। अधोशाखिया पादपा। डाहाळिया जाती उमपा। ऊर्ध्वाही उजू ।४४। आणि अधीं फांकलीं डाळें। तियें होती मूळें। तयांही तळीं पघळे। वेल
पालव ।४५। ऐसें जें आम्हीं। म्हणितलें उपक्रमीं। तेंही परिसें सुगमीं। बोलीं सांगों ।४६। तरी बद्धमूल अज्ञानें। महदादिकीं शासनें। वेदांची थोर वनें। घेऊनियां ।४७।
परि आधी तंव स्वेदज। जरायुज उद्भिज अंडज। हें बुडौनि महाभुज। उठती चारी ।४८। यया एकैकाचेनि आंगवटें। चौऱ्यांशीं लक्षधा फुटे। ते वेळीं जीवशाखीं फांटे।
सैंधचि होती ।४९। प्रसवत शाखा सरळिया। नानासृष्टि डाहाळिया। आड फुटती माळिया। जातीचिया ।१५०। स्त्री पुरुष नपुंसकें। हे व्यक्तिभेदांचे टके। आंदोळती
आंगिकें। विकारभारें ।५१। जैसा वर्षाकाळ गगनीं। पाल्हेजे नवघनीं। तैसें आकारजात अज्ञानीं। वेली जाय ।५२। मग शाखांचेनि आंगभारें। लवोनि गुंफती परस्परें।
गुणक्षोभाचे वारे। उदयजती ।५३। तेथ तेणें अचाटें। गुणाचेनि झडझडाटें। तिहीं ठायीं हा फांटे। ऊर्ध्वमूळ ।५४। ऐशा रजाचिया झुळुका। झडाडितां आगळिका।
मनुष्यजातिशाखा। थोरावती ।५५। तिया ऊर्ध्वीं ना अधीं। माझारींचि कोंदाकोंदी। आड फुटती खांदी। चतुर्वर्णांच्या ।५६। तेथ विधिनिषेध सपल्लव। वेदवाक्यांचे अभिनव।
पालव डोलती बरव। आपुलालियापरी ।५७। अर्थ काम पसरे। अग्रवनें घेती थारे। तेथ क्षणिकें पदांतरे। देहभोगाची ।५८। तेथ प्रवृत्तीचेनि वृद्धिलोभें। खांकरेजती
शुभाशुभें। नानाकर्मांचे खांबे। नेणों किती ।५९। तेवींचि भोगक्षीणें मागिलें। पडती देहांतींचीं बुडसळें। तंव पुढां वाढी पेले। नवेया देहांची ।१६०। आणि शब्दादिक
सुहावे। सहज रंगें हवावे। विषयपल्लव नवे। नित्य होती ।६१। ऐसे रजोवातें प्रचंडें। मनुष्यशाखांचे मांदोडे। वाढती तो एथ रूढे। मनुष्यलोक ।६२। तैसाचि तो रजाचा
वारा। नावेक धरी वोसरा। मग वाजों लागे घारा। तमाचा तो ।६३। तेधवां याचिया मनुष्यशाखा। नीच वासना आधी देखा। पाल्हेजती डाहाळिका। कुकर्माचिया ।६४।
अप्रवृत्तीचे खणुवाळे। कोंभ निघती सरळे। घेत पान पालव डाळें। प्रमादाचीं ।६५। बोलती निषेधनियमें। जिया ऋग्यजुःसामें। तो पाला तया घुमे। टकेयावरी ।६६।
प्रतिपादिती अभिचार। आगम ते परमार। तिहीं पानीं घेती प्रसर। वासना वेली ।६७। तंव तंव होती थोराडें। अकर्माची तळबुडें। आणि जन्मशाखा पुढेंपुढें। घेती
धांव ।६८। तेथ चांडाळादि निकृष्टा। दोषजातीचा थोर फांटा। जाळ पडे कर्मभ्रष्टां। भुलोनियां ।६९। पशु पक्षी सूकर। व्याघ्र वृश्चिक विखार। हे आडशाखाप्रकार।
थोरावती ।१७०। परि ऐशा शाखा पांडवा। सर्वांगींही नित्य नवा। नरकभोग यावा। फळाचा तो ।७१। आणि हिंसाविषय पुढारीं। कुकर्मसंगें धुर धरी। जन्मवरी आगारी।
वाढतीचि असे ।७२। ऐसे होती तरु तृण। लोह लोष्ठ पाषाण। इया खांदिया तेवींचि जाण। फळेंही हेचि ।७३। अर्जुना गा अवधारीं। मनुष्यालागोनि इयापरी। वृद्धि

स्थावरांतवरी। अधोशाखांची ।७४। म्हणोनि जें मनुष्यडाळें। तियें जाणावीं अधींचि मूळें। जे एथूनि हा पघळे। संसारतरु ।७५। एऱ्हवीं ऊर्ध्वींचे पार्था। मुद्दल मूळ पाहातां। अधींचिया मध्यस्था। शाखा इया ।७६। परि तामसी सात्त्विकी। सुकृतदुष्कृतात्मकी। विरूढती या शाखीं। अधोर्ध्वींचिया ।७७ ।आणि वेदत्रयीचिया पाना। नये अन्यत्र लागों अर्जुना। जे मनुष्यावांचूनि विधाना। विषय नाहीं ।७८। म्हणोनि तनु मानुषा। इया ऊर्ध्वमूळौनि जरी शाखा। तरी कर्मवृद्धीसि देखा। इयेंचि मूळें ।७९। आणि आनीं तरी झाडी। शाखा वाढतां मूळें गाढी। मूळ गाढें तंव वाढी। पैस आथी ।१८०। तैसेंचि इया शरीरा। कर्म तंव देहा संसारा। आणि देह तंव व्यापारा। ना म्हणोंचि न ये ।८१। म्हणोनि देहें मानुषें। इयें मूळें होती न चुके। ऐसे जगज्जनकें। बोलिलें तेणें ।८२। मग तमाचें तें दारुण। स्थिरावलेया वाउधाण। सत्त्वाची सुटे सत्राण। वाहुटळी ।८३। तैं याचि मनुष्याकारा। मुळी सुवासना निघती आरा। घेऊनि फुटति कोंबारा। सुकृतांकुरीं ।८४। उकलतेनि उन्मेखें। प्रज्ञाकुशलतेंचि तिखें। डिरिया निघती निमिखें। बांबळैजुनी ।८५। मतीचे सोट वावे। घालिती स्फूर्तीचे थांवे। बुद्धिप्रकाश घे धांवे। विवेकावरी ।८६। तेथ मेधारसें सगर्भ। आस्थापत्रीं सबोंब। सरळ निघती कोंभ। सद्वृत्तीचे ।८७। सदाचाराचिया सहसा। टका उठती बहुवसा। घुमघुमिती घोषा। वेदपद्याच्या ।८८। शिष्ठागमविधानें। विविधयागवितानें। इये पानावरी पानें। पालेजती ।८९। ऐसा यमदमीं घोंसाळिया। उठती तपाचिया डाहाळिया। देती वैराग्यशाखा कोंवळिया। वेल्हाळपणें ।१९०। विशिष्ठा व्रतांचे फोक। धीराच्या अणगटी तिख। जन्मवेगें ऊर्ध्वमुख। उंचावती ।९१। माजि वेदाचा पाला दाट। तो करी सुविद्येचा झडझडाट। जंव वाजे अचाट। सत्वानिळ ।९२। तेथ धर्मडाळवाहाळीं। दिसती जन्मशाखा सरळी। तिया आड फाटती फळीं। स्वर्गादिकीं ।९३। पुढां उपरति रागें लोहिवी। धर्ममोक्षाची शाखा पालवी। पाल्हाजत नित्य नवी। वाढतीचि असे ।९४। पैं रविचंद्रादि ग्रहवर। पितृ ऋषि विद्याधर। हे आडशाखाप्रकार। पैस घेती ।९५। याहीपासून उंचवडें। गुढले फळाचेनि बुडें। इंद्रादिक ते मांदोडे। थोर शाखांचे ।९६। मग तयांही उपरी डाहाळिया। तपोधनीं उंचावलिया। मरीचिकश्यपादि इया। उपरिशाखा ।९७। एवं माळोवाळी उत्तरोत्तर। ऊर्ध्वशाखांचा पैसार। बुडीं साना अग्रीं थोर। फळाढ्य हा ।९८। वरी उपरिशाखाही पाठी। येती फळभार जे किरीटी। ते ब्रह्मेशांत अणगटीं। कोंभ निघती ।९९। फळाचेनि वोझेपणें। ऊर्ध्वी वोवाडे दुणें। जंव माघौतें बैसणें। मूळींचि होय ।२००। प्राकृताही तरी रुखा। जे फळें दाटली होय शाखा। ते वोवांडली देखा। बुडासीं ये ।१। तैसें जेथूनि हा आघवा। संसारतरूचा उठावा। तियें मूळीं टेंकती पांडवा। वाढतेनि ज्ञानें ।२। म्हणौनि ब्रह्मेशानापरौतें। वाढणें नाहीं जीवातें। तेथूनि मग वरौतें। ब्रह्मचि कीं ।३। परि हें असो ऐसें। ब्रह्मादिक ते आंगवसें। ऊर्ध्वमूळासरिसे। न तुकती गा ।४। आणिकही शाखा उपरता। जिया सनकादिक नामें विख्याता। तिया फळीं मूळीं नाडळतां। भरलिया ब्रह्मीं ।५। ऐसी मनुष्यापासूनि जाणावी। ऊर्ध्वी ब्रह्मादि शेष पालवी। शाखांची वाढी बरवी। उंचावे पैं ।६। पार्था ऊर्ध्वींचिया ब्रह्मादि। मनुष्यत्वचि होय आदि। म्हणोनि इथें अधीं। म्हणितलीं मूळें ।७। एवं तुज अलौकिक। हा अधोर्ध्वशाख। सांगितला भवरुख। ऊर्ध्वमूळ ।८। आणि अधींचीं ही मूळें। उपपत्ती परिसविली सविवळें। आतां परिस उन्मूळे। कैसेनि हा ।९।

न रूपमस्येह तथोपलभ्यते नांतो न चादिर्न च संप्रतिष्ठा।
अश्वत्थमेनं सुविरूढमूलमसङ्शस्त्रेण दृढेन छित्वा ।३।

परी तुझ्या हन पोटीं। ऐसें गमेल किरीटी। जे येवढें झाड उत्पाटी। ऐसें कायि असे ।२१०। कीं ब्रह्मयाच्या शेवटवरी। ऊर्ध्व शाखांची थोरी। आणि मूळ तंव निराकारीं। ऊर्ध्वी असे ।११। हा स्थावराही तळीं। फांकत असे अधींच्या डाळीं। माजि धांवतसे दुजां मळीं। मनुष्यरूपीं ।१२। ऐसा गाढा आणि अफाट। आतां कोण करी यया शेवट। तरी झणीं हा हळुवट। धरिसी भाव ।१३। तरी हा उन्मूळावया दोषें। येथ सायासचि कायिसे। काय बाळा बागुल देशें। दवडावा आहे ।१४। गंधर्वदुर्ग कायी पाडावे। काय शशविषाण मोडावें। होआवें मग तोडावें। खपुष्प कीं ।१५। तैसा संसार हा वीरा। रुख नाहीं साचोकारा। मा उन्मूळणीं दरारा। कायिसासा तरी ।१६। आम्हीं सांगितली जे परी। मूळडाळांची उजरी। ते वांझेचीं घरभरीं। लेंकरें जैसीं ।१७। काय कीजती चेइलेपणीं। स्वप्नींचीं तियें बोलणीं। तैसी जाण ते काहाणी। दुबळीचि ते ।१८। वांचूनि आम्हीं निरूपिलें जैसें। ययाचें अचळ मूळ असे तैसें। आणि तैसाचि जरी हा असे। साचोकारा ।१९। तरी कोणाचेनि संतानें। निपजती जया उन्मूळणें। काय फुंकिलिया गगनें। जाइजेल गा ।२२०। म्हणोनि पैं धनंजया। आम्हीं वानिलें रूप तें माया। कांसवीचेनि तुपें राया। वोगरिलें जैसें ।२१। मृगजळाचीं गा तळीं। तिये दिठी दुरूनि न्याहाळीं। वांचूनि तेणें पाणियें साळीकेळी। लाविसी काई ।२२। मूळ अज्ञानचि तंव लटिकें। मा तयाचें कार्य हें केतुकें। म्हणोनि संसाररुख सत्यकें। वावोचि गा ।२३। आणि अंत यया नाहीं। ऐसें बोलिजे जें कांहीं। तेंही साचचि पाहीं। येके परी ।२४। तरी प्रबोधि जंव नोहे। तंव निद्रे काय अंत आहे। कीं रात्री न सरे तंव न पाहे। तया आरौतें ।२५। तैसा जंव पार्था। विवेके नुधवी माथा। तंव अंत नाहीं अश्वत्था। भवरूपा या ।२६। वाजतें वारें निवांत। न राहें जेथींचें तेथ। तंव तरंगता अनंत। म्हणावीच कीं ।२७। म्हणौनि सूर्य जै हारपे। तैं मृगजळाभास लोपे। कां प्रभा जाय दीपें। मालवलेनि ।२८। तैसें मूळ अविद्या खाये। तें ज्ञान जैं उभें होये। तैंचि यया अंत आहे। येऱ्हवीं नाहीं ।२९। तेवींचि हा अनादि। ऐसी ही आथी शाब्दी। तो आळु नोहे अनुरोधी। बोलातें यया ।२३०। जे संसारवृक्षाच्या

ठाईं। साचोकार तंव नाहीं। मा नाहीं तया आदि काई। कोण होईल।३१। जो साच जेथूनि उपजे। तयातें आदि हे साजे। आतां नाहींचि तो म्हणिजे। कोठूनियां।३२। म्हणौनि जन्मे ना आहे। ऐसिया सांगों कवण माये। यालागीं नाहींपणेंचि होये। अनादि हा।३३। वांझेचिया लेंका। कैंची जन्मपत्रिका। नभीं निळी भूमिका। कें कल्पूं पां।३४। व्योमकुसुमाचा पांडवा। कवणें देठ तोडावा। म्हणौनि नाहीं ऐसिया भवा। आदि कैंची।३५। जैसें घटाचे नाहींपण। असतचि असे केलेनिविण। तैसा समूळ वृक्ष जाण। अनादि हा।३६। अर्जुना ऐसेनि पाहीं। आद्यंत ययासि नाहीं। माजि स्थिति आभासे कांहीं। परि टवाळ ते गा।३७। ब्रह्मगिरीहूनि न निगे। आणि समुद्रींही कीर न रिगे। तरि माजि दिसे वाउगें। मृगांबु जैसें।३८। तैसा आद्यंत कीर नाहीं। आणि साचचि नोहे कंहीं। परी लटिकेपणाची नवाई। पडिभासे गा।३९। नाना रंगीं गजबजे। जैसें इंद्रधनुष्य देखिजे। तैसा नेणतया आपजे। आहे ऐसा।२४०। ऐसेनि स्थितीचिये वेळे। भुलवी अज्ञानाचे डोळे। लाघवी हरी मेखळें। लोक जैसा।४१। आणि नसतीचि श्यामिका। व्योमीं दिसे तैसी दिसो कां। तरी दिसणेंही क्षणा एका। होय जाय।४२। स्वप्नींही मानिलें लटिकें। तरी निर्वाहो कां एकसारिखें। तेविं आभास हा क्षणिकें। रिताचि गा।४३। देखतां आहे आवडे। घेऊं जाइचे तरी नातुडे। जैसा टिकु कीजे माकडें। जळामाजीं।४४। तरंगभंग संडी पडे। विजूही न पुरे होडे। आभासासि तेणें पाडें। होणें जाणें गा।४५। जैसा ग्रीष्मशेषींचा वारा। नेणिजे समोर कीं पाठिमोरा। तैसी स्थिति नाहीं तरुवरा। भवरूपा यया।४६। एवं आदि ना अंत स्थिति। ना रूप ययासि आथी। आतां कायसी कुंथाकुंथी। उन्मूळनीं गा।४७। आपुलिया अज्ञानासाठीं। नव्हता थांवला किरीटी। तरि आतां आत्मज्ञानाच्या लोटी। खांडेनि गा।४८। वांचूनि ज्ञानेंवीण एकें। उपाय करिसी जितुके। तिहीं गुंफसि अधिकें। रुखीं इये।४९। मग किती खांदोखांदी। यया हिडावें उर्ध्वीं अधीं। म्हणौनि मूळचि अज्ञान छेदीं। सम्यक् ज्ञानें।२५०। येऱ्हवीं दोरीचिया उरगा। डांगा मेळविता पैं गा। तो शीणचि वाउगा। केला होय।५१। तरावसा मृगजळाची गंगा। डोणीलागीं धांवतां दांगा। माजीं वोहळें बुडिजे पैं गा। साच जेवीं।५२। तेविं नाथिलिया संसारा। उपाईं जाचतया वीरा। आपणपें लोपे वारा। विकोपीं जाय।५३। म्हणोनि स्वप्नींचेया घाया। औषध चेवोचि धनंजया। तेविं अज्ञानमूळा यया। ज्ञानचि खड्ग।५४। परि तेंचि लीला परजवे। तैसें वैराग्याचें नवें। अभंगबळ होआवें। बुद्धीसी गा।५५। उठिलेनि वैराग्यें जेणें। हा त्रिवर्ग ऐसा सांडणें। जैसें वमूनिया सुणें। आतांचि गेलें।५६। हा ठायवरी पांडवा। पदार्थजातीं आघवा। विटवी तो होआवा। वैराग्य लाठु।५७। मग देहाहंतेचे दळें। सांडूनि एकेचि वेळे। प्रत्यक्‌बुद्धी करतळें। हातवसावे।५८। निसिलें विवेकसाहणें। जें ब्रह्माहमस्मिबोधें सणाणें। मग पुरतेनि बोधें उटणें। एकलेचि।५९। परि निश्चयाचें मुष्टिबळ। पाहावें एकदोन वेळ। मग तुळावें अति चोखाळ। मननवरी।२६०। पाठीं हतियेरा आपणया। निदिध्यासें एक जालिया। पुढें दुजें नुरेल घाया–। पुरतें गा।६१। तें आत्मज्ञानाचें खांडें। अद्वैतप्रभेचे निवाडें। नेदील उरो कवणेकडे। भववृक्षासी।६२। शरदागमींचा वारा। जैसा केर फेडी अंबरा। कां उदयला रवी आंधारा। घोंट भरी।६३। नाना उपवड होतखेंवो। नुरे स्वप्नसंभ्रमाचा ठावो। स्वप्रतीतिधारेचा वाहो। करील तैसें।६४। तेव्हां ऊर्ध्व कां अधो मूळ। कां अधींचें हन शाखाडाळ। तें कांहींचि न दिसे मृगजळ। चांदिणा जेवीं।६५। ऐसेनि गा वीरनाथा। आत्मज्ञानाचिया खड्लता। छेदुनिया भवाश्वत्था। ऊर्ध्वमूळातें।६६।

ततः पदं तत्परिमार्गितव्यं यस्मिन् गता न निवर्तंति भूयः।
त्वमेव चाद्यं पुरुषं प्रपद्ये यतः प्रवृत्तिः प्रसृता पुराणी।४।

म्गा इदंतेसि वाळलें। जें मीपणेंवीण डाहारलें। तें रूप पाहिजे आपलें। आपणचि।६७। परि दर्पणाचेनि आधारें। एकचि करून दुसरें। मुख पाहाती गव्हारे। तैसें नको हो।६८। हें पाहाणें ऐसें असे वीरा। जैसा न मोडलिया विहिरा। मग आपलिया उगमीं झरा। भरोनि ठाके।६९। ना तरी आटलिया अंभ। निजबिंबीं प्रतिबिंब। नेहटे कां नभीं नभ। घटाभावीं।२७०। ना ना इंधनांशु सरलेया। वह्नि परते जेविं आपणपयां। तैसें आपेंआप धनंजया। न्याहाळणें जें।७१। जिह्वे आपुली चवी चाखणें। चक्षू निजबुबुळ देखणें। आहे तया ऐसें निरीक्षणें। आपुले पैं।७२। कां प्रभेसि प्रभा मिळे। गगन गगनावरी लोळें। नाना पाणी भरलें खोळे। पाणियाचिये।७३। आपणपें आपणयातें। पाहिजे जें अद्वैतें। तें ऐसें होय निरुतें। बोलिजतु असे।७४। जें पाहिजतेवीण पाहिजे। कांहीं नेणणाचि जाणिजे। आद्यपुरुष म्हणिजे। जया ठायातें।७५। तेथही उपाधीचा वोथंबा। घेऊनि श्रुति उभविती जिभा। मग नामरूपांचा बडंबा। करिती वायां।७६। पैं भवस्वर्गा उबगले। मुमुक्षु मोक्षज्ञाना वळघले। पुढती न यो इया निगाले। पैजा जेथ।७७। संसाराचिया पायां पुढां। पळती वीतराग होडा। ओलांडोनि ब्रह्मपदाचा कर्मकडा। घालिती मागां।७८। अहंतादिभावां आपुलियां। झाडा देऊनि आघवेयां। पत्र घेती ज्ञानिये जया। मूळघरासी।७९। पैं जेथुनी हे येवढी। विश्वपरंपरेची विरूढी। वाढती आशा जैसी कोरडी। निदैवाची।२८०। जिये कां वस्तूचें नेणणें। आणिलें थोर जगा जाणणें। नाहीं तें नांदविलें जेणें। मी तूं जगीं।८१। पार्था तें वस्तु पहिलें। आपण पैं आपुलें। पाहिजे जैसें हिंवलें। हिंव हिंवें।८२। आणीकही एक तया। वोळखण असे धनंजया। तरी कां जया भेटलिया। येणेंचि नाहीं।८३। परी तया भेटती ऐसे। जे ज्ञानें सर्वत्र सरिसे। महाप्रळयांबूचें जैसें। भरलेपण।८४।

निर्मानमोहा जितसंगदोषा
अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामाः।
द्वंद्वैर्विमुक्ताः सुखदुःखसंज्ञै–
र्गच्छंत्यमूढाः पदमव्ययं तत्।५।

जयां पुरुषांचें कां मन। सांडोनि गेले मोहमान। वर्षांतीं जैसें घन। आकाशातें।८५। निकवड्या निष्ठुरा। उबगिजे जेविं सोयरा। तैसें नागवती विकारां। वेंटाळूं जे।८६। फळली केळी उन्मूळे। तैसी आत्मलाभे प्रबळे। जयाची क्रिया ढाळेंढाळें। गळती आहे।८७। आगी लागलिया रुखीं। देखोनि सैरा पळती पक्षी। तैसें सांडिलें अशेखीं। विकल्पीं जे।८८। आइकें सकळ दोषतृणीं। अंकुरिजती जिये मेदिनी। तिये भेदबुद्धीची काहाणी। नाहीं जयातें।८९। सूर्योदयासरिसी। रात्री पळोनि जाय अपैसी। गेली देहअहंता तैसी। अविद्येसवें।२९०। पैं आयुष्यहीना जीवातें। शरीर सांडी जेविं अवचितें। तेविं निदसुरें द्वैतें। सांडिले जे।९१। लोहाचें सांकडें परिसा। न जोडे अंधार रवि जैसा। द्वैतबुद्धीचा तैसा। दुष्काळ सदा जया।९२। अगा सुखदुःखाकारें। द्वंद्वें देहीं जियें गोचरें। तियें जया कां समोरें। होतीचि ना।९३ स्वप्नींचें राज्य का मरण। नोहे हर्षशोकांसि कारण। उपवढलिया जाण। जियापरी।९४। तैसे सुखदुःखरूपीं। द्वंद्वीं जे पुण्यपापीं। न घेपिजती सर्पीं। गरुड जैसे।९५। आणि अनात्मवर्गनीर। सांडूनि आत्मरसाचें क्षीर। धरताति जे सविचार। राजहंस।९६। जैसा वर्षोनि भूतळीं। आपला रस अंशुमाळी। मागौता आणी रश्मिजाळीं। बिंबासीचि।९७। तैसें आत्मभ्रांतीसाठीं। वस्तु विखुरली बारावाटीं। ते एकवटिती ज्ञानदृष्टी। अखंड जे।९८। किंबहुना आत्मयाचा। निर्धारी विवेकु जयाचा। बुडाला वोघु गंगेचा। सिंधुमाजि जैसा।९९। पैं आघवेंचि आपुलेपणें। नुरेचि तया अभिलषणें। जैसें जेथुनि पऱ्हां जाणें। आकाशा नाहीं।३००। जैसा अग्नीचा डोंगर। नेघे कोणी बीज अंकुर। तैसा मनीं जयांच्या विकार। उदयजेना।१। जैसा काढिलिया मंदराचळ। राहे क्षीराब्धि निश्चळ। तैसा नुठी जयां सळ। कामोर्मीचा।२। चंद्रमा कळीं धाला। न दिस कोणें आंगीं वोसावला। तेविं अपेक्षेचा अवखळा। न पडे जयां।३। हें किती बोलूं असांगडें। जेविं परमाणु नुरे वायूपुढें। तैसें विषयाचें नावडे। नांवचि जयां।४। एवं जे जे कोणी ऐसे। केले ज्ञानाख्यहुताशें। ते तेथ मिळती जैसें। हेमीं हेम।५। तेथ म्हणिजे कवणे ठाईं। ऐसेंही पुससी कांहीं। तरि तें पद गा नाहीं। वेंचु जया।६। दृश्यपणें देखिजे। कां ज्ञेयत्वें जाणिजे। अमुकें ऐसें म्हणिजे। तें जें नव्हे।७।

न तद्भासयते सूर्यो न शशांको न पावकः।
यद्गत्वा न निवर्तंते तद्धाम परमं मम।६।

पैं दीपाचिया बंबाळीं। कां चंद्र हन जें उजळीं। हें काय बोलों अंशुमाळी। प्रकाशीं जें।८। तें अवघेंचि दिसणें। जयाचें का न देखणें। विश्व भासतसे जेणें। लपालेनी।९। जैसें शिंपीपण हारपे। तंव तंव खरें होय रुपें। कां दोरी लोपतां सापे। फार होइजे।३१०। तैसीं चंद्रसूर्यादि थोरें। इथें तेजें जिये फारें। तियें जयाचेनि आधारें। प्रकाशती।११। ते वस्तु की तेजोराशी। सर्वभूतात्मक सरिसी। चंद्रसूर्याच्या मानसीं। प्रकाशे जे।१२। म्हणौनि चंद्रसूर्य कडवसा। पडतीं वस्तूच्या प्रकाशा। यालागीं तेज जें तेजसां। तें वस्तूचें आंग।१३। आणि जयाच्या प्रकाशीं। जग हारपे चंद्रार्केसीं। सचंद्र नक्षत्रें जैसीं। दिनोदयीं।१४। ना तरी प्रबोधलिये वेळे। ते स्वप्नींची दिंडी मावळे। कां नुरेचि सांजवेळे। मृगतृष्णिका।१५। तैसा जिये वस्तूच्याठायीं। कोण्हीच कां आभास नाहीं। तें माझें निजधाम पाहीं। पाटाचें गा।१६। पुढती जे तेथ गेले। तें न घेतीचि माघौतीं पाउलें। महोदधीं कां मिनले। स्रोत जैसे।१७। कां लवणाची कुंजरी। सुदलिया लवणसागरीं। होयचि ना माघारी। परती जैसी।१८। नाना गेलिया अंतराळा। न येतीचि वह्निज्वाळा। नाहीं तप्तलोहौनि जळा। निघणें जेवीं।१९। तेविं मजसीं एकवट। जे जाले ज्ञानें चोखट। तयां पुनरावृत्तीची वाट। मोडली गा।३२०। तेथ प्रज्ञापृथ्वीचा रावो। पार्थ म्हणे जी जी पसावो। परी विनंती एकी देवो। चित्त देतु।२१। तरी देवेंसीं स्वयें एक होती। मग माघौति जे न येती। तें देवेंसीं भिन्न आथी। कीं अभिन्न जी।२२। जरि भिन्नचि अनादिसिद्ध। तरी न येती हें असंबद्ध। जे फुलां गेले षट्पद। ते फुलेंचि होती कां।२३। पैं लक्ष्याहूनि अनारिसें। बाण लक्ष्यीं शिवोनि जैसे। मागुते पडती तैसे। येतीचि ते।२४। ना तरि तूंचि ते स्वभावें। तरि कोण कोणेंसीं मिळावें। आपणयासीं आपण रुपावें। शस्त्रें केवीं।२५। म्हणौनि तुजसी अभिन्ना जीवां। तुझा संयोगवियोग देवा। नय बोलों अवयवां। शरीरेसीं।२६। आणि जे सदा वेगळे तुजसीं। तयां मिळणी नाहीं कोणे दिवसीं। मा येती न येती कायसी। वायबुद्धी।२७। तरि कोण गा ते तूतें। पावोनि न येती माघौते। हे विश्वतोमुखा मातें। बुझावीं जी।२८। इये आक्षेपी अर्जुनाच्या। तो शिरोमणि सर्वज्ञांचा। तोषला बोध शिष्याचा। देखोनियां।२९। मग म्हणे गा महामती। मातें पावोन न येती पुढती। ते भिन्नभिन्न रीती। आहाती दोनी।३३०। जैं विवेकें खोलें पाहिजे। तरी मी तेचि ते सहजें। ना आहाचवाहाच तरी दुजे। ऐसेही गमती।३१। जैसें पाणियावरी वेगळ। तळपतां दिसती कल्लोळ। येऱ्हवीं तरी निखिळ।

पाणीचि तें ।३२। कां सुवर्णाहूनि आनें। लेणीं गमती भिन्नें। मग पाहिजे तंव सोनें। आघवेंचि तें ।३३। तैसें ज्ञानाचिये दिठी। मजसीं अभिन्नचि ते किरीटी। येर भिन्नपण तें उठी। अज्ञानास्तव ।३४। आणि साचोकारेनी वस्तुविचारें। कैंचें मज एकासि दुसरें। जें भिन्नाभिन्नव्यवहारें। उमसिजेल ।३५। आघवेंचि आकाश सूनि पाटीं। बिंबचि जैं आते खोटी। तैं प्रतिबिंब कें उठी। कें रश्मि शिरे ।३६। कां कल्पांतींचिया पाणिया। काय वोत भरिती धनंजया। म्हणौनि कैचें अंश अविक्रिया। एका मज ।३७। परि ओघाचेनि मेळें। पाणी उजू परि वांकुडें जालें। रवी दुजेपण आलें। तोयबगें ।३८। व्योम चौफळें कीं वाटोळें। हें ऐसें कायसया मिळें। परि घटमठीं वेंटाळें। तैसेंही आथीं ।३९। हां गा निद्रेचेनि आधारें। काय एकलेनि जग न मरे। स्वप्नींचेनि जै अवतरे। राजपणें ।३४०। कां मीनलेनि किडाळें। वानिभेदासि ये सोळें। तैसा स्वमायें वेंटाळें। शुद्ध जै मी ।४१। तैं अज्ञान एक रूढे। तेणें कोहंविकल्पाचें मांडे। मग विवरूनि कीजे फुडें। देहोहं ऐसें ।४२।

ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः।
मनःषष्ठानींद्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति ।७।

ऐसें शरीराचि येवढें। जैं आत्मज्ञान वेगळें पडे। तैं माझा अंश आवडे। थोडेपणें ।४३। समुद्र कां वायुवशें। तरंगाकार उल्लसे। तो समुद्रांश ऐसा दिसे। सानिवा जेवीं ।४४। तेविं जडातें जीवविता। देहअहंता उपजविता। मी जीव गमे पंडुसुता। जीवलोकीं ।४५। पैं जीवाचिया बोधा। गोचर जो हा धांदा। तो जीवलोक शब्दा। अभिप्राय ।४६। अगा उपजणें निमणें। हें साचचि जें कां मानणें। तो जीवलोक मी म्हणें। संसारु हन ।४७। एवंविध जीवलोकीं। तूं मातें ऐसा अवलोकीं। जैसा चंद्र कां उदकीं। उदकातीत ।४८। पैं काश्मीराचा रवा। कुंकुमावरी पांडवा। आणिकां गमे लोहिवा। तो तरी नव्हे ।४९। तैसें अनादिपण न मोडे। माझें अक्रियत्व न खंडे। परि कर्ता भोक्ता ऐसें आवडे। ते जाण गा भ्रांति ।३५०। किंबहुना आत्मा चोखट। होऊनि प्रकृतीसी एकवट। बांधे प्रकृतिधर्माचा पाट। आपणपयां ।५१। पैं मनेंसीं साही इंद्रियें। श्रोत्रादि प्रकृतिकार्यें। तियें माझीं म्हणौनि होये। व्यापारारूढ ।५२। जैसें स्वप्नीं परिव्राजें। आपणपयां आपण कुटुंब होइजे। मग तयाचेनि धांविजे। मोहें सैरा ।५३। तैसा आपुलिया विस्मृती। आत्मा आपणचि प्रकृति–। सारिखा गमोनि पुढती। तियेसीचि भजे ।५४। मनाच्या रथीं वळघे। श्रवणाच्या द्वारें निघे। मग शब्दाचिया रिघे। रानामाजीं ।५५। तोचि प्रकृतीचा वागोरा। करी त्वचेचिया मोहरा। आणि स्पर्शाचिया घोरा। वना जाय ।५६। कोणे एकें अवसरीं। निघोनि नेत्राच्या द्वारीं। मग रूपाच्या डोंगरीं। सैरा हिंडे ।५७। कां रसनेचिया वाटा। निघोनि गा सुभटा। रसाचा दरकुटा। भरोंचि लागे ।५८। ना तरी येणेंचि घ्राणें। मदंश करी निघणें। मग गंधाचीं दारुणें। आडवें लंघी ।५९। ऐसेनि देहेंद्रियनायकें। धरूनि मन जवळिकें। भोगिजती शब्दादिकें। विषयभरणें ।३६०।

शरीरं यदवाप्नोति यच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः।
गृहीत्वैतानि संयाति वायुर्गंधानिवाशयात् ।८।

परि कर्ता भोक्ता ऐसें। जें जीवाचें तैंचि दिसे। जैं शरीरीं कां पैसें। येकाधिये ।६१। जैसा आथिला आणि विलासिया। तैंचि वोळखो ये धनंजया। जैं राजसेव्या ठाया। वस्तीसि ये ।६२। तैसा अहंकर्तृत्वाचा वाढ। कां विषयेंद्रियांचा धुमाड। हा जाणिजे तैं निवाड। जैं देह पाविजे ।६३। अथवा शरीरातें सांडी। तऱ्ही इंद्रियांची तांडी। हे आपणपयांसवें काढी। घेऊनि जाय ।६४। जैसा अपमानिला अतिथि। ने सुकृताची संपत्ति। कां साइखडेयाची गति। सूत्रतंतु ।६५। नाना मावळतेनि तपनें। नेइजती लोकांची दर्शनें। हें असो द्रुति पवनें। नेइजे जैसी ।६६। तेविं मनःषष्ठां ययां। इंद्रियातें धनंजया। देहराज ने देहा–। पासूनि गेला ।६७।

श्रोत्रं चक्षुः स्पर्शनं च रसनं घ्राणमेव च।
अधिष्ठाय मनश्चायं विषयानुपसेवते ।९।

मग येथ अथवा स्वर्गीं। जेथ जें देह आपंगी। तेथ तैसेंचि पुढती पांगी। मनादिक ।६८। जैसा मालवलिया दिवा। प्रभेंसीं जाय पांडवा। मग उजळिजे तेथ तेधवां। तैसाचि फांके ।६९। तरि ऐसैसिया राहाटी। अविवेकियांचे दिठी। येतुलें हें किरीटी। गमेचि गा ।३७०। जे आत्मा देहासि आला। आणि विषय येणेंचि भोगिला। अथवा देहोनि गेला। हें साचचि मानिती ।७१। एऱ्हवीं येणें आणि जाणें। कां करणें हन भोगणें। हें प्रकृतीचें तेणें। मानियेलें ।७२।

उत्क्रामंतं स्थितं वापि भुंजानं वा गुणान्वितम्।
विमूढा नानुपश्यंति पश्यंति ज्ञानचक्षुषा ।१०।
यतंतो योगिनश्चैनं पश्यंत्यात्मन्यवस्थितम्।
यतंतोऽप्यकृतात्मानो नैनं पश्यंतचेतसः ।११।

परि देहाचें मोटकें उभें। आणि चेतना तेथ उपलभें। तिये चळवळेचेनि लोभें। आला म्हणती।७३। तैसेंचि तयां संगती। इंद्रिये आपुलालां अर्थीं वर्तती। तया नांव सुभद्रापती। भोगणें जया।७४। पाठीं भोगक्षीण आपैसें। देह गेलिया ते न दिसे। तेथें गेला गेला ऐसें। बोभाती।७५। पैं रुखु डोलत देखावा। तरी वारा वाजत मानावा। रुख नसे तेथ पांडवा। नाहीं तो गा।७६। कां आरसा समोर ठेविजे। आणि आपणपें तेथ देखिजे। तरि तेधवांचि जालें मानिजे। काय आधीं नाहीं।७७। कां परता केलिया आरसा। लोप जाला तया आभासा। तरी आपणपें नाहीं ऐसा। निश्चय करावा।७८। शब्द तरी आकाशाचा। परि कपाळीं पिटे मेघांचा। कां चंद्रीं वेग अभ्राचा। आरोपिजे।७९। तैसे होइजे जाइजे देहें। तें आत्मसत्ते अविक्रिये। निष्टंकिती गा मोहें। आंधळें ते।३८०। येथ आत्मा आत्मयाच्या ठायीं। देखिजे देहींचा धर्म देहीं। ऐसे देखणे ते पाहीं। आन आहाती।८१। ज्ञानें कां जयाचे डोळे। देखोनि न राहाती देहींचे खोळे। सूर्यरश्मि अणियाळे। ग्रीष्मीं जैसे।८२। तैसी विवेकाचेनि पैसें। जयांची स्फूर्ति स्वरूपीं बैसे। ते ज्ञानिये देखती ऐसे। आत्मयातें।८३। जैसें तारागणीं भरलें। गगन समुद्रीं बिंबलें। परि तें तुटोनि नाहीं पडिलें। ऐसें निवडे।८४। गगन गगनींचि आहे। हें आभासें तें वाये। तैसा आत्मा देखती देहें। गंवसिलाही।८५। खळाळाची लगबगी। फेडूनि खळाळाच्या भागीं। देखिजे चंद्रिका कां उगी। चंद्रीं जेवी।८६। कां नाडरचि भरे शोषे। सूर्यु तो जैसा तैसाचि असे। देह होतां जातां तैसें। देखती मातें।८७। घटमठ घडले। तैचि पाठी मोडले। परि आकाश तें संचलें। असतचि असे।८८। तैसें अखंडे आत्मसत्तें। अज्ञानदृष्टि कल्पितें। हें देहचि होतें जातें। जाणती फुडें।८९। चैतन्य चढे ना वोहटे। चेष्टवी ना चेष्टे। ऐसें आत्मज्ञानें चोखटें। जाणती ते।३९०। आणि ज्ञानही आपैतें होईल। प्रज्ञा परमाणुही उगाणा देईल। सकळ शास्त्रांचें येईल। सर्वस्व हातां।९१। परी ते व्युत्पत्ति ऐसी। जरी विरक्ति न रिगे मानसीं। तरी सर्वात्मका मजसीं। नव्हेचि भेटी।९२। पैं तोंड भरो कां विचारा। आणि अंतःकरणीं विषयांसी थारा। तरी नातुडें धनुर्धरा। त्रिशुद्धी मी।९३। हां गा वोसणतयाच्या ग्रंथीं। काइ तुटली संसारगुंती। कीं परिवेसलिया पोथी। वाचिली होय।९४। ना ना बांधोनियां डोळे। घ्राणीं लाविजती मुक्ताफळें। तरी तयांचें काय कळे। मोल मान।९५। तैसा चित्तीं अहंते ठावो। आणि जिभे सकळ शास्त्रांचा सरावो। ऐसेनि कोडी एक जन्म जावो। परि न पविजे मातें।९६। जो एक मी कां समस्तीं। व्यापक असे भूतजातीं। ऐक तिये व्याप्ती। रूप करूं।९७।

यदादित्यगतं तेजो जगद्भासयतेऽखिलम्।
यच्चंद्रमसि यच्चाग्नौ तत्तेजो विद्धि मामकम्।१२।

तरी सूर्यासकट आघवी। हे विश्वरचना जे दावी। ते दीप्ति माझी जाणावी। आद्यंति आहे।९८। जल शोषुनि गेलिया सविता। ओलांश पुरवीतसे जे माघौता। ते चंद्रीं पांडुसुता। ज्योत्स्ना माझी।९९। आणि दहनपचनसिद्धि। करीतसे जे निरवधि। ते हुताशीं तेजोवृद्धि। माझीचि गा।४००।

गामाविश्य च भूतानि धारयाम्यहमोजसा।
पुष्णामि चौषधीः सर्वाः सोमो भूत्वा रसात्मकः।१३।

मी रिगालों असें भूतळीं। म्हणौनि समुद्र महाजळीं। हें पांसूची ढेपुळी विरेचिना।१। आणि भूतेंही चराचरें। हे धरितसे जिये अपारें। तियें मीचि धरी धरें। रिगोनियां।२। गगनीं मी पंडुसुता। चंद्राचेनि मिसें अमृता। भरला जालों चालतां। सरोवरु।३। तेथूनि फांकती रश्मिकर। ते पाट पेलूनि अपार। सर्वौषधींचें आगर। भरित असे मी।४। ऐसेनि सस्यादिकां सकळां। करी धान्यजाती सुकाळा। दे अन्नद्वारा जिव्हाळा। भूतजातां।५। आणि निपजविलें अन्न। तरी तैसें कैचें दीपन। जेणें जिरूनि समाधान। भोगिती जीव।६।

अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः।
प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम्।१४।

म्हणौनि प्राणिजातांच्या घटीं। करूनि कंदावरी आगिठी। दीप्ति जठरींही किरीटी। मीचि जालों।७। प्राणापानांच्या जोडभातीं। फुंकफुंकोनियां अहोराती। आटीतसें नेणों किती। उदरामाजीं।८। शुष्कें अथवा स्निग्धें। सुपक्वें कां विदग्धें। एवं मीचि गा चतुर्विधें। अन्नें पचीं।९। एवं मीचि आघवें जन। जना निरवितें मीचि जीवन। जीवनीं मुख्य साधन। वह्निही मीचि।४१०। आतां ऐसियाहीवरी काई। सांगों व्याप्तीची नवाई। येथ दुजें नाहींचि घेईं। सर्वत्र मी गा।११। तरि कैसेनि पां वेखें। सदा सुखियें येकें। येकें तियें बहुदुःखें। क्रांत भूतें।१२। जैसीं सगळिये पाटणीं। एकचि दीपें दिवेलावणी। जालिया कां न देखणी। उरलीं एकें।१३। ऐसी हन उखिविखी। करित आहासी मानसिकी। तरि परिस तेही निकी। शंका फेडूं।१४। पैं आघवा मीचि असे। येथ नाहीं कीर अनारिसें। परि प्राणियांचिया उल्लासें। बुद्धीऐसा।१५। जैसें एकचि आकाशध्वनी। वाद्यंविशेषीं आनानीं। वाजावें पडे भिन्नीं नादांतरीं।१६। कां लोकचेष्टीं वेगळाला। जो हा एकुचि भानु उगवला। तो आनानी परीं गेला।

उपयोगासी ।१७। ना ना बीजधर्मानुरूप। झाडीं उपजवीलें आप। तैसें परिणमलें स्वरूप। माझें जीवा ।१८। अगा नेणा आणि चतुरा। पुढां नीळयांचा दुसरा। नेणा सर्प जाला येरा। सुखालागीं ।१६। हें असो स्वातीचें उदक। शुक्तीं मोती व्याळीं विख। तैसा सज्ञानांसी मी सुख। दुःख तो अज्ञानांसी ।४२०।

सर्वस्व चाहं हृदि सन्निविष्टो मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च।
वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो वेदांतकृद्वेदविदेव चाहम् ।१५।

येऱ्हवीं सर्वांच्या हृदयदेशीं। मी अमुका आहे ऐसी। जे बुद्धि स्फुरे अहर्निशी। ते वस्तु गा मी ।२१। परि संतांसवें वसतां। योगज्ञानीं पैसतां। गुरुचरण उपसितां। वैराग्येंसी ।२२। येणेंचि सत्कर्में। अशेषही अज्ञान विरमे। जयांचें अहं विश्रामे। आत्मरूपीं ।२३। तें आपेंआप देखोनि देखीं। मियां आत्मेनि सदा सुखी। येथें मीवांचून अवलोकीं। आन हेतु असे ।२४। अगा सूर्योदय जालिया। सूर्यें सूर्यचि पहावा धनंजया। तेविं मातें मियां जाणावया। मीचि हेतु ।२५। ना शरीरपरातें सेवितां। संसारगौरवचि ऐकतां। देहीं जयांची अहंता। बुडोनि ठेली ।२६। ते स्वर्गसंसारालागीं। धांवतां कर्ममार्गीं। दुःखाच्या सेलभागीं। विभागी होती ।२७। परि हेंही होणें अर्जुना। मजचिस्तव तया अज्ञाना। जैसा जागताचि हेतु स्वप्ना। निद्रेतें होय ।२८। पैं अभ्रें दिवस हरपला। तोही दिवसेंचि जाणो आला। तेविं मी नेणोनि विषय देखिला। मजचिस्तव भूतीं ।२६। एवं निद्रा कां जागणिया। प्रबोधचि हेतु धनंजया। तेविं ज्ञाना अज्ञाना जीवां या। मीचि मूळ ।४३०। जैसें सर्पत्वा का दोरा। दोरचि मूळ धनुर्धरा। तैसा ज्ञाना अज्ञानाचिया संसारा। मियांचि सिद्धि ।३१। म्हणौनि जैसा असें तैसया। मातें नेणोनि धनंजया। वेदु जाणों गेला तंव तया। जालिया शाखा ।३२। तरि तिंहीं शाखाभेदीं। मीचि जाणिजे त्रिशुद्धी। जैसा पूर्वापरां नदीं। समुद्रचि ठी ।३३। आणि महासिद्धांतापासीं। श्रुति हारपती शब्देंसीं। जैसिया सुगंधा आकाशीं। वातलहरी ।३४। तैसें समस्तही श्रुतिजात। ठाके लाजिलें ऐसें निवांत। तें मीचि करी यथावत। प्रकटोनियां ।३५। पाठी श्रुतीसहित अशेष। जग हारपे जेथ निःशेष। तें निजज्ञानही चोख। जाणता मीचि ।३६। जैसें निदेलिया जागिजे। तेव्हां स्वप्नींचे कीर नाहीं दुजें। परि एकत्वही देखों पाविजे। आपलेंचि ।३७। तैसें आपुलें अद्वयपण। मी जाणतसें दुजेनवीण। तयाही बोधाकारण। जाणता मीचि ।३८। मग आगी लागलिया कापुरा। काजळी ना वैश्वानरा। उरणें नाहीं वीरा। जयापरी ।३६। तेविं समूळ अविद्या खाये। तें ज्ञानही जैं बुडोनि जाये। तऱ्ही नाहीं कीर नोहे। आणि न साहे असणेंही ।४४०। पैं विश्व घेऊनि गेला मागेंसी। तया चोरातें कवण कें गिंवसी। जे कोणी एकी दशा ऐसी। शुद्ध तें मी ।४१। ऐसी जडाजडव्याप्ती। रूप करितां कैवल्यपति। ठी केली निरुपहिती। आपुल्या रूपीं ।४२। तो आघवाची बोध सहसा। अर्जुनीं उमटला कैसा। व्योमींचा चंद्रोदय जैसा। क्षीरार्णवीं ।४३। कां प्रतिभिंतीं चोखटे। समोरील चित्र उमटे। तैसा अर्जुनें आणि वैकुंठें। नांदतसे बोध ।४४। तरि बाप वस्तुस्वभाव। फावे तंव तंव गोडिये थाव। म्हणौनि अनुभवियांचा राव। अर्जुन म्हणे ।४५। जी व्यापकपण बोलतां। निरुपाधिक जें आतां। स्वरूप प्रसंगता। बोलिले देवो ।४६। तें एक वेळ अव्यंगवाणें। कीजो कां मज सांगणें। तेथ द्वारकेचा नाथ म्हणे। भलें केलें ।४७। पैं अर्जुना आम्हांहि वाडेंकोडें। अखंड बोलों आवडे। परि काय कीजे न जोडे। पुसतें ऐसें ।४८। आजि मनोरथांसि फळ। जोडलासि तूं केवळ। जें तोंड भरूनि निखळ। आलासि पुसों ।४६। जें अद्वैतावरीही भोगिजे। तें अनुभवींचें तूं विरजें। पुसोनि मज माझें। देतासि सुख ।४५०। जैसा आरिसा आलिया जवळां। दिसें आपणपें आपला डोळां। तैसा संवादिया तूं निर्मळा। शिरोमणि ।५१। तुवां नेणोनि पुसावें। मग आम्ही परिसऊं बैसावें। तो गा हा पाड नव्हे। सोयरेया ।५२। ऐसें म्हणौनि आलिंगिलें। कृपादृष्टीं अवलोकिलें। मग देवो काय बोलिले। अर्जुनेंसीं ।५३। पै दोहीं वोठीं एक बोलणें। दोहीं चरणीं एक चालणें। तैसें पुसणें सांगणें। तुझें माझें ।५४। एवं आम्हीं तुम्हीं येथें। देखावें एका अर्थातें। सांगतें पुसतें येथें। दोन्ही एक ।५५। ऐसा बोलत देव भुलला मोहें। अर्जुनातें आलिंगूनि ठाये। मग बिहाला म्हणें नोहे। आवडी हे ।५६। जाले इक्षुरसाचे ढाळ। तरि लवण देणें किडाळ। तैसें संवादसुखाचें रसाळ। नासेल थितें ।५७। आधींच आम्हां यया कांहीं। नरनारायणासी भिन्न नाहीं। परी आतां जिरो माझ्या ठाईं। वेगु हा माझा ।५८। इया बुद्धी सहसा। श्रीकृष्ण म्हणे वीरेशा। पैं गा तो तुवां कैसा। प्रश्न केला ।५६। जो अर्जुन श्रीकृष्णीं विरत होता। तो परतोनियां मागुता। प्रश्नावळीची कथा। ऐकों आला ।४६०। तेथ सद्गदें बोलें। अर्जुनें जी जी म्हणितलें। निरुपाधिक आपुलें। रूप सांगा ।६१। यया बोला तो शाङ्‌र्गी। तेंचि सांगावयालागीं। उपाधि दोहीं भागीं। निरूपीत असे ।६२। पुसिलिया निरुपहित। उपाधि कां सांग येथ। हें कोणाही प्रस्तुत। गमे जरी ।६३। तरि ताकाचे अंश फेडणें। तयाचें नांव लोणी काढणें। चोखाचिये शुद्धी तोडणें। कीडचि जेवीं ।६४। बाबळीचि सारावी हातें। परि पाणी तंव असे आइतें। अभ्रचि जावें गगन तें। सिद्धचि कीं ।६५। वरिल कोंडियाचा गुंडाळा। झाडूनि केलिया वेगळा। कण घेतां विरंगोळा। असे काई ।६६। तैसा उपाधि उपहितां। शेवट जेथ विचारितां। तें कोणातेही न पुसतां। निरुपाधिक ।६७। जैसें न सांगणेवरी। बाळा पतीसी रूप करी। बोल निमालेपणें विचरी। अचर्चातें ।६८। पैं सांगणेयाजोगें नव्हे। तेथींचें सांगणें ऐसें आहे। म्हणौनि उपाधि लक्षण हें। बोलिजे आदि ।६६। पाडिव्याची चंद्ररेखा। निरुती दावावया शाखा। दाविजे तेविं औपाधिका। बोली इया ।४७०।

द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च।
क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते।१६।

मग तो म्हणे गा सव्यसाची। पैं इये संसारपाटणींची। वस्ती साविया टांची। दुपुरुषीं।७१। जैसी आघवांचि गगनीं। नांदत दिवोरात्री दोन्ही। तैसे संसारराजधानीं। दोन्हीचि हे।७२। आणिकही तिजा पुरुष आहे। परि तो या दोहींचें नांव न साहे। जो उदेला गांवेसीं खाये। दोहींतें यया।७३। परि तें तंव गोठी असो। आधीं दोन्हीचि हे परियेसों। जे संसारग्रामा वसों। आले असती।७४। एक आंधळा वेडा पंगु। येर सर्वांगें पुरता चांगु। परि ग्रामगुणें संगु। घडला दोघां।७५। तया एका नाम क्षर। एकातें म्हणती अक्षर। इहीं दोहींचि परि संसार। कोंदला असे।७६। आतां क्षर तो कवण। अक्षर तो किंलक्षण। हा अभिप्राय संपूर्ण। विवंचू गा।७७। तरी महदहंकारा। लागुनिया धनुर्धरा। तृणांतींचा पांगोरा–। वरी पै गा।७८। जें कांहीं सानें थोर। चालतें अथवा स्थिर। किंबहुना गोचर। मनबुद्धिसि जें।७९। जेतुलें पांचभौतिक घडते। जें नामारूपा सांपडते। गुणत्रयाच्या पडतें। कामठां जें।४८०। भूताकृतीचें नाणें। घडत भांगारें जेणें। काळासिं जूं खेळणें। जिंहीं कवडां।८१। जाणणेनीची विपरीतें। जें जें कांहीं जाणिजेतें। जें प्रतिक्षणीं निमतें। होऊनियां।८२। अगा काढूनि भ्रांतीचे दांग। उभवी सृष्टीचें आंग। हें असो बहु जग। जया नाम।८३। पैं अष्टधा भिन्न ऐसें। जें दाविलें प्रकृतिमिसें। जें क्षेत्रद्वारा छत्तिसें। भागी केलें।८४। हें मागील सांगों किती। अगा आतांचि जें प्रस्तुतीं। वृक्षाकार रूपकरीती। निरूपिलें।८५। तें अघवेंचि साकार। कल्पुनी आपणया पुर। जालें असे तदनुसार। चैतन्यचि।८६। जैसा कुहां आपणचि बिंबे। सिंह प्रतिबिंब पाहतां क्षोभे। मग क्षोभला समारंभें। घाली तेथ।८७। कां सलीली असतचि असे। व्योमावरी व्योम बिंबे जैसें। अद्वैत होऊनि तैसें। द्वैत घेपे।८८। अर्जुना गा यापरी। साकार कल्पूनि पुरी। आत्मा विस्मृतीची करी। निद्रा तेथ।८९। पैं स्वप्नीं सेजार देखिजे। मग पहुडणें जैसें तेथ कीजे। तैसें पुरीं शयन देखिजे। आत्मयासी।४९०। पाठीं तिये निद्रेचेनि भरें। मी सुखी दुःखी म्हणत घोरें। अहंममतेचे थोरे। वोसणाये सादें।९१। हा जनक हे माता। हा मी गौर हीन पुरता। पुत्र वित्त कांता। माझें हें ना।९२। ऐसिया वळघोनि स्वप्ना। धांवत भवस्वर्गाचिया राना। तया चैतन्य नाम अर्जुना। क्षर पुरुष गा।९३। आतां ऐक क्षेत्रज्ञ येणें। नामें जयातें बोलणें। जग जीवु कां म्हणे। जिये दशेतें।९४। जो आपुलेनि विसरें। सर्व भूतत्वें अनुकरे। तो आत्मा बोलिजे क्षरें। पुरुषनामें।९५। जे तो वस्तुस्थिती पुरता। म्हणोनि आपली पुरुषता। परी देहपुरी निदैजतां। पुरुषनामें।९६। आणि क्षरपणाचा नाथिला। आळ यया ऐसेनि आला। जे उपाधीचि आतळा। म्हणोनियां।९७। जैसी खळाळीचिया उदका। सरसीं उदाळे चंद्रिका। तैसा विकारां औपाधिकां। ऐसाचि गमे।९८। कां खळाळ मोटका शोषे। आणि चंद्रिका तैं सरिसींच भ्रंशे। तैसा उपाधिनाशीं न दिसे। औपाधिक।९९। ऐसें उपाधीचेनि पाडे। क्षणिकत्व यातें जोडे। तेणें खोंकरपणे घडे। क्षर हें नाम।५००। एवं जीवचैतन्य आघवें। हें क्षर पुरुष जाणावें। आतां रूप करूं बरवें। अक्षरासी।१। तरि अक्षर जो दुसरा। पुरुष पैं धनुर्धरा। तो मध्यस्थ गा गिरिवरां। मेरु जैसा।२। जे तो पृथ्वी पाताळ स्वर्गीं। इहीं न भेदे तिहीं भागीं। तैसा दोहीं ज्ञानाज्ञानांगीं। पडेना जो।३। ना यथार्थज्ञानें एक होणें। ना अनेकत्वें दुजें घेणें। ऐसें निखिल जें नेणणें। तेंचि तें रूप।४। पांसुता निःशेष जाये। ना घटभांडादि होये। तया मृत्पिंडा ऐसे आहे। मध्यस्थ जें।५। पैं आटोनि गेलिया सागर। मग तरंग ना नीर। तया ऐसी अनाकार। जे दशा गा।६। पार्था जागणें तरी बुडे। परि स्वप्नाचें कांहीं न मांडे। तैसिये निद्रे सांगडें। न्याहाळणें जें।७। विश्व आघवेंचि मावळे। आणि आत्मबोध तरी नुजळे। तिये अज्ञानदशे कवळे। अक्षर नांव।८। सर्वा कळीं सांडिलें जैसें। चंद्रपण उरे अंवसे। रूप जाणावें तैसें। अक्षराचें।९। पैं सर्वोपाधिविनाशें। हे जीवदशा जेथ पैसे। फळपाकांत जैसें। झाड बीजीं।५१०। तैसें उपाधीसी उपहित। थोकोनि ठाके जेथ। तयातें अव्यक्त। बोलती गा।११। घन अज्ञान सुषुप्ति। ता बीजभाव म्हणती। येर स्वप्न हन जागृती। फळभाव ता।१२। जयासी कां बीजभाव। वेदांतीं केला ऐसा आव। ता तया पुरुषा ठाव। अक्षराचा।१३। जेथूनि अन्यथाज्ञान। फांकोनि जागृति स्वप्न। नानाबुद्धीचें रान। रिगालें असे।१४। जीवत्व जेथून किरीटी। विश्व उठतचि उठी। ते उभय भेदांची मिठी। अक्षर पुरुष।१५। येर क्षर पुरुष कां जनीं। देहीं खेळे जागृतीं स्वप्नीं। तिया अवस्था जो दोन्ही। वियाला गा।१६। पैं अज्ञानघनसुषुप्ति। ऐसैसी जे कां ख्याति। या उणी एकी प्राप्ति। ब्रह्माची जे।१७। साचचि पुढती वीरा। जरि न येतां स्वप्नजागरां। तरी ब्रह्मभावो साचोकारा। म्हणों येता।१८। परि प्रकृतिपुरुष दोनी। अभ्रें जालीं जिये गगनीं। क्षेत्रक्षेत्रज्ञ स्वप्नीं। देखिला जिये।१९। हें असो अधोशाखा। या संसाररूपा रुखा। मूळ तें पुरुषा। अक्षराचें।५२०। हा पुरुष कां म्हणिजे। पूर्णपणेंचि निजें। पैं मायापुरीं पहुडिजे। तेणेंही बोलें।२१। आणि विकारांची जे वारी। ते विपरीत ज्ञानाची परी। नेणिजे जियेमाझारीं। ते सुषुप्ति गा ही।२२। म्हणोनि यया आपैसें। क्षरणें पां नसे। अणिकेंही हा न नाशे। ज्ञानाउणें।२३। यालागीं हा अक्षर। ऐसा वेदांतीं डगर। केला देशीं थोर। सिद्धांताचा।२४। ऐसें जीवकार्यकारण। जया मायासंगचि लक्षण। अक्षर पुरुष जाण। चैतन्य तें।२५।

उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः।
यो लोकत्रयमाविश्य बिभर्त्यव्यय ईश्वरः।१७।

आतां अन्यथाज्ञानीं। या दानी अवस्था जया जनीं। तया हरपती घनीं। अज्ञानतत्त्वीं।२६। तें अज्ञान ज्ञानीं बुडालिया। ज्ञानें कीर्तिमुखत्व केलिया। जैसा वह्नि काष्ठ जाळूनियां। स्वयें जळे।२७। तैसें अज्ञान ज्ञानें नेले। आपणही वस्तु देऊनि गेलें। ऐसें जाणणेंनिवीण उरलें। जाणतें जें।२८। तें तो गा उत्तम पुरुष। जो तृतीय कां निष्कर्ष। दोहींहून आणिक। मागिला जो।२६। सुषुप्ती आणि स्वप्ना–। पासूनि बहुवें अर्जुना। जागणें जैसें आना। बोधाचेचि।५३०। कां रश्मी हन मृगजळा–। पासूनि अर्कमंडळा। अफाट तेविं वेगळा। उत्तम गा।३१। हें ना काष्ठींच्या काष्ठाहुनी। अनारिसा जैसा वह्नी। तैसा क्षराक्षरापासुनी। आनचि तो।३२। पैं ग्रासूनि आपली मर्यादा। एक करीत नदीनदां। उठीं कल्पांतीं उदावादा। एकार्णवाचा।३३। तैसे स्वप्न ना सुषुप्ति। ना जागराची गोठी आथी। जैसी गिळिली दिवोराती। प्रळयतेजें।३४। मग एकपण ना दुजे। असे नाहीं हें नेणिजे। अनुभव निर्बुजे। बुडाला जेणें।३५। ऐसें आथि जें कांहीं। तें तो उत्तम पुरुष पाही। जें परमात्मा इहीं। बोलिजे नामीं।३६। तेंही तेथ न मिसळतां। बोलणें जीवत्वें पांडुसुता। जैसी बुडणेयाची वार्ता। थडियेचा कीजे।३७। तैसें विवेकाचिये कांठीं। उभें ठाकलिया किरीटी। परावराचिया गोठी। करणें वेदां।३८। म्हणौनि पुरुष क्षराक्षर। दोन्ही देखोनि अवर। यातें म्हणती पर। आत्मरूप।३६। अर्जुना ऐसिया परी। परमात्मा शब्दवेरी। सूचिजे गा अवधारीं। पुरुषोत्तम।५४०। एऱ्हवीं न बोलणेचि बोलणें। जेथिंचे सर्व नेणिवा जाणणें। कांहींच न होनि होणें। जे वस्तु गा।४१। सोहं तेंही अस्तवलें। जेथ सांगतेंचि सांगणें जालें। द्रष्ट्त्वेंसी गेलें। देखणें जेथ।४२। आतां बिंबा आणि प्रतिबिंबा–। माजीं कैची हे म्हणों नये प्रभा। जऱ्ही कैसेनि हे लाभा। जायेचि ना।४३। कां घ्राणा फुला दोहीं। द्रुति असे जे माझारिला ठायीं। ते न दिसे तरी नाहीं। ऐसें बोलों नये।४४। तैसें द्रष्टा दृश्य हें जाये। मग कोण म्हणे काय आहे। हेंचि अनुभवें तेंचि पाहे। रूप तया।४५। जो प्रकाश्येंवीण प्रकाश। जो ईशितव्येंवीण ईश। आपणेनीचि अवकाश। वसवीत असे जो।४६। जो नादे ऐकिजता नाद। स्वादें चाखिजता स्वाद। जो भोगिजतसे आनंद। आनंदेंचि।४७। जो पूर्णतेचा परिणाम। पुरुष गा पुरुषोत्तम। विश्रांतीचाही विश्राम। विराला जेथें।४८। सुखासि सुख जोडलें। जें तेज तेजासि सांपडलें। शून्यही बुडालें। महाशून्यीं जिये।४६। जो विकासाही वरी उरता। ग्रासातेंही ग्रासूनि पुरता। जो बहुतें पाडें बहुतां–। पासूनि बहु।५५०। पैं नेणतयाप्रती। रुपेपणाची प्रतीती। रुपें न होनि शुक्ती। दावी जेवी।५१। कां नानाअलंकारदशे। सोनें न लपत लपालें असे। विश्व न होनियां तैसें। विश्व जो धरी।५२। हें असो जलतरंगा। नाहीं सिनानेपण जेविं गा। तेंचि सत्ताप्रकाश जगा। आपणचि जो।५३। आपलिया संकोचविकाशा। आपणचि रूप वीरेशा। हा जळीं चंद्र हन जैसा। समग्र गा।५४। तैसा विश्वपणें कांहीं होये। ना विश्वलोपीं ही जाये। जैसा रात्री दिवसें नोहें। द्विधा रवि।५५। तैसा काहींचि कोणीकडे। कायिसेनिहि वेंची न पडे। जयाचें सांगडें। जयासीचि।५६।

यस्मात्क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तमः।
अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः।१८।

जो आपणपेंचि आपणया। प्रकाशीतसे धनंजया। काय बहु बोलो जया। नाहीं दुजे।५७। तो गा मी निरुपाधिक। क्षराक्षरात्तम एक। म्हणोनि म्हणे वेद। पुरुषोत्तमु।५८।

यो मामेवमसंमूढो जानाति पुरुषोत्तमम्।
स सर्वविद्भजति मां सर्वभावेन भारत।१६।

परि हें असो ऐसिया। मज पुरुषोत्तमातें धनंजया। जाणें जो पाहलेया। ज्ञानमित्रें।५६। चेइलिया आपुलें ज्ञान। जैसें नाहींचि होय स्वप्न। तैसें स्फुरतें त्रिभुवन। वावो जालें।५६०। कां हातीं घेतलिया माळा। फिटे सर्पाभासाचा कंटाळा। तैसा माझेनि बोधें टवाळा। नागवे तो।६१। लेणें सोनेंचि जो जाणे। तो लेणेंपण तें वाव म्हणे। तेविं मी जाणोनि जेणें। वाळिला भेद।६२। मग म्हणे सर्वत्र सच्चिदानंद। मीचि एकु स्वतःसिद्ध। जो आपणेनसीं भेद। नेणोनियां जाणें।६३। तेणेंचि सर्व जाणितलें। हेंही म्हणणें थेंकुलें। जें तया सर्वत्र उरलें। द्वैत नाहीं।६४। म्हणोनि माझिया भजना। उचित तोचि अर्जुना। गगन जैसें आलिंगना। गगनाचिया।६५। क्षीरसागरा परगुणें। कीजे क्षीरसागरपणें। अमृतचि होऊन मिळणें। अमृतीं जेंविं।६६। साडेपंधरां मिसळावें। तैं साडेपंधरेंचि होआवें। तेविं मी जालिया संभवे। भक्ति माझी।६७। हां गा सिंधूसि आनी होती। तरि गंगा कैसेनि मिळती। म्हणौनि मी न होतां भक्ती। अन्वय आहे।६८। ऐसियालागीं सर्व प्रकारीं। जैसा कल्लोळ अनन्य सागरीं। तैसा मातें अवधारीं। भजिन्नला जो।६६। सूर्या आणि प्रभे। एकवंकी जेणें लोभें। ता पाड मानूं लाभे। भजना तया।५७०।

इति गुह्यतमं शास्त्रमिदमुक्तं मयाऽनघ।
एतद्बुध्वा बुद्धिमान्स्यात्कृतकृत्यश्च भारत।२०।

इति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे पुरुषोत्तमयोगो नाम पंचदशोऽध्यायः।

एवं कथिलयादारभ्य। जें हें सर्व शास्त्रैकलभ्य। उपनिषदां सौरभ्य। कमळदळां जेवीं।७१। हें शब्दब्रह्माचें मथितें। श्रीव्यासप्रतिज्ञेचेनि हातें। मथूनि काढिलें आयितें। सार आम्हीं।७२। जे ज्ञानामृताची जाह्नवी। जे आनंदचंद्रींची सतरावी। विचारक्षीरार्णवींची नवी। लक्ष्मी जे हे।७३। म्हणोनि आपुलेनि पदें वर्णें। अर्थाचेनि जीवेंप्राणें। मीवांचोनि हों नेणें। आन कांहीं।७४। क्षराक्षरत्वें समोर जालें। तयाचें पुरुषत्व वाळिलें। मग सर्वस्व मज दिधलें। पुरुषोत्तमीं।७५। म्हणौनि जगीं गीता। मियां आत्मेनि पतिव्रता। जे हे प्रस्तुत तुवां आतां। आकर्णिली।७६। साचचि बोलाचे नव्हे हें शास्त्र। पैं संसार जिणतें हें शस्त्र। आत्मा अवतरवीते मंत्र। अक्षरें इये।७७। परि तुजपुढां सांगितलें। तें अर्जुना ऐसे जालें। जें गौप्यधन काढिलें। माझें आजि तुवां।७८। मज चैतन्यशंभूचा माथां। जो निक्षेप होता पार्था। तया गौतम जालासि आस्था–। निधि तूं गा।७९। चोखटिवा आपुलिया। पुढिला उगाणा घेयावया। तया दर्पणाचीचि परी धनंजया। केली आम्हां।५८०। कां भरलें चंद्रतारांगणीं। नभ सिंधु आपणयामाजी आणी। तैसा गीतेसी मी अंतःकरणीं। सुदला तुवां।८१। जे त्रिविधमळिकठा। तूं सांडिलासि सुभटा। म्हणौनि गीतेसीं मज वसौटा। जालासि गा।८२। परि हें बोलों काय गीता। हे माझी उन्मेषलता। जाणे जो समस्ता। मोहा मुके।८३। सेविली अमृतसरिता। रोग दवडुनि पांडूसुता। अपरपण उचितां। देऊनि घाली।८४। तैसी गीता हे जाणितलिया। काय विस्मयो मोह जावया। परि आत्मज्ञानें आपणपयां। मिळिजे येथ।८५। जया आत्मज्ञानाच्या ठायीं। कर्म आपलयो जीविताहीं। होऊनियां उतराई। लया जाय।८६। हरपलें दावूनि जैसा। माग सरे वीरविलासा। ज्ञानचि कळस वळघे तैसा। कर्मप्रासादाचा।८७। म्हणौनि ज्ञानिया पुरुषा। कृत्य करूं सरलें देखा। ऐसा अनाथाचा सखा। बोलिला तो।८८। तें श्रीकृष्णवचनामृत। पार्थीं भरोनि असे वोसंडत। मग व्यासकृपा प्राप्त। संजयासी।८९। तो धृतराष्ट्र राया। सूतसे पान करावया। म्हणौनि जीवितां तया। नोहेचि भारी।५९०। एऱ्हवीं गीताश्रवणअवसरीं। आवडो लागतां अनधिकारी। परि सेखी तेचि उजरी। पातला भली।९१। जेव्हां द्राक्षीं दूध घातलें। तेव्हां वायां गेलें गमलें। परि फहपाकीं दुणावलें। देखिजे जेवीं।९२। तैसी श्रीहरिवक्त्रीचीं अक्षरें। संजयें सांगितलीं आदरें। तिहीं अंधु तोही अवसरें। सुखिया जाला।९३। तेंचि मऱ्हाटेनि विन्यासें। मियां उन्मेषें ठसेंठोंबसें। जी जाणें नेणें तैसें। निरोपिलें।९४। सेवंतीये अरसिकांहीं। आंग पाहतां विशेष नाहीं। परि सौरभ्य नेलें तिहीं। भ्रमरीं जाणिजे।९५। तैसें घडतें प्रमेय घेइजे। उणें तें मज देइजे। जें नेणणें हेंचि सहजें। रूप कीं बाळा।९६। तरि नेणतें जऱ्हीं होये। तऱ्ही देखोनि बाप कीं माये। हर्ष केंही न समाये। चोज करिती।९७। तैसें संत माहेर माझें। तुम्हीं मिनलिया मीं लाडैजें। तेंचि ग्रंथाचेनि व्याजें। जाणिजो जी।९८। आतां विश्वात्मक हा माझा। स्वामी श्रीनिवृत्तिराजा। तो अवधारु वाक्यपूजा। ज्ञानदेवो म्हणे।५९९।

इति श्रीज्ञानदेव विरचितायां भावार्थदीपिकायां पुरुषोत्तमयोगो नाम पंचदशोऽध्यायः।१५। श्लोकः–२०, ओव्याः–५९९

ज्ञानेश्वरीः–अध्याय सोळावाः–दैवासुरसंपद्विभागयोग

मावळवीत विश्वाभास। नवल उगवला चंडांश। अद्वयाब्जिनीविकाश। वंदूं आतां।१। जो अविद्यारातीं रुसोनिया। गिळी ज्ञानाज्ञानचांदणियां। जो सुदिन करी ज्ञानियां। स्वबोधाचा।२। जेणें विवळतिये सवळे। लाहोनि आत्मज्ञानाचे डोळे। सांडिती देहाहंतेचीं अविसाळें। जीवपक्षी।३। लिंगदेह कमळाचा। पोटीं वेंचतया चिद्भ्रमराचा। बंदिमोक्ष जयाचा। उदैला होय।४। शब्दाचिया आसकडीं। भेदनदींच्या दोहीं थडीं। आरडत विरहवेडा। बुद्धिबोध।५। तयां चक्रवाकांचें मिथुन। सामरस्याचें समाधान। भोगवी जा चिद्गगन–। भवनदिवा।६। जेणें पाहालिये पाहांटे। भेदाची चोरळी फिटे। रिघती आत्मानुभववाटे। पांथिक योगी।७। जयाचेनि विवेककिरणसंगें। उन्मेखसूर्यकांत फुणगे। दीपले जाळिती दागें। संसाराचीं।८। जयाचा रश्मिपुंज निबर। होता स्वरूप उखरीं स्थिर। ये महासिद्धीचा पूर। मृगजळ तें।९। जो प्रत्यग्बोधाचिया माथया। सोहंतेचा माध्याह्नी आलिया। लपे आत्मभ्रांति छाया। आपणपां तळीं।१०। ते वेळीं विश्वस्वप्नासहितें। कोण अन्यथामति निद्रेतें। सांभाळी नुरेचि जेथें मायाराती।११। म्हणौनि अद्वयबोधपाटणीं। तेथ महानंदाची दाटणी। मग सुखानुभूतीचीं घेणीं देणीं। मंदावो लागती।१२। किंबहुना ऐसैसे। मुक्तकैवल्य सुदिवसें। सदा लाहिजे कां प्रकाशें। जयाचेनि।१३। जो निजधामव्योमींचा रावो। उदैलाचि उदैजतखेंवो। फडी पूर्वादि दिशांसि ठावो। उदयास्ताचा।१४। न दिसणें दिसणेंनसी मावळवी। दोहीं झाकिलें तें सैंध पालवी। काय बहु बोलों त आघवी। उखाचि आनी।१५। तो अहोरात्रांचा पैलकड। कोणें देखावा ज्ञानमार्तंड। जो प्रकाश्येंवीण सुरवाड। प्रकाशाचा।१६। तया चित्सूर्या श्रीनिवृत्ती। आतां नमोचि म्हणों पुढतपुढती। जे बाधका येइजतसे स्तुती। बोलाचिया।१७। देवाचें महिमान पाहोनियां। स्तुति तरि येइजे चांगावया। जरि स्तव्य बुद्धीसीं लया। जाइजे कां।१८। जो सर्वनेणिवां जाणिजे। मौनाचिया मिठिया वानिजे। कांहींच न होनि आणिजे। आपणपयां जो।१९। जया तुझिया उद्देशासाठीं। पश्यंती मध्यमा पोटीं। सूनि परेसीही पाठीं। वैखरी विरे।२०। तया तूतें मी सेवकपणें। लेववीं बोलकेया स्तोत्राचे लेणें। हें उपसाहावेंही म्हणतां उणें। अद्वयानंदा।२१। परि रंके अमृताचा सागर। देखिलिया उचिताचा पडे विसर। मग करूं धांवे पाहुणेर। शाकांचा तया।२२। तेथ शाकही कीर बहुत म्हणावा। तयाचा हर्षवेगचि तो घ्यावा। उजळोनि दिव्यतेजा हातिवा। ते भक्तीचि पाहावी।२३। बाळा उचित जाणणें होये। तरि बाळपणचि कें आहे। परि साचचि येरी माये। म्हणोनि तोषे।२४। हां गा गांवरसें भरलें। पाणी पाठीं पाय देत आलें। तें गंगा काय म्हणितलें। परतें सर।२५। जी भृगूचा कैसा अपकार। कीं तो मानूनि प्रियोपचार। तोषेचि ना शाङ्र्गधर। गुरुत्वासी।२६। कीं आंधारें खतेलें अंबर। झालेया दिवसनाथासमोर। तेणें तयातें पऱ्हां सर। म्हणितलें काई।२७। तेविं भेदबुद्धीचिये तुळे। घालूनि सूर्यश्लेशांचे कांटाळें। तुकिलासि ते येकी वेळे। उपसाहिजो जी।२८। जिंहीं ध्यानाचा डोळां पाहिलासी। वेदादि वाचा वाग्विलासी। जें उपसाहिलें तयांसी। तें आम्हांही करीं।२९। परि मी आजी तुझ्या गुणीं। लांचावलो अपराध न गणीं। भलते करी परी अर्धधणीं। नुठी कदा।३०। मियां गीता येणें नांवें। तुझें पसायामृत सुहावें। वानूं लाधलों तें दुणेन थावे। दैवलों दैवें।३१। माझिया सत्यवादाचे तप। वाचा केलें बहुत कल्प। तया फहाचें हें महाद्विप। पातली प्रभु।३२। पुण्यें पोशिलीं असाधारणें। तियें तुझें गुण वानणें। देऊनि मज उत्तीर्णे। जालीं आजि।३३। जी जीवित्वाच्या आडवीं। आतुडलों होतों मरणगांवीं। ते अवदसाचि आघवी। फेडिली आजी।३४। जे गीता येणें नांवें नावाणिगी। जे अविद्या जिणोनि दाटुगी। ते कीर्ति तुझी आम्हांजोगी। वानावया जाली।३५। पैं निर्धना घरीं वानिवसें। महालक्ष्मी येऊनि बैसे। तयातें निर्धन ऐसें। म्हणो ये काई।३६। कां अंधाराचिया ठाया। दैवें सूर्य आलिया। तो अंधकारचि जगा यया। प्रकाश नोहे।३७। जया देवाची पाहतां थोरी। विश्व परमाणुही दशा न धरी। तो भावाचिये सरोवरी। नव्हेचि काई।३८। तैसा मी गीता वाखाणीं। हे खपुष्पाची तुरंबणी। परि समर्थें तुवां शिरयाणी। फेडिली ते।३९। म्हणौनि तुझेनि प्रसादें। मी गीतापद्यें अगाधें। निरूपीन जी विशदें। ज्ञानदेव म्हणे।४०। तरि अध्यायी पंधरावा। श्रीकृष्णें तया पांडवा। शास्त्रसिद्धांत आघवा। उगाणिला।४१। जे वृक्षरूपक परिभाषा। केलें उपाधिरूप अशेषा। सद्वैद्यें जैसें दोषा। अंगलीना।४२। आणि कूटस्थ जो अक्षर। दाविला पुरुषप्रकार। तेणें उपहिताही आकार। चैतन्या केला।४३। पाठीं उत्तम पुरुष। शब्दाचें करूनि मिष। दाविलें चोख। आत्मतत्त्व।४४। आत्मविषयीं आंतुवट। साधन जें आंगदट। ज्ञान हेंही स्पष्ट। चावळला।४५। म्हणौनि इये अध्यायीं। निरूप्य नुरेचि कांहीं। आतां गुरुशिष्या दोहीं। स्नेह लाहणा।४६। एवं इयेविषयीं कीर। जाणते बुझावले अपार। परि मुमुक्षु इतर। साकांक्ष जाले।४७। त्या मज पुरुषोत्तमा। ज्ञानें भेटे जो सुवर्मा। तो सर्वज्ञ तोचि सीमा। भक्तीचीही।४८। ऐसें हें त्रैलोक्यनायकें। बोलिलें अध्यायांत श्लोकें। तेथें ज्ञानचि बहुतेकें। वानिलें तोषें।४९। भरूनि प्रपंचाचा घोंट। कीजे देखतांचि देखतया द्रष्ट। आनंदसाम्राज्यीं पाट। बांधिजे जीवा। येवढेया लाठेपणाचा उपावो। आनु नाहींचि म्हणे देवो। हा सम्यक्ज्ञानाचा रावो। उपायांमाजी।५१। ऐसे आत्मजिज्ञासु जे होते। तिहीं तोषलेनि चित्तें। आदरें तया ज्ञानातें। वोवाळिलें जीवें।५२। आतां आवडी जेथ पडे। तयाची अवसरी पुढें पुढें। रिगों लागे हें घडे। प्रेम ऐसें।५३। म्हणौनि जिज्ञासूंच्या पैकीं। ज्ञानीं प्रीति होय ना जंव निकी। तंव योगक्षेम ज्ञानविखीं। स्फुरेलचि

कीं ।५४। म्हणोनि तेंचि सम्यक् ज्ञान। कैसेनि होय स्वाधीन। जालिया वृद्धियत्न। घडेल केवीं ।५५। कां उपजोचि जें न लाहें। जें उपजलेंही अव्हाटा सूये। तें ज्ञानीं विरुद्ध काय आहे। हें जाणावें कीं ।५६। मग जाणतया जें विरू। तयाची वाट वाहती करूं। ज्ञानहित तेंच विचारू। सर्वभावें ।५७। ऐसा ज्ञानजिज्ञासु तुम्हीं समस्ती। भावो जो धरिला असे चित्तीं। तो पुरवावया लक्ष्मीपती। बोलिजेल ।५८। ज्ञानासि सुजन्म जोडे। आपुली विश्रांतिही वरी वाढे। ते संपत्तीचे पवाडे। सांगेल दैवी ।५९। आणि ज्ञानाचेनि कामाकारें। जे रागद्वेषांसि दे थारें। तिये आसुरियेहि घोरें। करील रूप ।६०। सहज इष्टानिष्टकरणी। दोघीचि इया कवतुकिणी। अे नवमाध्यायीं उभारणी। केली होती ।६१। तेथ साउमा घेयावा उवावो। तंव वोडवला आन प्रस्तावो। तरी तया प्रसंगें आतां देवो। निरूपीत असे ।६२। तया निरूपणाचेनि नांवें। अध्यायपद सोळावें। लावणी पाहतां जाणावें। मागिलावरी ।६३। परि हें असो आतां प्रस्तुतीं। ज्ञानाच्या हिताहितीं। समर्था संपत्ती। इयाचि दोन्ही ।६४। जे मुमुक्षुमार्गीची बोळावी। जे मोहरात्रीची धर्मदिवी। ते आधी तंव दैवी। संपत्ति ऐका ।६५। जेथ एक एकातें पोखी। ऐसे बहुत पदार्थ येकीं। संपादिजती ते लोकीं। संपत्ति म्हणिजे ।६६। ते दैवी सुखसंभवी। तेथ दैवगुणें येकोपजीवी। जाली म्हणोनि दैवी। संपत्ति हे ।६७।

श्रीभगवानुवाचः—अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः।
दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम् ।१।

आतां तयांचि दैवगुणां—। माजि धुरेचा बैसणा। बैसे तया आकर्णा। अभय ऐसे ।६८। तरि न घलूनि महापूरीं। न घेपे बुडणयाची शियारी। कां रोगु न गणिजे घरीं। पथ्याचिया ।६९। तैसा कर्मकर्माचिया मोहरा। उठूं नेदूनि अहंकारा। संसाराचा दरारा। सांडणें येणें ।७०। अथवा ऐक्यभावाचेनि पैसें। दुजे मानूनि आत्मा ऐसें। भयवार्ता देशें। दवडणें जें ।७१। पाणी बुडवूं ये मिठातें। तंव मीठचि पाणी आतें। तेविं आपण जालेनि अद्वैतें। नाशे भय ।७२। अगा अभय येणें नांवें। बोलिजे तें हें जाणावें। सम्यक्ज्ञानाचें आघवें। धांवणें हें ।७३। आतां सत्त्वशुद्धि जे म्हणिजे। ते ऐशा चिह्नीं जाणिजे। तरी जळे ना विझे। राखोंडी जैसी ।७४। कां पाडिवा वाढी न मगे। अंवसे तुटी सांडूनि मागें। माजीं अतिसूक्ष्म अंगें। चंद्र जैसा राहे ।७५। ना तरी वार्षिया सांडिली। ग्रीष्में नाहीं मांडिली। माजीं निजरूपें निवडली। गंगा जैसी ।७६। तैसी संकल्पविकल्पाची वोढी। सांडूनि रजतमाची कावडी। भोगितां निजधर्माची आवडी। बुद्धि उरे ।७७। इंद्रियवर्गीं दाखविलिया। विरुद्धा अथवा भलिया। विस्मय कांहीं केलिया। नुठी चित्तीं ।७८। गांवा गेलिया वल्लभ। पतिव्रतेचा विरहक्षोभ। भलतेसणी हानिलाभ। न मनीं जेवीं ।७९। तेवीं सत्स्वरूप रुचलेपणें। बुद्धी जे ऐसें अनन्य होणें। ते सत्त्वशुद्धि म्हणे। केशिहंता ।८०। आतां आत्मलाभाविखीं। ज्ञानयोगामाजीं एकी। जे आपुलिया ठाकी। हांवे भरे ।८१। तेथ सगळिये चित्तवृत्ती। त्याग करणें या रीती। निष्कामें पूर्णाहुति। हुताशीं जैसी ।८२। कां सुकुळीनें आपुली। आत्मजा सत्कुळींचि दिधली। हें असो लक्ष्मी स्थिरावली। मुकुंदीं जैसी ।८३। तैसें निर्विकल्पपणें। जें योगज्ञानींच या वृत्तिक होणें। तो तिजा गुण म्हणे। कृष्णनाथु ।८४। आतां देहवाचाचित्तें। यथासंपन्नें वित्तें। वैरी जालियाही आर्तातें। न वंचणें जें कां ।८५। फुलीं फळीं छाया। मुळीं पत्रींही धनंजया। वाटेचा न चुके आलिया। वृक्ष जैसा ।८६। तैसें मनौनि धनवरी। विद्यमानें आल्या अवसरीं। श्रांताचिये मनोहारीं। उपयोगा जाणें ।८७। तया नांव जाण दान। जें मोक्षनिधानाचें अंजन। हें असो आयिक चिह्न। दमाचें तें ।८८। तरि विषयेंद्रिय मिळणी। करूनि घापे वितुटणी। जैसें तोडिजे खडूळपाणी। पारकेया ।८९। तैसा विषयजातांचा वारा। वाजों नेदिजे इंद्रियद्वारीं। इयें बांधोनि प्रत्याहारा। हातीं वोपी ।९०। आंतुला चित्ताचे अंगवरी। प्रवृत्ति पेलूनि माघारी। आगी सुयिजे दाहींही द्वारीं। वैराग्याची ।९१। श्वासोछ्वासाहुनी बहुवसें। व्रतें आचरे खरपुसें। वोसंतिता रात्रिदिवसें। नाराणुक जया ।९२। पैं दम ऐसा म्हणिपे। तो हा जाण स्वरूपें। यागार्थही संक्षेपें। सांगों ऐक ।९३। तरि ब्राह्मण करूनि धुरे। स्त्रियादिक पैल मेरे। माझारीं अधिकारें। आपुलालेनि ।९४। जया जे सर्वोत्तम। भजनीय देवताधर्म। तें तेणें यथागम। विधी यजिजें ।९५। जैसा द्विज षट्कर्में करी। शूद्र तयातें नमस्कारी। कीं दोहींसिही सरोभरी। निपजे याग ।९६। तैसें अधिकारपर्यालोचें। हें यज्ञ करणें सर्वांचें। परि विष फळाशेचें। न घापे माजीं ।९७। आणि मी कर्ता ऐसा भावो। नेदिजे देहाचेनि द्वारें जावों। ना वेदाज्ञेसि तरी ठावो। होइजे स्वयें ।९८। अर्जुना एवं यज्ञ। सर्वत्र जाण साज्ञ। कैवल्यमार्गींचा अभिज्ञ। सांगाती हा ।९९। आतां चेंडुवें भूमी हाणिजे। हें नव्हे तो हाता आणिजे। कीं शेतीं बीं विखुरिजे। परी पिकीं लक्ष ।१००। ना तरी ठेविलें देखावया। आदर कीजे दिविया। कां शाखा फळें यावया। सिंपिजे मूळ ।१। हें बहुं असो आरिसा। आपणपें देखावया जैसा। पुढतपुढती बहुवसा। उटिजे प्रीतीं ।२। तैसा वेदप्रतिपाद्य जो ईश्वर। तो होआवयालागीं गोचर। श्रुतींचा निरंतर। अभ्यास करणें ।३। तें द्विजांसीच ब्रह्मसूत्र। येरां स्तोत्र का नाममंत्र। आवर्तवणें पवित्र। पाहावया तत्त्व ।४। पार्था गा स्वाध्यावो। बोलिजें तो हा म्हणे देवो। आतां तप शब्दाभिप्रावो। आईक सांगों ।५। तरी दानें सर्वस्व देणें। वेंचणे तें व्यर्थ करणें। जैसें फळोनि स्वयें सुकणें। ओषधीचें ।६। ना ना धूपाचा अग्निप्रवेश। कनकीं तुकाचा नाश। पितृपक्ष पोषितां ऱ्हास। चंद्राचा जैसा ।७। तैसा स्वरूपाचिया प्रसरा—। लागीं प्राणेंद्रियशरीरां। आटणीं करणें जे वीरा। तेंचि तप ।८। अथवा अनारिसें। तपाचें रूप जरी असे। तरि जाण जेविं दुधीं हंसें। सूदली

चांचू ।६। तैसें देहजीवाचिये मिळणी। जो उदयजत सूये पाणी। तो विवेकु अंतःकरणीं। जागवीजो ।११०। पाहतां आत्मयाकडे। बुद्धीचा पैस सांकडे। सनिद्र स्वप्न बुडे। जागणीं जैसें। तैसा आत्मपर्यालोचु। प्रवर्ते जो साचु। तपाचा हा निर्वेचु। धनुर्धरा ।१२। आतां बाळाच्या हितीं स्तन्य। जैसें नानाभूतीं चैतन्य। तैसें प्राणिमात्री सौजन्य। आर्जव तें ।१३।

अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शांतिरपैशुनम्।
दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ऱ्हीरचापलम्।२।

आणि जगाचिया सुखोद्देशें। शरीरवाचामानसें। रहाटणें तें अहिंसे। रूप जाण ।१४। आतां तीख होउनी मवाळ। जैसें जातीचें मुकुळ। कां तेज परी शीतळ। शशांकाचें ।१५। शके दावितांचि रोग फेडूं। आणि जिभे तरि नव्हे कडु। तें वोखद नाहं मा घडूं। उपमा कैंची ।१६। तरी मऊपणें बुबुळें। झगडतांही परि नाडळे। एरव्हीं फोडी कोराळें। पाणी जैसें ।१७। तैसें तोडावया संदेह। तीख जैसें कां लोह। श्राव्यत्वें तरि माधुर्य। पायीं घाली ।१८। ऐकों ठातां कौतुकें। कानातें निघती मुखें। जें साचारिवेचेनि विकें। ब्रह्मही भेदी ।१६। किंबहुना प्रियपणें। कोणातेंही झकऊं नेणें। ययार्थ तरी खुपणें। नाहीं कवणा ।१२०। एऱ्हवीं गोरी कीर काना गोड। परी साचाचा पाखाळीं कीड। आगियेचें करणें उघड। परि जळो तें साच ।२१। कानीं लागतां महुर। अर्थे विभांडी जिव्हार। ते वाचा नव्हे सुंदर। लांवचि पां ।२२। परि अहितीं कोपोनि सोप। लालनीं मऊ जैसे पुष्प। तिये मातेचें स्वरूप। जैसें कां होय ।२३। तैसें श्रवणसुखचतुर। परिणमोनी साचार। बोलणें जें अविकार। तें सत्य येथें ।२४। आतां घालितांही पाणी। पाषाणीं न निघे अणी। कां मथिलिया लोणी। कांजी नेदी ।२५। त्वचा पायें शिरीं। हालेयाही फडे न करी। वसंतींही अंबरीं। न होती फुलें ।२६। ना ना रंभेचेनिही रूपें। शुकीं नुठिजेचि कंदर्पे। कां भस्मी वह्नि न उद्दीपे। घृतेही जेवीं ।२७। तेविंचि कुमारु क्रोधे भरे। तैसिया मंत्राचीं बीजाक्षरें। तियें निमित्तेही अपारें। मीनलिया ।२८। पैं धातयाही पायां पडतां। नुठी गतायु पांडुसुता। तैसी नुपजे उपजवितां। क्रोधोर्मि ।२६। अक्रोधत्व ऐसें। नांव तें ये दशे। जाण ऐसें श्रीनिवासें। म्हणितलें तया ।१३०। आतां मृत्तिकात्यागें घट। तंतुत्यागें पट। त्यजिजे जेविं वट। बीजत्यागें ।३१। कां त्यजूनि भिंतिमात्र। त्यजिजे आघवेंचि चित्र। कां निद्रात्यागें विचित्र। स्वप्नजाल तें ।३२। ना ना जळत्यागें तरंग। वर्षात्यागें मेघ। त्यजिजति जैसे भोग। धनत्यागें ।३३। तेविं बुद्धिमंती देहीं। अहंता सांडून पाहीं। सांडिजे अशेषही। संसारजात ।३४। तया नांव त्याग। म्हणे तो यज्ञांग। हें मानूनि सुभग। पार्थ पुसे ।३५। आतां शांतीचें लिंग। तें व्यक्त मज सांग। देवो म्हणती चांग। अवधान देईं ।३६। तरी गिळोनि ज्ञेयातें। ज्ञाता ज्ञानही माघौतें। हारपे निरुतें। तें शांति पैं गा ।३७। जैसा प्रळयांबूचा उभड। बुडवूनि विश्वाचा पवाड। होय आपणपें निबिड। आपणचि ।३८। मग उगम ओघ सिंधु। हा नुरेचि व्यवहारभेदु। परि जरी जलैक्याचा बोधु। तोही कवणा ।३६। तैसी ज्ञेया देता मिठी। ज्ञातृत्वही पडे पोटीं। मग उरे तेंचि किरीटी। शांतीचें रूप ।१४०। आतां कदर्थवित व्याधी। बळीकरणाचिया आधीं। आपपर न शोधी। सद्वैद्य जैसा ।४१। कां चिखलीं रुतली गाये। धड भाकड न पाहे। जो तियेचिया ग्लानी होये। कालाभुला ।४२। ना ना बुडतयातें सकरुण। न पुसे अंत्यज कीं ब्राह्मण। काढूनि राखे प्राण। हेंचि जाणे ।४३। कीं मायवणी पापियें। उघडी केली विपायें। ते नेसविल्यावीण न पाहे। शिष्ट जैसा ।४४। तैसें अज्ञानप्रमादादिकीं। कां प्राक्तनही सदोषीं। निंद्यत्वाचा सर्वविषीं। खिळिले जे ।४५। तयां आंगीक आपुलें। देऊनियां भलें। विसरविजती सलें। सलतीं तियें ।४६। अगा पुढिलाचा दोष। करूनि आपुलिये दिठी चोख। मग घापे अवलोक। तयावरी ।४७। जैसा पुजूनि देवो पाहिजे। पेरूनि शेता जाइजे। तोषोनि प्रसाद घेइजे। अतिथीचा ।४८। तैसें आपुलेनि गुणें। पुढिलांचे उणें। फेडुनियां पाहणें। तयाकडे ।४६। वांचूनि न विंधिजे वर्मी। नातुडविजे अकर्मीं। न बोलविजे नामीं। सदोषीं तिहीं ।१५०। वरि कोणे एके उपायें। पडिलें तें उभें होये। तेंचि कीजे परि धाये। नेदावे वर्मी। पै उत्तमाचिया साठीं। नीच मानिजे किरीटी। हें वांचोनि दिठी। दोष न घेपे ।५२। अगा अपैशून्याचें लक्षण। अर्जुना हें फुडें जाण। मोक्षमार्गींचे सुखासन। मुख्य हें गा ।५३। आतां दया ते ऐसी। पूर्णचंद्रिका जैसी। निववितां न कडसी। सानें थोरें ।५४। तैसें दुःखिताचें शिणणें। हिरतां सकणवपणें। उत्तमाधम नेणें। विवंचूं गा ।५५। पैं जगीं जीवनासारिखें। वस्तु अंगवरी उपखे। परि जातें जीवित राखे। तृणाचेंही ।५६। तैसे पुढिलाचेनि तापें। कळवळलिये कृपे। सर्वस्वेंसीं दिधलेही आपणपें। न्यूनचि मानी ।५७। निम्न भरलियाउणें। पाणी ढळोचि नेणें। तेविं श्रांतीं तोषौनि जाणें। सामोरें पां ।५८। पैं पायीं कांटा नेहटे। तंव व्यथा जीवीं उमटे। तैसा पोळे संकटें। पुढिलाचेनि ।५६। कां पावो शीतळता लाहे। कीं ते डोळ्याचिलागीं होये। तैसें परसुखें जाये। सुखावतु ।१६०। किंबहुना तृषितालागीं। पाणी आरायिलें असे जगीं। तैसें दुःखितांचे सेलभागी। जिणें जयाचें ।६१। तो पुरुष वीरराया। मूर्तिमंत जाण दया। मी उदयजतांचि तया ऋणिया लाभें ।६२। आतां सूर्यासि जीवें। अनुसरलिया राजीवें। परि तें तो न शिवें। सौरभ्य जैसें ।६३। कां वसंताचिया वाहाणीं। आलिया वनश्रींच्या अक्षौहिणी। ते न करीतचि घेणीं। निगाला तो ।६४। हें असो महासिद्धिंसीं। लक्ष्मीहि आलिया पाशी। परि महाविष्णु जैसी। न गणीच ते ।६५। तैसें ऐहिकींचे कां स्वर्गींचे। भोग पाइक जालिया इच्छेचे। परि भोगावें हें न रुचे। मनामाजीं ।६६।

बहुवें काय कौतुकीं। जीव नोहे विषयाभिलाखी। अलोलुप्त्व दशा ठाउकी। जाण ते हे।६७। आतां माशियां जैसें मोहळ। जळचरां जेविं जळ। कां पक्षिया अंतराळ। मोकळें हें।६८। ना तरी बाळकोद्देशें। मातेचें स्नेह जैसें। कां वसंतींच्या स्पर्शें। मऊ मलयानिल।६९। डोळ्यां प्रियाची भेटी। कां पिलियां कूर्मीची दिठी। तैसी भूतमात्रीं राहटी। मवाळ ते।१७०। स्पर्शें अतिमृदु। मुखीं घेतां सुस्वादु। घ्राणासि सुगंधु। उजाळ आंगें।७१। तो आवडे तेवढा घेतां। विरुद्ध जरी न होता। तरी उपमे येता। कापूर कीं।७२। परी महाभूतें पोटीं वाहे। तेवीचि परमाणुमाजीं सामाये। या विश्वानुसार होये। गगन जैसें।७३। काय सांगों ऐसे जिणें। जें जगाचेनि जीवें प्राणें। तया नांव म्हणे। मार्दव मी।७४। आतां पराजयें राजा। जैसा कदर्थिजे लाजा। कां मानिया निस्तेजा। निकृष्टास्तव।७५। नाना चांडाळमंदिराशीं। अवचटें आलिया संन्यासी। मग लाज होय जैसी। उत्तमा तया।७६। क्षत्रियां रणीं पळोनि जाणें। तें कोण साहे लाजिरवाणें। कां वैधव्यें पाचारणें। महासतियेतें।७७। रूपसा उदयलें कुष्ट। संभावितां कुटीचें बोट। तया लाजा प्राणसंकट। होय जैसें।७८। तैसें औटहातपणें। जें शव होऊनि जिणें। उपजों उपजों मरणें। नावानावा।७९। तियें गर्भभेदमुसें। रक्तमूत्ररसें। वोंतीव होऊनि असे। तें लाजिरवाणें।१८०। हें बहु असों देहपणें। नामरूपासि येणें। नाहीं गा लाजिरवाणें। तयाहूनि।८१। ऐसैसिया अवकळा। घेणें शरीराचा कांटाळा। ते लाज पै निर्मळा। निसुगा गोड।८२। आतां सूत्रतंतु तुटलिया। चेष्टाचि ठाके सायखडिया। तैसी प्राणजयें कर्मेंद्रियां। खुंटे गति।८३। कीं मावळलिया दिनकर। सरे किरणांचा प्रसर। तैसा मनोजयें प्रकार। बुद्धींद्रियां।८४। एवं मनपवननियमें। होतीं दाही इंद्रियें अक्षमें। तें अचापल्य वर्में। येणें होय।८५।

तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता।
भवंति संपदं दैवीमभिजातस्य भारत।३।

आतां ईश्वरप्राप्तीलागीं। प्रवर्ततां ज्ञानयोगी। धिंवसेयाच्या आंगीं। वोसिवा नोहे।८६। वोखटें मरणाऐसें। तेंही आलें अग्निप्रवेशें। परी प्राणेश्वरोद्देशें। न गणीचि सती।८७। तैसें आत्मनाथाचिया आधीं। लावूनि विषयविषाची बांधी। धांवों आवडे पाणधीं। शून्याचिये।८८। न ठाके निषेध आड। न पडे विधीची भीड। नुपजेचि जीवा कोड। महासिद्धीचें।८९। ऐसें ईश्वराकडे निज। धांवे आपसया सहज। तया नांव तेज। आध्यात्मिक तें।१९०। आतां सर्वही साहातिया गरिमा। गर्वा न ये तेचि क्षमा। जैसें देह वाहोनि रोमा। वाहणें नेणें।९१। आणि मातलिया इंद्रियांचे वेग। कां प्राचीनें खवळलें रोग। अथवा योगवियोग। प्रियाप्रियाचे।९२। यया आघवियांचाचि थोर। एके वेळे आलिया पूर। तरी अगस्त्याहूनि धीर। उभा ठाके।९३। आकाशी धूमाची रेखा। उठिली बहुवा आगळिका। ते गिळी येकीं झुळुका। वारा जेवीं।९४। तैसें आधिभूताधिदैवां। अध्यात्मादि उपद्रवा। पातलेया पांडवा। गिळूनि घाली।९५। ऐसें चित्तक्षोभाच्या अवसरीं। उचलूनि धैर्या जें गावें करी। धृति म्हणिपे अवधारी। तियेतें गा।९६। आतां निर्वाळूनि कनकें। भरिला गांगें पीयूखें। तया कलशाचियासारिखें। शौच असे।९७। जे आंगीं निष्काम आचार। जीवीं विवेक साचार। तो सबाह्य घडला आकार। शुचित्वाचाचि।९८। कां फेडित पापताप। पोखीत तीरींचे पादप। समुद्रा जाय आप। गंगेचें जैसें।९९। कां जगाचें आंध्य फेडित। श्रियेचीं राउळें उघडित। निघे जैसा भास्वत। प्रदक्षिणे।२००। तैसीं बांधली सोडित। बुडाली काढित। सांकडी फेडित। आर्तांचिया।१। किंबहुना दिवसरातीं। पुढिलांचे सुख उन्नती। आणित आणित स्वार्थीं प्रवेशिजे।२। वांचूनि आपुलिया काजालागीं। प्राणिजाताच्या अहितभागीं। संकल्पाचीही आडवंगी। न करणें जें।३। पैं अद्रोहत्व ऐशिया गोष्टी। ऐकसी जिया किरीटी। तें सांगितलें हें दिठी। पाहों ये तैसें।४। आणि गंगा शंभूच्या माथां। पावोनि संकोचली जेविं पार्था। तेविं मान्यपणें सर्वथा। लाजणें जें।५। ते हें पुढतपुढती। अमानित्व जाण सुमति। मागां सांगितलेंसे किती। तेंचि तें बोलों।६। एवं इहीं सव्विसें। ब्रह्मसंपदा हे वसत असे। मोक्षचक्रवर्तीचें जैसें। अग्रहार होय।७। ना ना हे संपत्ति दैवी। या गुणतीर्थांची नीच नवी। निर्विण्णसगरांची दैवी। गंगाचि आली।८। कीं गुणकुसुमांची माळा। हे घेऊनि मुक्तिबाळा। वैराग्यनिरपेक्षाचा गळा। गिंवसीत असे।९। कीं सव्विसेंगुणज्योती। इहीं उजळूनि आरती। गीता आत्मया निजपती। नीराजना आली।२१०। उगळितें निर्मळें। गुण इयेंचि मुक्ताफळें। दैवी शुक्तिकळें। गीतार्णवींची।११। काय बहु वानूं ऐसी। अभिव्यक्ति ये अपैसी। केलें दैवी गुणराशी। संपत्तिरूप।१२। आतां दुःखाची आंतुवट वेली। दोषकाट्यांची जरी भरली। तरी निजाभिधानीं घातली। आसुरी ते।१३। पैं त्याज्य त्यजावयालागीं। जाणावी जरी अनुपयोगी। तरी ऐका ते चांगी। श्रोत्रशक्ति।१४। तरी नरकव्यथा थोरी। आणावया दोषीं अघोरीं। मेळ केला ते आसुरी। संपत्ति हे।१५। ना ना विषवर्ग एकवट। तया नांव ऐसे बासट। आसुरी संपत्ति हा खोट। दोषांचा तैसा।१६।

दंभो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च।
अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ संपदमासुरीम्।४।

तरि तयाचि आसुरां। दोषांमाजी जया वीरा। वाडपणाचा डांगोरा। तो दंभ ऐसा।१७। जैसी आपुली जननी। नग्न दाविलिया जनीं। ते तीर्थचि परी पतनीं। कारण होय। कां विद्या गुरूपदिष्टा। बोभाइलिया चोहटां। तरी इष्टदाचि परि अनिष्टा। हेतु होती।१८। पैं आंगें बुडतां महापूरीं। जे वेगें काढी पैलतीरीं। ते नावचि बांधिलिया

शिरीं। बुडवी जैसी।२२०। कारण जे जीविता। तें वानिलें जरि सेवितां। तरी अन्नचि पांडुसुता। होय विष।२१। तैसा दृष्टादृष्टाचा सखा। धर्म जाला तो फोकारिजे देखा। तरि तारिता तोचि दोखा–। लागीं होय।२२। म्हणौनि वाचेचा चौबारा। घातलिया धर्माचा पसारा। धर्मचि तो अधर्म होय वीरा। तो दंभ जाणें।२३। आतां मूर्खाचिये जिभे। अक्षरांचा आंबुखा सुभे। आणि तो ब्रह्मसभे। न रिझे जैसा।२४। कां मादुरीलोकांचा घोडा। गजपतिही मानी थोडा। कां कांटियेवरिल्या सरडा। स्वर्गही नीच।२५। तृणाचेनि इंधनें। आगी धांवे गगनें। थिल्लरबळें मीनें। न गणिजे सिंधु।२६। तैसा माजे स्त्रिया धनें। विद्या स्तुती बहुतें मानें। एके दिवसींचेनि परान्नें। अल्पक जैसा।२७। अभ्रच्छायेचिया जोडी। निदैव घर मोडी। मृगांबु देखोनि फोडी। पाणियाढें मूर्ख।२८। किंबहुना ऐसैसें। उतणें जे संपत्तिमिसें। तो दर्प गा अनारिसें। न बोलो घेईं।२६। आणि जगा वेदीं विश्वास। आणि विश्वासीं पूज्य ईश। जगीं एक तेजस। सूर्यचि हा।२३०। जगस्पृहे आस्पद। एक सार्वभौमपद। न मरणें निर्विवाद। जगा पढियें।३१। म्हणौनि जरी उत्साहें। यातें वानूं जाये। कीं तें आइकोनि मत्सर वाहे। फुगों लागे।३२। म्हणे ईश्वरातें खाये। तया वेदा विष सूयें। गौरवामाजीं त्राये। भंगीत असे।३३। पतंगा नावडे ज्योति। खद्योता भानूची खंती। टिटिभेनें अपांपति। वैरी केला।३४। तैसा अभिमानाचेनि मोहें। ईश्वराचेंही नाम न साहे। बापातें म्हणे मज हे। सवती जाली।३५। ऐसा मान्यतेचा पुष्टगंड। तो अभिमानी परमलंड। रौरवाचा रूढ। मार्गचि पैं।३६। आणि पुढिलांचें सुख। देखणियांचें होय मिख। चढे क्रोधाग्नीचे विख। मनोवृत्ती।३७। शीतजळाचिये भेटी। तातला तेलीं आगी उठी। चंद्र देखोनि जळे पोटीं। कोल्हा जैसा।३८। विश्वाचें आयुष्य जेणें उजळें। तो सूर्य उदैला देखोनि सवळे। पापिया फुटती डोळे। डुडुळाचे।३६। जगाची सुखपहांट। चोरां मरणाहूनि निकृष्ट। दुधाचें काळकूट। होय व्याळीं।२४०। अगाधें समुद्रजळें। प्राशितां अधिक जळे। वडवाग्नी न मिळे। शांति कहीं।४१। तैसा विद्याविनोदविभवें। देखे पुढिलांची दैवें। तंव तंव रोष दुणावें। क्रोध तो जाण।४२। आणि मन सर्पाची कुटी। डोळे नाराचांची सुटी। बोलणें ते वृष्टि। इंगळांची।४३। येर जे क्रियाजात। तें तिखयाचे कर्वत। ऐसें सबाह्य खसखसित। जयाचें गा।४४। तो मनुष्यांत अधम जाण। पारुष्याचें अवतरण। आतां आइक खूण। अज्ञानाची।४५। तरी शीतोष्णस्पर्शा। निवाड नेणे पाषाण जैसा। कां रात्रीं आणि दिवसां। जात्यंध तो।४६। आगी उठिला आरोगणें। जैसा खाद्याखाद्य न म्हणे। कां परिस पाड नेणें। सोनया लोहा।४७। ना तरि तें नानारसीं। रिघोनि दर्वी जैसी। परि रसस्वादासी। चाखों नेणें।४८। कां वारा जैसा पारखी। नव्हेचि गा मार्गामार्गाविखीं। तैसें कृत्याकृत्यविवेकीं। अंधपण जें।४६। हें चोख हें मैळ। ऐसें नेणोनिया बाळ। देखे तें केवळ। मुखींचि घाली।२५०। तैसें पापपुण्याचें खिचटें। करोनि खातां बुद्धिचेष्टे। कडु मधुर न वाटे। ऐसी जे दशा।५१। तिये नाम अज्ञान। या बोला नाहीं आन। एवं साही दोषांचें चिह्न। सांगितलें।५२। इंहींच साही दोषांगीं। हे आसुरी संपत्ति दाटुगी। जैसें थोर विष भुजंगीं। अंग सानें।५३। कां तिघां वह्नींच्या पांती। पाहतां थोडे ठाय गमती। परि विश्वही प्राणाहुती। करूं न पुरे।५४। धातयाही गेलिया शरण। त्रिदोषीं न चुके मरण। तया तिहींची दुणी जाण। साही दोष हे।५५। इंही साही दोषीं संपूर्णी। जाली इयेची उभारणी। म्हणौनि आसुरी उणी। संपदा नव्हे।५६। परि क्रूरग्रहांची जैसी। मांदी मिळे एकेचि राशी। कां येती निंदकापासीं। अशेष पापें।५७। मरणाराचें आंग। पडिघाती अवघेचि रोग। कां कुमुहूर्ती दुर्योग। एकवटती।५८। विश्वासला आतुडवीजे चोरा। शिणला सुइजे महापुरा। तैसें दोषीं इहीं नरा। अनिष्ट कीजे।५६। कां आयुष्य जातिये वेळे। शेळिये सातवेउळी मिळे। तैसे साही दोष सगळे। जोडती तया।२६०। मोक्षमार्गाकडे। जयाचा आंबुखा पडे। न निघे म्हणौनि बुडे। संसारीं जो।६१। अधमां योनींच्या पाउटीं। उतरत जो किरीटी। सीवरांही तळवटीं। बैसणें घे।६२। हें असो तयाच्या ठायीं। मिळोनि साहीं दोषीं इही। आसुरी संपत्ति पाही। वाढविजे।६३। ऐसिया या दोनी। संपदा प्रसिद्धा जनीं। सांगितलिया चिह्नीं। वेगळाल्या।६४।

दैवी संपद्विमोक्षाय निबंधायासुरी मता।
मा शुचः संपदं दैवीमभिजातोऽसि पांडव।५।

इया दोन्हीमाजीं पहिली। दैवी जे म्हणितली। ते मोक्षसूर्यें पाहली। उखाचि जाण।६५। येरी जे दुसरी। संपत्ति कां आसुरी। ते मोहलोहाची खरी। सांखळी जीवां।६६। परि हें आइकोनि झणें। भय घेसी हो मनें। काय रात्रीचा दिनें। धाक धरिजें।६७। हें आसुरी संपत्ति तया। बंधालागीं धनंजया। जो साही दोषां यया। आश्रय होय।६८। तूं तंव पांडवा। सांगितलेया दैवा। गुणनिधि बरवा। जन्मलासी।६६। म्हणोनि पार्था तूं या। दैवी संपत्ति स्वामिया। होऊनि यावें उवाया। कैवल्याचिया।२७०।

द्वौ भूतसर्गौ लोकेऽस्मिन्दैव आसुर एव च।
दैवो विस्तरशः प्रोक्त आसुरं पार्थ मे शृणु।६।

आणि दैवां आसुरां। संपत्तिवंतां नरां। अनादिसिद्ध उजरा। राहाटीचा आहे।७१। जैसें रात्रीच्या अवसरीं। व्यापारिजे निशाचरीं। दिवसा सुव्यवहारीं। मनुष्यादिकीं।७२। तैसिया आपुलालिया राहाटीं। वर्तती दोनी सृष्टि। दैवी आणि किरीटी। आसुरी येथ।७३। तेवींचि विस्तारूनि दैवी। ज्ञानकथनादि प्रस्तावीं। मागील ग्रंथीं बरवी। सांगीतली।७४। आतां आसुरी जे सृष्टि। तेथींची उपलऊं गोठी। अवधानाची दिठी। दे पां निकी।७५। तरी वाद्येवीण नाद। नेदी कवणाही साद। कां अपुष्पी मकरंद। न लभे जैसा।७६। तैसी प्रकृति हे आसुर। एकली नोहे गोचर। जंव एकाधें शरीर। माल्हाती ना।७७। मग आविष्करला लांकुडें। पावक जैसा जोडे। तैसी प्राणिदेहीं सांपडे। आटोपली हे।७८। ते वेळीं जे वाढी उंसा। तेचि आंतुला रसा। देहाकार होय तैसा। प्राणियांचा।७९। आतां तयाचि प्राणियां। रूप करूं धनंजया। घडले जे आसुरिया। दोषवृंदीं।२८०।

प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च जना न विदुरासुराः।
न शौचं नापि चाचारो न सत्यं तेषु विद्यते।७।

तरी पुण्यालागीं प्रवृत्ति। कां पापाविषयीं निवृत्ति। या जाणणेयाची राती। तयाचें मन।८१। निगणेया आणि प्रवेशा। चित्त नेदीत आवेशा। कोशकीट जैसा। जाचिनला पैं।८२। कां दिधलें मागुती येईल। कीं न ये हें पुढील। न पाहतां दे भांडवल। मूर्ख चोरां।८३। तैसिया प्रवृत्ति निवृत्ति दोनी। नेणिजती आसुरी जनीं। आणि शौच तें स्वप्नीं। देखती ना ते।८४। काळिमा सांडील कोळसा। वरि चोखी होईल वायसा। राक्षसही मांसा। विटों शके।८५। परि आसुरां प्राणियां। शौच नाहीं धनंजया। पवित्रत्व जेविं भांडिया। मद्याचिया।८६। वाढविती विधीची आस। कां पाहाती वडिलांची वास। कर्मे आचरती हे भाष। नेणतीचि ते।८७। जैसें चरणें शेळियेचें। कां धांवणें वारियाचें। जाळणें अग्नीचें। भलतेउतें।८८। तैसें पुढां सूनि स्वैर। आचरती ते गा आसुर। सत्येंसीं कीर वैर। सदाचि तयां।८९। तरी नांगिया आपुलिया। विंचू करी गुदगुलिया। तरी साचा बोलिया। बोलती ते।२९०। अपानेचेनि तोंडें। जरि सुगंधा येणें घडे। तरि सत्य तया जोडे। आसुरांतें।९१। ऐसे ते न करितां कांहीं। आंगेंचि वोखटे पाहीं। आतां बोलती ते नवाई। सांगिजेल।९२। येऱ्हवीं करेयाच्या ठायीं चांग। तें तयासि कैचें नीट आंग। तैसा आसुरांचा प्रसंग। प्रसंगे परिस।९३। उधवणीचें जेविं तोंड। उगळी धुंवाचे उभड। हें जाणिजे तेविं उघड। सांगों ते बोल।९४।

असत्यमप्रतिष्ठं ते जगदाहुरनीश्वरम्।
अपरस्परसंभूतं किमन्यत्कामहैतुकम्।८।

तरि विश्व हा अनादि ठावो। येथ नियंता ईश्वररावो। चावडिये न्यावो अन्यावो। निवडी वेद।९५। वेदीं अन्यायी पडे। तो निरयभोगें दंडे। सन्यायी तो सुरवाडें। स्वर्गीं जिये।९६। ऐसी हे विश्वव्यवस्था। अनादि जे पार्था। इयेतें म्हणती ते वृथा। अवघेंचि हें।९७। यज्ञमूढ ठकिले यागीं। देवपिसें प्रतिमालिंगी। नागवले भगवे योगी। समाधिभ्रमें।९८। येथ आपलेनि बळें। भोगिजे जें जें वेंटाळें। हें वांचोनि वेगळें। पुण्य आहे।९९। ना अशक्तपणें आंगिकें। वेगळवेंटाळीं न टके। ऐसा गोदिजे वीण विषयसुखें। तेंचि पाप।३००। प्राण घेपती संपन्नांचें। हें पाप जरी साचें। तरी सर्वस्व हाता ये तयांचें। हें पुण्यफळ कीं।१। बळी अबळातें खाय। हेंचि बाधित जरी होय। तरी मासयां कां न होय। निसंतान।२। आणि कुळें शोधूनि दोन्ही। कुमारेंचि शुभलग्नीं। मेळवीजती प्रजासाधनीं। हेतु जरी।३। तरी पशुपक्ष्यादि जाती। जया मिती नाहीं संतती। तयां कोणें प्रतिपत्ती। विवाह केले।४। चोरियेचें धन आलें। तरि तें कोणासि विष जालें। वालभें परद्वार केलें। कोढी कोणी होय।५। म्हणोनि देव गोसावी। तो धर्माधर्म भोगवी। आणि परत्राच्या गांवीं। करी तो भोगी।६। परि परत्र ना देवो। न दिसे म्हणोनि तें वावो। आणि कर्ता निमे मा ठावो। भोग्यासि कवण।७। येथ उर्वशिया इंद्र सुखी। जैसा कां स्वर्गलोकीं। तैसाचि कृमिही नरकीं। लोळतु श्लाघे।८। म्हणौनि नरक स्वर्ग। नव्हे पापपुण्यभाग। जे दोहीं ठायीं सुखभोग। कामाचाचि तो।९। याकारणें कामें। स्त्रीपुरुषयुग्में। मिळती तेथ जन्मे। आघवें जग।३१०। आणि जें जें अभिलाषें। स्वार्थालागीं पोषें। पाठीं परस्परद्वेषें। कामचि नाशी।११। एवं कामावांचूनि कांहीं। जगा मूळचि आन नाहीं। ऐसें बोलती पाही। आसुर गा ते।१२। आतां असो हे किडाळ। बोली न करूं पाघळ। सांगताचि सफोल। होतसे वाचा।१३।

एतां दृष्टिमवष्टभ्य नष्टात्मानोऽल्पबुद्धयः।
प्रभवंत्युग्रकर्माणः क्षयाय जगतोऽहिताः।९।

आणि ईश्वराचिया खंती। नुसधियाचि करिती चांथी। हेंही नाहीं चित्तीं। निश्चय एक।१४। किंबहुना उघड। आंगीं लाऊनियां पाखंड। नास्तिकपणाचें हाड। रोंविलें जीवीं।१५। ते वेळीं स्वर्गालागीं आदर। कां नरकाचा अडदर। या वासनांचा अंकुर। जळोनि गेला।१६। मग केवळ ये देहखोडां। अमेध्योदकाचा बुडबुडा। विषयपंकीं

सुहाडा। बुडाले गा।१७। जैं आटावे होती जळचर। तैं डोहीं मिळती ढीवर। कां पडावें होंय शरीर। तैं रोगा उदय।१८। उदैजणें केतूचें जैसें। विश्वा अनिष्टोद्देशें। जन्मती ते तैसे। लोकां आटूं।१९। विरूढलिया अशुभ। फुटती तैं ते कोंभ। पापाचे कीर्तिस्तंभ। चालते ते।३२०। आणि मागां पुढां जाळणें। वांचूनि आगी कांहीं नेणें। तैसें विरुद्धचि एक करणें। भलतेयां।२१। परि तेचि गा करणें। आदरिती संभ्रमें जेणें। तो आइक पार्था म्हणे। श्रीनिवास।२२।

काममाश्रित्य दुष्पूरं दंभमानमदान्विताः।
मोहाद्गृहीत्वाऽसद्ग्राहान्प्रवर्ततेऽशुचिव्रताः।१०।

तरि जाळ पाणियें न भरें। आगी इंधनें न पुरे। तयां दुर्भरांचिये धुरे। भुकाळु जो।२३। तया कामाचा वोलावा। जीवीं धरूनि पांडवा। दंभमानाचा मेळावा। मेळविती।२४। मातलिया कुंजरा। आगळी जाली मदिरा। तसा मदाचा ताठा तंव जरा। चढतां आंगीं।२५। आणि आग्रहा तोचि ठावो। वरि मौढ्याऐसा सावावो। मग काय वानूं निर्वाहो। निश्चयाचा।२६। जिहीं परोपताप घडे। परावा जीवू रगडे। तिहीं कर्मीं होऊनि गाढे। जन्मवृत्ती।२७। मग आपुलें केलें फोकारिती। आणि जगातें धिक्कारिती। दाहीं दिशीं पसरिती। स्पृहाजाळ। २८। ऐसेनि गा आटोपें। थोरिये आणिती पापें। धर्मधेनू खुरपें। सुटलें जैसें।२९।

चिंतामपरिमेयां च प्रलयांतामुपाश्रिताः।
कामोपभोगपरमा एतावदिति निश्चिताः।११।

याचि एका आयाती। तयाचिया कर्मप्रवृत्ती। आणि जिणियाहीं परौती। वाहती चिंता।३३०। पाताळाहूनि निम्न। जियेचिये उंचिये सानें गगन। जे पाहतां त्रिभुवन। अणुही नोहे।३१। जे योगपटाची मवणी। जीवीं अनियम चिंतवणी। जे सांडूं नेणें रमणी। वल्लभा जैसी।३२। तैसी चिंता अपार। वाढविती निरंतर। जीवीं सूनि असार। विषयादिक।३३। स्त्रिया गाइलें आइकावें। स्त्रीरूप डोळां देखावें। सर्वेंद्रियें आलिंगावें। स्त्रियेतेंचि।३४। कुरवंडी कीजे अमृतें। ऐसें सुख स्त्रियेपरौतें। नाहींचि म्हणौनि चित्तें। निश्चयो केला।३५। मग तयाचि स्त्रीभोगा–। लागीं पाताळस्वर्गां। धांवती दिग्विभागा–। परौतेही।३६।

आशापाशशतैर्बद्धाः कामक्रोधपरायणाः।
ईहंते कामभोगार्थमन्यायेनार्थसंचयान्।१२।

आमिषकवळु थोरी आशा। न विचारितां गिळी मासा। तैसें कीजे विषयाशा। तयांसि गा।३७। वांछित तंव न पवती। मग कोरडियेचि आशेची संतति। वाढऊं वाढऊं होती। कोशकिडे।३८। आणि पसरिला अभिलाष। अपूर्ण होय तोचि द्वेष। एवं कामक्रोधांहूनि अधिक। पुरुषार्थ नाहीं।३९। दिहा खोलणें रात्रीं जागोवा। ठाणांतरिया जैसा पांडवा। अहोरात्रींही विसांवा। भेटेचिना।३४०। तैसें उंचौनि लोटिलें कामें। नेहटती क्रोधाचिये ढिमे। तरी रागद्वेषप्रेमें। न माती केंही।४१। तेविंचि जीवींचिया हांवा। विषयवासनांचा मेळावा। केला परी तो भोगावा। अर्थें कीं ना।४२। म्हणौनि भोगावयाजोगा। पुरता अर्थ पैं गा। आणावया जगा। झोंबती सैरा।४३। एकातें साधुनि मारिती। एकाचीं सर्वस्वें हरिती। एकालागीं उभारिती। अपाययंत्रें।४४। पाशिकें पोतीं वागुरा। सुणीं ससाणे चिकाटी खोंचारा। घेऊनि निघती डोंगरा। पारधी जैसे।४५। ते पोसावया पोट। मारूनि प्राणियांचे संघाट। आणिती ऐसें निकृष्ट। तेंही करिती।४६। परप्राणघातें। मेळविती वित्तें। मिळाल्या चित्तें। तोषणें कैसें।४७।

इदमद्य मया लब्धमिमं प्राप्स्ये मनोरथम्।
इदमस्तीदमपि मे भविष्यति पुनर्धनम्।१३।

म्हणे आजि मियां। संपत्ति बहुतेकांचियां। आपुल्या हातीं केलिया। धन्य ना मी।४८। ऐसा श्लाघों जंव जाये। तंव मन आणीकही वाहे। सवेंचि म्हणे पाहे। आणिकांचेही आणूं।४९। हें जेतुलें असे जोडिलें। तयाचेनि भांडवलें। लाभा घेईन उरलें। चराचर हें।३५०। ऐसेनि धना विश्वाचिया। मीचि होईन स्वामिया। मन दिठी पडे तया। उरों नेदीं।५१।

असौ मया हतः शत्रुर्हनिष्ये चापरानपि।
ईश्वरोऽहमहं भोगी सिद्धोऽहं बलवान् सुखी।१४।

हे मारिले वैरी थोडे। आणीकही साधीन गाढे। मग नांदेन पवाडें। येकलाचि मी।५२। मग माझी होतील कामारी। तियेंवांचूनि येरें मारी। किंबहुना चराचरीं। ईश्वर तो मी।५३। मी भोगभूमीचा रावो। आजि सर्वसुखासी ठावो। म्हणोनि इंद्रही वावो। मातें पाहूनि।५४। मी मन वाचा देहें। करीं तें कैसे नोहे। के मजवांचूनि आहे। आज्ञासिद्ध आन।५५। तंवचि बळिया काळ। जंव न दिसें मी अतुर्बळ। सुखाचा कीर निखिळ। रोसिवा मीचि।५६।

आढ्योऽभिजनवानस्मि कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया।
यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य इत्यज्ञानविमोहिताः।१५।

कुबेर आथिला होये। परी तो नेणे माझी सोये। संपत्ति मजसम नव्हे। श्रीनाथाही।५७। माझिया कुळाचा उजाळु। कां जातिगोतांचा मेळु। पाहतां ब्रह्माही हळु। उणाचि दिसे।५८। म्हणोनि मिरविती नांवें। वायां ईश्वरादि आघवे। नाहीं मजसीं सरी पावे। ऐसें कोण्ही।५९। आतां लोपला अभिचार। त्याचा करीन मी जीर्णोद्धार। प्रतिष्ठिन परमार। यागवरि।३६०। मातें गाती वानिती। नटनाचें रिझविती। तयां देईन मागती। ते ते वस्तु।६१। माजिरा अन्नपानीं। प्रमदांच्या आलिंगनीं। मी होईन त्रिभुवनीं। आनंदाकार।६२। काय बहु सांगों ऐसें। ते आसुरीप्रकृतीपिसे। तुरंबिती असोसें। गगनौळें तियें।६३।

अनेकचित्तविभ्रांता मोहजालसमावृताः।
प्रसक्ताः कामभोगेषु पतंति नरकेऽशुचौ।१६।

ज्वराचेनि आटोपें। रोगी भलतैसें जल्पे। चावळती संकल्पें। जाण ते तैसे।६४। अज्ञान आतुले धूळी। म्हणौनि आशा वाहटुळी। भोवंडीजती अंतराळीं। मनोरथांच्या।६५। अनियम आषाढमेघ। कां समुद्रोर्मि अभंग। तैसे कामिती अनेग। अखंड काम।६६। मग पैं कामनाचि तया। जिवीं जाल्या वेलरिया। वोरपिली कांटिया। कमळें जैसीं।६७। का पाषाणाचिया माथां। हांडी फुटली पार्था। जीवीं तैसें सर्वथा। कुटके जाले।६८। तेव्हां चढतिये रयणीं। तमाची होय पुरवणी। तैसा मोह अंतःकरणीं। वाढोंचि लागे।६९। आणि वाढे जंव जंव मोहो। तंव तंव विषयीं रोहो। विषय तेथ ठावो। पातकासी।३७०। पापें आपलेनि थावें। जंव करिती मेळावे। तंव जितांचि आघवे। येती नरका।७१। म्हणौनि गा सुमति। जे कुमनोरथा पाळिती। ते आसुर येती वस्ती। तया ठाया।७२। जेथ असिपत्रतरुवर। खदिरांगाराचे डोंगर। तावला तेलीं सागर। उतताती।७३। जेथ यातनांची श्रेणी। हे नित्य नवी यमजाचणी। पडती तिये दारुणीं। नरकलोकीं।७४। ऐसें नरकाचिये सेले। भागीं जे जे जन्मलें। तेही देखों भुलले। यजिती यागीं।७५। एऱ्हवीं यागादिक क्रिया। आहाण तेची धनंजया। परि विफळती आचरोनियां। नाटकी जैसे।७६। वल्लभाचिया उजरिया। आपणयाप्रति कुस्त्रिया। जोडोनि तोषिती जैसिया। अहेंवपणें।७७।

आत्मसंभाविताः स्तब्धा धनमानमदान्विताः।
यजंते नामयज्ञैस्ते दंभेनाविधिपूर्वकम्।१७।

तैसें आपणयां आपण। मानितां महंतपण। फुगती असाधारण। गर्वें तेणें।७८। मग लवों नेणती कैसे। आटिवा लोहाचे खांब जैसे। कां उधवले आकाशें। शिळाराशी।७९। तैसे आपुलिये बरवे। आपणचि रिझतां जीवें। तृणाहीहूनि आघवें। मानिती नीच।३८०। वरि धनाचिया मदिरा। माजूनि धनुर्धरा। कृत्याकृत्य विचारा। सवतें केलें।८१। जया आंगीं आयती ऐसी। तेथ यज्ञाची गोठी कायसी। तरि काय काय पिसीं। न करितां गा।८२। म्हणोनि कोणे एके वेळे। मौढ्यमद्याचेनि बळें। यागाचींही टवाळें। आदरिती।८३। ना कुंड मंडप वेदी। ना उचित साधन समृद्धि। आणि तयासी तंव विधि। द्वंद्वचि सदा।८४। देवां ब्राह्मणांचेनि नांवें। आड वारेनहि नोहावें। ऐसें आथी तेथ यावें। लागे कवणा।८५। पैं वासरुवाचा भोकसा। गाईपुढें ठेवूनि जैसा। उगाणा घेती क्षीररसा। बुद्धिवंत।८६। तैसें यागाचेनि नांवें। जग वाऊनि हांवें। नागविती आघवें। अहेराबारीं।८७। ऐशा कांहीं आपुलिया। होमिती जे उजरिया। तेणें कामिती प्राणिया। सर्वनाश।८८।

अहंकारं बलं दर्पं कामं क्रोधं च संश्रिताः।
मामात्मपरदेहेषु प्रद्विषंतोऽभ्यसूयकाः।१८।

मग पुढां भेरी निशाण। लाउनी ते दीक्षितपण। जगीं फोकारिती आण। वावो वावो।८९। तेव्हां महत्त्व तेणें अधमा। गर्वा चढे महिमा। जैसें लेवे दिधले तमा। काजळाचे।३९०। तैसें मौढ्य घणावे। औद्धत्य उंचावे। अहंकार दुणावे। अविवेकही।९१। मग दुजयाची भाष। नुरवावया निःशेष। बळियेपणा अधिक। होय बळ।९२। ऐसा अहंकार बळा। जालिय येकवळा। दर्पसागर मर्यादवेळा। सांडूनि उते।९३। मग वोसंडलेनि दर्पें। कामाही पित्त कुरुपे। तया धगीं सैंध पळिपे। क्रोधाग्नि तो।९४। तेथ उन्हाळां आगी खरमरा। तेलातुपाचिया कोठारा। लागला आणि वारा। सुटला जैसा।९५। तैसा अहंकार बळा आला। दर्प कामक्रोधीं गूढला। या दोहींचा मेळ

जाला। जयांच्या ठायीं।६६। ते आपुलिया सवेशा। मग कोणी कोणी हिंसा। या प्राणियांतें वीरेशा। न साधिती गा।६७। पहिलें तंव धनुर्धरा। आपुलिया मांसरुधिरा। वेंच करिती अभिचारा–। लागोनियां।६८। तेथ जाळिती जियें देहें। यामाजीं जो मी आहें। तया आत्मया मज घाये। वाजती ते।६६। आणि अभिचारकीं तिहीं। उपद्रविजे जेतुलें कांहीं। तेथ चैतन्य मी पाहीं। सीणु पावे।४००। आणि अभिचारावेगळें। विपाये जें अवगळें। तया टाकिती इटाळें। पैशुन्यासीं।१। सती आणि सत्पुरुष। दानशीळ याज्ञिक। तपस्वी अलौकिक। संन्यासी जे।२। कां भक्त हन महात्मे। इयें माझीं निजाचीं धामें। निर्वाळलीं होमधर्मे। श्रौतादिकीं।३। तयां द्वेषाचेनि काळकूटें। बासटोनि तिखटें। कुबोलांची सदटें। सूति कांडें।४।

तानहं द्विषतः क्रूरान्संसारेषु नराधमान्।
क्षिपाम्यजस्रमशुभानासुरीष्वेव योनिषु।१६।

ऐसे आघवाचि परीं। प्रवर्तले माझ्या वैरीं। तयां पापियां जें मी करी। तें आइक पां।५। तरी मनुष्यदेहाचा तागा। घेऊनि रुसती जे जगा। ते पदवी हिरोनि पैं गा। ऐसे ठेवीं।६। जे क्लेशगांवींचा उकरडा। भवपुरींचा पानिवडा। ते तमोयोनि तयां मूढां। वृत्तिचि दें।७। मग आहाराचेनि नांवें। तृणही जेथ नुगवे। ते व्याघ्र वृश्चिक आडवे। तैसिये करीं।८। तेथ क्षुधादुःखें बहुतें। तोडूनि खाती आपणयातें। मरमरों मागुते। होतचि असती।६। कां आपला गरळजाळीं। जाळिती आंगाची पेंदळी। ते सर्पचि करी बिळीं। निरुंधला।४१०। परी घेतला श्वास घापें। येंतुलेनही मापें। विसांवा तयां नाटोपे। दुर्जनांसी।११। ऐसेनि कल्पांचिया कोडी। गणितांही संख्या थोडी। तेतुला वेळु न काढीं। क्लेशौनि तयां।१२। तरि तयांसीं जेथ जाणें। तेथींचें हें पहिलें पेणें। तें पावोनि येरें दारुणें। न होती दुःखें।१३।

आसुरीं योनिमापन्ना मूढा जन्मनि जन्मनि।
मामप्राप्यैव कौंतेय ततो यांत्यधमां गतिम्।२०।

हा ठायवरी घोरी। संपत्ति ते आसुरी। अधोगति अवधारीं। जोडिली तिहीं।१४। पाठीं व्याघ्रादि तामसा। योनी तो अळुमाळु ऐसा। देहाधाराचा उसासा। आथी जोही।१५। तोही मी वोल्हावा हिरें। मग तमचि होती एकसरें। जेथ गेलें आंधारें। काळवंडैजे।१६। जयांची पापा चिळसी। नरक घेती बिवसी। शीण जाय मूर्च्छी। शिणें जेणें।१७। मळ जेणें मैळे। ताप जेणें पोळे। जयाचेनि नांवें सळे। महाभय।१८। पापा जयाचा कंटाळा। उपजे अमंगळ अमंगळा। विटाळही विटाळा। बिहे जया।१६। ऐसें विश्वाचेया वोखटेया। अधम जे धनंजया। तें ते होती भोगूनियां। तामसा योनि।४२०। अहां सांगतां वाचा रडे। आठवितां मन खिरडें। कटा रे मूर्खी केवढे। जोडिले निरय।२१। कायिसया ते असुर। संपत्ति पोषिती बाउर। जिया दिधलें घोर। पतन ऐसें।२२। म्हणौनि तुवां धनुर्धरा। नोहावें गा तिया मोहरा। जेउतां वासू असुरां। संपत्तिवंता।२३। आणि दंभादि दोष साही। हे संपूर्ण जयांच्या ठायीं। ते त्यजावे हें काई। म्हणों कीर।२४।

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मना।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत्।२१।

परि काम क्रोध लोभ। या तिहींचेही थोंब। थांवे तेथ अशुभ। पिकलें जाण।२५। सर्व दुःखा आपुलिया। दर्शना धनंजया। पाढाऊ हे भलतया। दिधले आहाती।२६। कां पापिया नरकभोगी। सुवावयालागी जगीं। पातकांची दाटुगी। सभाचि हें।२७। ते रौरव गा तंवचिवरी। आइकिजती पटांतरी। जंव हे तीन्ही अंतरीं। उठती ना।२८। अपाय तिहीं आशलुग। यातना इहीं सवंग। हाणी हाणी नोहे हे तिघ। हेचि हाणी।२६। काय बहु बोलों सुभटा। सांगितलिया निकृष्टा। नरकाचा दारवंटा। त्रिशंकु हा। ४३०। या कामक्रोध लोभां–। माजीं जीवें जो होय उभा। तो निरयपुरींची सभा। येथ पावे।३१। म्हणोनि पुढतपुढतीं किरीटी। हे कामादिदोषत्रिपुटी। त्यजावीचि गा वोखटीं। आघवां विषयीं।३२।

एतैर्विमुक्तः कौंतेय तमोद्वारैस्त्रिभिर्नरः।
आचरत्यात्मनः श्रेयस्ततो याति परां गतिम्।२२।

धर्मादिकां चौंहीआंत। पुरुषार्थाची तैचि मात। करावी जै संघात। सांडील हा।३३। हें तिन्ही जीवीं जंव जागती। तंववरी निकियाची प्राप्ति। हे माझे कान नाइकती। देवही म्हणे।३४। जया आपणपें पढिये। आत्मनाशा जो बिहे। तेणें न धरावी हे सोये। सावध होइजे।३५। पोटीं बांधोनि पाषाण। समुद्रीं बाहीं आंगवण। कां जियावया जेवण। कालाकूटाचें।३६। इहीं कामक्रोधलोभेंसीं। कार्यसिद्धि जाण तैसी। म्हणौनि ठावोचि पुसीं। ययांचा गा।३७। जें कहीं अवचटें। हे तिकडी साखळ तुटे। तैं सुखें आपलिये वाटे। चालों लाभे।३८। त्रिदोषीं सांडिले शरीर। त्रिकुटीं फिटलिया नगर। त्रिदाह निमालिया अंतर। जैसें होय।३६। तैसा कामादिकीं तिघीं।

सांडिला सुख पावोनि जगीं। संग लाहे मोक्षमार्गीं। सज्जनांचा।४४०। मग सत्संग प्रबळें। सच्छास्त्राचेनि बळें। जन्ममृत्यूचीं निमाळें। निस्तरे रानें।४१। तें वेळीं आत्मानंदे आघवें। जें सदा वसतें बरवें। तें तैसेंचि पाटण पावे। गुरुकृपेचें।४२। तेथ प्रियाची परमसीमा। तो भेटे माउली आत्मा। तये खेंवीं आटे डिंडिमा। सांसारिक हे।४३। ऐसा जो कामक्रोधलोभां। झाडी करूनि ठाके उभा। तोचि येवढिया लाभा। गोसावी होय।४४।

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम्।२३।

ना हें नावडोनि कांहीं। कामादिकांच्याचि ठायीं। दाटिली जेणें डोई। आत्मचोरें।४५। जो जगीं समान सकृप। हिताहित दाविता दीप। तो अमान्य केला बाप। वेद जेणें।४६। न धरीचि विधीची भीड। न करीचि आपली चाड। वाढवीत गेला कोड। इंद्रियांचें।४७। कामक्रोधलोभांची कास। न सोडीच पाळिली भाष। स्वैराचाराचे असोस। वळघला रान।४८। तो सुटकेचिया वाहिणीं। मग पिवों न लाहे पाणी। स्वप्नींही ते काहाणी। दूरीचि तया।४९। आणि परत्र तंव जाये। हें कीर तया आहे। परि ऐहिकही न लाहे। भोग भोगूं।४५०। तरि माशालागीं भुलला। ब्राह्मण पाणबुडां रिघालां। कीं तेथही पावला। नास्तिकवाद।५१। तैसे विषयांचेनि कोडें। जेणें परत्रा केलें उबडें। तंव तोचि आणिकीकडे। मरणें नेला।५२। एवं परत्र ना स्वर्ग। ना ऐहिकही विषयभोग। तेथ केउता प्रसंग। मोक्षाचा तो।५३। म्हणौनि कामाचेनि बळें। जो विषय सेऊं पाहे सळें। तया विषयो ना स्वर्ग मिळे। ना उद्धरे तो।५४।

तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ।
ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्म कर्तुमिहार्हसि।२४।

इति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे दैवासुरसंपद्विभागयोगो नाम षोडशोऽध्यायः।

याकारणें पैं बापा। जया आथी आपुली कृपा। तेणें वेदांचिया निरोपा। आन न कीजे।५५। पतीचिया मता। अनुसरोनि पतिव्रता। अनायासें आत्महिता। भेटेचि ते।५६। ना तरी श्रीगुरुवचना। दिठी देतु जतना। शिष्य आत्मभुवना–। माजीं पैसें।५७। हें असो आपुला ठेवा। हातां आथी जरी यावा। तरी आदरें जेविं दिवा। पुढां कीजे।५८। तैसा अशेषाही पुरुषार्था। जो गोसावी हो म्हणे पार्था। तेणें श्रुतिस्मृति माथां। बैसणें घापे। शास्त्र म्हणेल जें सांडावें। तें राज्यही तृण मानावें। जें घेववी तें न म्हणावें। विषही विरु।४६०। ऐसिया वेदैकनिष्ठा। जालिया जरी सुभटा। तरि कें आहे अनिष्टा। भेटणें गा।६१। पैं अहितापासूनि काढिती। हित देऊनि वाढविती। नाहीं गा श्रुतिपरौती। माउली जगा।६२। म्हणौनि ब्रह्मेसीं मेळवी। तंव हे कोण्हें न सांडावी। अगा तुवांही ऐसीच भजावी। विशेषेंसीं।६३। जे आजि अर्जुना तूं येथें। करावया सत्य शास्त्रें सार्थें। जन्मलासि बळार्थे। धर्माचेनि।६४। आणि धर्मानुज हे ऐसें। ओघेचि आलें अपैसें। म्हणौनि अनारिसें। करूं नये।६५। कार्याकार्यविवेकीं। शास्त्रेंचि करावी पारखीं। अकृत्य तें कुडें लोकीं। वाळावें गा।६६। मग कृत्यपणें खरें निगे। तें तुवां आपुलेनि आंगें। आचरोनि आदरें चांगें। सारावें गा।६७। जे विश्वप्रामाण्याची मुदी। आजि तुझ्या हातीं असे सुबुद्धी। लोकसंग्रहासि त्रिशुद्धी। योग्य होसी।६८। एवं आसुरवर्ग आघवा। सांगोनि तेथींचा निगावा। तोही देवें पांडवा। निरूपिला।६९। इयावरी तो पंडूचा। कुमरु सद्भाव जीवींचा। पुसेल तो चैतन्याचा। कानीं ऐका।४७०। संजयें व्यासाचिया निरोपां। तो वेळ फेडिला तया नृपा। तैसा मीही निवृत्तिकृपा। सांगेन तुम्हां।७१। तुम्ही संत माझियाकडा। दिठीचा कराल बहुडा। तरि तुम्हां माने येवढा। होईन मीं।७२। म्हणौनि निज अवधान। मज वोळगे पसायदान। दीजो जी सनाथ होईन। ज्ञानदेव म्हणे।४७३।

इति श्रीज्ञानदेवविरचितायां भावार्थदीपिकायां षोडशोऽध्यायः। श्लोकः–२४, ओंव्याः–४७३

ज्ञानेश्वरीः— अध्याय सतरावाः— श्रद्धात्रयविभागयोग.

विश्वविकासित मुद्रा। जया सोडवी तुझी योगनिद्रा। तया नमो जी गणेंद्रा। श्रीगुरुराया।१। त्रिगुणत्रिपुरीं वेढिला। जीवत्वदुर्गीं आडिला। तो आत्मशंभू सोडविला। तुझिया स्मृती।२। म्हणोनि शिवेंसीं कांटाळा। गुरुत्वें तूंचि आगळा। तऱ्ही हळु मायाजाळा—। माजि तारूनी।३। जे तुझ्याविखीं मूढ। तयांलागीं तूं वक्रतुंड। ज्ञानियांसि तरी अखंड। उजूचि आहासि।४। दैविकी दिठी पाहतां सानी। तऱ्ही मीलनोन्मीलनीं। उत्पत्ति प्रलय दोन्ही। लीलाचि करिसी।५। प्रवृत्तिकर्णाच्या चाळीं। उठिला मदगंधानिळीं। पूजीजसी नीलोत्पळीं। जीवभृंगाच्या।६। पाठीं निवृत्तिकर्णताळें। आहालली ते पूजा विधुळे। तेव्हां मिरविसी मोकळें। आंगाचें लेणें।७। वामांगीचा लास्यविलास। जो हा जगद्रूप आभास। तो तांडवमिसें कळास। दाविसी तूं।८। हें असो विस्मय दातारा। तूं होसी जयाचा सोयरा। सोइरिकेचिया व्यवहारा। मुकेचि तो।९। फेडितां बंधनाचा ठावो। तूं जगद्‌बंधु ऐसा भावो। धरूं वोळगे उवावो। तुझ्याचि आंगीं।१०। दुजयाचेनि नांवें तया। देहही नुरेचि पैं देवराया। जेणें तूं आपणपयां। केलासि दुजा।११। तूतें करूनि पुढें। जे उपायीं घेती दवडे। तयां ठासी बहुवें पाडें। मागांची तूं।१२। जो ध्यानें सूये मानसीं। तयालागीं नाहीं तूं त्याचे देशी। ध्यानही विसरे तेणेंसीं। वालभ तुज।१३। तूंतें सिद्धचि जो नेणें। तो नांदे सर्वज्ञपणें। वेदांही येवढें बोलणें। नेघसी कानीं।१४। मौन गा तुझें राशिनांव। आतां स्तोत्रीं कें बांधो हांव। दिसती तेतुली माव। भजों काई।१५। दैविकें सेवक हों पाहों। तरी भेदितां द्रोहचि लाहों। म्हणोनि आतां कांहीं नोहों। तुजलागीं जी।१६। जैं सर्वथा सर्वही नोहिजे। तैं अद्वया तूतें लाहिजे। हें जाणें वर्म तुझें। आराध्यलिंगा।१७। तरि नुरोनि वेगळेपण। रसीं भजिन्नलें लवण। तैसें नमन माझें जाण। बहु काय बोलों।१८। आतां रिता कुंभ समुद्रीं रिगे। तो उचंबळत भरोनि निगे। कां दशी दीपसंगें। दीपचि होय।१९। तैसा तुझिया प्रणतीं। मी पूर्ण जाहलों श्रीनिवृत्ती। आतां आणीन व्यक्ती। गीतार्थ तो।२०। तरि षोडशाध्यायशेखीं। तिये समाप्तीच्या श्लोकीं। जो ऐसा निर्णयो निष्टंकी। ठेविला देवें।२१। जे कृत्याकृत्यव्यवस्था। अनुष्ठावया पार्था। शास्त्रचि एक सर्वथा। प्रमाण तुज।२२। तेथ अर्जुन मानसें। म्हणें हें ऐसें कैसें। जे शास्त्रेंवीण नसे। सुटिका कर्मां।२३। तरी तक्षकाची फउे। ठाकोनि कैं तो मणि काढे। कैं नाकींचा केश जोडे। सिंहाचिये।२४। मग तेणें तो वोविजे। तरीच लेणें पाविजे। एऱ्हवीं काय असिजे। रिक्त कंठीं।२५। तैसी शास्त्रांची मोकळी। यां कैं कोण वेंटाळी। एकवाक्यतेच्या फहीं। पैसिजे कैं।२६। जालयाही एकवाक्यता। कां लाभे वेळ अनुष्ठितां। कैचा पैसार जीविता। येतुलालिया।२७। आणि शास्त्रें अर्थें देशें काळें। या चहूंहीं जें एकफळे। तो उपावो कें मिळें। आघवयांसी।२८। म्हणौनि शास्त्राचें घडतें। नोहे प्रकारें बहुतें। तरि मूर्खां मुमुक्षां येथें। काय गति पां।२९। हा पुसावया अभिप्राव। जो अर्जुन करी प्रस्ताव। तो सतराविया ठाव। अध्याया येथ।३०। तरी सर्वविषयीं वितृष्ण। जो सकळकळीं प्रवीण। कृष्णाही नवल कृष्ण। अर्जुनत्वें जो।३१। शौर्या जोडला आधार। जो सोमवंशाचा शृंगार। सुखादि उपचार। जयाची लीला।३२। जो प्रज्ञेचा प्रियोत्तम। ब्रह्मविद्येचा विश्राम। सहचर मनोधर्म। देवाचा जों।३३।

अर्जुन उवाचः— ये शास्त्रविधिमुत्सृज्य यजंते श्रद्धयाऽन्विताः।
तेषां निष्ठा तु का कृष्ण सत्त्वमाहो रजस्तमः।१।

तो अर्जुन म्हणे गा तमालश्यामा। इंद्रियां फावलिया ब्रह्मा। तुझा बोल आम्हां। साकांक्ष पैं जी।३४। जे शास्त्रेंवांचूनि आणिकें। प्राणिया स्वमोक्ष न देखे। ऐसें कां कैंपंखें। बोलिलासी।३५। तरी न मिळेचि तो देश। नव्हेचि काळा अवकाश। जो करवी शास्त्राभ्यास। तोही दुरी।३६। आणि अभ्यासीं विरजिया। होती जिया सामुग्रिया। त्याही नाहीं आपैतिया। तिये वेळीं।३७। उजू नोहेचि प्राचीन। नेंदीचि प्रज्ञा संवाहन। ऐसें ठेलें आपादन। शास्त्राचें जया।३८। किंबहुना शास्त्रविखीं। एकही न लाहतीचि नखी। म्हणूनी उखाविखी। सांडिली जिहीं।३९। परि निर्धारूनि शास्त्रें। अर्थानुष्ठानें पवित्रें। नांदताति परत्रें। साचारें जे।४०। तयांऐसें आम्हीं होआवें। ऐसी चाड बांधोनि जीवें। घेती तयांचे मागावे। आचरावया।४१। धड्याचिया आखरा—। तळीं बाळ लिहे दातारा। कां पुढांसूनि पडिकारा। अक्षम चाले।४२। तैसें सर्वशास्त्रनिपुण। तयाचें जे आचरण। तेंचि करिती प्रमाण। आपलिये श्रद्धे।४३। मग शिवादिकें पूजनें। भूम्यादिकें महादानें। अग्निहोत्रादि यजनें। करिती जे श्रद्धा।४४। तयां सत्त्वरजतमां—। माजीं कोण पुरुषोत्तमा। गति होय ते आम्हां। सांगिजो जी।४५। तंव वैकुंठपीठींचें लिंग। जो निगमपद्माचा पराग। जिये जयाचेनि हें जग। अंगच्छाया।४६। काळ सावियाची वाढ। लोकोत्तर प्रौढ। अद्वितीय गूढ। आनंदघन।४७। इयें श्लाघिजती जेणें बिकें। तें जयाचे आंगीं असिकें। तो श्रीकृष्ण स्वमुखें। बोलत असे।४८।

श्रीभगवानुवाचः– त्रिविधा भवति श्रद्धा देहिनां सा स्वभावजा।
सात्विकी राजसी चैव तामसी चेति तां शृणु।२।

म्हणे पार्था तुझा अतिसो। हेंही आम्ही जाणतसों। जे शास्त्राभ्यासाचा आडसो। मानितोसि कीं।४६। नुसधियाची श्रद्धा। झोंबों पाहसी परमपदा। तरी तैसें हें प्रबुद्धा। सोहोपें नोहे।५०। श्रद्धा म्हणितलियासाठीं। पातेजों नये किरीटी। काय द्विज अंत्यजघृष्टीं। अंत्यज नोहे।५१। गंगोदक जरी जालें। तरि मद्यभांडां आलें। तें घेऊं नये कांहीं केलें। विचारीं पां।५२। चंदन होय शीतळु। परी अग्नीसी पावे मेळू। तैं हातीं धरितां जाळूं। न शके काई।५३। कां किडाचिये आटतिये पुटीं। पडिलें सोळें किरीटी। घेतलें चोखटासाठीं। नागवीना।५४। तैसें श्रद्धेचे दळवाडें। आंगें कीर चोखडें। परि प्राणियांच्या पडे। विभागीं जै।५५। तैं प्राणिये तंव स्वभावें। अनादिमायाप्रभवें। त्रिगुणाचेचि आघवे। बळिले आहाती।५६। तेथही दोन गुण खांचती। मग एक धरी उन्नति। तैं तैसियाचि होती वृत्ति। जीवांचिया।५७। वृत्तिऐसें मन धरिती। मनाऐसी क्रिया करिती। केलियाऐसीं वरिती। मरोनि देहें।५८। बीज मोडे झाड होये। झाड मोडे बीज सामाये। ऐसेनि कल्पकोडी जायें। परी जाति न नाशे।५९। तियापरि यियें अपारें। होतां जातां जन्मांतरें। त्रिगुणत्व न व्यभिचरे। प्राणियांचे।६०। म्हणूनि प्राणियांच्यापैकीं। पडिली श्रद्धा अवलोकी। ते होय गुणासारिखी। तिहीं ययां।६१। विपायें वाढे सत्त्व शुद्ध। तेव्हां ज्ञानासी करी साध्य। परि एका दोघे वोखद। येर आहाती।६२। सत्त्वाचेनि आंगलगें। ते श्रद्धा मोक्षफळा रिगे। तंव रज तम उगे। कां पां राहाती।६३। मोडोनी सत्त्वाची त्राये। रजोगुण आकाशें जाये। तेव्हां तेचि श्रद्धा होये। कर्मकेरसुणी।६४। मग तमाची उठी आगी। तेव्हां तेचि श्रद्धा भंगी। हों लागे भोगालागीं। भलतेया।६५।

सत्त्वानुरूपा सर्वस्य श्रद्धा भवति भारत।
श्रद्धामयोऽयं पुरुषो यो यच्छ्रद्धः स एव सः।३।

एवं सत्त्वरजतमां–। वेगळी श्रद्धा सुवर्मा। नाहीं गा जीवग्रामा–। माजीं यया।६६। म्हणोनि श्रद्धा स्वाभाविक। असे पैं त्रिगुणात्मक। रजतमसात्विक। भेदीं इहीं।६७। जैसें जीवनचि उदक। परि विषीं होय मारक। कां मिरयामाजी तीख। उंसीं गोड।६८। तैसा बहुवसें तमें। जो सदाचि होय निमे। तेथ श्रद्धा परिणमे। तेंचि होउनी।६९। मग काजळा आणि मसी। न दिसे विवंचना जैसी। तेवीं श्रद्धा तामसी। सिनी नाहीं।७०। तैसीच राजसी जीवीं। रजोमय जाणावी। सात्त्विकी आघवी। सत्त्वाचीच।७१। ऐसेनि हा सकळ। जगडंबर निखिळ। श्रद्धेचाचि केवळ। वोतला असे।७२। परि गुणत्रयवशें। त्रिविधपणाचें लासें। श्रद्धे जें उठिलें असे। तें वोळख तूं।७३। तरि जाणिजे झाड फुलें। कां मानस जाणिजे बोलें। भोगें जाणिजे केलें। पूर्वजन्मींचें।७४। तैसीं जिहीं जिहीं चिह्नीं। श्रद्धेचीं रूपें तीन्ही। देखिजती ते वानी। अवधारीं पां।७५।

यजंते सात्त्विका देवान्यक्षरक्षांसि राजसाः।
प्रेतान् भूतगणांश्चान्ये यजंते तामसा जनाः।४।

तरी सात्त्विक श्रद्धा। जयांचा होय बांधा। तयां बहुतकरूनि मेधा। स्वर्गीं आथी।७६। ते विद्याजात पढती। यज्ञक्रिये निवडती। किंबहुना पडती। देवलोकीं।७७। आणि श्रद्धा राजसा। घडिले जे वीरेशा। ते भजती राक्षसां। खेचरां हन।७८। श्रद्धा जे कां तामसी। ते मी सांगेन तुजपाशीं। जे केवळ पापराशी। अतिकर्कशी निर्दयत्वें।७९। जीववधें साधूनि बळी। भूतप्रेमकुळें मैळीं। स्मशानीं संध्याकाळीं। पूजिती जे।८०। ते तमोगुणाचें सार। काढूनि निर्मिले नर। जाण तामसियेचें घर। श्रद्धेचें तें।८१। ऐसी इंहीं तिहीं लिंगीं। त्रिविध श्रद्धा जगीं। पैं हे ययालागीं। सांगत असे।८२। जे हे सात्त्विक श्रद्धा। जतन करावी प्रबुद्धा। येरी दोनी विरुद्धा। सांडाविया।८३। हे सात्त्विकमति जया। निर्वाहती होय धनंजया। बागूल नोहे तया। कैवल्य तें।८४। तो न पढो कां ब्रह्मसूत्र। न लोढो सर्व शास्त्र। सिद्धांत न होतु स्वतंत्र। तयाच्या हातीं।८५। परि श्रुतिस्मृतींचे अर्थ। जे आपण होऊनि मूर्त। अनुष्ठानें गाजत। वडील जे हे। ८६। तयांची आचरती पाउलें। पाऊनि सात्त्विकी श्रद्धा चाले। तो तेंचि फळ ठेविलें। ऐसें लाहे।८७। पैं एक दीप लावी सायासें। आणिक तेथें लाऊं बैसे। तरी तो काय प्रकाशें। वंचिजे गा।८८। कां येके मोल अपार। वेंचोनि केलें धवळार। तो सुरवाड वस्तीकर। न भोगी कोई।८९। हें असो जो तळें करी। तें तयाचीच तृषा हरी। कीं सुआरासीचि अन्न घरीं। येरां नोहे।९०। बहुत काय बोलों पैं गा। येका गौतमासीच गंगा। येरां समस्तां काय जगा। वोहोळ जाली।९१। म्हणौनि आपुलिया परी। शास्त्र अनुष्ठिती कुसरी। जाणें तयातें श्रद्धाळू जो वरी। तो मूर्खही तरे।९२।

अशास्त्रविहितं घोरं तप्यंते ये तपो जनाः।
दंभाहंकारसंयुक्ताः कामरागबलान्विताः ।५।

ना शास्त्राचेनि कीर नांवें। खाकरोंही नेणती जीवें। परि शास्त्रज्ञांही शिंवे। टेंको नेदिती ।९३। वडिलांचिया क्रिया। देखोनि वाती वांकुलिया। पंडितां डांकुलिया। वाजविती ।९४। आपलेनीचि आटोपें। धनित्वाचेनि दर्पें। साचचि पाखंडाचीं तपें। आदरिती ।९५। आपुलिया पुढिलांचिया। आंगीं घालूनि कातिया। रक्तमांसा प्रणीतया। भरभरों ।९६। रिचविती जळतकुंडीं। लाविती चेडियाच्या तोंडीं। नवसियां देती उंडी। बाळकांची ।९७। आग्रहाचिया उजरिया। क्षुद्र देवतां वरिया। अन्नत्यागें सातरिया। ठाकती एक ।९८। अगा आत्मपरपीडा। बीज तमक्षेत्रीं सुहाडा। पेरिती मग पुढां। तेंचि पिके ।९९। बाहू नाहीं आपलिया। आणि नावेतेंही धनंजया। न धरी होय तया। समुद्रीं जैसें ।१००। कां वैद्यातें करी सळा। रस सांडी पायखोळां। तो रोगिया जेविं विव्हळा। सवता होय ।१। ना ना पडिकराचेनि सळें। काढी आपलेचि डोळे। तें वानवसा आंधळें। जैसें ठाके ।२। तैसें तयां आसुरा होये। जे निंदूनि शास्त्रांची सोये। सैंध धांवताती मोहें। आडवीं जे कां ।३। काम करवी तें करिती। क्रोध मारवी तें मारिती। किंबहुना मातें पुरती। दुःखाचा गुंडां ।४।

कर्षयंतः शरीरस्थं भूतग्राममचेतसः।
मां चैवांतःशरीरस्थं तान्विद्ध्यासुरनिश्चयान् ।६।

आपलां परावां देहीं। दुःख देती जें जें कांहीं। मज आत्मया तेतुलाही। होय शीण ।५। पैं वाचेनि ही पालवें। पापियां तया नातळावें। परि पडिलें सांगावें। त्यजावया ।६। प्रेत बाहिर घालिजे। कां अंत्यज संभाषणीं त्यजिजे। हें असो हातें क्षाळिजे। कश्मलातें ।७। येथ शुद्धीचिया आशा। तो लेपु न मनवे जैसा। तयातें सांडावया तैसा। अनुवाद हा ।८। तरि अर्जुना तूं तयांतें। देखसी तैं स्मर हो मातें। जे आन प्रायश्चित्त येथें। मानेल ना ।९। म्हणौनि श्रद्धा जे सात्त्विकी। पुढती तेचि पैं येकी। जतन करावी निकी। सर्वोपरी ।११०। तरि धरावा तैसा संग। जेणें पोखे सात्त्विक लाग। सत्त्ववृद्धीचा भाग। आहार घेपे ।११। येऱ्हवीं तरी पाहीं। स्वभाववृद्धीच्या ठायीं। आहारावांचूनि नाहीं। बळी हेतु ।१२। प्रत्यक्ष पाहे पां वीरा। जो सावध घे मदिरा। तो होऊनि ठाके माजिरा। तियेचि क्षणीं ।१३। कां जो साविया अन्नरस सेवी। तो व्यापिजे वातश्लेष्मस्वभावीं। काय ज्वर जालिया निववी। पयादिक ।१४। ना तरि अमृत जयापरी। घेतलिया मरण बारी। कां आपुलियाऐसें करी। जैसें विष ।१५। तेविं जैसा घेपे आहार। धातु तैसाचि होय आकार। आणि धातूऐसा अंतर। भाव पोखे ।१६। जैसें भांडियाचेनि तापें। आंतुलें उदकही तापे। तैसी धातुवशें आटोपे। चित्तवृत्ति ।१७। म्हणौनि सात्त्विक रस सेविजे। तैं सत्त्वाची वाढी पाविजे। राजसा तामसा होइजे। येरीं रसीं ।१८। तरि सात्त्विक कोण आहार। राजसा तामसा कायि आकार। हें सांगों करीं आदर। आकर्णनीं ।१९।

आहारस्त्वपि सर्वस्य त्रिविधो भवति प्रियः।
यज्ञस्तपस्तथा दानं तेषां भेदमिमं शृणु ।७।

आणि एकसरें आहारा। कैसेनि तिनी मोहरा। जालिया तेंही वीरा। रोकडें दाऊं ।१२०। तरि जेवणाराचिया रुची। निष्पत्ति कीं बोनियाची। आणि जेविता तंव गुणांची। दासी तेथ ।२१। जो जीव कर्ता भोक्ता। तो गुणांस्तव स्वभावता। पावोनियां त्रिविधता। चेष्टे त्रिधा ।२२। म्हणौनि त्रिविध आहार। यज्ञही त्रिप्रकार। तप दान हन व्यापार। त्रिविधचि ते ।२३। पैं आहारलक्षण पहिलें। सांगों जें म्हणितलें। तें आईक गा भलें। रूप करूं ।२४।

आयुःसत्त्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धनाः।
रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्या आहाराः सात्त्विकप्रियाः ।८।

तरी सत्त्वगुणाकडे। जैं दैवें भोक्ता पडे। तैं मधुरीं रसीं वाढे। मेचु तया ।२५। आंगेंचि द्रव्यें सुरसें। जे आंगेंचि पदार्थ गोडसे। आंगेंचि स्नेहें बहुवसें। सुपक्वें जिये ।२६। आकारें नव्हति डगळें। स्पर्शें अति मवाळें। जिभेलागीं स्नेहाळें। स्वादें जियें ।२७। रसें गाढी वरी ढिलीं। द्रवभावीं आथिलीं। ठायें ठाव सांडिलीं। अग्नितापें ।२८। आंगें सानें परिणामें थोर। जैसें गुरुमुखींचें अक्षर। तैसा अल्पीं जिहीं अपार। तृप्ति राहे ।२९। आणि मुखीं जैसीं गोडें। तैसींचिही ते आंतुलेकडे। तिहीं अन्नीं प्रीति वाढे। सात्त्विकांसी ।१३०। एवंगुणलक्षण। सात्त्विक भोज्य जाण। आयुष्याचें त्राण। नीच नवें हें ।३१। येणें सात्त्विक रसें। जंव देही मेहो वरिषे। तंव आयुष्यनदी उससे। दिहाचि दिहा ।३२। सत्त्वाचिये कीर पाळती। कारण हाचि सुमति। दिवसाचिये उन्नति। भानु जैसा ।३३। आणि शरीरा हन मानसा। बळाचा पैं कुवासा। हा आहार तरी दशा। कैंची रोगां ।३४। हा सात्त्विक होय भाग्य। तैंचि भोगावया आरोग्य। शरीरासी भाग्य। उदयलें जाणों ।३५। आणि सुखाचें घेणेंदेणें। निकें

उवाया ये येणें। हें असो वाढे साजणें। आनंदेसीं ।३६। ऐसा सात्त्विक आहार। परिणमला थोर। करी हा उपकार। सबाह्यासी ।३७। आतां राजसासि प्रीति। जिहीं रसीं आथी। करूं तयाही व्यक्ति। प्रसंगें गा ।३८।

कट्वम्ललवणात्युष्णतीक्ष्णरूक्षविदाहिनः।
आहारा राजसस्येष्टा दुःखशोकामयप्रदाः ।६।

तरी मारें उणें काळकूट। तेणेंमानें जें कडुवट। कां चुनियाहूनि दासट। आम्ल हन ।३६। कणिकेतें जैसें पाणी। तैसें मीठ बांधया आणी। तेतुलीच मेळवणी। रसांतरांची ।१४०। ऐसें खारट अपाडें। राजसा तया आवडे। उन्हाचेनि मिषें तोंडें। आगीचि गिळी ।४१। वाफेचिया सिगे। वातीही लाविल्या लागे। तैसें उन्ह मागे। राजस तो ।४२। वावदळ पाडूनि ठाये। साबळ डाहारला आहे। तैसें तीख तो खाये। जें घायेंवीण रूपे ।४३। आणि राखेहूनि कोरडे। आंत बाहेरी येकें पाडें। तो जिव्हादंश आवडे। बहु तया ।४४। परस्परें दातां। आदळ होय खातां। तो गा मुखीं घेतां। तोषों लागे ।४५। आधींच द्रव्यें चुरमुरीं। वरी परवडिजती मोहरी। जियें घेतां होती धुवारी। नाकेंतोंडें ।४६। हें असो उगें आगीतें। म्हणे तैसें राइतें। पढियें प्राणापरतें। राजसासि गा ।४७। ऐसा न पुरोनि तोंडा। जिभा केला वेडा। अन्नमिषें अग्नि भडभडां। पोटीं भरी ।४८। तैसाचि लवंघा सुटे। मग भुईं ना सेजे सांटे। पाणियाचे न सुटे। तोंडोनि पात्र ।४६। ते आहार नव्हती घेतले। व्याधिव्याळ जे सुतले। ते चेववाया घातलें। माजवण पोटीं ।१५०। तैसें एकमेकां सळें। रोग उठती एके वेळे। ऐसा राजस आहार फळे। केवळ दुःखें ।५१। एवं राजसा आहारा। रूप केलें धनुर्धरा। परिणामाचाही विसुरा। सांगितला ।५२। आतां तया तामसा। आवडे आहार जैसा। तेंही सांगों चिळसा। झणें तुम्हीं ।५३। तरि कुहिलें उष्टें खातां। न मनिजे तेणें अनहिता। जैसें कां उपहिता। म्हैसी खाय ।५४।

यातयामं गतरसं पूतिपर्युषितं च यत्।
उच्छिष्टमपि चामेध्यं भोजनं तामसप्रियम् ।१०।

निपजलें अन्न तैसें। दुपाहारीं कां येरें दिवसें। अतिकरें तैं तामसें। घेइजेतें ।५५। ना तरी अर्ध उकडिलें। कां निपट करपोनि गेलें। तैसेही खाय चुकलें। रसा जें येवों ।५६। जया कां आथि पूर्ण निष्पत्ति। जेथ रस धरी व्यक्ति। तें अन्न ऐसी प्रतीति। तामसा नाहीं ।५७। ऐसेनि कहीं विपायें। सदन्ना वरपडा होये। तरी घाणी सुटे तंव राहे। व्याघ्र जैसा ।५८। कां बहुवे दिवशीं वोलांडिलें। स्वादपणें सांडिलें। शुष्क अथवा सडलें। गाभिणेंही हो ।५६। तेंही बाळाचे हातवरी। चिवडिलें जैसी राडी करी। कां सवें बैसोनि नारी। गोतांबील करी ।१६०। ऐसेनि कश्मळें जैं खाय। तैं तया सुखभोजन ऐसें होय। परि येणेंही न धाय। पापिया तो ।६१। मग चमत्कार देखा। निषेधाचा आंबुखा। जया कां सदोषा। कुद्रव्यासी ।६२। तया अपेयांच्या पानीं। असाद्यांच्या भोजनीं। वाढविजे उतान्ही। तामसें तेणें ।६३। एवं तामस जेवणारा। ऐसैसी मेचु हे वीरा। तयाचें फल दुसरां। क्षणीं नाहीं ।६४। जें जेव्हांचि हें अपवित्र। शिवे तयाचें वक्त्र। तेव्हांचि पापा पात्र। जाला तोकीं ।६५। यावरतें जें जेवी। ते जेविती वोज न म्हणावी। पोटभरती जाणावीं। यातना ते ।६६। शिरच्छेदें काय होये। कां आगी रिघतां कैसें आहे। हें जाणावें काई पाहें। परि साहातचि असे ।६७। म्हणौनि तामसा अन्ना। परिणाम गा सिनाना। न सांगोंचि गा अर्जुना। देव म्हणे ।६८। आतां ययावरी। आहाराचिया परी। यज्ञही अवधारीं। त्रिधा असे ।६६। तरी तिहींमाजी प्रथम। सात्त्विक यज्ञाचें वर्म। आईक पां सुमहिम–। शिरोमणी ।७०।

अफलाकांक्षिभिर्यज्ञो विधिदृष्टो य इज्यते।
यष्टव्यमेवेति मनः समाधाय स सात्त्विकः ।११।

तरि एक प्रियोत्तम। वांचोनि वाढों नेदी काम। जैसा कां मनोधर्म। पतिव्रतेचा ।७१। ना ना सिंधूतें ठाकूनि गंगा। पुढारां न करीचि रिगा। कां आत्मा देखोनि उगा। वेद ठेला ।७२। तैसें जे आपुल्या स्वहितीं। वेंचूनियां चित्तवृत्ति। नुरवितीचि अहंकृति। फळालागीं ।७३। पातलेया झाडाचे मूळ। मागुतें सरों नेणेंचि जळ। जिरालें कां केवळ। तयाच्याचि आंगीं ।७४। तैसें मनें देहीं। यजननिश्चयाच्या ठायीं। हारपोनि जे कांहीं। वांछिती ना ।७५। तिहीं फळवांच्छात्यागीं। स्वधर्मावांचूनि विरागी। कीजे जो यज्ञ सर्वांगीं। अळंकृत ।७६। परि आरिसा आपणपें। डोळां जैसा घेपे। कां तळहातींचें दीपें। रत्न पाहिजे ।७७। नाना उदितें दिवाकरें। गमावा मार्ग दिठी भरे। तैसा वेद निर्धारें। देखोनियां ।७८। तिये कुंडें मंडप वेदी। आणीकही संभारसमृद्धि। ते मेळवणी जैसी विधि। आपणपां केली ।७६। सकळावयव उचितें। लेणीं पातलीं जैसीं आंगातें। तैसे पदार्थ जेथींचे तेथें। विनियोगुनी ।१८०। काय वानूं बहुतीं बोली। जैसी सर्वाभरणीं भरली। ते यज्ञविद्याचि रूपा आली। यजनमिषें। ८१। तैसा सांगोपांग।

निपजे जो याग। नुठवूनियां लाग। महत्त्वाचा।८२। प्रतिपाळ तरी पाटाचा। झाडीं कीजे तुळसीचा। परी फळा फुला छायेचा। आश्रयो नाहीं।८३। किंबहुना फळाशेवीण। ऐसेया निगुती निर्माण। होय तो याग जाण। सात्त्विक गा।८४।

अभिसंधाय तु फलं दंभार्थमपि चैव यत्।
इज्यते भरतश्रेष्ठ तं यज्ञं विद्धि राजसम्।१२।

आतां यज्ञ कीर वीरेशा। करी पैं याचिऐसा। परि श्राद्धालागीं जैसा। अवंतिला रावो।८५। जरि राजा घरासि ये। बहुत उपयोगा जाये। आणि कीर्तिही होये। जगामाजीं।८६। तैसा धरूनि आवांका। म्हणे स्वर्ग जोडेल असिका। दीक्षित होईन मान्य लोंका। घडेल याग।८७। ऐसी केवळ फळालागीं। महत्त्व फोकारावया जगीं। पार्था निष्पत्ति जे यागीं। राजस पैं ते।८८।

विधिहीनमसृष्टान्नं मंत्रहीनमदक्षिणम्।
श्रद्धाविरहितं यज्ञं तामसं परिचक्षते।१३।

आणि पशुपक्षिविवाहीं। जोसी कामापरौता नाहीं। तैसा तामसा यज्ञा पाहीं। आग्रहोचि मूळ।८९। वारया वाट न वाहे। कीं मरण मुहूर्त पाहे। निषिद्धासी बिहे। आगी जरी।१९०। तरी तामसाचिया आचारा। विधीचा आथी वोढावारा। म्हणूनि तो धनुर्धरा। उत्संखळु।९१। नाहीं विधीची तेथ चाड। न ये मंत्रादिक तया आड। अन्नजातां न सुये तोंड। मासिये केवीं।९२। वैराचा बोध ब्राह्मणा। तेथ कें रिगेल दक्षिणा। अग्नि जाला वाउधाणा। वरपडा जैसा।९३। तैसें वांयांचि सर्वस्व वेंचे। मुख न देखतां श्रद्धेचें। नागविलें निपुत्रिकाचें। जैसें घर।९४। ऐसा जो यज्ञाभास। तया नाम याग तामस। आइकें म्हणें निवास। श्रियेचा तो।९५। आतां गंगेचें एक पाणी। परि नेलें आनानी वाहणीं। एक मळी एक आणी। शुद्धत्व जैसें।९६। तैसें तिहीं गुणीं तप। येथ जाहालें आहे त्रिरूप। तें एक केलें दे पाप। उद्धरी एक।९७। तरि तेंचि तिहीं भेदीं। कैसेनि पां म्हणौनि सुबुद्धी। जाणों पाहासी तरि आधीं। तपचि जाण।९८। येथ तप म्हणिजे काई। तें स्वरूप दावूं पाहीं। मग भेदिले गुणीं तिहीं। तें पाठीं बोलों।९९। तरि तप जे कां सम्यक। तेंही त्रिविध आइक। शारीर मानसिक। शाब्द गा।२००। आतां या तिहींमाझारीं। शारीर तंव अवधारीं। तरि शंभू कां श्रीहरि। पढियंता होय।१।

देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनं शौचमार्जवम्।
ब्रह्मचर्यमहिंसा च शारीरं तप उच्यते।१४।

तया प्रिय देवतालया। यात्रादिकें करावया। आठही पाहार जैसें पायां। उळिग घापे। २। देवांगणमिरवणियां। अंगोपचार पुरवणियां। करावया म्हणियां। शोभती हात।३। लिंग कां प्रतिमा दिठी। देखतखेंवो अंगेष्टी। लोटिजे कां काठी। पडली जैसी। आणि विधिविनयादिकीं। गुणीं वडील जे लोकीं। तयां ब्राह्मणांची निकी। पाइकी कीजे।५। अथवा प्रवासें कां पीडा। कां शिणले जे सांकडां। तें जीव सुरवाडा। आणिजती।६। सकल तीर्थांचिये धुरे। जियें कां मातापितरें। तयां सेवेसि कीर शरीरें। लोण कीजे।७। आणि संसाराऐसा दारुण। जो भेटलाचि हरी शीण। तो ज्ञानदानी सकरुण। भजिजे गुरु।८। आणि स्वधर्माच्या आगिठां। देहजाड्याचिया किटा। आवृत्तिपुटीं सुभटा। झाडी कीजे।९। वस्तु भूतमात्रीं नमिजे। परोपकारी भजिजे। स्त्रीविषयीं नियमिजे। नांवेंनांव।२१०। जन्मतेनि प्रसंगें। स्त्रीदेह शिवणें आंगें। तेथून जन्म अवघें। सोंवळें कीजे।११। भूतमात्राचेनि नांवें। तृणही नासुडावें। किंबहुना सांडावें। छेदभेद।१२। ऐसैसीं जैं शरीरीं। राहाटीची पडे उजरी। तैं शारीर तप घुमरी। आले जाण।१३। पार्था समस्तही हें करणें। देहाचेनि प्रधानपणें। म्हणौनि ययातें मी म्हणें। शारीर तप।१४। एवं शारीर जे तप। तयाचें दाविलें रूप। आतां आईक निष्पाप। वाङ्मय तें।१५।

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते।१५।

तरी लोहाचें आंग तुक। न तोडितांचि कनक। केलें जैसें देख परिसें तेणें।१६। तैसें न दुखवितां सहजें। जावळिया सुख निपजे। ऐसें साधुत्व कां देखिजे। बोलणां जिये।१७। पाणी मुदल झाडा जाये। तृण ते प्रसंगेंचि जिये। तैसें एका बोलिलें होये। सर्वांहि हित।१८। जोडे अमृताची सुरवरी। तैं प्राणांतें अमर करी। स्नानें पापताप निवारी। गोडीही दे।१९। तैसा अविवेकही फिटे। आपुलें अनादित्व भेटे। आइकतां रुचि न विटे। पीयूषीं जैसी।२२०। जरी कोणी करी पुसणें। तरी होआवें

ऐसें बोलणें। ना तरी आवर्तणें। निगम कां नाम।२१। ऋग्वेदादि तीन्ही। प्रतिष्ठीजती वाग्भवनीं। केली जैसी वदनीं। ब्रह्मशाळा।२२। ना तरि एकाधें नांव। तेंचि शैव का वैष्णव। वाचे वसे तें वाग्भव। तप जाणावें।२३। आतां तप जें मानसिक। तेंही सांगों आइक। म्हणे लोकनाथनायक। नायकचि तो।२४।

मनःप्रसाद सौम्यत्वं मौनमात्रविनिग्रहः।
भावसंशुद्धिरित्येतत्तपो मानसमुच्यते।१६।

तरि सरोवर तरंगीं। सांडिलें आकाश मेघीं। कां चंदनाचे उरगीं। उद्यान जैसें।२५। नाना कळवैषम्यें चंद्र। कां सांडिला आधीं नरेंद्र। ना तरि क्षीरसमुद्र। मंदराचळें।२६। तैसीं नाना विकल्पजाळें। सांडूनि गेलिया सकळें। मन राहे कां केवळें। स्वरूपें जें।२७। तपनेवीण प्रकाश। जाड्येंवीण रस। पोकळीवीण अवकाश। होय जैसा।२८। तैसीं आपली सोय देखे। आणि आपलिया स्वभावा मुके। हिंवली जैसी आंगिकें। हिंवो नेदी।२६। मग नचलते कळंकेवीण। शशिबिंब जैसें परिपूर्ण। तैसें चोखी शृंगारपण। मनाचें जें।२३०। बुजाली वैराग्याची वोरप। जिराली मनाची धांप कांप। तेथ केवळ जाली वाफ। निजबोधाची।३१। म्हणौनि विचारावया शास्त्र। राहाटवावें जें वक्त्र। तें वाचेचेंही सूत्र। हातीं न धरी।३२। ते स्वलाभ लाभलें लाभलेपणें। मन मनपणाही धरूं नेणें। शिवतलें जैसें लवणें। आपुलें निज।३३। तेथ कें उठिती ते भाव। जिहीं इंद्रियमार्गीं धांव। घेऊनि ठाकावे गांव। विषयांचे ते।३४। म्हणौनि तिये मानसी। भावशुद्धीचि असे आपैसी। रोमशुचि जैसी। तळहाताची।३५। काय बहु बोलों अर्जुना। जैं हे दशा ये मना। तै मनस्तपोभिधाना। पात्र होय ती।३६। परि तें असो हे जाण। मानस तपाचे लक्षण। देवो म्हणे संपूर्ण। सांगितलें।३७। एवं देहवाचाचित्तें। जें पातलें त्रिविधत्वातें। तें सामान्य तप तूतें। परिसविलें गा।३८। आतां गुणत्रयसंगें। हेंचि विशेषीं त्रिविधी रिगे। तेंही आइक चांगें। प्रज्ञाबळें।३६।

श्रद्धया परया तप्तं तपस्तत्रिविधं नरैः।
अफलाकांक्षिभिर्युक्तैः सात्त्विकं परिचक्षते।१७।

तरि हेंचि तप त्रिविधा। जें दाविलें तुज प्रबुद्धा। तेंचि करीं पूर्णश्रद्धा। सांडूनि फळ।२४०। जैं पुरतिया सत्त्वशुद्धी। आचरिजे आस्तिक्यबुद्धी। तैं तयातेंचि गा प्रबुद्धीं। सात्त्विक म्हणिपे।४१।

सत्कारमानपूजार्थं तपो दंभेन चैव यत्।
क्रियते तदिह प्रोक्तं राजसं चलमध्रुवम्।१८।

ना तरि तपस्थापनेलागीं। दुजेपण मांडूनि जगीं। महत्त्वाद्रिच्या शृंगीं। बैसावया।४२। त्रिभुवनींचिया सन्माना। न वचावें ठाया आना। धुरेचिया आसना। भोजनालागीं।४३। विश्वाचिया स्तोत्रा। आपण होआवया पात्रा। विश्वें आपलिया यात्रा। करावया यावें।४४। लोकांचिया विविधा पूजा। आश्रयो न धरावया दुजा। भोग भोगावे वोजा। महत्त्वाचिये।४५। आंग बोल माखूनि तपें। विकावया आपणपें। अंगहीन पडपे। जियापरी।४६। हें असो धनमानीं आस। वाढवूनि तप कीजे सायास। तैं तेंचि तप राजस। बोलिजे गा।४७। पहुरणीं जें दुहिलें। तैं तें गुरूं न दुभेचि व्यालें। कां उभें शेत चारिलें। पिकावया नुरे।४८। तैसें फोकारितां तप। कीजे जें साक्षेप। तें फळीं तंव सोप। निःशेष जाय।४६। ऐसें निर्फळ देखोनि करितां। माझारीं सांडी पांडुसुता। म्हणौनि नाहीं स्थिरता। तपा तया।२५०। एऱ्हवीं तरी आकाश मांडी। जो गर्जोनि ब्रह्मांड फोडी। तो अकाळमेघ काय घडी। राहात आहे।५१। तैसें राजस तप जें होय। तें फळीं कीर वांझ जायें। परी आचरणींही नोहे। निर्वाहतें गा।५२। आतां तेंचि तप पुढती। तामसाचिये रीती। पैं परत्रा आणि कीर्ती। मुकोनि कीजे।५३।

मूढग्राहेणात्मनो यत्पीडया क्रियते तपः।
परस्योत्सादनार्थं वा तत्तामसमुदाहृतम्।१६।

केवळ मूर्खपणाचा वारा। जीवीं घेऊनि धनुर्धरा। नाम ठेविजे शरीरा। वैरियाचें।५४। पंचाग्नीची दडगी। खोलवीजती शरीरालागीं। कां इंधन कीजे हे आगी। आंतु लावी।५५। माथां जाळिजती गुगुळ। पाठीं घालिजती गळ। आंग जाळिती इंगळ। जळत भीतां।५६। दवडोनि श्वासोच्छ्वास। कीजती वायांचि उपवास। कां घेपती धूमाचे घांस। अधोमुखें।५७। हिमोदकें आकंठें। खडकें सेविजती तटें। जितया मांसाचे चिमुटे। तोडिती जेथ।५८। ऐसी नानापरी हे काया। घाय सूतां पै धनंजया। तप कीजे नाशावया। पुढिलातें।५६। आंगभारें सुटला धोंडा। आपण फुटोनि होय खंडखंडा। कां आड जालयातें रगडा। करी जैसा।२६०। तेविं आपलिया आटणिया। सुखें असतया प्राणिया। जियावया शिराणिया। कीजती गा।६१। किंबहुना हे वोखटी। घेऊनि क्लेशाची हातवटी। तप निफजे तें किरीटी। तामस होय।६२। एवं

सत्त्वादिकाच्या आंगी। पडिलें तप तिहीं भागीं। जालें तेंही तुज चांगीं। दाविलें व्यक्ती।६३। आतां बोलतां प्रसंगा। आलें म्हणोनि पैं गा। करूं रूप दानलिंगा। त्रिविधा तया।६४। तेथ गुणाचेनि बोलें। दानही त्रिविध असे जालें। तेंचि आइक पहिलें। सात्त्विक ऐसें।६५।

दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारिणे।
देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम्।२०।

तरि स्वधर्मा आंतौतें। जें जें मिळेल आपणयातें। तें तें दिजे बहुतें। सन्मानयोगें।६६। जालया सुबीजप्रसंग। पडे क्षेत्रवाफेचा पांग। तैसाचि दानाचा हा लाग। देखतसें।६७। अनर्घ्य रत्न हातां चढे। तैं भांगराची वोढी पडे। दोनी जाली तरी न जोडे। लेतें आंग।६८। परि सण सुहृद संपत्ति। हे तीन्ही येकीं मिळती। जैं भाग्य धरी उन्नती। आपुल्याविषीं।६९। तैसें निफजवावया दान। जैं सत्त्व सुये संवाहन। तैं देश काळ भाजन। द्रव्यही मिळें।२७०। तरि आधी तंव प्रयत्नेसीं। होआवें कुरुक्षेत्र कां काशी। ना तरि तुके जो इहींसीं। तो देशही हो।७१। तेथ रविचंद्रराहुमेळ। होतां पाहे पुण्यकाळ। कां तयासारिखा निर्मळ। आनही जाला।७२। तैशा काळीं तिये देशीं। होआवी पात्रसंपत्ति ऐसी। मूर्ति आहे धरिली जैसी। शुचित्वेंचि कां।७३। आचाराचें मूळपीठ। वेदांची उतारपेठ। तैसें द्विजरत्न चोखट। पावोनियां।७४। मग तयाचे ठायीं वित्ता। निवर्तवावी स्वसत्ता। परि प्रियापुढें कांता। रिगे जैसी।७५। कां जयाचे ठेविलें तया। देऊनि होय उतराइया। नाना हडपे विडा राया। दिधला जैसा।७६। तैसेनि निष्कामें जीवें। भूम्यादिक अर्पावें। किंबहुना हांवे। नेदावें उठों।७७। आणि दान जया द्यावें। तयातें ऐसेया पाहावें। जया घेतले नुमचवे। कायसेनही।७८। साद घातलिया आकाशा। नेदी प्रतिशब्द जैसा। कां पाहिला आरसा। येरीकडे।७९। ना तरी उदकाचिये भूमिके। आफळिलेनि कंदुकें। उधळौनि कवतिकें। न येइजे हातां।२८०। ना ना वसो घातला चारु। माथां तुरंबिला बुरु। न करी प्रत्युपकारु। जियापरी।८१। तैसें दिधलें दातयाचें। जो कोणेही आंगें नुमचे। अर्पिलया साम्य तयाचें। कीजे पैं गा।८२। ऐसिया जैं सामग्रिया। दान निफजे वीरराया। तें सात्त्विक दानवर्या। सर्वांही जाण।८३। आणि तोचि देश काळ। घडे तैसाचि पात्रमेळ। दानभागही निर्मळ। न्यायगत।८४।

यत्तु प्रत्युपकारार्थं फलमुद्दिश्य वा पुनः।
दीयते च परिक्लिष्टं तद्राजसमुदाहृतम्।२१।

परि मनीं धरूनि दुभतें। चारिजे जेविं गाईतें। कां पेंव करूनि आइतें। पेरूं जाईजे।८५। ना ना दिढी घालूनि आहेरा। आवंतूं जाइजे सोयिरा। कां वाण धाडिजे घरां। वोवसीयाचे।८६। पैं कळांतर गांठीं बांधिजे। मग पुढिलाचें काज कीजे। पूजा घेऊनि रस दीजे। पीडितांसि।८७। तैसें जया जें दान देणें। तें तेणेंचि गा जीवनें। पुढती भजावा भावें येणें। दीजे जें कां।८८। अथवा कोणी वाटे जातां। घेतलें उमचों न शकता। मिळे जैं पांडुसुता। द्विजोत्तम।८९। तरी कवड्या एकासाठीं। अशेषां गोत्रांचींच किरीटी। सर्व प्रायश्चित्तें सुये मुठी। तयाचिये।२९०। तेविंची पारलौकिकें। फळे वांछिजती अनेकें। आणि दीजे तरी भुके। येकाही नोहे।९१। तेंही ब्राह्मणा नेवों सरे। कीं हानिचेनि शिणें झांसुरे। सर्वस्व जैसें चोरें। नागऊनि नेलें।९२। काय बहु सांगों सुमती। जें दीजे या मनोवृत्ती। तें दान गा त्रिजगतीं। राजस पैं।९३।

अदेशकाले यद्दानमपात्रेभ्यश्च दीयते।
असत्कृतमवज्ञातं तत्तामसमुदाहृतम्।२२।

मग म्लेच्छांचे वसौटे। दांगाणे हन कैकटें। कां शिबिरें चोहटे। नगरींचे ते।९४। तेही तेही ठाईं मिळणी। समयो सांजवेळ कां रजनी। तेव्हां उदारा होणें धनीं। चोरियेच्या ते।९५। पात्रें भाट नागारी। सामान्य स्त्रिया कां जुवारी। जिये मूर्तिमंतें भुररीं। भुले तयां।९६। नृत्याची पुरवणी। ते पुढां डोळेभारणी। गीत भाटींव तो श्रवणीं। कर्णजप।९७। तयाहीवरी अळुमाळ। जैं घे फुलागंधाचा गुगुळ। तंव भ्रमाचा तो वेताळ। अवतरें तैसा।९८। तेथ विभांडूनियां जग। आणिले पदार्थ अनेग। तेणें घालूं लगे मातंग–। गवादीसी।९९। एवं ऐसेनि जें देणें। तें तामस दान मी म्हणें। आणि घडे दैवगुणें। आणिकही ऐक।३००। विपायें घुणाक्षर पडे। टाळिये काउळा सांपडे। तैसें तामसा पुण्य जोडे। पुण्यदेशीं।१। तेथ देखोनि तो आथिला। योग्य मार्गोंही आला। तोही दर्पा चढला। भांबावे जरी।२। तरी श्रद्धा न धरीं जीवीं। तया माथाही न खालवी। स्वयें न करी ना करवी। अर्घ्यादिक।३। आलिया न घाली बैसों। तेथ गंधाक्षतांचा काय अतिसों। हा अप्रसंग कीर असो। तामसीं नरीं।४। पैं बोळविजे रिणाइत। तैसा झकावी तयाचा हात। तूं करणें याचा बहुत। प्रयोग तेथ।५। आणि जया जें दे किरीटी। तयातें उमाणी तयासाठीं। मग कुबोलें कां लोटी। अवज्ञेच्या।६। हें बहु असो यापरी। मोल वेंचणें जें अवधारीं। तया नांव चराचरीं। तामस दान।७। ऐसी आपुलाल्या चिह्नीं। अळंकृतें तिन्ही। दानें दाविलीं अभिधानीं। राजतनया।८। तेथ मी जाणत असें। विपायें तूं गा ऐसें। कल्पिसील मानसें। विचक्षणा।९। जें भवबंधमोचक। येकलें कर्म सात्त्विक। तरी कां वेखासीं सदोख। येर

बोलावीं ।३१०। परि नोसंतितां विवसी। भेटी नाहीं निधीसी। कां धूं न साहतां जैसी। वाती न लगे ।११। तैसें शुद्धसत्त्वाआड। आहे रजतमाचें कवाड। तें भेदणें यातें कीड। म्हणावें कां ।१२। आम्ही श्रद्धादि दानांत। जें समस्तही क्रियाजात। सांगितलें कां व्याप्त। तिहीं गुणीं ।१३। तेथ भरंवसेनि तिन्ही। न सांगोंचि ऐसे मानीं। परि सत्त्व दावावया दोन्ही। बोलिलो येरें ।१४। जें दोहींमाजीं तिजें असे। तें दोन्ही सांडिताचि दिसे। अहोरात्रत्यागें जैसें। संध्यारूप ।१५। तैसें रजतमविनाशें। तिजें जें उत्तम दिसे। तें सत्त्व हें आपैसें। फावासि ये ।१६। एवं दावावया सत्त्व तुज। निरूपिलें तम रज। तें सांडूनि सत्त्वें काज। साधीं आपलें ।१७। सत्त्वेंचि येणें चोखाळें। करीं यज्ञादिकें सकळें। पावसी तैं करतळें। आपलें निज ।१८। सूर्यें दाविलें सांतें। काय एक न दिसे येथें। तेंविं सत्त्वें केलें फळातें। काय नेदी ।१९। हें कीर आवडतांविखीं। शक्ति सत्त्वीं आथी निकी। परि मोक्षेसीं एकी। मिसळणें जें ।३२०। तें एक आनचि आहे। तयाचा सावावो जैं लाहे। तैं मोक्षाचाही होये। गांवीं सरतें ।२१। पैं भांगार जऱ्हीं पंधरें। तऱ्हीं राजावळीचीं अक्षरें। लाहे तैचि सरे। जियापरी ।२२। स्वच्छें शीतळें सुगंधें। जळें होती सुखप्रदें। परि पवित्रत्व संबंधें। तीर्थाचेनि ।२३। नई हो कां भलतैसी थोरी। परि गंगा जैं अंगिकारी। तैंचि तिये सागरीं। प्रवेश गा ।२४। तैसें सात्त्विक कर्मा किरीटी। येतां मोक्षाचिये भेटी। न पडे आडकाठी। तें वेगळे आहे ।२५। हा बोल आइकतखेंवीं। अर्जुना आधि न माये जीवीं। म्हणे देवें कृपा करावी। सांगावें तें ।२६। तेथ कृपाळुचक्रवर्ती। म्हणे आईक तयाची व्यक्ति। जेणें सात्त्विकें तें मुक्ति–। रत्न देखे ।२७।

ॐ तत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः।
ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च यज्ञाश्च विहिताः पुरा ।२३।

तरि अनादि परब्रह्म। जें जगदादि विश्रामधाम। तयाचें एक नाम। त्रिधा पैं असे ।२८। तें कीर अनाम अजाति। परि अविद्यावर्गाचिये राती–। माजीं ओळखावया श्रुती। खूण केली ।२९। उपजलिया बाळकांसी। नांव नाहीं तयापासीं। ठेविलेनि नांवेसीं। ओ देत उठी ।३३०। कष्टलें संसारशिणें। जे देवों येती गाऱ्हाणें। तयां ओ दे नांवे देणें। तो संकेत हा ।३१। ब्रह्माचा अबोला फिटावा। अद्वैतत्वें तो भेटावा। ऐसा मंत्र देखिला कणवा। वेदें बापें ।३२। मग दाविलेनि जेणें एकें। ब्रह्म आळविलें कवतिकें। मागां असत ठाके। पुढां उभें ।३३। परि निगमाचळशिखरीं। उपनिषदार्थनगरी। आहाति जे ब्रह्माच्या येकाहारीं। तयांसीच कळे ।३४। हेंही असो प्रजापती। शक्ति जे सृष्टि करिती। ते जया एका आवृत्ती। नामाचिये ।३५। पैं सृष्टीचिया उपक्रमा–। पूर्वीं गा वीरोत्तमा। वेडा ऐसा ब्रह्मा। एकला होता ।३६। मज ईश्वरातें नोळखें। ना सृष्टिही करूं शके। तो थोर केला ऐके। नामें जेणें ।३७। जयाचा अर्थ जीवीं ध्यातां। जें वर्णत्रयचि जपतां। विश्वसृजनयोग्यता। आली तयां ।३८। तेधवां रचिले ब्रह्मजन। तयां वेद दिधले शासन। यज्ञाऐसें वर्तन। जीविके केलें ।३९। पाठीं नेणों किती येर। स्रजिले लोक अपार। जाले ब्रह्मदत्त अग्रहार। तिन्ही भुवनें ।३४०। ऐसें नाममंत्रें। जेणें धातया अढळचि करणें। तयाचें स्वरूप आइक म्हणे। श्रीकांत तो ।४१। तरि सर्व मंत्रांचा राजा। तो प्रणव आदिवर्ण बुझा। आणि तत्कार तो दुजा। तिजा सत्कार ।४२। एवं ॐ तत्सदाकार। ब्रह्मनाम हे त्रिप्रकार। हें फूल तुरंबी सुंदर। उपनिषद तें ।४३। येणेंसीं गा होऊनि एक। जैं कर्म चाले सात्त्विक। तैं कैवल्यातें पाइक। घरींचे करी ।४४। परि कापुराचें थळीव। आणूनि देईल दैव। लेवों जाणणेंचि अडव। तेथ असे बापा ।४५। तैसें आदरिजेल सत्कर्म। उच्चारिजेल ब्रह्मनाम। परि नेणिजेल जरि वर्म। विनियोगाचें ।४६। तरि महंताचिया कोडी। घरा आलियाही वोडी। मानूं नेणतां परवडी। मुदल तुटे ।४७। कां ल्यावया चोखट। टीक भांगार एकवट। घालूनि बांधिली मोट। गळां जेवीं ।४८। तैसें तोंडीं ब्रह्मनाम। हातीं ते सात्त्विक कर्म। विनियोगेंवीण काम। विफळ होय ।४९। अगा अन्न आणि भूक। पासीं असे परि देख। जेऊं नेणतां बाळकं। लंघनचि कीं ।३५०। कां स्नेह सूत्र वैश्वानरा। जालियाही संसारा। हातवटी नेणतां वीरा। प्रकाश नोहे ।५१। तैसें वेळें कृत्य पावे। तेथिंचा मंत्रही आठवे। परि व्यर्थ ते आघवें। विनियोगेंवीण ।५२। म्हणौनि वर्णत्रयात्मक। जें हे परब्रह्मनाम एक। विनियोग तूं आइक। याचा आतां ।५३।

तस्मादोमित्युदाहृत्य यज्ञदानतपःक्रियाः।
प्रवर्तंते विधानोक्ताः सततं ब्रह्मवादिनाम् ।२४।

तरि या नामींचीं अक्षरें तिन्ही। कर्मा आदि मध्य निदानीं। प्रयोजावीं पैं स्थानीं। इहीं तिन्ही ।५४। हेचि एक हातवटी। घेऊनि हन किरीटी। आले ब्रह्मविद भेटी। ब्रह्माचिये ।५५। ब्रह्मेंसीं होआवया एकी। ते न वंचती यज्ञादिकीं। जे चावळले वोळखी। शास्त्रांचिया ।५६। तो आधी तंव ओंकार। ध्यानें करिती गोचर। पाठीं आणिती उच्चार। वाचेही तो ।५७। तेणें ध्यानें प्रकटें। प्रणवोच्चारें स्पष्टें। लागती मग वाटे। क्रियांचिये ।५८। आंधारीं अभंग दिवा। आडवीं समर्थ बोळावा। तैसा प्रणवे जाणावा। कर्मारंभीं ।५९। उचितदेवोद्देशें। द्रव्यें धर्म्यें आणि बहुवसें। द्विजद्वारा हन हुताशें। यजिती पैं ते ।३६०। आहवनीयादि वह्नीं। निक्षेपरूपी हवनीं। यजिती पैं विधानीं। फुडे होउनी ।६१। किंबहुना नाना याग–। निष्पत्तीचें घेऊनि अंग। करिती नावडतेया त्याग। उपाधीचा ।६२। कां न्यायें जोडलां पवित्रीं। भूम्यादिकीं स्वतंत्रीं। देशकाळशुद्ध

पात्रीं। देती दानें।६३। अथवा एकांतरा कृच्छ्रीं। चांद्रायणें मासोपवासीं। शोधोनि गा धातुराशी। करिती तपें।६४। एवं यज्ञदानतपें। जियें गाजती बंधरूपें। तिहींच होय सोपें। मोक्षाचें तयां।६५। स्थळीं नावा जिया दाटिजे। जळीं तियाचि जेवीं तरिजे। तेविं बंधकीं कर्मीं सुटिजे। नामें येणें।६६। परि हें असो ऐसियां। या यज्ञदानादि क्रिया। ओंकारें सावायिलिया। प्रवर्तती।६७। तिया मोटकिया जेथ फळीं। रिगों पाहाती निहाळीं। प्रयोजिती तिये काळीं। तच्छब्द तो।६८।

तदित्यनभिसंधाय फलं यज्ञतपःक्रियाः।
दानक्रियाश्च विविधाः क्रियंते मोक्षकांक्षिभिः।२५।

जें सर्वाही जगापरौतें। जें एक सर्वही देखते। जें तच्छब्दें बोलिजेतें। पैल वस्तु।६६। तें सर्वादिकत्वें चित्तीं। तद्रूप ध्याऊनियां सुमति। उच्चारेंही व्यक्ती। आणिती पुढती।३७०। म्हणती तद्रूपा ब्रह्मा तया। फळेंसीं क्रिया इया। तेचि होतु आम्हां भोगावया। कांहींचि नुरो।७१। ऐसेनि तदात्मकें ब्रह्में। तेथ उगाणूनि कर्मे। आंग झाडिती नमनें। येणें बोलें।७२। आतां ओंकारें आदरिलें। तत्कारें समर्पिलें। इया रिती जया आलें। ब्रह्मत्व कर्मा।७३। तें कर्म कीर ब्रह्माकारें। जालें तेणेंही न सरे। जें करी तेणेंसी दुसरें। आहे म्हणौनि।७४। मीठ आंगें जळीं विरे। परि क्षारता वेगळीं उरे। तैसें कर्म ब्रह्माकारें। गमे तें द्वैत।७५। आणि दुजें जंव जंव घडे। तंव तंव संसारभय जोडे। हें देवो आपलेनि तोंडें। बोलती वेदें।७६। म्हणौनि परत्वें ब्रह्म असे। तें आत्मत्वें परियवसे। सच्छब्द या रिणादोषें। ठेविला देवें।७७। तरि ओंकारतत्कारीं। कर्म केलें जें ब्रह्मशरीरीं। जें प्रशस्तादि बोलवरी। वाखाणिलें।७८। प्रशस्तकर्मीं तिये। सच्छब्दा विनियोग आहे। तोचि आइका होये। तैसा सांगों।७६।

सद्भावे साधुभावे च सदित्येतत्प्रयुज्यते।
प्रशस्ते कर्मणि तथा सच्छब्दः पार्थ युज्यते।२६।

तरि सच्छब्दें येणें। आटूनि असंताचें नाणें। दाविजे अव्यंगवाणें। सत्तेचें रूप।३८०। जें सतचि काळें देशें। होऊं नेणेचि अनारिसें। आपणपां आपण असे। अखंडित।८१। हें दिसतें जेतुलें आहे। तें असतपणें जें नोहे। देखतां रूपीं सोये। लाभें जयाचीं।८२। तेणेंसीं प्रशस्त तें कर्म। जें जालें सर्वात्मक ब्रह्म। देखिजे करूनि सम। ऐक्यबोधें।८३। तरी ओंकार तत्कारें। जें कर्म दाविलें ब्रह्माकारें। तें गिळूनि होइजे एकसरें। सन्मात्रचि।८४। ऐसा हा अंतरंग। सच्छब्दाचा विनियोग। जाणा म्हणे श्रीरंग। मी न म्हणें हो।८५। ना मीचि जरी हो म्हणे। तरी श्रीरंगीं दुजें हेंचि उणें। म्हणौनि हे बोलणें। देवाचेंचि।८६। आतां आणिकीही परी। सच्छब्द हा अवधारीं। सात्त्विक कर्मा करी। उपकार जो।८७। तरी सत्कर्मे चांगे। चालिलीं अधिकारबगें। परी एकाधे कां आंगें। हिणावती जैं।८८। तैं उणें एकें अवयवें। शरीर ठाके आघवें। कां अंगहीना भांडावें। रथाची गती।८६। तैसें एकेचि गुणेंवीण। सतचि परी असतपण। कर्म धरी गा जाण। जियें वेळें।३६०। तेव्हां ओंकार तत्कारीं। सावायिला हा चांगी परी। सच्छब्द कर्मा करी। जीर्णोद्धार।६१। तें असतपण फेडी। आणी सद्भावाचिये रूढी। निजसत्त्वाचिये प्रौढी। सच्छब्द हा।६२। दिव्यौषध जैसें रोगिया। कां सावावो ये भंगलिया। सच्छब्द कर्मा व्यंगलिया। तैसा जाण।६३। अथवा कांहीं प्रमादें। कर्म आपुलिये मर्यादे। चुकोनि पडे निषिद्धें। वाटे हन।६४। चालतयाचि मार्ग सांडे। पारखियाचि अखरें पडे। राहाटीमाजीं न घडे। काइ काइ।६५। म्हणौनि तैसीं कर्मा। राभस्यें सांडे सीमा। असाधुत्वाचिया दुर्नामा। येवों पाहें जें।६६। तेथ गा हा सच्छब्दु। येरां दोहींपरीस प्रबुद्धु। प्रयोजिला करी साधु। कर्मातें यया।६७। लोहा परिसाची घृष्टी। वोहळा गंगेची भेटीं। कां मृता जैसी वृष्टि। पीयूषाची।६८। पैं असाधुकर्मा तैसा। सच्छब्दप्रयोग वीरेशा। हें असो गौरवचि ऐसा। नामाचा यया।६६। घेऊनि येथीचें वर्म। जैं विचारिसीं हे नाम। तैं केवळ हेंचि ब्रह्म। जाणसी तूं।४००। पाहें पां ॐतत्सत् ऐसें। हें बोलणें तेथ नेतसे। जेथूनि कां हे प्रकाशे। दृश्यजात।१। तें तंव निर्विशिष्ट। परब्रह्म चोखट। तयाचें हें आंतुवट। व्यंजक नाम।२। परि आश्रय आकाशा। आकाशचि कां जैसां। या नामा अनामिया आश्रय तैसा। अभेद असे।३। उदयिला आकाशीं। रवीचि रवीतें प्रकाशी। हें नामव्यक्ति तैसी। ब्रह्मचि करी।४। म्हणौनि त्र्यक्षर हें नाम। नव्हे जाण केवळ ब्रह्म। याहीलागीं कर्म। जें जें कीजे।५।

यज्ञे तपसि दाने च स्थितिः सदिति चोच्यते।
कर्म चैव तदर्थीयं सदित्येवाभिधीयते।२७।

तें याग अथवा दानें। तपादिकेंही गहनें। तियें निफजतु कां न्यूनें। होऊनि ठातु। परि परिसाचा वरकली। नाहीं चोखाकिडाची बोली। तैसीं ब्रह्मीं अर्पिता केलीं। ब्रह्मचि होती।७। उणिया पुरियाची परी। नुरेचि तेथ अवधारीं। निवडूं न येती सागरीं। जैसिया नदी।८। एवं पार्था तुजप्रती। ब्रह्मनामाची हे शक्ति। सांगितली उपपत्ति। डोळसा गा।६। आणि येकेकाही अक्षरा। वेगळवेगळा वीरा। विनियोग नागरा। बोलिलों रीती।४१०। एवं ऐसें सुमहिम। म्हणौनि हे ब्रह्मनाम। आता जाणितलें कीं सुवर्म।

राया तुंवा ।११। तरी येथूनियाचि श्रद्धा। उपलविली हो सर्वदा। जयाचें जालें बंधा। उरों नेदी ।१२। जिये कर्मीं हा प्रयोग। अनुष्ठिजे सद्विनियोग। तेथ अनुष्ठिला सांग। वेदचि तो ।१३।

अश्रद्धया हुतं दत्तं तपस्तप्तं कृतं च यत्।
असदित्युच्यते पार्थ न च तत्प्रेत्य नो इह ।२८।

इति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे श्रद्धात्रयविभागयोगोनाम सप्तदशोऽध्यायः।

ना सांडूनि हे सोये। मोडूनि श्रद्धेची बाहे। दुराग्रहाची त्राये। वाढऊंनियां ।१४। मग अश्वमेध कोडी कीजे। रत्नें भरोनि पृथ्वी दीजे। एकांगुष्ठींही तपिजे। तपसहस्रीं ।१५। जळाशयाचेनि नांवें। समुद्रही कीजती नवे। परि किंबहुना आघवें। वृथाचि तें ।१६। खडकावरी वर्षलें। जैसें भस्मीं हवन केलें। कां खेंव दिधलें। साउलिये ।१७। ना तरि जैसें चडकणां। गगन हाणितलें अर्जुना। तैसा समारंभ सुणा। गेलाचि तो ।१८। घाणा गाळिलें गुंडे। तेथ तेल ना पेंडी जोडे। तैसें दरिद्र तेवढें। ठेलेचि आंगीं ।१९। गांठीं बांधली खापरी। येथें अथवा पैलतीरीं। न सरोनि जैसी मारी। उपवासीं गा ।४२०। तैसें कर्मजातें तेणें। नाहीं ऐहिकींचे भोगणें। तेथ परत्र तें कवणें। अपेक्षावें ।२१। म्हणौनि ब्रह्मनामश्रद्धा। सांडूनि कीजे जो धांदा। हें असो सिणु नुसधा। दृष्टादृष्टीं तो ।२२। ऐसें कलुषकरिकेसरी। त्रितापतिमिरतमारि। श्रीवर वीरनरहरि। बोलिलें तेणें ।२३। तेथ निजानंदा बहुवसा–। माजीं अर्जुन तो सहसा। हरपला चंद्र जैसा। चांदिणेनी ।२४। अहो संग्राम हा वाणियां। मापें नाराचांचिया आणिया। सूनि मांस घे मवणिया। जीवितेंसीं ।२५। ऐसिया समयीं कर्कशें। भोगीजत स्वानंदराज्य कैसें। आणि भाग्योदय हा नसे। आणिके ठाईं ।२६। संजय म्हणे कौरवराया। गुणा रिझों ये रिपूचिया। आणि गुरुही हा आमुचिया। सुखाचा येथ ।२७। हा न पुसतां हे गोठी। तरी देव कां सोडिते गांठी। तरी कैसेनि आम्हां भेटीं। परमार्थेंसीं ।२८। होतों अज्ञानाच्या आंधारां। वोसंतीत जन्मवाहरा। ते आत्मप्रकाशमंदिरा। आंत आणिलें ।२९। येवढा आम्हां तुम्हां थोर। केला जेणें उपकार। म्हणोनि हा व्याससहोदर। गुरुत्वें होय ।४३०। तेवींचि संजयो म्हणे चित्तीं। हा अतिशय या नृपती। खुपैल म्हणौनि किती। बोलत असों ।३१। ऐसी हे बोली सांडिली। मग येरीचि गोठी आदरिली। जे पार्थें कां पुसिली। श्रीकृष्णातें ।३२। याचें जैसें का करणें। तैसें मीही करीन बोलणें। ऐकिजो ज्ञानदेव म्हणे। निवृत्तीचा ।४३३।

इति श्रीज्ञानदेवविरचितायां भावार्थदिपिकायां सप्तदशोऽध्यायः ।१७। श्लोकः–२८, ओव्याः–४३३

ज्ञानेश्वरीः– अध्याय अठरावाः– मोक्षसंन्यासयोग.

जयजय देव निर्मळ। निजजनाखिलमंगळ। जन्मजराजलजाळ–। प्रभंजन।१। जयजय देव प्रबळ। विदळितामंगळकुळ। निगमागमद्रुमफळ। फहप्रद।२। जयजय देव सकळ। विगतविषयवत्सळ। कळितकाळकौतूहळ। कलातीत।३। जयजय देव निश्चळ। चलितचित्तपानतुंदिल। जगदुन्मीलनाविरल–। केलिप्रिय।४। जयजय देव निष्कळ। स्फुरदमंदानंदबहळ। नित्यनिरस्ताखिळमळ। मूळभूत।५। जयजय देव स्वप्रभ। जगदंबुदगर्भनभ। भुवनोद्भवारंभस्तंभ। भवध्वंस।६। जयजय देव विशुद्ध। अविद्योद्यानद्विरद। शमदममदनमदभेद। दयार्णव।७। जयजय देवैकरूप। अतिकृतकंदर्पसर्पदर्प। भक्तभावभवनदीप। तापापह।८। जयजय देव अद्वितीय। परिणतोपरमैकप्रिय। निजजनजित भजनीय। मायागम्य।९। जयजय देव श्रीगुरो। अकल्पनाकल्पतरो। स्वसंविद्द्रुमबीजप्ररो–। हणावनी।१०। हें काय एकैक ऐसें। नानापरिभाषावशें। स्तोत्र करूं तुजदोषें। निर्विशेषा।११। जिहीं विशेषणीं विशेषिजे। तें दृश्य नव्हे रूप तुझें। हें जाणें मी म्हणोनि लाजें। वानणा इंहीं।१२। परी मर्यादेचा सागर। हा तंवचि तया डगर। जंव न देखे सुधाकर। उदया आला।१३। सोमकांत निजनिर्झरीं। चंद्रा अर्घ्यादिक न करीं। तें तोचि अवधारीं। करवी कीं जी।१४। नेणों कैसी वसंतसंगें। अवचितीं झाडांची अंगें। फुटती तैं तयांही जोगें। धरणें नोहे ?।१५। पद्मिनी रविकिरण। लाहे मग लाजे कवण ?। कां जळें शिंवतलें लवण। आंग भुले!।१६। तैसा तूंतें जेथ मी स्मरें। तेथें मीपण मी विसरें। मग जाकळिला ढेंकरें। तृप्त जैसा।१७। मज बुवां जी केलें तैसें। माझें मीपण दवडूनि देशें। स्तुतिमिषेंच पांपिसे। बांधलें वाचे।१८। ना येऱ्हवी तरी आठवीं। राहोनि स्तुति जैं करावी। तैं गुणागुणीं धरावी। सरोभरी कीं।१९। तरी तूं जी एकरसाचें लिंग। केवीं करूं गुणागुणीं विभाग?। मोती फोडूनि सांधिता चांग। कीं तैसेचि भले?।२०। आणि बाप तूं माय। इंहीं बोलीं ना स्तुती होय। डिंभोपाधिक आहे। विटाळ तेथें।२१। जी जालेनि पाइकें आलें। तें गोसांवीपण केवीं बोलें?। ऐसें उपाधीं उशिटलें। काय वर्णूं?।२२। जरी आत्मा तूं एकसरा। हेंही म्हणतां दातारा। तरी आंतुल तूं बाहेरा। घापतासी।२३। म्हणूनि सत्यचि तुजलागीं। स्तुती न देखों जी जगीं। मौनावांचूनि लेणें आंगीं। सुसीना मा।२४। स्तुती कांहीं न बोलणें। पूजा कांहीं न करणें। सन्निधी कांहीं न होणें। तुझ्या ठायीं।२५। तरी जितलें जैसें भुली। पिसें आलाप घाली। तैसें वानूं तें माउली। उपसाहावें तुवां।२६। आतां गीतार्थाची मुक्तमुदी। लेववीं माझिये वाग्वृद्धी। जेणें माने हे सभासदीं। सज्जनांच्या।२७। तेथ म्हणतलें श्रीनिवृत्ती। नको हें पुढतपुढती। परिसीं लोहा घृष्टी किती। वेळवेळां कीजे गा।२८। तंव विनवी ज्ञानदेव। म्हणे हो का जी पसाव। परी अवधान देतू देव। ग्रंथा आतां।२९। जी गीतारत्नप्रासादाचा। कळस अर्थचिंतामणीचा। सर्वगीतादर्शनाचा। पाढाऊ जो।३०। लोकीं तरी आथी ऐसें। जे दुरूनि कळस दिसे। आणि भेटींचि हातवसे। देवतेचि तिये।३१। तैसेचि एथही आहे। जे एकेचि येणें अध्यायें। आघवाची दृष्ट होये। गीतागम हा।३२। मी कळस याचिकारणें। अठरावा अध्याय म्हणे। वाइला बादरायणें। गीताप्रासादा।३३। नोहे कळसापरतें कांहीं। प्रासादीं काम नाहीं। तें सांगतसे गीताही। संपलेपणें।३४। व्यास सहजें सूत्री बळी। तेणें निगमरत्नाचळीं। उपनिषदार्थाची माळी। माजीं खांडिली।३५। तेथ त्रिवर्गाचा अणुआरू। आढऊ निघाला जो अपारू। तो महाभारतप्राकारू। भोवतां केला।३६। माजीं आत्मज्ञानाचें एकवट। दळवाडें झाडूनि चोखट। घडिलें पार्थवैकुंठ–। संवाद कुसरी।३७। निवृत्तिसूत्र सोडणिया। सर्वशास्त्रार्थ पुरवणिया। आवो साधिला मांडणिया। मोक्षरेखेचा।३८। ऐसेनि करितां उभारा। पंधरा अध्यायांत पंधरा। भूमी निर्वाळलिया पुरा। प्रासाद जाहाला।३९। उपरि सोळावा अध्याय। तो ग्रीवेघंटेचा आय। सप्तदश तो ठाय। पडघाणिये।४०। तयाहीवरी अष्टादश। तो अपैसा मांडला कळस। उपरि गीतादिकीं व्यास–। ध्वज लागला।४१। म्हणौनि मागील जे अध्याये। ते चढते भूमीचे आये। तयांचे पुरे दाविताहे। आपुल्या आंगीं।४२। जालया कामा नाहीं चोरी। तें कळसें होय उजरी। तेवीं अष्टादश विवरी। साद्यंत गीता।४३। ऐसा व्यासें विंदाणिये। गीताप्रासादू जोडणिये। आणूनि राखिले प्राणिये। नानापरी।४४। एक प्रदक्षिणा जपाचिया। बाहेरोनि करिती यया। एक ते श्रवणमिषें छाया। सेविती ययाची।४५। एक ते अवधानाचा पुरा। विडापाउड भीतरां। घेऊनि रिघती गाभारां। अर्थज्ञानाच्या।४६। ते निजबोधें उराउरीं। भेटती आत्मया श्रीहरी। परी मोक्षप्रासादीं सरी। सर्वांही आथी।४७। समर्थाचिये पंक्तिभोजनें। तळिल्यावरिल्या एक पक्वान्नें। तेवीं श्रवणें अर्थें पठणें। मोक्षचि लाभे।४८। ऐसा गीतावैष्णवप्रासाद। अठरावा अध्याय कळस विशद। म्यां म्हणितला हा भेद। जाणोनियां।४९। आतां सप्तदशापाठीं। अध्याय कैसेनि उठी। तो संबंध सांगों दिठी। दिसे तैसा।५०। कां गंगायमुनाउदक। वोघबगें वेगळिक। दावी होऊनि एक। पाणीपणें।५१। न मोडतां दोन्ही आकार। घडिलें एक शरीर। हें अर्धनारीनटेश्वर। रूपीं दिसे।५२। नाना वाढली दिवसें। कळा बिंबी पैसे। परी सिनाने लेवे जैसे। चंद्रीं नाहीं।५३। तैसीं सिनानीं चारी पदें। श्लोक श्लोकावच्छेदें। अध्याय अध्यायभेदें। गमे कीर।५४। परी प्रमेयाची उजरी। आनान रूप न धरी। नाना रत्नमणीं दोरी। एकचि जैसी।५५। मोतियें मिळोनि बहुवें। एकावळीचा पाड आहे। परी शोभे रूप होये। एकचि तेथ।५६। फुलां फुलसरां लेख चढे। द्रुतीं दुजी अंगुळी न पडे। श्लोक अध्याय तेणें पाडें। जाणावे हे।५७। सात शतें श्लोक। अध्यायां अठरांचे लेख। परी देव बोलिले एक। जें दुजे नाहीं।५८। आणि म्यांही न सांडोनि ते सोये। ग्रंथव्यक्ती केली आहे। प्रस्तुत तेणें निर्वाहें। निरूपण आइका।५९। तरी सतरावा अध्याव। पावतां पुरता ठाव। जे

संपतां श्लोकीं देव। बोलिले ऐसें।६०। अर्जुना ब्रह्मनामाच्या विखीं। बुद्धी सांडूनि आस्तिकी। कर्में किजती तितुकी। असंते होती।६१। हा ऐकोनि देवाचा बोल। अर्जुना आला डोल। म्हणे कर्मनिष्ठा मळ। ठेविला देखों।६२। तो अज्ञानांध तंव बापुडा। ईश्वरचि न देखे एवढा। तेथ नामाचि एक तें पुढां। कां सुझे तया?।६३। आणि रजतमें दोन्हीं। गेलियावीण श्रद्धा सानी। ते कां लागे अभिधानीं। ब्रह्माचिये।६४। मग कोता खेंव देणें। वारतेवरील धांवणें। सांडीं पडे खेळवणें। नागिणीचें तें।६५। तैसीं कर्मे दुवाडें। तयां जन्मांतरची कडे। दुर्मेळावे येवढे। कर्मामाजीं।६६। ना विपाये हे उजू होये। तरी ज्ञानाची योग्यता लाहे। येऱ्हवीं येणेंचि जाये। निरयालया।६७। कर्मीं हा ठायवरी। आहाती बहुवा अवसरी। आतां कर्मठा कें ये वारी। मोक्षाची हे?।६८। तरी फिटो कर्माचा पांग। कीजो अवघाचि त्याग। आदरिजो अव्यंग। संन्यास हा!।६९। कर्मबाधेचिया कहीं। जेथ भयाची गोठी नाहीं। तें आत्मज्ञान जिहीं। स्वाधीन होय।७०। ज्ञानाचे आवाहनमंत्र। जें ज्ञानपिकतें सुक्षेत्र। ज्ञान आकर्षिते सूत्र–। तंतु जे का।७१। ते दोनी संन्यासत्याग। अनुष्ठूनि सुटे जग। तरी हेचि आतां चांग। व्यक्त पुसों।७२। ऐसें म्हणोनि पार्थें। त्यागसंन्यासव्यवस्थे। रूप होआवया येथें। प्रश्न केला।७३। तेथ प्रत्युत्तरें बोली। श्रीकृष्णें जे चावळिली। तया व्यक्ती जाली। अष्टादशा।७४। एवं जन्यजनकभावें। अध्याय अध्यायातें प्रसवे। आतां ऐका बरवें। पुसिले जें।७५। तरी पांडुकुमरें तेणें। देवाचें सरतें बोलणें। जाणोनि अंतःकरणें। काणी घेतली।७६। येऱ्हवीं तत्त्वाविषयीं भला। तो निश्चित असे कीर जाहला। परी देवो राहे उगला। तें साहवेना।७७। वत्स धालयाही वरी। धेनू न वचावी दुरी। अनन्य प्रीतीची परी। ऐसी आहे!।७८। तेणें काजेवीणही बोलावें। तें देखिलें तरी पाहावें। भोगिता चाड दुणावे। पढियंतासाठीं।७९। ऐसी प्रेमाची हे जाती। आणि पार्थ तंव तेचि मूर्ती। म्हणूनि करूं लाहे खंती। उगेपणाची।८०। आणि संवादाचेनि मिषें। जे अव्यवहार वस्तु असे। तेचि भोगिजे कीं जैसें। दर्पणीं रूप।८१। मग संवाद तोही पारुखे। तरी भोगितां भोगणें थोके। हें कां साहवेल सुखें। लांचावलेया?।८२। यालागीं त्यागसंन्यास। पुसावयाचें घेऊनि मिस। मग उपलविलें दुस। गीतेचें तें।८३। अठरावा अध्याय नोहे। हे एकाध्यायी गीताचि आहे। जैं वत्सचि धेनू दुहे। तैं वेळ कायसी?।८४। तैसी संपता अवसरीं। गीता आदरविली माघारी। स्वामी भृत्याचा न करी। संवाद काई?।८५। परी हें असों ऐसें। अर्जुनें पुसिजत असे। म्हणे विनंती विश्वेशें। अवधारिजो।८६।

अर्जुन उवाचः– संन्यासस्य महाबाहो तत्त्वमिच्छामि वेदितुम्।
त्यागस्य च हृषीकेश पृथक्केशिनिषूदन।१।

हां जी संन्यास आणि त्याग। इयां दोन्हीं एके अर्थी लाग। जैसा संघात आणि संघ। संघातेंचि बोलिजे।८७। तैसेंचि त्यागें आणि संन्यासें। त्यागचि बोलिजत असे। आमचेनि तंव मानसें। जाणिजे हेंचि।८८। ना कांहीं आथी अर्थभेद। तो देव करोतू विशद। तेथ म्हणती श्रीमुकुंद। भिन्नचि पैं।८९। तरी अर्जुना तुझ्या मनीं। त्याग संन्यास दोनी। एकार्थ गमले हें मानीं। मीही साच।९०। इंहीं दोहीं कीर शब्दीं। त्यागचि बोलिजे त्रिशुद्धी। परी कारण एथ भेदीं। येतुलेंची।९१। निपटूनि कर्म सांडिजे। तें सांडणें संन्यास म्हणिजे। फळमात्र का त्यजिजे। तो त्याग गा।९२। तरी कोणा कर्माचे फळ। सांडिजे कोण कर्म केवळ। हेंही सांगों विवळ। चित्र देईं।९३। तरी आपैसी दांगें डोंगर। झाडाळीं विती अपार। तैसें लांबें राजागर। नुठिती ते।९४। न पेरितां सैंघ तृणें। उठती तैसें साळीचें होणें। नाहीं गा राबाउणें। जियापरी।९५। का अंग जाहालें सहजें। परी लेणें उद्यमें कीजे। नदी आपैसी आपादिजे। विहिरी जेवीं।९६। तैसें नित्यनैमित्तिक। कर्म होय स्वाभाविक। परी न कामितां कामिक। न निफजे।९७।

श्रीभगवानुवाचः– काम्यानां कर्मणां न्यासं संन्यासं कवयो विदुः।
सर्वकर्मफलत्यागं प्राहुस्त्यागं विचक्षणाः।२।

का कामनेचेनि दळवाडें। जें उभारावया घडे। अश्वमेधादिक फुडे। याग जेथ।९८। वापी कूप आराम। अग्रहारें हन महाग्राम। आणीकही नानासंभ्रम। व्रतांचे ते।९९। ऐसें इष्टापूर्त सकळ। जया कामना एक मूळ। जें केलें भोगवी फळ। बांधोनियां।१००। देहाचिया गांवा आलिया। जन्ममृत्यूचिया साहळ्या। ना म्हणो नये धनंजया। जियापरी।१। का ललाटींचें लिहिलें। न मोडे गा कांहीं केलें। काळेगोरेपणा धुतलें। फिटों नेणें।२। केलें काम्य कर्म तैसें। फळ भोगावया धरणें बैसे। न फोडितां ऋण जैसें। वोसंडिना।३। का कामनाही न करितां। अवसांत घडे पांडुसुता। तरी वायकांड जुंझतां। लागें जैसें।४। गुळ नेणतां तोंडीं। घातला देचि गोडी। आगी मानूनि राखोंडी। चेपिला पोळीं।५। काम्यकर्मी हे एक। सामर्थ्य आथी स्वाभाविक। म्हणौनि नको कौतुक। मुमुक्षू एथ।६। किंबहुना पार्था ऐसें। जें काम्य कर्म गा असे। तें त्यजिजे विष जैसे। वोकूनियां।७। मग तया त्यागातें जगीं। संन्यास ऐसया भंगीं। बोलिजे अंतरंगीं। सर्वद्रष्टा।८। हें काम्य कर्म सांडणें। तें कामनेतेंचि उपडणें। द्रव्यत्यागें दवडणें। भय जैसें।९। आणि सोमसूर्यग्रहणें। येऊनि करिती प्रार्वणें। कां मातापितरमरणें। अंकित जे दिवस।११०। अथवा अतिथी हन पावे। हें

ऐसैसें पडे जें करावें। तें तें कर्म जाणावें। नैमित्तिक गा।११। वार्षिया शोभे गगन। वसंतें दुणावे वन। देहा श्रृंगारी यौवन। दशा जैसी।१२। कां सोमकांत सोमें पघळे। सूर्यें फांकती कमळें। एथ असतेच पाल्हाळे। आन नये।१३। तैसें नित्य जें का कर्म। तें निमित्ताचे लाहे नियम। एथ उंचावे तेणें नाम। नैमित्तिक होय।१४। आणि सायंप्रातर्मध्याह्नीं। जें कां करणीय प्रतिदिनीं। परी दृष्टी जैसी लोचनीं। अधिक नोहे।१५। कां नापादितां गती। चरणीं जैसी आथी। नातरी तें दिप्ती। दीपबिंबीं।१६। वास नेदिता जैसें। चंदनीं सौरभ्य असे। अधिकाराचें तैसें। रूपचि जें।१७। नित्य कर्म ऐसें जनीं। पार्था बोलिजे तें मनीं। एवं नित्य नैमित्तिक दोन्हीं। दाविलीं तुज।१८। हेंचि नित्यनैमित्तिक। अनुष्ठेय आवश्यक। म्हणौनि म्हणों पाहती एक। वांझ ययातें।१९। परी भोजनीं जैसें होये। तृप्ती लाभे भूक जाये। तैसें नित्य नैमित्तिकीं आहे। सर्वांगीं फळ।१२०। कीड आगिठां पडे। तरी मळ तुटे वानी चढे। जया कर्म तया सांगडें। फळ जाणावें।२१। जे प्रत्यवाय तंव गळे। स्वाधिकार बहुवें उजळे। तेथ हातोफळिया मिळे। सद्‌गतीसी।२२। येवढेवरी ढिसाळ। नित्यनैमित्तिकीं आहे फळ। परी तें त्यजिजे मूळ–। नक्षत्रीं जैसें।२३। लता पिके आघवी। तंव चूत बांधे पालवीं। मग हात न लावित माधवीं। सोडूनि घाली।२४। तैसी नोलांडिता कर्मरेखा। चित्त दीजे नित्यनैमित्तिकां। पाठी फळा कीजे अशेखा। वांतिचियेवानी।२५। यया कर्मफळत्यागातें। त्याग म्हणती पैं जाणतें। एवं त्यागसंन्यास तूतें। परिसविलें।२६। हा संन्यास जैं संभवे। तैं काम्य बाधूं न पावे। निषिद्ध तंव स्वभावें। निषिद्धें गेलें।२७। आणि नित्यादिक जें असे। तें येणें फळत्यागें नासे। शिर लोटलिया जैसें। येर आंग।२८। मग सस्य फळपाकांत। तैसें निमालिया कर्मजात। आत्मज्ञान गिंवसित। अपैसें ये।२९। ऐसिया निगुती दोनी। त्यागसंन्यास अनुष्ठानीं। पडलें गा आत्मज्ञानीं। बांधती पाट।१३०। नातरी हे निगुती चुके। मग त्याग कीजे हाततुकें। तें कांहीं न त्यजे अधिकें। गोवींचि पडे।३१। जें औषध व्याधी अनोळख। तें घेतलिया परते विख। का अन्न न मानितां भूक। न मारी काय?।३२। म्हणोनि त्याज्य जें नोहे। तेथ त्यागातें न सुवावें। त्याज्यालागीं नोहावें। लोभपर।३३। चुकलिया त्यागाचें वेझें। केला सर्वत्यागही होय वोझें। निषिद्धें त्या सर्वत्र जुंझे। वीतराग तो।३४।

> त्याज्यं दोषवदित्येके कर्म प्राहुर्मनीषिणः।
> यज्ञदानतपःकर्म न त्याज्यमिति चापरे।३।

एकां फळत्याग न ठाके। ते कर्मातें म्हणती बंधकें। जैसें आपण नग्न भांडकें। जगातें म्हणें।३५। का जिव्हालंपट रोगिया। अन्नें दूषी धनंजया। आंगा न रुसे कोढिया। मासियां कोपे।३६। तैसें फळकाम दुर्बळ। म्हणती कर्मचि किडाळ। मग निर्णय देती केवळ। त्यजावें ऐसा।३७। एक म्हणती यागादिक। करावेंचि आवश्यक। जे यावांचूनि शोधक। आन नसे।३८। मनशुद्धीच्या मार्गीं। जैं विजयी व्हावें वेगीं। तैं कर्मसबळालागीं। आळस न कीजे।३९। भांगार आथी शोधावें। तरी आगी जेवीं नुबगावें। का दर्पणालागीं सांचावें। अधिक रज।१४०। नाना वस्त्रें चोख होआवी। ऐसें आथीं जरी जीवीं। तरी संवदणी न मानावी। मलिन जैसी।४१। तैसीं कर्में क्लेशकारें। म्हणोनि न न्यावीं अव्हेरें। कां अन्न लाभें अरुवारें। रांधितियेउणे ?।४२। इंहीं इंहीं गा शब्दीं। एक कर्मीं बांधती बुद्धी। ऐसा त्याग विसंवादी। पडोनि ठेला।४३। तरी विसंवाद तो फिटें। त्यागाचा निश्चय भेटे। तैसें बोलों गोमटें। अवधान देईं।४४।

> निश्चयं शृणु मे तत्र त्यागे भरतसत्तम।
> त्यागो हि पुरुषव्याघ्र त्रिविधः संप्रकीर्तितः।४।

तरी त्याग एथें पांडवा। त्रिविध पैं जाणावा। तया त्रिविधाही बरवा। विभाग करूं।४५। त्यागाचे तीन्ही प्रकार। कीजती जरी गोचर। तरी तूं इत्यर्थाचें सार। इतुलें जाण।४६। मज सर्वज्ञाचियेही बुद्धी। जें अलोट माने त्रिशुद्धि। निश्चयतत्त्व तें आधीं। अवधारीं पां।४७। तरी आपुलिये सोडवणे। जो मुमुक्षू जागों म्हणे। तया सर्वस्वें करणें। हेंचि एक।४८।

> यज्ञदानतपःकर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत्।
> यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम्।५।

जियें यज्ञदानतपादिकें। इयें कर्में आवश्यकें। तियें न सांडावीं पांथिकें। पाउकें जैसीं।४९। हरपलें न देखिजे। तंव तयाचा मागू न सांडिजे। का तृप्त न होतां न लोटिजे। भाणें जेवीं।१५०। नाव थडी न पवतां। न सांडिजे केळी न फळतां। का ठेविलें न दिसतां। दीप जैसा।५१। तैसीं आत्मज्ञानाविखीं। जंव निश्चिती नाहीं निकी। तंव नोहावें यागादिकीं। उदासीन।५२। तरी स्वाधिकारानुरूपें। तियें यज्ञदानें तपें। अनुष्ठावींचि साक्षेपें। अधिकेंवर। जें चालणें वेगावत जाये। तो वेग बैसावयाचि होये। तैसा कर्मातिशय आहे। नैष्कर्म्यालागीं। अधिकें जंव जंव औषधी। सेवायाची मांडी बांधी। तंव तंव मुकिजे व्याधी। तयाचिये।५५। तैसी कर्में हातोपातीं। जैं किजती यथानिगुती। तैं रजतमें झडती। झाडा देऊनि।५६। का पाठोवाटीं पुटें। भांगारा खार देणें घटे। तैं कीड झडकरी तुटे। निर्व्याज होय।५७। तैसें

निष्ठा केलें कर्म। तें सांडी करूनि रजतम। सत्त्वशुद्धीचे धाम। डोळां दावी।५८। म्हणौनिया धनंजया। सत्त्वशुद्धी गिंवसितया। तीर्थांचिया सावाया। आली कर्में।५९। तीर्थें बाह्यमळ क्षाळें। कर्में अभ्यंतर उजळे। एवं तीर्थें जाण निर्मळे। सत्कर्मेंची।१६०। तृषार्ता मरुदेशीं। झळे अमृतें वोळली जैसी। कीं अंधालागीं डोळ्यांसीं। सूर्य आला।६१। बुडतया नदीच धाविन्नली। पडतया पृथ्वीच कळवळिली। निमतया मृत्युनें दिधली। आयुष्यवृद्धी।६२। कर्मेंची कर्मबद्धता। मुमुक्षू सोडविले पांडुसुता। जैसा रसरीति मरतां। राखिला विषें।६३। तैसीं एके हातवटिया। कर्में कीजती धनंजया। बंधकेंचि सोडवावया। मुख्यें होती।६४। आतां तेचि हातवटी। तुज सांगों गोमटी। जया कर्मांते किरीटी। कर्मचि रुसे।६५।

एतान्यपि तु कर्माणि संगं त्यक्त्वा फलानि च।
कर्तव्यानीति मे पार्थ निश्चितं मतमुत्तमम्।६।

तरी महायागप्रमुखें। कर्में निफजतांही अचुकें। कर्तेपणाचें न ठाके। फुंजणें आंगीं।६६। जो मोलें तीर्था जाये। तया मी यात्रा करीत आहें। ऐसिये श्लाघ्यतेचा नोहे। तोष जेवीं।६७। का मुद्रा समर्थाचिया। जो एकवटू झोंबे राया। तो मी जिणतां ऐसिया। न येचि गर्वा।६८। जो कांसे लागोनि तरे। तया पोहती उर्मी नुरे। पुरोहित नाविष्करे। दातेपणें।६९। तैसें कर्तृत्व अहंकारें। नेघोनि यथाअवसरें। कृत्यजातांचे मोहरें। सारीजती।१७०। केल्या कर्मा पांडवा। जो आथी फळाचा यावा। तया मोहरा हों नेदावा। मनोरथ।७१। आधींचि फळीं आस तुटिया। कर्में आरंभावी धनंजया। परावें बाळ धाया। पाहिजे जैसें।७२। पिंपरुवांचिया आशा। न शिंपिजे पिंपळ जैसा। तैसिया फळनिराशा। कीजती कर्में।७३। सांडूनि दुधाची टकळी। गोंवारी गांवधेनु वेंटाळी। किंबहुना कर्मफळीं। तैसें कीजे।७४। ऐसी हे हातवटी। घेऊनि जे क्रिया उठी। आपणा आपुलिया गांठी। लाहेचि तो।७५। म्हणौनि फळीं लाग। सांडोनि देहसंग। कर्में करावी हा चांग। निरोप माझा।७६। जो जीवबंधें शिणला। सुटके जाचे आपला। तेणें पुढतपुढतीं या बोला। आन न कीजे।७७।

नियतस्य तु संन्यासः कर्मणो नोपपद्यते।
मोहात्तस्य परित्यागस्तामसः परिकीर्तितः।७।

नातरी आंधाराचेनि रोखें। जैसी डोळां रोविजती नखें। तैसा कर्मद्वेषें अशेखें। कर्मेंची सांडी।७८। तयाचें कर्म सांडणें। तें तामस मी म्हणे। शिसाराचे रागें लावणें। शिसचि जैसें।७९। हां गा मार्ग दुवाड होये। तरी निस्तरितील पाये। कीं तेचि खांडणें आहे। मार्गापराधें?।१८०। भुकेलियापुढें अन्न। हो का भलतैसें ऊन्हं। तरी बुद्धी न घेतां लंघन। भाणे पापरां हाल्या।८१। तैसा कर्माचा बाध कर्में। निस्तरिजे करितेनि वर्में। हें तामस नेणें भ्रमें। माजविला।८२। कीं स्वभावें आले विभागा। तें कर्मचि वोसंडी पैं गा। तरी झणें आतळा त्यागा। तामसा तया।८३।

दुःखमित्येव यत्कर्म कायक्लेशभयात्त्यजेत्।
स कृत्वा राजसं त्यागं नैव त्यागफलं लभेत्।८।

अथवा स्वाधिकार बुझे। आपलें विहितही सुझे। परी करितया उबजे। निबरपणा।८४। जे कर्माची ऐलीकड। नावेक दिसे दुवाड। जे वाहतिये वेळे जड। शिदोरी जैसी।८५। जैसा निंब जिभे कडवट। हिरडा पहिलें तुरट। तैसा कर्म ऐल सेवट। खणुवाळा होय।८६। का धेनू दुवाड शिंग। शेवतीये अडव आंग। भोजनसुख माहाग। पाक करितां।८७। तैसें पुढतपुढतीं कर्म। आरंभीच अतिविषम। म्हणोनि तो तें श्रम। करितां मानी।८८। येऱ्हवीं विहितत्वें मांडी। परी घालितां आसुरवाडी। तेथ पोळला ऐसा सांडी। आदरिलेंही।८९। म्हणे वस्तु देहासारिखी। आली बहुतीं भाग्यविशेखीं। मा जाचूं कां कर्मादिकीं। पापिया जैसा?।१९०। केलें कर्मीं जे द्यावें। तें झणें मज होआवें। आजी भोगूं ना बरवे। हातींचे भोग।९१। ऐसा शरीराचाचिया क्लेशा। भेणें कर्में वीरेशा। सांडी तो परियेसा। राजस त्याग।९२। येऱ्हवीं तेथही कर्म सांडे। परी तया त्यागफळ न जोडे। जैसें उतलें आगीं पडे। तें न लगेचि होमा।९३। का बुडोनि प्राण गेले। ते अर्धोदकीं निमाले। हें म्हणों नये जाहलें। दुर्मरणची।९४। तैसें देहाचेनि लोभे। जेणें कर्मा पाणी सुभे। तेणें साच न लभे। त्यागाचें फळ।९५। किंबहुना आपुलें। जैं ज्ञान होय उदया आलें। तैं नक्षत्रातें पाहले। गिळी जैसें।९६। तैशा सकारण क्रिया। हारपती धनंजया। तो कर्मत्याग ये जया। मोक्षफळासी।९७। तें मोक्षफळ अज्ञाना। त्यागिया नाहीं अर्जुना। म्हणौनि तो त्याग न माना। राजस तो।९८। तरी कोणें पां एथ त्यागें। तें मोक्षफळ घर रिघे। हेंही आइक प्रसंगें। बोलिजेल।९९।

कार्यमित्येव यत्कर्म नियतं क्रियतेऽर्जुन।

संगं त्यक्त्वा फलं चैव स त्यागः सात्त्विको मतः ।६।

तरी स्वाधिकाराचेनि नांवें। जें वांटिया आलें स्वभावें। तें आचरे विधिगौरवें। शृंगारोनि ।२००। परी हें मी करित असे। ऐसा आठव त्यजी मानसें। तैसेंचि पाणी दे आशे। फळाचिये ।१। पैं अवज्ञा आणि कामना। मातेच्या ठायीं अर्जुना। केलिया दोनी पतना। कारण होती ।२। तरी दोनी यें त्यजावी। मग माताचि ते भजावी। वांचूनि मुखालागीं वाळावी। गायचि सगळी? ।३। आवडतियेही फळीं। असारें साली आंठोळी। त्यासाठीं अवगळी। फळातें कोण्ही ? ।४। तैसा कर्तृत्वाचा मद। आणि कर्मफळाचा आस्वाद। या दोहींचें नांव बंध। कर्माचा कीं ।५। तरी या दोहींच्याविखीं। जैसा बाप नातळे लेकी। तैसा हों न शके दुःखी। विहिता क्रिया ।६। हा तों त्यागतरुवर। जो गा मोक्षफळें ये थोर। सात्त्विक ऐसा डगर। यासींच जगीं ।७। आतां जाळूनि बीज जैसें। झाडा कीजे निर्वंशें। फळ त्यागूनि कर्म तैसें। त्यजिलें जेणें ।८। तया लागतखेंवो परिसीं। धातूचि गंधकाळिमा जैसी। जाती रजतमें तैसीं। तुटलीं दोन्हीं ।९। मग सत्त्वें चोखाळें। उघडती आत्मबोधाचे डोळें। तेथ मृगांबु सांजवेळे। होय जैसे ।२१०। तैसा बुद्धयादिकांपुढां। असतचि विश्वाभास येवढा। तो न देखे कवणीकडां। आकाश जैसें ।११।

न द्वेष्ट्यकुशलं कर्म कुशले नानुषज्जते।
त्यागी सत्त्वसमाविष्टो मेधावी छिन्नसंशयः ।१०।

आणि प्राचीनचेनि बळें। आलीं कृत्यें कुशलाकुशलें। तियें व्योमआंगीं आभाळें। विराली जैसीं ।१२। तैसीं तयाचिये दिठी। कर्में चोखाळलीं किरीटी। म्हणोनि सुखदुःखीं उठी। पडेना तो ।१३। तेणें शुभकर्म जाणावें। मग तें हर्षें करावें। का अशुभालागीं व्हावें। द्वेषिया ना ।१४। तरी इया विषयींचा काहीं। तया एकही संदेह नाहीं। जैसा स्वप्नाच्या ठायीं। जागिन्नलिया ।१५। म्हणऊनि कर्म आणि कर्ता। या द्वैतभावाची वार्ता। नेणे तो पांडुसुता। सात्त्विक त्याग ।१६। ऐसेनि कर्में पार्था। त्यजिलीं त्यजिती सर्वथा। अधिकें बांधती अन्यथा। सांडिली तरी ।१७।

न हि देहभृता शक्यं त्यक्तुं कर्माण्यशेषतः।
यस्तु कर्मफलत्यागी स त्यागीत्यभिधीयते ।११।

आणि हां गा सव्यसाची। मूर्ति लाहोनि देहाची। खंती करिती कर्माची। ते गांवढे गा ।१८। मृत्तिकेचा वीट। घेऊनि काय करील घट। केउतें तंतू पट। सांडील तो? ।१९। तेवींचि वह्नित्व आंगीं। आणि उबे उबगणें आगी?। कीं तो दीप प्रभेलागीं। द्वेष करील काई? ।२२०। हिंग त्रासला घाणी। तरी कैचें सुगंधत्व आणी?। द्रव सांडूनि पाणी। कें राहे तें? ।२१। तैसा शरीराचेनि आभासें। नांदत जंव असे। तंव कर्मत्यागाचें पिसें। काइसें तरी ।२२। आपण लाविजे टिळा। म्हणोनि पुसों ये अवलीळां। मा घाली फेडी निडळा। कां करूं ये गा ।२३। तैसें विहित स्वयें आदरिलें। म्हणोनि त्यजूं ये त्यजिलें। परी कर्मचि देह आतलें। तें का सांडील गा? ।२४। जें श्वासोच्छ्वासवरी। होत निजेलियाही वरी। कांहीं करणेंचि परी। होती जयाची ।२५। या शरीराचेनि मिसकें। कर्मचि लागलें असिकें। जिता मेलया न ठाके। इया रिती ।२६। यया कर्मातें सांडिती परी। एकीचि ते अवधारीं। जे करितां न जाइजे हारी। फळाशेचिये ।२७। कर्मफळ ईश्वरीं अर्पे। तत्प्रसादें बोध उद्दीपे। तेथ रज्जुज्ञान लोपे। व्याळशंका ।२८। तेणें आत्मबोधें तैसें। अविद्येसीं कर्म नाशे। पार्था त्यजिजे जैं ऐसें। तैं त्यजिलें होय ।२९। म्हणोनि इयापरी जगीं। कर्में त्यजी तो महात्यागी। येर मूर्छने नांव रोगीं। विश्रांती जैसी ।२३०। तैसा कर्मीं शिणे एकीं। तो विसांवो पाहे आणिकी। दांडेयाचे घाय बुकी। धाडणें जैसें ।३१। परी हें असो पुढती। तोचि त्यागी त्रिजगतीं। तेणें फलत्यागें निष्कृती। नेले कर्म ।३२।

अनिष्टमिष्टं मिश्रं च त्रिविधं कर्मणः फलम्।
भवत्यत्यागिनां प्रेत्य न तु संन्यासिनां क्वचित् ।१२।

येऱ्हवीं तरी धनंजया। त्रिविधा कर्मफळा गा यया। समर्थ ते कीं भोगावया। जे न सांडितीचि आशा ।३३। आपणचि विऊनि दुहिता। कीं न मम म्हणे पिता। तो सुटे कीं प्रतिग्रहिता। जांवाई शिरके ।३४। विषाचे आगरही वाहती। ते विकितां सुटले जिती। येर निमाले जे घेती। वेंचोनि मोलें ।३५। तैसें कर्ता कर्म करूं। अकर्ता फळाशा न धरूं। एथ न शके आवरूं। दोहींतें कर्म ।३६। वाटे पिकलिया वृक्षाचें। फळ अपेक्षी तयाचें। तेवीं साधारण कर्माचें। फळ घेतया ।३७। परी करूनि फळ नेघे। तो जगाच्या कामीं न रिघे। जे त्रिविध जग आघवें। कर्मफळ हें ।३८। देव मनुष्य सीावर। यया नांव जगडंबर। आणि हे तंव तीन्ही प्रकार। कर्मफळाचे ।३९। तेंचि एक गा अनिष्ट। एक तें केवळ इष्ट। आणि एक इष्टानिष्ट। त्रिविध ऐसें ।२४०। परी विषयमता बुद्धी। आंगीं सूनि अविधी। प्रवर्तती जे निषिद्धीं। कुव्यापरीं ।४१। तेथ कृमि कीट लोष्ट। हें देह लाहती निकृष्ट। तया नाम तें अनिष्ट। कर्मफळ ।४२। का स्वधर्मा मान देतां। स्वाधिकार पुढां सूतां। सुकृत कीजे पुसतां। आम्नायातें ।४३। तैं

इंद्रादिक देवांची। देहें लाहिजती सव्यसाची। तया कर्मफळा इष्टाची। प्रसिद्धी गा।४४। आणि गोड आंबट मिळे। तेथ रसांतर फरसाळें। उठी दोहीं वेगळें। दोहीं जिणतें।४५। रेचकचि योगवशें। होय स्तंभावयादोषें। तेवीं सत्यासत्य समरसें। सत्यासत्यचि जिणिजे।४६। म्हणोनि समभावें शुभाशुभें। मिळोनि अनुष्ठानाचें उभें। तेणें मनुष्यत्व लाभे। तें मिश्र फळ।४७। ऐसें त्रिविध यया भागीं। कर्मफळ मांडलेसें जगीं। हें न सांडी तयां भोगीं। जे सूदले आशा।४८। जेथ जिव्हेचा हात फांटे। तंव जेवितां वाटे गोमटें। मग परिणामीं शेवटें। अवश्य मरण।४९। संवचोर मैत्री चांग। तंव न पविजे तें दांग। सामान्या भली आंग। न शिवे तंव।२५०। तैसी कर्में करितां शरीरीं। लाहती महत्त्वाची फरारी। पाठीं निधन एकसरी। पावती फळें।५१। जैसा समर्थ आणि ऋणिया। मार्गीं आला बाइणिया। न लोटे तैसा प्राणिया। पडे तो भोग।५२। मग कणिसौनि कण झडे। तो विरूढला कणिसा चढे। पुढती भूमी पडे। पुढती उठी।५३। तैसें भोगीं जें फळ होय। तें फळांतरें वीत जाय। चालतां पायें पाय। जिणिजे जैसा।५४। उताराचिये सांगडी। ठाके ते ऐलीच थडी। तेवीं न मुकीजती वोढी। भोग्याचिये।५५। पैं साध्यसाधनप्रकारें। फळभोग तो पसरे। एवं गोंविले संसारें। अत्यागी ते।५६। येरवीं जातिपुष्पांचे विकसणें। त्याचि नाम जैसें सुकणें। तैसें कर्ममिषें न करणें। केलें जिंहीं।५७। बीजचि वरोसि वेंचे। तेथ वाढती कुळवाडी खांचे। तेवीं फळत्यागें कर्माचें। सारिलें काम।५८। तें सत्त्वशुद्धी साहाकारें। गुरुकृपामृततुषारें। सासिन्नलेनि वोसरे। द्वैतदैन्य।५९। तेव्हां जगदाभासामिषें। स्फुरे ते त्रिविध फळ नाशे। एथ भोक्ता भोग्य आपैसें। निमालें हें।२६०। घडे ज्ञानप्रधान ऐसा। संन्यास जया वीरेशा। तेचि फळभोग सोसा। मुकले गा।६१। आणि येणें कीर संन्यासें। जैं आत्मरूपीं दिठी पैसे। तैं कर्म एक ऐसें। देखणें आहे?।६२। पडोनि गेलिया भिंती। चित्रांची केवळ होय माती। का पाहालेया रातीं। अंधारे उरे?।६३। जैं रूपचि नाहीं उभें। तैं छाया काह्याची शोभे। दर्पणेंवीण बिंबे। वदन कें पां?।६४। फिटलिया निद्रेचा ठाव। कैंचा स्वप्नांसी प्रस्ताव। मग सत्य कीं तें वाव। कोण म्हणे?।६५। तैंसे गा संन्यासें येणें। तंव अविद्येसीचि नाहीं जिणें। मा तियेचें कार्य कोणें। घेपेदिपे।६६। म्हणौनि संन्यासिये पाहीं। कर्माची गोठी कीजेल काई?। परी अविद्या आपुल्या देहीं। आहे जैं का।६७।कर्तेपणाचेनि थांवें। आत्मा शुभाशुभीं धांवे। दृष्टि भेदाचिये राणिवे। रचलीसे जैं।६८। तैं तरी गा सुवर्मा। बिजावळी आत्मया कर्मा। अपाडे जैसी पश्चिमा। पूर्वेसि कां।६९। ना तरी आकाशा का आभाळा। सूर्या आणि मृगजळा। बिजावळी भूतळां। वायूसि जैसीं।२७०। पांघरोनि नईचे उदक। असे नईमाजी खडक। परी जाणिजे का वेगळिक। कोडीची ते।७१। हो का उदकाजवळी। परी सिनीचि ते बाबुळी। का संगास्तव काजळी। दीप म्हणो ये?।७२। जरी चंद्रीं जाला कलंक। तरी चंद्रेसीं नव्हे एक। आहे दृष्टी डोळ्यां विवेक। अपाड जेतुला।७३। नाना वाटा–वाटे जातया। वोघा वोघीं वाहतया। आरसां आरसां पाहातया। अपाड जेतुला।७४। पार्था गा तेतुलेनि मानें। आत्मेनिसीं कर्म सिनें। परी घेवविजे अज्ञानें। तें कीर ऐसें।७५। विकाशें रवीतें उपजवी। द्रुती अलीकरवी भोगवी। ते सरोवरी का बरवी। अब्जिणी जैसी।७६। पुढतपुढती आत्मक्रिया। अन्यकारणकाचि तैशिया। करूं पांचांही तया। कारणां रूप।७७।

पंचैतानि महाबाहो कारणानि निबोध मे।
सांख्ये कृतांते प्रोक्तानि सिद्धये सर्वकर्मणाम्।१३।

आणि पांचही कारणे तिये। तूंही जाणसी विपायें। जे शास्त्रें उभऊनि बाहे। बोलती जयांतें।७८। वेदरायाचिया राजधानी। सांख्यवेदांताच्या भवनीं। निरूपणाच्या निशाणध्वनीं। गर्जती जियें।७९। जे सर्वकर्मसिद्धीलागीं। इयेंचि मुदलें हो जगीं। तेथ न सुवावा अभंगी। आत्मराज।२८०। इया बोलाचे डांगुरटी। तियें प्रसिद्धी आली किरीटी। म्हणौनि तुझ्या हन कर्णपुटीं। वसोत का जे।८१। आणि मुखांतरी आइकिजे। तैसें कायसें हें ओझें। मी चिद्रत्न तुझे। असतां हातीं।८२। दर्पण पुढां मांडलेया। कां लोकांचिया डोळयां। मान द्यावा पहावया। आपुलें निकें?।८३। भक्त जैसेनि जेथ पाहे। तेथ तें तेंचि होत जाये। तो मी तुझे जाहालो आहे। खेळणें आजी।८४। ऐसें हें प्रीतीचेनि वेगें। देव बोलता से नेघे। तंव आनंदामाजीं आंगें। विरत पार्थ।८५। चांदिणियाचा पडिभर। होतां सोमकांताचा डोंगर। विघरोनि सरोवर। हो पाहे जैसा।८६। तैसें सुख आणि अनुभूती। या भावांची मोडूनि भिंती। आतलें अर्जुनाकृती। सुखचि जेथ।८७। तेथचि समर्थ म्हणौनि देवा। अवकाश जाहाला आठवा। मग बुडतयाचा धांवा। जीवें केला।८८। अर्जुना येसणें धेंडें। प्रज्ञापसरेंसीं बुडे। आलें भरतें एवढें। तें सावरूनि।८९। देव म्हणे हां गा पार्था। तूं आपणपें देख सर्वथा। तंव सांवरूनि येरें माथा। तुकियेला।२९०। म्हणे जाणसी दातारा। मी तुजसी व्यक्ति शेजारा। उबगला आदीं एकाहारा। येवों पाहें।९१। तयाही हा ऐसा। लोभें देतसां जरी लालसा। तरी कां जी घालीतसा। आड आड जीवा ?।९२। तेथ श्रीकृष्ण म्हणती निकें। अद्यापि नाहीं मा ठाउकें। वेड्या चंद्रा आणि चंद्रिके। न मिळणें आहे ?।९३। आणि हाही बोलोनि भावो। तुज दाऊं आम्ही भिवो। जे रुसतां बांधे थावो। तें प्रेम गा हें।९४। एथ एकमेकांचिये खुणें। विसंवाद तंवचि जिणें। म्हणौनि असो हे बोलणें। इयेविषयींचे।९५। मग कसकसें तें आतां। बोलत होतो पांडुसुता। सर्व कर्मा भिन्नता। आत्मेनिसीं।९६। तंव अर्जुन म्हणे देवें। माझिये मनींचेंचि स्वभावें। प्रस्ताविले बरवें। प्रमेय तें जी।९७। जें सकळ कर्मांचे बीज। कारणपंचक तुज। सांगेन ऐसी पैज। घेतली कां।९८। आणि आत्मया एथ कांहीं। सर्वथा लाग

नाहीं। हें पुढारलासि तें देईं। लाहाणें माझें।९९। यया बोला विश्वेशें। म्हणितलें तोषें बहुवसें। इयेविषयीं धरणें बैसे। ऐसें कें जोडे?।३००। तरी अर्जुना निरूपिजेल। तें कीर भाषेआंतूल। परी मेचू ये होइजेल। ऋणिया तुज।१। तंव अर्जुन म्हणे देवो। काई विसरले मागील भावो। इये गोठी कीं राखत आहों। मीतूंपण जी ?।२। एथ श्रीकृष्ण म्हणती हो का। आतां अवधानाचा पसर निका। करूनियां आइका। पुढारलों तें।३। तरी सत्यचि गा धनुर्धरा। सर्व कर्मांचा उभारा। होतसे बाहीरबाहिरा। करणें पांचें।४। आणि पंजकारण दळवाडें। जिहीं कर्माकार मांडे। ते हेतु तंव उघडे। पांच आथी।५। एर आत्मतत्त्व उदासीन। तें ना हेतु ना उपादान। ना तें अंगें करी संवाहन। कर्मसिद्धिचें।६। तेथ शुभाशुभीं अशीं। निफजती कर्मे ऐसीं। राती देवो आकाशीं। जियापरी।७। तोय तेज धूम। ययां वायूसीं संगम। जालिया होय अभ्रागम। व्योम तें नेणें।८। नाना काष्ठीं नाव मिळे। ते नावाडेनि चळे। चालविजे अनिळें। उदक ते साक्षी।९। कां कवणें एकें पिंडे। वेंचितां अवतरे भांडें। मग भंवडिजे दंडें। भ्रमे चक्र।३१०। आणि कर्तृत्व कुलालाचें। तेथ काय तें पृथ्वीयेचें। आधारावांचूनि वेंचे। विचारीं पां ?।११। हेंही असो लोकांचिया। राहाटी होतां आघविया। कोण काम सवितया। आंगा आलें ?।१२। तैसें पांच हेतू मिळणी। पांचेचि इंहीं कारणीं। किजे कर्मलतांची लावणी। आत्मा सिना।१३। आतां तेंचि वेगळाली। पांचही विवंचूं गा भली। तुकोनि घेतलीं। मोतियें जैसीं।१४।

अधिष्ठानं तथा कर्ता करणं च पृथग्विधम्।
विविधा च पृथक् चेष्टा दैवं चैवात्र पंचमम्।१४।

तैसीं यथालक्षणें। आइकें पांच कारणें। तरी देह हें मी म्हणें। पहिलें एथ।१५। ययातें अधिष्ठान ऐसें। म्हणिजे तें याचि दोषें। जे स्वभोग्येंसीं वसे। भोक्ता येथ।१६। इंद्रियांच्या दाहें हातीं। जाचोनि देवोराती। सुखदुःखें प्रकृती। जोडिजती जियें।१७। तियें भोगावया पुरुखा। आन ठावोचि नाहीं देखा। म्हणोनि अधिष्ठानभाखा। बोलिजे देह।१८। हें चोविसाही तत्त्वांचे। कुटुंबघरवस्तीचें। तुटे बंधमोक्षाचें। गुंथाडें एथ।१९। किंबहुना अवस्थात्रया। हें अधिष्ठान धनंजया। म्हणोनि देहा यया। हेंचि नाम।३२०। आणि कर्ता हें दुजें। कर्माचे कारण जाणिजे। प्रतिबिंब म्हणिजे। चैतन्याचें जें।२१। आकाशचि वर्षे नीर। तें तळवटीं बांधे नाडर। मग बिंबोनि तदाकार। होय जेवीं।२२। कां निद्राभरें बहुवें। राया रायपण ठाउवें नव्हे। मग स्वप्नींचिये सामावे। रंकपणीं।२३। तैसें आपुलेनि विसरें। चैतन्यचि देहाकारें। आभासोनि आविष्करें। देहपणें जें।२४। जया विचाराच्या देशीं। प्रसिद्धि गा जीव ऐसी। जेणें भाष केली देहेंसी। आघवांविषयीं।२५। प्रकृती करी कर्मे। तो म्यां केलीं म्हणे भ्रमें। येथ कर्ता येणें नामें। बोलिजे जीव।२६। मग पातेयांच्या केशीं। एकीच उठती दिठी जैसी। मोकळीच वरी ऐसी। चिरीव गमे।२७। का घराआंतूल एक। दीपाचा अवलोक। गवाक्षभेदें अनेक। आवडे जेवी।२८। का एकचि पुरुष जैसा। अनुसरत नवां रसां। नवविध ऐसा। आवडों लागे।२९। तेवीं बुद्धीचें एक जाणणें। श्रोत्रादिभेदें येणें। बाहेरी इंद्रियपणें। फांके जें का।३३०। तें पृथग्विध करण। कर्माचे इया कारण। तिसरें गा जाण। नृपनंदना।३१। आणि पूर्वपश्चिमवाहणी। निघालिया वोघाचिया मिळणी। होय नदी नद पाणी। एकचि जेवीं।३२। तैसीं क्रियाशक्ति पवनीं। असे जे अनपायिनी। ते पडिली नाना स्थानीं। नाना होय। जैं वाचे करी येणें। तैं तेचि होय बोलणें। हाता आली तरी घेणें–। देणें होय।४। अगा चरणाच्या ठायीं। तरी गती तेचि पाहीं। अधोद्वारीं दोहीं क्षरणें तेची।।३५। कंदौनि हृदयवरीं। प्रणवाची उजरी। करितां तेचि शरीरीं। प्राण म्हणिजे।३६। मग उर्ध्वीचिया रिगानिगा। पुढती तेचि शक्ति पैं गा। उदान ऐसिया लिंगा। पात्र जाहाली।३७। अधोरंध्राचेनि वाहें। अपान हे नाम लाहे। व्यापकपणें होये। व्यान तेची।३८। आरोगिलेनि रसें। शरीर भरी सरिसें। आणि न सांडितां असें। सर्वसंधी।३९। ऐसिया इया राहटी। मग तेचि क्रिया पाठीं। समान ऐसी किरीटी। बोलिजे गा।३४०। आणि जांभई शिंक ढेकर। ऐसैसा होतसे व्यापार। नाग कूर्म कृकर। इत्यादि होय।४१। एवं वायूची हे चेष्टा। एकीचि परी सुभटा। वर्तनास्तव पालटां। येतसे जे।४२। ते भेदली वृत्तिपंथें। वायुशक्ती गा एथें। कर्मकारण चौथें। ऐसें जाण।४३। आणि ऋतु बरवा शारदू। शारदीं पुढती चांदू। चंद्रीं जैसा संबंधू। पूर्णिमेचा।४४। का वसंती बरवा आराम। आरामीं प्रियासंगम। संगमीं आगम। उपचारांचा।४५। नाना कमळीं पांडवा। विकास जैसा बरवा। विकासींहि यावा। परागाचा तो।४६। वाचे बरवें कवित्व। कवित्वीं बरवें रसिकत्व। रसिकत्वीं परतत्त्व–। स्पर्श जैसा।४७। तैसी सर्ववृत्तिवैभवी। बुद्धीचि एकली बरवी। बुद्धीही बरव नवी। इंद्रियप्रौढी।४८। इंद्रियप्रौढी मंडळा। शृंगार एकचि निर्मळा। जैं अधिष्ठात्रियां का मेळा। दैवतांचा जो।४९। म्हणूनि चक्षुरादिकी दाहें। इंद्रियां पाठीं स्वानुग्रहें। सूर्यादिकां का आहे। सुरांचें वृंद।३५०। तें देववृंद बरवें। कर्मकारण पांचवें। अर्जुना एथ जाणावें। देव म्हणे।५१। एवं माये तुझिये आयणी। तैसी कर्मजातांची हे खाणी। पंचविध आकर्णी। निरूपिली।५२। आतां हेचि खाणी वाढे। मग कर्माची सृष्टी घडे। जिहीं ते हेतुही उघडे। दाऊं पांचै।५३।

शरीरवाङ्मनोभिर्यतकर्म प्रारभते नरः।

न्याय्यं वा विपरीतं वा पंचैते तस्य हेतवः ।१५।

तरी अवसांत आली माधवी। ते हेतूं होय नवपल्लवी। पल्लव पुष्पकुंज दावी। पुष्प फळांतें ।५४। का वार्षियें आणिजे मेघ। मेघें वृष्टिप्रसंग। वृष्टिसतव भोग। सस्यसुखाचा ।५५। नातरी प्राची अरुणातें विये। अरुणें सूर्योदय होये। सूर्यें सगळा पाहे। दिवस जैसा ।५६। तैसें मन हेतु पांडवा। होय कर्मसंकल्पभावा। तो संकल्प लावी दिवा। वाचेचा गा ।५७। मग वाचेचा तो दिवटा। दावी कृत्यजातांचिया वाटा। तेव्हां कर्ता रिगे कामठां। कर्तृत्वाच्या ।५८। तेथ शरीरादिक दळवाडें। शरीरादिकां हेतूचि घडे। लोहकाम लोखंडें। निर्वाळिजे जैसें ।५९। का तांथुवांचा ताणा। तांथू घालितां वैरणा। तो तंतूचि विचक्षणा। होय पट ।३६०। तैसें मनवाचादेहांचें। कर्म मनादि हेतुचि रचे। रत्नीं घडे रत्नाचें। दळवाडे जेवीं ।६१। एथ शरीरादिकें कारणें। तेचि हेतु केवीं हें कोणें। अपेक्षिजे तरी तेणें। अवधारिजो ।६२। आइका सूर्याचिया प्रकाशा। हेतु कारण सूर्यचि जैसा। का उंसाचें कांडें उंसा। वाढी हेतु ।६३। नाना वाग्देवता वानावी। तैं वाचाची लागे कमवावी। का वेदां वेदेंचि बोलावी। प्रतिष्ठा जेवीं ।६४। तैसें कर्मा शरीरादिकें। कारण हें कीर ठाऊकें। परि हेचि हेतु न चुके। हेंही एथ ।६५। आणि देहादिकीं करणीं। देहादि हेतु मिळणी। होय जया उभारणी। कर्मजातां ।६६। तें शास्त्रार्थें मानियेला। मार्गा अनुसरे धनंजया। तरी न्याय तो न्याया। हेतु होय ।६७। जैसा पर्जन्योदकाचा लोट। विपायें धरी साळींचा पाट। तो जिरे परी अचाट। उपयोग आथी ।६८। कां रोषें निघालें अवचटें। पडिलें द्वारकेचिये वाटे। तें शिणें परी सुनाटें। न वचती पदें ।६९। तैसें हेतुकारणमेळें। उठी कर्म जे आंधळे। तें शास्त्राचे लाहे डोळे। तैं न्याय्य म्हणिपे ।३७०। ना दूध वाढितां ठावो पावे। तंव उतोनि जाय स्वभावें। तोही वेंच परी नव्हे। वेंचिलें तें ।७१। तैसें शास्त्रसाह्येंवीण। केलें नोहे जरी अकारण। तरी लागो कां नागवण। दानलेखीं ? ।७२। अगा बावना वर्णांपरता। कोण मंत्र आहे पांडुसुता। का बावनही नुच्चारितां। जीव आथी ? ।७३। परी मंत्राची कडसणी। जंव नेणिजे कोदंडपाणी। तंव उच्चारफळ वाणी। न पवे जेवीं ।७४। तेवीं कारणहेतुयोगें। जें बिसाट कर्म निगे। तें शास्त्राचिये न लगें। कांसे जंव ।७५। कर्म होतचि असे तेव्हांही। परी तें होणें नव्हे पाहीं। ता अन्याय गा अन्यायीं। हेतु होय ।७६।

तत्रैव सति कर्तारमात्मानं केवलं तु यः।
पश्यत्यकृतबुद्धित्वान्न स पश्यति दुर्मतिः ।१६।

एवं पंचकारणा कर्मा। पांचही हेतु हे सुमहिमा। आतां एथें पाहे पां आत्मा। सांपडला असे ।७७। भातु न होनि रूपें जैसीं। चक्षु रूपातें का प्रकाशी। आत्मा न होनि कर्में तैसी। प्रकटित असे गा ।७८। पैं प्रतिबिंब आरिसा। दोन्ही न होनि वीरेशा। दोहींतें प्रकाशी जैसा। न्याहाळितां तो ।७९। का अहोरात्र सविता। न होनि करी पांडुसुता। तैसा आत्मा कर्म कर्ता। न होनि दावी ।३८०। परी देहाहंभानभुली। जयाची बुद्धी देहींच आतली। तया आत्मविषयीं जाली मध्यरात्रीं गा ।८१। जेणें चैतन्या ईश्वरा ब्रह्मा। देहचि केले परमसीमा। तया आत्मा कर्ता हे प्रमा। अलोट उपजे ।८२। आत्माचि कर्मकर्ता। हाही निश्चय नाहीं तत्त्वतां। देहचि मी कर्मकर्ता। मानितो साच ।८३। जे आत्मा मी कर्मातीत। सर्वकर्मसाक्षीभूत। हे अपुली कंहीं मात। नायकेचि कानीं ।८४। म्हणोनि उपमा आत्मयातें। देहचिवरी मविजे एथें। विचित्र काई रात्रि दिवसांतें। डुडुळ न करी? ।८५। पैं जेणें आकाशींचा कंहीं। सत्य सूर्य देखिला नाहीं। तो थिल्लरीचें बिंब काई। मानू न लाहे? ।८६। थिल्लराचेनि जालेपणें। सूर्यासि आणी होणें। त्याच्या नाशीं नाशणें। कंपे कंप ।८७। आणि निद्रिस्ता चेवो न ये। तंव स्वप्न साच हों लाहे। रज्जू नेणतां सर्पा बिहे। विस्मो कवण? ।८८। जंव कवळ आथी डोळां। तंव चंद्र देखावा कीं पिंवळा। काय मृगींही मृगजळा। भाळावें नाहीं? ।८९। तैसा शास्त्रगुरूंचेनि नांवे। जो वाराही टेकों नेदी सिंवे। केवळ मौढ्याचेनि जीवें। जियाला जो? ।३९०। तेणें देहात्मदृष्टीमुळें। आत्मया धापे देहाचें जाळें। जैसा अभ्राचा वेग कोल्हें। चंद्रीं मानीं ।९१। मग तया मानणयासाठीं। देहबंदीशाळे किरीटी। कर्माच्या वज्रगांठी। कळासे तो ।९२। पाहें पां बंधभावना दृढा। नळियेवरी तो बापुडां। काय मोकळेयाही चवडा। न ठकेचि पुंसा? ।९३। म्हणोनि निर्मळे आत्मस्वरूपी। जो प्रकृतीचें केले आरोपी। तो कल्पकोडींच्या मापीं। मवीचि कर्में ।९४। आतां कर्मामाजीं असे। परी तयातें कर्म न स्पर्शे। वडवानळातें जैसें। समुद्रोदक ।९५। तैसेनि वेगळेपणें। जयाचे कर्मीं असणें। तो कीर वोळखावा। कवणें। तरी सांगों ।९६। जे मुक्तातें निर्धारितां। लाभे आपलीच मुक्तता। जैसी दीपें दिसे पाहतां। आपली वस्तु ।९७। नातरी दर्पण जंव उटिजे। तंव आपणपयां आपण भेटिजे। का तोय पावतां तोय होइजे। लवणें जेवीं ।९८। हें असो परतोनि मागुतें। प्रतिबिंब पाहे बिंबातें। तंव पाहणें जाउनी आयितें। बिंबचि होय ।९९। तैसें हारपलें आपणपें पावे। तैं संतांतें पाहतां गिंवसावें। म्हणोनि वानावे ऐकावे। तेचि सदा ।४००। परी कर्मीं असोनि कर्में। जो नागवे समविषमें। चर्मचक्षूचेनि चामें। दृष्टी जैसी ।१। तैसा सोडवला जो आहे। तयाचें रूप आतां पाहें। उपपत्तीची बाहे। उभऊनि सांगों ।२।

यस्य नाहंकृतो भावो बुद्धिर्यस्य न लिप्यते।

हत्वाऽपि स इमांल्लोकान्न हंति न निबध्यते।१७।

तरी अविद्येचिया निदा। विश्वस्वप्नाचा हा धांदा। भोगित होता प्रबुद्धा। अनादि जो।३। तो महावाक्याचेनि नांवें। गुरुकृपेचनि थांवें। माथां हात ठेवणें नव्हे। थापटिला जैसा।४। तैसा विश्वस्वप्नैसीं माया। नीद सांडूनि धनंजया। सहजेंचि चेइला अद्वया–। नंदपणें जो।५। तेव्हां मृगजळाचें पूर। दिसते एक निरंतर। हारपती कां चंद्रकर। फांकतां जैसें।६। का बाळत्व निघोनि जाय। तैं बागुला नाहीं त्राय। पैं जळालिया इंधन न होय। रंधन जेवीं।७। नाना चेवो आलिया पाठीं। तैं स्वप्न न दिसे दिठी। तैसी अहंममता गा किरीटी। नुरेचि तया।८। मग सूर्य आंधारालागीं। रिघो का भलते सुरंगीं। परी तो तयाच्या भागीं। नाहींचि जैसा।९। तैसा आत्मत्वें वेष्टिला होये। तो जया तया दृश्यातें पाहें। तें दृश्य द्रष्टेपणेंसीं होत जाये। तयाचेंचि रूप।४१०। जैसा वह्नि जया लागे। तें वह्नीची जालिया आंगें। दाह्यदाहकविभागें। सांडिजे तें।१। तैसा कर्मकारा दुजेया। तो कर्तेपणाचा आत्मयां। आळ आला तो गेलिया। कांहीं बाहीं जे उरे।१२। तिये आत्मस्थितीचा जो रावो। मग तो देहीं इये जाणेल ठावो। काय प्रलयांबूचा उन्नाहो। वोघ मानी?।१३। तैसीं ते पूर्ण अहंता। काई देहपणें पांडुसुता। आवरे काई सविता। बिंबे धरिला?।१४। पैं मथुनि लोणी घेपे। तें मागुती ताकीं घापे। तरी तें लिप्तपणें सिंपे। तेणेंसीं काई?।१५। नाना काष्ठौनि वीरेशा। वेगळाविलिया हुताशा। राहे काष्ठाचिया मांदुसा। कोंडलेपणें?।१६। का रात्रीचिया उदरांत। रिगाला जो हा भास्वत। तो रात्री ऐसी मात। ऐके काई?।१७। तैसे वेद्य वेदकपणेंसीं। पडिलें का जयाच्या ग्रासीं। तया देह मी ऐसी। अहंता कैची?।१८। आणि आकाशें जेथें जेथुनी। जाइजे तेथ असे भरोनी। म्हणोनि ठेलें कोंदोनी। आपेंआप।१९। तैसें जें तेणें करावें। तो तेंचि आहे स्वभावें। मा कोणे कर्मी वेष्टावें। कर्तेपणें?।४२०। नुरेचि गगनावीण ठावो। नोहेचि समुद्रा प्रवाहो। नुठीचि ध्रुवा जावों। तैसें जाहालें।२१। ऐसेनि अहंकृतिभावो। जयाचा बोधीं जाहाला वावो। तऱ्ही देहा जंव निर्वाहो। तंव आथी कर्मे।२२। वारा जरी वाजोनि वोसरे। तरी तो डोल रुखीं उरे। का सेंदें द्रुति राहे कापुरें। वेंचलेनी।२३। का सरलेया गीताचा समारंभू। न वचे वाहवलेयाचा क्षोभू। भूमी लोळोनि गेलिया अंबू। वोल थारे।२४। अगा मावळलेनि अर्कें। संध्याचिया भूमिके। ज्योतिदीप्ती कौतुकें। दिसे जैसी।२५। पैं लक्ष भेदिलियाहीवरी। बाण धांवेचि तंववरी। जंव भरली आथी उरी। बळाची तया।२६। नाना चक्रीं भांडे जालें। तें कुलालें परतें नेलें। परी भ्रमेचि ते मागिले। भोंवडिलेपणें।२७। तैसा देहाभिमान गेलिया। देह जणें स्वभावें धनंजया। जालें ते अपैसया। चेष्टवीच तें।२८। संकल्पेवीण स्वप्न। न लावितां दांगीचें बन। न रचितां गंधर्वभुवन। उठी जैसें।२९। आत्मयाचेनि उद्यमेंवीण। तैसें देहादिपंचकारण। होय आपणयां आपण। क्रियाजात।४३०। पैं प्राचीनसंस्कारशेषें। पांचही कारणें सहेतुकें। कामविजती गा अनेकें। कर्माकारें।३१। तया कर्मामाजीं मग। संहरो आघवें जग। अथवा नवें चांग। अनुकरो।३२। परी कुमुद कैसेनि सुके। तें कमळ कैसें फांके। हीं दोन्ही रवी न देखे। जयापरी।३३। का वीजू वर्षोनि आभाळ। ठिकरिया आतो भूतळ। अथवा करूं शाडळ। प्रसन्ना वृष्टी।३४। तरी तया दोहीतें जैसें। नेणिजेचि का आकाशें। तैसा देहींच जो असे। विदेहदृष्टी।३५। तो देहादिकीं चेष्टीं। घडतां मोडतां हे सृष्टीं। न देखे स्वप्न दृष्टी। चेइला जैसा।३६। येऱ्हवी चामाचें डोळेवरी। जे देखती देहचिवरी। ते कीर तो व्यापारी। ऐसेंचि मानिती३७। का तृणाचा बाहुला। जो आगरामेरे ठेविला। तो सत्य राखता कोल्हा। न मनी काई।३८। पिसें नेसलें का नागवें। हें लोकीं येऊनि जाणावें। ठाणोरियांचे मवावे। आणिकीं घाय।३९। का महासतीचे भोग। देखे कीर सकळ जग। परी ते आगी ना आंग। ना लोक देखे।४४०। तैसा स्वस्वरूपें उठिला। जो दृश्येंसी द्रष्टा आटला। तो नेणें काय राहटला। इंद्रियग्राम।४१। अगा थोरीं कल्लोळीं कल्लोळ साने। लोपतां तिरींचेनि जनें। एका एकीं गिळिलें हे मनें। मानिजे जऱ्हीं।४२। तऱ्ही उदकाप्रति पाहीं। कोण ग्रसितसे काई। तैसें पूर्णा दुजें नाहीं। जें तो मारी।४३। सुवर्णाचिया चंडिका। सुवर्णशूळेंचि देखा। सुवर्णाचिया महिखा। नाश केला।४४। तो देवलसिया कडा। व्यवहार गमला फुडा। वांचूनि महिष शूळ चामुंडा। सुवर्णचि तें।४५। पैं चित्रींचे जळ हुताश। तो दृष्टीचाचि आभास। पटीं अग्नि वोलांश। दोन्ही नाहीं।४६। मुक्ताचे देह तैसें। हाले चाले संस्कारवशें। तें देखोनि लोक पिसे। तो कर्ता म्हणती।४७। आणि तया करणेया आंत। घडो त्रैलोक्या घात। परी तेणें केला हे मात। बोलों नये।४८। अगा अंधकार देखावा तेजें। मग तो फेडिजे हें कें बोलिजे। तैसें ज्ञानिया नाहीं दुजें। तो मारील काई?।४९। म्हणोनि तयाची बुद्धी। नेणें पापपुण्यांची गंधी। गंगा मिनलिया नदी। विटाळ जैसा।४५०। अग्नीसि अग्नि झगटलिया। काय पोळे तो धनंजया। कीं शस्त्र रुपे आपणया। आपणची?।५१। तैसें आपणपयापरतें। जो नेणे क्रियाजातातें। तेथ काय लिंपवी बुद्धीतें। तयाचिये?।५२। म्हणोनि कार्य कर्ता क्रिया। हें स्वरूपचि जाहलें जया। नाहीं शरीरादिकीं तया। कर्मबंध।५३। जे कर्ता जीव विंदाणी। काढूनि पांचही खाणी। घडित आहे करणीं। आउतीं दाहें।५४। तेथ न्यावो आणि अन्यावो। हा द्विविध साधुनि आवो। उभारितां न लवी खेंवो। कर्म भुवनें।५५। या थोराडा कीर कामा। विरजा नोहें आत्मा। परी म्हणसी हन उपक्रमा। हात लावी।५६। तो साक्षी चिद्रूप। कर्मप्रवृत्तीचा संकल्प। उठी तो कां निरोप। आपणचि दे?।५७। तरी कर्मप्रवृत्तीहीलागीं। तया आयास नाहीं आंगीं। जे प्रवृत्तीचेही उळिगीं।

लोकचि आथी ।५८। म्हणोनि आत्मयाचें केवळ। जो रूपचि जाहाला निखळ। तया नाहीं बंदिशाळ। कर्माची हे ।५९। परी अज्ञानाच्या पटीं। अन्यथा ज्ञानाचें चित्र उठी। तेथ चितारणी हे त्रिपुटी। प्रसिद्ध जे का ।४६०।

ज्ञानं ज्ञेयं परिज्ञाता त्रिविधा कर्मचोदना।
कारणं कर्म कर्तेति त्रिविधः कर्मसंग्रहः ।१८।

जें ज्ञान ज्ञाता ज्ञेय। हें जगाचें बीजत्रय। तें कर्माची निःसंदेह। प्रवृत्ती जाण ।६१। आतां ययाचि गा त्रया। व्यक्ती वेगळालिया। आइकें धनंजया। करूं रूप ।६२। तरी जीवसूर्यबिंबाचे। रश्मी श्रोत्रादिकें पांचें। धांवोनि विषयपद्माचे। फोडित मढ ।६३। कीं जीवनृपाचे वारू उपलाणें। घेऊनि इंद्रियांची केंकाणें। विषयदेशीचें नागवणें। आणीत जे ।६४। हें असो इंहीं इंद्रियीं राहाटे। जें सुखदुःखेसीं जीवा भेटे। तें सुषुप्तिकाळीं वोहटे। जेथ ज्ञान ।६५। तया जीवा नांव ज्ञाता। आणि जें हें सांगितलें आतां। तेंचि एथ पांडुसुता। ज्ञान जाण ।६६। जें अविद्येचिये पोटीं। उपजतखेवों किरीटी। आपणयांते वाटी। तिहीं ठायीं ।६७। आपुलिये धांवेपुढा। घालूनि ज्ञेयाचा गुंडा। उभारी मागिली कडां। ज्ञातृत्वानें ।६८। मग ज्ञातया ज्ञेया दोघां। तो नांदणुकेचा बगा। माजीं जालेनि पैं गा। वाहे जेणें ।६९। ठाकूनि ज्ञेयाची शींव। पुरे जयाची धांव। सकळ पदार्था नांव। सूतसे जें ।४७०। तें गा सामान्य ज्ञान। या बोला नाहीं आन। ज्ञेयाचेही चिह्न। आईक आतां ।७१। तरी शब्द स्पर्श। रूप रस गंध। हा पंचविध आभास। ज्ञेयाचा तो ।७२। जैसें एकेचि चूतफळें। इंद्रियां वेगळवेगळें। रसें वर्णें परिमळे। भेटिजे स्पर्शें ।७३। तैसें ज्ञेय तरी एकसरें। परी ज्ञान इंद्रियद्वारें। घे म्हणोनि प्रकारें। पांचें जालें ।७४। आणि समुद्री वोघाचे जाणें। सरे लाणीपासीं धांवणें। का फळीं सरे वाढणें। सस्याचे जेवीं ।७५। तैसें इंद्रियांच्या वाहवटीं। धांवतया ज्ञाना जेथ ठी। होय तें गा किरीटी। विषय ज्ञेय ।७६। एवं ज्ञातया ज्ञाना ज्ञेया। तिहीं रूप केले धनंजया। हें त्रिविध सर्व क्रिया–। प्रवृत्ति जाण ।७७। जे शब्दादि विषय। हें पंचविध जें ज्ञेय। तेंचि प्रिय का अप्रिय। एके परीचें ।७८। ज्ञान मोटकें ज्ञातया। दावीना जंव धनंजया। तंव स्वीकारा कीं त्यजावया। प्रवर्तेचि तो ।७९। परी मीनातें देखोनि बक। जैसा निधानातें रंक। का स्त्री देखोनि कामुक। प्रवृत्ति धरी ।४८०। जैसें खालारा धांवे पाणी। भ्रमर पुष्पाचिये घाणीं। नाना सुटला सांजवणीं। वत्सचि पां ।८१। अगा स्वर्गींची उर्वशी। ऐकोनि जेवीं माणुसीं। वराता लाविजती आकाशीं। यागांचिया ।८२। पैं पारीवा जैसा किरीटी। चढला नभाचिये पोटीं। पारवी देखोनि लोटी। आंगचि सगळें ।८३। हें ना घनगर्जनासरिसा। मयूर वोवांडे आकाशा। ज्ञाता ज्ञेया देखोनि तैसा। धांवचि घे ।८४। म्हणोनि ज्ञान ज्ञेय ज्ञाता। हे त्रिविध गा पांडुसुता। होयचि कर्मा समस्तां। प्रवृत्ति येथ ।८५। परी तेंचि ज्ञेय विपायें। जरी ज्ञातयाचें प्रिय होये। तरी भोगावया न साहे। क्षणही विलंब ।८६। नातरी अवचटें। तेंचि विरुद्ध होऊनि भेटे। तरी युगांत वाटे। सांडावया ।८७। व्याळा का हारा। वरपडा जालेया नरा। हर्ष आणि दरारा। सरसाचि उठी ।८८। तैसें ज्ञेंय प्रियाप्रियें। देखिलेनि ज्ञातया होये। मग त्यागस्वीकारी वाहे। व्यापारातें ।८९। तेथ रागी प्रतिमल्लाचा। गोसांवी सर्वदळाचा। रथ सांडूनि पायांचा। होय जैसा ।४९०। तैसें ज्ञातेपणें जें असे। तें ये कर्ता ऐसिये दशे। जेवितें बैसलें जैसें। रंधन करूं ।९१। कां भवरेंचि केला मळा। वरकल जाला अंकसळां। नाना देव रिगाला देउळा–। चिया कामा ।९२। तैसा ज्ञेयाचि हांवा। ज्ञाता इंद्रियांचा मेळावा। राहाटवी तेथ पांडवा। कर्ता होय ।९३। आणि आपण होऊनि कर्ता। ज्ञाना आणी करणता। तेथें ज्ञेयचि स्वभावतां। कार्य होय ।९४। ऐसा ज्ञानाचिये निजगती। पालट पडे गा सुमती। नेत्रांची शोभा रातीं। पालटे जैसीं ।९५। का अदृष्ट जालिया उदासू। पालटे श्रीमंतांचा विलासू। पूर्णिमेपाठीं शीतांशू। पालटे जैसा ।९६। तैसा चाळिता करणें। ज्ञाता वेष्टिजे कर्तेपणें। तेथींचीं तियें लक्षणें। ऐक आतां ।९७। तरी बुद्धि आणि मन। चित्त अहंकार हनं। हें चतुर्विध चिह्न। अंतःकरणाचें ।९८। बाह्य त्वचा श्रवण। चक्षु रसना घ्राण। हें पंचविध जाण। इंद्रिय गा ।९९। तेथ आंतुलें तंव करणें। कर्ता कर्तव्या घे उमाणें। मग तैं जरी जाणें। सुखा येतें ।५००। तरी बाहेरिलें तियेंही। चक्षुरादिकें दाहाहीं। उठौनि लवलाही। व्यापारा सुये ।१। मग तो इंद्रियकदंब। करविजे तंव राब। जंव कर्तव्याचा लाभ। हातासि ये ।२। ना तें कर्तव्य जरी दुःखें। फळेल ऐसें देखे। तो लावी त्यागमुखें। तियें दाहाही ।३। मग फिटे दुःखाचा ठावो। तंव राहाटवी रात्रिदिवो। विकण वातें वाहावों। जयापरी ।४। तैसेनि त्यागस्वीकारीं। वाहातां इंद्रियांची धुरी। ज्ञातयातें अवधारी। कर्ता म्हणिपे ।५। आणि कर्तयाच्या सर्व कर्मी। आउतांचिया परी क्षमी। म्हणोनि इंद्रियातें आम्ही। करणें म्हणो ।६। आणि हेचि करणेंवरी। कर्ता क्रिया ज्या उभारी। तिया व्यापे तें अवधारी। कर्म एथ ।७। सोनाराचिया बुद्धी लेणें। व्यापे चंद्रकरीं चांदिणें। का व्यापें वेल्हाळपणें। वेली जैसी ।८। नाना प्रभा व्यापे प्रकाशू। गोडिया इक्षुरसू। हें असो अवकाशू। आकाशीं जैसा ।९। तैसें कर्तयाचिया क्रिया। व्यापलें जें धनंजया। तें कर्म गा बोलावया। आन नाहीं ।५१०। एवं कर्ता कर्म करण। या तिहींचेही लक्षण। सांगितलें तुज विचक्षण–। शिरोमणी ।११। एथ ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय। हें कर्माचें प्रवृत्तित्रय। तैसेंचि कर्ता करण कार्य। हा कर्मसंचय ।१२। वह्नी ठेविला असे धूम। आथी बीजीं जेवी द्रुम। का मनीं जोडे

काम। सदा जैसा ।१३। तैसा कर्ता क्रिया करणीं। कर्माचें आहे जिंतवणीं। सोनें जैसें खाणी। सुवर्णाचिये ।१४। म्हणौनि हे कार्य मी कर्ता। ऐसें आथी जेथ पांडुसुता। तेथ आत्मा दूरी समस्तां। क्रियांपासीं ।१५। यालागीं पुढतपुढती। आत्मा वेगळाचि सुमती। आतां असो हें किती। जाणतासि तूं ।१६।

ज्ञानं कर्म च कर्ता च त्रिधैव गुणभेदतः।
प्रोच्यते गुणसंख्याने यथावच्छृणु तान्यपि ।१६।

परी सांगितलें जें ज्ञान। कर्म कर्ता हन। ते तिन्हीं तिहीं ठायीं भिन्न। गुणीं आहाती ।१७। म्हणौनि ज्ञाना कर्मा कर्तव्या। पातेजों नये धनंजया। जे दोनी बांधती सोडावया। एकचि प्रौढ ।१८। तें सात्त्विक ठाउवें होये। तो गुणभेद सांगों पाहें। जो सांख्यशास्त्रीं आहे। उवाइला ।१६। जें विचारक्षीरसमुद्र। स्वबोधकुमुदिनीचंद्र। ज्ञानडोळसा नरेंद्र। शास्त्रांचा जें ।५२०। कीं प्रकृतिपुरुष दोनी। मिसळलीं दिवोरजनी। तियें निवडिता त्रिभुवनीं। मार्तंड जे ।२१। जेथ अपारा मोहराशी। तत्त्वाच्या मापीं चोविसी। उमाणें घेऊनि परेशीं। सुरवाडिजे ।२२। अर्जुना जे सांख्यशास्त्र। पढे जयाचे स्तोत्र। तें गुणभेदचरित्र। ऐसें आहे ।२३। जे आपुलेनि आंगिकें। त्रिविधपणाचेनि अंकें। दृश्यजात तितकें। अंकित केलें ।२४। एवं सत्त्वरजतमां। तिहींची एवढी असे महिमा। जे त्रैविध्य आदि ब्रह्मा। अंतीं कृमि ।२५। परी विश्वींची आघवी मांदी। जेणें भेदलेनि गुणभेदीं। पडिली तें तंव आदीं। ज्ञान सांगों ।२६। जे दिठी जरी चोख कीजे। तरी भलतेंही चोख सुजे। तैसें ज्ञानें शुद्धें लाहिजे। सर्वही शुद्ध ।२७। म्हणोनि तें सात्त्विक ज्ञान। आतां सांगों दे अवधान। कैवल्यगुणनिधान। श्रीकृष्ण म्हणे ।२८।

सर्वभूतेषु येनैकं भावमव्ययमीक्षते।
अविभक्तं विभक्तेषु तज्ज्ञानं विद्धि सात्त्विकम् ।२०।

तरी अर्जुना गा तें फुडें। सात्त्विक ज्ञान चोखडे। जयाच्या उदयीं ज्ञेय बुडे। ज्ञातेनिसीं ।२६। जैसा सूर्य न देखे आंधारें। सरिता नेणिजती सागरें। का कवळिलिया न धरे। आत्मच्छाया ।५३०। तयापरी जया ज्ञाना। शिवादि तृणावसाना। इया भूतव्यक्ति भिन्ना। नाडळती ।३१। जैसें हातें चित्र पाहातां। होय पाणियें मीठ धुतां। का चेवोनि स्वप्नां येतां। जैसें होय ।३२। तैसें ज्ञानें जेणें। करितां ज्ञातव्यातें पाहाणें। जाणता न जाणणें। जाणावें उरें ।३३। पैं सोनें आटूनि लेणीं। न काढिती आपुलिया आयणी। कां तरंग न घेपती पाणी। गाळूनि जैसें ।३४। तैसी जया ज्ञानाचिया हाता। न लगेचि दृष्यकथा। तें ज्ञान सर्वथा। सात्त्विक गा ।३५। आरिसा पाहों जातां कोडें। जैसें पाहातेंचि कां रिगे पुढें। तैसें ज्ञेय लोटोनि पडे। ज्ञाताचि जें ।३६। पुढती तेंचि सात्त्विक ज्ञान। जें मोक्षलक्ष्मीचे भुवन। हें असो ऐक चिह्न। राजसाचें ।३७।

पृथक्त्वेन तु यज्ज्ञानं नानाभावान्पृथग्विधान्।
वेत्ति सर्वेषु भूतेषु तज्ज्ञानं विद्धि राजसम् ।२१।

तरी पार्था परियेस। तें ज्ञान गा राजस। जें भेदाची कांस। धरूनि चाले ।३८। विचित्रता भूतांचिया। आपण आतोनि ठिकरिया। बहु चकै ज्ञातया। आणिली जेणें ।३६। जैसे साचा रूपा आड। घालूनि विसराचे कवाड। मग स्वप्नाचें कबाड। वोइरी निद्रा ।५४०। तैसें स्वज्ञानाचिये पौळी। बाहेरी मिथ्यामोहाचे खळीं। तिहीं अवस्थांची वह्याळी। दावी जें जीवा ।४१। अळंकारपणें झांकलें। बाळका सोनें कां वायां गेलें। तैसें नामीं रूपीं दुरावलें। अद्वैत जया ।४२। अवतरलीं गाडग्यां घडां। पृथ्वी अनोळख जाली मूढां। वह्नि जाला कानडा। दीपत्वासाठीं ।४३। का वस्त्रपणाचेनि आरोपें। मूर्खाप्रति तंतू हारपे। नाना मुग्धा पट लोपे। दाऊनि चित्र ।४४। तैसी जया ज्ञाना। जाणोनि भूतव्यक्ती भिन्ना। ऐक्यबोधाची भावना। निमोनि गेली ।४५। मग इंधनीं भेदला अनळ। फुलांवरी परिमळ। का जळभेदे सकळ। चंद्र जैसा ।४६। तैसे पदार्थभेद बहुवस। जाणोनि लहान थोर वेष। आतलें ते राजस। ज्ञान येथ ।४७। आतां तामसाचेंही लिंग। सांगेन तें वोळख चांग। डावलावया मातंग–। सदन जैसें ।४८।

यत्तु कृत्स्नवदेकस्मिन्कार्ये सक्तमहैतुकम्।
अतत्त्वार्थवदल्पं च तत्तामसमुदाहृतम् ।२२।

तरी किरीटी जे ज्ञान। हिंडे विधीचेनि वस्त्रें हीन। श्रुति पाठमोरी नग्न। म्हणौनि तया! ।४६। येरीही शास्त्रबटिकरीं। जें निंदेचे विटाळवरी। बोळविलेसे डोंगरी। म्लेंच्छधर्माच्या ।५५०। जें गा ज्ञान ऐसें। गुणग्रहें तामसें। घेतलें भोंवे पिसें। होऊनियां ।५१। जें सोयरिके बाध नेणे। पदार्थी निषेध न म्हणें। निरोपिलें जैसें सुणें। शून्यग्रामीं ।५२। तया तोंडीं जें नाडळें। का खातां जेणें पोळे। तेंचि येक वाळे। येर घेचि तें ।५३। पैं सोनें चोरितां उंदिर। न म्हणे थरविथर। नेणें मांसखाइर। काळें गोरें ।५४। नाना वनामाजीं बोहरी। कडसणी जेवीं न करीं। का जीत मेलें न विचारी। बैसतां मासी ।५५। अगा वांता कां वाढिलेया। साजुका का सडलिया। विवेक

कावळिया। नाहीं जैसा।५६। तैसें निषिद्ध सांडूनि द्यावें। का विहित आदरें घ्यावें। हें विषयांचेनि नांवें। नेणेचि जें।५७। जेतुलें आड पडे दिठी। तेतुलें घेचि विषयांसाठीं। मग तें स्त्रीद्रंव्य वांटी। शिश्नोदरां।५८। तीर्थातीर्थ हे भाख। उदकीं नाहीं सनोळख। तृषा वोळे तेंचि सुख। वांचूनियां।५९। तयाचिपरी खाद्याखाद्य। न म्हणे निंद्यानिंद्य। तोंडा आवडे तें मेध्य। ऐसाचि बोध।५६०। आणि स्त्रीजात तितुकें। त्वचेंद्रियेंचि वोळखे। तियेविषयीं सोयरिके। सादरचि बहू।६१। पैं स्वार्थी जें उपकरे। तयाचि नाम सोयिरें। देहसंबंध न सरे। जिये ज्ञानीं।६२। मृत्यूचें आघवेंचि अन्न। आगी आघवेंचि इंधन। तैसें जगचि आपलें धन। तामसज्ञाना।६३। ऐसेनि विश्व सकळ। जेणें विषयचि मानिलें केवळ। तया एक जाण फळ। देहभरण।६४। आकाशपतिता नीरा। जैसा सिंधुचि एक थारा। तैसें कृत्यजात उदरा–। लागींचि बुझे।६५। वांचूनि स्वर्ग नरक आथी। तया हेतु प्रवृत्ति निवृत्ती। इये आघवीयेचि राती। जाणिवेची जें।६६। जें देहखंडा नाम आत्मा। ईश्वर पाषाणप्रतिमा। ययापरौती प्रमा। ढळों नेणें।६७। म्हणे पडिलेनि शरीरें। केलेनिसीं आत्मा सरे। मा भोगावया उरे। कोण वेषें?।६८। ना ईश्वर पाहतां आहें। तो भोगवी जरी हें होये। तरी देवचि खाये। विकूनियां।६९। गांवींचे देवळेश्वर। नियामकचि होती साचार। तरी देशींचे डोंगर। उगे कां असती?।५७०। ऐसा विपायें देव मानिजे। तरी पाषाणमात्रचि जाणिजे। आणि आत्मा तंव म्हणिजे। देहातेंचि।७१। येरें पापपुण्यादिकें। तें आघवेंचि करोनि लटिकें। हित मानी अग्निमुखें। चरणें जें का।७२। जे चामाचे डोळे दाविती। जें इंद्रियें गोडी लाविती। तेंचि साच हे प्रतीती। फुडी जया।७३। किंबहुना ऐसी प्रथा। वाढती देखसी पार्था। धूमाची वेली वृथा। आकाशीं जैसी।७४। कोरडा ना वोला। उपयोगा आथी गेला। तो वाढोनि मोडला। भेंड जैसा।७५। नाना उसांची कणसें। का नपुंसके माणुसें। वन लागले जैसे। साबरीचें।७६। नातरी बाळकाचे मन। का चोराघरींचे धन। अथवा गळस्तन। शेळियेचे।७७। तैसें जें वायाणें। वोसाळ दिसे जाणणें। तयातें मी म्हणें। तामस ज्ञान।७८। तेंही ज्ञान इया भाषा। बोलिजे तो भाव ऐसा। जात्यंधाचा का जैसा। डोळा वाड।७९। का बधिराचे नीट कान। अपेया नाम पान। तैसें आडनांव ज्ञान। तामसा तया!।५८०। हें असो किती बोलावें। तरी ऐसें जे देखावें। तें ज्ञान नोहे जाणावें। डोळस तम।८१। एवं तिहीं गुणीं। भेदलें यथालक्षणीं। ज्ञान श्रोतृशिरोमणी। दाविलें तुज।८२। आतां याचि त्रिप्रकारा। ज्ञानाचेनि धनुर्धरा। प्रकाशें होती गोचरा। कर्तयाच्या क्रिया।८३। म्हणौनि कर्म पैं गा। अनुसरे तिहीं भागां। मोहरें जालिया वोघा। तोय जैसें।८४। तेंचि ज्ञानत्रयवशें। त्रिविध कर्म जे असे। तेथ सात्त्विक तंव ऐसें। परिस आधीं।८५।

नियतं संगरहितमरागद्वेषतः कृतम्।
अफलप्रेप्सुना कर्म यत्तत्सात्त्विकमुच्यते।२३।

तरी स्वाधिकाराचेनि मार्गें। आलें जें मानिलें आंगें। पतिव्रतेचेनि परिष्वंगें। प्रियातें जैसें।८६। सांवळ्या आंगा चंदन। प्रमदालोचनां अंजन। तैसें अधिकारासी मंडण। नित्यपणें जें।८७। तें नित्य कर्म भलें। होय नैमित्तिकीं सावाइलें। सोनयासि जोडलें। सौरभ्य जैसें।८८। आणि आंगा जीवाची संपत्ति। वेंचूनि करी बाळाची पाळती। परी जीवें उबगणें हे स्थिती। न पाहे माय।८९। तैसें सर्वस्वें कर्म अनुष्ठी। परी फल न सूये दिठी। उखिती क्रिया पैठी। ब्रह्मींचि करी।५९०। आणि प्रिय आलिया स्वभावें। शबळ उरे वेंचे ठाउवें नव्हे। तैसें सत्प्रसंगें करावें। पारुषे जरी।९१। तरी अकरणाचेनि खेदें। द्वेषातें जीवीं न बांधे। जालियाचेनि आनंदें। फुंजो नेणें।९२। ऐसऐसिया हातवटिया। कर्म निफजे जें धनंजया। जाण सात्त्विक हें तया। गुणनाम गा।९३। ययावरी राजसाचें। लक्षण सांगिजेल साचें। न करीं अवधानाचें। वाणेंपण।९४।

यत्तु कामेप्सुना कर्म साहंकारेण वा पुनः।
क्रियते बहुलायासं तद्राजसमुदाहृतम्।२४।

तरी घरीं मातापितरां। धड बोली नाहीं संसारा। येर विश्वभरी आदरा। मूर्ख जैसा।९५। का तुळशीचिया झाडा। दुरूनि न घापे सिंतोडा। द्राक्षींचेया बुडा। दूधचि लाविजे।९६। तैसीं नित्यनैमित्तिकें। कर्में जिये आवश्यकें। तयांचेविषी न शके। बैसला उठूं।९७। येरां काम्याचेनि तरी नांवें। देह सर्वस्व आघवें। वेंचितांही न मनवे। बहु ऐसें।९८। अगा देवढी वाढी लाहिजे। तेथ मोल देतां न धाइजे। पेरितां पुरे न म्हणिजे। बीज जेवीं।९९। का परिस जालिया हातीं। लोहालागीं सर्वसंपत्ती। वेंचितां ये उन्नति। साधक जैसा।६००। तैसीं फळें देखोनि पुढें। काम्य कर्में दुवाडें। करी परी तें थोडें। केलेंही मानी।१। तेणें फहकामुकें। यथाविधि नेटकें। काम्य किजे तितुकें। क्रियाजात।२। आणि तयाही केलियाचें। तोंडीं लावी दौंडीचे। कर्मी या नामपाटाचें। वाणें सारी।३। तैसा भरे कर्माहंकारू। मग पिता अथवा गुरू। ते न मनीं काळज्वरू। औषध जैसें।४। तैसेनि साहंकारें। फळाभिलाषियें नरें। किजे गा आदरें। जें जें कांहीं।५। परी तेंही करणें बहुवसा। वळघोनि करी सायासा। जीवनोपाय का जैसा। कोल्हांटियाचा।६। एका कणालागीं उंदिर। अवघा उपसे डोंगर। का सेवाळादोषें दर्दुर। समुद्र डहुळी।७। पैं भिकेपरतें न लाहे। तऱ्ही गारुडी साप वाहे।

काय किजे शीणचि होये। गोड येकां।८। हें असो परमाणूचेनि लाभें। पाताळ लंघिती वोळंबे। तैसें स्वर्गसुखलोभें। विचंबणें जें।६। तें काम्यकर्म सक्लेष। जाणावें येथ राजस। आतां चिह्न परीस। तामसाचें।६१०।

अनुबंधं क्षयं हिंसामनपेक्ष्य च पौरुषम्।
मोहादारभ्यते कर्म यत्तत्तामसमुच्यते।२५।

तरी तें गा तामस कर्म। जें निंदेचे काळें धाम। निषेधाचें जन्म। साच जेणें।११। जें निपजविल्यापाठीं। कांहींच न दिसे दिठी। रेघ काढिलिया पोटीं। तोयाचे जेवीं।१२। का कांजी घुसळलिया। का राख फुंकिलिया। कांहीं न दिसे गाळिलिया। वाळू घाणां।१३। नाना उपणिलिया भूस। का विंधिलिया आकाश। नाना मांडिलिया पाश। वारयासी।१४। हें अवघेंचि जैसें। वांझें होऊनि नासे। जें केलिया पाठीं तैसें। वायांचि जाय।१५। येऱ्हवीं नरदेहाहीयेवढें। धन आटणीये पडे। तें निफजवितां मोडे। जगाचें सुख।१६। जैसा कमळवनीं फांस। काढिलिया कांटस। आपण झिजे नाश। कमळां करी।१७। का आपण आंगें जळे। आणि नागवी जगाचे डोळे। पतंग जैसा सळें। दीपाचेनी।१८। तैसें सर्वस्व वायां जावो। वरी स्वदेहहाही होय घावो। परी पुढिलां अपावो। निफजविजे जेणें।१६। माशी आपणयातें गिळवी। परी पुढिलां वांती शिणवी। तें कश्मळ आठवी। आचरण जें।६२०। तेंही करावया दोषें। मज सामर्थ्य असे कीं नसे। हेंही पुढील तैसें। न पाहतां करी।२१। केवढा माझा उपावो। करितां कोण प्रस्तावो। केलियाही आवो। काय येथ।२२। इये जाणिवेचि सोये। अविवेकाचेनि पायें। पुसोनियां होये। साटोप कर्मीं।२३। आपला वसौटा जाळुनि। बिसाटे जैसा वह्नी। का स्वमर्यादा गिळोनी। सिंधु उठी।२४। मग नेणें बहु थोडे। न पाह मागे पुढें। मार्गामार्ग येकवढें। करीत चाले।२५। तैसे कृत्याकृत्य सरकटित। आपपर नुरवित। कर्म होय तें निश्चित। तामस जाण।२६। ऐसी गुणत्रयभिन्ना। कर्माची गा अर्जुना। हे केली विवंचना। उपपत्तीसीं।२७। आतां इयाचि कर्मा भजतां। कर्माभिमानिया कर्ता। तो जीवही त्रिविधता। पातला असे।२८। चतुराश्रमवशें। एक पुरुष चतुर्धा दिसे। कर्तया त्रैविध्य तैसें। कर्मभेदें।२६। परी तयां तिहींआंत। सात्त्विक तंव प्रस्तुत। सांगेन दत्तचित्त। आकर्णीं तूं।६३०।

मुक्तसंगोऽनहंवादी धृत्युत्साहसमन्वितः।
सिद्ध्यसिद्ध्योर्निर्विकारः कर्ता सात्त्विक उच्यते।२६।

तरी फळोद्देशें सांडिलिया। वाढती जेवीं सरळिया। शाखा का चंदनाचिया। बावनया।३१। का न फळतांही सार्थका। जैसिया नागलतिका। तैसिया करी नित्यादिका। क्रिया जो का।३२। परी फळशून्यता। नाहीं तया विफळता। पैं फळासिचि पांडुसुता। फळें कायिसीं?।३३। आणि आदरें करी बहुवसें। परी मी कर्ता हें नुमसे। वर्षाकाळींचे जैसे। मेघवृंद।३४। तेवींचि परमात्मलिंगा। समर्पावयाजोगा। कर्मकलाप पैं गा। निपजावया।३५। तया काळातें नुलंघणें। देशशुद्धीही साधणें। का शास्त्रांच्या वाती पाहणें। क्रियानिर्णय।३६। वृत्तीकरणा येकवळा। चित्त जावों नेदणें फळा। नियमाचियां सांखळा। वाहे सदा।३७। हा निरोध साहावयालागीं। धैर्याचिया चांगाचांगी। चिंतवणी जिती आंगीं। वाहे जो का।३८। आणि आत्मयाचिये आवडी। कर्मे करिता वरपडी। देहसुखाचिये परवडीं। येवों न लाहे।३६। ऐसा निद्रा दुऱ्हावे। क्षुधा न बाणवें। सुरवाड न पावे। आंगाचा ठावो।६४०। तंव अधिकाधिक। उत्साह धरी आगळीक। सोनें जैसें पुटीं तुक। तुटलिया कसीं।४१। जरी आवडी आथी साच। तरी जीवितहीं सलच। आगीं घालितां रोमांच। देखिजती सतियें।४२। मा आत्मया येवढिया प्रिया। वालभेला जो धनंजया। देहही सिदता तया। काय खेद होईल?।४३। म्हणौनि विषय सुरवाड तुटे। जंव जंव देहबुद्धि आटे। तंव तंव आनंद दुणवटे। कर्मीं जया।४४। ऐसोनि जो कर्म करी। आणि कोणे एके अवसरीं। तें ठाके ऐसी सरी। वाहे जरी।४५। तरी कडाडी मोडे गाडा। तो आपणपें न मनी अवघडा। तैसा ठाकलेनिही थोडा। नोहे जो का।४६। नातरी आदरिलें। अव्यंग सिद्धी गेले। तरी तेंही जिंतिलें। मिरवूं नेणे।४७। इया खुणा कर्म करितां। देखिजे जो पांडुसुता। तयातें म्हणिपे तत्त्वतां। सात्त्विक कर्ता।४८। आतां राजसा कर्तेया। वोळखणें हें धनंजया। जे अभिलाषा जगाचिया। वसौटा तो।४६।

रागी कर्मफलप्रेप्सुर्लुब्धो हिंसात्मकोऽशुचिः।
हर्षशोकान्वितः कर्ता राजसः परिकीर्तितः।२७।

जैसा गांवींचिया कश्मळा। उकरडा होय येकवळा। का स्मशानीं अमंगळा। आघवयाची।६५०। तयापरी जो अशेखा। विश्वाचिया अभिलाखा। पायपाखाळणियां देखा। घरटा जाला।५१। म्हणोनि फळाचा लाग। देखे जिये असलग। तिये कर्मीं चांग। राहो मांडी।५२। आणि आपण जालिये जोडी। उपखों नदी कवडी। क्षणक्षणां कुरोंडी। जीवाची करी।५३। कृपण चिंती ठेवा आपुला। तैसा दक्ष पराविया माला। बक जैसा खुतला। मासेयासी।५४। आणि गोंवी गेलिया जवळी। झगटलिया आंग

फाळी। फळें जरी आंत पोकळी। बोरांटी जैसी।५५। तैसें मनें वाचा कायें। भलतया दुःख देत जाये। स्वार्थ साधितां न पाहे। पराचें हित।५६। तेवींच आंगें कर्मीं। आचरणें नोहे क्षमी। न निघे मनोधर्मीं। अरोचक।५७। कनकाचिया फळां। आंत माज बाहेरी मौळा। तैसा सबाह्य दुबळा। शुचित्वें जो।५८। आणि कर्मजात केलिया। फळ लाहे जरी धनंजया। तरी हरिखें जगा यया। वांकुलिया वाये।५९। अथवा जें आदरिलें। हिनफळ होय केलें। तरी शोकें तेणें जिंतले। धिक्कारों लागे।६६०। कर्मी राहाटी ऐसी। जयातें होती देखसी। तोचि जाण त्रिशुद्धीसीं। राजस कर्ता।६१। आतां ययापाठीं येर। जो कुकर्माचा आगर। तोही करूं गोचर। तामस कर्ता।६२।

अयुक्तः प्राकृतः स्तब्धः शठो नैष्कृतिकोऽलसः।
विषादी दीर्घसूत्री च कर्ता तामस उच्यते।२८।

तरी मियां लागलिया कैसें। पुढील जळत असे। हें नेणिजे हुताशें। जियापरी।६३। पैं शस्त्रें मियां तिखटें। नेणिजे कैसेनि निवटें। का नेणिजे काळकूटें। आपलें केलें।६४। तैसा पुढिलया आपुलिया। घात करीत धनंजया। आदरी वोखटिया। क्रिया जो का।६५। तिया करितांही वेळीं। काय जालें हें न सांभाळी। चळला वायू वाहटुळी। चेष्टे तैसा।६६। पैं करणिया आणि जया। मेळ नाहीं धनंजया। तो पाहूनि पिसेया। कैंची त्राय?।६७। आणि इंद्रियांचें वैरिलें। चरोनि राखे जो जियालें। बैलातळीं लागलें। गोचिड जैसें।६८। हांसया रुदना वेळ। नेणतां आदरी बाळ। राहटे उच्छृंखळ। तयापरी।६९। जो प्रकृती आतलेपणें। कृत्याकृत्यस्वाद नेणे। फुगे केरें धालेपणें। उकरडा जैसा।६७०। म्हणौनि मान्याचेनि नांवें। ईश्वराही परी न खालवे। स्तब्धपणें न मनवे। डोंगरासी।७१। आणि मन जयाचें कलाली। राहाटी फुडी चोरिली। दिठी कीर ते वोतली। पण्यांगनेची।७२। किंबहुना कपटाचें। देहचि वळिलें तयाचें। तें जिणें कीं जुवाराचें। टिटघर।७३। नोहे तयाचा प्रादुर्भावो। तो साभिलाष भिल्लांचा गांवो। म्हणौनि नये येवोंजावों। तया ठाया।७४। आणि आणिकाचें निकें केलें। विरू होय जया आलें। जैसें अपेय पया मिनलें। लवण करी।७५। कां हिंव ऐसा पदार्थ। घातलिया आगीआंत। तेचि क्षणीं धडाडित। अग्नि होय।७६। नाना सुद्रव्यें गोमटी। जालिया शरीरीं पैठीं। होऊन ठाती किरीटी। मळचि जेवीं।७७। तैसें पुढिलाचें बरवें। जयाच्या भींतरीं पावे। आणि विरुद्धचि आघवें। होऊनि निगे!।७८। जो गुण घे दे दोख। अमृताचे करी विख। दूध पाजिलिया देख। व्याळ जैसा।७९। आणि ऐहिकीं जियावें। जेणें परवा साच द्यावें। तें उचित कृत्य पावे। अवसरीं जिये।६८०। तेव्हां जया आपैसी। निद्रा ये ठेविली ऐसी। दुर्व्यवहारीं जैसी। विटाळें लोटे।८१। पैं द्राक्षरसा आम्ररसा। वेळे तोंड सडे वायसा। का डोळे फुटती दिवसा। डुडुळाचे।८२। तैसा कल्याणकाळ पाहे। तैं तयांते आळस खाये। ना प्रमादीं तरी होये। तो म्हणे तैसें।८३। जेवींचि सागराच्या पोटीं। जळे अखंड आगिठी। तैसा विषाद वाहे गांठीं। जीवाचिये जो।८४। लेंडोराआंआीं धूमावधी। का अपाना आंगीं दुर्गंधी। तैसा जो जीविताविधी। विषादें केला।८५। आणि कल्पांताचिया पारा। वेगळेंही जो वीरा। सूत्र धरी व्यापारा। साभिलाषा।८६। अगा जगाही परौती। शुचा वाहे पै चित्तीं। करितांविषीं हातीं। तृणही न लागे।८७। ऐसा जो लोकाआंत। पापपुंज मूर्त। देखसी तो अव्याहत। तामस कर्ता।८८। एवं कर्म कर्ता ज्ञान। या तिहींचें त्रिधा चिह्न। दाविलें तुज सुजन–। चक्रवर्ती।८९।

बुद्धेर्भेदं धृतेश्चैव गुणतस्त्रिविधं शृणु।
प्रोच्यमानमशेषेण पृथक्त्वेन धनंजय।२९।

आतां अविद्येच्या गांवीं। मोहाची वेढूनि पदवी। संदेहाचीं आघवीं। लेऊनि लेणीं।६९०। आत्मनिश्चयाची बरव। जया आरिसा पाहे सावयव। तिये बुद्धीचिही धांव। त्रिधा असे।९१। अगा सत्त्वादि गुणीं इंहीं। काई एक तिहीं ठायीं। न किजेचि येथ पाहीं। जगामाजीं?।९२। आगी न वसतां पोटीं। कवण काष्ठ असे सृष्टी। तैसें तें कैचें दृश्यकोटी। त्रिविध जें नोहे?।९३। म्हणौनि तिहीं गुणीं। बुद्धी केली त्रिगुणी। धृतीसिही वांटणी। तैसीचि असे।९४। तेंचि येक वेगळालें। यथाचिह्नीं अळंकारलें। सांगिजेल उपाइलें। भेदलेपणें।९५। परी बुद्धि धृति इयां। दोंहीं भागांमाजीं धनंजया। आधी रूप बुद्धीचिया। भेदासि करूं।९६। तरी उत्तम मध्यम निकृष्टा। संसारासि गा सुभटां। प्राणियां येतिया वाटा। तिनी आथी।९७। जे करणीय काम्य निषिद्ध। ते हे मार्ग तिन्ही प्रसिद्ध। संसार भयसंबंध। जीवां ययां।९८।

प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च कार्याकार्ये भयाभये।
बंधं मोक्षं च या वेत्ति बुद्धिः सा पार्थ सात्त्विकी।३०।

म्हणौनि अधिकारें मानिलें। जें विधीचेनि वोघें आलें। ते येकचि येथ भलें। नित्य कर्म।९९। तेंचि आत्मप्राप्तिफळ। दिठी सूनि केवळ। किजे जैसें का जळ। सेविजे ताहनें।७००। येतुलेनि तें कर्म। सांडी जन्मभय विषम। करूनि दे सुगम। मोक्षसिद्धि।१। ऐसें करी तो भला। संसारभयें सांडिला। करणीयत्वें आला। मुमुक्षुभागा।२। तेथ जे बुद्धि ऐसा। बळिया बांधे भरंवसा। मोक्ष ठेविला ऐसा। जोडेल येथ।३। म्हणौनि निवृत्तिचि मांडली। सूनि प्रवृत्तितळीं। इये कर्मीं बुडकुळी। द्यावी कीं ना।४।

तृषार्ता उदक जिणें। कां पूरीं पडलिया पव्हणें। अंधकूपीं गति किरणें। सूर्याचेनि।५। नाना पथ्येंसीं औषध लाहे। तरी रोगें दाटलाही जिये। का मीना जिव्हाळा होये। जळाचा जरीं।६। तरी तयाच्या जीविता। नाहीं जेवीं अन्यथा। तैसें कर्मी इये वर्ततां। जोडेचि मोक्ष।७। हे करणीयाचिया कडे। जें ज्ञान आथी चोखडें। आणि करणीय हें फुडें। ऐसें जाण।८। जी तियें काम्यादिकें। संसारभयदायकें। अकृत्यपणाचें आंबुखें। पडिलें जयां।६। तिये कर्मी अकार्यीं। जन्ममरणसमयीं। प्रवृत्ति पळवी पायीं। मागिलीची।७१०। पैं आगीमाजीं न रिघवे। अथावीं न घलवे। धगधगीत नागवे। शूळ जेवीं।११। का काळियाणा धुंधुवात। देखोनि न घालवे हात। न वचवे खोपेआंत। व्याघ्राचिये।१२। तैसें कर्म अकरणीय। देखोनि महाभय। उपजे निःसंदेह। बुद्धी जिये।१३। वाढिलें रांधुहि विखें। तेथ जाणिजे मृत्यु न चुके। तेवीं निषिद्धीं का देखे। बंधातें जो।१४। मग बंधभयभरितां। तिये निषिद्धीं प्राप्तीं। विनियोग जाणे निवृत्ती। कर्माचिये।१५। ऐसेनि कार्याकार्यविवेकी। जे प्रवृत्तिनिवृत्ति मापकी। खरा कुडा पारखी। जिया परी।१६। तैसी कृत्याकृत्यशुद्धी। बुझे जे निरवधी। सात्त्विक म्हणिपे बुद्धी। तेचि तूं जाण।१७।

यया धर्ममधर्मं च कार्यं चाकार्यमेव च।
अयथावत्प्रजानाति बुद्धिः सा पार्थ राजसी।३१।

आणि बकाच्या गांवीं। घेपे क्षीरनीर सकलवी। का अहोरात्रींची गोंवी। आंधळें नेणें।१८। जया फुलाचा मकरंद फावे। तो काष्ठे कोरूं धांवे। परी भ्रमरपणा नव्हे। आव्हांटा जेवीं।१६। तैसीं इये कार्याकार्यें। धर्माधर्मरूपें जियें। तिये न चोजवितां जाये। जाणती जे का।७२०। अगा डोळांवीण मोतियें। घेतां पाड मिळे विपायें। न मिळणें तें आहे। ठेविलें तेथें।२१। तैसें अकरणीय अवचटे। नोडवे तरी लोटे। येरवीं जाणें एकवटें। दोन्ही जे का।२२। ते गा बुद्धि चोखविषीं। जाण येथ राजसी। अक्षत टाकिली जैसी। मांदियेवरी।२३।

अधर्मं धर्ममिति या मन्यते तमसाऽऽवृता।
सर्वार्थान्विपरीतांश्च बुद्धिः सा पार्थ तामसी।३२।

आणि राजा जिया वाटा जाये। ते चोरांसि आडव होये। का राक्षसां दिवो पाहे। राति होउनी।२४। नाना निधानचि निदैवा। होये कोळसयाचा उडवा। पैं असतें आपणपें जीवा। नाहीं जालें।२५। तैसें धर्मजात तितकें। जिये बुद्धीसी पातकें। साच ते लटिकें। ऐसेंचि बुझे।२६। ते आघवेचि अर्थ। करूनि घाली अनर्थ। गुण ते ते व्यवस्थित। दोषचि मानी।२७। किंबहुना श्रुतिजातें। अधिष्ठूनि केलें सरतें। तेतुलेंही उपरतें। जाणे जे बुद्धी।२८। कोणातेंही न पुसतां। तामसी जाणावी पांडुसुता। रात्री काय धर्मार्था। साच करावी?।२६। एवं बुद्धीचे भेद। तिन्ही तुज विशद। सांगितले स्वबोध–। कुमुदचंद्रा।७३०। आतां ययाचि बुद्धिवृत्ती। निष्टंकिलां कर्मजातीं। खांद मांडिजे धृती। त्रिविधा जया।३१। तिये धृतीचेही विभाग। तिन्ही यथालिंग। सांगिजती चांग। अवधान दे।३२।

धृत्या यया धारयते मनःप्राणेंद्रियक्रियाः।
योगेनाव्यभिचारिण्या धृतिः सा पार्थ सात्त्विकी।३३।

तरी उदेलिया दिनकर। चोरीसिं थोके अंधकार। का राजाज्ञा अव्यवहार। कुंठवी जेवीं।३३। नाना पवनाचा साट। वाजिनलिया नीट। आंगेंसी बोभाट। सांडिती मेघ।३४। का अगस्तीचेनि दर्शनें। सिंधु घेउनी ठाती मौनें। चंद्रोदयीं कमळवनें। मिठी देती।३५। हें असो पावो उचलिला। मदमुख न ठेविती खालां। गर्जोनि पुढां जाला। सिंह जरी।३६। तैसा जो धीर। उठलिया अंतर। मनादिकें व्यापार। सांडिती उभीं।३७। इंद्रियाविषयांचिया गांठी। अपैसया सुटती किरीटी। मन मायेच्या पोटीं। रिगती दाही।३८। अधोर्ध्व गुढें काढी। प्राण नवांची पेंडी। बांधोनि घाली उडी। मध्यमेमाजीं।३६। संकल्पविकल्पांचे लुगडें। सांडूनि मन उघडें। बुद्धि मागिलेकडे। उगीचि बैसे।७४०। ऐसी धैर्यराजें जेणें। मन प्राण करणें। स्वचेष्टांचीं संभाषणें। सांडविजती।४१। मग आघवींचि सडीं। ध्यानाच्या आंतुल्या मढीं। कोंडिजती निरवडी। योगाचिये।४२। परी परमात्मया चक्रवर्ती। उगाणिती जंव हातीं। तंव लांच न घेतां धृती। धरिजती जियां।४३। तें गा धृति येथें। सांत्त्विक हें निरुतें। आईक अर्जुनातें। श्रीकांत म्हणे।४४।

यया तु धर्मकामार्थान् धृत्या धारयतेऽर्जुन।
प्रसंगेन फलाकांक्षी धृतिः सा पार्थ राजसी।३४।

आणि होऊनियां शरीरीं। स्वर्गसंसाराच्या दोही ंघरीं। नांदे जो पोटभरी। त्रिवर्गोपायें।४५। तो मनोरथांच्या सागरीं। धर्मार्थकामांच्या तारुवावरी। जेणें धैर्यबळें करी। क्रियावाणिज्य।४६। जें कर्म भांडवला सुये। तयाची चौगुणी येती पाहे। येवढें साहस वाहे। जया धृती।४७। ते गा धृती राजस। पार्था येथ परियेस। आतां आइक तामस। तिसरी जे का।४८।

यया स्वप्नं भयं शोकं विषादं मदमेव च।
न विमुंचति दुर्मेधा धृतिः सा पार्थ तामसी।३५।

तरी सर्वाधमें गुणें। जयाचे का रूपा येणें। कोळसा काळेपणें। घडला जैसा।४६। अहो प्राकृत आणि हीन। तयाही कीं गुणत्वाचा मान। परी न म्हणिजे पुण्यजन। राक्षस काई?।७५०। पैं ग्रहांमाजीं इंगळ। तयातें म्हणिजे मंगळ। तैसा तमीं धसाळ। गुणशब्द हा।५१। जे सर्व दोषांचा वसौटा। तमचि कामऊनि सुभटा। उभारिला आंगवठा। जया नराचा।५२। तो आळस सूनि असे कांखे। म्हणौनि निद्रे कंहीं न मुके। पापें पोशितां दुःखें। न सांडिजे जेवीं।५३। आणि देहा धनाचिया आवडी। सदा भय तयातें न सांडी। विसंबू न सके धोंडी। काठिण्य जैसें।५४। आणि पदार्थजातीं स्नेहो। बांधे म्हणौनि तो शोकें ठावो। केला न शके पाप जावों। कृतघ्नौनि जैसें।५५। आणि असंतोष जीवेंसी। धरूनि ठेला अहर्निशीं। म्हणौनि मैत्री तेणेंसीं। विषादें केली।५६। लसणातें न सांडी गंधी। का अपथ्यशीळातें व्याधी। तैसी केली मरणावधी। विषादें तया।५७। आणि वयसा वित्त काम। ययांचा वाढवी संभ्रम। म्हणौनि मदें आश्रम। तोचि केला।५८। आगीतें न सांडी ताप। सळातें जातीचा साप। का जगाचा वैरी वासिप। अखंड जैसा।५६। नातरी शरीरातें काळ। न विसंबे कवणें वेळ। तैसा आथी अढळ। तामसीं मद।७६०। एवं पांचही हे निद्रादिक। तामसाच्या ठाईं दोख। जिया धृती देख। धरिले आहाती।६१। तिये या धृती नांवें। तामसी येथ हें जाणावे। म्हणितलें तेणें देवे। जगाचेनि।६२। एवं त्रिविध जे बुद्धी। किजे कर्मनिश्चयो आधी। तो धृती या सिद्धी। नेइजो येथ।६३। सूर्यें मार्ग गोचर होये। आणि तो चालती कीर पाये। परी चालणें तें आहे। धैर्यें जेवीं।६४। तैसी बुद्धि कर्मातें दावी। तें करणसामग्री निफजवी। परी निफजावया होआवी। धीरता जे।६५। ते हे गा तुजप्रती। सांगितली त्रिविध धृती। जया कर्मत्रया निष्पत्ती। जालिया मग।६६। येथ फळ जें एक निफजे। सुख जयातें म्हणिजे। तेंही त्रिविध जाणिजे। कर्मवशें।६७। तरी फळरूप तें सुख। त्रिगुणीं भेदलें देख। विवंचू आतां चोख। चोखीं बोलीं।६८। परी चोखी ते कैसी सांगें। पैं घेवों जातां बोलबगें। कानींचियेही लागे। हातींचा मळ।६६। म्हणौनि जयाचेनि अव्हेरें। अवधानही होय बहिरें। तेणें आईक हो आदरें। जीवाचेनी।७७०। ऐसें म्हणौनि देवो। त्रिविधा सुखाचा प्रस्तावो। मांडला तो निर्वाहो। निरूपित असे।७१।

सुखं त्विदानीं त्रिविधं शृणु मे भरतर्षभ।
अभ्यासाद्रमते यत्र दुःखांतं च निगच्छति।३६।

म्हणे सुखत्रयसंज्ञा। सांगों म्हणौनि प्रतिज्ञा। बोलिलों तें प्राज्ञा। ऐक आतां।७२। तरी सुख ते गा किरीटी। दाविजेल तुज दिठीं। जे आत्मयाचिये भेटी। जीवासि होय।७३। परी मात्रेचेनि मापें। दिव्यौषध जैसें घेपे। का कथिलाचें किजे रुपें। रसभावनीं।७४। नाना लवणाचें जळं। होआवया दोनीचार वेळ। देऊनि सांडिजती ढाळ। तोयाचे जेवीं।७५। तेवीं जालेनि सुखलेशें। जीव भाविलिया अभ्यासें। जीवपणाचें नासे। दुःख जेथें।७६। तें येथ आत्मसुख। जालें असे त्रिगुणात्मक। तेंही सांगों एकैक। रूप आतां।७७।

यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम्।
तत्सुखं सात्त्विकं प्रोक्तमात्मबुद्धिप्रसादजम्।३७।

आतां चंदनाचें बुड। सर्पीं जैसें दुवाड। का निधानाचे तोंड। विवसिया जेवीं।७८। अगा स्वर्गींचें गोमटें। आडव यागसंकटें। का बाळपण दासटें। त्रासकाळें।७६। हें असो दीपाचिये सिद्धी। अवघड धूम आधीं। नातरी तो औषधीं। जिभेचा ठावो।७८०। तयापरी पांडवा। जया सुखाचा रिगावा। विषम तेथ मेळावा। यमदमांचा।८१। देत सर्वस्नेहा मिठी। आंगीं ऐसें वैराग्य उठी। स्वर्गसंसारा काटी। काढितची।८२। विवेक श्रवणें खरपुसें। जेथ व्रताचरणें कर्कशें। करितां जाती भोकसे। बुद्ध्यादिकांचे।८३। सुषुम्नेचेनि तोंडें। गिळिजे प्राणापानांचे लोंढे। बोहणियेसीचि येवढे। भारी जेथ।८४। जें सारसांही विघडतां। होय वोहाहूनि वत्स काढितां। ना भणग दवडितां। भाणयावरूनी।८५। पैं मायेपुढौनि बाळक। काळें नेतां एकुलतें एक। होय का उदक। तुटतां मीना।८६। तैसें विषयांचे घर। इंद्रियां सांडितां थोर। युगांत होय ते वीर। विराग साहाती।८७। ऐसा जया सुखाचा आरंभ। दावी काठिण्याचा क्षोभ। मग क्षीराब्धीं लाभ। अमृताचा जैसा।८८। पहिलया वैराग्यगरळा। धैर्यशंभु वोडवी गळा। तरी ज्ञानामृतें सोहळा। पाहे जेथें।८६। पैं कोलिताही कोपे ऐसें। द्राक्षांचें हिरवेपण असे। तें परिपाकीं का जैसें। माधुर्य आतें।७६०। तें वैराग्यादिक तैसें।

पिकलिया आत्मप्रकाशें। मग वैराग्येंसीही नाशे। अविद्याजात।६१। तेव्हां सागरीं गंगा जैसी। आत्मीं मिनल्या बुद्धि तैसी। अद्वयानंदाची आपैसी। खाणी उघडे।६२। ऐसें स्वानुभवविश्रामें। वैराग्यमूळ जें परिणमे। तें सात्त्विक येणें नामें। बोलिजे सुख।६३।

विषयेंद्रियसंयोगाद्यत्तदग्रेऽमृतोपमम्।
परिणामे विषमिव तत्सुखं राजसं स्मृतम्।३८।

आणि विषयेंद्रिया। मेळ होता धनंजया। जें सुख जाय थडिया। सांडूनि दोन्हीं।६४। अधिकारिया रिगतां गांवो। होय जैसा उत्साहो। का रिणावरी विवाहो। विस्तारिला।६५। नाना रोगिया जिभेपासीं। केळें गोड साखरेसीं। का बचनागाची जैसी। मधुरता पहिली।६६। पहिलें संवचोराचें मैत्र। हाटभेटीचे कल़त्र। का लाघवियाचे विचित्र। विनोद ते।६७। तैसें विषयेंद्रियदोखी। जें सुख जीवातें पोखी। मग उपडिला खडकीं। हंस जैसा।६८। तैसी जोडी आघवी आटे। जीविताचा ठाय फिटे। सुकृताचियाही सुटे। धनाची गांठी।६९। आणिक भोगिलें जें कांहीं। तें स्वप्न तैसें होय नाहीं। मग हानिचाचि घाईं। लोळावें उरे।८००। ऐशा आपत्तीं जें सुख। ऐहिकीं परिणमे देख। परत्रीं कीर विख। होउनि परते।१। जे इंद्रियजातां लळा। दिधलिया धर्माचा मळा। जाळूनि भोगिजे सोहळा। विषयांचा जेथ।२। तेथ पातकें बांधिती थावो। तिये नरकीं देती ठावो। जेणें सुखें हा अपावो। परत्रीं ऐसा।३। पैं नामें विष मधुरें। परी मारूनि अंतीं खरें। तैसें आदि जें गोडिरें। अंती कडू।४। पार्था तें सुख साचें। वळिलें आहे रजाचें। म्हणौनि न शिवे तयाचें। आंग कंहीं।५।

यदग्रे चानुबंधे च सुखं मोहनमात्मनः।
निद्रालस्यप्रमादोत्थं तत्तामसमुदाहृतम्।३९।

आणि अपेयाचेनि पानें। अखाद्याचेनि भोजनें। स्वैरस्त्रीसंनिधानें। होय जे सुख।६। का पुढिलांचेनि मारें। नातरी परस्वापहारें। जें सुख अवतरे। भाटाच्या बोलीं।७। जें आलस्यावरी पोखिजे। निद्रेमाजीं जें देखिजे। जयाच्या आद्यंती भुलिजे। आपुली वाट।८। तें गा सुख पार्था। तामस जाण सर्वथा। हें बहु न सांगोंचि जें कथा। असंभाव्य हें।९। ऐसें कर्मभेदें मुदलें। फळसुखही त्रिधा जालें। तें हें यथागमें केलें। गोचर तुज।८१०। तें कर्ता कर्म फळ। हे त्रिपुटी येकीं केवळ। वांचूनि कांहींचि नसे स्थूळ–। सूक्ष्मीं इये।११। आणि हे तंव त्रिपुटी। तिहीं गुणीं इंहीं किरीटी। गुंफिली असे पटी। तांतुवीं जैसी।१२।

न तदस्ति पृथिव्यां वा दिवि देवेषु वा पुनः।
सत्त्वं प्रकृतिजैर्मुक्तं यदेभिः स्यात्त्रिभिर्गुणैः।४०।

म्हणौनि प्रकृतिच्या आलोकीं। न बंधिजे इंहीं सत्त्वादिकीं। तैसी स्वर्गीं ना मृत्युलोकीं। आथी वस्तु।१३। कैचा लोंवेवीण कांबळा। मातियेवीण मोदळा। का जळेंवीण कल्लोळा। होणें आहे?।१४। तैसें नहोनि गुणाचे। सृष्टीच्या रचना रचे। ऐसें नाहींच गा साचें। प्राणिजात।१५। यालागीं हें सकळ। तिहीं गुणांचेचि केवळ। घडलें आहे निखिळ। ऐसें जाण।१६। गुणीं देवां त्रयी लाविली। गुणीं लोकीं त्रिपुटी पाडिली। चतुर्वर्णी घातली। सिनानीं उळिगें।१७।

ब्राह्मणक्षत्रियविशां शूद्राणां च परंतप।
कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभावप्रभवैर्गुणैः।४१।

तेचि चारी वर्ण। पुससी जरी कोण कोण। तरी जयां मुख्य ब्राह्मण। धुरेचे का।१८। येर क्षत्रिय वैश्य दोन्ही। तेही ब्राह्मणाच्याचि मानिजे मानीं। जे ते वैदिकविधानीं। योग्य म्हणौनी।१९। चौथा शूद्र जो धनंजया। वेदीं लाग कीर नाहीं तया। तऱ्ही वृत्ति वर्णत्रया–। अधीन तयाची।८२०। तिये वृत्तीचिया जवळिका। वर्णत्रयां ब्राह्मणादिकां। अहो शूद्रही की देखा। चौथा जाला।२१। जैसा फुलाचेनि सांगातें। तांतु तुरंबिजे श्रीमंतें। तैसें द्विजसंगें शूद्रातें। स्वीकारी श्रुति।२२। ऐसैसी गा पार्था। हे चतुर्वर्णव्यवस्था। करूं आतां कर्मपथा। यांचिया रूप।२३। जिंहीं गुणीं ते वर्ण चारी। जन्ममृत्यूंचिये कातरी। चुकोनियां ईश्वरीं। पैठे होती।२४। तियें आत्मप्रकृतीचे इंहीं। गुणीं सत्त्वादिकीं तिहीं। कर्में चौघा चहूं ठाईं। वांटिली वर्णां।२५। जैसें बापें जोडिलें लेकां। वांटिले सूर्यें मार्ग पांथिका। नाना व्यापार सेवकां। स्वामीनें जैसें।२६। तैसी प्रकृतीच्या गुणीं। जया कर्माची वेल्हावणी। केली आहे वर्णीं। चहूं इंहीं।२७। तेथ सत्त्वें आपल्या आंगीं। समीननिमीन भागीं। दोघे केले नियोगी। ब्राह्मण क्षत्रिय।२८। आणि रज परी सात्त्विक। तेथ ठेविले वैश्य लोक। रजचि तमभेसक। तेथ शूद्र ते गा।२९। ऐसा एकाचि प्राणीवृंदा। भेद चतुर्वर्णधा। गुणींचि इंहीं प्रबुद्धा। केला जाण।८३०। मग आपलें ठेविलें जैसें। आइतेंचि दीपें दिसे। गुणभिन्न कर्म तैसें। शास्त्र दावी।३१। तेंचि आतां कोण कोण। वर्णविहिताचे लक्षण। हें सांगों ऐक श्रवण–। सौभाग्यनिधी।३२।

शमो दमस्तपः शौचं क्षांतिरार्जवमेव च।
ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्म स्वभावजम्।४२।

तरी सर्वेंद्रियांचिया वृत्ती। घेऊनि आपुल्या हातीं। बुद्धि आत्मया मिळे येकांती। प्रिया जैसी।३३। ऐसा बुद्धीचा उपरम। तया नाम म्हणिपे शम। तो गुण गा उपक्रम। जया कर्माचा।३४। आणि बाह्येंद्रियांचें धेंडें। पिटूनि विधीचेनि दंडें। नेदिजे अधर्माकडे। कहींचि जावों।३५। तो पैं गा शमा विरजा। दम गुण जेथ दुजा। आणि स्वधर्माचिया वोजा। जिणें जें का।३६। तेवींचि सटवीचिये राती। न विसंबिजे जेवीं वाती। तैसा ईश्वरनिर्णय चित्तीं। वाहणें सदा।३७। तया नाम तप। हें तिजया गुणाचें रूप। आणि शौचही निष्पाप। द्विविध जेथ।३८। मन भावशुद्धी भरलें। आंग क्रिया अळंकारिलें। ऐसें सबाह्य जियालें। साजिरें जें का।३९। तया नाम शौच पार्था। तो कर्मी गुण जये चौथा। आणि पृथ्वीचिया परी सर्वथा। सर्व जें साहाणें।८४०। ते गा क्षमा पांडवा। गुण जेथ पांचवा। स्वरांमाजीं सुहावा। पंचम जैसा।४१। आणि वांकडेनि वोघेंसीं। गंगा वाह उजूचि जैसी। का पृष्ठीं वळला उसीं। गोडी जैसी।४२। तैसा विषमांही जीवां–। लागीं उजुकार बरवा। तें आर्जव गा साहावा। जेथींचा गुण।४३। आणि प्राणियें प्रयत्नें माळी। अखंड जचे झाडामुळीं। परी तें आघवेंचि फळीं। जाणे जेवी।४४। तैसें शास्त्राचारें तेणें। ईश्वरच येक पावणें। हें फुडें जें का जाणणें। तें तेथ ज्ञान।४५। तें गा कर्मी जिये। सातवा गुण होये। आणि विज्ञान हें पाहें। एवंरूप।४६। तरी सत्त्वशुद्धीचिये वेळे। शास्त्रें का ध्यानबळें। ईश्वरतत्त्वींचि मिळे। निष्टंकबुद्धी।४७। हें विज्ञान बरवें। तें गुणरत्न जेथ आठवें। आणि आस्तिक्य जाणावें। नववा गुण।४८। पैं राजमुद्रा आथिलिया। प्रजा भजे भलतयां। तेवीं शास्त्रें स्वीकारिलिया। मार्गमात्रातें।४९। आदरें जें का मानणें। तें आस्तिक्य मी म्हणें। तो नववा गुण जेणें। कर्म ते साच।८५०। एवं नवही शमादिक। गुण जेथ निर्दोख। तें कर्म जाण स्वाभाविक। ब्राह्मणाचें।५१। तो नवगुणरत्नाकर। यया नवरत्नांचा हार। न फेडीत ले दिनकर। प्रकाश जैसा।५२। नाना चांपा चांपौळी पूजिला। चंद्र चंद्रिका धवळला। का चंदन निजें अर्चिला। सौरभ्यें जेवीं।५३। तेवीं नवगुणटीकलग। लेणें ब्राह्मणाचें अव्यंग। कंहींचि न संडी आंग। ब्राह्मणाचें।५४। आतां उचित तें क्षत्रिया। तेंही कर्म धनंजया। सांगों ऐक प्रज्ञेचिया। भरोवरी।५५।

शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनम्।
दानमीश्वरभावश्च क्षात्रं कर्म स्वभावजम्।४३।

तरी भानु हा तेजें। नापेक्षी जेवीं विरजे। का सिंहें न पाहिजे। जावळिया।५६। ऐसा स्वयंभ जो जीवें लाठ। सावायेंवीण उद्भट। तें शौर्य गा जेथ श्रेष्ठ। पहिला गुण।५७। आणि सूर्याचेनि प्रतापें। कोडिही नक्षत्र हारपे। ना तो तरी न लोपे। सचंद्रीं तिहीं।५८। तैसेनि आपुले प्रौढिगुणें। जगा या विस्मय देणें। आपण तरी न क्षोभणें। कायसेनही।५९। तें प्रागल्भ्यरूप तेजा। जिये कर्मी गुण दुजा। आणि धीर तो तिजा। जेथींचा गुण।८६०। वरिपडलिया आकाश। बुद्धीचे डोळे मानस। झांकी ना तें परियेस। धैर्य जेथें।६१। आणि पाणी हो का भलतेतुकें। परी तें जिणौनि पद्म फांके। का आकाश उंचिया जिंके। आवडे तयातें।६२। तेवीं विविधा अवस्था। पातलिया जिणौनि पार्था। प्रज्ञा फळतया अर्था। वेझ देणें जें।६३। तें दक्षत्व गा चोख। जेथ चौथा गुण देख। आणि जुंझ अलौकिक। पांचवा गुण।६४। आदित्याची झाडें। सदा सन्मुख सूर्याकडे। तेवीं समोर शत्रूपुढें। होणें जें का।६५। माहेवणी प्रयत्नेंसीं। चुकविजे सेजे जैसी। रिपू पाठी नेदिजे तैसी। समरांगणीं।६६। हा क्षत्रियाचेया आचारीं। पांचवा गुणेंद्र अवधारीं। चहूं पुरुषार्थां शिरीं। भक्ति जैसी।६७। आणि जालेनि फुलें फळें। शाखिया जैसीं मोकळे। का उदार परिमळें। पद्माकर।६८। नाना आवडीचेनि मापें। चांदिणें भलतेणें घेपे। पुढिलांचेनि संकल्पें। तैसें जें देणें।६९। तें उमप गा दान। जेथ सहावें गुणरत्न। आणि आज्ञें एकायतन। होणें जें का।८७०। पोषूनि अवयव आपुले। करविजती मानविले। तेवीं पालणें लोभविलें। जग जें भोगणें।७१। तया नाम ईश्वरभावो। जो सर्वसामर्थ्याचा ठावो। तो गुणांमाजीं रावो। सातवा जेथ।७२। ऐसें जे शौर्यादिकीं। इंहीं सात गुणविशेखीं। अळंकृत सप्तऋखीं। आकाश जैसें।७३। तैसें सप्तगुणीं विचित्र। कर्म जें जगीं पवित्र। तें सहज जाण क्षात्र। क्षत्रियाचें।७४। नाना क्षत्रिय नव्हे नरू। तो सत्त्वसोनयाचा मेरू। म्हणौनि गुणस्वर्गा आधारू। सातां यियां।७५। नातरी सप्तगुणार्णवीं। परिवारली बरवी। हे क्रिया नव्हे पृथ्वी। भोगितसे तो।७६। का गुणांचे सातांही ओघीं। हे क्रिया ते गंगा जगीं। तया महोदधीचिया आंगीं। विलसे जैसी।७७। परी हें बहु असो देख। शौर्यादि गुणात्मक। कर्म गा नैसर्गिक। क्षत्रजातीसी।७८। आतां वैश्याचिये जाती। उचित जे महामती। ते ऐकें निरुती। क्रिया सांगों।७९।

कृषिगोरक्ष्यवाणिज्यं वैश्यकर्म स्वभावजम्।
परिचर्यात्मकं कर्म शूद्रस्यापि स्वभावजम्।४४।

तरी भूमि बीज नांगर। यया भांडवलाचा आधार। घेऊनि लाभ अपार। मेळवणें जें।८८०। किंबहुना कृषीजिणें। गोधनें राखोनि वर्तणें। का समर्घाची विकणें। महार्घ वस्तू।८१। येतुलालाचि पांडवा। वैश्यातें कर्माचा मेळावा। हा वैश्यजातिस्वभावा–। आंतुला जाण।८२। आणि वैश्य क्षत्रिय ब्राह्मण। हे द्विजन्मे तीन्ही वर्ण। ययांचे जें शुश्रूषण। तें शूद्रकर्म।८३। पैं द्विजसेवेपरौतें। धांवणें नाहीं शूद्रातें। एवं चतुर्वर्णोचितें। दाविली कर्मे।८४।

स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः।
स्वकर्मनिरतः सिद्धिं यथा विंदति तच्छृणु।४५।

आतां इयेचि विचक्षणा। वेगळालिया वर्णा। उचित जैसें करणां। शब्दादिक।८५। नातरी जळदच्युता। पाणिया उचित सरिता। सरितेसी पांडुसुता। सिंधु उचित।८६। तैसें वर्णाश्रमवशें। जें करणीय आलें असे। गोरेया आंगा जैसें। गोरेपण।८७। तया स्वभावविहिता कर्मा। शास्त्राचेनि मुखें वीरोत्तमा। प्रवर्तावयालागीं प्रमा। अढळ किजे।८८। पैं आपुलेंचि रत्न थितें। घेपे पारखियाचेनि हातें। तैसें स्वकर्म आपैतें। शास्त्रें करावें।८९। जैसी दिठी असे आपुलिया ठाईं। परी दीपेंवीण भोग नाहीं। मार्गूं न लाहता काई। पाय असतां होय?।८९०। म्हणौनि ज्ञातिवशें साचार। सहज असे जो अधिकार। तो आपुलालिया शास्त्रें गोचर। आपण किजे।८९१। मग घरींचाचि ठेवा। जेवीं डोळ्यां दावी दिवा। तरी घेतां काय पांडवा। आडळ असे?।८९२। तैसें स्वभावें भागा आलें। वरी शास्त्रें खरें केलें। तें विहित जो आपुलें। आचरे गा।८९३। परी आळस सांडुनि। फळकाम दवडुनि। गांगें जीवें मांडुनि। तेथेंचि भरू।८९४। वोघीं पडिलें पाणी। नेणे आनानी वाहणी। तैसा जाय आचरणीं। व्यवस्थौनि।८९५। अर्जुना जो यापरी। तें विहित कर्म स्वयें करी। तो मोक्षाच्या ऐलतीरीं। पैठा होय।८९६। जे अकरणा आणि निषिद्धा। न वचेचि कांहीं संबंधा। म्हणौनि भवा विरुद्धा। मुकला तो।८९७। आणि काम्यकर्माकडे। न परतेचि जेथ कोडें। तेथ चंदनाचेही खोडें। न लेचि तो।८९८। येर नित्य कर्म तंव। फळत्यागें वेंचिलें सर्व। म्हणौनि मोक्षाची शींव। ठाकू लाहे।८९९। ऐसेनि शुभाशुभीं संसारीं। सांडिला तो अवधारीं। वैराग्य मोक्षद्वारीं। उभा ठाके।९००। जें सकळभाग्याची सीमा। मोक्षलाभाची जे प्रमा। नाना कर्ममार्गश्रमा। शेवटू जेथ।१। मोक्षफळें दिधलीं वोल। जें सुकृततरूचें फूल। तयें वैराग्यीं ठेवी पाउल। भंवरू जैसा।२। पाहीं आत्मज्ञानसुदिनाचा। वाधावा सांगतया अरुणाचा। उदय त्या वैराग्याचा। ठावो पावे।३। किंबहुना आत्मज्ञान। जेणें हातां ये निधान। तें वैराग्य दिव्यांजन। जीवें ले तो।४। ऐसी मोक्षाची योग्यता। सिद्धी जाय तया पांडुसुता। अनुसरोनि विहिता। कर्मा यया।५। हें विहित कर्म पांडवा। आपुला अनन्य वोलावा। आणि हेचि परमसेवा। मज सर्वात्मकाची।६। पैं आघवाची भोगेंसीं। पतिव्रता क्रीडें प्रियेंसीं। कीं तयाचि नामें जैंसीं। तपें तियां केली।७। का बाळका एकी माये–। वांचोनि जिणें काय आहे?। म्हणौनि सेविजे कीं तो होये। पाटाचा धर्म।८। नाना पाणी म्हणौनि मासा। गंगा न सांडितां जैसा। सर्वतीर्थ सहवासा। वरपडा जाला।९। तैसें आपलिया विहिता। उपाय असे न विसंबतां। ऐसा किजे कीं जगन्नाथा। आभार पडे।९१०। अगा जयाचें विहित। तें ईश्वराचें मनोगत। म्हणौनि केलिया निभ्रांत। सांपडेचि तो।११। पैं जीवाचे कसीं उतरली। ते दासी कीं गोसांवीण जाली। तैसी सेवेची तया मवली। वही जेवीं।१२। तैसें स्वामीचिया मनोभावा। न चुकिजे हेचि परमसेवा। येर तें गा पांडवा। वाणिज्य करणें।१३।

यतः प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम्।
स्वकर्मणा तमभ्यर्च सिद्धिं विंदति मानवः।४६।

म्हणौनि विहित क्रिया केली। नव्हे तयाची खूण पाळिली। जयापासूनि का आलीं। आकारा भूतें।१४। जो अविद्येचिया चिंधिया। गुंडूनि जीव बाहुलिया। खेळवितसे तिगुणिया। अहंकाररज्जू।१५। जेणें जग हे समस्त। आंतबाहेरी पूर्ण भरित। जालें आहे दीपजात। तेजें जैसें।१६। तया सर्वात्मका ईश्वरा। स्वकर्मकुसुमांची वीरा। पूजा केली होय अपारा। तोषालागीं।१७। म्हणौनि तिये पूजे। रिझलेनि आत्मराजे। वैराग्यसिद्धी देयिजे। पसाय तया।१८। जिये वैराग्यदशें। ईश्वराचेनि वेधवशें। हें सर्वही नावडे जैसें। वांत होत।१९। प्राणनाथाचिया आधी। विरहिणीतें जिणेंही बाधी। तैसें सुखजात त्रिशुद्धीं। दुःखचि लागे।९२०। सम्यक्ज्ञान नुदेजतां। वेधेंचि तन्मयता। उपजे ऐसी योग्यता। बोधाची लाहे।२१। म्हणौनि मोक्षलाभालागीं। जो व्रतें वाहतसे आंगीं। तेणें स्वधर्म आस्था चांगी। अनुष्ठावा।२२।

श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्।
स्वभावनियतं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम्।४७।

अगा आपला हा स्वधर्म। आचरणीं जरी विषम। तरी पाहावा तो परिणाम। फळेल जेणें।२३। जें सुखालागीं आपणपयां। निंबचि आथी धनंजया। तैं कडुवटपणा तयाचिया। उबगिजेना।२४। फळणया ऐलीकडे। केळीतें पाहातां आस मोडे। ऐसी त्यजिली तरी जोडे। तैसें के गोमटे।२५। तेवीं स्वधर्मसांकडूं। देखोनि केला जरी कडू। तरि मोक्षसुरवाडू। अंतरला कीं।२६। आणि आपली माये। कुब्ज जरी आहे। तरी जिये तें नोहे। स्नेह कुऱ्हें कीं।२७। येरी जिया पराविया। रंभेहूनि बरविया।

तिया काय कराविया। बाळकें तेणें? ।२८। अगा पाणियाहूनि बहुवें। तुपीं गुण कीर आहे। परी मीना काय होये। असणें तेथ? ।२९। पैं आघविया जगा जें विख। तें विखकीडिया पीयूख। आणि जगा गूळ तें देख। मरण दे तया ।६३०। म्हणौनि जे विहित जया जेणें। फिटे संसाराचे धरणें। क्रिया कठोर तऱ्ही तेणें। तेचि करावी ।३१। येरा पराचारा बरविया। ऐसें होईल टेंकलेया। पायांचें चालणें डोइया। केलें जैसें ।३२। यालागीं कर्म आपलें। जें जातिस्वभावें असे आले। तें करी तेणें जिंतिलें। कर्मबंधातें ।३३। आणि स्वधर्मचि पाळावा। परधर्म तो गाळावा। हा नेमही पांडवा। न किजेचि पैं? ।३४। तरी आत्मा दृष्ट नोहे। तंव कर्म करणें कां ठाये। आणि करणें तेथ आहे। आयास आधीं ।३५।

सहजं कर्म कौंतेय सदोषमपि न त्यजेत्।
सर्वारंभा हि दोषेण धूमेनाग्निरिवावृताः ।४८।

म्हणौनि भलतिये कर्मीं। आयास जऱ्हीं उपक्रमीं। तरी काय स्वधर्मीं। दोष सांगे? ।३६। अगा उजू वाटा चालावें। तऱ्ही पायचि शिणवावे। ना आडरानें धांवावें। तऱ्ही तेंची ।३७। पैं शिळा का सिदोरिया। दाटणें एक धनंजया। परी जें वाहतां विसावया। मिळिजे तें घेपे ।३८। येरव्हीं कणा आणि भुसा। कांडितांही सोस सरिसा। जेंचि रंधन श्वानमांसा। तेंचि हवी ।३९। दधी जळाचिया घुसळणा। व्यापार सारिखेचि विचक्षणा। वाळुवे टिळा घाणा। गाळणें एक ।६४०। पैं नित्यहोम देयावया। का सैरा आगी सुवावया। फुंकितां धूम धनंजया। साहणें तेंचि ।४१। परी धर्मपत्नी धांगडी। पोसितां जरी एकी वोढी। तरी का अपरवडी। आणावी आंगां? ।४२। हां गा पाठीं लागला घाई। मरण न चुकेचि पाहीं। तरी समोरली काई। आगळें न किजे? ।४३। कुळस्त्री दांडयाचे घाये। परघर रिगालीही जरी साहे। तरी स्वपतीतें वायें। त्यजिलें कीं? ।४४। तैसें आवडतेंही करणें। न निपजे शिणल्याविणें। तरी विहित बा रे कोणें। बोलें भारी? ।४५। वरी थोडेचि अमृत घेतां। सर्वस्व वेंचो का पांडुसुता। जेणें जोडे जीविता। अक्षयत्व ।४६। येर कांह्या मोलें वेंचूनी। विष पियावें घेउनी। आत्महत्येसि निमोनी। जायिजे जेणें ।४७। तैसें जाचूनियां इंद्रियें। वेंचूनि आयुष्याचेनि दियें। सांचले पापी आन आहे। दुःखावांचूनी? ।४८। म्हणोनि करावा स्वधर्म। जो करितां हिरोनि घे श्रम। उचित देईल परम। पुरुषार्थराज ।४९। याकारणें किरीटी। स्वधर्माचिये राहटी। न विसंबिजे संकटीं। सिद्धमंत्र जैसा ।६५०। का नाव जैसी उदधीं। महरोगीं दिव्यौषधी। न विसंबिजे तया बुद्धी। स्वकर्म येथ ।५१। मग ययाचि गा कपिध्वजा। स्वकर्माचिया महापूजा। तोषला ईश तम रजा। झाडा करूनि ।५२। शुद्ध सत्त्वाचिया वाटा। आणी आपुली उत्कंठा। भव स्वर्ग काळकूटा। ऐसे दावी ।५३। जियें वैराग्य येणें बोलें। मागां संसिद्धी रूप केलें। किंबहुना तें आपुलें। मेळवी खागें ।५४। मग जिंतिलिया हे भोये। पुरुष सर्वत्र जैसा होये। का जालाही जें लाहे। तें आतां सांगों ।५५।

असक्तबुद्धिः सर्वत्र जितात्मा विगतस्पृहः।
नैष्कर्म्यसिद्धिं परमां संन्यासेनाऽधिगच्छति ।४९।

तरी देहादिक हें संसारें। सर्वही मांडलेंसे जे गुंफिरें। तेथ नातुडे तो वागुरे। वारा जैसा ।५६। पैं परिपाकाचिये वेळे। फळ देठें ना देठ फळें। न धरे तैसें स्नेह खुळें। सर्वत्र होय ।५७। पुत्र वित्त कलत्र। हे जालियाही स्वतंत्र। माझें न म्हणें पात्र। विषाचें जैसें ।५८। हें असो विषयजातीं। बुद्धि पोळली ऐसी माघौती। पाउलें घेउनि एकांतीं। हृदयाच्या रिघ। ऐसया अंतःकरण। बाह्य येतां तयाची आण। न मोडी समर्था भेण। दासी जैसी ।६६०। तैसें ऐक्याचिये मुठी–। माजिवडें चित्त किरीटी। करूनि वेधी नेहटी। आत्मयाच्या ।६१। तेव्हां दृष्टादृष्ट स्पृहे। निमणें जालेचि आहे। आगीं दडपलिया धुयें। राहिजे जैसें ।६२। म्हणौनि नियमिलिया मानसीं। स्पृहा नासोनि जाय आपैसी। किंबहुना तो ऐसी। भूमिका पावे ।६३। पैं अन्यथाबोध आघवा। मावळोनि तया पांडवा। बोधमात्रींचि जीवा। ठाव होय ।६४। धरवणी वेंचें सरे। तैसें भोगें प्राचीन पुरे। नवें तंव नुपकरे। कांहींचि करूं ।६५। ऐसी कर्मे साम्यदशा। होय तेथ वीरेशा। मग श्रीगुरु आपैसा। भेटेचि गा ।६६। रात्रीचि चौपाहारी। वेंचलिया अवधारीं। डोळ्यां तमारी। मिळे जैसा ।६७। का येऊनि फळाचा घड। पारुषवी केळीची वाढ। श्रीगुरू भेटोनि करी पाड। मुमुक्षू तैसा ।६८। मग आलिंगिला पूर्णिमा। जैसा उणीव सांडी चंद्रमा। तैसें होय वीरोत्तमा। गुरुकृपा तया ।६९। तेव्हां अबोधमात्र असे। तो तंव तया कृपा नाशे। तेथ निशिसवें जैसें। आंधारें जाय ।६७०। तैसी अबोधाचिये कुशी। कर्म कर्ता कार्य ऐशी। त्रिपुटी असे ते जैसी। गाभिणी मारिली ।७१। तैसेंचि अबोधनाशासवें। नाशे क्रियाजात आघवें। ऐसा समूळ संभवे। संन्यास हा ।७२। येणें मूळज्ञानसंन्यासें। दृश्याचा जेथ ठावो पुसे। तेथ बुझावें तें आपैसें। तोचि आहे ।७३। चेइलियावरी पाही। स्वप्नींचिया तिये डोहीं। आपणयातें काई। काढूं जाइजे? ।७४। तैं मी नेणें आतां जाणेन। हें सरलें तया दुःस्वप्न। जाला ज्ञातृज्ञेयाविहीन। चिदाकार ।७५। मुखाभासेंसीं आरिसा। परता नेलिया वीरेशा। पहातेपणेंवीण जैसा। पाहता ठाके ।७६। तैसें नेणणें जें गेलें। तेणें जाणणेंही नेलें। मग निष्क्रिय उरलें। चिन्मात्रची ।७७। तेथ स्वभावें धनंजया। नाहीं कोणीचि क्रिया।

म्हणौनि प्रवाद तया। नैष्कर्म्य ऐसा।७८। तें आपुले आपणपें। असतचि होऊनि हारपे। तरंग का वायुलोपें। समुद्र जैसा।७९। तैसें न होणें निपजे। ते नैष्कर्म्यसिद्धि जाणिजे। सर्वसिद्धींत सहजें। परम हेची।९८०। देउळाचिया कामा कळस। परम गंगेसी सिंधुप्रवेश। का सुवर्णशुद्धी कस। सोळावा जैसा।८१। तैसें आपुलें नेणणें। फेडिजे का जाणणें। तेंही गिळूनि असणें। ऐशी जे दशा।८२। तियेपरतें कांहीं। निपजणें येथ नाहीं। म्हणौनि म्हणिपे पाहीं। परमसिद्धि ते।८३। परी हेचि आत्मसिद्धि। जो कोणी भाग्यनिधि। श्रीगुरुकृपालब्धि–। काळीं पावे।८४।

सिद्धिं प्राप्तो यथा ब्रह्म तथाऽऽप्नोति निबोध मे।
समासेनैव कौंतेय निष्ठा ज्ञानस्य या परा।५०।

उदयजतांचि दिनकर। प्रकाशचि आते आंधार। का दीपसंगें कर्पूर। दीपचि होय।८५। तया लवणाची कणिका। मिळतखेंवो उदका। उदकचि होऊनि देखा। ठाके जेवीं।८६। का निद्रित चेवविलिया। स्वप्नेंसी नीद वायां। जाऊनि आपणपयां। मिळे जैसा।८७। तैसें जया कोण्हासि दैवें। गुरुवाक्यश्रवणाचिसवें। द्वैत गिळोनि विसंबे। आपणया वृत्ती।८८। तयासी मग कर्म करणे। हें बोलिजेलचि कवणें?। आकाशा येणेंजाणें। आहे काई?।८९। म्हणौनि तयासि कांहीं। त्रिशुद्धि करणें नाहीं। परी ऐसें जरी हें कांहीं। नव्हे जया।९९०। कानांवचनाचिये भेटी–। सरिसाचि पै किरीटी। वस्तु होऊनि उठी। कवणी एक जो।९१। येन्हवीं स्वकर्माचेनि वह्नीं। काम्यनिषिद्धाचिया इंधनीं। रज तम कीर दोन्हीं। जाळिलीं आधीं।९२। पुत्र वित्त परलोक। यया तिहींचा अभिलाख। घरीं होय पाइक। हेंही जालें।९३। इंद्रियें सैरा पदार्थीं। रिगतां विटाळली होती। तिये प्रत्याहारतीर्थीं। न्हाणिलीं कीर।९४। आणि स्वधर्माचे फळ। ईश्वरीं अर्पूनि सकळ। घेऊनि केलें अढळ। वैराग्यपद।९५। ऐसी आत्मसाक्षात्कारी। लाभे ज्ञानाची उजरी। ते सामग्री कीर पुरी। मेळविली।९६। आणि तेचि समयीं। सद्‌गुरू भेटले पाही। तेवींचि तिंहीं कांहीं। वंचिजेना।९७। परी वोखद घेतखेंवो। काय लाभे आपला ठावो?। का उदयजतांचि दिवो। मध्याह्न होय?।९८। सुक्षेत्रीं आणि वोलटें। बीजही पेरिलें गोमटें। तरीं आलोट फळ भेटे। परी वेळें कीं गा।९९। जोडला मार्ग प्रांजळ। मिनला सुसंगाचाही मेळ। तरी पाविजे वांचूनि वेळ। लागेचि कीं।१०००। तसा वैराग्यलाभ जाला। वरी सद्‌गुरूही भेटला। जीवीं अंकुर फुटला। विवेकाचा।१। तेणें ब्रह्म एक आथी। येर आघवीचि भ्रांती। हेही कीर प्रतीती। गाढ केली।२। परी तेंचि जें परब्रह्म। सर्वात्मक सर्वोत्तम। मोक्षाचेंही काम। सरे जेथ।३। यया तिन्हीं अवस्था पोटीं। जिरवी जें गा किरीटी। तया ज्ञानासिही मिठी। दे जें वस्तु।४। ऐक्याचें एकपण सरे। जेथ आनंदकणही विरे। कांहींचि नुरोनि उरे। जें कांहीं गा।५। तियें ब्रह्मीं ऐक्यपणें। ब्रह्मचि होऊनि असणें। तें क्रमेंचि करून तेणें। पाविजे पैं।६। भुकेलियापासीं। वोगरिलें षड्रसीं। तो तृप्ती प्रतिग्रासीं। लाहे जेवी।७। तैसा वैराग्याचा वोलावा। विवेकाचा तो दिवा। आंबुथितां आत्मठेवा। काढीचि तो।८। तरी भोगिजे आत्मऋद्धी। येवढी योग्यतेचि सिद्धी। जयाच्या आंगीं निरवधी। लेणें जाली।९। तो जेणें क्रमें ब्रह्म। होणें करी गा सुगम। तया क्रमाचें आतां वर्म। आईक सांगों।१०१०।

बुद्ध्या विशुद्धया युक्तो धृत्याऽऽत्मानं नियम्य च।
शब्दादीन्विषयांस्त्यक्त्वा रागद्वेषौ व्युदस्य च।५१।

तरी गुरू दाविलिया वाटा। येऊन विवेकतीर्थतटा। धुऊनियां मळकटा। बुद्धीचा तेणें।११। मग राहूनें उगळिली। प्रभा चंद्रें आलिंगिली। तैसी शुद्धत्वें जडली। आपणयां बुद्धि।१२। सांडूनि कुळें दोन्ही। प्रियासी अनुसरे कामिनी। द्वंद्वत्यागें स्वचिंतनीं। पडली तैसी।१३। आणि ज्ञानाऐसें जिव्हार। नेवों नेवों निरंतर। इंद्रियीं केले थोर। शब्दादिक जे।१४। तें रश्मिजाळ काढलेया। मृगजळ जाय लया। तैसें वृत्तिरोधें तयां। पांचांहीं केलें।१५। नेणतां अधमाचिया अन्ना। खादलिया किजे वमना। तैसीं वोकविलीं सवासना। इंद्रियें विषयीं।१६। मग प्रत्यगावृत्ती चोखटें। लाविलीं गंगेचेनि तटें। ऐसीं प्रायश्चित्तें धुवटें। केलीं येणें।१७। पाठीं सात्त्विकें धीरें तेणें। शोधारलीं तिये करणें। मग मनेसीं योगधारणें। मेळविली।१८। तेवींचि प्राचीनें इष्टानिष्टें। भोगेंसीं येऊनि भेटे। तेथ देखिलियाही वोखटें। द्वेष न करी।१९। ना गोमटेंचि विपायें। तें आणूनि पुढां सूयें। तयालागीं न होये। साभिलाष।१०२०। यापरी इष्टानिष्टीं। रागद्वेष किरीटी। त्यजूनि गिरिकपाटीं। निकुंजीं वसे।२१।

विविक्तसेवी लघ्वाशी यतवाक्कायमानसः।
ध्यानयोगपरो नित्यं वैराग्यं समुपाश्रितः।५२।

गजबजा सांडिलिया। वसवी वनस्थळिया। अंगाचिया मांदिया। एकलेया।२२। शमदमादिकीं खेळे। न बोलणेचि चावळे। गुरुवाक्याचेनि मेळें। नेणे वेळ।२३। आणि आंगा बळ यावें। ना तरी क्षुधा जावें। का जिभेचे पुरावे। मनोरथ।२४। भोजन करिताविखीं। यया तिहींतें न लेखी। आहारीं मिती संतोषीं। माप न सूये।२५। अनशनाचेनि पावकें। हारपतां प्राण पोखे। इतुकियाचि भाग मोटकें। अशन करी।२६। आणि परपुरुषें कामिली। कुळवधू आंग न घाली। निद्रालस्यां न मोकली। आसन

तैसें ।२७। दंडवताचेनि प्रसंगें। भुईं हन अंग लागे। वांचूनि येर नेघे। राभस्य तेथ ।२८। देहनिर्वाहापुरतें। राहाटवी हातापायांते। किंबहुना आपैतें। सबाह्य केलें ।२९। आणि मनाचा उंबरा। वृत्तीसी देखों नेदी वीरा। तेथ कें वाग्व्यापारा। अवकाश असे? ।१०३०। ऐसेनि देह वाचा मानस। हें जिणोनि बाह्यप्रदेश। आकळिलें आकाश। ध्यानाचें तेणें ।३१। गुरुवाक्यें उठविला। बोधीं निश्चय आपला। न्याहाळी हातीं घेतला। आरिसा जैसा ।३२। पैं ध्यातां आपणपेंचि परी। ध्यानरूप वृत्तिमाझारीं। ध्येयत्वें घे हे अवधारीं। ध्यानरूढी गा ।३३। तेथ ध्येय ध्यान ध्याता। ययां तिहीं एकरूपता। होय तंव पांडुसुता। किजे तें गा ।३४। म्हणौनि तो मुमुक्षू। आत्मज्ञानीं जाला दक्षू। परी पुढा सूनि पक्षू। योगाभ्यासाचा ।३५। अपानरंध्रद्वया–। माझारीं धनंजया। पार्ष्णी पिडूनियां। कांवरुमूळ ।३६। आकुंचूनि अध। देऊनि तिन्ही बंध। करूनि एकवद। वायुभेदा ।३७। कुंडलिनी जागऊनी। मध्यमा विकाशूनी। आधारादि भेदूनी। अग्नीवरी ।३८। सहस्रदळांचा मेघ। पीयूषें वर्षोनि चांग। तो मूळवरी वोघ। आणूनियां ।३९। नाचतया पुण्यगिरी। चिद्भैरवाच्या खापरीं। मनपवनाची खीच पुरी। वाढूनियां ।१०४०। जालिया योगाचा गाढा। मेळावा सूनि हा पुढां। ध्यान मागिलीकडां। स्वयंभ केलें ।४१। आणि ध्यान योग दोनी। इयें आत्मतत्त्वज्ञानीं। पैठीं होआवया निर्विघ्नीं। आधींचि तेणें ।४२। वीतरागतेसारिखा। जोडूनि ठेविला सखा। तो आघवियाचि भूमिकां–। सवें चाले ।४३। पहावें दिसे तंववरी। दिठीतें न संडी दीप जरी। तरीं कें अवसरी। देखावया? ।४४। तैसें मोक्षीं पवर्तलया। वृत्ती ब्रह्मीं जाय लया। तंव वैराग्य आथी तया। भंग कैचा? ।४५। म्हणौनि सवैराग्य। ज्ञानाभ्यास तो सभाग्य। करूनि जाला योग्य। आत्मलाभा ।४६। ऐसी वैराग्याची आंगीं। बाणूनियां वज्रांगी। राजयोगतुरंगीं। आरूढला ।४७। वरी आड पडिलें दिठी। सानें थोर निवटी। तें बळी विवेकमुष्टीं। ध्यानाचे खांडे ।४८। ऐसेनि संसाररणाआंत। आंधारीं सूर्य तैसा असे जात। मोक्ष विजयश्रिये वरैत। होआवयालागीं ।४९।

अहंकारं बलं दर्पं कामं क्रोधं परिग्रहम्।
विमुच्य निर्ममः शांतो ब्रह्मभूयाय कल्पते ।५३।

तेथ आडवावया आले। दोषवैरी जे धापटिले। तयांमाजीं पहिले। देहाहंकार ।१०५०। जो न मोकली मारूनी। जीवों नेदी उपजवोनी। विचंबवी खोडां घालुनी। हाडांचिया ।५१। तयाचा देहदुर्ग हा थारा। मोडोनि घेतला तो वीरा। आणि बळ हा दुसरा। मारिला वैरी ।५२। जो विषयाचेनि नांवें। चौगुणेंही वरी थांवे। जेणें मृतावस्था धांवे। सर्वत्र जगा ।५३। तो विषयविषाचा ठावो। आघविया दोषांचा रावो। परी ध्यानखङ्गाचा घावो। साहेल कैंचा? ।५४। आणि प्रिय विषयप्राप्ती। करी जया सुखाची व्यक्ती। तेचि घालूनि बुंथी। आंगीं जो वाजे ।५५। जो सन्मार्गा भुलवी। मग अधर्माच्या आडवी। सूनि वाघां सांपडवी। नरकादिकां ।५६। तो विश्वासें मारितां रिपू। निवटूनि घातला दर्पू। आणि जयाचा अहा कंपू। तापसांसी! ।५७। क्रोधा ऐसा महादोख। जयाचा देख परिपाक। भरिजे तंव अधिक। रिता होय जो ।५८। तो काम कोणेचठायीं। नसे ऐसें केलें पाहीं। कीं तेंचि क्रोधाही। सहजें आलें ।५९। मूळाचें तोडणें जैसें। होय का शाखोद्देशें। काम नाशलेनि नाशे। तैसा क्रोध ।१०६०। म्हणौनि काम वैरी। जाल जेथ ठाणोरी। तेथ सरली वारी। क्रोधाचीही ।६१। आणि समर्थ आपुला खोडा। शिसें वाहवी जैसा होडा। तैसा भुंजौनि जो गाढा। परिग्रहो ।६२। जो माथांची पालाणवी। अंगा अवगुण घालवी। जीवें दांडी घेववी। ममत्वाची ।६३। शिष्यशाखादिविलासें। मठादि मुद्रेचनि मिसें। घातले आहाती फांसे। निःसंगा जेणें ।६४। घरीं कुटुंबपणें सरे। तरी वनीं वन्य होउनी अवतरे। नागवीयाही शरीरें। लागला आहे ।६५। ऐसा दुर्जय जो परिग्रहो। तयाचा फेडूनि ठावो। भवविजयाचा उत्साहो। भोगितसे जो ।६६। तेथ अमानित्वादि आघवे। ज्ञानगुणाचे जे मेळावे। ते कैवल्यदेशींचे आघवे। राव जैसे आले ।६७। तेव्हां सम्यक्ज्ञानाचिया। राणिवा उगाणूनि तया। परिवार होऊनियां। राहत आंगें ।६८। प्रवृत्तीचिये राजबिदी। अवस्थाभेदप्रमदीं। कीजत आहे प्रतिपदीं। सुखाचें लोण ।६९। पुढां बोधाचिये कांबीवरी। विवेक दृश्याची मांदी सारी। योगभूमिका आरती करी। येती जैसिया ।१०७०। तेथ ऋद्धिसिद्धींची अनेगें। वृंदे मिळती प्रसंगें। तिये पुष्पवर्षीं आंगें। नाहातसे तो ।७१। ऐसेनि ब्रह्मैक्यासारिखें। स्वराज्य येतां जवळिके। झळंबित आहे हरीखें। तिन्ही लोक ।७२। तेव्हां वैरिया का मैत्रिया। तयासि माझे म्हणावया। समानता धनंजया। उरेचिही ना ।७३। हें ना भलतेणें व्याजें। तो जयाते म्हणे माझें। नोडवेचि कां दुजें। अद्वितीय जाला ।७४। पैं आपुलिया एकी सत्ता। सर्वही कवळूनियां पांडुसुता। कंहीं न लगती ममता। धाडिली तेणें ।७५। ऐसा जिंतिलिया रिपुवर्ग। अपमानिलिया हें जग। अपैसा योगतुरंग। स्थिर जाला ।७६। वैराग्याचें गाढलें। अंगत्राण होतें भलें। तेंही नावेक ढिलें। तेव्हीं करी ।७७। आणि निवटी ध्यानाचें खांडें। तें दुजें नाहींचि पुढें। म्हणूनि हात आसुडे। वृत्तीचाही ।७८। जैसें रसौषध खरें। आपुलें काज करूनि पुरे। आपणही नुरे। तैसें होतसे ।७९। देखोनि ठाकिताठावो। धांवता थिरावे पावो। तैसा ब्रह्मसामीप्यें थावो। अभ्यास सांडी ।१०८०। घडतां महोदधीसी। गंगा वेग सांडी जैसी। का कामिनी कांतापासीं। स्थिर होय ।८१। नाना फळतिये वेळे। केळीची वाढी मांटुळें। का गांवापुढें वळे। मार्ग जैसा ।८२। तैसा आत्मसाक्षात्कार। होईल देखोनि गोचर। ऐसा साधनहतियेर। हळूचि ठेवी ।८३। म्हणौनि ब्रह्मेंसीं तया। ऐक्याचा समो धनंजया। होतसे तैं उपाया। वोहट पडे ।८४। मग वैराग्याची गोंधळूक। जे

ज्ञानाभ्यासाचे वार्धक्य। योगफळाचाही परिपाक। दशा जे का।८५। ते शांति पैं गा सुभगा। संपूर्ण ये तयाचिया आंगा। तैं ब्रह्म होआवयाजोगा। होय तो पुरुष।८६। पुनवेहुनि चतुर्दशी। जेतुलें उणेपण शशी। का सोळेया ऊनी जैसी। पंधरावी वानी।८७। सागरींही पाणी वेगें। संचरे तें रूप गंगे। येर निश्चळ जें उगें। तें समुद्र जैसा।८८। ब्रह्मा आणि ब्रह्महोतिये। योग्यते तैसा पाड आहे। तेचि शांतीचेनि लाहे। हातें तो गा।८९। पैं तेंचि होणेनवीण। प्रतीती आलें जें ब्रह्मपण। ते ब्रह्म होती जाण। योग्यता येथ।१०९०।

ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न कांक्षति।
समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम्।५४।

ते ब्रह्मभावयोग्यता। तो मग पांडुसुता। आत्मबोध प्रसन्नता। पदीं बैसे।९१। जेणें निपजे रससोय। तो तापही जैं जाय। तैं ते का होये। प्रसन्न जैसी।९२। नाना भरतिया लगबगा। शरत्काळीं सांडिजे गंगा। कां गीत राहतां उपांगा। वोहट पडे।९३। तैसा आत्मबोधीं उद्यम। करितां होय जो श्रम। तोही जेथें शम। होऊनि जाय।९४। आत्मबोधप्रशस्ती। हे तिये दशेची ख्याती। ते भोगितसे महामती। योग्य तो गा।९५। तेव्हां आत्मत्वें शोचावें। कांहीं पावावया कामावें। हें सरलें समभावें। भरितें तया।९६। उदया येता गभस्ती। नाना नक्षत्रव्यक्ती। हारविजती दीप्ती। आंगिका जेवीं।९७। तेवीं उठतिया आत्मप्रथा। हे भूतभेदव्यवस्था। मोडीत मोडीत पार्था। वास पाहे तो।९८। पाटियेवरील अक्षरें। जैसीं पुसतां येती करें। तेवीं हारपती भेदांतरें। तयाचिये दृष्टी।९९। तैसेनि अन्यथाज्ञानें। जिये घेपती जागरस्वप्नें। तिये दोन्हीं केलीं लीनें। अव्यक्तामाजीं।११००। मग तेंही अव्यक्त। बोध वाढतां झिजत। पुरलां बोधी समस्त। बुडोनि जाय।१। जैसीं भोजनाच्या व्यापारीं। क्षुधा जिरत जाय अवधारीं। मग तृप्तीच्या अवसरीं। नाहींच होय।२। नाना चालीचिया वाढी। वाट होत जाय थोडी। मग पातलाठायीं बुडी। देऊनि निमे।३। कां जागृती जंव उद्दीपे। तंव तंव निद्रा हारपे। मग जागिनलिया स्वरूपें। नाहींच होय।४। हें ना आपुलें पूर्णत्व भेटे। जेथ चंद्रमा वाढी खुंटे। तेथ शुक्लपक्ष आटे। निःशेष जैसा।५। तैसा बोध्यजात गिळित। बोधबोधें ये मजआंत। मिसळला तेथ साद्यंत। अबोध गेला।६। तेव्हां कल्पांताचिये वेळे। नदी सिंधूचें पेंडवळें। मोडूनि भरिलें जळें। आब्रह्म जैसें।७। नाना गेलिया घटमठ। आकाश ठाके एकवट। कां जळोनि काष्ठें काष्ठ। वह्नीचि होय।८। नातरी लेणियाचे ठसे। आटोनि गेलिया मुसे। नामरूपभेदें जैसें। सांडिजे सोनें।९। हेंही असो चेइलया। हें स्वप्न नाहीं जालया। मग आपणचि आपणयां। उरिजे जैसें।१११०। तैसा मी एकवांचूनि कांहीं। तया तयाहीसकट नाहीं। हे चौथी भक्ती पाहीं। माझी तो लाहे।११। येर आर्त जिज्ञासु अर्थार्थी। हे भजती जिये पंथीं। ते तिन्ही पावोनि चौथी। म्हणिपत आहे।१२। येऱ्हवीं तिजी ना चौथी। हे पहिली ना सरती। पैं माझिये सहजस्थिति। भक्ति नाम।१३। जे नेणणें माझें प्रकाशूनि। अन्यथात्वें मातें दाऊनि। सर्वही सर्वी भजौनि। बुझावीतसे।१४। जो जेथ जैसें पाहों बसे। तया तेथ तैसेंचि असे। हें उजियेडें कां दिसे। अखंडें जेणें।१५। स्वप्नांचें दिसणें न दिसणें। जैसें आपलेनि असलेपणे। विश्वाचें आहे नाहीं जेणें। प्रकाशें तैसें।१६। तैसा हा सहज माझा। प्रकाश जो कपिध्वजा। तो भक्ति या वोजा। बोलिजे गा।१७। म्हणौनि आर्ताच्या ठायीं। हे आर्ति होऊनि पाही। अपेक्षणीय जें कांहीं। तें मीचि केला।१८। जिज्ञासुपुढां वीरेशा। हेचि होऊनि जिज्ञासा। मी जिज्ञास्यु ऐसा। दाखविला।१९। हेचि होऊनि अर्थना। मीचि माझ्या अर्थी अर्जुना। करूनि अर्थाभिधाना। आणी मातें।११२०। एवं घेऊनि अज्ञानातें। माझी भक्ति जे हे वर्ते। ते दावी मज दृष्टयातें। दृश्य करूनि।२१। येथें मुखचि दिसे मुखें। या बोला कांहीं न चुके। परी दुजेपण हें लटिकें। आरिसा करी।२२। दिठी चंद्रचि घे साचें। परी येतुलें हें तिमिराचें। जे एकचि असे तयाचे। दोनी दावी।२३। तैसा सर्वत्र मीचि मियां। घेपतसें धनंजया। परी दृश्यत्व हें वायां। अज्ञानवशें।२४। तें अज्ञान आतां फिटलें। माझें द्रष्टृत्व मज भेटलें। निजबिंबीं एकवटलें। प्रतिबिंब जैसें।२५। पैं जेव्हांही असे किडाळ। तेव्हांही सोनेचि अढळ। परी तें कीड गेलिया केवळ। उरे जैसें।२६। हां गा पूर्णिमे आधीं कायी। चंद्र सावयव नाहीं?। परी तिये दिवसीं भेटे पाहीं। पूर्णता तया।२७। तैसा मीचि अज्ञानद्वारें। दिसे परी हस्तांतरें। मग द्रष्टृत्वीं तें सरे। मियांचि मी लाभ।२८। म्हणौनि दृश्यपथा। अतीत माझा पार्था। भक्तियोग चवथा। म्हणितला गा।२९।

भक्त्या मामभिजानाति यावान्यश्चास्मि तत्त्वतः।
ततो मां तत्त्वतो ज्ञात्वा विशते तदनंतरम्।५५।

इया ज्ञानभक्ती सहज। भक्त एकवटला मज। तो मीचि केवळ हें तुज। श्रुतही आहे।११३०। जे उभऊनियां भुजा। ज्ञानिया तो आत्मा माझा। हें बोलिलो कपिध्वजा। सप्तमाध्यायीं।३१। ते हे कल्पादि भक्ति मियां। श्रीभागवतमिषें ब्रह्मया। उत्तम म्हणौनि धनंजया। उपदेशिली।३२। ज्ञानी इयेतें स्वसंविति। शैव म्हणती शक्ति। आम्ही परम भक्ति। आपली म्हणो।३३। हे मज मिळतिये वेळें। तयां कर्मयोगियां फळें। मग समस्तही निखळें। मियांचि भरे।३४। तेथ वैराग्य विवेकेंसीं। आटे बंध मोक्षेसीं। वृत्ती तये अवृत्तीसीं। बुडोनि जाय।३५। घेऊनि ऐलपणातें। परत्व हारपें जेथें। गिळूनि चाऱ्ही भूतें। आकाश जैसें।३६। तया परी थडथाद।

साध्यसाधनातीत शुद्ध। तें मी होऊनि एकवद। भोगितो मातें।३७। घडोनि सिंधूचिया आंगा। सिंधूवरी तळपे गंगा। तैसा पाड तया भोगा। अवधारिजो।३८। का अरिसयासी आरिसा। उठूनि दाविलिया जैसा। देखणा अतिशय तैसा। भोगणा तिये।३९। हें असो दर्पण नेलिया। तो मुखबोधही गेलिया। देखलेपण एकलेयां। आस्वादिजे जेवीं।११४०। चेइलया स्वप्न नाशे। आपलें ऐक्यचि दिसे। तें दुजेनवीण जैसें। भोगिजे का।४१। 'तेंचि जालिया भोग तयाचा। न घडे' हा भाव जयांचा। तिंहीं बोलें केवीं बोलाचा। उच्चार कीजे?।४२। तयांच्या नेणों गांवीं। रवी प्रकाश हन दिवीं!। कीं व्योमालागीं मांडवी। उभिली तिंहीं?।४३। हां गा राजन्यत्व नव्हतां आंगी। रावो रायपण काय भोगी। का आंधार हन आलिंगी। दिनकरातें?।४४। आणि आकाश जें नव्हे। तया आकाश काय जाणावे?। रत्नाच्या रूपीं मिरवे। गुंजांचें लेणें।४५। म्हणौनि मी होणें नाहीं। तया मीचि आहें केंही?। मग भजेल हें कायी। बोलों कीर?।४६। यालागीं तो क्रमयोगी। मी जालाचि मातें भोगीं। तारुण्य का तरुणांगी। जियापरी।४७। तरंग सर्वांगीं तोय चुंबी। प्रभा सर्वत्र विलसे बिंबीं। नाना अवकाश नभीं। लुंठत जैसा।४८। तैसा रूप होऊनि माझे। मातें क्रियावीण तो भजे। घनाकार कां सहजें। सोनयातें जेवीं।४९। का चंदनाची द्रुती तैसी। चंदनीं भजे अपैसी। का अकृत्रिम शशीं। चंद्रिका ते।११५०। जैसी क्रिया कीर न साहे। तऱ्ही अद्वैतीं भक्ति आहें। हें अनुभवाचिजोगें नव्हे। बोलाऐसें!।५१। तेव्हां पूर्वसंस्कारच्छंदें। जें कांहीं तो अनुवादे। तेणें आळविलेनि वोदें। बोलता मीची।५२। बोलतया बोलताचि भेटे। तेथें बोलेल हें न घटे। तें मौन तंव गोमटें। स्तवन माझें।५३। म्हणोनि तया बोलतां। बोली बोलता मी भेटतां। मौन होय तेणें तत्त्वतां। स्तवितो मातें।५४। तैसेंचि बुद्धी का दिठी। जें तो देखों जाय किरीटी। तें देखणें दृश्य लोटी। देखतेंचि दावी।५५। आरिसया आधीं जैसें। देखतेंचि मुख दिसे। तयाचें देखणें तैसें। मेळवी द्रष्टें।५६। दृश्य जाउनिया द्रष्टें। द्रष्टयासीचि जैं भेटे। तैं एकलेपणें न घटे। द्रष्टेपणही।५७। तेथ स्वप्नींचिया प्रिया। चेवोनि झोंबों गेलिया। ठाविजे दोन्हीं न होनियां। आपणचि जैसें।५८। का दोही काष्ठांचिये घृष्टी–। माजीं वह्नि एक उठी। तो दोन्हीं हे भाष आटी। आपणचि होय।५९। नाना प्रतिबिंब हातीं। घेऊं गेलिया गभस्ती। बिंबताही असती। जाय जैसी।११६०। तैसा मी होऊनि देखतें। तो घेऊं जाय दृश्यातें। तेथ दृश्य ने थितें। द्रष्टृत्वेंसीं।६१। रवि आंधार प्रकाशिता। नुरेचि जेवीं प्रकाश्यता। तेवीं दृश्यीं नाहीं द्रष्टृता। मी जालिया।६२। मग देखिजे ना न देखिजे। ऐसी जे दशा निपजे। तें तें दर्शन माझें। साचोकारें।६३। तें भलतयाही किरीटी। पदार्थाचिया भेटी। द्रष्टृदृश्यातीता दृष्टी। भोगितो सदा।६४। आणि आकाश हें आकाशें। दाटलें न ढळे जैसें। मियां आत्मेन आपणपें तैसें। जालें तया।६५। कल्पांतीं उदक उदकें। रुंधिलिया वाहों ठाके। तैसा आत्मेनि मियां येकें। कोंदला तो।६६। पावो आपणपयां वोळघे?। केवीं वह्नि आपणपयां लागे। आपणपां पाणी रिघे। स्नाना कैसे?।६७। म्हणौनि सर्व मी जालेपणें। ठेलें तया येणेंजाणें। तेंचि गा यात्रा करणें। अद्वया मज।६८। पैं जळावरील तरंग। जरी धाविन्नला सवेग। तरी नाहीं भूमिभाग। क्रमिला तेणें।६९। जें सांडावें का मांडावें। जें चालणें जेणें चालावें। तें तोयचि येक आघवें। म्हणोनियां।११७०। गेलियाही भलतेउता। उदकपणें पांडुसुता। तरंगाची एकात्मता। न मोडेचि जेवीं।७१। तैसा मीपणें हा लोटला। तो आघवेयाचि मज आला। या यात्रा होय भला। कापडी माझा।७२। आणि शरीर स्वभाववशें। कांहीं येक करूं जरी बैसे। तरी मीचि तो तेणें मिषें। भेटें तया।७३। तेथ कर्म आणि कर्ता। हे जाऊनि पांडुसुता। मियां आत्मेनि मज पाहतां। मीचि होय।७४। पैं दर्पणातें दर्पणें। पाहिलिया होय न पाहाणें। सोनें झांकिलिया सुवर्णें। न झांके जेवीं।७५। दीपातें दीपें प्रकाशिजे। तें न प्रकाशणेंचि निपजे। तैसें कर्म मियां किजे। तें करणें कैंचें?।७६। कर्मही करितचि आहे। जैं करावें हें भाष जाये। तैं न करणेचि होये। तयाचें केलें।७७। क्रियाजात मी जालेपणें। घडे कांहींचि न करणें। तयाचि नांव पूजणें। खुणेचें माझें।७८। म्हणौनि करितयाही वोजा। तें न करणें हेंचि कपिध्वजा। निपजें तिया महापूजा। पूजी तो मातें।७९। एवं तो बोले ते स्तवन। तो देखे तें दर्शन। अद्वया मज गमन। तो चाले तेंची।११८०। तो करी तेतुली पूजा। तो कल्पी तो जप माझा। तो निजे तेचि कपिध्वजा। समाधी माझी।८१। जैसें कनकेंसीं कांकणें। असिजे अनन्यपणें। तो भक्तियोगें येणें। मजसीं तैसा।८२। उदकीं कल्लोळ। कापुरीं परिमळ। रत्नीं उजाळ। अनन्य जैसा।८३। किंबहुना तंतूसीं पट। का मृत्तिकेसीं घट। तैसा तो येकवट। मजसीं माझा।८४। इया अनन्यसिद्धा भक्ती। या आघवाची दृश्यजातीं। मज आपणपेया सुमती। द्रष्टयातें जाणें।८५। तिन्हीं अवस्थांचेनि द्वारें। उपाध्युपहिताकारें। भावाभावरूप स्फुरे। दृश्य जें हें।८६। तें हें आघवेंचि मी द्रष्टा। ऐसिया बोधाचा माजिवटां। अनुभवाचा सुभटा। धेंडा तो नाचे।८७। रज्जु जालिया गोचर। आभासतां तो व्याळाकार। रज्जुच ऐसा निर्धार। होय जेवीं।८८। भांगारापरतें कांहीं। लेणें गुंजहीभरी नाहीं। हें आटुनियां ठायीं। किजे जैसें।८९। उदका येकापरतें। तरंग नाहींचि हें निरुतें। जाणोनि तया आकारातें। न घेपे जेवीं।११९०। नातरी स्वप्नविकारां समस्तां। चेउनियां उमाणें घेतां। तो आपणयापरौता। न दिसे जैसा।९१। तैसें जें कांहीं आथी नाथी। तेणें होय ज्ञेयस्फूर्ती। तें ज्ञाताचि मी हे प्रतीती। होऊनि भोगीं।९२। जाणे अज मी अजर। अक्षय मी अक्षर। अपूर्व मी अपार। आनंद मी।९३। अचळ मी अच्युत। अनंत मी अद्वैत। आद्य मी अव्यक्त। व्यक्तही मी।९४। ईश्य मी ईश्वर। अनादि मी अमर। अभय मी आधार। आधेय मी।९५। स्वामी मी सदोदित। सहज मी सतत। सर्व मी सर्वगत। सर्वातीत मी।९६। नवा मी पुराणू। शून्य मी संपूर्णू। अस्थूल मी अनणू। जें कांहीं तें

मी ।६७। अक्रिय मी एक। असंग मी अशोक। व्याप्त मी व्यापक। पुरुषोत्तम मी ।६८। अशब्द मी अश्रोत्र। अरूप मी अगोत्र। सम मी स्वतंत्र। ब्रह्म मी पर ।६६। ऐसें आत्मत्वें मज एकातें। इया अद्वयभक्ती जाणोनि निरुतें। आणि याहि बोधा जाणतें। तेंही मीचि जाणें ।१२००। पैं चेइलेयानंतरें। आपुलें एकपण उरे। तेंही तयावरी स्फुरे। तयाशीचिं जैसें ।१। का प्रकाशतां अर्क। तोचि होय प्रकाशक। तयाही अभेदा द्योतक। तोचि जैसा ।२। तैसा वेद्यांच्या विलयीं। केवळ वेदक उरे पाहीं। तेणें जाणवें तयातेंही। हेंही जो जाणें ।३। तया अद्वयपणा आपुलिया। जाणती ज्ञपती जे धनंजया। ते ईश्वरचि मी हे तया। बोधासि ये ।४। मग द्वैताद्वैतातीत। मीचि आत्मा एक निभ्रांत। हें जाणोनि जाणणें जेथ। अनुभवीं रिघे ।५। तेथ चेइलया येकपण। दिसे जें आपुलया आपण। तेंही जातां नेणों कोण। होइजे जेवीं ।६। का डोळां देखतियेक्षणीं। स्वरूपपण सुवर्णीं। नाठितां होय आटणी। अळंकाराचीही ।७। नाना लवण तोय होये। मग क्षारता तोयत्वें राहे। तेही जिरतां जेवीं जाये। जालेपण ते ।८। तैसा मी तो हें जें असे। तें स्वानंदानुभवसमरसें। कालवूनिया प्रवेशे। मजचिमाजीं ।६। आणि तो हे भाष जेथ जाये। तेथें मी हे कोण्हासी आहे?। ऐसा मी ना तो तिये सामाये। माझ्याचि रूपीं ।१२१०। तेव्हां कापुर जळों सरे। तयाचि नाम अग्नि पुरे। मग उभयातीत उरे। आकाश जेवीं ।११। कां धाडिलिया एकां एक। वाढे तो शून्य विशेख। तैसा आहेनाहीचा शेख। मीचि मग आथी ।१२। तेथ ब्रह्म आत्मा ईश। यया बोला मोडे सौरस। न बोलणें याही पैस। नाहीं तेथ ।१३। न बोलणेंही न बोलोनी। तें बोलिजे तोंड भरूनी। जाणीव नेणीव नेणोनी। जाणिजे तें ।१४। तेथ बुझिजे बोध बोधें। आनंद घेपे आनंदें। सुखवरी नुसधे। सुखचि भोगिजे ।१५। तेथ लाभ जोडला लाभा। प्रभा आलिंगिली प्रभा। विस्मय बुडाला उभा। विस्मयामाजीं ।१६। शम तेथ सामावला। विश्राम विश्रांती आला। अनुभव वेडावला। अनुभूतिपणें ।१७। किंबहुना ऐसें निखळ। मीपणा जोडे तया फळ। सेवूनि वेली वेल्हाळ। क्रमयोगाची ते ।१८। पैं क्रमयोगिया किरीटी। चक्रवर्तीच्या मुकुटीं। मी चिद्रत्न ते साटोवाटीं। होय तो माझा ।१६। कीं क्रमयोगप्रासादाचा। कळस जो हा मोक्षाचा। तया वरील अवकाशाचा। उवावो जाला तो ।१२२०। नाना संसारआडवीं। क्रमयोगवाट बरवी। जोडली ते मदैक्यगांवीं। पैठी जालीसे ।२१। हें असो क्रमयोगवोघें। तेणें भक्तिचिद्गंगें। मी स्वानंदोदधि वेगे। ठाकिला कीं गा ।२२। हा ठायवरी सुवर्मा। क्रमयोगीं आहे महिमा। म्हणौनि वेळोवेळां तुम्हां। सांगतों आम्ही ।२३। पैं देशें काळें पदार्थें। सोधूनि घेईजे मातें। तैसा नव्हें ती आथतें। सर्वांचें सर्वही ।२४। म्हणौनि माझ्या ठायीं। जाचावें न लगे कांहीं। मी लाभें इये उपायीं। साचचि गा ।२५। एक शिष्य एक गुरू। हा रूढला साच व्यवहारू। तो मत्प्राप्तिप्रकारू। जाणावया ।२६। अगा वसुधेच्या पोटीं। निधान सिद्ध किरीटी। वह्नि सिद्ध काष्ठीं। वोहां दूध ।२७। परी लाभें तें असते। ता कीजे उपायातें। येर सिद्धचि तैसा तेथें। उपायीं मी ।२८। हा फळवरी उपावो। कां पां प्रस्तावीतसे देवों। हें पुसतां तरी अभिप्रावो। येथींचा ऐसा ।२६। जे गीतार्थाचें चांगावें। मोक्षोपायपर आघवें। आन शास्त्रोपाय कीं नव्हे। प्रमाणसिद्ध ।१२३०। वारा आभाळचि फेडी। वांचून सूर्यातें न घडी। का हात बाबुळीं धाडी। तोय न करी ।३१। तैसा आत्मदर्शनीं आडळ। असे अविद्येचा जो मळ। तो शास्त्र नाशी येर निर्मळ। मी प्रकाशें स्वयें ।३२। म्हणौनि आघवींचि शास्त्रें। अविद्याविनाशाची पात्रें। वांचोनि न होती स्वतंत्रें। आत्मबोधीं ।३३। तया अध्यात्मशास्त्रांसीं। जें साचपणाची ये पुसी। तें येइजे जया ठायासी। ते हे गीता ।३४। भानुभूषिता प्राचिया। सतेजा दिशा आघविया। तैसी शास्त्रेश्वरा गीता या। सनाथें शास्त्रें ।३५। हें असो येणें शास्त्रेश्वरें। मागां उपाय बहुवे विस्तारें। सांगितला जैसा करें। घेवों ये आत्मा ।३६। परी प्रथमश्रवणासवें। अर्जुना विपायें हें फावें। हा भाव सकणवे। धरूनि श्रीहरी ।३७। तेंचि प्रमेय एक वेळ। शिष्यीं होआवया अढळ। सांगतसे मुकुळ–। मुदां आतां ।३८। आणि प्रसंगें गीता–। ठावही हा संपता। म्हणौनि दावी आद्यंता। एकार्थत्व ।३६। जे ग्रंथाच्या मध्यभागीं। नाना अधिकारप्रसंगीं। निरूपणा अनेगीं। सिद्धांतीं केलें ।१२४०। तरी तेतुलेही सिद्धांत। इये शास्त्रीं प्रस्तुत। हें पूर्वापार नेणत। कोण्ही जैं मानी ।४१। तैं महासिद्धांताचा आवांका। सिद्धांतकक्षा अनेका। भिडउनी आरंभ देखा। संपवीत असे ।४२। एथ अविद्यानाश हें स्थूळ। तेणें मोक्षापादन फळ। या दोहीं केवळ। साधन ज्ञान ।४३। हें इतुलेंचि नानापरी। निरूपिलें ग्रंथविस्तारीं। तें आतां दोहीं अक्षरीं। अनुवादावें ।४४। म्हणौनि उपेयही हातीं। जालया उपायस्थिति। देव प्रवर्तले तें पुढती। येणेंचि भावें ।४५।

सर्वकर्माण्यपि सदा कुर्वाणो मद्व्यपाश्रयः।
मत्प्रसादादवाप्नोति शाश्वतं पदमव्ययम् ।५६।

मग म्हणे गा सुभटां। तो कर्मयोगिया निष्ठा। मी होऊनी होय पैठा। माझ्या रूपीं ।४६। स्वकर्मांच्या चौखोळी। मज पूजा करूनि भली। तेणें प्रसादें आकळी। ज्ञाननिष्ठेतें ।४७। ते ज्ञाननिष्ठा जेथ हातवसे। तेथ भक्ति माझी उल्लासे। तिया मजसीं समरसें। सुखिया होय ।४८। आणि विश्वप्रकाशितया। आत्मया मज आपुलिया। अनुसरे जो करूनियां। सर्वत्रता हे ।४६। सांडूनि आपला आडळ। लवण आश्रयी जळ। का हिंडोनि राहे निश्चळ। वायु व्योमीं ।१२५०। तैसा बुद्धी वाचा कायें। जो मातें आश्रऊनि ठाये। तो निषिद्धेंही विपायें। कर्में करूं ।५१। परी गंगेच्या संबंधीं। बिदी आणि महानदी। ऐक्य तेवीं माझ्या बोधीं। शुभशुभांसी ।५२। का बावनें आणि घुरें। हा

निवाड तंवचि सरे। जंव न घेपती वैश्वानरें। कवळूनि दोन्ही।५३। नाना पांचिकें आणि सोळें। हें सोनया तंवचि आळें। जंव परिसें आंगमेळें। येकवटीना।५४। तैसें शुभाशुभ ऐसें। हें तंवचिवरी आभासे। जंव येक न प्रकाशें। सर्वत्र मी।५५। अगा रात्रि आणि दिवो। हा तंवचि द्वैतभावो। जंव न रिगिजे गांवो। गभस्तीचा।५६। म्हणौनि माझिया भेटी। तयाचीं सर्व कर्मे किरीटी। जाऊनि बैसे तो पाटीं। सायुज्याच्या।५७। देशें काळें स्वभावें। वेंच जया न संभवे। तें पद माझे पावे। अविनाश तो।५८। किंबहुना पांडुसुता। मज आत्मयाची प्रसन्नता। लाहे तेणें न पविजता। लाभ कवण असे?।५९।

चेतसा सर्वकर्माणि मयि संन्यस्य मत्परः।
बुद्धियोगमुपाश्रित्य मच्चित्तः सततं भव।५७।

याकारणें गा तुवां इया। सर्व कर्मा आपुलिया। माझ्या स्वरूपीं धनंजया। संन्यास कीजे।१२६०। परी तोचि संन्यास वीरा। करणीयाचा झणें करा। आत्मविवेकी धरा। चित्तवृत्ति हे।६१। मग तेणें विवेकबळें। आपणपें कर्मावेगळें। माझ्या स्वरूपीं निर्मळें। देखिजेल सर्व।६२। आणि कर्माची जन्मभोये। प्रकृति जे का आहे। ते आपणयाहूनि बहुवे। देखसी दूरीं।६३। तेथ प्रकृति आपणयां–। वेगळी नुरे धनंजया। रूपेंवीण का छाया। जयापरी।६४। ऐसेनि प्रकृतिनाश। जालया कर्मसंन्यास। निफजेल अनायास। सकारण।६५। मग कर्मजात गेलया। मी आत्मा उरे आपणपयां। तेथ बुद्धि घापे करूनियां। पतिव्रता।६६। बुद्धि अनन्य येणें योगें। मजमाजीं जै रिगे। तैं चित्त चैत्यत्यागें। मातेंचि भजे।६७। ऐसें चैत्यजातें सांडिलें। चित्त माझ्या ठायीं जडलें। ठाकें तैसे वहिलें। सर्वदा करी।६८।

मच्चित्तः सर्वदुर्गाणि मत्प्रसादात्तरिष्यसि।
अथ चेत्त्वमहंकारान्न श्रोष्यसि विनंक्ष्यसि।५८।

मग अभिन्ना इया सेवा। चित्त मियांचि भरेल जेव्हां। माझा प्रसाद जाण तेव्हां। संपूर्ण जाहाला।६९। तेथ सकळ दुःखधामें। भुंजिजती जियें मृत्युजन्में। तियें दुर्गमेंचि सुगमें। होती तुज।१२७०। सूर्याचेनि सावायें। डोळा सावाइला होये। तैं अंधाराचा आहे। पाड तया?।७१। तैसा माझेनि प्रसादें। जीवकण जयाचा उपमर्दे। तो संसाराचेनि बाधे। बागुलें केवीं?।७२। म्हणौनि धनंजया। तूं संसारदुर्गती यया। तरशील माझिया। प्रसादास्तव।७३। अथवा हन अहंभावें। माझें बोलणें हे आघवें। कानामनाचिये शिवे। नेदिसी टेंकों।७४। तरी नित्यमुक्त अव्यय। तूं आहासि तें होवूनि वाय। देहसंबंधाचा घाय। वाजेल आंगीं।७५। जया देहसंबंधाआंत। प्रतिपदीं आत्मघात। भुंजता उसंत। कांहींच नाहीं।७६। येवढेनि दारुणें। निमणेनवीण निमणें। पडेल जरी बोलणें। नेघसी माझें।७७।

यदहंकारमाश्रित्य न योत्स्य इति मन्यसे।
मिथ्यैष व्यवसायस्ते प्रकृतिस्त्वां नियोक्ष्यति।५९।

पथ्यद्वेषिया पोषी ज्वर। कां दीपद्वेषिया अंधकार। विवेकद्वेषें अहंकार। पोषूनि तैसा।७८। स्वदेहा नाम अर्जुन। परदेहा नाम स्वजन। संग्रामा नाम मलिन। पापाचार।७९। इया मती आपुलिया। तिघां तीन नामें ययां। ठेऊनियां धनंजया। न जुंझें ऐसा।१२८०। जीवामाजीं निष्टंक। करिसी जो आत्यंतिक। तो वाया धाडील नैसर्गिक। स्वभावचि तुझा।८१। आणि मी अर्जुन हे आत्मिक। ययां वध करणें हें पातक। हें मायावांचूनि तात्त्विक। कांहीं आहे?।८२। आधीं जुंझार तुवां होआवें। मग जुंझावया शस्त्र घेयावें। कां न जुंझावया करावें। देवांगण?।८३। म्हणौनि न जुंझणें। म्हणसी तें वायाणें। ना मानूं लोकपणें। लोकदृष्टीही।८४। तऱ्ही न जुंझे ऐसें। निष्टंकिसी जे मानसें। तें प्रकृति अनारिसें। करवीलची।८५।

स्वभावजेन कौंतेय निबद्धः स्वेन कर्मणा।
कर्तुं नेच्छसि यन्मोहात्करिष्यस्यवशोऽपि तत्।६०।

पैं पूर्वे वाहतां पाणी। पव्हिजे पश्चिमेचे वाहणीं। तरी आग्रहचि उरे तें आणी। आपुलिया लेखा।८६। का साळीचा कण म्हणे। मी नुगवें साळीपणें। तरी आहे आन करणें। स्वभावासी?।८७। तैसा क्षात्रसंस्कारसिद्धा। प्रकृती घडिलासी प्रबुद्धा। आतां नुठी म्हणसी हा धांदा। परी उठविजसीचि तूं।८८। पैं शौर्य तेज दक्षता। एवमादिक पांडुसुता। गुण दिधले जन्मतां। प्रकृती तुज।८९। तरी तयाचिया समवाया–। अनुरूप धनंजया। न करितां उगलिया। न येल असों।१२९०। म्हणौनियां तिहीं गुणीं। बांधलासि तूं कोदंडपाणी। त्रिशुद्धि निघसी वाहाणीं। क्षात्राचिया।९१। ना हें आपुलें जन्ममूळ। न विचारितचि केवळ। न जुंझें ऐसें अढळ। व्रत जरी घेसी।९२। तरी बांधोन हात पायें। जो रथी घातला होये। तो न चले तरी जाये। दिगंता जेवीं।९३। तैसा तूं आपुलियाकडूनी। मी कांहींच न करी म्हणौनी। ठासी परी भरवसेनीं। तूंचि करिसी।९४। उत्तर वैरटींचा राजा। पळतां तूं कां निघालासी जुंझा?। हा क्षात्रस्वभाव तुझा। जुंझवील तुज।९५। महावीर अकरा अक्षौहिणी। तुवा येकें नागविले

रणांगणीं। तो स्वभाव कोदंडपाणी। जुंझवील तूतें।६६। हां गा रोग कायी रोगिया। आवडे? दरिद्र दरिद्रिया?। परी भोगविजे बळिया। अदृष्टें जेणें।६७। तें अदृष्ट अनारिसें। न करील ईश्वरवशें। तो ईश्वरही असे। हृदयीं तुझ्या।६८।

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यंत्रारूढानि मायया।६१।

सर्व भूतांच्या अंतरीं। हृदय महाअंबरीं। चिद्वृत्तीच्या सहस्रकरीं। उदयला असे जो।६६। अवस्थात्रय तिन्ही लोक। प्रकाशूनि अशेख। अन्यथादृष्टि पांथिक। चेवविले।१३००। वेद्योदकाच्या सरोवरीं। फांकतां विषयकल्हारीं। इंद्रियषट्पदा चारी। जीवभ्रमरातें।१। असो रूपक हे तो ईश्वर। सकळ भूतांचा अहंकार। पांघरोनि निरंतर। उल्हासत असे।२। स्वमायेचें आडवस्त्र। लावूनि एकला खेळवी सूत्र। बाहेरी नटी छायाचित्र। चौऱ्यासीं लक्ष।३। तया ब्रह्मादिकीटांता। अषेशांही भूतजातां। देहाकार योग्यता। पाहोनी दावी।४। तेथ जे देह जयापुढें। अनुरूपपणें मांडे। तें भूत तया आरूढे। हें मी म्हणौनि।५। सूत सूतें गुंतलें। तृण तृणेंचि बांधिलें। का आत्मबिंबा घेतलें। बाळकें जळीं।६। तयापरीं देहाकारें। आपणपेंचि दुसरें। देखोनि जीव आविष्करे। आत्मबुद्धी।७। ऐसेनि शरीराकारीं। यंत्रीं भूतें अवधारी। वाहूनी हालवी दोरी। प्राचीनाची।८। तेथ जया जे कर्मसूत्र। मांडूनि ठेविलें स्वतंत्र। तें तिये गती पात्र। होंचि लागे।६। किंबहुना धनुर्धरा। भूतांतें स्वर्गसंसारा–। माजीं भोंवडी तृणें वारा। आकाशीं जैसी।१३१०। भ्रामकाचेनि संगें। जैसें लोहो वेढा रिगे। तैसीं ईश्वरसत्तायोगें। चेष्टती भूतें।११। जैसे चेष्टा आपुलालिया। समुद्रादिक धनंजया। चेष्टती चंद्राचिया। सन्निधी येकीं।१२। तया सिंधू भरितें दाटे। सोमकांता पाझर फुटे। कुमुदाचकोरांचा फिटे। संकोच तो।१३। तैसीं बीजप्रकृतिवशें। अनेकें भूतें येकें ईशें। चेष्टाविजती तो असे। तुझ्या हृदयीं।१४। अर्जुनपण न घेतां। मी ऐसें जें पांडुसुता। उठतसे तें तत्त्वतां। तयाचें रूप।१५। यालागीं तो प्रकृतीतें। प्रवर्तवील हें निरुतें। आणि ते जुंझवील तूतें। न जुंझसी जऱ्ही।१६। म्हणौनि ईश्वर गोसांवी। तेणें प्रकृति हे नेमावी। तिया सुखें राबवावीं। इंद्रियें आपुली।१७। तूं करणें न करणें दोन्ही। लावूनि प्रकृतीच्या मानीं। प्रकृतीही का अधीनी। हृदयस्था जया।१८।

तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत।
तत्प्रसादात्परां शांतिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्।६२।

तया अहं वाचा चित्त आंग। देऊनियां शरण रिग। महोदधी का गांग। रिगालें जैसे।१६। मग तयाचेनि प्रसादें। सर्वोपशांतिप्रमदे। कांत होऊनियां स्वानंदें। स्वरूपींच रमसीं।१३२०। संभूति जेणें संभवे। विश्रांति जेथें विसंबे। अनुभूतिही अनुभवे। अनुभवा जया।२१। तिये निजात्मपदींचा रावो। होऊनि ठाकसी अव्ययो। म्हणे लक्ष्मीनाहो। पार्था तूं।२२।

इति ते ज्ञानमाख्यातं गुह्याद्गुह्यतरं मया।
विमृश्यैतदशेषेण यथेच्छसि तथा कुरु।६३।

हें गीतानाम विख्यात। सर्ववाङ्मयाचें मथित। आत्मा जेणें हस्तगत। रत्न होय।२३। ज्ञान ऐसिया रूढी। वेदांतें जयाची प्रौढी। वानितां कीर्ती चोखडी। पातली जगीं।२४। बुद्ध्यादिकें डोळसें। हे जयाचे का कडवसे। मी सर्वद्रष्टाहि दिसें। पाहला जया।२५। तें हें गा आत्मज्ञान। मज गोप्याचेंही गुप्त धन। परी तूं म्हणूनि आन। केवीं करूं?।२६। याकारणें गा पांडवा। आम्ही आपला हा गुप्त ठेवा। तुज दिधला कणवा। जाकळिलेपणें।२७। जैसी भुलली वोरसें। माय बोले बाळादोषें। प्रीति ही परी तैसें। न करूंचि हो?।२८। येथ आकाश आणि गाळिजे। अमृताही साली फेडिजे। का दिव्याकरवीं करविजे। दिव्य जैसें।२६। जयाचेनि अंगप्रकाशें। पाताळींचा परमाणु दिसे। तया सूर्याही का जैसें। अंजन सुदलें।१३३०। तैसें सर्वज्ञेंही मियां। सर्वही निर्धारूनियां। निकें होय तें धनंजया। सांगितलें तुज।३१। आतां तूं ययावरी। निकें हें निर्धारीं। निर्धारूनि करीं। आवडे तैसें।३२। यया देवाचिया बोला। अर्जुन उगाचि ठेला। तेथ देवो म्हणती भला। अवंचक होसी।३३। वाढितया पुढें भुकेला। उपरोधें म्हणे धाला। तैं तोचि पीडे आपला। आणि दोषही तया।३४। तैसा सर्वज्ञ श्रीगुरू। भेटलिया आत्मनिर्धारू। न पुसिजे जैं आभारू। धरूनियां।३५। तैं आपणपेंचि वंचे। आणि पापही वंचनाचें। आपणयाचि साचे। चुकविलें तेणे।३६। पैं उगेपणा तुझिया। हा अभिप्रावो कीं धनंजया। जें एकवेळ आवांकुनियां। सांगावें ज्ञान।३७। तेथ पार्थ म्हणे दातारा। भलें जाणसी माझिया अंतरा। हें म्हणो तरी दुसरा। जाणता असे काई?।३८। येर ज्ञेय हें जी आघवें। तूं ज्ञाता येकचि स्वभावें। मा सूर्य म्हणौनि वानावें। सूर्यातें काई?।३६। या बोला श्रीकृष्णें। म्हणितलें काय येणें। हेंचि थोडे गा वानणें। जें बुझतासि तूं।१३४०।

सर्वगुह्यतमं भूयः शृणु मे परमं वचः।
इष्टोऽसि मे दृढमिति ततो वक्ष्यामि ते हितम्।६४।

तरी अवधान पघळ। करूनियां आणीक एक वेळ। वाक्य माझें निर्मळ। अवधारीं पां।४१। हें वाच्य म्हणोनि बोलिजे। का श्राव्य मग आयिकिजे। तैसें नव्हे परी तुझें। भाग्य बरवें।४२। कूर्मीचिया पिलियां। दिठी पान्हा ये धनंजया। आकाश वाहे बापिया। घरींचे पाणी।४३। जो व्यवहार जेथ न घडे। तयाचें फळ तेथ जोडे। काय दैवें न सांपडे। सानुकूळें?।४४। येरवीं द्वैताची वारी। सारूनि ऐक्याच्या परिवरीं। भोगिजे तें अवधारीं। रहस्य हें।४५। आणि निरुपचारा प्रेमा। विषय होय जे प्रियोत्तमा। तें दुजें नव्हे कीं आत्मा। ऐसेंचि जाणावें।४६। आरिसाचिया देखिलया। गोमटें किजे धनंजया। तें तया नोहे आपणयां–। लागीं जैसें।४७। तैसें पार्था तुझेनि मिषें। मी बोलें आपणयाचि दोषें। माझ्या तुझ्या ठाईं असे। मीतूंपणा गा?।४८। म्हणौनि जिव्हारींचें गुज। सांगतसें जीवासीं तुज। हें अनन्यगतीचें मज। आथी व्यसन।४९। पैं जळा आपणपें देतां। लवण भुललें पांडुसुता। कीं आघवें तयाचें होतां। न लजेचि तें।१३५०। तैसा तूं माझ्या ठाईं। राखों नेणसीचि कांहीं। तरी आतां तुज काई। गोप्य मी करीं?।५१। म्हणौनि आघवींचि गूढें। जें पाऊनि अतिउघडें। तें गोप्य माझें चोखडें। वाक्य आईक।५२।

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।
मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसि मे।६५।

तरी बाह्य आणि अंतरा। आपुलिया सर्व व्यापारा। मज व्यापकातें वीरा। विषय करीं।५३। अघवा आंगीं जैसा। वायू मिळोनि आहे आकाशा। तूं सर्व कर्मी तैसा। मजसींचि अस।५४। किंबहुना आपुलें मन। करीं माझें एकायतन। माझेनि श्रवणें कान। भरूनि घालीं।५५। आत्मज्ञानें चोखडीं। संत जे माझी रूपडीं। तेथ दृष्टी पडो आवडी। कामिनी जैसी।५६। मी सर्ववस्तीचें वसौटें। माझीं नामें जियें चोखटें। तियें जीवा यावया वाटे। वाचेचिये लावीं।५७। हाताचें करणें। का पायांचें चालणें। तें होय मजकारणें। तैसें करीं।५८। आपुला अथवा परावा। ठायीं उपकरसी पांडवा। तेणें यज्ञें होयीं बरवा। याज्ञिक माझा।५९। हें एकैक शिकऊं काई?। पैं सेवकै आपल्या ठाईं। उरऊनि येर सर्वही। मी सेव्यचि करीं।१३६०। तेथ जाऊनि भूतद्वेख। सर्वत्र नमवैन मीचि येक। ऐसेनि आश्रय आत्यंतिक। लाहसी तूं माझा।६१। मग भरलेया जगाआंत। जाऊनि तिजयाची मात। होऊनि ठायील एकांत। आम्हांतुम्हां।६२। तेव्हां भलतिये अवस्थे। मी तूतें तूं मातें। भोगिसी ऐसें आइतें। वाढेल सुख।६३। आणि तिजें आडळ करितें। निमालें अर्जुन जेथें। तैं मीचि म्हणौनि तूं मातें। पावसी शेखीं।६४। जैसी जळींची प्रतिभा। जळनाशीं बिंबा। येतां गाभागोभा। कांहीं आहे?।६५। पैं पवन अंबरा। का कल्लोळ सागरा। मिळतां आडवारा। कोणाचा गा?।६६। म्हणौनि तूं आणि आम्ही। हें दिसताहे देहधर्मी। मग ययाच्या विरामीं। मीचि होसी।६७। यया बोलामाझारीं। होय नव्हे झणें करी। येथ आन आथी तरी। तुझीच आण।६८। पैं तुझी आण वाहणें। हें आत्मलिंगातें शिवणें। प्रीतीची जाति लाजणें। आठवों नेदी।६९। येऱ्हवीं वेढूनि प्रपंच। जेणें विश्वाभास हा साच। आज्ञेचा नटनाच। काळातें जिणे।१३७०। तो देव मी सत्यसंकल्प। आणि जगाच्या हितीं बाप। मा आणेचा आक्षेप। का करावा?।७१। परी अर्जुना तुझेनि वेधें। मियां देवपणाचीं बिरुदें। सांडिलीं गा मी हें आधें। सगळेनि तुवां।७२। पैं काजा आपुलिया। रावो आपली आपणया। आण वाहे धनंजया। तैसें हें कीं।७३। तेथ अर्जुन म्हणे देवें। अचाट हे न बोलावें। जें आमचें काज नांवें। तुझेनि एकें।७४। यावरी सांगों बैससी। का सांगतां भाषही देसी। या तुझिया विनोदासी। पार आहे जी?।७५। कमळवना विकाशू। करी रवीचा एक अंशू। तेथ आघवाचि प्रकाशू। नित्य देतो।७६। पृथ्वी निवऊनि सागर। भरिजती येवढें थोर। वर्षे तेथ मिषांतर। चातक कीं।७७। म्हणौनि औदार्या तुझेया। मज निमित्त ना म्हणावया। प्राप्ति असे दानीराया। कृपानिधी।७८। तंव देव म्हणती राहे। या बोलाचा प्रस्ताव नोहे। पैं मातें पावसी उपायें। साचची येणें।७९। सैंधव सिंधू पडिलिया। जो क्षण धनंजया। तेणें विरचि कीं उरावया। कारण कायी?।१३८०। तैसें सर्वत्र मातें भजतां। सर्व मी होतां अहंता। निःशेष जाऊनि तत्त्वतां। मिचि होसी।८१। एवं माझिये प्राप्तीवरी। कर्मालागोनि अवधारीं। दाविली तुज उजरी। उपायांची।८२। जें आधी तंव पांडुसुता। सर्व कर्में मज अर्पितां। सर्वत्र प्रसन्नता। लाहिजे माझी।८३। पाठीं माझ्या इये प्रसादीं। माझें ज्ञान जाय सिद्धी। तेणें मिसळिजे त्रिशुद्धी। स्वरूपीं माझ्या।८४। मग पार्था तिये ठाईं। साध्य साधन होय नाहीं। किंबहुना तुज कांहीं। उरेचिना।८५। तरी सर्व कर्में आपली। तुवां सर्वदा मज अर्पिलीं। तेणें प्रसन्नता लाधली। आजी हे माझी।८६। म्हणोनि येणें प्रसादबळें। नवे जुंझाचेनि आडळें। न ठकेचि एकवेळें। भाळलों तुज।८७। जें सप्रपंच अज्ञान जाये। जेणें येक मी गोचर होयें। तें उपपत्तीचेनि उपायें। गीतारूप हें।८८। मियां ज्ञान तुज आपुलें। नानापरी उपदेशिलें। येणें अज्ञानजात सांडवलें। धर्माधर्म जें।८९।

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।६६।

आशा जैसी दुःखातें। व्याली निंदा दुरितें। हें असो जैसें दैन्यातें। दुर्भंगत्व।१३६०। तैसें स्वर्गनरकसूचक। अज्ञान व्यालें धर्मादिक। तें सांडूनि घाली अशेख। ज्ञानें येणें।६१। हातीं घेऊनि तो दोर। सांडिज जैसा सर्पाकार। का निद्रात्यागें घराचार। स्वप्नींचा जैसा।६२। नाना सांडिलेनि कवळें। चंद्रींचें धुपे पिवळें। व्याधित्यागें कडुवाळे–। पण मुखाचें।६३। अगा दिवसा पाठी देउनी। मृगजळ घापे त्यजूनी। का काष्ठत्यागें वह्नी। त्यजिजे जैसा।६४। तैसें धर्माधर्माचें टवाळ। दावी अज्ञान जें का मूळ। तें त्यजूनि त्यजीं सकळ। धर्मजात।६५। मग अज्ञान निमालिया। मीचि एक असें अपैसया। सनिद्र स्वप्न गेलया। आपणपें जैसें।६६। तैसा मी एकवांचूनि कांहीं। मग भिन्नभिन्न आन नाहीं। सोऽहंबोधें तयाच्या ठायीं। अनन्य होय।६७। पैं आपलेनि भेदेंवीण। माझें जाणिजे जें एकपण। तयाचि नांव शरण। मज येणें गा।६८। जैसें घटाचेनि नाशें। गगनीं गगन प्रवेशे। मज शरण येणें तैसें। ऐक्य करी।६९। सुवर्णमणि सोनया। ये कल्लोळ जैसा पाणिया। तैसा मज धनंजया। शरण ये तूं।१४००। वांचूनि सागराच्या पोटीं। वडवानळ शरण आला किरीटी। जाळूनि ठाके तया गोठी। वाळूनि दे पां।१। मजही शरण रिघिजे। आणि जीवत्वेंचि असिजे। धिग् बोलीं यिया न लजे। प्रजा केवीं?।२। अगा प्राकृताही राया। आंगीं पडे जे धनंजया। तें दासिरूंही कीं तया। समान होय।३। मा मी विश्वेश्वर भेटें। आणि जीवग्रंथी न सुटे। हे बोल नको वोखटे। कानीं लाऊं।४। म्हणौनि मी होऊनि मातें। सेवणें आहे आयितें। तैसें करीं हाता ये तें। ज्ञानें येणें।५। मग ताकौनिया काढिलें। लोणीं माघौतें ताकीं घातलें। परी न घेपेचि कांहीं केलें। तेणें जेवीं।६। तैसें अद्वयत्वें मज। शरण रिघालिया तुज। धर्माधर्म हे सहज। लागतीलना।७। लोहें उभें खाय माती। तें परिसाचिये संगती। सोनें जालिया पुढती। न शिविजे मळें।८। हें असो काष्ठापासोनि। मथूनी घेतलया वह्नी। मग काष्ठेंही कोंडोनी। न ठके जैसा।९। अर्जुना काय दिनकर। देखत आहे आंधार?। कीं प्रबोधीं होय गोचर। स्वप्नभ्रम?।१४१०। तैसें मजसी येकवटलेया। मी सर्वरूप वांचूनियां। आन कांहीं उरावया। कारण असे?।११। म्हणौनि तयाचें कांहीं। चिंतींना आपुल्या ठाईं। तुझें पापपुण्य पाहीं। मीचि होईन।१२। तेथ सर्वबंधलक्षणें। पापें उरावें दुजेपणे। तें माझ्या बोधी वायाणें। होऊनि जाईल।१३। जळीं पडिलिया लवणा। सर्वही जळ होय विचक्षणा। तुज मी अनन्यशरणा। होईन तैसा।१४। येतुलेनि अपैसया। सुटलाचि आहासि धनंजया। घेईं मज प्रकाशोनियां। सोडवीन तूतें।१५। याकारणें पुढती। हे आधी न वाहे चित्तीं। मज एकसि ये सुमती। जाणोनि शरण।१६। ऐसें सर्वरूपरूपसें। सर्वदृष्टिउोळसें। सर्वदेशनिवासें। बोलिलें श्रीकृष्णें।१७। मग सांवळा सकंकण। बाहु पसरोनि दक्षिण। आलिंगिला स्वशरण। भक्तराज तो।१८। न पवतां जयातें। काखे सूनि बुद्धीतें। बोलणें मागौतें। वोसरलें।१९। ऐसें जें कांहीं येक। बोला बुद्धीसिही अटक। तें द्यावया मिख। खेंवाचें केलें।१४२०। हृदया हृदय येक जालें। ये हृदयींचें ते हृदयीं घातलें। द्वैत न मोडितां केलें। आपणाऐसें अर्जुना।२१। दीपें दीप लाविला। तैसा परिष्वंग तो जाला। द्वैत न मोडितां केला। आपणपें पार्थ।२२। तेव्हां सुखाचा मग तया। पूर आला जो धनंजया। तेथ वाड तऱ्हीं बुडोनियां। ठेला देव।२३। सिंधु सिंधूतें पावों जाये। तें पावणें ठाके दुणा होये। वरी रिगे पुरवणिये। आकाशही।२४। तैसें तया दोघांचें मिळणें। दोघां नावरे, जाणावें कवणें?। किंबहुना श्रीनारायणें। विश्व कोंदलें।२५। एवं वेदाचें मूळसूत्र। सर्वाधिकारैकपवित्र। श्रीकृष्णें गीताशास्त्र। प्रकट केलें।२६। 'एथ गीता मूळ वेदां। ऐसें केवीं पां आलें बोधा?'। हें म्हणाल तरी प्रसिद्धा। उपपत्ति सांगों।२७। तरी जयाच्या निश्वासीं। जन्म झालें वेदराशीं। तो सत्यप्रतिज्ञ पैजेसीं। बोलिला स्वमुखें।२८। म्हणौनि वेदां मूळभूत। गीता म्हणों हें होय उचित। आणिकही येकी येथ। उपपत्ति असे।२९। जें न नशत स्वरूपें। जयाचा विस्तार जेथ लपे। तें तयाचें म्हणिपे। बीज जगीं।१४३०। तरी कांडत्रयात्मक। शब्दराशी अशेख। गीतेमाजीं असे रुख। बीजीं जैसा।३१। म्हणौनि वेदांचें बीज। श्रीगीता होय हें मज। गमे आणि सहज। दिसतही आहे।३२। जें वेदांचे तिन्हीं भाग। गीते उमटले असती चांग। भूषणरत्नीं सर्वांग। शोभलें जैसें।३३। तियेंचि कर्मादिकें तिन्ही। कांडें कोणेकोणे सीनीं। गीते आहाति तें नयनीं। दाखऊं आईक।३४। तरी पहिला जो अध्याय। तो शास्त्रप्रवृत्तिप्रस्ताव। द्वितीयीं सांख्यसद्भाव। प्रकाशिला।३५। मोक्षदानीं स्वतंत्र। ज्ञानप्रधान हे शास्त्र। येतुलालें दुजीं सूत्र। उभारिलें।३६। मग अज्ञानें बांधलेयां। मोक्षपदीं बैसावया। साधनारंभ तो तृतीया–। ध्यायीं बोलिला।३७। जे देहाभिमानबंधें। सांडूनि काम्यनिषिद्धें। विहित परी अप्रमादें। अनुष्ठावें।३८। ऐसेनि सद्भावें कर्म करावें। हा तिजा अध्यायीं देवें। निर्णय केला तें जाणावें। कर्मकांड येथ।३९। आणि तेंचि नित्यादिक। अज्ञानाचें आवश्यक। आचरतां मोचक। केंवी होय पां।१४४०। ऐसी अपेक्षा जालिया। बद्ध मुमुक्षुतें आलिया। देवें ब्रह्मार्पणत्वें क्रिया। सांगितली।४१। जें देहवाचामानसें। विहित निपजे जें जैसें। तें एक ईश्वरोद्देशें। कीजे म्हणितलें।४२। हेंचि ईश्वरीं कर्मयोगें। भजनकथनाचें खागें। आदरिलें शेषभागें। चतुर्थाचेनी।४३। तें विश्वरूप अकरावा। अध्याय संपे जंव आघवा। तंव कर्में ईश भजावा। हे जें बोलिलें।४४। तें अष्टाध्यायीं उघड। जाण येथें देवताकांड। शास्त्र सांगतसे आड। मोडूनि बोले।४५। आणि तेणेंचि ईशप्रसादें। श्रीगुरुसंप्रदायलब्धें। साच ज्ञान उद्बोधे। कोंवळें जें।४६। तें 'अद्वेष्टा'दिप्रभृतिकीं। अथवा

‘अमानित्वा’दिकीं। वाढविजे म्हणौनि लेखीं। बारावा गणूं।४७। तो बारावा अध्याय आदी। आणि पंधरावा अवधी। ज्ञानफळपाकसिद्धी। निरूपणासी।४८। म्हणौनि चहुंही इंहीं। ऊर्ध्वमूळांतीं अध्यायीं। ज्ञानकांड ये ठायीं। निरूपिजे।४६। एवं कांडत्रयरूपिणी। श्रुतीच हे कोडिसवाणी। गीतापद्यरत्नांची लेणीं। लेयिली आहे।१४५०। हें असो कांडत्रयात्मक। श्रुति मोक्षरूप फळ येक। बोभावे जें आवश्यक। ठाकावें म्हणौनि।५१। तयाचेनि साधन ज्ञानेंसीं। वैर करी जो प्रतिदिवशीं। तो अज्ञानवर्ग षोडशी। प्रतिपादिजे।५२। तोचि शास्त्राचा बोळावा। घेवोनि वैरी जिणावा। हा निरोप तो सतरावा। अध्याय येथ।५३। ऐसा प्रथमालागोनी। सतरावा लाणी करूनि। आत्मनिश्वास विवरूनी। दाविला देवें।५४। तया अर्थजातां अशेषां। केला तात्पर्याचा अवांका। तो हा अठरावा देखा। कलशाध्याय।५५। एवं सकळ सांख्यसिंधू। श्रीभगवद्गीता प्रबंधू। हा औदार्यें आगळा वेदू। मूर्त जाण।५६। वेद संपन्न होय ठाईं। परी कृपण ऐसा आन नाहीं। जे कानीं लागला तिहीं। वर्णांच्याची!।५७। येरां भवव्यथा ठेलियां। स्त्रीशूद्रादिकां प्राणियां। अनवसर मांडूनियां। राहिला आहे।५८। तरी मज पाहतां तें मागील उणें। फेडावया गीतापणें। वेद वेठला भलतेणें। सेव्य होआवया।५६। ना हें अर्थें रिगोनि मनीं। श्रवणें लागोनी कानीं। जपमिषें वदनीं। वसोनियां।१४६०। ये गीतेचा पाठ जो जाणें। तयाचेनी सांगातीपणें। गीता लिहोनि वाहणें। पुस्तकमिषें।६१। ऐसैसा मिसकटा। संसाराचा चोहटां। गवादि घालित चोखटा। मोक्षसुखाची।६२। परी आकाशीं वसावया। पृथ्वीवरी बैसावया। रविदीप्ती राहाटावया। आवार नभ।६३। तेवीं उत्तम अधम ऐसें। सेवितां कवणातेंही न पुसे। कैवल्यदानें सरिसें। निववीत जगा।६४। यालागीं मागिली कुटी। भ्याला वेद गीतेच्या पोटीं। रिगाला, आतां गोमटी। कीर्ति पातला।६५। म्हणौनि वेदाची सुसेव्यता। ते हे मूर्त जाण श्रीगीता। श्रीकृष्णें पांडुसुता। उपदेशिली।६६। परी वत्साचेनि वोरसें। दुभतें होय घरोद्देशें। जालें पांडवाचेनि मिषें। जगदुद्धरण।६७। चातकाचिये कणवे। मेघ पाणियेसीं धांवे। तेथ चराचर आघवें। निवाले जेवीं।६८। का अनन्यगतिकमळा। लागीं सूर्य ये वेळोवेळां। कीं सुखिया होइजे डोळा। त्रिभुवनींचा।६६। तैसें अर्जुनाचेनि व्याजें। गीता प्रकाशूनि श्रीराजें। संसारायेवढें थोर ओझें। फेडिले जगाचें।१४७०। सर्वशाखारत्नदीप्ती। उजळिता हा त्रिजगतीं। सूर्य नव्हे लक्ष्मीपती। वक्त्राकाशींचा?।७१। बाप कुळ तें पवित्र। जेथींचा पार्थ या ज्ञाना पात्र। जेणें गीता केलें स्वतंत्र। आवार जगा।७२। हें असो मग तेणें। सद्गुरुश्रीकृष्णें। पार्थाचें मिसळणें। आणिलें द्वैता।७३। पाठीं म्हणतसे पांडवा। शास्त्र हें मानलें कीं जीवा?। तेथ येरू म्हणे देवा। आपुलिया कृपा।७४। तरी निधान जोडावया। भाग्य घडे गा धनंजया। परी जोडिलें भोगावया। विपायें होय।७५। पैं क्षीरसागरायेवढें। अविरजी दुधाचें भांडें। सुरांअसुरां केवढें। मथितां जालें?।७६। तें साहसही फळा आलें। जें अमृतही डोळां देखिलें। परी वरिचिल चुकले। जतनेतें।७७। तेथ अमरत्वा वोगरिलें। तें मरणाचिलागीं जालें। भोगों नेणतां जोडलें। ऐसें आहे!।७८। नहुष स्वर्गाधिपति जाला। परी राहाटीं भांबावला। तो भुजंगत्व पावला। नेणसी कायी?।७६। म्हणौनि बहुत पुण्य तुवां। केलें तेणें धनंजया। आजी शास्त्रराजा इया। जालासि विषय।१४८०। तरी ययाचि शास्त्राचेनी। संप्रदायें पांघुरौनी। शास्त्रार्थ हा निकेनी। अनुष्ठीं हो।८१। येऱ्हवीं अमृतमथना–। सारिखें होइल अर्जुना। जरी रिघसी अनुष्ठाना। संप्रदायेवीण!।८२। गाय धड जोडे गोमटी। ते तैंचि पय दे किरीटी। जैं जाणिजे हातवटी। सांजवणीची।८३। तैसा श्रीगुरु प्रसन्न होये। शिष्य विद्याही कीर लाहे। परी ते फळे संप्रदायें। उपासिलिया।८४। म्हणौनि शास्त्रीं जो इये। उचित संप्रदाय आहे। तो ऐक आतां बहुवें। आदरेंसीं।८५।

इदं ते नातपस्काय नाभक्ताय कदाचन।
न चाशुश्रूषवे वाच्यं न च मां योऽभ्यसूयति।६७।

तरी तुवां हें जें पार्था। गीताशास्त्र लाधलें आस्था। तें तपोहीना सर्वथा। सांगावेना हो।८६। अथवा तापसही जाला। परी गुरुभक्तीं जो ढिला। तो वेदीं अंत्यज वाळिला। तैसा वाळीं।८७। नातरी पुरोडाशू जैसा। न घापे वृद्ध तरी वायसा। गीता नेदी तैसी तापसा। गुरुभक्तिहीना।८८। का तापही जोडे देहीं। भजे गुरुदेवांच्या ठाईं। परी आकर्णनीं नाहीं। चाड जरी।८६। तरी मागील दोही आंगीं। उत्तम होय कीर जगीं। परी या श्रवणालागीं। योग्य नोहे।१४६०। मुक्ताफळ भलतैसें। हो परी मुख्य नसे। तंव गुण प्रवेशे। तेथ कायी?।६१। सागर गंभीर होये। हें कोण ना म्हणत आहे?। परी वृष्टी वाया जाये। जाली तेथ।६२। धालिया दिव्यान्न सुवावें। मग जें वायां धाडावें। तें आर्ती कां न करावें। उदारपण?।६३। म्हणौनि योग्य भलतैसें। होत परी चाड नसे। तरी झणें वानिवसें। देसी हें तयां।६४। रूपाचा सुजाण डोळा। वोडवूं ये कायी परिमळा?। जेथ जें माने तें फळा। तेथचिये गा।६५। म्हणौनि तपी भक्ति। पहावे ते सुभद्रापति। परी शास्त्रश्रवणीं अनासक्ति। वाळावेचि ते।६६। नातरी तपभक्ति। होऊनि श्रवणीं आर्ति। आथी ऐसी ही आयती। देखसी जरी।६७। तरी गीताशास्त्रनिर्मिता। जो मी सकळलोकशास्ता। तया मातें सामान्यता। बोलेल जो।६८। माझ्या सज्जनेंसीं मातें। पैशुन्याचेनि आव्हाते। एक आहाती तयांतें। योग्य न म्हण।६६। तयांची येर आघवी। सामग्री ऐसी जाणावी। दीपेंवीण ठाणदिवी। रात्रीची जैसीं।१५००। अंग गोरे आणि तरुणें। वरी लेयिलें आहे लेणें। परी येकलेनि प्राणें। सांडिलें जेवीं।१। सोनयाचें सुंदर। निर्वाळिलें होय घर। परी सर्पांगना द्वार। रुंधलें

आहे ।२। निपजे दिव्यान्न चोखट। परी माजीं काळकूट। असो मैत्री कपट–। गर्भिणी जैसी ।३। तैसी तपभक्तिमेधा। तयाची जाण प्रबुद्धा। जो माझयांची का निंदा। माझीचि करी ।४। याकारणें धनंजया। तो भक्त मेधावी तपिया। तरी नको बापा इया। शास्त्रा आतळों देवों ।५। काय बहु बोलो निंदका। योग्य स्रष्टयाहीसारिखा। गीता हे कवतिका–। लागींही नेदी ।६। म्हणौनि तपाचा धनुर्धरा। तळीं दाटोनि गाडोरा। वरी गुरुभक्तीचा पुरा। प्रासाद जो जाला ।७। आणि श्रवणेच्छेचा पुढां। दारवंटा सदा उघडां। वरी कलश चोखडा। अनिंदारत्नांचा ।८।

य इदं परमं गुह्यं मद्भक्तेष्वभिधास्यति।
भक्तिं मयि परां कृत्वा मामेवैष्यत्यसंशयः ।६८।

ऐशा भक्तालयीं चोखटीं। गीतारत्नेश्वर हा प्रतिष्ठी। मग माझिया संवासाटीं। तुकसी जगीं ।९। का जें एकाक्षरपणेंसीं। त्रिमात्रकेचिया कुशी। प्रवण होता गर्भवासीं। सांकडला ।१५१०। तो गीतेचिया बाहाळीं। वेदबीज गेलें पाल्हाळीं। कीं गायत्री फुलीं फळीं। श्लोकांच्या आली ।११। ते हे मंत्ररहस्य गीता। मेळवी जो माझिया भक्ता। अनन्यजीवना माता। बाळका जैसी ।१२। तैसी भक्तांगीतेसीं। भेटी करी जो आदरेसीं। तो देहापाठीं मजसीं। येकचि होय ।१३।

न च तस्मान्मनुष्येषु कश्चिन्मे प्रियकृत्तमः।
भविता न च मे तस्मादन्यः प्रियतरो भुवि ।६९।

आणि देहाचेही लेणें। लेऊनि वेगळेपणें। असे तंव जीवेंप्राणें। तोचि पढिये ।१४। ज्ञानियां कर्मठां तापसां। यया खुणेचिया माणुसां–। माजीं तो एक गा जैसा। पढिये मज ।१५। तैसा भूतळीं आघवा। आन न देखें पांडवा। जो गीता सांगे मेळावा। भक्तजनांचा ।१६। मज ईश्वराचेनि लोभें। हे गीता पढतां अक्षोभें। जो मंडन होय सभे। संतांचिये ।१७। नवपल्लवी रोमांचित। मंदानिळें कांपवित। आमोदजळें वोसंडत। फुलांचे डोळें ।१८। कोकिळा कलरवाचेनि मिषें। सद्गद बोलवीत जैसें। वसंत का प्रवेशे। मद्भक्तआरामीं ।१९। का जन्माचें फळ चकोरां। होत जैं चंद्र ये अंबरा। नाना नवघन मयूरां। वा देत पावे ।१५२०। तैसा सज्जनांच्या मेळापीं। गीतापद्यरत्नीं उमपीं। वर्षे जो माझ्या रूपीं। हेतु ठेऊनी ।२१। मग तयाचेनि पाडें। पढियंतें मज फुडें। नाहींचि गा मागेंफुडें। न्याहाळितां ।२२। अर्जुना हा ठायवरी। मी तयातें सूयें जिव्हारीं। जो गीतार्थाचें करी। परगुणें संता ।२३।

अध्येष्यते च य इमं धर्म्यं संवादमावयोः।
ज्ञानयज्ञेन तेनाहमिष्टः स्यामिति मे मतिः ।७०।

पैं माझिया तुझिया मिळणीं। वाढीनली जे हे काहाणी। मोक्षधर्म का जिणीं। आलासे जेथें ।२४। तो हा सकळार्थप्रद। आम्हां दोघांचा संवाद। न करितां पदभेद। पाठेंचि जो पढे ।२५। तेणें ज्ञानानळीं प्रदीप्तीं। मूळ अविद्येचिया आहुतीं। तोषविला होय सुमती। परमात्मा मी ।२६। घेऊनि गीतार्थ उगाणा। ज्ञानिये जे विचक्षणा। ठाकिती तें गाणावाणा। गीतेचा तो लाहे ।२७। गीतापाठकासि असे। फळ अर्थज्ञाचिसरिसें। गीता माउलिये कीं नसे। जाणेतान्हें ।२८।

श्रद्धावाननसूयश्च श्रुणुयादपि यो नरः।
सोऽपि मुक्तः शुभाँल्लोकान्प्राप्नुयात्पुण्यकर्मणाम् ।७१।

आणि सर्वमार्गीं निंदा। सांडूनि आस्था पैं शुद्धा। गीताश्रवणीं श्रद्धा। उभारी जो ।२९। तयाच्या श्रवणपुटीं। गीतेची अक्षरें जंव पैठीं। होतीना तंव उठाउठी। पळेचि पाप ।१५३०। अटवियेमाजीं जैसा। वह्नि रिघतां सहसा। लंघिती का दिशा। वनौकें तियें ।३१। का उदयाचळकुळीं। झळकतां अंशुमाळी। तिमिरें अंतराळीं। हारपती ।३२। तैसा कानाच्या महाद्वारीं। गीता गजर जेथ करी। तेथ सृष्टीचिये आदिवरी। जायचि पाप ।३३। ऐसि जन्मवल्ली धुवट। होय पुण्यरूप चोखट। याहीवरी अचाट। लाहे फळ ।३४। जे इये गीतेची अक्षरें। जेतुली का कर्णद्वारें। रिघती तेतुले होती पुरे। अश्वमेध कीं ।३५। म्हणौनि श्रवणें पापें जाती। आणि धर्म धरी उन्नती। तेणें स्वर्गराज्य संपत्ती। लाहेचि शेखीं ।३६। तो पैं मज यावयालागीं। पहिलें पेणें करी स्वर्गीं। मग आवडे तंव भोगी। पाठीं मजचि मिळे ।३७। ऐसी गीता धनंजया। ऐकतया आणि पढतया। फळे महानंदें मियां। बहु काय बोलों ।३८। याकारणें हे असो। परी जयालागीं शास्त्रातिसो। केला तंव तुज पुसों। काज तुझें ।३९।

कच्चिदेतच्छ्रुतं पार्थ त्वयैकाग्रेण चेतसा।
कच्चिदज्ञानसंमोहः प्रनष्टस्ते धनंजय ।७२।

तरी सांग पां पांडवा। हा शास्त्रसिद्धांत आघवा। तुज एकचित्तें फावा। गेला आहे? ।१५४०। आम्ही जैसें जया रीती। उगाणिलें कानांच्या हातीं। येरी तैसेंचि तुझ्या चित्तीं। पैठें केलें कीं? ।४१। अथवा माझारीं। गेलें सांडीविखुरी?। किंवा उपेक्षेवरी। वाळुनी सांडिलें? ।४२। जैसें आम्ही सांगितलें। तैसेचि हृदयीं फावलें?। तरी सांग पां वहिलें। पुसेन तें मी ।४३। तरी स्वाज्ञानजनितें। मागिले मोहें तूतें। भुलविलें तो येथें। असे कीं नाहीं? ।४४। हें बहु पुसों काई। सांगें तूं आपुल्या ठाईं। कर्माकर्म कांहीं। देखतासी? ।४५। पार्थ स्वानंदैकरसें। विरेल ऐसा भेददशे। आणिला येणें मिषें। प्रश्नाचेनी ।४६। पूर्णब्रह्म जाला पार्थ। तरी पुढील साधावया कार्यार्थ। मर्यादा श्रीकृष्णनाथ। उल्लंघो नेदी ।४७। येऱ्हवीं आपुलें करणें। सर्वज्ञ काय तो नेणे। परी केले पुसणें। याचिलागीं ।४८। एवं करोनिया प्रश्न। नसतेंचि अर्जुनपण। आणूनियां जालें पूर्णपण। तें बोलवी स्वयें ।४९। मग क्षीराब्धीतें सांडित। गगनीं पुंज मंडित। निवडे जैसा न निवडित। पूर्णचंद्र ।१५५०। तैसा ब्रह्म मी हें विसरे। तेथ जगचि ब्रह्मत्वें भरे। हेंही सांडी तरी विरे। ब्रह्मपणही ।५१। ऐसा मोडत मांडत ब्रह्में। तो दुःखें देहाजिये सीमे। मी अर्जुन येणें नामें। उभा ठेला ।५२। मग कांपतां करतळीं। दडपूनि रोमावळी। पुलकू स्वेदजळीं। जिरऊनियां ।५३। प्राणक्षोभें डोलतया। आंगा आंगचि टेंकया। सूनि स्तंभ चाळया। भूलौनियां ।५४। नेत्रयुगळाचेनि वोतें। आनंदामृताचें भरितें। वोसंडत तें मागुतें। काढूनियां ।५५। विविधा औत्सुक्यांची दाटी। चीप दाटत होती कंठीं। ते करूनियां पैठी। हृदयामाजीं ।५६। वाचेचें वितुळणें। सांवरूनि प्राणें। अक्रमाचे श्वसणें। ठेऊनि ठायीं ।५७।

अर्जुन उवाचः– नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाऽच्युत।
स्थितोऽस्मि गतसंदेहः करिष्ये वचनं तव ।७३।

मग अर्जुन म्हणे काय देवो। पुसताति 'आवडे मोहो'?। तरी तो सकुटुंब गेला जी ठावो। घेऊनि आपला ।५८। पासीं येऊनि दिनकरें। डोळ्यांतें आंधारें। पुसिजे हें कायी सरे। कोणे गांवीं? ।५९। तैसा तूं श्रीकृष्णराया। आमुचिया डोळयां। गोचर हेंचि कायिसया। न पुरे तंव? ।१५६०। वरी लोभें मायेपासूनी। तें सांगसी तोंड भरूनी। जें कायिसेनिही करूनी। जाणूं नये ।६१। आतां मोह असे कीं नाहीं। हें ऐसें जी पुससी काई। कृतकृत्य जाहलों पाहीं। तुझेपणें ।६२। गुंतलो होतो अर्जुनगुणें। तो मुक्त झालो तुझेपणें। आतां पुसणें सांगणें। दोन्ही नाहीं ।६३। मी तुझेनि प्रसादें। लाधलेनि आत्मबोधें। मोहाचे तया कांदे। नेदीच उरों ।६४। आतां करणें का न करणें। हें जेणें उठी दुजेपणें। तें तूं वांचूनि नेणें। सर्वत्र गा ।६५। येविषयीं माझ्या ठायीं। संदेहाचें नुरेचि कांहीं। त्रिशुद्धि कर्म जेथ नाहीं। तें मी जालों ।६६। तुझेनि मज मी पावोनी। कर्तव्य गेलें निपटूनी। परी आज्ञा तुझी वांचोनी। आन नाहीं प्रभो ।६७। कां जें दृश्य दृश्यातें नाशी। जें दुजें द्वैतातें ग्रासी। जें एक परी सर्वदेशीं। वसवी सदा ।६८। जयाचेनि संबंधें बंद फिटे। जयाचिया आशा आन तुटे। जें भेटलयां सर्व भेटे। आपणपांची ।६९। तें तूं गुरुलिंग जी माझें। जें येकलेपणींचें विरजें। जयालागीं वोलांडिजे। अद्वैतबोध ।१५७०। आपणचि होऊनि ब्रह्म। सारिजे कृत्याकृत्यांचें काम। मग कीजे का निःसीम। सेवा जयाची ।७१। गंगा सिंधु सेवूं गेली। पावतांचि समुद्र जाली। तेवीं भक्तां सेल दिधली। निजपदाची ।७२। तो तूं माझा जी निरुपचारू। श्रीकृष्णा सेव्य सद्गुरु। मा ब्रह्मतेचा उपकारू। हाचि मानीं ।७३। जें मजतुम्हांआड। होतें भेदाचें कवाड। तें फेडोन केलें गोड। सेवासुख ।७४। तरी आतां तुझी आज्ञा। सकळ देवाधिदेवराज्ञा। करीन देयी अनुज्ञा। भलतियेविषयीं ।७५। यया अर्जुनाचिया बोला। देव नाचे सुखें भुलला। म्हणे विश्वफळा जाला। फळ हा मज ।७६। उणेनि उमचला सुधाकर। देखुनी आपला कुमर। मर्यादा क्षीरसागर। विसरेचिना? ।७७। ऐसें संवादाचा बहुलां। लग्न दोघांचियां आंतुला। लागलें देखोनि जाला। निर्भर संचय ।७८। तेणें म्हणतसे संजयो। बाप कृपानिधी रावो। तो आपुला मनोभावो। अर्जुनेसीं केला ।७९। तेणें उचंबळलेपणें। संजय धृतराष्ट्रातें म्हणे। जी कैसें बादरायणें। रक्षिलों दोघे ।१५८०। आजी तुमते अवधारा। नाहीं चर्मचक्षुही संसारा। कीं ज्ञानदृष्टी व्यवहारा। आणिलेति ।८१। आणि रथींचिये राहाटी। घेइ जो घोडेयासाठीं। तया आम्हां या गोष्टी। गोचरा होती! ।८२। वरी जुंझाचें निर्वाण। मांडलें असे दारुण। दोही हरीं आपण। हारपिजे जैसें ।८३। येवढा जिये सांकडा। कैसा अनुग्रहो पैं गाढा। जे ब्रह्मानंद उघडा। भोगवितसे ।८४। ऐसें संजया बोलिला। परी न द्रवे येरू उगला। चंद्रकिरणीं शिवतला। पाषाण जैसा ।८५। हें देखोनि तयाची दशा। मग करीचिना सरिसा। परी सुखें जाला पिसा। बोलतसे ।८६। भुलविला हर्षवेगें। म्हणौनि धृतराष्ट्रा सांगे। येऱ्हवीं नव्हे तयाजोगें। हें कीर जाणे ।८७।

संजय उवाचः– इत्यहं वासुदेवस्य पार्थस्य च महात्मनः।
संवादमिममश्रौषमद्भुतं रोमहर्षणम् ।७४।

मग म्हणे पैं कुरुराजा। ऐसा भ्रातृपुत्र जो तुझा। बोलिला तें अधोक्षजा। गोड जालें ।८८। अगा पूर्वापर सागर। यया नामासीचि सिनार। येर आघवें तें नीर। एक जैसें ।८९। तैसा श्रीकृष्ण पार्थ ऐसें। हें आंगाचिपासीं दिसे। मग संवादीं जी नसे। कांहींचि भेद ।१५९०। पैं दर्पणाहूनि चोखें। दोन्ही होती सन्मुखें। तेथ येरी येर देखें।

आपणपें जैसें ।६१। तैसा देवेसीं पांडुसुत। आपणपें देवीं देखत। पांडवेंसीं देखे अनंत। आपणपें पार्थीं ।६२। देवदेवा भक्तालागीं। जिये विवर देखे आंगीं। येरू तियेचिही भागीं। दोन्ही देखे ।६३। आणिक कांहींचि नाहीं। म्हणौनि करिती काई। दोघे येकपणें पाहीं। नांदताती ।६४। आतां भेद जरी मोडे। तरी प्रश्नोत्तर कां घडे?। ना भेदचि तरी जोडे। संवादसुख कां? ।६५। ऐसें बोलतां दुजेपणें। संवादीं द्वैत गिळणें। तें ऐकिलें बोलणें। दोघांचे मिया ।६६। उठूनि दोन्ही आरसें। वोडविलिया सरिसे। कोण कोणा पाहातसे। कल्पावें पां? ।६७। का दीपासन्मुख। ठेविलया दीपक। कोण कोणा आर्थिक। कोण जाणें? ।६८। नाना अर्कापुढें अर्क। उदयलिया आणिक। कोण म्हणे प्रकाशक। प्रकाश्य कवण? ।६९। हें निर्धारूं जातां फुडें। निर्धारासि ठक पडे। ते दोघे जाले येवढे। संवादें सरिसे ।१६००। जी मिळतां दोन्ही उदकें–। माजीं लवण वारूं ठाके। कीं तयासींहीं निमिखें। तेंचि होय ।१। तैसे श्रीकृष्ण अर्जुन दोन्ही। संवादले तें मनीं। धरितां मजही वानी। तेचि होतसे ।२। ऐसें म्हणे ना मोटकें। तंव हिरोनि सात्त्विकें। आठव नेला नेणों कें। संजयपणाचा ।३। रोमांच जंव फरके। तंव तंव आंग सुरके। स्तंभस्वेदांतें जिंके। एकला कंप ।४। अद्वयानंदस्पर्शें। दिठी रसमय जाली असे। ते अश्रु नव्हती जैसें। द्रवत्वची ।५। नेणों काय न माय पोटीं। काय नेणों गुंफे कंठी। वागर्था पडत मिठी। उससांचिया ।६। किंबहुना सात्त्विकां आठां। चाचर मांडतां उमेठा। संजय जाहालासे चोहटां। संवादसुखाचा ।७। तया सुखाची ऐसी जाती। जें आपणचि धरी शांती। मग पुढती देहस्मृती। लाधली तेणें ।८।

व्यासप्रसादाच्छ्रुतवानेतद्गुह्यमहं परम्।
योगं योगेश्वरात्कृष्णात्साक्षात्कथयतः स्वयम् ।७५।

तेव्हां बैसतेनि आनंदें। म्हणे जी जें उपनिषदें। नेणती तें व्यासप्रसादें। ऐकिलें मियां ।९। ऐकताचि तें गोठी। ब्रह्मत्वाची पडिली मिठी। मीतूंपणेंसीं दिठी। विसेनि गेली ।१६१०। हें आघवेचि का योग। जया ठाया येते मार्ग। तयाचें वाक्य सवंग। केलें मज व्यासें ।११। अहो अर्जुनाचेनि मिषे। आपणपेंचि दुजें ऐसें। नटोनि आपणया उद्देशें। बोलिले जें देव ।१२। तेथ कीं माझें श्रोत्र। पाटाचें जालें जी पात्र। काय वानूं स्वतंत्र। सामर्थ्य श्रीगुरूंचें? ।१३।

राजन्संस्मृत्य संस्मृत्य संवादमिदमद्भुतम्।
केशवार्जुनयोः पुण्यं हृष्यामि च मुहुर्मुहुः ।७६।

राया हे बोलतां विस्मित होये। तेणेंचि मोडावला ठाये। रत्नीं कीं रत्नकिळा ये। झांकोळित जैसी ।१४। हिमवंतींचीं सरोवरें। चंद्रोदयीं होती काश्मीरें। मग सूर्यागमीं माघारें। द्रवत्व ये ।१५। तैसा शरीराचिया स्मृति। तो संवाद संजय चित्तीं। धरी आणि पुढती। तेंचि होय ।१६।

तच्च संस्मृत्य संस्मृत्य रूपमत्यद्भुतं हरेः।
विस्मयो मे महान् राजन् हृष्यामि च पुनः पुनः ।७७।

मग उठोनि म्हणे नृपा। श्रीहरीचिया विश्वरूपा। देखिलया उगा कां पां। असों लाहसी? ।१७। न देखणेनि जें दिसे। नाहींपणेंचि जें असे। विसरें आठवे तें कैसें। चुकवूं आतां? ।१८। देखोनि चमत्कार। कीजे तो नाहीं पैसार। मजहीसकट महापूर। नेत आहे ।१९। ऐसा श्रीकृष्णार्जुन–। संवादसंगमीं स्नान। करूनि देतसे तिळदान। अहंतेचें ।१६२०। तेथ असवरें आनंदें। अलौकिकही कांहीं स्फुंदे। 'श्रीकृष्ण' म्हणे सद्गदें। वेळोवेळां ।२१। या अवस्थांची कांहीं। कौरवातें परी नाहीं। म्हणौनि रायें तें काहीं। कल्पावें जंव ।२२। तंव जाला सुखलाभ। आपणपां करूनि स्वयंभ। बुझविला अवष्टंभ। संजयें ऐणें ।२३। तेथ कोणी एकी अवसरीं। होआवी ते करूनि दुरी। रावो म्हणे संजया परी। कैसी तुझी गा ।२४। तेणें तूंतें येथें व्यासें। बैसाविलें कासया उद्देशें। अप्रसंगामाजीं ऐसें। बोलसी काई? ।२५। रानींचें राउळा नेलिया। दाही दिशा मानी सुनिया। का रात्रि होय पाहलया। निशाचरा ।२६। जो जेथींचें गौरव नेणें। तयासि तें भिंगुळवाणें। म्हणौनि अप्रसंग तेणें। म्हणावा कीं तो ।२७। मग म्हणे सांगें प्रस्तुत। उदयलेंसे जें उत्कळित। तें कोणासि बा रे जैत। देईल शेखीं? ।२८। येऱ्हवीं विशेषें बहुतेक। आमुचे ऐसें मानसिक। जे दुर्योधनाचे अधिक। प्रताप सदा ।२९। आणि येरांचेनि पाडें। दळही याचें देव्हडें। म्हणौनि जैत फुडें। आणील ना तें ।१६३०। आम्हां तंव गमे ऐसें। मा तुझें जोतीष कैसें। तें नेणों संजया असे। तैसें सांग पां ।३१।

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ।७८।

इति श्रीमद्भगवगीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे मोक्षसंन्यासयोगो नाम अष्टादशोऽध्यायः ।१८।

यया बोला संजयो म्हणे। जी येरयेरांचें मी नेणें। परी आयुष्य तेथें जिणें। हें फुडें कीं गा ।३२। चंद्र तेथें चंद्रिका। शंभु तेथें अंबिका। संत तेथें विवेका। असणें कीं जी ।३३। रावो तेथें कटक। सौजन्य तेथें सोइरीक। वह्नि तेथें दाहक। सामर्थ्य कीं ।३४। दया तेथें धर्म। धर्म तेथें सुखागम। सुखीं पुरुषोत्तम। असे जैसा ।३५। वसंत तेथें वनें। वन तेथ सुमनें। सुमनीं पालिंगनें। सारंगाचीं ।३६। गुरु तेथ ज्ञान। ज्ञानीं आत्मदर्शन। दर्शनीं समाधान। आथी जैसें ।३७। भाग्य तेथ विलास। सुख तेथें उल्लास। हें असो तेथ प्रकाश। सूर्य जेथें ।३८। तैसे सकळ पुरुषार्थ। जेणें स्वामी का सनाथ। तो श्रीकृष्ण रावो जेथ। तेथ लक्ष्मी ।३९। आणि आपलेनि कांतेसीं। ते जगदंबा जयापासीं। अणिमादिकी काय दासी। नव्हती तयातें? ।१६४०। कृष्ण विजयस्वरूप निजांगें। तो राहिला असे जेणें भागें। तैं जय लागवेगें। तेथेचि आहे ।४१। विजयी नामें अर्जुन विख्यात। विजयस्वरूप श्रीकृष्णनाथ। श्रियेसीं विजय निश्चित। तेथेंचि असे ।४२। तयाचिये देशींच्या झाडीं। कल्पतरूतें होडी। न जिणावें कां येवढीं। मायबापें असतां? ।४३। ते पाषाणही आघवे। चिंतारत्नें कां नोहावे?। तिये भूमिके कां न यावें। सुवर्णत्व? ।४४। तयाचिया गांवींचिया। नदी अमृतें वाहाविया। नवल काय राया। विचारीं पां? ।४५। तयाचे बिसाट शब्द। सुखें म्हणो येती वेद। सदेह सच्चिदानंद। कां नोहावे ते? ।४६। पैं स्वर्गापवर्ग दोन्हीं। इयें पदें तया अधीनीं। श्रीकृष्ण बाप जननी। कमळा जया ।४७। म्हणौनि जिया बाहीं उभा। तो लक्ष्मियेचा वल्लभा। तेथ स्वयंसिद्धि स्वयंभा। येर मी नेणे ।४८। आणि समुद्राचा मेघ। उपयोगें तयाहूनि चांग। तैसा पार्थी आजी लाग। आहे तये ।४९। कनकत्वदीक्षागुरू। लोहा परीस होय कीरू। परी जगा पोसिता व्यवहारू। तेंचि जाणें ।१६५०। येथ गुरुत्वा येतसे उणें। ऐसें झणें कोण्ही म्हणे। वह्नि प्रकाश दीपपणें। प्रकाशी आपला ।५१। तैसा देवाचिया शक्ती। पार्थ देवासीच बहुती। परी माने इये स्तुती। गौरव असे ।५२। आणि पुत्रें मी सर्व गुणीं। जिणावा हे बापा शिराणी। तरी ते शाङ्‌र्गपाणी। फळा आली ।५३। किंबहुना ऐसा नृपा। पार्थ जालासे कृष्णकृपा। तो जयाकडे साक्षेपा। रीती आहे ।५४। तोचि गा विजयासि ठावो। येथ तुज कोण संदेहो। तेथ न ये तरी वावो। विजयोचि होय ।५५। म्हणौनि जेथ श्री तेथ श्रीमंत। जेथ तो पांडूचा सुत। तेथ विजय समस्त। अभ्युदय तेथ ।५६। जरी व्यासाचेनि साचें। धिरे मन तुमचें। तरी या बोलाचें। ध्रुवचि माना ।५७। जेथ तो श्रीवल्लभ। जेथ भक्तकदंब। तेथ सुख आणि लाभ। मंगळाचा ।५८। या बोला आन होये। तरी व्यासाचा अंक न वाहें। ऐसें गाजोनि बाहे। उभिली तेणें ।५९। एवं भारताचा आवांका। आणूनि श्लोका येका। संजयें कुरुनायका। दिधला हातीं ।१६६०। जैसा नेणों केवढा वह्नी। परी गुणाग्रीं ठेऊनी। आणिजे सूर्याची हानी। निस्तरावया ।६१। तैसें शब्दब्रह्म अनंत। जाले सवालक्ष भारत। भारताचें शतें सात। सर्वस्व गीता ।६२। तयाही सातां शतांचा। इत्यर्थ हा श्लोक शेषींचा। व्यासशिष्य संजयाचा। पूर्णोद्‌गार जो ।६३। येणें एकेंचि श्लोकें। राहे तेणें असकें। अविद्याजाताचें निकें। जिंतिलें होय ।६४। ऐसे श्लोक शतें सात। गीतेचीं पदें आंगें वाहत। पदें म्हणों कीं परमामृत। गीताकाशींचे ।६५। कीं आत्मराजाचिये सभे। गीते वोडवले हे खांबे। मज श्लोक प्रतिभे। ऐसे येत ।६६। कीं गीता हे सप्तशती। मंत्रप्रतिपाद्य भगवती। मोहमहिषा मुक्ति। आनंदली असे ।६७। म्हणौनि मनें कायें वाचा। जो सेवक होईल इयेचा। तो स्वानंदसाम्राज्याचा। चक्रवर्ती करी ।६८। कीं अविद्यातिमिररोखें। श्लोक सूर्यातें पैजा जिंके। ऐसे प्रकाशिले गीतामिखें। रायें श्रीकृष्णें ।६९। कीं श्लोकाक्षरद्राक्षलता। मांडव झाली आहे गीता। संसारपथश्रांता। विसंवावया ।१६७०। कीं सभाग्यसंती भ्रमरीं। सेविली ते श्लोककल्हारी। श्रीकृष्णसख्यसरोवरी। सासिन्नली हे ।७१। कीं श्लोक नव्हती आन। गमे गीतेचे महिमान। वाखाणिते बंदिजन। उदंड जैसे ।७२। कीं श्लोकांचिया आवारा। सात शतें करूनि सुंदरा। सर्वागम गीतापुरा। वसों आले ।७३। कीं निजकांता आत्मया। आवडी गीता मिळावया। श्लोक नव्हती बाह्या–। पसर का जो ।७४। कीं गीताकमळींचे भृंग। कीं हे गीतासागरतरंग। कीं हरीचे हे तुरंग। गीतारथींचे ।७५। कीं श्लोक सर्वतीर्थसंघात। आला श्रीगीतेगंगेआंत। जे अर्जुन सिंहस्थ। जाला म्हणौनि ।७६। कीं नोहे श्लोकश्रेणी। अचिंतचित्तचिंतामणी। कीं निर्विकल्पां लावणी। कल्पतरूंची ।७७। ऐसिया शतें सात श्लोका। परी आगळा येकयेका। आतां कोण वेगळिका। वानावा पां? ।७८। तान्ही आणि पारठी। ह्या कामधेनूतें दिठी। सूनि जैसिया गोठी। कीजतीना ।७९। दीपा आगिल मागिल। सूर्य धाकुटा वडील। अमृतसिंधू खोल। उथळ कायसा? ।१६८०। तैसें पहिले सरते। श्लोक न म्हणावे गीते। जुनीं नवीं पारिजातें। आहाती काई? ।८१। आणि श्लोका पाड नाहीं। हें कीर समर्थू काई। येथ वाच्य वाचकही। भाग न धरी ।८२। जे इये शास्त्रीं येक। श्रीकृष्णचि वाच्यवाचक। हें प्रसिद्ध जाणे लोक। भलताहीं ।८३। येथें अर्थें तेचि पाठें। जोडे येवढेनि घटें। वाच्यवाचक येकवटें। साधितें शास्त्र ।८४। म्हणौनि मज कांहीं। समर्थनीं आतां विषय नाहीं। गीता जाणा हे वाङ्‌मयी। श्रीमूर्ति प्रभूची ।८५। शास्त्र वाच्यें अर्थें फळें। मग आपण मावळे। तैसें नव्हे, हे सगळें। परब्रह्मची ।८६। कैसा विश्वाचिया कृपा। करूनि महानंद सोपा। अर्जुनव्याजें रूपा। आणिला देवें ।८७। चकोराचेनि निमित्तें। तिन्ही भुवनें संतप्तें। निवविलीं कलावंतें। चंद्रें जेवीं ।८८। कां गौतमाचेनि मिषें। कळिकाळज्वरितोद्देशें। पाणीढाळ गिरीशें। गंगेचा केला ।८९। तैसें गीतेचें हें दुभतें। वत्स करूनि पार्थातें। दुभीनली जगापुरतें। श्रीकृष्ण गाय ।१६९०। येथें जीवें जरी नाहाल। तरी हेंच कीर होआल। नातरी पाठमिषें तिंबाल। जीभचि जरी ।९१। तरी लोह एकें अंशें। झगटलिया परिसें। येरीकडे आपैसें। सुवर्ण होय ।९२। तैसी पाठाची जे वाटी। श्लोकपाद लावा ना जंव वोठीं। तंव ब्रह्मतेचि पुष्टी। येईल आंगा ।९३। ना येणेंसीं मुख

वाकडें। करूनि ठाकाल कानवडें। तरी कानींही घेतां पडे। तेचि लेख।६४। जें हें श्रवणें पाठें अर्थें। गीता नेदी मोक्षाआरौते। जैसा समर्थ दाता कोणातें। नास्ती न म्हणे।६५। म्हणौनि जाणतया सवा। गीताचि येकी सेवा। काय कराल आघवां। शास्त्री येरी?।६६। आणि कृष्णार्जुनीं मोकळी। गोठी चावळिली जे निराळीं। ते श्रीव्यासें केली करतळी। घेंवों ये ऐसी।६७। बाळकातें वोरसें। माय जैं जेववूं बैसे। तैं तया ठाकती तैसे। घांस करी।६८। का अफाटा समीरणा। आपैतेंपण शाहाणा। केलें जैसें विंजणा। निर्मूनियां।६९। तैसें शब्दें जें न लभे। तें घडूनियां अनुष्टुभें। स्त्रीशूद्रादिप्रतिभे सामाविलें।१७००। स्वातीचेनि पाणियें। न होतीं जरी मोतियें। तरी आंगीं सुंदराचिये। कां शोभति तियें?।१। नाद वाद्या न येतां। तरी गोचर कां होता। फुलें न होतां घेपता। आमोद केवीं?।२। गोडी न होती पक्वानें। तरी कां फावती रसने?। दर्पणावीण नयनें। नयन का दिसे?।३। द्रष्टा श्रीगुरुमूर्ती। न रिगतां दृश्यपंथीं। तरी काह्या उपास्ती। आकळती तो?।४। तैसें वस्तु जे असंख्यात। तया संख्या शतें सात। न होती तरी कोणा येथ। फावों शकतें?।५। मेघ सिंधूचे पाणी वाहे। तरी जग तयातेंचि पाहे। कां जे उमप तें नोहे। ठाकतें कोण्हा।६। आणि वाचा जे न पवें। तें हे श्लोक होते न बरवे। तरी कानें मुखें फावे। ऐसें कां होतें?।७। म्हणोनि श्रीव्यासाचा हा थोर। विश्वासि जाला उपकार। जे श्रीकृष्णउक्ती आकार। ग्रंथाचा केला।८। आणि तोचि हा मी आतां। श्रीव्यासाचीं पदें पाहातां पाहातां। आणिला श्रवणपथा। मऱ्हाठिया।९। व्यासादिकांचे उन्मेख। राहाटती जेथ साशंक। तेथ मीही रंक एक। वाचाळी करी।१७१०। परी गीता ईश्वर भोळा। ले व्यासोक्तिकुसुममाळा। तरी माझिया दूर्वादळा। ना न म्हणें कीं!।११। आणि क्षीरसिंधूचिया तटा। पाणिया येती गजघटा। तेथ काय मुरकुटा। वारिजत असे?।१२। पांखफुंटे पाखिरूं। नुडे तरी नभींच स्थिरू। गगन आक्रमी सत्वरू। तो गरुडही तेथ।१३। राजहंसाचें चालणें। भूतळीं जालिया शहाणें। आणिका काय कोणें। चालावेंचिना?। जी आपुलेनि अवकाशें। अगाध जळ घेपे कलशें। चुळीं चूळपणाऐसें। भरूनि न निघे?।१५। दिवटीच्या आंगीं थोरी। तरी ते बहुत तेज धरी। वाती आपुलिया परी। आणीचि कीं ना?।१६। जी समुद्राचेनि पैसें। समुद्रीं आकाश आभासे। थिल्लरीं थिल्लराऐसें। बिंबेचि पैं।१७। तेवी व्यासादिक महामती। वावरों येती इये ग्रंथीं। मा आम्ही ठाकों हे युक्ती। न मिळे कीर।१८। जिये सागरीं जळचरें। संचरती मंदराकारें। तेथ देखोनि शफरें येरें। पोहों न लाहती?।१९। अरुण आंगाजवळिके। म्हणौनि सूर्यातें देखे। मा भूतळींची न देखें। मुंगी काई?।१७२०। यालागीं आम्हां प्राकृतां। देशिकारें बंधें गीता। म्हणणें हें अनुचिता। कारण नोहे।२१। आणि बाप पुढां जाये। ते घेत पाउलाची सोये। बाळ ये तरी न लाहे। पावों कायी?।२२। तैसा व्यासाचा मागोवा घेत। भाष्यकारातें वाट पुसत। अयोग्यही मी न पवत। कें जाईन।२३। आणि पृथ्वी जयाचिया क्षमा। नुबगे स्थावरजंगमा। जयाचेनि अमृतें चंद्रमा। निववी जग।२४। जयाचें आंगिक असिकें। तेज लाहोनि अर्कें। आंधाराचें सावाइकें। लोटिजत आहे।२५। समुद्रा जयाचें तोय। तोया जयाचे माधुर्य। माधुर्या सौंदर्य। जयाचेनि।२६। पवना जयाचे बळ। आकाश जेणें पघळ। ज्ञान जेणें उज्ज्वळ। चक्रवर्ती।२७। वेद जेणें सुभास। सुख जेणें सोल्लास। हें असो रूपस। विश्व जेणे।२८। तो सर्वोपकारी समर्थ। सद्गुरु श्रीनिवृत्तिनाथ। राहटत असे मजहीआंत। रिघोनियां।२९। आतां आयती गीता जगीं। मी सांगें मऱ्हाठिया भंगीं। येथ कें विस्मयालागीं। ठाव आहे?।१७३०। श्रीगुरूचेनि नांवें माती। डोंगरी जयापासीं होती। तेणें कोळियें त्रिजगती। येकवद केली।३१। चंदनें वेधलीं झाडें। जालीं चंदनाचेनि पाडें। वसिष्ठें मांडली की भांडे। भानूसीं शाटी।३२। मा मी तंव चित्ताथिला। आणि श्रीगुरु ऐसा दादुला। जो दिठीवेनि आपुला। बैसवी पदी।३३। आधींचि देखणी दिठी। वरी सूर्य पुरवी पाठी। तैं न दिसे ऐसी गोठी। केंही आहे?।३४। म्हणोनि माझे नित्य नवे। श्वासोच्छ्वासही प्रबंध होआवे। श्रीगुरुकृपा काय नोहे। ज्ञानदेव म्हणे।३५। याकारणें मियां। श्रीगीतार्थ मऱ्हाठिया। केला लोका यया। दिठीचा विषो।३६। परी मऱ्हाठे बोल रंगे। कवळितां पैं गीतांगें। तैं गातयाचेनि पांगे। येकाढ्यता नोहे।३७। म्हणौनि गीता गावों म्हणे। तैं गाणिवे होती लेणें। ना मोकळे तरी उणें। गीताही आणित।३८। सुंदर आंगीं लेणें न सूये। तैं तो मोकळा शृंगार होये। ना लेइलें तरी आहे। तैसें कें उचित?।३९। कां मोतियांची जैसी जाती। सोनयाही मान देतीं। नातरी मानवती। अंगेंचि सडीं।१७४०। नाना गुंफिलीं कां मोकळीं। उणीं न होती परिमळीं। वसंतागमींचीं वाटोळीं। मोगरीं जैसीं।४१। तैसा गाणीवेनें मिरवी। गीतेवीणही रंग दावी। तो लाभाचा प्रबंध वोवीं। केला मियां।४२। तेणें आबाळसुबोधें। वोवियेचेनि प्रबंधें। ब्रह्मरससुस्वादें। अक्षरें गुंथिलीं।४३। आतां चंदनाच्या तरुवरीं। परिमळालागीं फुलवरी। पाउखणें जियापरी। लागेना कीं।४४। तैसा प्रबंध हा श्रवणीं। लागतखेंवो समाधि आणी। ऐकिलियाही वाखाणी। काय व्यसन न लावी?।४५। पाठ करितां व्याजें। पांडित्यें येती वेषजें। तैं अमृतातें नेणिजे। फावलिया।४६। तैसेनि आइतेपणें। कवित्वा जालें हें उपेणें। मनन निदिध्यास श्रवणें। जिंतिलें आतां।४७। हे स्वानंदभोगाची सेल। भलतयासीची देईल। सर्वेंद्रिया पोषवील। श्रवणाकरवीं।४८। चंद्रातें आंगवणें। भोगूनि चकोर शाहाणे। परी फावे जैसें चांदिणें। भलतयाही।४९। तैसें आध्यात्मशास्त्रीं यिये। अंतरंगचि अधिकारिये। परी लोक वाक्चातुर्यें। होईल सुखिया।१७५०। ऐसें श्रीनिवृत्तिनाथाचें। गौरव आहे जी साचें। ग्रंथ नोहे हें कृपेचें। वैभव तिये।५१। क्षीरसिंधुपरीसरीं। शक्तीच्या कर्णकुहरीं। नेणों कैं श्रीत्रिपुरारी। सांगितलें जें।५२। तें क्षीरकल्लोळाआंत। मकरोदरीं गुप्त। होता तयाचा हात। पैठें जालें।५३। तो मत्स्येन्द्र सप्तशृंगीं। भग्नावयवा चौरंगी। भेटला कीं तो सर्वांगीं।

संपूर्ण जाला ।५४। मग समाधी अव्यत्यया। भोगाची वासना या। ते मुद्रा श्रीगोरक्षराया। दिधली मीनीं ।५५। तेणें योगाब्जिनीसरोवर। विषयविध्वंसैकवीर। तिये पदीं का सर्वेश्वर। अभिषेकिले ।५६। मग तिहीं तें शांभव। अद्वयानंदवैभव। संपादिलें सप्रभव। श्रीगहिनीनाथा ।५७। तेणें कळि कळित भूतां। आला देखोनि निरुता। ते आज्ञा श्रीनिवृत्तिनाथा। दिधली ऐसी ।५८। मा आदिगुरु शंकरा। लागोनि शिष्यपरंपरा। बोधाचा हा संसरा। जाला जो आमुतें ।५९। तो हा तूं घेऊनि आघवा। कळीं गिळितयां जीवां। सर्व प्रकारीं धांवा। करीं पां वेगीं ।१७६०। आधीच तंव तो कृपाळू। वरी गुरुआज्ञेचा बोलू। जाला जैसा वर्षाकाळू। खवळणें मेघां ।६१। मग आर्ताचेनि वोरसें। गीतार्थग्रंथमिसें। वर्षला शांतरसें। तो हा ग्रंथ ।६२। तेथ पुढां मी बापिया। मांडला आर्ती आपुलिया। कीं यासाठीं येवढिया। आणिलों यशा ।६३। एवं गुरुक्रमें लाधलें। समाधिधन जें आपुलें। तें ग्रंथ बोधौनि दिधलें। गोसांवी मज ।६४। वांचूनि पढे ना वाची। ना सेवाही जाणे स्वामीची। ऐसिया मज ग्रंथाची। योग्यता कें असे? ।६५। परी साचचि गुरुनाथें। निमित्त करूनि मातें। प्रबंधव्याजें जगातें। रक्षिलें जाणा ।६६। तऱ्ही पुरोहितगुणें। मी बोलिलों पुरेंउणें। तें तुम्ही माउलीपणें। उपसाहिजो जी ।६७। शब्द कैसा घडिजे। प्रमेयीं कैसें पां चढिजे। अळंकार म्हणिजे। काय तें नेणें ।६८। सायिखडेयाचें बाहुलें। चालवित्या सूत्राचेनि चाले। तैसा मातें दावीत बोले। स्वामी तो माझा ।६९। यालागीं मी गुणदोष। विषीं क्षमावीना विशेष। जे मी संजात ग्रंथलों देख। आचार्यें कीं ।१७७०। आणि तुम्हां संतांचिये सभे। जें उणिवेसी ठाके उभें। तें पूर्ण नोहे तै लोभें। तुम्हांसीचि कोपों! ।७१। सिवतलियाही परिसें। लोहत्वाचिये अवदसे। न मूकिजे आयसें। तैं कवणा बोल ।७२। वोहळें हेंचि करावें। जें गंगेंचे अंग ठाकावें। मगही गंगा जरी नोहावें। तैं तो काय करी? ।७३। म्हणौनि भाग्ययोगें बहुवे पां हें। तुम्हां संतांचे मी पाये। पातलों आतां कें लाहें। उणें जगीं? ।७४। अहो जी माझेनि स्वामी। मज संत जोडूनि तुम्ही। दिधलेति तेणें सर्वकामीं। परिपूर्ण जालों ।७५। पाहा पां मातें तुम्हांसी गडें। माहेर तेणें सुरवाडें। ग्रंथाचें आळियाडें। सिद्धी गेलें ।७६। जी कनकाचें निखळ। वोतूं येईल भूतळ। चिंतारत्नीं कुळाचळ। निमूं येती ।७७। सातांही हो सागरांतें। सोपें भरितां अमृतें। दुवाड नोहे तारांतें। चंद्र करितां ।७८। कल्पतरूचें आराम। लावितां नाहीं विषम। परी गीतार्थाचें वर्म। निवडूं न ये ।७९। तो मी येक सर्व मुका। बोलोनि मऱ्हाटिया भाखा। करीं डोळेवरी लोकां। घेवों ये ऐसें जें ।१७८०। हा ग्रंथसागर येव्हडा। उतरोनि पैलीकडा। कीर्तिविजयाचा धेंडा। नाचे जो का ।८१। गीतार्थाचा आवारू। कलशेंसीं महामेरू–। रचूनि माजीं श्रीगुरु–। लिंग जें पूजीं ।८२। गीता निष्कपट माय। चुकोनि तान्हें हिंडे जे ंवाय। ते मायपूतां भेटी होय। हा धर्म तुमचा ।८३। तुम्हां सज्जनाचें केलें। आकळूनि जी मी बोलें। ज्ञानदेव थेंकुलें। तैसें नोहे ।८४। काय बहु बोलों सकला। मेळविलों जन्मफळा। ग्रंथसिद्धीचा सोहळा। दाविला जो हा ।८५। मियां जैसजैसिया आशा। केला तुमचा भरंवसा। ते पुरऊनि जी बहुवसा। आणिलों सुखा ।८६। मजलागीं ग्रंथाची स्वामी। दुजी सृष्टी जे हे केली तुम्ही। ते पाहोनि हांसो आम्ही। विश्वामित्रातेंही! ।८७। जे असोनि त्रिशंकुदोषें। धातयाही जाणावें वोसे। तें नासतें कीजे कीं ऐसें। निर्मावें नाहीं ।८८। शंभू उपमन्यूचेनि मोहें। क्षीरसागरही केला आहे। येथ तोही उपमे सरी नोहे। जे विषगर्भ कीं ।८९। अंधकारनिशाचरा। गिळितां सूर्यें चराचरां। धांवा केला तरी खरा। ताउनी कीं तो ।१७९०। तातलिया जगाकारणें। चंद्रें वेंचिलें चांदिणें। तया सदोषा केवीं म्हणे। सारिखें हें? ।९१। म्हणोनि तुम्हीं मज संतीं। ग्रंथरूप जो हा त्रिजगतीं। उपयोग केला तो पुढती। निरुपम जी ।९२। किंबहुना तुमचें केलें। धर्मकीर्तन हे सिद्धी नेलें। येथ माझें जी उरलें। पाईकपण ।९३। आतां विश्वात्मकें देवें। येणें वाग्यज्ञें तोषावें। तोषोनि मज द्यावें। पसायदान हें ।९४। जे खळाची व्यंकटी सांडो। तया सत्कर्मीं रती वाढो। भूतां परस्परें पडो। मैत्र जीवाचें ।९५। दुरिताचें तिमिर जावो। विश्व स्वधर्मसूर्यें पाहो। जो जे वांछील तो तें लाहो। प्राणिजात ।९६। वर्षत सकळमंगळीं। ईश्वरनिष्ठांची मांदियाळी। अनवरत भूतळीं। भेटो तयां भूतां ।९७। चलां कल्पतरूंचे अरव। चेतना चिंतामणीचे गांव। बोलते जे अर्णव। पीयूषाचे ।९८। चंद्रमे जे अलांछन। मार्तंड जे तापहीन। जे सर्वांही सदा सज्जन। सोयरे होतू ।९९। किंबहुना सर्वसुखीं। पूर्ण होऊनि तिहीं लोकीं। भजिजो आदिपुरुखीं। अखंडित ।१८००। आणि ग्रंथोपजीविये। विशेषीं लोकीं इये। दृष्टादृष्टविजयें। होआवें जी ।१। येथ म्हणे श्रीविश्वेशरावो। हा होईल दानपसावो। येणें वरें ज्ञानदेवो। सुखिया जाला ।२। ऐसें युगीं परी कळीं। आणि महाराष्ट्रमंडळी। श्रीगोदावरीच्या कूलीं। दक्षिणिलीं ।३। त्रिभुवनैकपवित्र। अनादि पंचक्रोशक्षेत्र। जेथ जगाचें जीवनसूत्र। श्रीमहालया असे ।४। तेथ यदुवंशविलास। जो सकळकळानिवास। न्यायातें पोषी क्षितीश। श्रीरामचंद्र ।५। तेथ महेशान्वयसंभूतें। श्रीनिवृत्तिनाथसुतें। केलें ज्ञानदेवें गीते। देशीकारलेणें ।६। एवं भारताच्या गांवी। भीष्मनाम प्रसिद्ध पर्वी। श्रीकृष्णार्जुनीं बरवी। गोठी जे केली ।७। जें उपनिषदांचें सार। सर्वशास्त्रांचे माहेर। परमहंसीं सरोवर। सेविजे जें ।८। तिये गीतेचा कलश। संपूर्ण हा अष्टादश। म्हणे निवृत्तिदास। ज्ञानदेव ।९। पुढती पुढती पुढती। इया ग्रंथपुण्यसंपत्ती। सर्वसुखीं सर्वभूतीं। संपूर्ण होइजे ।१८१०। शके बाराशतें बारोत्तरें। तैं टीका केली ज्ञानेश्वरें। सच्चिदानंदबाबा आदरें। लेखकू जाहाला ।१८११।

इति श्रीज्ञानदेवविरचितायां भावार्थदीपिकायामष्टादशोऽध्यायः ।१८।

। श्रीकृष्णार्पणमस्तु।

श्लोक ७८, ओव्या १८११.

श्रीशकेपंधराशें बारोत्तरीं। तारणनामसंवत्सरीं। एकाजनार्दनें अत्यादरीं। गीता ज्ञानेश्वरीप्रति शुद्ध केली।१। ग्रंथ पूर्वींच अतिशुद्ध। तरी पाठांतरीं शुद्ध अबद्ध। तो शोधूनियां एवंविध। प्रतिशुद्ध सिद्धज्ञानेश्वरी।२। नमो ज्ञानेश्वरा निष्कलंका। जयाची गीतेची वाचितां टीका। ज्ञान होय लोकां। अतिभाविका ग्रंथार्थियां।३। बहुकाळपर्वणी गोमटी। भाद्रमासकपिलाषष्ठी। प्रतिष्ठानीं गोदातटीं। लेखनकामाठी संपूर्ण जाली।४। ज्ञानेश्वरीपाठीं। जो वोवी करील मऱ्हाटी। तेणें अमृताचे ताटीं। जाण नरोटी ठेविली।५।

ज्ञानेश्वरीभावार्थदीपिकागीताटीका समाप्ता। श्रीकृष्णार्पणमस्तु।